हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु ॥

श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तकः

कालसर्प योग विशेषांक

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०६८, शक संवत् १९३३
सन् २०११-२०१२, जय हिन्द संवत् ६४-६५
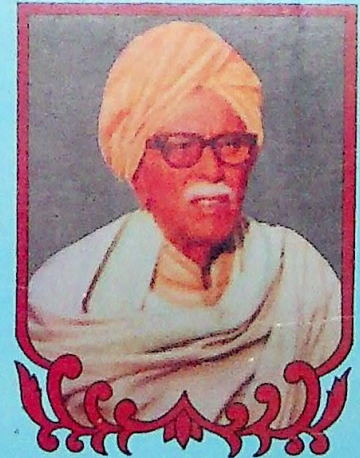
भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा चन्द्र

मंत्री गुरु

पञ्चांगप्रवर्तक

अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त

दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ. शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

प्रकाशक : रुचिका पब्लिकेशन्स
टाइटल पर होलोग्राम लगा हुआ देखकर ही पंचांग खरीदें।

मूल्य ७५.००

इस पञ्चाङ्ग के पाठकों के लिए आवश्यक निर्देशन

(i) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण चण्डीगढ़ (U.T.) के रेखांश पू. 76° 52´, अक्षांश उ. 30° 44´ के आधार पर किया गया है। अतः विशेष निर्देश न किया गया हो तो सूर्योदय, सूर्यास्त से हमारा अभिप्राय यहां सर्वत्र इसी स्थल के सूर्योदय, सूर्यास्त से रहता है।

(ii) यहां सूर्योदय, सूर्यास्तकाल किरणवक्रीभवन संस्काररहित (Free from Refraction) है, जो सूर्यबिम्बकेन्द्र का क्रमशः पूर्वापरक्षितिज से वास्तविक सम्पर्कक्षण है। सूर्य के इस उदयास्तकाल को **ज्योतिषशास्त्रीय उदयास्तकाल** कहा जाता है। लग्नादि–साधनार्थ इष्टकालादि–ज्ञान के लिए इसी को प्रयोग में लाया जाता है। इन्हें दृश्य (लोकव्यवहारोपयोगी) बनाने के लिए इनमें (उदय एवं अस्तकाल में) लगभग 3½ मि. क्रमशः घटाने या जोड़ने होंगे।

(iii) भारतीय ज्योतिषानुसार यहां वार की प्रवृत्ति स्थानीय सूर्योदयकाल से मानी गई है, अतः यह जान लेना चाहिए कि– यहां रवि, चन्द्र आदि वार स्थानीय सूर्योदय से प्रारम्भ होकर परवर्ती सूर्योदय पर समाप्त होने वाले वार हैं। भारतीय ज्योतिषशास्त्र एवं धर्मशास्त्र में इसी वार का प्रयोग होता है। ध्यान रहे– सामान्य लोकव्यवहार में सर्वत्र प्रयोग में आने वाला वार, जो पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी है, तो अंग्रेज़ी (Gregorian) तारीख के साथ रात्रि के 24घं 00मि (क्षेत्रीय स्टैं.टा.) पर ही बदल जाता है।

(iv) पंचांगगत सभी गणना ऋषियों, आचार्यों द्वारा अनुमोदित दृक्तुल्यपद्धति से की गई है।

(v) सर्वत्र निरयणगणना है। जहां कहीं सायनगणना का प्रयोग है, वहां इसका निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय स्पष्ट (धूननसंस्कृत) अयनांशों को प्रामाणिक माना गया है।

(vi) यहां प्रयुक्त भा.स्टैं.टा. (I.S.T.) 82° 30´ पूर्व रेखांशीय स्थल का स्थानीय मध्यमकाल (L.M.T.) है।

(vii) यहां दी गई दैनिक लग्नसारणियां निरयण लग्नों का समाप्तिकाल बतलाती हैं।

(viii) यहां प्राचीन परम्परानुयायी दैवज्ञों के लिए चैत्र शुक्लादि 24 पक्षों वाला तिथ्यादि पंचांग घटी–पलों में तथा सामान्य जनों के व्यवहारार्थ नवीन प्रणाली वाला **'जनवरी, फरवरी'** आदि मासानुसारी तिथ्यादि पंचांग घंटा–मिनटों (भा.स्टैं.टा.) में दिया गया है। घटी–पलात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति, ग्रहराशि–नक्षत्र प्रवेश आदि सभी काल घटी–पलों में दिए गए हैं, जो चण्डीगढ़ के सूर्योदय से व्यतीत घटी–पलात्मक काल बतलाते हैं। **किञ्च–** घण्टा–मिनटात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति आदि सभी काल भा.स्टैं.टा. में हैं। यहां यह भी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि– घण्टा–मिनटात्मक, जो काल रात्रि के 24घं–00मि के बाद पड़ता है, उसे पंचांग में 24 घं. जोड़कर उसी भारतीय ज्योतिषानुसारी वार में लिखा गया है, जो परवर्ती सूर्योदय तक रहता है। इसलिए ऐसे स्थलों पर दिए गए समय के घण्टा–मिनटों में से 24 घं. घटाकर शेष घं. मि. को सामान्य व्यवहार में प्रचलित (पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी) परवर्ती वार का काल समझना चाहिए। **जैसे–** मान लीजिए– पंचांगानुसार एकादशी तिथि 10 मई शुक्रवार को 26 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त हो रही है। इसका अभिप्राय है– यह तिथि प्रचलित व्यवहारानुसारी 11 मई, शनिवार को रात्रि के 2 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त होगी।

(ix) घटी–पलात्मक पंचांगभाग वाले (24 पक्षों वाले) पृष्ठों पर नीचे की ओर बाईं और दाईं ओर लगभग साप्ताहिक (अष्टमी, अमा, पूर्णिमा के आसन्न दिनों के) प्रातः 5 घं. 30 मि. भा.स्टैं.टा. कालिक सूर्यादि स्पष्टग्रह दिए गए हैं। इनके नीचे इनकी कलादि दैनिक गति, इसके नीचे मा. (= मार्गी), व.(= वक्री), इसके नीचे उ. (= उदित), अ.(= अस्त) तथा सबसे नीचे इन ग्रहों के तात्कालिक नक्षत्रचरण निर्दिष्ट हैं।

(x) घटी–पलात्मक पंचांगभाग में करण केवल सूर्योदयव्यापी ही दिए गए हैं। यहां क्षीण तिथि–नक्षत्र–योगों के समाप्तिकाल ही दिए हैं, प्राचीन– पंचांग प्रणाली की तरह इनके पूर्ण भोगकाल नहीं– **यह ध्यान रहे।**

(xi) जहां जिस तिथि–नक्षत्र व योग के आगे घटी–पलात्मक में 60 घ. 00 प. और घण्टा–मिनटात्मक में ---(डैश) लिखा गया है, उसकी वहां वृद्धि समझनी चाहिए और उसका घटी–पलात्मक तथा घण्टा–मिनटात्मक समाप्तिकाल परवर्ती वार में देखिए।

(xii) यहां दिए गए ग्रहों के भोगांश तथा शर भूकेन्द्रिक (Geo-centric) हैं।

इस पञ्चांग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्द

अ. –अस्त।
अं –अंश।
उ. –उदित, उत्तर।
क. –कला।
कृ. –कृष्णपक्ष, कृत्तिका(नक्षत्र)।
क्रां.सा. –क्रान्तिसाम्य (महापात)।
गोधू. –गोधूलि (लग्न)।
ति. –तिथि।
द. –दक्षिण।
दा. –दानपूजन।
दि. –दिन।
दि.ल. –दिन का लग्न।
प्रा. –प्रारम्भ।
भ. –भद्रा।
मा. –मार्गी।
मि. –मिनट।
रा. –राशि।
ल. –लग्न।
व. –वक्री।
वा. –वार।
वि. –विकला।
वै. –वैष्णवों के लिए।
स. –व्रत सबके लिए।
शु –शुक्लपक्ष, शुक्रवार, –शुक्र (ग्रह)।
सं –संक्रान्ति, संवत्।
सां.का –साम्पातिक काल।
स्मा. –स्मार्तों के लिए।

इस पंचांग की तिथ्यादि, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि–नक्षत्र–नक्षत्रचरण प्रवेश, उदयास्त, लोप–दर्शन तथा ग्रहण आदि की गणित **"प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A. अभिजित् प्रकाशन, 59/6, P.O पंचकूला(हरियाणा), Pin-134 109** के निर्देशन में सम्पादित Computer Program द्वारा की जाती है।

हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। 卐 त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु॥

श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तकः

श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तकः

कालसर्प योग विशेषांक

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

विक्रम संवत् २०६८, शक संवत् १९३३
सन् २०११-२०१२, जय हिन्द संवत् ६४-६५

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा चन्द्र

मंत्री गुरु

पञ्चांगप्रवर्तक
अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य
सम्पादक मण्डल
श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त
दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ. शक्तिधर शर्मा M.Sc., Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त
ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

गौरवशाली 84 वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९८४

प्रकाशक : रुचिका पब्लिकेशन्स
459, खारी बावली, दिल्ली-6 फोन : 23977110

मूल्य
७५.००

विशेष नोट : टाइटल पर होलोग्राम देखकर ही पंचांग खरीदें।

संक्षिप्त विषयसूची (सं. २०६८ वि.)

इसवर्ष की विशेष सामग्री

कालसर्प योग विशेषांक*

*इस विशेषांक की विस्तृत विषयसूची के लिए पृष्ठ 253 देखें।

अनन्त श्रीविभूषित श्रीकांचीकामकोटि- पीठाधिपति, जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद (मुद्रा)

श्रीमत्परमहंस – परिव्राजकाचार्यवर्य्य – श्रीमच्छंकर– भगवत्पाद – प्रतिष्ठित – श्रीकांचीकामकोटिपीठाधिप – जगद्गुरु श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र – सरस्वती – श्रीपादैः क्रियते नारायणस्मृतिः।

श्रीसदाशिव आप्टे- महोदयस्य शिष्यैः श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मभिः प्रवर्तितम् अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म– श्रीशक्तिधरशर्म– श्रीमदिन्दुशेखर– शास्त्रिभिः तन्त्रद्वारा शुद्ध–स्फुट– गणितरीत्या परिशोध्य स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्पञ्चांगं धर्मशास्त्रसम्मतैकमात्र– दृग्गणितपद्धत्यनुसारि–व्रत–पर्वादि – धार्मिक – कृत्यानुष्ठाने धार्मिकैः प्रयोज्यम्–इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादकः डॉ.शक्तिधरशर्मा ज्योतिष– गणितादि–विषयेषु महत्प्रागल्भ्यं भजते, इति अस्माभिः सः सप्रसादं " दृक्सिद्धान्तभास्करः ' इति विरुदेन पूर्वमेव सभाजितः। अधुना श्रीमार्त्तण्ड– पंचांगमेतत् स्वर्णजयन्ती–महोत्सवमनुभवत्, अशेषास्तिक–लोकोपकारकं सत् श्रीचन्द्रमौलीश – कृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

काञ्चीक्षेत्रम् नारायणस्मृतिः
'अनल' चैत्रामावस्या (सन् १९७६ ई.)

आगामी वर्ष (सं. 2069 वि.) का विशेषांक– हमारे पाठक वर्षों से **आयुसाधन विशेषांक** की व्याकुलता से प्रतीक्षा कर रहे हैं। स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण इसका प्रकाशन न चाहते हुए भी आगे–आगे सरकता गया। अब उचित स्वास्थ्यलाभ होने पर यह विशेषांक अपने उत्सुक पाठकों को समर्पित करने का मुझ में साहस आया है। विश्वास दिलाता हूँ– आयुसाधन के सभी प्रकारों का विस्तृत, विशद एवम् सरल विवेचन इस विशेषांक में मिलेगा – प्रियव्रत शर्मा

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2011 ई. से 22 मार्च, सन् 2012 ई. तक)

(प्रो. प्रियव्रत [illegible])

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2011 ई. से 22 मार्च, सन् 2012 ई. तक)

(प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित पुस्तक " व्रत-पर्व विवेक" पर आधारित)

व्रत-पर्व	तिथि	वार
जनवरी (सन् 2011 ई.)		
इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन.	श.
खण्डग्रास सूर्यग्रहण (भारत में दिखाई दे)	4 जन.	मं.
लोहड़ी (पं.)	13 जन.	गु.
मकर–संक्रान्ति	14 जन.	शु.
माघस्नान प्रारम्भ	19 जन.	बु.
संकष्ट(गणेश) चतुर्थी	22 जन.	श.
फरवरी (सन् 2011 ई.)		
मौनी अमावस	2 फर.	बु.
महोदय योग	3 फर.	गु.
गौरी तृतीया (गोंतरी)	6 फर.	र.
वरद–तिल–कुन्द चतुर्थी	6 फर.	र.
श्रीपंचमी	8 फर.	मं.
वसन्तपंचमी	8 फर.	मं.
सरस्वती पूजा	8 फर.	मं.
रथसप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	10 फर.	गु.
आरोग्य सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	10 फर.	गु.
भीष्माष्टमी	11 फर.	शु.
भीष्म द्वादशी	15 फर.	मं.
माघस्नान समाप्त	18 फर.	शु.
माघी पूर्णिमा	18 फर.	शु.
मार्च (सन् 2011 ई.)		
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	2 मार्च	बु.
होलाष्टक प्रारम्भ	13 मार्च	र.
गोविन्द द्वादशी	16 मार्च	बु.
होलिकादहन (प्रदोष में)	19 मार्च	श.
होलाष्टक समाप्त	19 मार्च	श.
वसन्तोत्सव	20 मार्च	र.

व्रत-पर्व	तिथि	वार
महाविषुवदिन	20 मार्च	र.
अप्रैल (सन् 2011 ई.)		
वारुणीपर्व	1 अप्रै.	शु.
चान्द्र–संवत् 2067 वि. पूर्ण	3 अप्रै.	र.
चान्द्र–संवत् 2068 वि. प्रा.	4 अप्रै.	चं.
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	4 अप्रै.	चं.
वर्षफलश्रवण	4 अप्रै.	चं.
तैलाभ्यंग / ध्वजारोहण	4 अप्रै.	चं.
गौरी तृतीया (गणगौर)	6 अप्रै.	बु.
आन्दोलन तृतीया	6 अप्रै.	बु.
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	8 अप्रै.	शु.
नाग पंचमी	8 अप्रै.	शु.
हयव्रत	8 अप्रै.	शु.
स्कन्द षष्ठी	9 अप्रै.	श.
श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी	11 अप्रै.	चं.
श्रीराम नवमी	12 अप्रै.	मं.
वासन्त नवरात्र समाप्त	12 अप्रै.	मं.
नवरात्र व्रत पारणा	13 अप्रै.	बु.
वैशाखी (पंजाब)	14 अप्रै.	गु.
विष्णुदमनोत्सव	14 अप्रै.	गु.
अनंग त्रयोदशी	16 अप्रै.	श.
श्रीमहावीर जयन्ती	16 अप्रै.	श.
शिवदमनोत्सव	17 अप्रै.	र.
वैशाख स्नान प्रारम्भ	18 अप्रै.	चं.
मई (सन् 2011 ई.)		
श्रीपरशुराम जयन्ती	5 मई	गु.
अक्षय तृतीया	6 मई	शु.
श्रीगंगा जन्म	10 मई	मं.
श्रीजानकी जयन्ती	11 मई	बु.
श्रीकूर्मजयन्ती,	17 मई	मं.
श्रीबुद्ध पूर्णिमा,	17 मई	मं.

व्रत-पर्व	तिथि	वार
श्रीबुद्ध जयन्ती	17 मई	मं.
वैशाखी पूर्णिमा	17 मई	मं.
वैशाख स्नान समाप्त	17 मई	मं.
भद्रकाली एकादशी (पं.)	28 मई	श.
जून (सन् 2011 ई.)		
वट सावित्री व्रत (अमापक्ष)	1 जून	बु.
भावुका अमावस	1 जून	बु.
रम्भा तृतीया	4 जून	श.
अरण्य षष्ठी	7 जून	मं.
विन्ध्यवासिनी पूजा	7 जून	मं.
श्रीगंगा दशहरा	11 जून	श.
निर्जला एकादशी व्रत	12 जून	र.
वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष)	15 जून	बु.
खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य)	15 जून	बु.
जुलाई (सन् 2011 ई.)		
रथयात्रा (पुरी)	3 जुला.	र.
कुमार षष्ठी	6 जुला.	बु.
विवस्वत् सप्तमी	7 जुला.	गु.
विष्णुशयनोत्सव	11 जुला.	चं.
कोकिला व्रत	14 जुला.	गु.
शिवशयनोत्सव	14 जुला.	गु.
गुरु पूर्णिमा (व्यास पूजा)	15 जुला.	शु.
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि प्रा.	15 जुला.	शु.
हरियाली अमावस	30 जुला.	श.
अगस्त (सन् 2011 ई.)		
मधुस्रवा तृतीया, संधारा तीज	2 अग.	मं.
नागपंचमी	4 अग.	गु.
श्रीदुर्गाष्टमी	6 अग.	श.
ऋक् उपाकर्म	13 अग.	श.

व्रत-पर्व	तिथि	वार
रक्षाबन्धन (राखी)	13 अग.	श.
श्रावणी पूर्णिमा	13 अग.	श.
यजु उपाकर्म	13 अग.	श.
बहुला चतुर्थी, संकष्ट चतुर्थी	17 अग.	बु.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त=गृहस्थियों के लिए)	21 अग.	र.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव=संन्यासियों के लिए)	22 अग.	चं.
गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव)	22 अग.	चं.
श्रीगुग्गा नवमी	23 अग.	मं.
पिठोरी अमावस	29 अग.	चं.
कुशोत्पाटिनी अमावस	29 अग.	चं.
हरितालिका तृतीया	31 अग.	बु.
गौरी तृतीया	31 अग.	बु.
साम उपाकर्म	31 अग.	बु.
सितंबर (सन् 2011 ई.)		
कलंक चतुर्थी	1 सितं.	गु.
सिद्धिविनायक व्रत	1 सितं.	गु.
ऋषि पंचमी	2 सितं.	शु.
सूर्य षष्ठी व्रत	3 सितं.	श.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	4 सितं.	र.
श्रीराधाष्टमी	4 सितं.	र.
श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय)	6 सितं.	मं.
श्रीवामन जयन्ती	8 सितं.	गु.
अनन्त चतुर्दशी	11 सितं.	र.
प्रोष्ठपदी श्राद्ध	11 सितं.	र.
पूर्णिमा श्राद्ध	11 सितं.	र.
महालय श्राद्ध, श्राद्ध प्रारम्भ	13 सितं.	मं.
चन्द्रषष्ठी व्रत	18 सितं.	र.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त	20 सितं.	मं.

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व

(1 जनवरी, सन् 2011 ई. से 22 मार्च, सन् 2012 ई. तक)

व्रत–पर्व	तारीख	वार
महालय श्राद्ध समाप्त	27 सितं.	मं.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	28 सितं.	बु.
अक्तूबर (सन् 2011 ई.)		
उपांगललिता व्रत	1 अक्तू.	श.
सरस्वती आवाहन	3 अक्तू.	चं.
सरस्वती पूजन	4 अक्तू.	मं.
दुर्गाष्टमी, महाष्टमी	4 अक्तू.	मं.
सरस्वती बलिदान	5 अक्तू.	बु.
महानवमी (उपवास, पूजा एवं बलिदान के लिए)	5 अक्तू.	बु.
नवरात्र समाप्त	5 अक्तू.	बु.
सरस्वती विसर्जन	6 अक्तू.	गु.
विजयादशमी (दशहरा)	6 अक्तू.	गु.
भरत मिलाप	7 अक्तू.	शु.
कोजागर व्रत	11 अक्तू.	मं.
शरत्पूर्णिमा	11 अक्तू.	मं.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	11 अक्तू.	मं.
कार्तिकस्नान प्रारम्भ	11 अक्तू.	मं.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	15 अक्तू.	श.
अहोई अष्टमी (पं.)	20 अक्तू.	गु.
गोवत्स द्वादशी	23 अक्तू.	र.
धन त्रयोदशी	25 अक्तू.	मं.
श्रीहनुमान् जयन्ती (उ. भा.)	25 अक्तू.	मं.
नरक चतुर्दशी (पर अरुणोदय वाली)	25 अक्तू.	मं.
दीपावली	26 अक्तू.	बु.
अन्नकूट, गोवर्धनपूजा	27 अक्तू.	गु.
बलिपूजा	27 अक्तू.	गु.
यमद्वितीया, भाई दूज	27 अक्तू.	गु.
श्रीविश्वकर्मा पूजा	27 अक्तू.	गु.
नवम्बर (सन् 2011 ई.)		
सूर्यषष्ठी (बिहार)	1 नवं.	मं.
गोपाष्टमी	3 नवं.	गु.
अक्षय नवमी	3 नवं.	गु.
कूष्माण्ड नवमी	3 नवं.	गु.
भीष्म पंचक प्रारम्भ	6 नवं.	र.
हरिप्रबोधोत्सव	6 नवं.	र.
तुलसी विवाह	7 नवं.	चं.
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि–समाप्त	7 नवं.	चं.
वैकुण्ठ चतुर्दशी	8 नवं.	मं.
कार्तिक पूर्णिमा	10 नवं.	गु.
श्री गुरुनानक जयन्ती	10 नवं.	गु.
कार्तिकस्नान समाप्त	10 नवं.	गु.
भीष्म पंचक समाप्त	10 नवं.	गु.
त्रिपुरोत्सव	10 नवं.	गु.
श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	18 नवं.	शु.
स्कन्द–गुह षष्ठी	30 नवं.	बु.
चम्पा षष्ठी	30 नवं.	बु.
दिसंबर (सन् 2011 ई.)		
मित्र सप्तमी	1 दिसं.	गु.
श्रीगीता जयन्ती	6 दिसं.	मं.
श्रीदत्त जयन्ती	10 दिसं.	श.
खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य)	10 दिसं.	श.
जनवरी (सन् 2012 ई.)		
इंग्लिश नववर्ष 2012 ई. प्रारम्भ	1 जन.	र.
माघस्नान प्रारम्भ	9 जन.	चं.
संकष्ट(गणेश) चतुर्थी	12 जन.	गु.
लोहड़ी (पं.)	13 जन.	शु.
मकर–संक्रान्ति	14 जन.	श.
मौनी अमावस	23 जन.	चं.
गौरी तृतीया (गोंतरी)	26 जन.	गु.
वरद–तिल–कुन्द चतुर्थी	26 जन.	गु.
श्रीपंचमी (वसन्त) पंचमी	28 जन.	श.
लक्ष्मी, सरस्वती पूजन	28 जन.	श.
रथसप्तमी (आरोग्य सप्तमी) (पूर्वारुणोदय वाली)	30 जन.	चं.
भीष्माष्टमी	31 जन.	मं.
फरवरी (सन् 2012 ई.)		
भीष्म द्वादशी	4 फर.	श.
माघस्नान समाप्त	7 फर.	मं.
माघी पूर्णिमा	7 फर.	मं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	20 फर.	चं.
मार्च (सन् 2012 ई.)		
होलाष्टक प्रारम्भ	1 मार्च	गु.
गोविन्द द्वादशी	5 मार्च	चं.
होलिका दहन (प्रदोष में)	7 मार्च	बु.
होलाष्टक समाप्त	8 मार्च	गु.
वसन्तोत्सव	9 मार्च	शु.
महाविषुव दिन	20 मार्च	मं.
वारुणीपर्व	20 मार्च	मं.
चान्द्र–संवत् 2068 वि. पूर्ण	22 मार्च	गु.

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व

आगामी वर्ष (वि. सं. 2069) के लिए

नाम मेला/पर्व	तारीख
(सन् 2012 ई.)	
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	23 मार्च
श्रीदुर्गाष्टमी	31 मार्च
श्री रामनवमी व्रत	1 अप्रै.
श्री महावीर जयन्ती (जैन)	5 अप्रै.
मेष संक्रान्ति (वैशाखी)	13 अप्रै.
श्री परशुराम जयन्ती	24 अप्रै.
श्री बुद्ध जयन्ती	6 मई
श्री गंगा दशहरा	31 मई
गुरु पूर्णिमा	3 जुला.
रक्षाबन्धन	2 अग.
संकष्ट चतुर्थी	5 अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.)	9 अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	10 अग.
श्राद्ध प्रारम्भ	29 सितं.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	16 अक्तू.
श्री दुर्गाष्टमी	22 अक्तू.
दशहरा (विजया–दशमी)	24 अक्तू.
शरत् पूर्णिमा	29 अक्तू.
श्री वाल्मीकि जयन्ती	29 अक्तू.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	2 नवं.
दीपावली	13 नवं.
भाई दूज	15 नवं.
श्री गुरु नानक जयन्ती	28 नवं.
श्री भैरवाष्टमी	6 दिसं.
(सन् 2013 ई.)	
मकर संक्रान्ति	13 जन.
वसन्त पंचमी	14 फर.
श्री गुरु रविदास जयन्ती	25 फर.
श्री महाशिवरात्रि व्रत	10 मार्च

वर्गीकृत व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2011 ई. से 22 मार्च, सन् 2012 ई. तक)–(प्रो. प्रियव्रत शर्मा)

एकादशी व्रत

(सन् 2011 ई.)

मास	तिथि
पौष शुक्ल	16 जन.
माघ कृष्ण	29 जन.
माघ शुक्ल	14 फर.
फाल्गुन कृष्ण	28 फर.
फाल्गुन शुक्ल	16 मार्च
चैत्र कृष्ण	30 मार्च
चैत्र शुक्ल	14 अप्रै.
वैशाख कृष्ण (स्मा.)	28 अप्रै.
वैशाख शुक्ल (स्मा.)	13 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	28 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	12 जून
आषाढ़ कृष्ण	27 जून
आषाढ़ शुक्ल	11 जुला.
श्रावण कृष्ण	26 जुला.
श्रावण शुक्ल	9 अग.
भाद्रपद कृष्ण	25 अग.
भाद्रपद शुक्ल	8 सितं.
आश्विन कृष्ण (स्मा.)	23 सितं.
आश्विन शुक्ल	7 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	23 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल	6 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	21 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	6 दिसं.
पौष कृष्ण	21 दिसं.
(सन् 2012 ई.)	
पौष शुक्ल	5 जन.
माघ कृष्ण	19 जन.
माघ शुक्ल	3 फर.
फाल्गुन कृष्ण (स्मा.)	17 फर.
फाल्गुन शुक्ल	4 मार्च
चैत्र कृष्ण	18 मार्च

(स्मा. = स्मार्तों का व्रत)

वैष्णवों का व्रत स्मार्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "स्मा." नहीं लिखा है, वह व्रततिथि स्मार्त और वैष्णव दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् 2011 ई.)

पक्ष	तिथि
पौष शुक्ल	5 जन.
माघ कृष्ण	20 जन.
माघ शुक्ल	4 फर.
फाल्गुन कृष्ण	19 फर.
फाल्गुन शुक्ल	5 मार्च
चैत्र कृष्ण	20 मार्च
चैत्र शुक्ल	4 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	18 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	4 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	18 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	2 जून
आषाढ़ कृष्ण	16 जून
आषाढ़ शुक्ल	2 जुला.
श्रावण कृष्ण	16 जुला.
श्रावण शुक्ल	31 जुला.
भाद्रपद कृष्ण	14 अग.
भाद्रपद शुक्ल	29 अग.
आश्विन कृष्ण	13 सितं.
आश्विन शुक्ल	28 सितं.
कार्तिक कृष्ण	13 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल	27 अक्तू.
मार्गशीर्ष कृष्ण	11 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	26 नवं.
पौष कृष्ण	11 दिसं.
पौष शुक्ल	25 दिसं.
(सन् 2012 ई.)	
माघ कृष्ण	10 जन.
माघ शुक्ल	24 जन.
फाल्गुन कृष्ण	8 फर.
फाल्गुन शुक्ल	22 फर.
चैत्र कृष्ण	9 मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिए गए पक्ष कृष्णादि हैं।

श्रीसत्यनारायण व्रत

(सन् 2011 ई.)

मास	तिथि
पौष	19 जन.
माघ	17 फर.
फाल्गुन	19 मार्च
चैत्र	17 अप्रै.
वैशाख	16 मई
ज्येष्ठ	15 जून
आषाढ़	14 जुला.
श्रावण	13 अग.
भाद्रपद	11 सितं.
आश्विन	11 अक्तू.
कार्तिक	10 नवं.
मार्गशीर्ष	10 दिसं.
पौष (सन् 2012 ई.)	8 जन.
माघ	7 फर.
फाल्गुन	7 मार्च

दशावतार जयन्तियां (सन् 2011 ई.)

जयन्ती	तिथि
श्रीमत्स्य जयन्ती	6 अप्रै.
श्रीरामनवमी	12 अप्रै.
श्रीपरशुराम जयन्ती	5 मई
श्रीनृसिंह जयन्ती	16 मई
श्रीकूर्म जयन्ती	17 मई
श्रीबुद्ध जयन्ती	17 मई
श्रीकल्कि जयन्ती	4 अग.
* श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	21 अग.
श्रीवराह जयन्ती	31 अग.
श्रीवामन जयन्ती	8 सितं.

* अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्णजन्माष्टमी का व्रत करना चाहिए। श्रीमद्भागवत एवं स्कन्द – विष्णु पुराण आदि इसी का समर्थन करते हैं।

श्रीगणेशचतुर्थी व्रत

(सन् 2011 ई.)

मास	तिथि
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	22 जन.
फाल्गुन	21 फर.
चैत्र	22 मार्च
वैशाख	21 अप्रै.
ज्येष्ठ	20 मई
आषाढ़	19 जून
श्रावण	18 जुला.
भाद्रपद (संकष्ट चतुर्थी)	17 अग.
आश्विन	16 सितं.
कार्तिक	15 अक्तू.
मार्गशीर्ष	14 नवं.
पौष	14 दिसं.
(सन् 2012 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	12 जन.
फाल्गुन	11 फर.
चैत्र	11 मार्च

श्रीसिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत

(2011 ई.)

मास	तिथि
पौष	8 जन.
माघ	6 फर.
फाल्गुन	8 मार्च
चैत्र	7 अप्रै.
वैशाख	7 मई
ज्येष्ठ	5 जून
आषाढ़	4 जुला.
श्रावण	3 अग.
भाद्रपद	1 सितं.
आश्विन	30 सितं.
कार्तिक	30 अक्तू.
मार्गशीर्ष	28 नवं.
पौष	28 दिसं.
(सन् 2012 ई.)	
माघ	26 जन.
फाल्गुन	25 फर.

प्रदोष व्रत

(सन् 2011 ई.)

मास	तिथि
पौष कृष्ण (शनि)	1 जन.
पौष शुक्ल (सोम)	17 जन.
माघ कृष्ण (सोम)	31 जन.
माघ शुक्ल	16 फर.
फाल्गुन कृष्ण	2 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	17 मार्च
चैत्र कृष्ण	31 मार्च
चैत्र शुक्ल	15 अप्रै.
वैशाख कृष्ण (शनि)	30 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	15 मई
ज्येष्ठ कृष्ण (सोम)	30 मई
ज्येष्ठ शुक्ल (सोम)	13 जून
आषाढ़ कृष्ण (भौम)	28 जून
आषाढ़ शुक्ल (भौम)	12 जुला.
श्रावण कृष्ण	28 जुला.
श्रावण शुक्ल	11 अग.
भाद्रपद कृष्ण	26 अग.
भाद्रपद शुक्ल	9 सितं.
आश्विन कृष्ण	25 सितं.
आश्विन शुक्ल	9 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण (सोम)	24 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल (भौम)	8 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	23 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	7 दिसं.
पौष कृष्ण	22 दिसं.
(सन् 2012 ई.)	
पौष शुक्ल	6 जन.
माघ कृष्ण	20 जन.
माघ शुक्ल	5 फर.
फाल्गुन कृष्ण	19 फर.
फाल्गुन शुक्ल (भौम)	6 मार्च
चैत्र कृष्ण (सोम)	19 मार्च

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2011 ई. से 22 मार्च, सन् 2012 ई. तक)

मासिक शिवरात्रिव्रत (सन् 2011 ई.)

मास	तिथि
पौष	2 जन.
माघ	1 फर.
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	2 मार्च
चैत्र	1 अप्रैल
वैशाख	1 मई
ज्येष्ठ	31 मई
आषाढ़	29 जून
श्रावण	29 जुला.
भाद्रपद	27 अग.
आश्विन	25 सितं.
कार्तिक	25 अक्तू.
मार्गशीर्ष	23 नवं.
पौष	23 दिसं.
(सन् 2012 ई.)	
माघ	21 जन.
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	20 फर.
चैत्र	20 मार्च

पूर्णिमा व्रत (सन् 2011 ई.) (स्नान-दानार्थ, उदयव्यापिनी पूर्णिमा में)

मास	तिथि
पौष	19 जन.
माघ	18 फर.
फाल्गुन	19 मार्च
चैत्र	18 अप्रै.
वैशाख	17 मई
ज्येष्ठ	15 जून
आषाढ़	15 जुला.
श्रावण	13 अग.
भाद्रपद	12 सितं.
आश्विन	11 अक्तू.
कार्तिक	10 नवं.
मार्गशीर्ष	10 दिसं.
(सन् 2012 ई.)	
पौष	9 जन.
माघ	7 फर.
फाल्गुन	8 मार्च

संक्रान्तियां (सन् 2011 ई.)

मास	तिथि
माघ	14 जन.
फाल्गुन	13 फर.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	14 अप्रै.
ज्येष्ठ	15 मई
आषाढ़	15 जून
श्रावण	16 जुला.
भाद्रपद	17 अग.
आश्विन	17 सितं.
कार्तिक	17 अक्तू.
मार्गशीर्ष	16 नवं.
पौष	16 दिसं.
(सन् 2012 ई.)	
माघ	14 जन.
फाल्गुन	13 फर.
चैत्र	14 मार्च

अमावस्याएं (स्नान-दानार्थ)(2011 ई.)

मास	तिथि
पौष (भौम)	4 जन.
माघ	2 फर.
फाल्गुन	4 मार्च
चैत्र	3 अप्रै.
वैशाख (भौम)	3 मई
ज्येष्ठ	1 जून
आषाढ़	1 जुला.
श्रावण (शनैश्चरी)	30 जुला.
भाद्रपद (सोम)	29 अग.
आश्विन (भौम)	27 सितं.
कार्तिक	26 अक्तू.
मार्गशीर्ष	25 नवं.
पौष (शनैश्चरी)	24 दिसं.
माघ(सोम)(सन् 2012 ई.)	23 जन.
फाल्गुन (भौम)	21 फर.
चैत्र	22 मार्च

मासिक श्रीदुर्गाष्टमी व्रत (2011 ई.)

मास	तिथि
पौष	12 जन.
माघ	11 फर.
फाल्गुन	13 मार्च
चैत्र	11 अप्रै.
वैशाख	11 मई
ज्येष्ठ	9 जून
आषाढ़	8 जुला.
श्रावण	6 अग.
भाद्रपद	5 सितं.
आश्विन	4 अक्तू.
कार्तिक	3 नवं.
मार्गशीर्ष	2 दिसं.
(सन् 2012 ई.)	
पौष	1 जन.
माघ	31 जन.
फाल्गुन	1 मार्च

मासिक कालाष्टमी व्रत (2011 ई.)

मास	तिथि
माघ	26 जन.
फाल्गुन	24 फर.
चैत्र	26 मार्च
वैशाख	25 अप्रै.
ज्येष्ठ	24 मई
आषाढ़	23 जून
श्रावण	23 जुला.
भाद्रपद	21 अग.
आश्विन	20 सितं.
कार्तिक	20 अक्तू.
मार्गशीर्ष	18 नवं.
पौष	18 दिसं.
(सन् 2012 ई.)	
माघ	16 जन.
फाल्गुन	14 फर.
चैत्र	14 मार्च

अरुणाय त्रयोदशी

(श्रीसंगमेश्वर महादेव अरुणाय (पिहोवा) के शिवत्रयोदशी पर्व) (उदयव्यापिनी कृष्ण त्रयोदशी)

मास	तिथि
पौष (2011 ई.)	2 जन.
माघ	31 जन.
फाल्गुन	2 मार्च
चैत्र	1 अप्रै.
वैशाख	1 मई
ज्येष्ठ	30 मई
आषाढ़	29 जून
श्रावण	28 जुला.
भाद्रपद	27 अग.
आश्विन	25 सितं.
कार्तिक	25 अक्तू.
मार्गशीर्ष	23 नवं.
पौष	22 दिसं.
माघ (सन् 2012 ई.)	21 जन.
फाल्गुन	19 फर.
चैत्र	20 मार्च

आश्विन कृष्णपक्ष के श्राद्ध (सन् 2011 ई.)

तिथि	दिनांक
प्रोष्ठपदी / पूर्णिमा	11 सितं.
प्रतिपदा	13 सितं.
द्वितीया	14 सितं.
तृतीया	15 सितं.
चतुर्थी	16 सितं.
पंचमी / भरणी श्राद्ध	17 सितं.
षष्ठी	18 सितं.
सप्तमी	19 सितं.
अष्टमी	20 सितं.
☆ नवमी	21 सितं.
दशमी	22 सितं.
एकादशी	23 सितं.
✢ द्वादशी / संन्यासियों का श्राद्ध	24 सितं.
त्रयोदशी / मघा श्राद्ध	25 सितं.
✿ चतुर्दशी	26 सितं.
चतुर्दशी अमावस, पूर्णिमा एवं अज्ञात मृत्युतिथि वालों का महालय श्राद्ध	27 सितं.

☆ सौभाग्यवती स्त्री का श्राद्ध सर्वदा नवमी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्युतिथि कोई भी हो।

✢ संन्यासी का श्राद्ध हमेशा द्वादशी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्युतिथि कोई भी क्यों न हो।

✿ शस्त्र-विष आदि से मृतों (अर्थात् अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध चतुर्दशी के दिन होता है, भले ही उनकी मृत्यु किसी भी तिथि में हुई हो। चतुर्दशी तिथि में सामान्य मृत्यु वालों का महालय श्राद्ध अमावस्या में करना चाहिए।

क्रिश्चियन त्योहार (सन् 2011 ई.)

त्योहार	तिथि
नया साल प्रारम्भ	1 जन.
गुड फ्राई डे	22 अप्रै.
ईस्टर सण्डे	24 अप्रै.
क्रिसमस डे	25 दिसं.
(सन् 2012 ई.)	
नया साल प्रारम्भ	1 जन.

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2011 ई. से 22 मार्च, सन् 2012 ई. तक)

जैन व्रतपर्व

(सन् 2011 ई.)	
श्रीमेरुत्रयोदशी	31 जन.
मर्यादा महोत्सव	10 फर.
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	12 अप्रै.
श्रीजैन महावीर जयन्ती	16 अप्रै.
श्रीमहावीर केवलज्ञान दिवस	13 मई
श्रीमहावीर च्यवन दिवस	6 जुला.
तेरापन्थ स्थापना दिवस	15 जुला.
चातुर्मास्य व्रत-नियम आदि प्रारम्भ	15 जुला.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	25 अग.
श्रीजयाचार्य निर्वाण दिवस	26 अग.
संवत्सरी महापर्व	1 सितं.
श्रीकालू निर्वाण दिवस	3 सितं.
आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण	6 सितं.
आचार्य भिक्षु निर्वाण दिवस	10 सितं.
श्रीमहावीर निर्वाण दिवस	26 अक्तू.
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	28 अक्तू.
ज्ञानपंचमी	31 अक्तू.
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त	7 नवं.
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	20 नवं.
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा दिवस	15 दिसं.
जन्म श्रीपार्श्वनाथ जी	20 दिसं.
(सन् 2012 ई.)	
श्रीमेरुत्रयोदशी	21 जन.
मर्यादा महोत्सव	30 जन.

महापुरुषों के जन्मदिन

(सन् 2011 ई.)	
श्रीनेता जी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
स्वामी विवेकानन्द	25 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	25 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	5 फर.
श्रीगुरु रविदास जी	18 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	27 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	6 मार्च
श्रीचैतन्य महाप्रभु	19 मार्च
डॉ. अम्बेडकर	14 अप्रै.
श्रीवल्लभाचार्य	28 अप्रै.
श्रीछत्रपति शिवाजी	5 मई
आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य	8 मई
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	9 मई
श्रीरामानुजाचार्य (उ.भा.)	9 मई
श्रीमहाराणाप्रताप	4 जून
लो. मा. बालगंगाधर तिलक	23 जुला.
गोस्वामी तुलसीदास जी	5 अग.
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं.
महाराज अग्रसेन जी	28 सितं.
श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.
श्रीलालबहादुर शास्त्री	2 अक्तू.
श्रीमाध्वाचार्य	6 अक्तू.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू.
श्रीवीर वैरागी	8 नवं.
श्रीजवाहर लाल नेहरु	14 नवं.
भगवान् श्रीसत्यसाईं बाबा	23 नवं.
(सन् 2012 ई.)	
स्वामी विवेकानन्द	15 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	15 जन.
श्रीनेता जी सुभाशचन्द्र बोस	23 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	25 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
श्रीगुरु रविदास जी	7 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	16 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	23 फर.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	8 मार्च

मुस्लिम त्योहार

(सन् 2011 ई.)	
चेहल्म	25 जन.
आखिरी चहार शम्बा	2 फर.
शहादत-ए-इमाम हसन	2 फर.
ईद-ए-मिलाद	16 फर.
ईद-ए-मौलाद	21 फर.
फतिहायज़दहुम	17 मार्च
जन्म श्री हज़रत अली	16 जून
शब-ए-मिराज	30 जून
शब-ए-बरात	17 जुला.
रमज़ान का पहला दिन	2 अग.
शहादत-ए-हज़रत अली	22 अग.
जमतुल विदा	26 अग.
शब-ए-कद्र	28 अग.
ईद-उल-फित्र	31 अग.
इदुलज्जुहा	7 नवं.
मुहर्रम (ताज़िया)	6 दिसं.
(सन् 2012 ई.)	
चेहल्म	14 जन.
आखिरी चहार शम्बा	18 जन.
शहादत-ए-इमाम हसन	23 जन.
ईद-ए-मिलाद	5 फर.
ईद-ए-मौलाद	10 फर.
फतिहायज़दहुम	5 मार्च

सूचना

सभी मुस्लिम त्योहार चन्द्र- दर्शन (नया चाँद दिखाई देने) पर ही निर्भर करते हैं। कई बार स्थानभेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख आगे-पीछे हो जाने पर इन मुस्लिम त्योहारों के दिन में एक दिन का अन्तर संभव है।

क्या किससे पूछें ?

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' गत विषयों से सम्बद्ध अपनी शंकाओं का समाधान ऐसे प्राप्त करें।

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' में सिद्धान्त, गणित, फलित, मुहूर्त्त, व्रतपर्व, तेजी-मन्दी आदि अनेक विषयों का समावेश रहता है। इन विषयों से सम्बद्ध शंकाएं हमारे जिज्ञासु पाठकों के मस्तिष्क में कई बार उत्पन्न होती हैं, जिनके समाधानार्थ वे ठीक से समझ नहीं पाते कि किससे सम्पर्क साधा जाए। किस विषय की शंका के समाधानार्थ किससे सम्पर्क करना उचित है- यह हम यहां स्पष्ट किए देते हैं-

(i) तिथ्यादि पंचांग, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि-नक्षत्र-नक्षत्रचरणप्रवेश, वक्रता-मार्गिता, उदयास्त, लोप-दर्शन, ग्रहण, ग्रहयुति आदि खगोलीय चमत्कार, अयनांश, अक्षांश, रेखांश, लग्न, सन्दिग्ध व्रतपर्व-निर्णय, विवाहादि मुहूर्त्त तथा अन्य सभी सिद्धान्त-गणित-फलित-सम्बन्धी जिज्ञासाओं के शान्त्यर्थ मुझसे सम्पर्क करें।

उत्तर के लिए मुझे जवाबी पत्र या Postal Stamps आदि न भेजें। आपकी उचित शंकाओं का निवारण मैं अपने व्यय से ही करुंगा। लेकिन मैं इसके लिए किसी भी तरह से बाधित नहीं हूँ-यह ध्यान में रखें।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A., 'अभिजित् प्रकाशन, 59/6,
P.O. पंचकूला- 134 109, Phone-0172-2565 303

(ii) राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र, राजनैतिकदलों के चुनावचक्र में जय-पराजय, राजनेताओं का उत्थान-पतन, पाक्षिक-मासिक-वार्षिक फलादेश, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र-रहस्य, वृष्टि, वायुमण्डल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़, भूकम्प आदि दैवी एवं प्राकृतिक आपदा तथा विश्वशान्ति-विप्लव आदि से सम्बद्ध पंचांगगत भविष्यवाणियों के विषय में तथा जन्मकुण्डली, टेवा, प्रश्नलग्न आदि के निर्माण एवं इनकी फीस वग़ैरह की जानकारी एवम् वायदा-हाजर बाज़ार के चांस, सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्स, चना, गेहूं, ग्वार आदि अनाज; तिल, सरसों, बिनौला आदि तिलहन तथा रुई, कपास, ऊन आदि जिन्स की पंचांग में प्रकाशित वार्षिक-मासिक-पाक्षिक-दैनिक तेजी-मन्दी- सम्बन्धी पूछताछ के लिए हम से सम्पर्क कीजिए-

पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,
पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली,
ज़िला मोहाली (पंजाब), PIN 140 103,
PHONE: 0160-2641 277. FAX- 0160-2641 577

इसके अतिरिक्त पंचांग में प्रकाशित अन्य किसी लेख आदि के विषय में अपनी शंकाओं के निवारणार्थ उसके लेखक से ही सम्पर्क करना चाहिए।

—सम्पादक मण्डल

सिक्ख पर्व (सं. 2068 वि.) (सन् 2011–12 ई.)

सिक्ख पर्व

संशोधित नानकशाही कैलेण्डर अनुसार (2011 ई.)

नाम श्रीगुरु साहिबान	पुरातन परम्परा अनुसार तारीख			संशोधित नानकशाही कैलेण्डर अनुसार (2011 ई.)			
	ता. प्रकाश दिवस	ता. गुरयाई मिली	ता. जोतीजोत समाए	ता. प्रकाश दिवस	ता. गुरयाई मिली	ता. जोतीजोत समाए	संक्रान्ति*
श्री गुरु नानकदेव जी	10 नवम्बर,	अवतार दिन से	23 सितम्बर,	10 नवम्बर	अवतार दिन से	22 सितम्बर	*शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, श्री अमृतसर की ओर से प्रकाशित मासिक-पत्रिका 'गुरुमत प्रकाश' (अप्रैल, 2010 ई.) के पृष्ठ 89 के अनुसार तारा अंकित पर्व और संक्रान्ति अब पुरातन परम्परा (विक्रमी) के अनुसार ही हुआ करेंगे।
श्री गुरु अंगददेव जी	4 मई,	17 सितंबर,	7 अप्रैल,	18 अप्रैल	18 सितम्बर	16 अप्रैल	
श्री गुरु अमरदास जी	16 मई,	4 अप्रैल,	12 सितंबर,	23 मई	16 अप्रैल	16 सितम्बर	
श्री गुरु रामदास जी	14 अक्तूबर,	10 सितंबर,	31 अगस्त,	9 अक्तूबर	16 सितम्बर	16 सितम्बर	
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	24 अप्रैल,	30 अगस्त,	5 जून,	2 मई	16 सितम्बर	05 जून*	
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	16 जून,	25 मई,	8 अप्रैल.	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च	
श्री गुरु हरिराय जी	5 फरवरी,2012 ई.	20 मार्च, 2012 ई.	21 अक्तूबर,	31 जनवरी	14 मार्च	20 अक्तूबर	
श्री गुरु हरकिशन जी	24 जुलाई,	21 अक्तूबर,	17 अप्रैल,	23 जुलाई	20 अक्तूबर	16 अप्रैल	
श्री गुरु तेग़बहादुर जी	22 अप्रैल,	17 अप्रैल,	29 नवं.	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवम्बर	
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	31 दिसं.	27 नवंबर	31 अक्तूबर,	11 जन./31 दिसं.*	24 नवम्बर	31 अक्तूबर*	
खालसापंथ साजना दिवस	वैशाख 1, मुताबिक	14 अप्रैल, 2011 ई.		14 अप्रैल, 2011 ई.*			
प्रथम प्रकाश गुरुग्रन्थ साहिब जी	भाद्र. शुक्ल 1, मुताबिक	29 अगस्त, 2011 ई.		1 सितंबर, 2011 ई.			
गुरुग्रन्थ साहिब जी को गुरयाई मिली	कार्त्तिक शुक्ल 2, मुताबिक	28 अक्तूबर, 2011 ई.		28 अक्तूबर, 2011 ई.*			

भारत सरकार के अवकाश (1 जनवरी, सन् 2011 ई. से 22 मार्च, सन् 2012 ई. तक)

(सूचना :– अवकाश की इस सूची को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लेना चाहिए।)

						(सन् 2012 ई.)	
इंग्लिश नववर्ष (2011 ई.) प्रारम्भ	1 जन.	श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	16 अप्रै.	जन्म श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.	इंग्लिश नववर्ष (2012ई.) प्रारम्भ	1 जन.
अ. दि. श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी	11 जन.	गुड फ्राई डे	22 अप्रै.	श्रीदुर्गाष्टमी	4 अक्तू.	मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.
मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.	श्रीबुद्ध जयन्ती	17 मई	दशहरा	6 अक्तू.	पोंगल	15 जन.
पोंगल	15 जन.	जन्म श्रीहजरत अली	16 जून	श्रीवाल्मीकि जयन्ती	11 अक्तू.	भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.	रथयात्रा (पुरी)	3 जुला.	दीपावली	26 अक्तू.	ईद–ए–मिलाद	5 फर.
ईद–ए–मिलाद	16 फर.	रक्षाबन्धन (राखी)	13 अग.	भाई दूज	28 अक्तू.	जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	7 फर.
जन्मदिन श्री गुरु रविदास जी	18 फर.	भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग.	इदुलज्जुहा	7 नवं.	श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	20 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	2 मार्च	श्रीगणेश चतुर्थी	17 अग.	श्रीगुरुनानक जयन्ती	10 नवं.		
गुड़ी पड़वा	4 अप्रै.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	21 अग.	बलि. दि. श्रीगुरु तेग़बहादुर जी	24 नवं.		
श्रीराम नवमी	12 अप्रै.	जमतुलविदा	26 अग.	मुहर्रम (ताज़िया)	6 दिसं.		
वैशाखी (पंजाब)	14 अप्रै.	इदुल–फित्र	31 अग.	क्रिसमस डे	25 दिसं.		
विशु (केरल)	14 अप्रै.	ओणम (केरल)	8 सितं.	अ. दि. श्रीगुरु गोबिन्दसिंह जी	31 दिसं.		

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जन., सन् 2011 ई. से 22 मार्च, 2012 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2011 ई.)	तारीख
जनवरी 2011 ई.	
लोहड़ी दाऊ(मोहाली) (पं.)	14 जन.
लोहड़ी बिंदरख(रोपड़) (पं.)	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी (मस्तुआणा) (पं.) प्रा.	30 जन.
फरवरी 2011 ई.	
वसन्त पंचमी	8 फर.
बलिदान दिवस बाबा दीप सिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़–पं.)	10 फर.
ज.दि.गु. हरिराय जी, सिंहपुरा–कुराली (पं.)	16 फर.
मार्च 2011 ई.	
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	2 मार्च
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	2 मार्च
नगर कीर्तन होला महल्ला, चमकौर साहिब	15 मार्च
ज. दि. सं. बा. अतर सिंह जी– (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	20 मार्च
श्री वीरमदास, बघौछी (पटियाला)	22 मार्च
शीतला माता (कुराली– पं.)	24 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	24 मार्च
ज. दि. सं. बा. निधान सिंह जी (श्री हजूरसाहिब वाले) ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च
अप्रैल 2011 ई.	
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	2 अप्रै.
माइसर खाना (पं.)	9 अप्रै.
नरीसैंमरी, मथुरा (उ.प्र.)	11 अप्रै.

नाम मेला/पर्व (सन् 2011 ई.)	तारीख
श्री मनसादेवी (हरि.)	11 अप्रै.
बहुफोर्ट (जम्मू–काश्मीर)	11 अप्रै.
ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर)(पं.)	11 अप्रै.
माता कांसादेवी (कांसल, मोहाली) प्रा.	16 अप्रै.
कशाधा, नहयाणी सह (कुल्लू) प्रा.	16 अप्रै.
देवी मेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	17 अप्रै.
मेला माता नैनादेवी, दाचर (करनाल)	17 अप्रै.
पीपल जातर (कुल्लू) प्रा.	29 अप्रै.
मई 2011 ई.	
पिंजौर (हरि.)	3 मई
आनी आऊटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	7 मई
समागम (8 दिन) हरिहरघाट, मणिकर्ण (हि.प्र.) प्रा.	11 मई
ज. दि. सं.बा. तेजा सिंह जी, बदरीपुर पांवटा सा. (हि.प्र.) प्रा.	15 मई
ढूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	15 मई
बंजार (कुल्लू) प्रा.	15 मई
साढ़ी जातर, नगर (हि.प्र.) प्रा.	19 मई
जून 2011 ई.	
पुण्यतिथि साईं टेऊँ राम जी,	7 जून
क्षीर भवानी (जम्मू–काश्मीर)	9 जून
श्रीगंगा दशहरा	11 जून
सपोर यात्रा– धारलदा (उधमपुर)	11 जून
नमाणी एकादशी, नौवें गुरु, बरहे (बठि.) पं.	12 जून
पीपलू , ऊना (हि.प्र.)	12 जून
भून्तर (कुल्लू) प्रा.	15 जून
पाण्डवों का बाड़ी मेला (सरयांझ) सोलन	15 जून
शुद्ध महादेव यात्रा (उधमपुर)	15 जून
यादगारी दिवस बीबी शरण कौर जी, गु. श्रीअमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	29 जून

नाम मेला/पर्व (सन् 2011 ई.)	तारीख
जुलाई 2011 ई.	
ब. सं. बा. तेजा सिंह जी, नानकसर चीमा (पं.)/बड़ू साहिब (हि. प्र.) प्रा.	1 जुला.
जयन्ती सतगुरु साईं टेऊँराम जी सप्त सरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	6 जुला.
ब.बा. सन्तोख सिंह जी/भा. दर्शन सिंह गुरुद्वारा जन्मस्थान नानकसर, चीमा प्रा.	9 जुला.
शरीक भवानी (जम्मू–काश्मीर)	9 जुला.
मेला पीरभीखनशाह (घड़ाम,पटियाला) प्रा.	13 जुला.
गुरु पूर्णिमा, नदीपार आश्रम (कुराली), पं.	15 जुला.
मुड़िया पूनौ (गोवर्धन), मथुरा (उ.प्र.)	15 जुला.
अगस्त 2011 ई.	
ब. सं. बा. निधान सिंह जी, ढींडसा (लुधि.)	4 अग.
नागपंचमी (जैत), मथुरा (उ.प्र.)	4 अग.
बरसी सं. बाबा प्यारा सिंह जी, (झाड़ साहिब वाले) चमकौर साहिब प्रा.	5 अग.
ज. दि. सं. बा. ईशर सिंह जी (राड़ा सा. वाले), आलोवाल, पटियाला	5 अग.
श्रीनयना देवी (हि. प्र.)	6 अग.
श्री चिन्तपूर्णी (हि. प्र.)	6 अग.
श्री अमरनाथ यात्रा (काश्मीर)	13 अग.
ब. सं. बा. हरचन्द सिंह लौंगोवाल	20 अग.
श्रीकृष्णजन्माष्टमी, मथुरा (उ.प्र.)	22 अग.
ब.सं.बा. ईशर सिंह जी (राड़ा सा. वाले) प्रा.	24 अग.
कैलाशयात्रा (काश्मीर) प्रा.	27 अग.
श्रीगोसाईआणां, कुराली (पंजाब)	30 अग.
सितंबर 2011 ई.	
श्रीगणेशोत्सव (मण्डी, ऊना) हि.प्र. प्रारम्भ	1 सितं.

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जन., सन् 2011 ई. से 22 मार्च, 2012 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2011 ई.)	तारीख
मेला पट्ट (काश्मीर) प्रारम्भ	2 सितं.
श्रीगर्गाचार्य जयन्ती	2 सितं.
मेला श्रीबलदेव छठ, पलवल, हरियाणा	3 सितं.
गरुणगोविन्द (छटीकरा, मथुरा) (उ.प्र.)	5 सितं.
श्रीवामन द्वादशी (अम्बाला, पटियाला)	9 सितं.
बाबा सोढल (जालन्धर)	11 सितं.
छपार (पं.)	11 सितं.
श्रीगोईदवाल साहिब (तरनतारन) पं.	12 सितं.
श्री आशापति यात्रा (काश्मीर) प्रा.	26 सितं.
अक्तूबर 2011 ई.	
श्रीज्वालामुखी (हि.प्र.)	4 अक्तू.
श्रीतारादेवी (हि.प्र.)	4 अक्तू.
ज्वालामुखी (हरचोवाल,गुरदासपुर) पं.	4 अक्तू.
दशहरा (कुल्लू) प्रा.	6 अक्तू.
मेला माता नयनादेवी, दाचर (करनाल)	10 अक्तू.
श्रीशाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	10 अक्तू.
देवीमेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	10 अक्तू.
उर्स माणकपुर शरीफ (मोहाली) प्रारम्भ	13 अक्तू.
भण्डारा श्री हरिओम् जी (माणकपुर शरीफ)	22 अक्तू.
दीपावली (अमृतसर)	26 अक्तू.
नवंबर 2011 ई.	
बाबा रुद्रानन्द, नारी (ऊना, हि.प्र.) प्रा.	6 नवं.

नाम मेला/पर्व (सन् 2011 ई.)	तारीख
रेणुका (नाहन) हि.प्र.	6 नवं.
ज. दि. श्रीवीर वैरागी (नकोदर) (पं.)	8 नवं.
मेला बग्गीदेहरी कुण्डे लालोवाल (गुरदासपुर)	9 नवं.
श्रीरामतीर्थ (अमृतसर, पं.)	10 नवं.
कपालमोचन (हरि.)	10 नवं.
श्रीपुष्करराज (राज.)	10 नवं.
बाल मेला	14 नवं.
पुरमण्डल, देविकास्नान (जम्मू)	24 नवं.
दिसम्बर 2011 ई.	
ब. बा. विसाखा सिंह, दुदेहर सा.(तरनतारन) पं.	5 दिसं.
ब. सं. बा. राम सिंह/ बूटा सिंह, नानकसर चीमा	5 दिसं.
ब. बीबी तेज कौर जी, मानपुर,फतेहगढ़ सा.	24 दिसं.
ज. दि. सं. बा. किशन सिंह जी, (राड़ा सा. वाले) मसीतां,(सिरसा–हरि.)	24 दिसं.
जोड़मेला श्री फतेहगढ़ साहिब, (पं.) प्रा.	26 दिसं.
संगीत मेला बाबा हरवल्लभ (जालन्धर) प्रा.	28 दिसं.
ब. सं. बा. किशन सिंह जी, गु. कर्मसर साहिब, राड़ा साहिब (लुधि.)प्रा.	30 दिसं.
जनवरी सन् 2012 ई.	
लोहड़ी दाऊ (मोहाली) (पं.)	14 जन.

नाम मेला/पर्व (सन् 2011 ई.)	तारीख
लोहड़ी बिंदरख (रोपड़,) (पं.)	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
वसन्त पंचमी	28 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी, (मस्तुआणा) (पं.) प्रा.	30 जन.
फरवरी 2012 ई.	
ज. दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा–कुराली (पं.)	5 फर.
बलिदान दिवस बाबा दीप सिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़–पं.)	10 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	20 फर.
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	20 फर.
मार्च 2012 ई.	
नगर कीर्तन होला महल्ला, चमकौर साहिब	3 मार्च
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	9 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	12 मार्च
श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	13 मार्च
ज. दि. सं. बा. अतर सिंह जी, (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	15 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	21 मार्च

यदि आप चाहते हैं कि– आपके नगर/ ग्राम में होने वाले मेलों आदि को इस पृष्ठ पर प्रकाशित सूची में प्रविष्ट किया जाए, तो तिथि, प्रविष्टा या अंग्रेजी तारीख, जिसके अनुसार उसे मनाया जाता हो– पूर्ण विवरणसहित लिख भेजें– धन्यवाद।

–सम्पादक

सुबोध, सरल शैली/भाषा में दिए गए हैं, जिन्हें पढ़कर कोई भी व्यक्ति इन व्रत–पर्वों की तिथियों का निर्धारण स्वयं सरलता से कर सकता है। विस्तृत विज्ञापन इस पंचांग के अन्त में देखें।

श्रीगणेशचतुर्थी एवम् श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत

भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चन्द्रोदय (संवत् 2068 वि.) (भा. स्टैं. टा.)

स्थान	श्रीगणेशचतुर्थी चन्द्रोदय (सूर्यास्त बाद) (I.S.T.)												श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय (I.S.T.)	
	21 अप्रै., 2011 ई. घं. मि.	20 मई, 2011 ई. घं. मि.	19 जून 2011 ई. घं. मि.	18 जुला. 2011 ई. घं. मि.	17 अग. 2011 ई. घं. मि.	16 सित. 2011 ई. घं. मि.	15 अक्तू. 2011 ई. घं. मि.	14 नवं., 2011 ई. घं. मि.	14 दिसं., 2011 ई. घं. मि.	12 जन., 2012 ई. घं. मि.	10 फर., 2012 ई. घं. मि.	11 मार्च, 2012 ई. घं. मि.	स्मार्त 21 अग., '11 घं. मि.	वैष्णव 22/23 अग.,'11 घं. मि.
अजमेर	10 41	10 14	10 12	09 18	08 54	08 39	08 02	08 29	09 16	09 08	09 00	10 00	23 22	00 09
अमृतसर	10 53	10 24	10 18	09 20	08 50	08 29	07 49	08 17	09 08	09 04	09 01	10 08	23 10	23 56
अलवर	10 35	10 08	10 06	09 11	08 45	08 29	07 51	08 19	09 06	08 59	08 52	09 54	23 12	23 58
अलीगढ़	10 30	10 03	10 00	09 05	08 39	08 23	07 44	08 12	09 00	08 53	09 50	09 48	23 05	23 51
अहमदाबाद	10 42	10 15	10 17	09 25	09 05	08 53	08 17	08 45	09 29	09 18	09 08	10 04	23 37	00 25
आगरा	10 28	10 01	09 59	09 05	08 40	08 24	07 46	08 14	09 01	08 53	09 50	09 47	23 07	23 53
इलाहाबाद	10 08	09 42	09 42	08 49	08 25	08 11	07 34	08 01	08 47	08 38	09 32	09 28	22 54	23 41
उज्जैन	10 29	10 03	10 05	09 13	08 52	08 40	08 04	08 32	09 16	09 05	08 55	09 51	23 24	00 12
उदयपुर(रा.)	10 41	10 14	10 14	09 22	08 59	08 46	08 09	08 37	09 22	09 13	09 04	10 01	23 30	00 17
ऊना	10 46	10 18	10 12	09 14	08 44	08 24	07 44	08 11	09 02	08 59	08 55	10 01	23 04	23 50
कपूरथला	10 50	10 21	10 15	09 18	08 48	08 27	07 48	08 15	09 06	09 02	08 59	10 05	23 08	23 54
करनाल	10 39	10 11	10 07	09 10	08 42	08 24	07 45	08 13	09 02	08 56	09 56	09 55	23 05	23 52
कांगड़ा	10 48	10 19	10 12	09 14	08 44	08 23	07 43	08 10	09 02	08 58	08 55	10 02	23 03	23 49
कानपुर	10 17	09 50	09 49	08 55	08 31	08 1[illegible]	07 38	08 06	08 52	08 44	09 39	09 36	22 58	23 45
कुरुक्षेत्र	10 40	10 12	10 08	09 11	08 43	08 24	07 45	08 13	09 02	08 57	08 52	09 57	23 06	23 52
कुल्लू	10 44	10 16	10 09	09 11	08 40	08 19	07 40	08 07	08 59	08 55	09 58	09 59	23 00	23 46
कोटा	10 23	10 06	10 05	09 13	08 50	08 30	07 59	08 27	09 13	09 04	08 55	09 53	23 20	00 07
कोलकाता	09 35	09 09	09 12	08 21	08 01	07 49	07 13	07 40	08 24	08 13	09 03	08 57	22 33	23 20
गुरदासपुर	10 51	10 23	10 16	09 18	08 47	08 26	07 46	08 14	09 05	09 02	08 59	10 06	23 07	23 52
ग्वालियर	10 26	09 59	09 58	09 04	08 40	08 25	07 48	08 15	09 02	08 54	09 49	09 45	23 08	23 55
चण्डीगढ़	10 42	10 14	10 08	09 12	08 42	08 23	07 43	08 11	09 01	08 57	08 52	09 58	23 04	23 50
चम्बा	10 49	10 21	10 13	09 15	08 44	08 22	07 42	08 10	09 02	08 59	08 56	10 04	23 03	23 48
चूरु	10 44	10 16	10 13	09 18	08 51	08 35	07 56	08 24	09 12	09 06	08 59	10 02	23 17	00 03
चेन्नई	09 50	09 26	09 36	08 50	08 39	08 36	08 03	08 31	09 08	08 51	09 30	09 18	23 24	00 12
जम्मू	10 55	10 27	10 19	09 21	08 49	08 27	07 47	08 14	09 07	09 04	09 01	10 09	23 07	23 53
जयपुर	10 37	10 10	10 08	09 14	08 49	08 33	07 56	08 23	09 10	09 03	08 55	09 56	23 16	00 03
जालन्धर	10 49	10 21	10 14	09 17	08 47	08 27	07 47	08 15	09 06	09 02	08 58	10 04	23 08	23 54
जोधपुर	10 47	10 20	10 19	09 25	09 01	08 46	08 09	08 36	09 23	09 15	09 07	10 07	23 29	00 16
दरभंगा	09 53	09 27	09 26	08 32	08 08	07 53	07 16	07 43	08 29	08 21	09 16	09 12	22 36	23 23
दिल्ली	10 35	10 08	10 05	09 09	08 42	08 25	07 47	08 14	09 03	08 56	09 55	09 53	23 07	23 53

श्रीगणेशचतुर्थी एवम् श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत

भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चन्द्रोदय (संवत् 2068 वि.) (भा. स्टैं. टा.)

स्थान	श्रीगणेशचतुर्थी चन्द्रोदय (सूर्यास्त बाद) (I.S.T.)												श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय (I.S.T.)	
	21 अप्रै., 2011 ई. घं. मि.	20 मई, 2011 ई. घं. मि.	19 जून 2011 ई. घं. मि.	18 जुला. 2011 ई. घं. मि.	17 अग. 2011 ई. घं. मि.	16 सितं. 2011 ई. घं. मि.	15 अक्तू. 2011 ई. घं. मि.	14 नवं., 2011 ई. घं. मि.	14 दिसं., 2011 ई. घं. मि.	12 जन., 2012 ई. घं. मि.	10 फर., 2012 ई. घं. मि.	11 मार्च, 2012 ई. घं. मि.	स्मार्त 21 अग., '11 घं. मि.	वैष्णव 22/23 अग.,'11 घं. मि.
देहरादून	10 36	10 08	10 03	09 07	08 38	08 19	07 39	08 07	08 57	08 52	09 53	09 52	23 00	23 46
नागपुर	10 10	09 45	09 46	08 58	08 39	08 29	07 53	08 21	09 04	08 52	09 40	09 34	23 14	00 01
नाहन	10 40	10 11	10 06	09 09	08 40	08 21	07 42	08 09	08 59	08 55	09 56	09 55	23 02	23 48
पटना	10 03	09 37	09 36	08 43	08 20	08 05	07 28	07 56	08 42	08 33	09 27	09 23	22 49	23 35
पटियाला	10 43	10 15	10 10	09 13	08 44	08 25	07 46	08 14	09 04	08 59	08 54	09 59	23 07	23 53
पठानकोट	10 51	10 22	10 15	09 17	08 46	08 25	07 45	08 12	09 04	09 01	08 58	10 05	23 05	23 51
पुणे	10 27	10 02	10 07	09 18	09 02	08 55	08 20	08 48	09 29	09 15	09 01	09 52	23 41	00 29
फगवाड़ा	10 48	10 19	10 13	09 16	08 46	08 26	07 47	08 14	09 05	09 01	08 57	10 03	23 07	23 53
फिरोज़पुर	10 52	10 23	10 18	09 21	08 51	08 31	07 52	08 20	09 10	09 06	09 02	10 07	23 12	23 58
बंगलोर	10 01	09 37	09 47	09 01	08 50	08 47	08 15	08 43	09 19	09 02	09 41	09 29	23 35	00 24
बिलासपुर(हि.प्र.)	10 44	10 16	10 10	09 12	08 42	08 22	07 42	08 10	09 01	08 57	08 53	09 59	23 03	23 49
बीकानेर	10 50	10 23	10 20	09 25	08 59	08 42	08 04	08 32	09 20	09 13	09 06	10 08	23 24	00 11
बून्दी	10 34	10 08	10 07	09 14	08 51	08 37	07 59	08 27	09 13	09 04	08 56	09 54	23 20	00 07
भटिण्डा	10 48	10 20	10 15	09 19	08 50	08 31	07 52	08 20	09 10	09 05	09 00	10 05	23 13	23 59
भरतपुर	10 31	10 04	10 02	09 07	08 42	08 26	07 48	08 16	09 03	08 56	09 52	09 49	23 09	23 55
मण्डी	10 44	10 16	10 09	09 12	08 41	08 21	07 41	08 08	08 59	08 56	08 52	09 59	23 01	23 47
मथुरा	10 31	10 03	10 01	09 07	08 41	08 25	07 47	08 15	09 02	08 55	09 52	09 49	23 07	23 54
मुम्बई	10 32	10 07	10 12	09 23	09 06	08 58	08 23	08 51	09 32	09 19	09 05	09 57	23 44	00 32
रोपड़	10 44	10 16	10 10	09 13	08 44	08 24	07 44	08 12	09 02	08 58	08 54	10 00	23 05	23 51
रोहतक	10 38	10 11	10 07	09 12	08 44	08 27	07 48	08 16	09 05	08 59	08 53	09 56	23 09	23 55
लखनऊ	10 16	09 49	09 47	08 53	08 28	08 12	07 35	08 02	08 49	08 41	09 37	09 34	22 55	23 42
लुधियाना	10 46	10 18	10 13	09 16	08 46	08 26	07 47	08 15	09 05	09 01	08 57	10 02	23 07	23 53
वाराणसी	10 04	09 37	09 37	08 44	08 21	08 07	07 29	07 57	08 43	08 34	09 28	09 24	22 50	23 37
शिमला	10 42	10 13	10 08	09 10	08 41	08 21	07 41	08 09	08 59	08 55	09 57	09 57	23 02	23 48
श्रीनगर (का.)	10 59	10 30	10 21	09 21	08 48	08 25	07 44	08 11	09 05	09 03	09 02	10 12	23 04	23 50
संगरूर	10 45	10 17	10 12	09 15	08 47	08 28	07 49	08 16	09 06	09 01	08 56	10 01	23 09	23 55
सहारनपुर	10 37	10 09	10 05	09 08	08 40	08 21	07 42	08 10	08 59	08 54	09 54	09 54	23 03	23 49
सीकर	10 41	10 14	10 12	09 17	08 51	08 35	07 57	08 25	09 12	09 05	08 58	10 00	23 17	00 04
हरिद्वार	10 34	10 07	10 02	09 06	08 37	08 19	07 39	08 07	08 57	08 51	09 51	09 51	23 00	23 46
हिसार	10 43	10 15	10 11	09 15	08 48	08 30	07 51	08 19	09 08	09 02	08 57	10 00	23 12	23 58
होशियारपुर	10 48	10 19	10 13	09 16	08 45	08 25	07 45	08 13	09 04	09 00	08 57	10 03	23 06	23 52

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2011 से 22 मार्च, सन् 2012 ई. तक)

प्रारम्भ 2011 ई.	घं. मि.	समाप्त 2011 ई.	घं. मि.
2 जन.	1 57	4 जन.	2 46
11 जन.	18 29	13 जन.	23 34
20 जन.	21 18	22 जन.	16 34
29 जन.	7 47	31 जन.	9 25
8 फर.	1 54	10 फर.	7 33
17 फर.	8 14	19 फर.	2 46
25 फर.	13 22	27 फर.	14 56
7 मार्च	8 21	9 मार्च	14 08
16 मार्च	18 59	18 मार्च	14 04
24 मार्च	20 44	26 मार्च	21 06
3 अप्रै.	14 22	5 अप्रै.	19 59
13 अप्रै.	3 42	15 अप्रै.	0 12
21 अप्रै.	6 16	23 अप्रै.	5 09

प्रारम्भ 2011 ई.	घं. मि.	समाप्त 2011 ई.	घं. मि.
30 अप्रै.	20 40	3 मई	2 07
10 मई	10 04	12 मई	7 55
18 मई	16 41	20 मई	14 43
28 मई	3 43	30 मई	9 09
6 जून	15 27	8 जून	13 40
15 जून	2 13	17 जून	0 24
24 जून	11 28	26 जून	17 04
3 जुला.	21 44	5 जुला.	19 13
12 जुला.	9 48	14 जुला.	8 50
21 जुला.	19 27	24 जुला.	1 16
31 जुला.	5 57	2 अग.	2 20
8 अग.	15 37	10 अग.	15 29
18 अग.	3 01	20 अग.	9 00

प्रारम्भ 2011 ई.	घं. मि.	समाप्त 2011 ई.	घं. मि.
27 अग.	15 50	29 अग.	11 38
4 सितं.	21 07	6 सितं.	20 59
14 सितं.	9 49	16 सितं.	15 51
24 सितं.	2 00	25 सितं.	22 18
2 अक्तू.	4 10	4 अक्तू.	2 57
11 अक्तू.	16 00	13 अक्तू.	22 00
21 अक्तू.	10 47	23 अक्तू.	8 30
29 अक्तू.	13 41	31 अक्तू.	10 54
7 नवं.	22 08	10 नवं.	4 08
17 नवं.	17 24	19 नवं.	16 35
26 नवं.	0 44	27 नवं.	21 00
5 दिसं.	4 55	7 दिसं.	10 58
14 दिसं.	22 51	16 दिसं.	22 27

प्रारम्भ 2011 ई.	घं. मि.	समाप्त 2011 ई.	घं. मि.
23 दिसं.	11 10	25 दिसं.	7 41
(सन् 2012 ई.)			
1 जन.	12 41	3 जन.	18 42
11 जन.	5 15	13 जन.	4 02
19 जन.	19 10	21 जन.	16 51
28 जन.	21 07	31 जन.	2 55
7 फर.	13 47	9 फर.	11 30
16 फर.	0 53	17 फर.	23 32
25 फर.	5 20	27 फर.	10 55
5 मार्च	23 49	7 मार्च	21 15
14 मार्च	6 30	16 मार्च	4 54

पंचकों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2011 से 22 मार्च, सन् 2012 ई. तक)

प्रारम्भ 2011 ई.	घं. मि.	समाप्त 2011 ई.	घं. मि.
7 जन.	20 32	12 जन.	21 14
4 फर.	4 00	9 फर.	4 51
3 मार्च	10 18	8 मार्च	11 18
30 मार्च	16 07	4 अप्रै.	17 15
26 अप्रै.	22 30	1 मई	23 30

प्रारम्भ 2011 ई.	घं. मि.	समाप्त 2011 ई.	घं. मि.
24 मई	6 06	29 मई	6 34
20 जून	14 39	25 जून	14 22
17 जुला.	23 12	22 जुला.	22 24
14 अग.	6 51	19 अग.	5 59
10 सितं.	13 18	15 सितं.	12 47

प्रारम्भ 2011 ई.	घं. मि.	समाप्त 2011-12 ई.	घं. मि.
7 अक्तू.	19 00	12 अक्तू.	18 58
4 नवं.	1 09	9 नवं.	1 09
1 दिसं.	8 51	6 दिसं.	7 57
28 दिसं.	18 07	2 जन.	15 39

प्रारम्भ 2012 ई.	घं. मि.	समाप्त 2012 ई.	घं. मि.
25 जन.	3 39	29 जन.	23 53
21 फर.	11 54	26 फर.	7 57
19 मार्च	18 18	— —	— —

रविवार कैलेण्डर (1 जनवरी, सन् 2011 से 31 मार्च सन् 2012 ई. तक)

2011 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	2	9	16	23	30
फरवरी	6	13	20	27	—
मार्च	6	13	20	27	—
अप्रैल	3	10	17	24	—

2011 ई.	रविवार की तारीखें				
मई	1	8	15	22	29
जून	5	12	19	26	—
जुलाई	3	10	17	24	31
अगस्त	7	14	21	28	—

2011 ई.	रविवार की तारीखें				
सितंबर	4	11	18	25	—
अक्तूबर	2	9	16	23	30
नवंबर	6	13	20	27	—
दिसंबर	4	11	18	25	—

2012 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	1	8	15	22	29
फरवरी	5	12	19	26	—
मार्च	4	11	18	25	—

ग्रहण-विवरण (सं. 2068 वि.)

प्रियव्रत शर्मा

इस वर्ष सं. 2068 वि. (4 अप्रैल, 2011 ई. से 22 मार्च, सन् 2012 ई. तक की अवधि) में भूगोल पर निम्नांकित पांच ग्रहण दिखाई पड़ेंगे–

(i) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (1/2 जून, 2011 ई.)
(ii) खग्रास चन्द्रग्रहण (15/16 जून, 2011 ई.)
(iii) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (1 जुलाई, 2011 ई.)
(iv) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (25 नवम्बर, 2011 ई.)
(v) खग्रास चन्द्रग्रहण (10 दिसम्बर, 2011 ई.)

इनमें से केवल दो खग्रास चन्द्रग्रहण (15/16 जून, 2011 ई. एवम् 10 दिसम्बर, 2011 ई. वाले ग्रहण ही) भारत में दिखाई पड़ेंगे। शेष तीनों खण्डग्रास सूर्यग्रहण भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देंगे।

भारत में अदृश्य (दिखाई न देने वाले) उपरोक्त तीनों सूर्यग्रहणों का संक्षिप्त विवरण

(i) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (1/2 जून, 2011 ई.)–

यह ग्रहण ज्येष्ठ अमा, बुधवार (1/2 जून, 2011 ई.) की मध्यगत–रात्रि में भा.स्टैं.टा. अनुसार 0 घं. 55 मि. से प्रारम्भ होकर 4 घं. 36 मि. तक भूमण्डल पर दिखाई देगा। इसे उत्तरी अमेरिका, कैनेडा, अलास्का, ग्रीनलैण्ड तथा उत्तरी ध्रुवक्षेत्र में देखा जा सकेगा। इसके बारे और अधिक जानकारी के लिए आगे पृ. **16** पर दिया गया भूगोलचित्र (1) देखें।

(ii) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (1 जुलाई, 2011 ई.) –

यह ग्रहण आषाढ़ी अमा, शुक्रवार (1 जुलाई, 2011 ई.) को भा.स्टैं.टा. अनुसार 13 घं. 24 मि. से 14 घं. 52 मि. तक भूमण्डल पर दिखाई देगा। यह अफ्रीका महाद्वीप के नीचे पैसिफिक व हिन्दमहासागर के थोड़े से भाग तथा दक्षिणी ध्रुवप्रान्त में दिखाई देगा। अधिक स्पष्टता के लिए आगे पृ. **16** पर दिया गया भूगोलचित्र (2) देखिए।

(iii) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (25 नवम्बर, 2011 ई.)–

यह ग्रहण मार्गशीर्ष अमा, शुक्रवार (25 नवं., 2011 ई.) को भा.स्टैं.टा. के अनुसार 9 घं. 53 मि. से 13 घं. 47 मि. तक भूमण्डल पर देखा जा सकेगा। यह ग्रहण अफ्रीका के नीचे से लेकर ऑस्ट्रेलिया के नीचे तक हिन्दमहासागर एवम् दक्षिणी ध्रुवक्षेत्र में दिखाई देगा। अधिक स्पष्टता हेतु आगे पृ. **16** पर दिया गया भूगोलचित्र (3) देखें।

भारत में दृश्य ग्रहणों का विस्तृत विवरण

(i) खग्रास चन्द्रग्रहण (15/16 जून, 2011 ई.)–

यह चन्द्रग्रहण ज्येष्ठ पूर्णिमा, बुधवार (15/16 जून, 2011 ई.) की मध्यगत–रात्रि में पूरे भारतवर्ष में खग्रास के रूप में दिखाई देगा। इस ग्रहण के प्रारम्भ आदि के काल भा.स्टैं.टा. में इस प्रकार होंगे–

	घं.	मि.	से.	
ग्रहणप्रारम्भ	23	52	42	15/16 जून, 2011 ई. की मध्यगतरात्रि (भा. स्टैं. टा.)
खग्रासप्रारम्भ	00	52	14	
ग्रहणमध्य	1	42	39	
खग्रास–समाप्त	2	33	05	
ग्रहण–समाप्त	3	32	41	

पर्वकाल = 3 घं. 39 मि. 59 से.
परमग्रासमान = 1.7

चण्डीगढ़ में इस ग्रहण की विभिन्न समय पर भिन्न–भिन्न आकृतियां नीचे चित्र में दिखाई गई हैं, देखिए–

खग्रास चन्द्रग्रहण(15/16 जून, '11 ई.) की चण्डीगढ़ में विभिन्न समय पर भिन्न–भिन्न आकृतियां

शीर्ष

0घं. 22 मि. (I.S.T.)

शीर्ष
उन्मीलन
सम्मी
स्पर्श
मोक्ष

शीर्ष
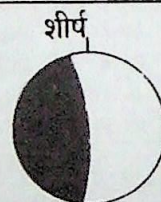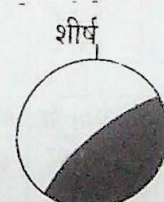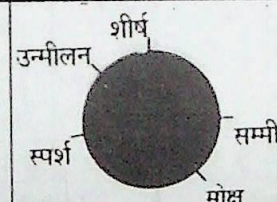
3 घं. 03 मि. (I.S.T.)

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक 15 जून, 2011 ई. को 14 घं. 53 मि.(भा.स्टैं.टा.) पर प्रारम्भ हो जाएगा।

ग्रहण का राशिफल— यह ग्रहण ज्येष्ठा/मूल नक्षत्रों एवं वृश्चिक/धनु राशियों में घटित हो रहा है, अतः इन नक्षत्रों एवं राशियों वाले व्यक्तियों के लिए यह ग्रहण विशेषरूप से कष्टप्रद रहेगा।

विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों के लिए इस ग्रहण का फल नीचे कोष्ठकों में दिया जा रहा है –

ज्येष्ठानक्षत्र एवम् वृश्चिक राशि में घटित होने से विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों के लिए इस ग्रहण का फल

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	मृत्यु	स्त्री/पतिकष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट	धनलाभ	हानि	घात(दुर्घटना)	हानि	लाभ	सुख	अपमान

मूलनक्षत्र एवम् धनुराशि में घटित होने से विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों के लिए इस ग्रहण का फल

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	अपमान	मृत्यु	स्त्री/पतिकष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट	धनलाभ	हानि	घात(दुर्घटना)	हानि	लाभ	सुख

ग्रहण का अन्य फलः— क्योंकि, यह ग्रहण ज्येष्ठा/मूल नक्षत्रों एवम् वृश्चिक/धनु राशियों में घटित होगा, अतः सभी वर्गों के लोगों को अनेकविध कष्टों का सामना करना पड़ेगा। मध्यप्रदेश में विदेह, मल्ल, पांचाल देशवासी, वैद्य एवम् व्यापारी वर्ग परेशान रहे–

"वृश्चिके ग्रहणे दुःखं सर्वजातौ प्रजायते।
यदुवरस्य मन्द्रस्य चौलेयौधेयकस्य च।।"
"यदोपरागश्चापे स्यात्तदावंत्याश्च वाजिनः।
विदेह-मल्ल-पांचालाः पीड्यन्ते भिषजो विशः।।"

ज्येष्ठा नक्षत्र में यह ग्रहण, गुड़–खाण्ड के संग्रह से लाभ देगा–"ज्येष्ठायां गुड़खण्डादेःपञ्चमासे धनोदयः।।"
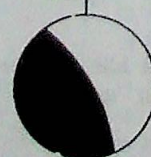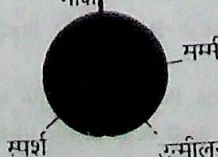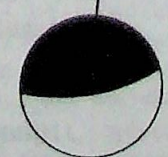
यह ग्रहण मूल नक्षत्र को भी स्पर्श करता है, अतः इसवर्ष चावल के व्यापारी भी लाभान्वित होंगे– " ताण्डुलेभ्यस्तथा मूले........।"

(ii) खग्रास चन्द्रग्रहण (10 दिसम्बर, 2011 ई.)

—यह चन्द्रग्रहण मार्गशीर्ष पूर्णिमा, शनिवार (10 दिसम्बर, 2011 ई.) को पूरे भारत में खग्रास के रूप में दिखाई देगा। इसके प्रारम्भ आदि के काल भा. स्टैं. टा. में इस प्रकार हैं–

	घं.	मि.	से.	
ग्रहणप्रारम्भ	18	15	12	10 दिसम्बर, 2011 ई. (भा. स्टैं. टा.)
खग्रासप्रारम्भ	19	35	42	
ग्रहणमध्य	20	01	47	
खग्राससमाप्त	20	28	05	
ग्रहणसमाप्त	21	48	27	

पर्वकाल = 03 घं. 33 मि. 15 से.

परमग्रासमान = 1.1

यहां नीचे चित्र में चण्डीगढ़ में इस ग्रहण की विभिन्न समय पर भिन्न–भिन्न आकृतियां दी गई हैं, देखिए–

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक 10 दिसम्बर, 2011 ई. को प्रातः 09 घं. 15 मि.(भा.स्टैं.टा.) पर प्रारम्भ हो जाएगा।

ग्रहण का राशिफल— यह ग्रहण रोहिणी/मृगशिरा नक्षत्रों एवम् वृष राशि में घटित हो रहा है। अतः इन नक्षत्रों एवम् वृषराशि के व्यक्तियों के लिए यह ग्रहण विशेषकर कष्टप्रद होगा।

विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों के लिए इस ग्रहण का फल नीचे कोष्ठक में दिया जा रहा है;—

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	हानि	घात	हानि	लाभ	सुख	अपमान	मृत्यु	स्त्री/पतिकष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट	धनलाभ

ग्रहण का अन्य फल:—यह ग्रहण रोहिणी/मृगशिरा नक्षत्रों एवम् वृष राशि में घटित होने से गोप, पशु, राहगीर एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों के लिए कष्टप्रद रहेगा।

"वृषे च ग्रहणे गोपाः पशवः पथिका जनाः।
महान्तो मनुजा ये च तेभ्यः पीड़ा गरीयसी।।"

क्योंकि, यह ग्रहण रोहिणी नक्षत्र को स्पर्श करता है अतः सूत, कपास के स्टॉक से लाभ हो—

"रोहिण्यां सूत—कार्पास—संग्रहो लाभदायकः।"

मृगशिरा नक्षत्र में ग्रहण मजीठ, लाख, नमक, कुसुम्भ के स्टॉक से दस मास में लाभ देगा—

" मृगे तु लाक्षा मंजिष्ठा क्षारः स्यात्तु कुसुम्भकम्।
महर्घ दशमासान्ते लाभदं च यथोचितम्....।।"

यह ग्रहण शनिवार को है। अतः युगन्धरी (ज्वार) के व्यापार से लाभ हो एवं काली चीज़ों में तेज़ी बनेगी—

"शनौ युगन्धरी—लाभः श्यामवस्तु महर्घता।।"

वि. सं. 2068 में घटित होने वाले (भारत में अदृश्य) पूर्वोक्त तीनों खण्डग्रास सूर्यग्रहण भूगोल पर किन—किन देश—प्रदेशों में दृश्य होंगे ?

नीचे तीन भूगोलचित्र दिए गए हैं। भूगोल के जिन भूभागों पर ये ग्रहण दृश्य होंगे, उन भूभागों के चारों ओर मोटी रेखाएं खींची गई हैं।

भूगोलचित्र (1)
खण्डग्रास सूर्यग्रहण (1 जून, 2011 ई.)
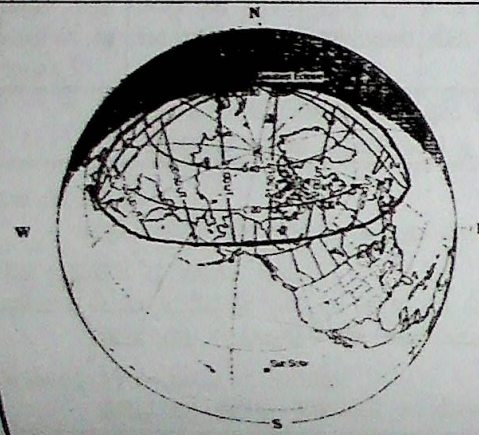
भूगोलचित्र (2)
खण्डग्रास सूर्यग्रहण (1 जुलाई, 2011 ई.)
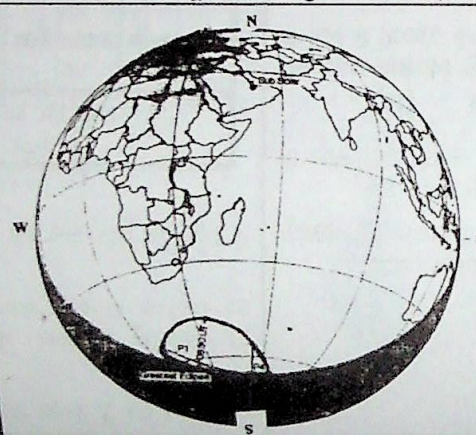
भूगोलचित्र (3)
खण्डग्रास सूर्यग्रहण (25, नवं. 2011 ई.)
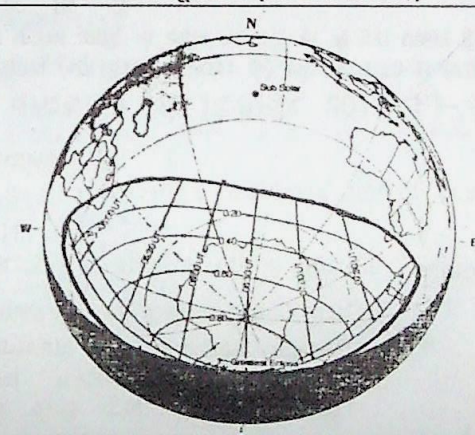
सूर्य–चन्द्रग्रहण–सूची

(ई. सन् 2001 से ई. सन् 2050 तक भूगोल पर घटित होने वाले सूर्य–चन्द्रग्रहण)

यहां निर्दिष्ट तारीखें (भा. स्टैं. टा. अनुसार) ग्रहण–मध्यकाल की हैं। (व्रत–पर्व–विवेक से उद्धृत)

ई. सन्	तारीख	ग्रहण
2001	*10 जन.	चन्द्रग्रहण
	21 जून	सूर्यग्रहण
	* 5 जुला.	चन्द्रग्रहण
	15 दिसं.	सूर्यग्रहण
2002	*11 जून	सूर्यग्रहण
	4 दिसं.	सूर्यग्रहण
2003	*16 मई	चन्द्रग्रहण
	31 मई	सूर्यग्रहण
	9 नवं.	चन्द्रग्रहण
	*24 नवं.	सूर्यग्रहण
2004	19 अप्रै.	सूर्यग्रहण
	* 5 मई	चन्द्रग्रहण
	14 अक्तू.	सूर्यग्रहण
	*28 अक्तू.	चन्द्रग्रहण
2005	9 अप्रै.	सूर्यग्रहण
	* 3 अक्तू.	सूर्यग्रहण
	*17 अक्तू.	चन्द्रग्रहण
2006	*29 मार्च	सूर्यग्रहण
	* 8 सितं.	चन्द्रग्रहण
	22 सितं.	सूर्यग्रहण
2007	* 4 मार्च	चन्द्रग्रहण
	*19 मार्च	सूर्यग्रहण
	*28 अग.	चन्द्रग्रहण
	11 सितं.	सूर्यग्रहण
2008	7 फर.	सूर्यग्रहण
	*21 फर.	चन्द्रग्रहण
	* 1 अग.	सूर्यग्रहण
	*17 अग.	चन्द्रग्रहण

ई. सन्	तारीख	ग्रहण
2009	*26 जन.	सूर्यग्रहण
	*22 जुला.	सूर्यग्रहण
2010	* 1 जन.	चन्द्रग्रहण
	*15 जन.	सूर्यग्रहण
	26 जून	चन्द्रग्रहण
	12 जुला.	सूर्यग्रहण
	21 दिसं.	चन्द्रग्रहण
2011	* 4 जन.	सूर्यग्रहण
	2 जून	सूर्यग्रहण
	*16 जून	चन्द्रग्रहण
	1 जुला.	सूर्यग्रहण
	25 नवं.	सूर्यग्रहण
	*10 दिसं.	चन्द्रग्रहण
2012	*21 मई	सूर्यग्रहण
	4 जून	चन्द्रग्रहण
	14 नवं.	सूर्यग्रहण
2013	*26 अप्रै.	चन्द्रग्रहण
	10 मई	सूर्यग्रहण
	3 नवं.	सूर्यग्रहण
2014	15 अप्रै.	चन्द्रग्रहण
	29 अप्रै.	सूर्यग्रहण
	8 अक्तू.	चन्द्रग्रहण
	24 अक्तू.	सूर्यग्रहण
2015	20 मार्च	सूर्यग्रहण
	* 4 अप्रै.	चन्द्रग्रहण
	13 सितं.	सूर्यग्रहण
	28 सितं.	चन्द्रग्रहण

ई. सन्	तारीख	ग्रहण
2016	* 9 मार्च	सूर्यग्रहण
	1 सितं.	सूर्यग्रहण
2017	26 फर.	सूर्यग्रहण
	* 7 अग.	चन्द्रग्रहण
	21 अग.	सूर्यग्रहण
2018	*31 जन.	चन्द्रग्रहण
	16 फर.	सूर्यग्रहण
	13 जुला.	सूर्यग्रहण
	*28 जुला.	चन्द्रग्रहण
	11 अग.	सूर्यग्रहण
2019	6 जन.	सूर्यग्रहण
	21 जन.	चन्द्रग्रहण
	3 जुला.	सूर्यग्रहण
	*17 जुला.	चन्द्रग्रहण
	*26 दिसं.	सूर्यग्रहण
2020	*21 जून	सूर्यग्रहण
	14 दिसं.	सूर्यग्रहण
2021	26 मई	चन्द्रग्रहण
	10 जून	सूर्यग्रहण
	19 नवं.	चन्द्रग्रहण
	4 दिसं.	सूर्यग्रहण
2022	1 मई	सूर्यग्रहण
	16 मई	चन्द्रग्रहण
	*25 अक्तू.	सूर्यग्रहण
	* 8 नवं.	चन्द्रग्रहण
2023	20 अप्रै.	सूर्यग्रहण
	14 अक्तू.	सूर्यग्रहण
	*29 अक्तू.	चन्द्रग्रहण

ई. सन्	तारीख	ग्रहण
2024	* 8 अप्रै.	सूर्यग्रहण
	18 सितं.	चन्द्रग्रहण
	3 अक्तू.	सूर्यग्रहण
2025	14 मार्च	चन्द्रग्रहण
	29 मार्च	सूर्यग्रहण
	* 7 सितं.	चन्द्रग्रहण
	22 सितं.	सूर्यग्रहण
2026	17 फर.	सूर्यग्रहण
	3 मार्च	चन्द्रग्रहण
	12 अग.	सूर्यग्रहण
	28 अग.	चन्द्रग्रहण
2027	6 फर.	सूर्यग्रहण
	* 2 अग.	सूर्यग्रहण
2028	12 जन.	चन्द्रग्रहण
	26 जन.	सूर्यग्रहण
	* 6 जुला.	चन्द्रग्रहण
	*22 जुला.	सूर्यग्रहण
	*31 दिसं.	चन्द्रग्रहण
2029	14 जन.	सूर्यग्रहण
	12 जून	सूर्यग्रहण
	26 जून	चन्द्रग्रहण
	11 जुला.	सूर्यग्रहण
	5 दिसं.	सूर्यग्रहण
	*21 दिसं.	चन्द्रग्रहण
2030	*1 जून	सूर्यग्रहण
	*16 जून	चन्द्रग्रहण
	25 नवं.	सूर्यग्रहण

* ये ग्रहण भारत में दिखाई पड़ेंगे।

सूर्य–चन्द्रग्रहण–सूची

(ई. सन् 2001 से ई. सन् 2050 तक भूगोल पर घटित होने वाले सूर्य–चन्द्रग्रहण)

यहां निर्दिष्ट तारीखें (भा. स्टैं. टा. अनुसार) ग्रहण–मध्यकाल की हैं।

ई. सन्	तारीख	ग्रहण
2031	*21 मई	सूर्यग्रहण
	15 नवं.	सूर्यग्रहण
2032	*25 अप्रै.	चन्द्रग्रहण
	9 मई	सूर्यग्रहण
	*19 अक्तू.	चन्द्रग्रहण
	* 3 नवं.	सूर्यग्रहण
2033	30 मार्च	सूर्यग्रहण
	*15 अप्रै.	चन्द्रग्रहण
	23 सितं.	सूर्यग्रहण
	8 अक्तू.	चन्द्रग्रहण
2034	*20 मार्च	सूर्यग्रहण
	12 सितं.	सूर्यग्रहण
	28 सितं.	चन्द्रग्रहण
2035	10 मार्च	सूर्यग्रहण
	*19 अग.	चन्द्रग्रहण
	2 सितं.	सूर्यग्रहण
2036	*12 फर.	चन्द्रग्रहण
	27 फर.	सूर्यग्रहण
	23 जुला.	सूर्यग्रहण
	* 7 अग.	चन्द्रग्रहण
	21 अग.	सूर्यग्रहण
2037	*16 जन.	सूर्यग्रहण
	*31 जन.	चन्द्रग्रहण
	13 जुला.	सूर्यग्रहण
	27 जुला.	चन्द्रग्रहण

ई. सन्	तारीख	ग्रहण
2038	5 जन.	सूर्यग्रहण
	2 जुला.	सूर्यग्रहण
	26 दिसं.	सूर्यग्रहण
2039	* 7 जून	चन्द्रग्रहण
	21 जून	सूर्यग्रहण
	*30 नवं.	चन्द्रग्रहण
	15 दिसं.	सूर्यग्रहण
2040	11 मई	सूर्यग्रहण
	26 मई	चन्द्रग्रहण
	5 नवं.	सूर्यग्रहण
	*19 नवं.	चन्द्रग्रहण
2041	*30 अप्रै.	सूर्यग्रहण
	*16 मई	चन्द्रग्रहण
	25 अक्तू.	सूर्यग्रहण
	8 नवं.	चन्द्रग्रहण
2042	*20 अप्रै.	सूर्यग्रहण
	29 सितं.	चन्द्रग्रहण
	*14 अक्तू.	सूर्यग्रहण
2043	*25 मार्च	चन्द्रग्रहण
	10 अप्रै.	सूर्यग्रहण
	*19 सितं.	चन्द्रग्रहण
	3 अक्तू.	सूर्यग्रहण
2044	29 फर.	सूर्यग्रहण
	*14 मार्च	चन्द्रग्रहण
	23 अग.	सूर्यग्रहण
	7 सितं.	चन्द्रग्रहण

ई. सन्	तारीख	ग्रहण
2045	17 फर.	सूर्यग्रहण
	12 अग.	सूर्यग्रहण
2046	*22 जन.	चन्द्रग्रहण
	6 फर.	सूर्यग्रहण
	*18 जुला.	चन्द्रग्रहण
	2 अग.	सूर्यग्रहण
2047	*12 जन.	चन्द्रग्रहण
	*26 जन.	सूर्यग्रहण
	23 जून	सूर्यग्रहण
	7 जुला.	चन्द्रग्रहण
	23 जुला.	सूर्यग्रहण
	17 दिसं.	सूर्यग्रहण
2048	1 जन.	चन्द्रग्रहण
	11 जून	सूर्यग्रहण
	*26 जून	चन्द्रग्रहण
	5 दिसं.	सूर्यग्रहण
2049	31 मई	सूर्यग्रहण
	*25 नवं.	सूर्यग्रहण
2050	* 7 मई	चन्द्रग्रहण
	21 मई	सूर्यग्रहण
	30 अक्तू.	चन्द्रग्रहण
	14 नवं.	सूर्यग्रहण
	——	——

* ये ग्रहण भारत में दिखाई पड़ेंगे।

सूर्य–चन्द्रग्रहणों के विषय में ज्ञातव्य कुछेक बातें

चन्द्रग्रहण होगा या नहीं ?

जिस पूर्णिमान्त के समय सूर्य का राहु या केतु से अन्तर 13 अंश से कम हो वहां चन्द्रग्रहण होने की सम्भावना रहती है। इस स्थिति में चन्द्रग्रहण का निश्चय चन्द्रग्रहण–गणित करने पर ही हो पाता है। यदि यह अन्तर 9 अंश से कम हो तो वहां चन्द्रग्रहण अवश्य होता है।

चन्द्रग्रहण दिखाई पड़ेगा या नहीं ?

जहां पूर्णिमा सूर्यास्त से 2 घण्टा पहिले समाप्त हो रही हो वहां चन्द्रोदय से पहिले ही चन्द्रग्रहण समाप्त हो जाने की सम्भावना रहती है। जहां पूर्णिमा सूर्योदय के 2 घण्टा बाद समाप्त हो रही हो वहां चन्द्रग्रहण प्रारम्भ होने से पूर्व ही चन्द्रास्त हो जाने की सम्भावना रहती है। इन दोनों स्थितियों में "चन्द्रग्रहण किसी स्थान पर दिखाई पड़ेगा या नहीं" – इसका निर्णय चन्द्रग्रहण–गणित करने पर ही हो सकता है।

सूर्यग्रहण होगा या नहीं ?

यदि अमान्तकाल में सूर्य का राहु या केतु से अन्तर 13 अंश से कम हो तो उस दिन भूगोल पर कहीं न कहीं सूर्यग्रहण अवश्य होता है। ध्यान रहे– चन्द्रग्रहण के प्रारम्भ, मध्य और समाप्ति के काल विश्व के सभी स्थलों के लिए एक ही होते हैं, जबकि सूर्य– ग्रहण के ये काल स्थानभेद से भिन्न–भिन्न होते हैं।

13 जुला. सूर्यग्रहण
27 जुला. चन्द्रग्रहण
23 अग. सूर्यग्रहण
के ये काल स्थानभेद से भिन्न-भिन्न होते हैं।

* ये ग्रहण भारत में दिखाई पड़ेंगे।

शनि की साढ़ेसाती (बृहत्कल्याणी), ढैय्या (लघुकल्याणी) और गुरु-राहु का गोचरफल (सं. 2068 वि.)

जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभ ग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अंतर शुभ चल रहा हो, तो ढैय्या और साढ़ेसाती का अशुभफल कम होता है। यदि चन्द्र, शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढ़ेसाती व ढैय्या महान् अशुभ, चिंता, अवनति, धनहानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु-पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्मकुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश हो तो भी ढैय्या, साढ़ेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। यदि जन्म में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर 3, 6, 11 में स्थित हो तो सुख-सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है। शनि के अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित होता है।

साढ़ेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का अशुभ फल इस प्रकार है-

मेष राशि वालों को बीच के अढाई वर्ष खराब हैं। वृष को पहिले अढाई वर्ष, मिथुन को अंत के अढाई वर्ष, कर्क को बीच के अढाई वर्ष, सिंह को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष खराब हैं। कन्या को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। तुला को आखिर के अढाई वर्ष, वृश्चिक को अंतिम 5 वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। धनु को प्रारंभ के अढाई वर्ष, मकर को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी पहिले अढाई वर्ष विशेष खराब हैं। कुंभ को आदि एवं अन्त के पांच वर्ष, विशेषतः अन्त के अढाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। मीन को पूरे साढ़ेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के अढाई वर्ष विशेष अशुभफल देने वाले होते हैं।

9 सितंबर, सन् 2009 ई. को भरणी नक्षत्र एवं मेष राशिस्थ चन्द्र के समय 24 घं. 00 मि. (भा.स्टैं. टा.) पर शनिदेव कन्या राशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2068 वि. में 15 नवम्बर, 2011 ई. तक कन्या राशि में ही विचरण करेंगे।

कन्या राशिस्थ शनि की साढ़ेसाती एवं ढैय्या का फल

(9 सितंबर, 2009 ई. से सं. 2068 वि. में 15 नवम्बर, 2011 ई. तक के लिए)

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
सिंह	साढेसाती	रजत	पाद	उतरती	व्यापार में प्रगति, धनधान्य-समृद्धि, प्रभावक्षेत्र बढ़े, सम्मान प्राप्त हो, सुखसम्पदा-लाभ, घर में मांगलिक कृत्य हों।
कन्या	साढेसाती	लौह	हृदय	--	शारीरिक कष्ट, रक्तपित्त विकार, स्त्रीकष्ट, पशु एवं सन्तान को कष्ट, व्यापार में हानि, राजभय।
तुला	साढेसाती	ताम्र	मस्तक	चढ़ती	धन-धान्य-समृद्धि, स्त्री-पुत्र-सुख, सम्पत्ति लाभ, व्यवसाय में प्रगति, शारीरिक सुख।
कुम्भ	ढैय्या	ताम्र	--	--	धन-धान्य-समृद्धि, स्त्री-पुत्र-सुख, सम्पत्ति लाभ, कारोबार में प्रगति, शारीरिक सुख।
मिथुन	ढैय्या	सुवर्ण	--	--	निजीजन-विरोध, शत्रु बढ़ें, गृहक्लेश, अनेकविध रोगों से परेशानी, वृथा व्यय, धननाश।

संवत् 2068 वि. में 15 नवम्बर, सन् 2011 ई. को आर्द्रा नक्षत्र एवं मिथुनस्थ चन्द्र के समय 10 घं. 11 मि. पर शनिदेव कन्याराशि को छोड़कर तुला राशि में प्रविष्ट होंगे।

तुला राशिस्थ शनि की साढ़ेसाती एवं ढैय्या का फल

(15 नवम्बर, सन् 2011 ई. से सं. 2068 वि. के अन्त तक के लिए।)

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
कर्क	ढैय्या	लौह	--	--	शरीरपीड़ा, रक्तपित्त विकार, घर में कलह-संघर्ष, राजभय, व्यापार में हानि, पशुहानि, सन्ततिकष्ट, स्त्रीकष्ट।
कन्या	साढेसाती	ताम्र	पाद	उतरती	अचानक धनलाभ, स्त्री-पुत्र सुख, सम्पत्तिलाभ, प्रगति के मार्ग प्रशस्त हों, स्वास्थ्य ठीक रहे।
तुला	साढेसाती	रजत	हृदय	--	घरेलू झंझट तो बने रहेंगे, लेकिन व्यापार बढ़े, धन-धान्य सम्पत्ति लाभ हो, प्रभावक्षेत्र बढ़े, राजपक्ष से सम्मान मिले।
वृश्चि.	साढेसाती	लौह	मस्तक	चढ़ती	सेहत खराब रहे, दैनिक जीवन में संघर्ष-तनाव, रक्तपित विकार, घरेलू झंझट बढ़े, स्त्री-पुत्र कष्ट, व्यापार में हानि, राजपक्ष से भय।
मीन	ढैय्या	लौह	--	--	सेहत बिगड़े, संघर्षमय जीवन, रक्तपित्त विकार, घरेलू उलझनें बढ़ें, स्त्री-पुत्र कष्ट, कारोबार कमज़ोर, सरकार की तरफ से हानिभय।

नोटः- ऊपर दिए गए दोनों कोष्ठकों में जिन राशियों का निर्देश (ज़िक्र) नहीं किया गया है; उन राशि वाले जातकों के लिए इस साल कन्या-तुलाराशिस्थ शनि की समयावधि में साढ़ेसाती या ढैय्या नहीं है,- यह समझ लें।

शनि–जन्य नेष्टफल शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय

शनि की साढ़ेसाती/ढैय्या के नेष्टफल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23,000 की संख्या में विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरान्त दशांश हवनादि करें। शनिवार के दिन सतनाजा दान, लौहपात्र में तैलदान, शनिस्तोत्र का पाठ करना/कराना भी श्रेयस्कर रहता है। इसके अतिरिक्त शुभवेला में 'नीलम' रत्न एवं 'शनियन्त्र' धारण करना भी आश्चर्यजनक रूप से लाभप्रद रहता है। परन्तु रत्नधारण करने से पूर्व शनि के अंशादि का अध्ययन करवाकर किसी दैवज्ञ का परामर्श ले लेना श्रेयस्कर रहेगा।

शनि का बीज मन्त्र– "ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः"।

प्रतिदिन 3 माला मन्त्रजाप करें। मन्त्रजाप से पहले "अमुक मासे अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, शनैश्चर–नेष्टफलशान्त्यर्थम शनि–मन्त्रजापमहं करोमि"– इस प्रकार संकल्प करके शनि–मन्त्रजाप करें।

शनिवारी अमावस वाले दिन सूर्यास्त समय (गोधूलि वेला में) शनि–मन्त्रजाप, स्तोत्रपाठ करें एवं तेल में मुंह देखकर उसमें एक लौंग डालकर पीपल के नीचे दीपक जलाएं।

मन्त्रजाप की विधि– अनुष्ठान शनिवार को शुरु करें। सूर्यास्त समय स्नान करके कम्बलासन पर बैठकर पश्चिमाभिमुख (पश्चिम की तरफ मुंह करके) होकर लोहे के खुले बर्तन में जौं, लौंग एवं काले तिल प्रत्येक 200 ग्राम लेकर एक अञ्जलिभर चावल और 7 सुपारी रखें। मौली–धूप–लालचन्दन, दो अपूप (पूड़े) भी सामने रख लें। मिट्टी के बर्तन में तेल का दीपक प्रज्वलित करें एवं एक स्टील का लोटा तेल से भरकर सामने रखकर " ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः" इस मन्त्र का कुल 23 हजार जाप करें। मन्त्रजाप पूर्ण होने के बाद सारी सामग्री जो सामने रखी थी, को जलप्रवाह करदें। तेल भरी गड़वी (लोटे) में लौंग डालकर शनि वाले डकौत को दें। सामग्री को जलप्रवाह करते समय निम्नांकित मन्त्र का उच्चारण करें :–

" ॐ नमः कृष्णाय नीलाय शिति कण्ठ–निभाय च।
नमः कालाग्नि–रूपाय कृतान्ताय च ते नमः।।"

इस मन्त्रोच्चारण के बाद "दूर जाते हुए शनि को पृष्ठभाग" से नमस्कार करके घर को जाएं। किसी अच्छे विद्वान–दैवज्ञ के परामर्श से कुण्डली दिखाकर नीली नग या नीलम धारण करना भी ठीक रहेगा।

शनि का वैदिक मन्त्र– "ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शंय्योरभिस्रवन्तु नः, शं ॐ"।

शनिजन्य नेष्टफल शान्त्यर्थ शनैश्चर स्तोत्र

पिप्पलाद उवाच–

"ॐ नमस्ते कोण–संस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते रौद्र – देहाय नमस्ते चांतकाय च। नमस्ते यम–संज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते मन्द – संज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।"

इस स्तोत्र को प्रातः पढ़ने से साढेसाती व ढैय्या की दुःखद पीड़ा नहीं होती– अनुभूत है।

संवत् 2068 वि. में गुरु संचार का शुभाशुभ फल

संवत् 2067 वि. में 6 दिसंबर, 2010 ई. को 9 घं. 08 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर ज्येष्ठा नक्षत्र एवं वृश्चिक राशिस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव पुनः मीनराशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2068 वि. में 8 मई, सन् 2011 ई तक मीन राशि में ही रहेंगे।

मीन–राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

(6 दिसंबर, सन् 2010 ई. से संवत् 2068 वि. में 8 मई, सन् 2011 ई. तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	आधि–व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय

8 मई, सन् 2011 ई. को 14 घं. 12 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर पुनर्वसु नक्षत्र, धृतियोग एवं मिथुनस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव मेष राशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2068 वि. के अन्त तक मेष राशि में ही विचरण करेंगे।

मेष–राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

(8 मई, सन् 2011 ई. से संवत् 2068 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय	आधि–व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धनहानि	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि

गुरुग्रह नेष्टफलप्रद हो तो :– गुरुवार को (विशेषतः गुरुवारी अमावस वाले दिन) केले के वृक्ष को सींचना चाहिए। पीलीवस्तु (चना, पीला फल, हल्दी) को पीले कपड़े में बांध कर दान करें। सोना, गुड़–शर्करा, लड्डू आदि द्वारा वृद्ध ब्राह्मण का यथाशक्ति सम्मान करें। गुरुग्रह के बीजमन्त्र का 19 हजार जाप करें। गुरु का जपनीय बीज मन्त्र यह है:– " ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।" केसर किंवा हल्दी का तिलक धारण करें। पीला पुखराज 5/7 रत्ती तर्जनी अंगुली में धारण करें।

पीतये, शंय्योरमिस्रवन्तु नः, शं ॐ"। जपनीय बीज मन्त्र यह है:– "ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।" केसर किंवा हल्दी का तिलक धारण करें। पीला पुखराज 5/7 रत्ती तर्जनी अंगुली में धारण करें।

राहु के संचार का शुभाशुभ फल (सं. 2068 वि.)

गत सं. 2066 वि. में 17 नवम्बर, सन् 2009 ई. को 12 घं. 09 मि.(भा.स्टैं.टा.) पर अनुराधा नक्षत्र एवं वृश्चिकस्थ चन्द्र के समय राहु धनु राशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2068 वि. में 6 जून, सन् 2011 ई. तक धनु राशि में ही संचरण करेगा।

धनु–राशिस्थ राहु का शुभाशुभ फल

(17 नवंबर, सन् 2009 ई. से 6 जून, 2011 ई. तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	दुःख	धननाश	राजभय	महासुख	धनहानि	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह

सं. 2068 वि. में 6 जून, 2011 ई. को 23 घं. 40 मि. पर पुष्य नक्षत्र, ध्रुव योग एवं कर्कस्थ चन्द्र के समय राहु वृश्चिक राशि में प्रविष्ट होगा। संवत् 2068 वि. के अन्त तक राहु वृश्चिक राशि में ही रहेगा।

वृश्चिक–राशिस्थ राहु का शुभाशुभ फल

(6 जून, सन् 2011 ई. से संवत् 2068 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धननाश	राजभय	महासुख	धननाश	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश किंवा भारी कष्ट	धनलाभ	कलह	दुःख–परेशानी

राहु जन्माङ्ग में या गोचर में नेष्ट फलप्रद हो तो कम्बल, तिल–तैल, नारियल, लौंग एवम् काले या भूरे रंग के वस्त्र में सतनाजा बांधकर दक्षिणा सहित सायंकाल के समय दान करें। साथ ही कम्बलासन पर बैठकर राहु का बीजमन्त्र ("ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः, राहवे नमः।") का 18 हजार की संख्यां में जाप करें। शान्ति रहेगी। दैवज्ञ के परामर्श से राहु शान्त्यर्थ गोमेद 5/7 रत्ती धारण कर सकते हैं।

अथ नवग्रह स्तोत्रम्

जपाकुसुम–संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव–संभवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियङ्गु कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचन–सन्निभम्।
बुद्धिमूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्द–मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।
इति व्यासमुखोद्गीतं यःपठेत्सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशांतिर्भविष्यति।।
नर–नारी–नृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ।।

आकाशी कौंसिल का विचार (सं. 2068 वि.)

(ग्रहपरिषद् एवं ग्रहगोचर के आधार पर विश्व की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का सर्वेक्षण)

- ❖ संवत् 2068 वि. का राजा चन्द्रमा है, लेकिन मन्त्री गुरु होने से इस संवत् में शासकों की दूरदर्शिता से उग्रवाद, नक्सलवाद एवं माओवाद पर अंकुश लगाने की प्रक्रिया ज़ोर पकड़ेगी।
- ❖ 'क्रोधी' नामक इत्त संवत्सर में काश्मीर, आसाम, महाराष्ट्र, उड़ीसा एवं बंगाल आदि में उग्रवाद किंवा अन्य तरह के पृथक्‌तावादी वादों से अनेकत्र भारी जनधनहानि ; प्राकृतिक आपदाओं से भी भयंकर जनधनहानि होगी।
- ❖ इस संवत् का धनेश एवं नीरसेश शनि होने से विश्व में आर्थिक संकट गहराएगा, विश्व के राष्ट्रों में शस्त्रास्त्र–भण्डारण की प्रवृत्ति ज़ोर पकड़ेगी। महंगाई चरमसीमा को पार करेगी।
- ❖ इसवर्ष 'कर्कोटक' नाग के प्रभाव से यानदुर्घटनाएं अधिक होंगी, किसी प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्ति की हत्या/मृत्यु से शोक भी व्याप्त होगा।
- ❖ इसवर्ष वायुसप्तक में 'प्रवह' नामक वायु के कारण विश्व के दक्षिण–पश्चिमी भूभाग किंवा भारत के समुद्रतटवर्ती प्रान्तों में भू–अन्तर्गत ऊष्ण तरंगों के प्रवहण से भूकम्प, आन्धी–तूफान, सुनामी एवं बादल फटने आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं।
- ❖ संवत् के आरम्भ से 11 जून, 24 जुलाई से 9 सितम्बर एवम् 24 नवम्बर से 25 दिसम्बर, सन् 2011 ई. तक की समयावधियों के दौरान विश्व में अघटित घटनाओं का चक्र चलेगा। पाक–चीन आदि की तरफ से सीमा–उल्लंघन एवं सीमावर्ती प्रदेशों में अशान्ति, शत्रु–सेना की गतिविधि सन्दिग्ध रहेगी।
- ❖ 23 जनवरी से 7 फरवरी, 2012 ई. एवम् आगे संवत् 2068 वि. के अन्त तक की शनि–मंगल की स्थिति मुस्लिमराष्ट्रों के लिए विशेष उथल–पुथल वाली है, कहीं आन्तरिक अशान्ति, कहीं सत्तापरिवर्तन के आसार।
- ❖ भारत का समर्थ, सशक्त एवं विशेष शक्ति के रूप में उदय, भारत की शासनपद्धति एवं देश के प्रमुख नेताओं के जन्माङ्गों का विश्लेषण।
- ❖ भारत की राजनैतिक पार्टियों की स्थिति, ज्योतिषदृष्ट्या कार्यशैली का आकलन।
- ❖ भारत एवं भारतेतर देशों का भविष्य क्या ?– यह सब देखिए, "आकाशी कौंसिल" के अगले पृष्ठों पर।

" जो रहस्य साधारणतः इन्द्रियों की पहुंच से बाहर हैं अथवा भूत–भविष्य के गर्भ में निहित हैं, वे ज्योतिषशास्त्र द्वारा प्रत्यक्ष जान लिए जाते हैं।" हमारे ऋषियों ने उसी ज्योतिष–शास्त्र की रचना की है, जोकि भारत के लिए गौरव की बात है;–

" ज्योतिषामयनं साक्षाद् यत्तद्ज्ञानमतीन्द्रियम्।
प्रणीतं भवता येन पुमान् वेद परावरम्।।" – (श्रीमद्भागवतपुराण)

ग्रहगतिजन्य प्रभाव से प्रताड़ित समस्त समाज, व्यक्ति किंवा देश की स्थिति ठीक उस तिनके की भान्ति ही अनुभव की गई है, जो वायुवेग से प्रताडित होकर अपने अस्तित्व को खोकर इधर–उधर भागता फिरता है। नैषधचरित में स्पष्ट लिखा है–

"अवश्य भव्येष्वनवग्रह ग्रहा यया दिशा धावति वेधसः स्पृहा।
तृणेन वात्येव तयानुगम्यते लोकस्य चित्तेन भृशाऽवशात्मनः।।"

स्पष्ट है कि– उस परोक्ष–अज्ञात–अलौकिक शक्ति के परिचायक अनन्तकोटि तारों एवं ग्रहों के अदृश्य संकेत से संचालित ब्रह्माण्ड में कभी भूकम्प, समुद्री–बर्फानी तूफान, ज्वालामुखी–विस्फोट एवं जनजीवन में उग्र–विनाशक घटनाएं स्पष्ट अनुभव की गई हैं।

इस प्रकार जगत्पिता की अदृश्य अलौकिक शक्ति ही ब्रह्माण्ड को प्रभावित करती है, संचालित करती है। ग्रहगतिजन्य इस परिणाम को हम "भवितव्यता" किंवा "ईश्वरेच्छा" कहकर स्वीकार करते हैं।

श्री वि. संवत् 2068 की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं की भविष्यवाणी प्रस्तुत करने से पहिले हम अपने विद्वान्, प्रबुद्ध पाठकों का आभार व्यक्त कर देना उचित समझते हैं, जिन्होंने लगातार 83 वर्षो तक हमारी भविष्यवाणियों का सही मूल्यांकन करके हमें आज 84 वें वर्षप्रवेश पर भी इस बारे में कुछ लिखने को प्रोत्साहित

किया है। पाठको ! आपका यह पंचांग अपनी सर्वांगशुद्ध गणित एवं आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों के लिए भारत में ही नहीं, विदेशों में भी विश्रुत हो चुका है।

आपके इस लोकप्रिय पंचांग में प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली आश्चर्यजनक, अव्यभिचरित भविष्यवाणियों में साधारणवर्ग के व्यक्ति से लेकर भारतरत्न श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रथम राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद एवं अन्य गण्यमान्य प्रतिष्ठित ऐतिहासिक महापुरुषों की अभिरुचि रही है। आज भी यह पंचांग अपनी सफल आश्चर्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणियों के कारण तथा ग्रहण आदि पंचांगगणित की सूक्ष्मता एवं शुद्धि के कारण भारत में ही नहीं, विदेशों में भी लोकप्रिय है और भारत में अग्रणी स्थान प्राप्त कर चुका है।

यह बात भी नितांत सत्य है, कि ग्रहों की प्राकृतिक व्यवस्था में तनिक भी रूपान्तरण होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवों से संसार त्रस्त हो जाता है। अतः स्पष्ट है, कि– आकाशीय पिण्डों (ग्रहों) का विश्वजनीन घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है;– इस तथ्य को वैज्ञानिक, विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है।

इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता अनुभव करते हैं, वह सब ग्रहों के वक्र–मार्ग आदि का ही परिणाम है। इस ग्रहगतिजन्य संकेत के आधार पर ही अपनी मति के अनुसार विश्व में जो भी प्रतिवर्ष घटित होता है, " श्रीमार्तण्ड पंचांग " के माध्यम से प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थित करते रहते हैं और यह इस प्रकाशन का 84वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।

भारत–पाक विभाजन; बंगलादेश का अस्तित्व में आना; श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीलालबहादुर शास्त्री, श्रीमती इन्दिरागांधी के शासन का अंत एवं मृत्यु की सूचना; भारत–पाक युद्ध; भारत–चीन युद्ध; विदेशों में घटित होने वाले महत्त्वपूर्ण घटनाचक्र; समय–समय पर भारत की राजनीति में विशेष परिवर्तनों एवं अन्य घटनाचक्र की सूचना किंवा ऐतिहासिक भूकम्प; गुजराल सरकार का अपदस्थ होना, भाजपा सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पारित होना; पाक में श्री नवाज़शरीफ की सरकार का तख्तापलट; अमेरिका में वर्ल्डट्रेड सेंटर एवं पेंटागन पर उग्रवादियों का हमला, अमरीका की कोलम्बिया आन्तरिक शटलयान दुर्घटना; इराक पर अमरीकी हमला और सद्दाम हुस्सैनशासन का अन्त; नेपाल में माओवाद से अशान्ति एवं राजशाही का अन्त; अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री रीगन की मृत्यु; संवत् 2061 वि. में भाजपा एवम् N.D.A. शासन का तख्तापलट एवम् भारत के लोकसभानिर्वाचनों में त्रिशंकु शासनसत्ता की भविष्यवाणी के अतिरिक्त 26 दिसंबर 2004 ई. को तामिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश एवं अण्डेमान–निकोबार में समुद्री सुनामी लहरों से प्रलयंकारी तबाही की सटीक भविष्यवाणी, 30 अगस्त, 2004ई. को अमरीका में भूकम्प एवं सं. 2065 वि. में नेपाल में राजशाही की समाप्ति की भविष्यवाणी एवम् अन्य अनेकों अवाक् कर देने वाली सफल भविष्यवाणियां कर देने का शीर्षस्थ स्थान केवल 'श्रीमार्तण्ड पंचांग' को ही प्राप्त हुआ है।

संवत् 2063 वि. में इराक के तानाशाह की फांसी की घोषणा, 20 दिसम्बर, 2006 ई. को समुद्रीतूफान, जहाज डूबा, 865 यात्री मारे गए– इस घटना की भविष्यवाणी, भारत–अमेरिका परमाणुकरार में बाधा एवम् प्रधानमन्त्री श्रीमनमोहन सिंह जी के निर्णय में बाधक स्थिति की सूचना, मई से जुलाई 2007 ई. के मध्य पाक आदि मुस्लिम राष्ट्रों में घटित घटनाओं का चित्रण, 30 जून, 2007 ई. को देहली के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्रीसाहिब सिंह के दुर्घटनाग्रस्त होने की भविष्यवाणी, 16 अगस्त, 2007 ई. को पीरु के भयंकर भूकम्प, 21 अगस्त, 2007 ई. में मैक्सिको के भयंकर तूफान, 12 सितम्बर, 2007 को सुमात्रा–इण्डोनेशिया में 7.9 स्केल के भूकम्प; *संवत् 2064 वि.* की भविष्यवाणी के अनुसार उत्तर प्रदेश में बसपा सरकार की स्थापना, नेपाल में माओवादियों के प्रभाव की घोषणा, 27 दिसम्बर, 2007 ई. को पाक में श्रीमती बेनज़ीर भुट्टो की हत्या की भविष्यवाणी, 12 मई, 2008 ई. को चीन में भयंकर भूकम्प, 3 मई, 2008 ई. को म्यांमार में भूकम्प, 10 अगस्त के लगभग नेपाल में राजतन्त्र की समाप्ति की भविष्यवाणी एवम् अन्य अवाक् कर देने वाली सहस्रों सफल भविष्यवाणियों का श्रेय "श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाग" को ही जाता है।

इस प्रकार अव्यभिचरित भविष्यवाणियों के लिए यह पंचांग सम्पूर्ण भारत किंवा विदेशों में भी ख्यातनामा हो चुका है।

सं. 2067 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर भावी घटनाओं पर विचार करने से पूर्व सभी स्तब्ध कर देने वाली भविष्यवाणियों की चर्चा करना तो स्थानाभाव के कारण यहां संभव नहीं है, लेकिन गत एक–दो वर्षों की कुछ भविष्यवाणियों की चर्चा करना प्रासंगिक समझते हैं, ताकि फलितशास्त्र की प्रामाणिकता को स्थापित किया जा सके।

(1) भविष्यवाणी– "21 जून को मंगल सिंहराशि में आकर शनि के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। इस प्रकार शनि–मंगल 9/10 अगस्त, 2008 ई. तक एक–साथ चलेंगे। ग्रहस्थिति से स्पष्ट संकेत मिलता है कि– नेपाल में राजशाही के लिए सन् 2008 ई. का समय बहुत ही चिन्ताजनक परिस्थिति बना देगा। यहां जन–असन्तोष से अराजकता की स्थिति को संभालना कठिन होगा। माओवादियों में बढ़ रहे असन्तोष से नेपाल की तराई में स्थित मधेशियों के विरुद्ध हिंसा एवं जनधनहानि के योग संवत्–मध्य में स्पष्ट दिखाई देते हैं। सन् 2008 ई. की ग्रहस्थिति नेपाल में गणतन्त्र के पक्ष में जाती है।"

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2065 वि., पृ. 24, कॉलम 2, स्टैंज़ा 3)

इस भविष्यवाणी की सत्यता सर्वविदित है। ठीक, 21 जून से 10 अगस्त के मध्य नेपाल में ऐतिहासिक राजतन्त्र समाप्त हुआ और गणतन्त्र की स्थापना का श्रीगणेश हो गया। इसी बारे पृ. 29 पर की गई भविष्यवाणी भी कम आश्चर्यजनक नही। पढ़ें–

(2) भविष्यवाणी– "सरकार और माओवादियों के बीच राजशाही और चुनावप्रणाली पर सहमति में कठिनाई आएगी। यहां माओवाद फिर देश को कठिन परिस्थितियों में लाकर खड़ा कर देगा। माओवादियों के हिंसक काण्ड भारत सरकार के लिए चिन्ता का कारण बनेंगे। *इसवर्ष सन् 2008 ई. की प्रारम्भिक ग्रहस्थिति के अनुसार नेपाल में राजशाही की समाप्ति और एक स्वतन्त्र लोकतन्त्र की स्थापना सुनिश्चित है। लेकिन माओवाद यहां की शासनसत्ता पर किसी न किसी तरह काबज़ रहेगा।* "

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2065 वि., पृ. 29, कॉलम 1, स्टैंज़ा 2)

आज भी नेपाल में लोकतन्त्र के नाम पर शासनसूत्र माओवादियों के अधीन है।

इन उल्लिखित दो भविष्यवाणियों की सत्यता पर हमें नेपाल से अनेकों पत्र प्राप्त हुए हैं।

(3) भविष्यवाणी– "मुम्बई में ताज होटल पर सब से बड़ा उग्रवादी हमला"– संवत् 2065 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग के पृ. 29, कॉलम 2 पर पहला स्टैंजा पढ़ें–

"ध्यान दें– 27 नवम्बर के लगभग सू. बु. चं. मं.– ये चारों ग्रह अनुराधा नक्षत्र में होने, जोकि मार्गशीर्ष मास में किसी विशेष दुर्घटना का संकेत देते हैं। इस समय सरकार को शत्रु की गतिविधि से सावधान रहना होगा। इसवर्ष मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में द्वितीया तिथि का क्षय होने से किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति किंवा राजनीतिज्ञ का पद खाली होने का संकेत मिलता है–

" मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षयः।
छत्रभंगं प्रजापीड़ां दुर्भिक्षं च समादिशेत्।।"

कहीं दुर्भिक्ष व कहीं रोगजन्य व उग्र . तिविधियों के कारण जनता परेशान रहे।

ध्यान दें– 26/27 नवम्बर के पाक्षिक फलादेश में भी मुम्बई में उग्रवादियों द्वारा किए गए हमले का संकेत स्पष्ट शब्दों में इस प्रकार किया गया था–

" शनिवारी संक्रान्ति एवम् पक्षमध्य में सू. बु. चं. मं. का वृश्चिक राशि एवं एक नक्षत्र में रहना देश में किसी अघटित घटना को जन्म देगा। ..... कहीं उग्रवादजन्य गतिविधि से जनधन की हानि भी हो।"

(देखें– 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' 2065 वि., पृ. 120 का पाक्षिक फलादेश)

जब 26 नवम्बर, सन् 2008 ई. को मुम्बई में आतंकवादी हमला हुआ था तो भारतीय पुलिस, सुरक्षाबलों तथा एन.एस.जी. कमांडोज को पाकिस्तानी हमलावरों का सफाया करने में 60 घंटे लगे थे।

आतंकवादियों ने 163 लोगों की हत्या तथा 370 लोगों को जख्मी किया था। इसका मुकाबला करते हुए आतंकवादनिरोधक सैल (ए. टी. ऐस.) के प्रमुख हेमन्त करकरे व उनके सहयोगी 2 अधिकारी, पुलिस के 15 जवान, सेना के मेजर उन्नी कृष्णन तथा एन.एस. जी. का एक कमांडो शहीद हो गए थे। सुरक्षाबलों व कमांडोज़ ने 8 आतंकवादियों को मार गिराया था।

उस समय होटल ताज, होटल ओबराय व नरीमन हाऊस में घुसे आतंकवादियों का सफाया करने में लगे 60 घंटों की सभी ओर से आलोचना हुई थी तथा तत्कालीन केंद्रीय गृहमंत्री शिवराज पाटिल को इस्तीफा देना पडा था।

(4) भविष्यवाणी– " 14 नवम्बर, 2008 ई. को भारतीय यान चन्द्रमा पर पहुंचा, तिरंगा फहराया, भारत चौथी विश्वशक्ति के रूप में उभरा" – एतत् संबन्धी भविष्यवाणी पढ़ें –

"('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2065 वि., पृ. 27, कॉलम 1, स्टैंज़ा 2 पर)

" स्वतन्त्र भारत के 62वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार धनस्थानेश गुरु धनस्थान में भाग्येश चन्द्र के साथ मिलकर 'गजकेसरीयोग' बना रहा है, जोकि भारत की आर्थिक सम्पन्नता में भारी अभ्युदय का संकेत देता है।"

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2065 वि., पृ. 27, कॉलम 2, स्टैंज़ा 1, लाईन 13 में भी स्पष्ट घोषणा की गई है, कि गणतन्त्र–वर्षाङ्ग में 'बुधादित्ययोग' गणतन्त्र की महिमा एवं वर्चस्व को उत्तरोत्तर प्रगतिपथ पर ही रखेगा।

(5) भविष्यवाणी– "संवत् 2066 में मुस्लिम (हिजरी) सन् 1431 का बादशाह शनि ही है। कुछ मुस्लिम राष्ट्रों में युद्धमय वातावरण या आन्तरिक क्रान्ति से विश्व के प्रमुख राष्ट्रों में चिन्ता रहे। जनधनहानि किंवा प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि भी हो। विश्व के कुछ देशों में भूकम्प, समुद्री तूफान किंवा राजनैतिक हत्याकाण्ड से हानि की सम्भावना है। देश में नानाप्रकार के रोग फैलेंगे। शनि–मंगल–इतवार एवम् गुरुवार वाले दिन किसी विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु से शोक व्याप्त हो।"

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2066 वि., पृ. 38 कॉलम 1, स्टैंज़ा 3)

(i) ठीक, इस भविष्यवाणी के अनुसार 'स्वाइन फ्लू' रोग से शासनतन्त्र चिन्तित हुआ।

(ii) पाक में आन्तरिक अशान्ति, विस्फोट, स्वातघाटी में उग्रवादियों के साथ सैन्य संघर्ष भी इस भविष्यवाणी की सफलता का स्पष्ट निदर्शन है।

(6) भविष्यवाणी–" *श्री बराक ओबामा की जन्मकुण्डली में भाग्येश बुध कर्मस्थान में अपने मित्र सूर्य के साथ स्थित है, इस पर गुरु–शनि की दृष्टि भी है। गुरु की कर्मस्थान पर उच्चदृष्टि महत्त्वपूर्ण है। ध्यान दें– जनवरी 2009 ई. में जब अमेरिका में राष्ट्रपतिपद का निर्वाचन होगा, उस समय गुरु मकर राशि में स्थित होकर उच्च दृष्टि से श्री बराक ओबामा के कर्मस्थान को देखेगा और कर्मेश चन्द्र (जोकि इनके जन्माङ्ग में उच्च होकर अष्टम भाव में स्थित है) पर भी गुरु की विशेष दृष्टि पड़ेगी। शनि में गुरु का अन्तर मई 2009 ई. के लगभग तक प्रभावित करेगा। आगे बुध (श्रीबराक ओबामा के भाग्येश) की दशा निश्चितरूप से कुछ कर दिखलाने की क्षमता देगी एवं यशप्रद रहेगी।*

उल्लिखित यथालब्ध दोनों प्रतिद्वन्द्वियों की कुण्डलियों के विश्लेषण से श्री बराक ओबामा राष्ट्रपतिपद के समर्थ दावेदार सिद्ध होंगे–ऐसा विचार है। सर्वज्ञ तो प्रभु ही है।

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2066 वि., पृ. 40, कॉलम 1, अन्तिम स्टैंज़ा)

ठीक, इस घोषणा के अनुसार श्री बराक ओबामा अमेरिका के नए राष्ट्रपति बने।

(7) भविष्यवाणी– "यू.पी.ए. की कुण्डली का चिन्तन करने से स्पष्ट ज्ञात होता है, कि–राहु की महादशा में शुक्रान्तर चल रहा है। इस पार्टी के प्रधान श्री मनमोहन सिंह जी की कुण्डली के अनुसार राहु की महादशा में केत्वन्तर राजनैतिक दृष्टि से कठिन परिस्थितियों वाला ही रहेगा। सत्ता में रहने के लिए भारी प्रयास करने होंगे। लेकिन अन्ततः गोचर में मकरस्थ गुरु की कर्मस्थान पर दृष्टि इन्हें पुनः सफलता प्रदान करने वाली होगी, सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।"

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2066 वि., पृ. 44, कॉलम 1, स्टैंज़ा 3)

...चन्द्र के साथ मिलकर 'गजकेसरीयोग' बना रहा है, जोकि भारत की आर्थिक सम्पन्नता में भारी अभ्युदय का संकेत देता है।"

...कर्मस्थान पर दृष्टि इन्हें पुनः सफलता प्रदान करने वाली होगी, सर्वज्ञ तो प्रभु ही है।"

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2066 वि., पृ. 44, कॉलम 1, स्टैंज़ा 3)

ठीक, इस भविष्यवाणी के अनुसार U.P.A. के प्रधान श्रीमनमोहन सिंह जी को पुनः प्रधानमन्त्रित्व पद प्राप्त हुआ।

(8) श्रीराहुल गान्धी जी के बारे में भविष्यवाणी–

"राजनैतिक दृष्टि से 4 मार्च, 2010 ई. तक की ग्रहस्थिति इनके (श्रीमती सोनिया गांधी के) एवं श्रीराहुल गांधी जी के लिए भारी प्रगतिप्रद होगी। सबल–सशक्त राजनीतिज्ञ एवं पार्टी– सुप्रीमो की दृष्टि से इन्हें भारी मान्यता प्राप्त होगी। श्रीराहुल गांधी को आगे सम्मान्य पद उपलब्ध होने का योग भी है।"

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2066 वि., पृ. 44, कॉलम 1, स्टैंज़ा 5)

यह भविष्यवाणी अक्षरशः सत्यापित होती जा रही है। जोकि सार्वजनिक रूप से स्पष्ट है।

श्रीलालकृष्ण आडवानी जी के बारे में की गई भविष्यवाणी भी पढ़ें–

(9) भविष्यवाणी– " श्रीलालकृष्ण आडवानी की जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार कर्मेश सूर्य का भाग्येश चन्द्र के साथ समसप्तकयोग बनना इन्हें पार्टी के प्रमुख पद पर स्थापित करता है, लेकिन कर्मेश सूर्य नीच होकर द्वादशस्थ होकर षष्ठेश मंगल एवं आयेश बुध के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाता है। यह ग्रहस्थिति देश के प्रधानपदप्राप्ति में बाधक है।"

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2066 वि., पृ. 44, कॉलम 2, स्टैंज़ा 3)

भाजपा ने श्रीलालकृष्ण आडवानी जी को देश के भावी प्रधानमन्त्री के रूप में स्थापित करना चाहा था। उक्त भविष्यवाणी के अनुसार यह सम्भव न था। इस प्रकार यह भविष्यवाणी शत–प्रतिशत सत्य सिद्ध हुई।

हिमाचल प्रदेश में श्री प्रेमकुमार धूमल जी की प्रतिष्ठा बढ़ी, लोकसभानिर्वाचनों में भाजपा को बहुमत–

(10) भविष्यवाणी– हिमाचल प्रदेश–इस प्रदेश की नामराशि कर्क एवं प्रभावराशि मीन है। प्रारम्भिक ग्रहस्थिति यहां के प्रमुख शासक श्री प्रेमकुमार धूमल के शासनकाल में इस प्रान्त को ऐतिहासिक कार्य–कलापों एवं चीन आदि से सुरक्षा की दृष्टि से अपनाए गए नए आयामों, रेलमार्ग आदि के प्रोग्रामों से भारी यश एवं सफलता प्रदान करने वाली है। 'कुछ कर दिखाने की क्षमता'– इनको श्रेय एवं जनता का प्रेय प्रदान करेगी। वर्षप्रवेशकुण्डली में सप्तमस्थ उच्च शुक्र एवं गोचरस्थ मकर का गुरु, राहुयुत होकर धूमल जी की नामराशि से पंचमभाव में होने से मई, 2009 ई. तक इनकी यश–प्रतिष्ठा एवं विरोधी ग्रुप को हतप्रभ कर देने वाली ग्रहस्थिति बनाता है। लोकसभानिर्वाचनों में भाजपा की प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2066 वि., पृ. 45, कॉलम 1, स्टैंज़ा 4)

(11) भविष्यवाणी– 29 जून को शुक्र वृषराशि में प्रवेश करेगा एवम् 3 जुलाई को मंगल भी वृष राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। इस समय शुक्र–मंगल पर शनि की पूरी नज़र है। इस समय बुध का अतिचार भी शुरु हो चुका है, जोकि 22 जुलाई तक चलेगा। इस समयावधि में यानदुर्घटना, किसी महान् व्यक्ति की मृत्यु, भूकंप, समुद्री तूफानादि से जनधनहानि के योग बनते हैं।

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2066 वि., पृ. 38, कॉलम 1)

(12) भविष्यवाणी– 13 जनवरी को सूर्य मकर राशि में आकर गुरु व राहु के साथ मेल करेगा। 27 जनवरी मंगलवार को मंगल भी मकर राशि में आकर शनि पर दृष्टिपात करेगा। यह ग्रहस्थिति यूरोप के किसी देशविशेष में भूकम्प, समुद्री तूफान आदि आपदाओं से भारी जनधनहानि का संकेत देती है। इस समय समुद्रतटवर्ती देश किंवा समुद्रतटवर्ती भूभाग को विशेष हानि पहुंचेगी।

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2066 वि., पृ. 39, कॉलम 1)

" 12/13 जनवरी, 2010 ई. को हैती में विनाशकारी भूकम्प"–

7 रिक्टर वाले इस भूकम्प में हज़ारों लोग मारे गए। इस भूकम्प में हैती का राष्ट्रपतिनिवास, संयुक्तराष्ट्र–मुख्यालय–समेत हजारों मकान धराशायी हो गए। लाखों व्यक्ति इस कहर का शिकार बने।

इस प्रकार ठीक 13 जनवरी, 2010 ई. की ग्रहस्थिति के आधार पर लिखित इस भविष्यवाणी की सत्यता को 12/13 जनवरी को ही आए भूकम्प ने सत्यापित कर दिया है। INDIAN EXPRESS समाचारपत्र में इस घटना को 200 वर्ष में सबसे भयंकर भूकम्प लिखते हुए। " It is a Catoustrophe" 'यह एक प्रलय है' लिखकर इस घटना की भयंकरता को वर्णित किया है।

(13) भविष्यवाणी– 3 जुलाई से 15 अगस्त तक शनि–मंगल का दशम–चतुर्थसम्बन्ध यूरोपीय देशों के लिए विशेष भयावह प्रतीत होता है। इस अवधि में आगज़नी, विस्फोट, भूचाल, बाढ़, समुद्री लहरों, तूफान आदि से यूरोपीय देशों को भारी हानि झेलनी पड़ सकती है।

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2066 वि., पृ. 39, कॉलम 1)

(i) 7 जुलाई, 2009 ई. को चीन में दंगे, 140 मरे, 820 घायल हुए।

(ii) चीन में बाढ़– 7 जुलाई, 2009 ई., 2,40,000 लोग बेघर हुए।

(iii) 10 जुलाई, 2009 ई. को चीन में भूचाल मे 32,524 लोग घायल, 4 लाख बेघर हुए।

इस प्रकार उल्लिखित भविष्यवाणी की सत्यता सिद्ध हो जाती है।

(14) भविष्यवाणी– "इस प्रकार 30 जुलाई से लेकर 9 सितम्बर तक की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्व में बहुत अघटित घटनाचक्र चलेगा। अनेकत्र उग्रवादजन्य

हत्याकाण्ड, बमविस्फोट, भूकम्प एवम् अन्य आपदाओं से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं। इस अवधि में किसी यावनदेश में सत्तापरिवर्तन भी संभव है।"

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2066 वि., पृ. 38, कॉलम 1)

10–11 अगस्त को जापान एवं चीन में भयंकर भूकम्प से 100 गांव प्रभावित, भयंकर जनधनहानि हुई। अण्डेमान, आन्ध्रप्रदेश एवं उडीसा में भी भूकम्प के झटके महसूस किए गए।

(15) भविष्यवाणी– "13 जनवरी, 2010 ई. से संवत् के अन्त तक शनि–मंगल वक्री रहेंगे। यह समय अघटित घटनाओं वाला सिद्ध होगा। धार्मिक–सांप्रदायिक झगड़े, हत्याकाण्ड, कहीं भूकम्प, समुद्री तूफान आदि प्राकृतिक आपदाओं का सामना इस देश को जनवरी, 2010 से मार्च, 2010 तक करना पड़ेगा।"

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2066 वि., पृ. 43, कॉलम 2)

(i) **" Deadly quake jolts Chile"- Daily Tribune, Chandigarh-dated 28/2/2010.** चिल्ली में 8.8 magnitudes के भयंकर भूकम्प से 27 फरवरी, 2010 ई. को 147 से अधिक व्यक्तियों की मृत्यु। सुनामी अलर्ट।

(ii) 17 जनवरी, 2010 ई. को सम्माननीय ज्योतिवसु स्वर्ग सिधारे, जोकि भारतीय राजनीति के एक युगपुरुष थे। भारतीय राजनीति में यह एक भारी दुःखद घटना रही है।

(iii) 15 मई, 2010 ई. को महामहिम पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरों सिंह शेखावत जी स्वर्ग सिधारे– यह भी भारतीय राजनीति के क्षेत्र में एक भारी दुःखद घटना के रूप में जाना जाता है।

इस प्रकार संवत् 2066 वि. के अन्तिम चरण में शनि–मंगल के वक्रत्व के फल की भविष्यवाणी भी स्पष्टतः सत्य सिद्ध हुई।

(16) भविष्यवाणी– 24 जुलाई को गुरु वक्री होगा। आगे श्रावण चान्द्रमास में (27 जुलाई से 24 अगस्त तक) 5 मंगलवार होने से अगस्त के दूसरे सप्ताह में कहीं भयंकर भूकम्प, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि संभव है।

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2067 वि., पृ. 39, कॉलम 1)

(i) लेह (लद्दाख) में 5/6 अगस्त की रात्रि में भयंकर 'बादल–विस्फोट' की घटना में जो जनधनहानि हुई है, वह भारी दुःखद एवं अविस्मरणीय प्राकृतिक प्रकोप के रूप में जानी गई है। हवाई अड्डा ध्वस्त हुआ, अनगिनत लोग मारे गए।

(ii) इसी दौरान (27 जुलाई से 24 अगस्त के मध्य) पाकिस्तान एवं चाइना में भयंकर बाढ़ से हजारों व्यक्तियों के मरने, लाखों के बेघर होने की सूचना भी समाचारपत्रों में प्रकाशित और टी. वी. पर प्रसारित हुई है।

ये दोनों घटनाएं उल्लिखित भविष्यवाणियों की सत्यता को अक्षरशः प्रमाणित करती हैं।

(17) भविष्यवाणी– संवत् (2067 वि.) की नववर्ष प्रवेशकालीन कुण्डलीगत ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश गुरु तृतीय भाव में शनि के क्षेत्र में है। शनि कन्याराशि में वक्रस्थिति में है एवम् गुरु के साथ षडष्टकयोग बना रहा है। इस समय नीचस्थ मंगल भी गुरु के साथ षडष्टकयोग बना रहा है। स्पष्ट है, कि– कुछ माओवादी माकपा एवम् अन्य ग्रुप, जो लोकतांत्रिक प्रक्रिया में विश्वास नहीं रखते, वे भी सुरक्षाबलों पर प्रहार कर सकते हैं। ये पार्टियां देश के आधादर्जन से भी अधिक राज्यों को दूषित कर रही हैं। इसवर्ष छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा, महाराष्ट्र, आसाम आदि में भारी उपद्रव होंगे। इन उपद्रवों को कानूनव्यवस्था के नज़रिये से हल करने की नीति असफल रहेगी। जम्मू– काश्मीर भी सरकार के लिए सिरदर्द रहेगा। इसलिए तेज़ी से बढ़ रही माओवादी किंवा सभी प्रकार की हिंसा पर कन्ट्रोल करने के लिए स्पष्ट व प्रभावशाली कार्यवाही में देरी करना भारी भूल सिद्ध होगी।

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2067 वि., पृ. 38, कॉलम 1)

गत वर्ष 7 अप्रैल, 2010 ई. को छतीसगढ के दन्तेवाड़ा में 'नक्सलियों के कहर' से C.R.P.F. के 83 जवान शहीद हुए। 8 जवान घायल एवं 150 जवान लापता रहे। इस हमले में प्रेस अनुसार 1,000 (एक हज़ार) नक्सली शामिल हुए। दन्तेवाड़ा की सीमा महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश एवं उड़ीसा से लगती है।

गतवर्ष सं. 2067 वि. में जम्मू–काश्मीर में जो विस्फोटक स्थिति रही है, अमरनाथ यात्रा के दौरान जो मुस्लिम काश्मीरियों की मानसिकता अनुभव की गई है, उससे एवं उल्लिखित नक्सली घटनाओं से भविष्यवाणी की सत्यता को स्वीकार करना ही पड़ेगा। उल्लिखित भविष्यवाणी की सत्यता पर अनेकों पत्र बिहार, असम, उत्तरप्रदेश से हमें प्राप्त हुए। ये सब फलितशास्त्र की वैज्ञानिकता के साक्षी हैं।

(18) भविष्यवाणी– 16 मार्च से 14 अप्रैल तक सूर्य–शनि का समसप्तकयोग बनेगा। दोनों प्रबल शत्रुग्रह हैं। नक्सली अपनी शक्तिसत्ता का विस्तार करेंगे। भारत के आसाम–त्रिपुरा–नागालैण्ड– झारखण्ड आदि में इनकी शक्ति को नज़र अन्दाज़ करना आगे चलकर भयानक परिणामों वाला सिद्ध होगा। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार अप्रैल, सन् 2010 ई. में धार्मिक स्थलों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान रखना होगा, क्योंकि इस समय उग्रवादजन्य किसी घटना किंवा किसी दुर्घटना से जनधनहानि के योग बनते हैं।

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2067 वि., पृ. 34, कॉलम 1)

(i) "14 अप्रैल, 2010 ई. को तिब्बत के पठार में 7.1 रिक्टर के भूकम्प से भारी तबाही ।"– *दैनिक भास्कर।*

इस भूकम्प में 400 से अधिक लोगों की मृत्यु हुई, 10,000 से अधिक

भयंकर बाढ़ से हजारों व्यक्तियों के मरने, लाखों के ... में प्रकाशित और टी. वी. पर प्रसारित हुई है। ... लोगों की मृत्यु हुई, 10,000 से अधिक घायल हुए।

(ii) 14 अप्रैल, 2010 ई. को हरिद्वार में अन्तिम शाहीस्नान के समय "सूखी नदी पर बने पुल की रेलिंग टूटी।"

भगदड़ में सात व्यक्ति मारे गए एवं 17 श्रद्धालु घायल हुए।

(iii) 10 अप्रैल, 2010 ई. को पोलैण्ड के राष्ट्रपतिसहित 96 लोग विमानदुर्घटना में मरे।

(iv) 13/14 अप्रैल को रात्रि में 40 मिनट चले भयंकर तूफान से बिहार, पश्चिमी बंगाल एवं असम में भारी जनधनहानि हुई। तूफान से उत्तरी दिनाजपुर जिले में 50,000 घर गिर गए। बिहार में अरिया, असम में धुबरी, जोरहाट, तिनसुकिया, शिवसागर व कामरूप ज़िलों में भारी विनाशलीला देखी गई।

पाठको ! श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गई या की जा रहीं भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय जो आप हमें दे रहे हैं, वह सब पूर्वाचार्यों एवं ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ गुरुचरणों की कृपा ही है या जनताजनार्दन के सौहार्द का परिणाम। हम उन पाठकों के भी आभारी हैं, जो विभिन्न प्रान्तों किंवा विदेशों से पत्राचार द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षों में ग्रहगतिजन्य संकेतों के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

संवत् 2068 वि. की ग्रहपरिषद् के अधिकारियों का विश्व पर प्रभाव

विज्ञान 'कार्य–कारण के सिद्धान्त' पर आधारित है। परन्तु असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक अपने आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं। सिद्धांतों के व्यभिचारमात्र से ज्योतिषशास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्य–सिद्धांतों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अनुसंधान की आवश्यकता है।

जिस तरह पृथ्वी पर लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना के लिए प्रधानमंत्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण–कर्म–स्वभाव–योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों एवम् शासनतंत्र पर पड़ता है, उसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में संसारचक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती 'आकाशी कौंसिल' का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलट–फेर एवं अघटित घटनाएं घटित होती हैं; इस घटनाचक्र को त्रिकालज्ञ दैवज्ञों द्वारा लिखित ग्रन्थों के आधार पर वि. सं. 2068 की ग्रहस्थिति के अनुसार कुछ लिखने की चेष्टा कर रहे हैं।

संवत् 2068 वि. का राजा स्त्री–ग्रह चन्द्रमा है। इस वर्ष की ग्रहपरिषद् (आकाशी कौंसिल) में 6 पद सौम्य ग्रहों को एवं 4 पद क्रूरग्रहों को प्राप्त हैं। ध्यान दें– सम्पूर्ण ग्रहों में प्रभावी ग्रह 'सूर्य' एवं किसान तथा औद्योगिकक्षेत्र के प्रतिनिधि ग्रह 'मंगल' को इस वर्ष ग्रहपरिषद् में कोई स्थान प्राप्त नहीं हुआ है।

इस संवत् के अधिपति चन्द्र को इसवर्ष रसेश (गुड, खाण्ड, रसकस आदि का स्वामित्व) भी प्राप्त है। स्त्रीग्रह चन्द्र का वर्षेश होना यद्यपि सशक्त शासनसत्ता का संकेतक तो नहीं है, लेकिन संवत् 2068 वि. का मन्त्रित्व बहुत ही सशक्त एवमं विवेक–बुद्धि के अधिष्ठाता ग्रह 'गुरु' को प्राप्त हुआ है, जोकि प्रतिष्ठित देशों के शासनतन्त्रों का सञ्चालन सुव्यवस्थित सुचारु रूप से करने में समर्थ रहेगा। ग्रहस्थिति के अनुसार इसवर्ष 'नारीशक्ति' (मातृशक्ति) को विशेष अधिमान् प्राप्त होगा। इस संवत् किंवा आगे सन् 2012 ई. के पूर्वार्ध में विश्व के सम्मानित किंवा प्रगतिशील देशविशेष में नए नेतृत्व का उदय अवश्यंभावी है– "सौख्यं जनानामुदयो नृपाणाम्।"

इस वर्ष की ग्रहपरिषद् में महाक्रूरग्रह शनि को सस्येश, नीरसेश एवं धनेश– ये तीन पद प्राप्त हुए हैं। सस्येश–शनि राजनीतिज्ञों में परस्पर भेदबुद्धि पैदा करेगा। राजनीतिज्ञों में परस्पर विरोध विशेषतः मुस्लिम राष्ट्रों में अन्तर्युद्ध जैसी स्थिति बनेगी। जनता में गुप्तरोग विशेष से परेशानी पैदा करेगा। ईख, जौ, गेहूं आदि की फसलों को हानि पहुंचेगी; शासकलोग सत्तालोलुपता में एक दूसरे पर कीचड़ उछालेंगे।

इस सम्वत् में नीरसेश शनि का प्रभाव शस्त्रास्त्रों, ज़मीन–जायदाद, खाद्य तेलों एवम् दालवाना आदि में अप्रत्याशित तेजी से जनता में परेशानी पैदा करेगा।

इस संवत् में शुक्रग्रह को केवल 'धान्येश' पद ही प्राप्त है। परिणामस्वरूप, शीतकालीन धान्य (अनाज) आदि की फसलों की हानि होने से किसानवर्ग परेशान रहे। महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी।

संवत् 2068 वि. की ग्रहपरिषद् में बालग्रह बुध को मेघेश, फलेश एवं महत्वपूर्ण पद दुर्गेश (सेनापतित्व) भी उपलब्ध है। परिणामस्वरूप, वर्षा पर्याप्त हो। गेहूं, जौ, चना आदि की फसल अच्छी हो। दुर्गेश जैसा महत्त्वपूर्ण पद बालग्रह बुध के अधिकारक्षेत्र में होने से कहीं प्रतिकूल किंवा दुःखद घटनाओं का सामना करने के लिए राष्ट्रनायकों को सैन्यबल का प्रयोग करना पड़ेगा।

इस संवत 2068 वि. में चोरी, ठगी किंवा अनैतिक कार्यों की रोकथाम के लिए भी सरकार को कठोर पग उठाने पड़ेंगे।

दुर्गेश बुध से संकेत मिलता है कि किसी मुस्लिमराष्ट्र में सेना राष्ट्रनायकों के कन्ट्रोल में नहीं रहेगी। सेना में मनमानी की भावना, स्वेच्छाचारिता से राष्ट्रतन्त्र के साथ तालमेल नहीं बनेगा, जिससे शासक हतप्रभ हो सकेंगे।

इस (संवत 2068 वि.) वर्ष की ग्रह परिषद् में 3 पद बालग्रह बुध को, 3 पद नपुंसकग्रह शनि को, 1 पद नरग्रह गुरु को एवं 1–1 पद स्त्रीग्रह चन्द्र एवम् शुक्र को उपलब्ध हुए हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि– 10 पदों पर पांच ग्रहों का अधिकार है, जिनमें

केवल एक पद नरग्रह गुरु को प्राप्त है। इस प्रकार पदविभाजन की दृष्टि से यह वर्ष विश्व के अधिकारी शासकों के लिए विशेष चिन्ताजनक सिद्ध होगा।

संवत् 2068 वि. की गोचर ग्रहस्थिति एवं जगत्लग्न–कुण्डली के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं पर एक नज़र

जगत्लग्नकुण्डली का प्रारम्भ कर्क लग्न से हो रहा है। इस समय कर्क लग्न पर गुरु की विशेष दृष्टि है, पंचमेश मंगल भी इस समय गुरु की सन्निधि में है। लेकिन जगत्लग्न–कुण्डली में लग्नेश चन्द्र द्वितीयभाव में स्थित है और इस पर शुक्र की शत्रुदृष्टि है। कन्याराशिस्थ शनि का मीनराशिस्थ मंगल के साथ समसप्तकयोग भी बन रहा है। इस कुण्डली में नेताओं की विचारशक्ति (पंचमभाव) पर भी शनि की शत्रुदृष्टि है– यह ग्रहस्थिति विश्वजनीन नेतृत्व के लिए परीक्षा की घड़ी उपस्थित करेगी। पाकिस्तान, अफगानिस्तान, चीन, बंगलादेश किंवा अमेरिका एवं जापान आदि में कहीं जुलाई, 2011 ई. से नवम्बर, 2011 ई. के मध्य का समय कहीं आतंकवादजन्य भीषण आपदा से जनता को त्रस्त करने वाला है। इस समय अघटित घटनाचक्र चलेगा। संवत् 2068 वि. के आषाढ़, भाद्रपद से कार्तिक तक का समय एवं चैत्रमास विशेष दुःखद घटनाकारक रहेंगे। उग्रवादजन्य विभीषिका, कहीं राजनैतिक हत्याकाण्ड, कहीं भूकम्प एवं अन्यविध प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि के योग हैं, सरकार को इस समय कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा।

वर्षेशकुण्डली के अनुसार सं. 2068 वि. भारत, U.S.A, पाक, अफगानिस्तान, चीन, बंगलादेश एवं कुछ अन्य राष्ट्रों के लिए भी ऐतिहासिक घटना वाला सिद्ध होगा। विश्व के कुछ प्रमुख राष्ट्र–नेताओं के लिए भी ग्रहस्थिति संकटापन्न स्थिति पैदा करने वाली है– सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

जगत्लग्न–कुण्डली के आधार पर 15 नवम्बर, 2011 ई. के बाद शनि के तुला में आने पर मुस्लिमराष्ट्रों के लिए समय विशेष भयावह सिद्ध होगा।

संवत् 2068 वि. का वर्ष 'क्रोधी' संवत्सर के नाम से जाना गया है, जिसका फल इस प्रकार लिखा है–

"क्रोध्यब्दे त्वखिला लोकाः क्रोध–लोम–परायणाः।
ईति–दोषेण सन्तप्ता मध्य – सस्यार्घ–वृष्टयः।।"

किंच– " विषमस्थं जगत्सर्वं व्याकुलं दारुणाद् रणात्।
देशे ज्ञातौ कुटुम्बे च क्रोधी क्रोधपरः परम्।।"

अर्थात्– जनमानस क्रोध, लोभ से अभिभूत रहे। किसी देश में अग्निकाण्ड, कहीं भूकम्प, ज्वालामुखी विस्फोट, बाढ़, टिड्डीदल आदि प्राकृतिक आपदा से भारी विनाश के योग हैं। विश्वजनीन शासकवर्ग में अव्यवस्था, कहीं घोर युद्धाग्नि से जनमानस त्रस्त रहे। देश, शासकवर्ग एवं कुटुम्ब किंवा (प्रान्तीय शासकों) में भी आपसी विरोध, नीतिवैषम्य से वातावरण क्षुब्ध रहे। देश में नानाविध रोगों से भी जनहानि से शासकवर्ग चिन्तित रहें।

इस संवत् का राजा स्त्रीग्रह चन्द्र है। जगत्लग्न–कुण्डली में चन्द्र सिंहस्थ (द्वितीयभावस्थ) है। इसवर्ष कुछ प्रमुख राष्ट्रों में स्त्री–प्रतिनिध्य को विशेष महत्त्व प्राप्त होगा। वर्षेश चन्द्र 'जलतत्त्व' प्रधानग्रह है। अतः अमावस एवं पूर्णिमा वाले दिनों के लगभग इस संवत् 2068 वि. में कहीं भयंकर भूकम्प, सुनामी एवं समुद्रीतूफान आदि प्राकृतिक आपदा से भारी जनधनहानि के योग बनेंगे।

संवत् 2068 वि. का दुर्गेश नपुंसक ग्रह बुध एवम् प्रखर किंवा युद्धप्रिय मंगल वर्षेश–कुण्डली में नपुंसक ग्रह शनि के साथ समसप्तकयोग बना रहे हैं। लेकिन गुरु का साक्षित्व इस समय मंगल–बुध को प्राप्त है। अतः इसवर्ष अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बंगलादेश एवं अन्य मुस्लिम राष्ट्रविशेष में उग्रवाद का दैत्य आन्तरिक शान्ति भंग करेगा। भारत–पाक, चीन–भारत सीमाओं पर सैन्य जमावडा एवं माओवादसमर्थक आतंकवादी नेपाल की सीमाओं से भी अशान्ति को बुलावा देंगे।

इस संवत् 2068 वि. की शासनसत्ता स्त्रीग्रह चन्द्र को प्राप्त है, अतः वैधानिक दृष्टि से भी स्त्रीजाति का राजनैतिक एवं अन्यक्षेत्रों में वर्चस्व बढ़ेगा। ये पंक्तियां जुलाई सन् 2010 ई. में लिखी जा रही हैं।

ध्यान दें– गतवर्ष संवत् 2067 वि. के पंचांग में पृ. 34 पर कॉलम 1 में हमने स्पष्ट घोषणा की थी कि–" सं. 2067 वि. का दुर्गेश (सेनापति) स्त्रीग्रह चन्द्र होने से इस संवत् के पूर्वार्ध में अच्छे किंवा प्रतिष्ठित पदों पर मातृशक्ति (स्त्रीजाति) का वर्चस्व प्रखर रहेगा। आगे कानूनन स्त्रीजाति को गरिमा प्रदान करने के लिए वैधानिक तौर पर लगभग 20 प्रतिशत आरक्षण दिए जाने के योग भी हैं।"

इस भविष्यकथन की सत्यता संवत् 2067 वि. के पूर्वार्ध (अर्थात् लगभग कार्तिक) तक स्पष्टतः सभी के समक्ष आती प्रतीत हो रही है।

संवत् 2068 वि. के प्रारम्भ में ही सूर्य, बुध, मंगल, यूरेनस एवम् गुरु–यह पंचग्रही–योग मीनराशि में बन रहा है। इस पंचग्रही का कन्याराशिस्थ शनि के साथ

समसप्तक-योग भी बना हुआ है। नेपाल में माओवादियों का वर्चस्व बढ़ेगा। चीन की दोस्ती पाक से होने से नेपाल के सम्बन्धों पर भी सन्देह की अंगुली उठेगी। उत्तर भारत में माओवादियों द्वारा पांव पसारने की योजना उन द्वारा संचालित हिंसाकाण्डों से जगजाहिर है।

ध्यान दें– अप्रैल में गुरु अतिचारी है एवं शनि वक्री है। शनि कन्याराशि में आकर मुस्लिमराष्ट्र विशेष में भारी राजनैतिक परिवर्तन लाने का संकेत देता है–

"अतिचारंगते जीवे शनौ वक्रत्वमागते।
हा–हा भूतं जगत्सर्वं रुण्डमालायुता मही।।"

कन्याराशि पाकिस्तान की प्रभावराशि है, अफगानिस्तान की नामराशि मेष से छठी (शत्रुक्षेत्री) राशि भी कन्या है। इन मुस्लिमराष्ट्रों को आतंकवाद की पीडा को तो झेलना ही पड़ेगा, लेकिन मेष-कन्याराशि-प्रधान राष्ट्रविशेषों को गृहयुद्ध जैसी स्थिति में से भी गुज़रना पड़ेगा। ये यहां भूगर्भगत खनिजसम्पदा पर तालिबान तथा अलकायदा शासनतन्त्र को काबज़ न होने देंगे; परिणामस्वरूप, आन्तरिक अशान्ति भयंकररूप धारण करेगी। **विश्व के यावनराष्ट्रों एवं अमेरिका, भारत आदि राष्ट्रों में उग्रवादजन्य घोर अशान्ति, विस्फोट आदि से जनधनहानि एवं किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के हत्याकाण्ड की घटना शनि-मंगल के समसप्तक के कारण होगी। शनि-मंगल का यह समसप्तक 2 मई, 2011 ई. तक प्रभावी रहेगा।**

3 मई को भौमवती अमावस वाले दिन मंगल मेषराशि में प्रवेश करेगा। इस प्रकार शनि-मंगल का षडष्टकयोग 11 जून, 2011 ई. तक बनता है। 3 मई से जुलाई, 2011 ई. तक की समयावधि में जर्मनी आदि देशों में शरणप्राप्त कुछ देशद्रोही तत्त्व भारत के कुछ प्रान्तों में पुनः आतंकवाद उभारने का प्रयास करेंगे। अतः अमेरिका, कैनेडा एवं England में **शरणप्राप्त आतंकवादियों एवं उनके सहयोगी लोगों की गतिविधियों पर सरकार को विशेष नज़र रखनी होगी, अन्यथा प्रतिष्ठित नगरों एवम् गण्यमान्य व्यक्तियों पर हमलों से शान्तिभंग को रोक पाना संभव न होगा।** इस समयावधि में भारत-पाक-सीमा पर लगते प्रान्तों पर विशेष नजर रखनी ही होगी।

12 जून से मंगल वृषराशि में आकर सूर्य, शुक्र एवं केतु के साथ मेल करेगा। **पहले ही 7 जून को राहु वृश्चिक एवं केतु वृष में प्रविष्ट होकर दोनों संवत 2068 के अन्त तक इन्हीं राशियों में चलेंगे।** इसी मध्य अघटित घटनाचक्र चलेगा। उग्रवादी विदेश एवं स्वदेश के महानगरों में कहर बरपाएंगे। जानी-माली नुकसान से विश्व में अशान्ति व्याप्त होगी। कहीं समुद्री तूफान, यानदुर्घटना एवं वरिष्ठ व्यक्ति-विशेष के निधन किंवा हत्या से जनजीवन अस्त-व्यस्त होगा। भारत के कुछ भागों, मलेशिया, पाक, अफगानिस्तान, इराक, ईरान में अशान्ति बनेगी।

25 जुलाई 2011 ई. को मंगल मिथुनराशि में आकर शनि के साथ दशम-चतुर्थ-सम्बन्ध बना लेगा। यह योग 8 सितम्बर, 2011 ई. तक प्रभावी रहेगा– "युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्षकारकौ"– प्रमाणानुसार शनि-मंगल की यह स्थिति विश्व के प्रतिष्ठित नेताओं एवं गण्यमान्य व्यक्तियों के लिए विशेष कठिन परिस्थितियों को लेकर उपस्थित हो रही है। अमेरिका, अफगानिस्तान, पाकिस्तान एवं अन्य मेष, कन्या, मकर नामराशि वाले देशों के लिए यह ग्रहस्थिति विशेष चिन्तनीय और परेशानी वाली रहेगी। जुलाई 25, 26, 29, 30, अगस्त 3, 4, 8, 9, 15, से 17 एवम् 28, 29, 30, 31 अग. तथा सितंबर 4, 5 की तारीखें विशेष घटनापूर्ण रहेंगी। कहीं भूकम्प से भारी हानि, कहीं समुद्रतटवर्ती देशों में तूफान किंवा सुनामी से हानि, कहीं अग्निकाण्ड एवं उग्रवादजन्य विस्फोट से संहार, कहीं राजनीति से प्रेरित हत्याकाण्ड किंवा यानदुर्घटना आदि से 25 जुलाई से सितम्बर, 2011 ई. तक भारी हानि होने की संभावना ग्रहस्थितिवश बन रही है।

30 अगस्त को गुरु मेषराशि में वक्री होकर 24 दिसम्बर तक वक्री रहेगा। इस समय वक्री गुरु शुक्र-शनि के साथ षडष्टक योग भी बना रहा है। इसी मध्य आश्विन कृष्ण प्रतिपदा (13 सितं., 2011 ई.) को मंगलवारी होने एवं 27 सितंबर, 2011 ई. को मंगलवारी अमावस होने से यहां 'खप्परयोग' बन रहा है।

4 सितम्बर को शुक्रोदय, 20 सितंबर को चित्रा नक्षत्र का शनि एवं 26 सितम्बर को शनि का अस्त होना तथा खप्परयोग कहीं किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन का संकेत देते हैं– "यदा चित्रांगतः सौरिः छत्रभंगस्तदा भवेत्।" कहीं किसी राष्ट्र में आन्तरिक स्थिति विकृतरूप धारण करेगी। कहीं शासनसत्ता में आकस्मिक परिवर्तन हो। भूकम्प, चक्रवात, समुद्री तूफान (सुनामी) आदि से किंवा यानदुर्घटना से भारी हानि भी संभव है। नवम्बर-दिसम्बर, 2011 ई. में भारी भूकम्प (समुद्री तूफान) से हानि के योग हैं।

ध्यान दें– 15 नवम्बर, 2011 ई. को शनि तुला राशि में आकर मेषस्थ गुरु को नीच दृष्टि से देखेगा। यह योग पाकिस्तान में विशेष परिवर्तनचक्र चलाएगा। वहां नागरिक सरकार की स्थापना पर ग्रहपरिषद् के ग्रह सरकार को शक्तिहीन किंवा असहाय बना देंगे। नागरिक सरकार के छद्म से सैनिक किंवा उग्रवादी शक्तियों का प्रभुत्व बढ़ेगा। उनकी आतंक-आक्रमण एवं हिंसक भाषा का प्रत्युत्तर देने के लिए पड़ौसी देशविशेष को सीमाप्रान्तों पर सैन्यबल को सुसन्नद्ध रखना होगा। इस समय उग्रवादजन्य विस्फोट-विभीषिका पनपेगी– "तुलास्थः सूर्यपुत्रस्तु अग्न्युपद्रवमादिशेत्।"

जनवरी, सन् 2012 ई. के प्रथम सप्ताह के लगभग से शुक्र-मंगल का समसप्तक-योग, शनि-शुक्र का षडष्टकयोग, 14 जनवरी से सूर्य-मंगल का षडष्टकयोग एवं 24 जनवरी, 2012 ई. से लेकर मार्च 2012 ई. तक शनि-मंगल के वक्रत्व में, विशेषतः 4 फरवरी, 2012 ई. से मार्च तक कहीं भयंकर प्राकृतिक आपदा भूकम्प, तूफान, सुनामी, अग्निकाण्ड, यानदुर्घटना आदि से भारी हानि होगी तथा किसी वरिष्ठ व्यक्ति का पद रिक्त होगा। राजनीतिज्ञों एवं देश-विशेष की राजनैतिक पार्टियों में विशेष हलचल, परिवर्तन एवं तालमेल बनेंगे। नई-नई सन्धियां, नई योजनाएं एवम् उग्रवाद-दलनार्थ नए पुरोगम बनेंगे।

यूरोप के देश

यूरोपीय देशों की कुण्डली (1)
1 जनवरी, 2011 ई.
(मध्यरात्रि 0 घं. 00 मि.)

यूरोपीय देशों की कुण्डली (2)
1 जनवरी, 2012 ई.
(मध्यरात्रि 0 घं. 00 मि.)

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. (1) के अनुसार लग्नेश बुध नीच चन्द्र के साथ तृतीयभाव में है। इन (लग्नेश बुध, आयेश नीच चन्द्र) एवम् लग्नस्थ शनि पर बृहस्पति की दृष्टि है। लेकिन लग्नेश–आयेश पर शनि की भी विशेष दृष्टि है। संकेत मिलता है कि– अमेरिका, ऑस्ट्रिया, जर्मनी, ब्रिटेन एवम् कन्या, वृश्चिक, मेष, तुला तथा मकर नाम/प्रभावराशि वाले देशों में कहीं समुद्री तूफान, भूकम्प किंवा उग्रवादजन्य आपदाओं से कहीं न कहीं भारी जनधनहानि होगी। मंगल–राहु एवम् सूर्य चतुर्थभाव में एकत्र हैं, जोकि जनवरी, 2011 ई. में प्राकृतिक आपदा से कहीं भयंकर जनधनहानि कर सकते हैं। 4 जनवरी (भौमवती अमा) को सूर्यग्रहण किसी वरिष्ठ राजनीतिज्ञ को भारी आपदा में डालकर मृत्युतुल्य कष्ट दे सकता है या किसी वरिष्ठ व्यक्ति का पद रिक्त होगा। 14 जनवरी, 2011 ई. के लगभग मकर राशिस्थ सूर्य–मंगल विश्व में विशेषतः यूरोपीय देशों में आर्थिक सन्तुलन को बिगाड़ सकते हैं। 15 फरवरी को मंगल कुम्भराशि में आकर शनि के साथ षडष्टकयोग बनाएगा। 25 मार्च से शनि–मंगल का समसप्तकयोग यूरोप के देशों में कहीं उग्रवादजन्य भयंकर घटनाओं से भारी परेशानी बढ़ाएगा। अमेरिका, ब्रिटेन आदि विशिष्ट देशों के प्रधान नेताओं को अपनी सुरक्षा पर ध्यान देना होगा। किसी भी विशिष्ट व्यक्ति के साथ दुर्घटना घटित हो सकती है। फ्रांस में नस्लभेद की भावना से भारत के सम्बन्ध कटु हो सकते हैं।

यूरोपीय देशों की कुण्डली (नं. 2) – की ग्रहस्थिति के अनुसार मंगल–शुक्र का षडष्टक, शनि–गुरु का समसप्तक, यूरोपीय राष्ट्रों में अनेकत्र सुख–सम्पदा/अभिवृद्धि के साथ राष्ट्रनायकों के लिए सुखद प्रतीत नहीं होता।

23 जनवरी, 2012 को मंगल वक्रगति से चलना शुरु होगा व आगे 7 फरवरी को शनि का वक्री होना यूरोप के प्रधाननायकों के लिए कठिन परिस्थितियों वाला है। कहीं उग्रवादजन्य पुरोगमों की असफलता, कहीं विशिष्ट व्यक्ति की हत्या किंवा समुद्रतटवर्ती देशों में कहीं भूकम्प, सुनामी, वायुयान–दुर्घटनाओं एवम् ज्वालामुखी–विस्फोट आदि घटनाओं से जनधनहानि एवम् भारी परेशानी संवत् 2068 वि. के अन्त तक संभावित है।

मुस्लिम राष्ट्र

मुस्लिम देशों की कुण्डली (1)
8 दिसं., सन् 2010 ई., बुधवार
17 घं. 17 मि. (सूर्यास्त समय)

हिजरी सन् 1432 (1 मुहर्रम)

मुस्लिम देशों की कुण्डली (2)
27 नव., सन् 2011 ई., रविवार
17 घं. 20 मि. (सूर्यास्त समय)

हिजरी सन् 1433 (1 मुहर्रम)

कुण्डली नं. (1) के अनुसार वृश्चिकस्थ सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि है। मंगल, राहु, चन्द्र, बुध– ये अष्टमभाव में एकत्र हैं। अफ़गानिस्तान, पाक, इराक, ईरान, कुवैत एवम् मालदीव आदि मुस्लिमराष्ट्रों में उग्रवाद एवम् आन्तरिक अशान्ति से जनधनहानि के योग बनते हैं। यहां के विशिष्ट व्यक्तियों के जीवन को खतरा है। इन्हें अपने सुरक्षाप्रबन्धों को सुदृढ़ करना होगा। सेना किंवा सुरक्षात्मक पंक्ति में भी आई. एस. आई. के एजेंट स्थानीय नेतृत्व को परेशानी में डाल सकते हैं। दिसम्बर, 2010 ई. से विशेषतः 15 फरवरी से संवत् के अन्त तक शनि–मंगल की स्थिति किसी मुस्लिमराष्ट्र की शासनसत्ता में अचानक परिवर्तन ला सकती है। यहां के शासकों के लिए ग्रहस्थिति काफी चिन्तनीय मालूम देती है।

कुण्डली नं. (2) की ग्रहस्थिति के अनुसार मुस्लिम–राष्ट्र पाक की प्रभावराशि के विचार से तुलास्थ किंवा चित्रानक्षत्र का शनि उग्रवादजन्य भयंकर विस्फोटों से जनधनहानि करेगा। कहीं किसी राष्ट्रविशेष को शासनसत्ता में नाटकीय परिवर्तन से अवाक् रहना होगा–

" तुलास्थे सूर्यपुत्रे तु अग्न्युपद्रवमादिशेत्।"

किञ्च– " यदा चित्रांगतः सौरिश्छत्रभंगो भवेत्तदा।"

आगे नवंबर–दिसंबर 2011 ई. के मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष में तिथिक्षय भी कहीं छत्रभंग, शासनपरिवर्तन एवं रक्तक्रान्ति का संकेत देता है। पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान, इराक एवं अन्य मुस्लिमराष्ट्रों में 11 दिसंबर, 2011 से 24 दिसंबर, 2011 ई. तक एवं 23 जनवरी सन् 2012 ई. से आगे विशेषतः 3 फरवरी, 2012 ई. से लेकर संवत् 2068 वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति राजनैतिक दृष्टि एवं प्राकृतिक आपदा (भूचाल आदि) से

उग्रवादजन्य पुरोगमी की असफलता, कहीं विशिष्ट व्यक्ति की हत्या किंवा समुद्रतटवर्ती देशों में कहीं भूकम्प, सुनामी, वायुयान–दुर्घटनाओं एवम् भारी जनधनहानि एवम् भारी परेशानी संवत् 2068 वि. के अन्त तक संभावित है। ... फरवरी, 2012 ई. से लेकर संवत् 2068 वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति राजनैतिक दृष्टि एवं प्राकृतिक आपदा (भूचाल आदि) से

उग्रवादजन्य हत्याकाण्ड, सीमाप्रान्तों पर अशान्त वातावरण एवं प्रतिष्ठितव्यक्ति–विशेष की हत्या आदि अवांछनीय घटनाक्रम को जन्म देगी– प्रभु रक्षा करें।

संवत् 2068 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत एवं भारतसरकार में घटित होने वाले घटनाचक्र का आकलन

"संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता। एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक अव्यवस्था किंवा अनुशासनहीनता आ जाए, तो विराट् ब्रह्माण्ड एक क्षण के लिए भी न टिक सके। एक क्षणिक विस्फोट से अनन्त प्रकृति अग्नि–ज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे।" इस प्रकार समस्त घटनाचक्र एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को संचालित करने वाला ग्रहपुञ्ज प्रकृति किंवा ईश्वर के अनुशासित कार्यक्रम का एक निदर्शन है, जोकि– गोचर ग्रहगति के संकेतानुसार हमें प्रतिवर्ष कुछ लिखने को प्रेरित करता है।

स्वतन्त्र भारत का 64वां वर्ष

स्वतन्त्र भारत के 64वें वर्ष का उदय मिथुन लग्न में हो रहा है। लग्नेश बुध मुन्था के क्षेत्र में लग्न से तृतीयस्थ है। तृतीयेश सूर्य मुन्थेश होकर द्वितीय स्थान में गुरु से दृष्ट है। ग्रहगति से स्पष्ट संकेत मिलता है, कि– आगामी समय में एशियन देशों में भारत तेज़ी से आर्थिक प्रगति की ओर अग्रेसर होगा। भारत द्वारा सभी क्षेत्रों में विकास, बचत की बढ़ती दर प्रगतिशील देशों को आश्चर्यचकित कर सकती है। दूसरे देशों द्वारा पूंजीनिवेश विशेषरूप से भारत में होगा और देश प्रगतिपथ पर आगे बढ़ेगा। लेकिन 64वें वर्ष की स्वतन्त्र भारत की कुण्डली में चतुर्थ भावस्थ शनि–मंगल एवम् नीच शुक्र कन्या नामराशि वाले किंवा मीन, मेष, वृश्चिक राशि वाले देशों में से किसी देशविशेष (पाक, चीन या नेपाल आदि) के साथ सीमांप्रान्तों पर अशान्ति बनेगी। सीमा मुद्दा गरमाएगा, सम्बन्ध तनावपूर्ण होंगे। व्यापारिक सम्बन्ध भी बिगड़ेंगे। 16 अगस्त से 16 अक्तूबर, 2010 ई. तक एवम् 19 अक्तूबर से 28 नवम्बर, 2010 ई. तक भारत के कुछ प्रतिष्ठित नगरों में उग्रवाद एवम् किसी प्राकृतिक आपदा से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं।

29 नवम्बर, 2010 ई. से 8 जनवरी, सन् 2011 ई. तक मंगल राहु का एकराशि–सम्बन्ध एवम् 15 फरवरी, 2011 ई. से संवत् के अन्त तक शनि–मंगल का षडष्टकयोग कहीं किसी सम्मान्य, वरिष्ठ व्यक्ति का पद रिक्त होने की सूचना देता है। सीमाप्रान्तों पर शत्रुद्वारा सैन्यबल का प्रयोग देश के लिए अशान्ति का कारण बन सकता है। किसी देशविशेष में नेतृत्व–परिवर्तन की संभावना भी इस वर्ष में विशेष घटना के रूप में जानी जाएगी। यह वर्ष सीमावर्ती देशों की कुनीति एवम् उग्रवादजन्य गतिविधि से काफी संकटपूर्ण रहेगा, लेकिन देश की गरिमा, प्रगति एवम् गौरव हमेशा उज्जवल रहेगा।

स्वतन्त्र भारत का 65वां वर्ष

मुंथेश एवं लग्नेश बुध 65वें वर्षलग्न की कुण्डली में व्ययस्थान में है; जोकि प्रशासनिक कार्यक्षेत्र में भारी रुकावटों का संकेत देता है। लेकिन बुध (लग्नेश) पर बृहस्पति की विशेषदृष्टि है, अतः सुयोग्य नेतृत्व के कारण विषम स्थिति पर भी नियन्त्रण पाना संभव होगा। इस 65वें स्वतन्त्र भारत की वर्षकुण्डली में लग्नस्थ शनि पर मंगल की विशेष दृष्टि है। शनि–मंगल का यह दशम–चतुर्थदृष्टिसम्बन्ध 8 सितम्बर, सन् 2011 ई. तक प्रभावी रहेगा। इस समय वर्षकुण्डली में शनि पंचमेश एवं षष्ठेश होकर अष्टमेश एवं तृतीयेश मंगल के साथ दृष्टिसम्बन्ध बना रहा है। यह ग्रहस्थिति भारत के राजनीतिज्ञों एवं राजनैतिक पार्टियों में विशेष हलचल बना सकती है, विशेषतः केन्द्रीय शासनतन्त्र, पंजाब, बिहार, बंगाल, केरल, महाराष्ट्र, तामिलनाडु एवम् उत्तरप्रदेश की राजनीति में विशेष हलचल हो सकती है। इस समय जम्मू–काश्मीर एवं सीमाप्रान्तीय भारतभूभाग के उग्रवादजन्य आपदा किंवा भारी प्राकृतिक प्रकोप का शिकार होने के योग हैं। अगस्त से सितम्बर, 2011 ई. तक का समय प्रत्येक दृष्टि से भारत के विशिष्ट राजनीतिज्ञों के लिए परीक्षा की घड़ी सिद्ध होगा। इस समयावधि में किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा।

इसवर्ष भारत की आर्थिक स्थिति को कमजोर करने के विरोधी राष्ट्र के प्रयास भी बनेंगे। जाली करंसी एवं तस्करी के व्यापार से सुरक्षित रखने के लिए सीमाप्रान्तों को सुरक्षित बनाना होगा। 15 नवम्बर, 2011 से शनि तुला राशि में आकर काश्मीर एवं भारत के सीमाप्रान्तीय क्षेत्रों में भारी उपद्रव एवं सैन्यसंघर्ष के योग बनाएगा। इस समय भारतीय नेतृत्व को भारी आपदापूर्ण स्थिति का सामना करने के लिए कटिबद्ध रहना होगा। भारत–चीन, नेपालबॉर्डर एवं पाक से सटे अन्य सीमाभाग पर 15 नवम्बर, 2011 ई. से संवत् 2068 वि. के अन्त तक भूकम्प, समुद्रीतूफान (सुनामी) आदि प्राकृतिक आपदाओं का भी सामना करना पड़ेगा।

भारतीय गणतन्त्र का 62वां वर्ष

भारतीय गणतन्त्र के 62वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश शुक्र द्वितीय भाव में शनि की दृष्टि में है। सुखेश मंगल चतुर्थभाव में उच्चस्थ, लेकिन वक्री है। निस्सन्देह भारत एक समर्थराष्ट्र के रूप में दिखाई देगा। लेकिन दशमभावेश चन्द्र इस संवत् का राजा है, जोकि गणतन्त्रकुण्डली में नीचाकांक्षी है एवं दशमभाव पर मंगल की नीच दृष्टि है। अतः देश के प्रहरी सैन्यबल को समृद्ध किंवा सशक्त बनाने के लिए देश को विशेष व्यय करना होगा, अन्यथा शत्रुदेश की गतिविधि भयावह सिद्ध हो सकती है।

शनि–मंगल की दशम–चतुर्थदृष्टि एवं गणतान्त्रिक ग्रहस्थिति के आधार पर विचार करने से स्पष्ट संकेत मिलता है कि– अगस्त, 2011 ई. से संवत् 2068 वि. के अन्त तक पाकिस्तान किंवा चीन द्वारा सीमाप्रान्तों पर भारी सैन्यबल से शान्ति भंग होगी। इसी समयावधि में अगस्त से सितम्बर, 2011 ई. के मध्य एवं नवंबर, 2011 ई. से संवत् 2068 वि. के अन्त तक कुछ प्रान्तों में भी भारी भूकम्प, समुद्रीतूफान, सुनामी आदि प्राकृतिक उत्पात किंवा भयंकर अग्निकाण्ड आदि घटनाओं से भारी जनधनहानि होगी। संवत् के उत्तरार्ध में उग्रवादजन्य घटनाचक्र से किसी महानगर में भारी मार–धाड़ का कुचक्र भी चलेगा।

इस प्रकार दूषित वातावरण के बाद भी गणतन्त्रकुण्डली में नवमेश–बुध की नवमभाव पर पूर्णदृष्टि है, गुरु की नज़र दशमभाव पर तथा लग्नेश शुक्र पर भी है, अतः विरोधी देश भारत की प्रभुसत्ता एवं गरिमा को आंच नहीं पहुंचा सकेंगे।

62वें गणतन्त्र वर्ष की ग्रहस्थिति एवम् अन्य गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार पश्चिमी बंगाल, महाराष्ट्र, झारखण्ड, बिहार, छत्तीसगढ़, उड़ीसा आदि में देशद्रोही किंवा अलगाववादी नक्सलियों की गतिविधियां भारी उपद्रव करेंगी एवं विस्फोट आदि द्वारा जनजीवन को अस्त–व्यस्त कर सकती हैं।

अगस्त से सितंबर, 2011 ई. तक एवं नवम्बर, 2011 से मार्च 2012 ई. तक प्रधान नेताओं को विशेष सावधान एवं आत्मरक्षार्थ सचेष्ट रहना होगा, अन्यथा कोई भी दुर्घटना भयावह परिणामों वाली सिद्ध हो सकती है।

संवत् 2068 वि. की गोचर ग्रहस्थिति का भारत पर प्रभाव

सम्पूर्ण विश्व 'कार्य–कारण सिद्धान्त' पर अपनी गतिमत्ता बनाए हुए है। ज्योतिषशास्त्र 'ग्रहस्थिति' को कारण मानकर सम्पूर्ण विश्व में संचालित घटनाचक्र का आकलन करता है।

'श्रीमद्‌भागवतपुराण' के चतुर्थ स्कन्ध के 11वें अध्याय के श्लोक नं. 17 में स्पष्टरूप से घोषित किया है कि–निर्गुण परमात्मा तो संसारचक्र को संचालित करने में केवल निमित्तमात्र है। उसी के आश्रय से कार्य–कारणात्मक जगत् उसी प्रकार भ्रमण करता है, जिस प्रकार चुम्बक के प्रभावक्षेत्र में रहता हुआ लौहखण्ड चुम्बक के अनुरूप इधर–उधर संचलित होने पर विवश होता है–

" निमित्तमात्रं तत्रासीन्निर्गुणः पुरुषर्षभः।
व्यक्ताव्यक्तमिदं विश्वं यत्र भ्रमति लौहवत्।।"

संवत् (2068 वि.) का शुभारम्भ तुला लग्न में हो रहा है। लग्नेश शुक्र पंचमभाव में शनि के क्षेत्र में है, लेकिन शनि के साथ षडष्टकयोग बना रहा है। साथ ही नववर्षकुण्डली में शनि का मंगल–सूर्य–गुरु–बुध एवं चन्द्र के साथ समसप्तकयोग भी बन रहा है। इस प्रकार भारत की प्रभावराशि मकर का स्वामी शनि सूर्य–चन्द्र–मंगल (विरुद्धप्रकृति वाले) ग्रहों से प्रभावित है। स्पष्ट है कि– भारत के प्रतिष्ठित नेतृत्त्व को भारी कठिनाइयों से गुज़रना होगा। इस संवत् के पूर्वार्ध में उग्रवादजन्य अशान्ति, प्राकृतिक भयंकर आपदा से सरकार को जूझना पड़ेगा। साथ ही विरोधी किंवा सहयोगी राजनैतिक दलों के चक्रव्यूह से केन्द्रीय शासनसत्ता को निकलना कठिन होगा; परिणाम आश्चर्यजनक संभव हैं। ध्यान दें– तुला लग्न में संवत् का आगमन कुछ विशेष प्रान्तीय किंवा केंद्रीय राजनीतिज्ञों के लिए भयावह योग लेकर उपस्थित हो रहा है। दिसंबर, 2011 ई. से मार्च, 2012 ई. के मध्य कुछ प्रान्तों की शासनसत्ता में विशेष परिवर्तन एवं राजनैतिक उलट–फेर होने के योग हैं। मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, तामिलनाडु, उत्तर–प्रदेश, पंजाब, केरल, बंगाल, बिहार आदि इस उपरोक्त ग्रहस्थिति के प्रभावक्षेत्र में आते हैं। मंहगाई साधारण जनता के लिए सिरदर्द बनेगी–

"तुलालग्ने मध्यदेशे छत्रभंगश्च विग्रहः।
धान्यस्य विक्रयः प्राच्यां छत्रमंगश्च विप्लवः।।"

पूर्वी प्रान्तों/देशों में कहीं उपद्रव और कहीं दुर्भिक्ष, पश्चिमी देशों में कहीं युद्धमय अशान्त वातावरण होने से यह संवत् (2068 वि.) राष्ट्रनेताओं के लिए अग्निपरीक्षा का है।

इस संवत् का राजा स्त्रीग्रह 'चन्द्र' है। स्त्रीग्रह–शासित इस संवत् में स्त्रियों का प्रभुत्त्व बढ़ेगा। संवत् के आरम्भ में गुरुग्रह, जोकि इस संवत् का मन्त्री है, अतिचारी है एवं शनि वक्रस्थिति में है। यह ग्रहस्थिति भारत के धार्मिक स्थलों एवं महानगरों में इसवर्ष उग्रवादजन्य जनधनहानि, प्राकृतिक प्रकोप (भूकम्प, तूफान आदि) से भारी जनधनहानि का संकेत देती है–

"अतिचारंगते जीवे वक्रीभूते शनैश्चरे।
हा–हा–भूतं जगत्सर्वं रुण्डमालायुता मही।।"

लगभग 18 अप्रैल, 2011 ई. से मंगल भी अतिचारी हो जाता है एवं शनि–मंगल का समसप्तकयोग 2 मई तक चलेगा। गुरु–मंगल से सप्तम शनि उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश एवम् लंका में उग्रवादजन्य जनधनहानि का संकेत देता है–

"यदार–सौरी–सुरराजमन्त्री यदैकराशौ समसप्तके वा।
अयोध्या–लंकापुर–मध्यदेशे क्षुधाभयं शस्त्रभयं करोति।।"

इस समय तूफान, समुद्री सुनामी एवं आतंकवाद से जनधनहानि के संकेत मिलते हैं।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार चीन–पाक एवं लंका–बंगलादेश–सीमाओं पर इसवर्ष सन् 2011–12 ई. में भारतीय सेना को सतर्क रहना होगा। अरुणाचल पर चीन की कुदृष्टि शान्ति भंग कर सकती है। इसवर्ष चीन ब्रह्मपुत्र पर बांध बनाकर जलप्रवाह को अवरुद्ध करके भारत की सुरक्षा एवम् हितों को हानि पहुंचाने की ताक में रहेगा। ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि– चीन पूर्वोत्तर में भारत के विद्रोहियों एवं आतंकवादियों की सहायता करके भारत को खण्डित करने की नीति अपनाएगा, अतः सरकार को इस तरफ पैनी नज़र रखनी होगी।

3 मई को भौमवती अमावस वाले दिन मंगल अश्विनी नक्षत्र एवं मेषराशि में प्रवेश करेगा। इस प्रकार शनि–मंगल का षडष्टकयोग 3 मई से 11 जून, 2011 ई. तक चलेगा। भौमवती अमावस वाले दिन मंगल, बुध, गुरु, शुक्र– ये चारों ग्रह जलराशि मीन एवं चारों रेवती नक्षत्र में हैं। इस अवधि में कहीं समुद्री तूफान (सुनामी) किंवा भूकम्प आदि से जनधनहानि संभव है। ध्यान दें– इण्डिया T.V. किंवा ब्रह्मकुमारी सम्प्रदाय के आचार्यों ने सन् 2012 ई. में प्रलय की जो आशंका जताई थी, वह संभव नहीं। " भारतीय पौराणिक ग्रन्थों व अनेक वैज्ञानिकों के अनुसार अभी करोड़ों वर्ष तक महाप्रलय से पृथ्वी के नष्ट होने की संभावना दूर तक भी नहीं है।"

8 मई को गुरु (वर्ष का मन्त्रीग्रह) मेष राशि में आकर मंगल–शुक्र के साथ मेल करके शनि के साथ षडष्टकयोग बनाएगा। "दक्षिणोत्तरयोर्देशे छत्रभंगोऽपि कुत्रचित् "– अनुसार कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त/मृत्यु हो। आगे आषाढ़ मास में कहीं शासनसत्ता में परिवर्तन के योग हैं।

ज्येष्ठमास में सूर्य के साथ किंवा पार्श्ववर्ती क्षेत्र में मंगल, बुध, गुरु, शुक्र का होना अनेकत्र वर्षा में रुकावट पैदा करेगा एवं कहीं शासनसत्ता में हस्तान्तरण का योग बनाएगा–

" ज्येष्ठमासे रवियुता ग्रहा यत्रैकराशिगाः।
श्रावणे मेघरोधाय छत्रभंगाय कुत्रचित्।।"

6 जून को राहु वृश्चिक एवं केतु वृष में पदार्पण करके सूर्य, मंगल, शुक्र के साथ 14 जून तक एकराशिसम्बन्ध बनाएगा। तत्पश्चात् मंगल–केतु का एकराशिसम्बन्ध 24 जुलाई, 2011 ई. तक चलेगा। इस दौरान मणिपुर, अरुणाचल, मिजोरम, महाराष्ट्र, असम, बंगाल आदि में अलगाववादी विद्रोही संगठनों द्वारा कहर बरपाया जाना संभव है। पूर्वोत्तर में माओवादी, जो भारत के लिए गंभीर खतरा हैं, पाकिस्तानी उग्रवादियों के साथ मिलकर इस समय जनधनहानि का कारण बनेंगे।

25 जुलाई, 2011 ई. को मंगल मिथुनराशि में आकर शनि के साथ दशम–चतुर्थ एवं राहु के साथ षडष्टकसम्बन्ध बनाएगा। यह सम्बन्ध 8 सितम्बर तक बना रहेगा। ध्यान दें– श्रावण कृष्ण अमावस एवं कर्कसंक्रान्ति शनिवार को है। अतः यह 'खप्परयोग' बनता है–

" यस्मिन् वारेऽस्ति संक्रान्तिस्तत्रैवामावसी तिथिः।
लोके खर्परयोगोऽयं जीव–धान्यादि–नाशकः।।"

इस समय अमेरिका के राष्ट्रपति श्री ओबामा की दोगली नीति स्पष्ट होगी। पाक को सैनिक एवं आर्थिक सहायता गुप्तरूप से प्राप्त होती रहेगी। लेकिन पाकिस्तानस्थित लश्कर–ए–तैयबा अलकायदा की तरह विभिन्न देशों को निशाना बनाकर अनेकत्र विनाशकारक सिद्ध होगा।

इस संवत् 2068 वि. के मध्य ग्रहस्थिति के चिन्तन से मालूम होता है कि– सरकार को अनेक संकटों का इसवर्ष सामना करना ही पड़ेगा। राजनैतिक अनिश्चितताओं से घिरी सरकार तथा दौर्भाग्यपूर्ण राजनैतिक सहयोगी दलों के बीच विभिन्न विचारों में टकराव की स्थिति पैदा होगी। वामपन्थीदल एवं भाजपा केन्द्रशासित सरकार के लिए सिरदर्द बन सकते हैं।

30 अगस्त से 25 दिसंबर तक गुरु वक्रस्थिति में रहेगा। शनि–राहु का दशमचतुर्थ–राशिसम्बन्ध और शनि–गुरु का षडष्टक चल रहा है। महंगाई से जनता परेशान होगी। अनेक प्रान्तों में वर्षा की कमी एवं कुछ प्रान्तों में भयंकर बाढ़ की स्थिति से खाद्यपदार्थों में महंगाई को सरकार रोक न पाएगी। इस समय पाकिस्तान जम्मू–काश्मीर में घुसपैठ करने से बाज नहीं आएगा। यूरोप के कुछ देश आर्थिक संकट से ग्रस्त होंगे। अगस्त, 2011 ई. से दिसम्बर, 2011 ई. तक ग्रहस्थिति के अनुसार नक्सलवाद के बारे में सरकार को कठोर पग उठाने ही होंगे, अन्यथा सीमाप्रान्तीय क्षेत्रों/राज्यों में हमले बढ़ते ही जाएंगे; ये खूनी खेल सरकार के लिए सरदर्द बन जांएगे और लोकतन्त्र को कमज़ोर एवं अराजकता के स्तर तक पहुंचाकर देश में इन दुःखद घटनाओं को देशद्रोही अंजाम देते रहेंगे।

9 सितम्बर को मंगल अपनी नीचराशि कर्क में प्रवेश करेगा। 13 सितंबर को आश्विन कृष्ण प्रतिपदा मंगलवारी है एवं अमावस भी मंगलवारी होने से 'खप्परयोग' इसवर्ष दूसरी बार बन रहा है। 22 सितम्बर से 3 अक्तूबर तक सूर्य, बुध, शनि एवम् शुक्र एकत्र रहेंगे। इसी बीच 20 सितम्बर, 2011 ई. को शनि चित्रा नक्षत्र में प्रवेश करके संवत् 2068 वि. के अन्त तक

चित्रा नक्षत्र में ही चलता रहेगा।–"यदाचित्रांगतः सौरिः छत्रभंगस्तदा भवेत्"– इस प्रमाणानुसार किसी प्रतिष्ठित गण्यमान्य व्यक्तिविशेष के आकस्मिक निधन किंवा हत्या से कोई पद रिक्त होगा। **26 सितम्बर को शनि कन्याराशि में अस्त होगा**, अतः 26/27 सितम्बर को प्राकृतिक उत्पात, भूकम्प, तूफान, यानदुर्घटना आदि से जनधनहानि के योग भी बनते हैं। इन दिनों राजनैतिक पार्टियों में परस्पर खींचातानी शुरु होगी। कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति सरकार के लिए चिन्ता का कारण बनेगी– **"शनावस्तंगते राज्ञां युद्धं दुर्भिक्षकारणम्।"** ग्रहस्थिति के अनुसार राजनेताओं में गुणवत्ता क्षीण होगी। इस प्रकार राजनैतिक व्यवस्था की विफलता देश को कहां ले जाने वाली है– भगवान् ही जाने। क्योंकि, भारत–चीन के व्यपारिक सम्बन्ध बेशक दृढ हो रहे हों, लेकिन भारत के अरुणाचल क्षेत्र पर चीन दावा ठोक रहा है, तो क्या कोई भी राजनयिक इतना दम नहीं रखता कि तिब्बत के ऊपर चीन की मानसिकता क्या है ? इस पर चीन से बात कर सके। यह कटु लिखने के लिए मुझे आगामी ग्रहस्थिति विवश कर रही है। यदि इस पर विचार न किया तो शनि–शुक्र–मंगलजन्य प्रतिफलन का प्रभाव उपरोक्त समस्या को लेकर भारत के लिए आगे 4 वर्षों के अन्दर भयंकर युद्ध की स्थिति को जन्म देगा या फिर चीन के समक्ष नतमस्तक होकर, उसके आदेशों को स्वीकार करना होगा, जोकि दुःखद होगा।

4 अक्तूबर को शुक्र उदित होकर तुलाराशि में आकर 17 अक्तूबर को सूर्य के साथ मेल करेगा एवं गुरु के साथ समसप्तकयोग बनाएगा। 28 अक्तूबर तक ग्रहगोचर प्रभावी रहेगा। पश्चिमी देशों में कहीं युद्धमय वातावरण बने। कहीं यानदुर्घटना, अग्निकाण्ड, कहीं विस्फोट आदि से हानि हो। कहीं अवर्षण से खड़ी फसलों को हानि पहुंचे–

"क्रूराणां सह सौम्यैश्च यदि स्यात् समसप्तकम्।
अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीड़ा महत्यपि।।"

30 अक्तूबर, 2011 ई. को मंगल सिंहराशि में आकर संवत् 2068 वि. के अन्त तक सिंहराशि में ही चलेगा। इस समय राहु पर शनि–मंगल की विशेष दृष्टि रहेगी। आगे आने वाले समय में सत्ताप्राप्ति की ललक, वोट–बैंक की राजनीति सभी राजनीतिज्ञों में महामारी का रूप लेलेगी। परिणामस्वरूप, आने वाले विधानसभायी चुनावों में देश के हित की उपेक्षा एवं प्रशासनिक विकृतियां शासकों में दिखाई देंगी, आन्तरिक करप्सन अनैतिकता से नेता लोग दूषित हो जाएंगे– ऐसा ग्रहस्थिति बतलाती है।

1 से 14 नवम्बर, सन् 2011 ई. तक की ग्रहस्थिति के अनुसार नीचस्थ सूर्य की गुरु पर एवं गुरु की सूर्य पर भी दृष्टि है। इस समय प्रान्तीय राजनैतिक दलों में ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति पनपेगी। पार्टियों में कहीं आपसी खींचातानी से राजनैतिक परिदृश्य बदलते नज़र आएंगे।

15 नवम्बर, सन् 2011 ई. को शनि तुलाराशि में आकर संवत् 2068 वि. के अन्त तक किंवा आगे तक तुला राशि में ही रहेगा। भयंकर अग्निकाण्ड किंवा मुस्लिम राष्ट्रविशेष की आन्तरिक विस्फोटक स्थिति से जनधनहानि के योग बनेंगे–" सूर्यपुत्रे तुलां याते अग्न्युपद्रवमादिशेत्।" 21 नवम्बर, 2011 ई. तक बुध–शुक्र एक राशिस्थ हैं, कहीं प्राकृतिक आपदा किंवा राजनैतिक उपद्रवों से हानि के योग बनते हैं।

24 नवम्बर, 2011 ई. को बुध वक्री हो रहा है। इस प्रकार बुध–गुरु दोनों 13 दिसम्बर, 2011 ई. तक वक्रस्थिति में चलते रहेंगे। मार्ग. कृष्ण प्रतिपदा एवं अमावस दोनों शुक्रवारी हैं, साथ ही मार्ग. शुक्ल प्रतिपदा एवं पूर्णिमा दोनों शनिवारी हैं– ये दो खप्पर योग बन रहे हैं। साथ ही मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में द्वितीया तिथि का क्षय भी नवम्बर–दिसम्बर, 2011 ई. में दुःखद/अनिष्ट घटनाओं को लेकर उपस्थित होगा। कहीं दुर्भिक्ष, कहीं सत्ताहस्तान्तरण किंवा नेतृत्वपरिवर्तन, विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो–

"मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षयः।
छत्रभंगं प्रजापीड़ां दुर्भिक्षं च समादिशेत्।।"

इन दो मासों में उग्रवादियों द्वारा कहीं भारी संकटापन्न स्थिति बनेगी एवं कहीं भयंकर प्राकृतिक आपदा भूकम्प, समुद्रीतूफान आदि से जनधनहानि संभव है। इन दिनों प्रान्तीय राजनैतिक पार्टियों में विशेष जोश नज़र आएगा।

15 दिसम्बर को शुक्र मकर में आकर केन्द्रीय शासन के समक्ष कुछ समस्याओं का समाधान करेगा। प्रान्तीय शासन मंहगाई पर नियन्त्रण एवं जनलोलुप योजनाओं को लागू करने के प्रयास करेंगे।

25 दिसम्बर, 2011 ई. को गुरु मार्गी हो जाएगा। पंजाब, हरियाणा, हिमाचलप्रदेश केरल, महाराष्ट्र एवं बंगाल की राजनीति में काफी राजनैतिक सुधार दिखाई देंगे।

14 जनवरी, 2012 ई. को सूर्य मकर राशि में आकर मंगल के साथ षडष्टकयोग बनाएगा। 23 जनवरी, 2012 ई. को मंगल वक्री होगा। संवत् 2068 वि. के अन्तिम 4–5 मास की ग्रहस्थिति के चिन्तन से यह लिखना उचित समझते हैं कि– नक्सलवाद प्रभावित प्रान्तों में काश्मीर, बंगाल, उडीसा, केरल एवं अन्य सीमाप्रान्तीय क्षेत्र परिरक्षण एवं माओवादियों को हतप्रभ करने के लिए सरकार को अविलम्ब स्थलसेना एवं वायुसेना की सहायता लेनी ही पड़ेगी।

3 फरवरी, 2012 ई. को शुक्र मीन राशि में आकर शनि एवं मंगल के साथ षडष्टकयोग बनाएगा। ध्यान देने योग्य बात है, कि– 23 जनवरी, 2012 ई. को मंगल वक्री हुआ है और 7 फरवरी को शनि भी वक्री होगा। मंगल और शनि–दोनों का शुक्र के साथ षडष्टकयोग 28 फरवरी तक चलेगा। इस समयावधि में (3 फरवरी से 28 फरवरी, 2012 ई. तक) पाकिस्तान की कैबिनैट में भ्रष्ट किंवा अक्षम लोगों द्वारा लोकतन्त्र का दूषित वातावरण बनेगा। प्रधाननेता को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। इसी समय–सीमा में भारत के कुछ प्रान्तीय शासन–तन्त्रों में विशेष परिवर्तन एवं राजनैतिक उलटफेर देखने को मिलेंगे।

शनि, मंगल– ये दोनों विपरीत नीतिप्रधान ग्रह संवत् 2068 वि. के अन्त तक वक्रगति से ही चलेंगे। इस प्रकार 23 जनवरी, 2012 ई. से संवत् 2068 वि. के अन्त (22 मार्च, 2012 ई.) तक शनि–मंगल की वक्रगति से संकेत मिलता है कि– इस समय प्रान्तीय राजनीतिज्ञों में सत्ताप्राप्ति हेतु संघर्ष जोर पकड़ेगा; अनेक प्रान्तों में परिणाम आश्चर्यजनक रहेंगे।

किञ्च– इस संवत् 2068 वि. में गुरु–शनि–राहु एवं शनि–मंगल के राशिचार, ग्रहों के वक्रत्व, क्रूरग्रहों के समसप्तक एवं षडष्टककाल में (अप्रैल से जुलाई तक एवं नवम्बर से संवत् के अन्त तक) सूर्य एवं चन्द्र के गुरुत्व में परिवर्तन की आशंका बनती है। परिणामस्वरूप, पृथ्वी के अन्तराल में सीस्मोग्राफिक तरंगें पैदा होंगी, जिससे भूगर्भ में

परिणामस्वरूप, पृथ्वी के अन्तराल में सीस्मोग्राफिक तरंगें पैदा होंगी, जिससे भूगर्भ में

मीलों गहराई तक भूकम्पीय स्थिति से अनेकत्र विनाशकारी प्रभाव पड़ेगा, जिससे सुनामी आदि से भयंकर भूकम्प किंवा अन्य भयंकर प्राकृतिक आपदाओं से जनधनहानि संभव है। ऐसा ग्रहस्थितिजन्य संकेतों से अनुभव किया जा रहा है। इससे भयभीत होने की आवश्यकता तो नहीं– केवल ईश्वर से प्रार्थना ही हमारा संबल है।

भारत के प्रमुख राजनैतिक दल

कांग्रेस– संवत् 2068 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार अनेक राजनैतिक विकट समस्याओं में उलझे रहने पर भी कांग्रेस पार्टी सत्ता का केन्द्रबिन्दु रहेगी। इस संवत् की प्रारम्भिक ग्रहस्थिति के अनुसार मीनस्थ मंगल– बुध–गुरु–शुक्र के साथ कन्याराशिस्थ शनि का समतसप्तक कांग्रेस पार्टी (केन्द्रस्थ सत्तारूढ़ प्रधानदल) को भारी कठिनाठइयों में उलझा देगा। देश की विभिन्न समस्याओं के समाधान एवं जन–आकांक्षाओं के संवरण किंवा पूर्ति के लिए कार्यों में शनि की गति अनेक विघ्न उपस्थित करेगी। 8 मई, 2011 तक कांग्रेस की आन्तरिक स्थिति बिगड़ेगी।

8 मई, 2011 ई. को गुरु मेषराशि में आकर कांग्रेस के योजनास्थान (Planing House) में आ जाएगा और संवत् 2068 वि. के अन्त (किंवा कुछ आगे) तक गुरु मेष राशि में ही रहेगा। इस अवधि में कांग्रेस पार्टी के नवमभाव पर, लग्न पर एवं आयस्थान पर गुरु की दृष्टि रहेगी, जोकि इस पार्टी को आपदाओं से मुक्त करके इसकी छवि को महत्त्वप्रदान करेगी और आगे सत्ता हथियाने का मार्ग प्रशस्त बना देगी।

लेकिन 15 नवम्बर, सन् 2011 ई. को शनि तुला राशि में आकर गुरु की दृष्टि में आ जाता है। कांग्रेस की कुण्डली में भी शनि–गुरु का समसप्तक है, लेकिन अब गोचर में 15 नवम्बर से बनने वाला शनि–गुरु का समसप्तक विपरीत राशि में है, अतः यह योग राजनैतिक दलों को एकसाथ लेकर उचित ध्रुवीकरण का रास्ता दिखाता है और आगे इसी दिशा में सत्ताप्राप्ति के लिए नई आचारसंहिता बनेगी। 23 जनवरी, सन् 2012 ई. को मंगल वक्री हो जाएगा और 7 फरवरी, सन् 2012 ई. को शनि भी वक्री होगा। क्षेत्रीय (प्रान्तीय) राजनीति की तरफ कांग्रेस को विशेष ध्यान देना होगा।

3 मई से 11 जून, 2011 ई. तक और 25 जुलाई से 8 सितंबर, 2011 ई. तक की समयावधि इस पार्टी के महानायकों, राजनीतिज्ञों एवं राजनैतिक दलों के लिए नेष्ट है। इस समयावधि में राष्ट्र को किसी विशेष आपदा का सामना करना पड़ेगा। किसी व्यक्ति–विशेष का पद रिक्त होने से शोक व्याप्त होगा।

भारतीय जनता पार्टी– गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार इस राजनैतिक पार्टी की ग्रहस्थिति का चिन्तन करने से ज्ञात होता है कि– इस संवत् का 'क्रोधी' नाम इस पार्टी के लिए अधिक कठिन परिस्थितियों वाला है। पार्टीनेतृत्व में परस्पर खींचातानी से स्थिति बिगड़ेगी। ध्यान दें– कांग्रेसपार्टी की कुण्डली को यदि उल्टा करके देखें तो इस पार्टी की रफ शक्ल दिखाई देती है। इस पार्टी की तुलना में कांग्रेस पार्टी का वर्चस्व अधिक रहेगा। पुनरपि, संवत् के प्रारम्भ में प्रान्तीय राजनीति में इस पार्टी में कुछ अग्रेसर होने की स्थिति बनती है। लेकिन इसवर्ष शनि–मंगल का समसप्तक किंवा षडष्टक एवं वक्र–मार्ग 3 मई से 11 जून, 2011 ई. तक, 25 जुलाई से 8 सितंबर, 2011 ई. तक किंच– नवम्बर 2011 ई. से मार्च, सन् 2012 ई. तक की ग्रहस्थिति इस राजनैतिक दल को कठिन परिस्थितियों में उलझा देगी। इस पार्टी के प्रमुख नेताओं का प्रभाव क्षीण होगा, स्त्रीनेता के वर्चस्व से यह पार्टी पुनः उदय की ओर बढ़ेगी।

बहुजन समाज पार्टी एवम् तीसरा मोर्चा– गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार नवम्बर, 2011 ई. से मार्च, सन् 2012 ई. तक तीसरा मार्चा अपनी दलीय पहिचान बनाने की कोशिश करेगा एवं बी. एस. पी. का नेतृत्व अनेक प्रान्तों में प्रभावी रहेगा। बसपा का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। लेकिन "अभी दिल्ली दूर है"– यह कहावत ग्रहचाल के अनुसार अभी सही मालूम देती है।

कुछ प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञ

श्रीमती सोनिया गांधी–कांग्रेस पार्टी की सुप्रीमो श्रीमती सोनिया गांधी की जन्मकालिक ग्रहस्थिति एवं गोचर ग्रहस्थिति का निरीक्षण करने से ज्ञात होता है, कि– भाग्येश गुरु गोचर में मई तक मीन राशि में ही रहेगा। 11 जून, सन् 2011 ई. तक गुरु–मंगल की गोचर में स्थिति इन्हें बहुत प्रगति एवं मान–सम्मान प्रदान करने वाली है। मई 8 (सन् 2011 ई.) से संवत् 2068 वि. के अन्त तक मेषस्थ गुरु भारतीय राजनीति में इनकी सर्वोच्च प्रतिष्ठा बनाए रखेगा।

इस समय बुध की महादशा में शनि का अन्तर अगस्त, सन् 2012 ई. तक चलेगा इस समय इनकी पार्टी को इन्हें रक्षाकवच प्रदान करना पड़ेगा। गुप्तशत्रु से सावधान रहें।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार राजनैतिक परिदृश्य पर इनकी छवि निर्मल एवं सम्मान्य रहेगी। पार्टी को ये निश्चितरूप से स्वच्छशासन देने की प्रेरणा बनी रहेंगी।

प्रधानमन्त्री डॉ. मनमोहन सिंह– डॉ. मनमोहन सिंह जी की जन्मकालिक ग्रहस्थिति के आधार पर गोचर में कन्या राशि का शनि इनके कर्मक्षेत्र को प्रभावित कर रहा है। जन्मकालिक सूर्य के साथ शनि का यह मेल कठिन परिस्थितियों का संकेत देता है। 30 अगस्त, 2011 ई. को गुरु के वक्री होने पर एवं 15 नवम्बर, 2011 ई. के बाद शनि के तुला में आने पर; 23 जनवरी, सन् 2012 ई. को मंगल के वक्री होने एवं 7 फरवरी, सन् 2012 ई. को शनि के वक्रत्वकाल तथा संवत् 2068 के अन्त तक सम्मान्य प्रधाननेता को स्वास्थ्य की दृष्टि एवं विरोधी दलों की नीति से सावधान रहना होगा।

इस समय आप राहु की महादशा के प्रभाव में हैं। राहु में सूर्यान्तर जनवरी, 2012 ई. तक राजनैतिक दृष्टि से उत्कर्षाधायक है। तत्पश्चात् राहु में चन्द्रान्तर, जोकि 20 जुलाई, सन् 2013 ई. तक चलेगा, आपके लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से शुभ नहीं। ग्रहस्थिति के अनुसार यह समय राजनीति से संन्यास लेने के लिए बाधित कर सकता है। भगवान् इन्हें स्वस्थ रखें– यही प्रार्थना है।

श्रीप्रणव मुखर्जी– कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व में प्रमुख कड़ी में अग्रगण्य श्री प्रणव मुखर्जी की जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार केतु की महादशा में राहु का अन्तर 24 नवम्बर, सन् 2011 ई. तक चलेगा। इस समय चन्द्रांग में केन्द्रस्थ राहु राजनैतिक उलझनों को प्रस्तुत करता रहेगा। इससे आगे केतु में गुरु एवं शनि का अन्तर 9 दिसंबर, सन् 2013 ई. तक प्रभावी रहेगा। ध्यान दें– बृहस्पति चन्द्र से कर्मेश एवं शनि भाग्येश हैं। इस समयावधि में इन्हें अपनी योग्यता, क्षमता एवं राजनैतिक वरीयता (Seniority) का लाभ मिलेगा, उच्चपद प्राप्त होने का योग है।

श्रीराहुल गान्धी– उदीयमान युवा नेता श्रीराहुल गांधी जी की जन्माङ्गगत ग्रहस्थिति से ज्ञात होता है, कि–शनि भाग्येश एवम् कर्मेश होकर व्ययस्थान में नीचस्थ है, लेकिन शनि पर बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि है और शनि भाग्यस्थान को देख रहा है। ऐसी स्थिति में इन्हें राजनैतिक लाभ तो मिल सकता है। कांग्रेस–सदस्यों की सुधारवादी प्रक्रिया से देश एवम् पार्टी में नई सोच एवम नई जैनरेशन को जागृत करने पर पार्टी एवम् नेतृत्व को लाभ होगा। इस समय चन्द्रमहादशा में 28 जनवरी, सन् 2012 ई. तक प्रान्तीय क्षेत्रों में श्री राहुल गान्धी पार्टी को नई जागृति प्रदान करेंगे, लेकिन चन्द्र में शनि का अन्तर 28 जनवरी, सन् 2012 ई. से 28 अगस्त, 2013 ई. तक इनके लिए कठिन एवं चुनौतीपूर्ण मालूम देता है। इस समय इन्हें अपनी सुरक्षाव्यवस्था को भी सुदृढ़ रखना होगा एवं सन् 2014 ई. के लोकसभा चुनावों के समय भी ग्रहस्थिति पर दृष्टिपात करें, तो प्रधान–नेतृत्व–प्राप्ति के लिए इन्हें अभी अनुभव एवं राजनीति की गहराइयों तक अध्यन करने की आवश्यकता प्रतीत होती है। अच्छा हो– यदि 2014 ई. से पूर्व किसी अनुभवी नेतृत्व से राजनीति के अन्तराल का अध्ययन करें, फिर प्रधानपद (प्रधाननेतृत्व) प्राप्त करके सफलता प्राप्त करने का सुअवसर उपलब्ध करें। भाग्य में उच्च पदाप्ति का योग 28 अगस्त, सन् 2013 ई. के बाद बुध की महादशा में ही संभव है।

श्री लालकृष्ण आडवानी– भाजपा के लब्धप्रतिष्ठित नेता श्री लालकृष्ण आडवानी की जन्मकालिक एवं गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार पार्टी के सञ्चालन एवं पार्टी के हित में इनका सहयोग बना रहेगा। इस समय शनि की महादशा में शनि का अन्तर सितम्बर, सन् 2011 ई. तक चलेगा। जन्माङ्ग में शनि तृतीयेश–चतुर्थेश है, जोकि गोचर में 14 नवम्बर, सन् 2011 ई. तक कन्यास्थ रहेगा। इस समय शनि–गुरु का समसप्तक इनके राजनैतिक परिदृश्य पर कुछ अच्छा संकेत नहीं देता। तत्पश्चात् 15 नवम्बर, 2011 ई. से संवत् 2068 वि. के अन्त तक शनि–मंगल की स्थिति एवं वक्रत्व भी इनके लिए समस्यात्मक ही मालूम देता है। सत्तारूढ़दल पर विपक्षी नेता एवं अन्य भाजपा नेता श्रीमती सुषमा स्वराज के प्रभावक्षेत्र को ये अच्छा योगदान देंगे। केन्द्रीय शासनसत्ता को ठीक निर्देशन से देशहित में श्री आडवानी आदि प्रमुख नेता यशस्वी रहेंगे। शनि की महादशा में इनको अपनी सेहत का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब–इस प्रान्त की प्रभावराशि मीन एवं नामराशि कन्या है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार शनि कन्या राशि में एवं मीनस्थ बृहस्पति की दृष्टि में है। यह ग्रहस्थिति 14 नवम्बर, 2011 ई. तक चलेगी। लेकिन 30 अगस्त से 25 दिसम्बर तक गुरु वक्री गति से चलेगा, जोकि इस प्रान्त में चोरी, ठगी आदि एवं अन्य राजनैतिक परिस्थितियों से प्रधाननेताओं को परेशानी में डालेगा।

संवत् के शुरु में ही अप्रैल, 2011 ई. से 11 जून, 2011 ई. तक शनि–मंगल का समसप्तक एवं षडष्टकयोग इस प्रान्त एवं राजनैतिक पार्टियों के लिए उलझनपूर्ण है।

है। इस समय इन्हें अपनी सुरक्षाव्यवस्था को भी सुदृढ़ रखना होगा एवं सन् 2014 ई. के ... संवत् के शुरू में ही अप्रैल, 2011 ई. से 11 जून, 2011 ई. तक शनि–मंगल का समसप्तक एवं षडष्टकयोग इस प्रान्त एवं राजनैतिक पार्टियों के लिए उलझनपूर्ण है।

भाजपा एवं अकालीदल गठबन्धन अभी कुछ कमजोर होते मालूम देंगे, लेकिन नवम्बर, 2011 से फरवरी, 2012 ई. तक की ग्रहस्थिति इन पार्टियों को फिर नजदीक ले आएगी। इस प्रान्त में कांग्रेस पार्टी अपनी प्रतिष्ठा को सुधारने के लिए भारी प्रयत्न करेगी। ग्रहस्थिति काफी हद तक सफलता प्राप्त होने की है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार सरकार की कार्य–शिथिलता एवं कमज़ोर शासन सेयहां सरकार की छवि खराब होगी, जिसका लाभ कांग्रेस को मिलेगा।

हरियाणा– नामराशि मिथुन और प्रभाव राशि मीन है। मिथुन में केतु है, मीन में स्वयं गुरु प्रभावी है। मिथुन राशि पर शनि–मंगल की दृष्टि है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार 8 मई को गुरु के मेष राशि में आने पर यहां सत्तारूढ़ पार्टी को काफी दिक्कतों का सामना करना होगा।

25 जुलाई, 2011 ई. से 8 सितम्बर, 2011 ई. तक शनि–मंगल का दशम–चतुर्थ–सम्बन्ध प्राकृतिक आपदा किंवा किसी दुर्घटना से परेशानी उपस्थित करेगा। इस समयावधि में विपक्षी नेता श्री ओमप्रकाश चौटाला साहिब की नीति से इनेलो पार्टी को बल मिलेगा। मेष के गुरु के समय 8 मई से संवत् 2068 वि. के अन्त तक विपक्षी नेतृत्व अपना प्रभावक्षेत्र बढ़ाएंगे। लेकिन 30 अगस्त के बाद 25 दिसम्बर, 2011 ई. तक गुरु की वक्रस्थिति में सत्तारूढ़ पार्टी अपना प्रभावक्षेत्र बढ़ाने में सफल रहेगी। प्रान्त में चहुंमुखी प्रगति होगी।

23 जनवरी, सन् 2012 ई. से मंगल के वक्री होने एवं 7 फरवरी, 2012 ई. से शनि के वक्र होने पर संवत् के अन्त तक किसी प्राकृतिक आपदा, यानदुर्घटना से किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होने का योग है।

हिमाचल प्रदेश– इस प्रान्त की नामराशि कर्क एवं प्रभावराशि मीन है। मेष राशिस्थ गुरु के वक्री होने पर 30 अगस्त, सन् 2011 ई. से दिसम्बर, 2011 ई. के मध्य यहां की सत्तारूढ़ पार्टी को इस प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल–समस्या को हल करने के लिए ठोस पग उठाने होंगे। आर्थिक विकास एवं पर्यावरणसंरक्षण की तरफ भाजपा नेतृत्व को कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा। चीन से सम्पर्क रखने वाले भूभाग पर इस प्रान्त को विशेष दृष्टि रखनी होगी, अन्यथा लेह–लद्दाख क्षेत्रों से भारत को विशेष कष्टपूर्ण स्थिति का सामना करना पड़ेगा। संवत् 2068 वि. में अप्रैल, 2011 ई. से जून, 2011 ई. तक एवं 25 जुलाई, 2011 ई. से 29 अक्तूबर, 2011 ई. तक प्राकृतिक आपदा एवं शत्रुकृत गतिविधि से इस प्रान्त के प्रशासन को सावधान रहना होगा। बेरोजगारी की समस्या की तरफ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता भी प्रमुख नेता के सामने मुखरित होकर उपस्थित होगी।

सत्तारूढ़ शासक श्री प्रेमकुमार धूमल जी को यहां प्रगति, उत्तम प्रशासन एवम् नई–नई योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए विशेष अभिमान प्राप्त होगा।

जम्मू–काश्मीर– इस प्रान्त की प्रभावराशि तुला एवं नामराशि मकर है। मकर राशि का स्वामी शनि संवत् के प्रारम्भ में ही वक्री है एवं गुरु अतिचारी है। ऐसी स्थिति में इस प्रान्त में भारी उपद्रव एवं जनधनहानि के योग बनते हैं। 3 मई, सन् 2011ई. को मंगल मेषराशि में आकर तुला राशि को प्रभावित करेगा। इस समय शनि कन्या राशि में है। इस प्रकार मेषराशि का मंगल और इस प्रान्त की प्रभावराशि मकर का स्वामी शनि षडष्टकयोग बनाते हैं। जून, 2011 ई. तक यह योग प्रभावी रहेगा। इस समयावधि में प्राकृतिक भूकम्प आदि से यहां जनधनहानि के योग बनते हैं। 25 जुलाई, 2011 ई. से 8 सितमबर, 2011 ई. तक की ग्रहस्थिति यहां की जनता एवं भारतीय गणतन्त्र के लिए भारी सिरदर्द रहेगी। इस संवत् 2068 वि. में प्रधान नेतृत्व में भारी परिवर्तन के आसार बनते हैं। आगे 23 जनवरी, सन् 2012 ई. से संवत् 2068 के अन्त तक की ग्रहस्थिति अलगाववादी तथा पाकिस्तान–समर्थक नेताओं द्वारा स्थानीय लोगों में विषबुद्धि पैदा करेगी, सैन्यबल का प्रयोग अनिवार्य मालूम देगा।

पाठको ! प्रभुकृपा से भूत–भविष्य में जो कुछ (ग्रहगोवरवश) अनुभव किया, आपके सामने रख दिया है। जो घटित हो चुका, वह आपने देख लिया। जो भविष्य है, उस पर आप भूतानुसन्धान के आधार पर विश्वास करें–

"समस्तमेतद् गतमागतं तथा भविष्यमप्यक्षरशो यथोत्तरम्।
निबोधितं शास्त्र–परम्परावशाद् भवादृशां भारतवासिनां पुरः।।"

लेख पूर्ण होने की तिथि–
12 अगस्त, सन् 2010 ई.
(मधुश्रवा तृतीया)

शुभचिन्तक–

इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,
श्रीमार्त्तण्ड भवन, मु.पो. कुराली,
अजीत नगर (मोहाली), (पंजाब)।
PIN - 140 103,

PHONE – 0160-2641277 FAX-2641577

संवत् 2068 वि. में भारत की जलवायु एवं वर्षा

– संयमी शर्मा,

सूर्य–आर्द्राप्रवेश कुण्डली के अनुसार कहीं वर्षा की भारी कमी महसूस हो तो कहीं खड़ी फसलों को नुक्सान हो किंवा कहीं दक्षिण भारत में भारी वर्षा से नुक्सान हो।

सूर्य आर्द्राप्रवेश कुण्डली
(22 जून, 2011 ई., 16 घं. 06 मि.)

रा. 8
श. 6
9
7
5
10
4
11चं.
1 गु.
3सू.बु.
12
मं. 2 शु. के.

संवत् 2068 वि. में मेघेश (वर्षा–पानी का मालिक) बुध एवम् संवत् का राजा चन्द्र ग्रह है। मेघेश बुध होने से वर्षा एवम् फसल (खेती) अच्छी हो। पृथ्वी अनेकविध सुख सम्पदा से युक्त हो। इस वर्ष रोहिणी का वास समुद्र में होने से वर्षा अधिक होगी।

इसवर्ष नवमेघों में 'संवर्त' नाम का मेघ तथा चतुर्मेघों में 'द्रोण' नामक मेघ है। जन–जीवन अधिक व्यस्त हो। 'द्रोण' मेघ के कारण वर्षा अधिक हो एवम् वायुवेग और वर्षा से अनेकत्र हानि होने के योग हैं।

जलस्तम्भ– इस वर्ष जलस्तम्भ 81 प्रतिशत होने से वर्षा अधिक हो। पृथ्वी का जलस्तर बढ़े। वर्षेश चन्द्र भी अच्छी वर्षा एवम् खेती का संकेत देता है।

नीचे हम गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार वर्षाविचार लिख रहे हैं; जिन तारीखों में हमने वर्षा का निर्देश किया है, उन तारीखों मे वर्षा यत्र–तत्र होगी। स्थानविशेष के लिए वर्षा का विचार करने हेतु सूक्ष्मविचार की आवश्यकता होती है, जोकि– समयाभाव के कारण संभव नहीं है।

अप्रैल / मई– अप्रैल 23, 24, 25 एवम् मई 3, 8, 9, 11, 12, 15, 16, 21, 23 और 25 मई के लगभग आसाम, उड़ीसा, विन्ध्यप्रदेश, मुम्बई, भूटान, सिक्किम में वायुवेग के साथ वर्षा हो। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान में गर्मी का प्रकोप रहे।

जून– 1, 2, 4, 6, 7, 8, 12, 13, 17, 18, 22 से 30 जून तक भूटान, शिलांग, आसाम, महाराष्ट्र में जोरदार वर्षा हो एवम् कहीं बाढ़ से हानि सम्भव है। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली में लू से जनहानि हो एवम् कही आंधी–तूफ़ान से भी हानि संभव है। हिमाचलप्रदेश में यत्र–तत्र वर्षा हो।

जुलाई– 3 से 7, 9, 10, 15, 16, 17, 20, 21, 23, 24 एवम 25 जुलाई को पंजाब, हिमाचलप्रदेश, उत्तरप्रदेश, उड़ीसा, भूटान, शिलांग, आसाम, काश्मीर, हरियाणा, बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र एवम् पूर्वी राजस्थान में अनेकत्र वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं। कहीं आकाशीय बिजली से हानि भी संभव है।

अगस्त– 1, 3, 4, 5, 6, 8, 9, 10, 16, 17, 20, 21, 22, 23 एवम् 24 से 27 तथा 30, 31 अगस्त को पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ़, मद्रास, दिल्ली, काश्मीर, उत्तर प्रदेश एवम् मध्यप्रदेश में कहीं वायुवेग से बादल छटें तो कहीं बून्दा–बान्दी व खण्डवृष्टि हो।

सितम्बर– 5, 6, 7, 9, 10, 13, 14, 17 से 22 एवम् 26, 27 सितम्बर को दक्षिणी भारत, सूरत, दार्जिलिंग, आसाम, नेपाल, भूटान एवम् काश्मीर में बादलचाल और वर्षा के योग हैं। सिंहस्थ शुक्र होने से अनेकत्र वर्षा की कमी भी सम्भव है। उत्तर भारत में आकाश निर्मल रहे, मौसम मे परिवर्तन अनुभव हो।

अक्तूबर– 1, 4, 8, 9, 10, 13, 16, 17, 20, 22, 24 एवम् 28 अक्तूबर को जम्मू–काश्मीर, पंजाब, हरियाणा, आसाम में वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि एवम् बौछारें पड़ें। उत्तर–पूर्वी लंका एवम् चिरापूंजी में भी वर्षा के योग हैं।

नवम्बर– 3 और 15 से 28 नवम्बर के बीच जम्मू–काश्मीर, हिमाचलप्रदेश, उत्तर भारत एवम् दिल्ली में सर्वत्र शीतलहर चलने लगेगी। कहीं धुन्ध से यातायात प्रभावित होगा। काश्मीर एवम् हिमाचलप्रदेश के उन्नत शिखरों पर कहीं हिमपात हो। उ.भारत में शीतलहर का प्रभाव बढ़ने लगेगा।

दिसम्बर– 3, 5, 10, 11, 13, 17, 26 एवम् 29 दिसम्बर को उत्तरी भारत में भयंकर शीतलहर चलेगी। कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि; जम्मू– काश्मीर, हिभाचल, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवम् चण्डीगढ में धुन्ध के वातावरण से यातायात बाधित हो। पर्वतीय क्षेत्रों में भारी हिमपात के योग हैं।

जनवरी (सन् 2012 ई.)– 3, 4, 6, 9, 11, 13, 14, 17, 18 एवम् 24 से 30 जनवरी को उत्तरी भारत, जम्मू–काश्मीर, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल में खण्डवृष्टि के योग हैं। कहीं शीतलहर से हानि हो। काश्मीर एवम् हिमाचल प्रदेश में भारी हिमपात के योग हैं। उत्तर भारत में भारी हिमपात एवम् धुन्ध से यातायात बाधित हो।

फरवरी– 3 से 19 एवम् 23 से 29 फरवरी को शिलांग, लंका के पूर्वीछोर, मध्यप्रदेश, आसाम, बंगाल आदि में कहीं बूंदाबांदी एवम् बादलचाल रहे। उ. भारत में आकाश निर्मल हो; कहीं हवा का जोर रहे और तापमान में वृद्धि हो।

मार्च– 2, 4, 12, 13, 14, 19, 21 मार्च को भूटान, सिक्किम, बंगलादेश, पूर्वी आसाम एवम् पूर्वी बिहार में वर्षा के योग हैं। उ.भा. में हवा का ज़ोर रहे, तापमान में वृद्धि हो।

कहीं आकाशीय बिजली से हानि भी संभव है।

व्यापार–विमर्श (संवत् 2068 वि.)

(संवत् 2068 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं में आने वाली तेज़ी एवम् मन्दी का मासिक विवरण)

लेखक :– इन्दुशेखर शर्मा–संयमी शर्मा,

संसार के सभी पदार्थो पर ग्रहों का नियंत्रण है, सभी पदार्थों का समावेश बारह राशियों में है। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशिभोग करता है, तो उस राशि में समाहित सभी व्यापारिक वस्तुएं ग्रह की प्रकृति के अनुसार प्रभावित होती रहती हैं। प्रभावित वस्तुओं में परिवर्तन आते हैं और इन्हीं परिवर्तनों से बाज़ारों में घटाबढी होती है, जिसे हम ' तेज़ी–मंदी ' कहते हैं। 'तेज़ी–मन्दी'– **इन दो शब्दों से व्यापारी अपने भाग्य को आजमाता है। परन्तु मनुष्य का भाग्य कर्मफल किंवा ग्रहचाल के मुताबिक आर्थिक स्थिति को कभी बिगाड़ता है तो कभी सुधारता है। रथ के पहिए में लगे आरों की भांति मनुष्य को समाज में कभी ऊपर उठाता है तो कभी नीचे गिराता है –** "चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः"। **कहने का तात्पर्य यह है कि,** जो व्यक्ति आज व्यापार में घाटा खा चुका है, वह सदा के लिए डूबा ही रहेगा–यह धारणा भ्रामक है। व्यापार में बहुत ही आश्चर्यजनक उतार–चढ़ाव आते हैं, न जाने आपको कब शीघ्र उत्तम धनलाभ हो जाए। जो व्यक्ति धनाढ्य होकर सट्टे का काम विचारपूर्वक नहीं करते, वे शीघ्र ही डूब सकते हैं । व्यापार तो किस्मत के सिकन्दर का ही प्रत्यक्ष साथ देता है। अतः किसी भी तरह का व्यापार करने से पहिले आप पत्राचार द्वारा या प्रत्यक्ष मिलकर ग्रहस्थिति पर विचार करा लें। विश्वास रखें, ग्रहस्थिति के आधार पर किए गए व्यापार से आप हानि में न रहेंगे। आप भारी हानि से भी बच सकते हैं। **अतः जीवन पर ग्रहों का संकेत समझकर ही व्यापार करना बुद्धिमत्ता है।**

खुलकर व्यापार करने से पहिले अप्रत्याशित हानि से बचने के लिए अपनी व्यक्तिगत ग्रहचाल को ध्यान में रखना सतर्कता है । हानिप्रद ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। वर्ष में जो ग्रह लाभप्रद हैं, उन ग्रहों के अधिकारक्षेत्र में आने वाली वस्तुओं का ही व्यापार करें, तभी आप लाभ ले सकेंगे। हाज़र एवम् वायदा व्यापारी जो अपने व्यापारिक जीवन से निराश हो चुके हैं, उनके लिए हम यहां 'व्यापार–विमर्श' में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके तेज़ी–मन्दी का मशवरा देते हैं। व्यापारियो ! निराश न हों। **हमसे प्रत्यक्ष मिलें, आपकी उलझी हुई व्यापारिक समस्या का समाधान हम करेंगे ।**

संवत् 2068 में गुरु, शनि, राहु, मंगल, यूरेनस, नेप्च्यून और प्लूटो आदि के चार एवम् युति–प्रतियुति के आधार पर यह स्पष्ट घोषणा की जाती है कि, इस साल जगत् में विशेष लम्बे तेज़ी एवम् मन्दे के रिएक्शन्ज़ आएंगे। इस वर्ष गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन एवम् रुई में विशेष लाभ के चांस हैं, तुरन्त फीस भेजकर टेलीफोन से सम्पर्क स्थापित करें । विदेशी व्यापारी पत्र द्वारा या टेलीफोन द्वारा सम्पर्क स्थापित करें, उत्तर मिलेगा।

संवत् 2068 वि. में व्यापारिक बन्धु कॉटन(रुई), कपास, चीनी, घी के व्यापार से धनाढ्य बन सकेंगे– यह हम इसवर्ष के योगायोगों के आधार पर घोषणा कर देना चाहते हैं। अतः प्रत्यक्ष मिलकर या वर्षभर की फीस भेजकर टेलीफोन के जरिये समय–समय पर ताजा परामर्श प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त करें। 'व्यापार–विमर्श' लेख में जिस जगह हम ताजा मशवरा हासिल करने की बात लिखते हैं, वहां व्यापारी अगर प्रत्यक्ष मिलकर मशवरा लें, तो अच्छा रहेगा । 'व्यापार–विमर्श 'लेख में हम ग्रहचाल के मुताबिक सभी व्यापारियों को प्रतिवर्ष बाज़ारों के उतार–चढाव से सावधान करते रहे हैं।

संवत् 2067 में वायदा व्यापारी एवम् हाजर का काम करने वाले व्यापारी दालवाना, सरसों, ग्वार, सोना, चान्दी एवम् तांबा में भयंकर तेजी से और आश्चर्यजनक मन्दे के Reactions से भरपूर लाभ हमारे ताजा मशवरे से उठा चुके हैं। ***व्यापारी सज्जनो ! 1 जनवरी, सन् 2011 ई.***

से यदि आप प्रतिमास किसी भी जिन्स की दैनिक तेजी–मन्दी या वायदा–हाजर बाजार का चांस अर्थात् सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़, चना, ग्वार आदि अनाज, तिल, तेल, सरसों किंवा बिनौला आदि तिलहन, जीरा, धनिया, हल्दी, लाल–कालीमिर्च, रुई एवन् कपास में से किसी भी जिन्स की मासिक लिखित रिपोर्ट, चाहते हैं तो फीस 5000/– (पांच हज़ार रु.) प्रतिमास, प्रतिजिन्स के हिसाब से भेजकर Advance Report प्राप्त करें। एकवर्ष की प्रतिजिन्स फीस Rs. 50,000/– (पचास हज़ार रु.) है।

व्यापारियों से निवेदन है, कि वे अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करें! व्यापार में किसी प्रकार की हानि के लिए सम्पादक/लेखक जिम्मेदार न होंगे।

नोटः– वायदा व्यापार या हाजर सौदा के व्यापार की लाईन अगर लिखे या बताए गए विचार के विपरीत चले तो तुरन्त सौदा काटकर नुक्सान से बचें, तुरन्त प्रत्यक्ष मिलकर या टेलीफोन से ताज़ा मशवरा हासिल करें।

ध्यान दें– किसी प्रकार के नुक्सान (हानि) की जिम्मेदारी हम नहीं लेते अर्थात्– व्यापार में हानि होने पर हम जिम्मेदार न होंगे ।

संवत् 2068 वि. में ग्रहस्थिति के अनुसार तेजी–मन्दी का आकलन

संवत् 2068 वि. में तेजी–मन्दी का विस्तृत विवरण देने से पहिले हम इस संवत् के नाम, वर्ष के राजा, मन्त्री, सस्येश, धान्येश, मेघेश आदि ग्रहपरिषद् का व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? – इसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर देना प्रासंगिक समझते हैं, जोकि निम्नांकित है;–

संवत् 2068 वि. को क्रोधी' संवत्सर का नाम दिया गया है। इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है–

"क्रोध्यब्दे त्वखिला लोकाः क्रोध–लोभ–परायणाः।
ईति–दोषेण सन्तप्ता मध्य–सस्यार्घ–वृष्टयः।।"

किञ्च–

"विषमस्थं जगत् सर्वं व्याकुलं दारुणाद्रणात्।
देशे ज्ञातौ कुटुम्बे च क्रोधी क्रोधपरःपरम्।।"

अर्थात्– इस वर्ष देश में (टिड्डीदल किंवा अन्यविध) प्राकृतिक आपदा से देश के आपूर्तिसाधन प्रभावित होंगे। मंहगाई बढ़ेगी, जनता में लोभक्रोध बढ़ेगा। कहीं विश्व में युद्धमय वातावरण से आपूर्तिसाधन एवं व्यापारक्षेत्र प्रभावित होंगे। नेताओं में परस्पर तालमेल न रहे, सरकार की नीति से भी व्यापार में उथल–पुथल रहे।

संवत् 2068 वि. का राजा 'चन्द्र' होने से वर्षा अच्छी हो, धान्य (सभी अनाज)पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों। किसी नए प्रभाव वाली नेता को राजनीति में विशेष पदाप्ति होने से नेतृत्व में इसवर्ष परिवर्तन होने का योग है।

इस संवत् का मन्त्री 'गुरु' होने से अनाजों की उपज अच्छी हो, वर्षा बहुत, शासनतन्त्र में अच्छी नीति के निर्धारण से व्यापारक्षेत्र सुखद रहे।

इसवर्ष का सस्येश 'शनि' होने से जनता एवं व्यापारी व्यापारिक नीति से परेशान हों, गेहूं, जौ एवं अन्य प्रकार की फसलों को हानि पहुंचे।

इस संवत् का धान्येश 'शुक्र' है, अतः शीतकालीन फसलें पकने से पहले ही कृषि–रोगों किंवा अकालिक वर्षा आदि प्राकृतिक प्रकोप से खराब हो जाने की संभावना से बाजारों में तेजी बन सकती है।

इस संवत् का मेघेश 'बुध' होने से राजस्थान, उ.प्र., पंजाब, हि.प्र., दिल्ली क्षेत्र एवं हरियाणा में अच्छी वर्षा संभव है। इस वर्ष चतुर्मेघों में द्रोण एवं नवमेघों में संवर्त नामक मेघ होने से वर्षा एवं वायुवेग से कुछ स्थानों पर हानि भी होगी। रोहिणी का वास समुद्र में होने से भी महावृष्टि (अत्यधिक वर्षा) से कुछ क्षेत्रों में हानि हो।

शरत्सस्य कुण्डली के अनुसार मूंग, मोठ, जीरी, खाण्ड, शक्कर, बाजरा, अरहर, कपास, तिल आदि के व्यापार में विशेष लाभ मिलेगा।

ग्रीष्म सस्यजातक कुण्डली के अनुसार इसवर्ष जौ, गेहूं, चना आदि की खड़ी फसल को रोगविशेष से किंवा प्राकृतिक प्रकोप से हानि पहुंचने का योग है, जिससे बाजार प्रभावित होंगे।

इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है– खड़ी फसल को रोगविशेष से किंवा प्राकृतिक प्रकोप से हानि पहुंचने का योग है, जिससे बाजार प्रभावित होगा।

सं. 2068 वि. में जलस्तम्भ एवं अन्नस्तम्भ बहुत प्रबल हैं, अतः बाजरा, जीरा, चावल, धनिया, मिर्च, दालवाना एवं मोटे अनाजों की फसल अच्छी होने पर भी गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार स्टॉकिस्टों द्वारा महंगाई बना दी जाएगी।

व्यापारी ध्यान दें– संवत् 2068 वि. में *ग्रहों के वक्र–मार्ग, युति–प्रतियुति के अनुसार इस वर्ष चावल, गेहूं, चना, ग्वार आदि अनाज, गुड़, दालवाना, रुई, कपास, नरमा, मैंथा, तेल एवम् सरसों आदि तिलहन, लाल–कालीमिर्च, जीरा, लौंग में तेज़ी– मन्दी के भयंकर रिएक्शन्ज़ आएंगे।* **दूर–दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आएं या सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़ में से किसी भी जिन्स/धातु की लिखित रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए एक मास की फीस 5000/– (पांच हज़ार रु.) प्रति जिन्स/ प्रतिधातु, के हिसाब से भेजकर आगामी मास की दैनिक तेज़ी–मन्दी की रिपोर्ट प्राप्त करें।**

अप्रैल (सन् 2011 ई.)

मासारम्भ में लगभग 2 अप्रैल को वक्री बुध पश्चिम दिशा में अस्त होगा एवम् रेवती नक्षत्र में प्रवेश करेगा। इस समय बुध सूर्य–गुरु–मंगल के साथ मीन राशि में है। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, सूरजमुखी, गेहूं, जौ, चना, चावल, केसर, कुसुम्भ, मजीठ, लालचन्दन, गेरु, लालमिर्च में तेजी रहे। शेयर बाजार मन्दे रहें।

4 अप्रैल को राहु मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में एवं केतु मृग.–3 चरण में पदार्पण करेगा। धनुराशि का राहु कई बाजारों में बड़ी तेजी ला सकता है। कपास, बिनौला, रसकस, सैंधा नमक व प्रत्येक जाति के अनाज तेज होंगे। राहु के मूल नक्षत्र में आने पर दालवाना व मोटे अनाजों का स्टॉक करने से आगे लाभ मिलता है– ऐसा अनुभव है। इस समय रुई, सोना, चान्दी में घटावढ़ी, कपास, गुड़, नमक, तेल तेज रहें। धनुराशि का राहु विशेषतः तेजी प्रधान ही रहता है; लेकिन रुई, कपास, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, शेयर बाजार एवं तिलहन–तेल के व्यापारी विशेषतः प्रभावित होते हैं।

5 अप्रैल को चन्द्रदर्शन का प्रभाव अनाजों, वायदा बाजार, सरसों, अलसी पर तेजीकारक ही रहेगा।

6 से 7, 8 अप्रैल को रुई में विशेष घटाबढ़ी चलेगी, चान्दी में झटके की मन्दी आकर तेजी बनेगी। यह तेजी–मन्दी शुक्र के पू.भा. में आने से संभव होगी।

9 अप्रैल को गुरु के रेवती नक्षत्र के तृतीय चरण में आने पर एवं 14 अप्रैल को सूर्य के अश्विनी–मेष में आने पर एरण्ड, अलसी, तिल, तेल, सोना, चान्दी, लोहा, तांबा, लालमिर्च, नारियल, सुपारी, हींग, मेथी, लौंग, इलायची एवं अनाजों में तेजी बने। रुई में पहले मन्दी बाद में तेजी बनेगी।

[4 से 14 अप्रैल तक बाजार तेज़ रहेंगे। वायदा एवं हाजर के व्यापारी तेजी से लाभ ले सकेंगे। 15 अप्रैल को कुछ मन्दा संभव है।]

16 अप्रैल को शुक्र मीन राशि में आकर मंगल–बुध–गुरु के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाकर शनि के साथ समसप्तकयोग बना रहा है। तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड में कुछ मन्दी आकर तेजी बने। रुई में तेजी रहेगी। इस समय चान्दी में धमाके की तेजी बन सकती है–सावधानी से काम करें।

17 अप्रैल को बुध पूर्व में उदित हो रहा है, रुई में मन्दी आकर 15 दिन में अच्छी तेजी बनेगी। गेहूं, चना तथा तिल, घी, लालमिर्च भी तेज रहेंगे।

18 अप्रैल को उ.भा. नक्षत्र का शुक्र अचानक बाजारों में मन्दी बना सकता है– सावधानी से काम करें। चावल, घी, मोती, चान्दी, कपूर, नमक, खाण्ड, रुई, चीनी, कपास आदि सफेद चीजों में मन्दे से लाभ मिलेगा।

नोट– इस मास में शनि वक्री है एवं गुरु अतिचारी है; इस स्थिति में धान्य, तिलहन आदि में ज़ोरदार तेज़ी–मन्दी के रिएक्शन्ज़ आया करते हैं, क्योंकि प्राकृतिक परिस्थितियां तेज़ी बनाती हैं–

" अतिचारंगते जीवे शनौ वक्रत्वमागते।
न तत् पश्यामि तोयं वै यद्धरां धारयिष्यति।।"

19 अप्रैल से 22 अप्रैल तक बाजार अनिश्चित रहेंगे। मन्दे में खरीदें, तेजी में बेचकर लाभ लेते रहें। 23 अप्रैल को बुध मार्गी होगा। रुई में पहले मन्दी बाद में तेजी रहे; चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो। तेल, अलसी, गुड़, बिनौला, मूंगफली एवम् चन्दन में मन्दी का वातावरण रहे।

नोट– यदि 19 अप्रैल से 23 अप्रैल तक तिलहन, तेल, गुड़, शक्कर, घी में मन्दा बने तो हाज़र व्यापारी स्टॉक करें, आगे दो मास में अच्छा लाभ मिलेगा।

26 अप्रैल, मंगलवार को मंगल एवम् गुरु ग्रह– दोनों उदय होंगे। इस समय व्यापारियों को बहुत सावधानी से काम करना होगा। हमारे विचार से 28 अप्रैल तक रुई, उड़द, तिल, तेल, सरसों, अलसी, सोना, चान्दी, ताम्बा, गेहूं,

जौ, चना, चावल, मोठ, गुड़, खाण्ड एवं घी में तेज़ी बन सकती है। तुरन्त लाभ लें, अन्यथा हानि में रहेंगे।

29 अप्रैल को शुक्र रेवती में आकर मंगल–बुध–गुरु के साथ एकनक्षत्र–सम्बन्ध बनाएगा। इस समय सभी बाज़ार मन्दे की तरफ बढ़ सकते हैं होशियारी से व्यापार बढ़ाएं। तेल, तिलहन, सोना, चान्दी, तांबा, रुई, कपास, चावल, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर, जवाहरात एवं दालवाना में अचानक मन्दे से व्यापारी लाभ ले सकेंगे। यह मन्दा 30 अप्रैल तक किंवा कुछ आगे तक प्रभावी रहेगा।

मई (सन् 2011 ई.)

मासारम्भ में लगभग 3 मई दोपहर तक बाज़ार अनिश्चित रहेंगे। तत्पश्चात 3 मई को सायं के समय मंगल भौमवती अमावस वाले दिन मेष राशि में प्रविष्ट होकर उच्च सूर्य के साथ राशि–सम्बन्ध बना लेता है। ध्यान दें– मेष राशि मंगल की अपनी राशि है। यह बाज़ारों में मन्दी को रोककर तेज़ी के छोटे–मोटे झटके देता रहेगा– अर्थात् मंगल दोतरफी घटाबढ़ी बनाएगा। हमारे विचार से ज्वार, बाजरा, चना, मूंग, मोठ, गेहूं, गुड़, खाण्ड, रुई, सोना, पाट, बारदाना, गर्म मसाले, लालमिर्च, कपास में अच्छी तेज़ी बनेगी। तेज़ी आने पर 7 मई तक लाभ लेकर तेज़ी से निकल जाएं। क्योंकि सूर्य–मंगल का राशि–सम्बन्ध तेज़ी से उत्तम लाभ दे सकता है। आगे अचानक ज़ोरदार मन्दे वाली ग्रहस्थिति है।

8 मई को गुरु अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में आ जाएगा, इस प्रकार गुरु– सूर्य–मंगल तीनों मेषराशि में स्थित होंगे। रुई में घटाबढ़ी चले; सोना, चान्दी, तांबा, गुड एवं रेशमी कपड़े के भाव मन्दे होंगे। सभी प्रकार के अनाजों में भी मन्दा बन सकता है।

ध्यान दें– यदि इस समय तेज़ी बनने लगे तो तेज़ी का काम करके तुरन्त मन्दा खेलें, यदि पहले मन्दा बने तो खूब माल पकड़ें, आगे 11 मई तक बाज़ार काफी नीचे आ सकते हैं।

11 मई को सूर्य कृत्तिका नक्षत्र में प्रवेश करेगा। 10 मई को शुक्र एवं 11 मई को बुध–ये दोनों मेष राशि में आकर मंगल–गुरु के साथ एकराशि–सम्बन्ध बना लेंगे। इस समय गेहूं, ज्वार, बाजरा, चना, अलसी, मूंग, मोठ, घी, रुई, सोना, चान्दी, गुड, खाण्ड, तेल, तिलहन में जोरदार मन्दा बनने की सम्भावना है। ध्यान दें– इस समय चान्दी में झटके की तेज़ी के बाद बड़ी मन्दी की सम्भावना है। यह तेज़ी–मन्दी 14 मई तक ही रहेगी। पहले तेज़ी, फिर मन्दी रहे। नफा तुरन्त बुक करें, आखिरी समय की इन्तज़ारी में न रहें।

15 मई को चान्दी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों आदि में तेजी से लाभ लें, क्योंकि 15 मई को सूर्य वृषराशि में आकर तेजी बना देगा। नोट करें– 15 मई को अनाजों में कुछ मन्दी आ सकती है। यदि अनाजों में मन्दी आए तो स्टॉक करें, आगे मासान्त में लाभ मिलेगा। 20 मई तक बाज़ारों में ज़ोरदार उठा–पटक चलेगी।

21 मई को बुध–शुक्र एवं मंगल– ये तीनों ग्रह एक ही दिन में भरणी नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे। चावल, गेहूं, चना, मोठ, ज्वार, बाजरा, तूअर, रुई, चान्दी एवं सोना तेज़ी की तरफ बढ़ेंगे। तिलहन, तेल, अलसी, घी में कुछ मन्दे एवं तेजी के रिएक्शन्ज़ बनेंगे। बाज़ार 22 मई तक उल्लिखित ढंग से चलेंगे।

23 मई को गुरु अश्विनी नक्षत्र के दूसरे चरण में आकर रुई में तेज़ी; सोना–चान्दी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी तथा अनाजों में भी मन्दा बना सकता है– सावधानी से काम करें। 25 मई को सूर्य रोहिणी नक्षत्र में आकर बाज़ारों को तेज़ी की तरफ ले जाएगा। रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, तेल, अनाज, सोना, चान्दी, हल्दी, कालीमिर्च एवं शेयर बाज़ार पर सूर्य का विशेष प्रभाव अनुभव किया गया है। अतः 25 मई से 28 मई तक तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, सरसों आदि तिलहन, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, वस्त्र, सण, सुपारी, लाल–कालीमिर्च एवं रुई में तेज़ी का संचार होगा। इस समय चान्दी में कुछ मन्दा बन सकता है।

27 मई को वक्री शनि हस्त नक्षत्र के दूसरे चरण में दाखिल होगा। रुई, गुड़, खाण्ड एवं चावल तेज़ होंगे।

29 मई को बुध कृत्तिका नक्षत्र में दाखिल होकर 30 मई को सूर्य के साथ वृषराशि में मेल करेगा। बुध–सूर्य ये दोनों जब एक राशि में आते हैं तो बाजारों में यदि पहले तेज़ी चल रही हो तो बाजार ज़ोरदार तेज़ी की ओर बढ़ते हैं; यदि बाज़ार मन्दे हों तो ज़ोरदार मन्दा बनता है–यह ध्यान में रखकर व्यापार करें। इस समय हमारे विचार से 29 मई को चान्दी एवं अफीम में विशेष घटाबढ़ी होकर मन्दी बनेगी। अनाजों व रुई में सामान्य तेज़ी रहे, लेकिन 30 मई को सोना, चान्दी, तांबा आदि में ज़ोरदार घटाबढ़ी चलेगी। गेहूं,

जौ, चना, चावल, मटर, रुई, कपास, सूत, अफीम, तिलहन में अच्छी तेज़ी से मासान्त (31 मई) तक लाभ मिले।

जून (सन् 2011 ई.)

मासारम्भ में 1 जून को शुक्र कृत्तिका में आएगा एवं बुध पूर्व में अस्त होगा। बुध मासारम्भ में अतिचारी है। अतिचारी बुध अधिक बली माना जाता है। तिलहन बाज़ारों पर बुध का जबरदस्त प्रभाव अनुभव किया गया है। इस समय तेल, तिलहन, खल, बिनौला, चावल, गेहूं, दालवाना, घी, रुई, सूत, चान्दी, सोना आदि में ज़ोरदार मन्दा आकर तेजी बनेगी।

ध्यान दें– यदि इस समय बाज़ार मन्दे हों तो स्टॉक करें, आगे उत्तम लाभ मिलेगा।

3 जून को चन्द्रदर्शन होगा, यूरेनस उ.भा. के तृतीय चरण में शनि के साथ समसप्तकयोग बनाएगा। इसी दिन नेप्च्यून वक्री होगा। जलवायु–विचार से बाज़ार तेज़ी की तरफ बढ़ेंगे।

4 जून को शुक्र रोहिणी नक्षत्र में आएगा एवं शुक्र वृषराशि में आकर केतु– सूर्य–बुध के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाएगा। यह चतुर्ग्रहीयोग कहीं वर्षा की कमी या प्राकृतिक प्रकोप से फसलों को हानि पहुंचाता है–

"ज्येष्ठमासे रवियुता ग्रहा यत्रैकराशिगाः।
श्रावणे मेघरोधाय छत्रभंगाय कुत्रचित्।।"

रुई, कपास में ज़ोरदार मन्दी का झटका आकर साधारण तेज़ी बने। कपास, सूत, सोना, चान्दी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खाण्ड में तेज़ी रहे। राई, तूअर, सण एवं अनाजों में मन्दे का रुख रहे।

6 जून को राहु ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण एवं वृश्चिकराशि में प्रवेश करेगा, साथ ही केतु मृगशिरा नक्षत्र के द्वितीय चरण और वृषराशि में दाखिल होगा इस समय अतिचारी बुध, सूर्य शुक्र पहले ही वृषस्थ हैं। अतः घी, तेल, तिलहन, गेहूं, ज्वार, बाजरा, जौ, चना, अलसी, मूंग एवम् मोठ में तेज़ी आती प्रतीत होती है।

7 जून को गुरु के अश्विनी के तृतीय चरण में आने पर 8 जून को दिन में घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, तिल, तेल आदि में मन्दा बनकर दोपहर बाद गेहूं, मूंग, मोठ, चावल, राई, मसूर, तिल, तेल, सरसों, घी, चान्दी, सूत में एकदम तेज़ी बनेगी। लेकिन ध्यान रहे– बाज़ारों में उथल–पुथल 11 जून तक चलेगी। हमारे विचार से 7 जून से 11 जून तक बाज़ारों में मन्दे का प्रभाव अधिक रहेगा।

12 जून को मंगल वृषराशि में आकर सू. शु. बु. के. के साथ मेल करेगा। इस समय मंगल शीघ्रगति एवं बुध अतिचारी है। गुड़, खाण्ड, रुई, तेल, तिलहन, अनाज, दालवाना, सोने, चान्दी में ज़ोरदार तेज़ी से लाभ मिले।

13 जून को बुध मिथुन राशि में आकर शनि की विशेष दृष्टि में आ जाएगा। शनि इसी दिन मार्गी होगा। ध्यान दें– बुध अतिचारी है। बुध अपनी राशि मिथुन में है। इस समय बाज़ारों में अफवाहों से ज़ोरदार तेज़ी–मन्दी के झटके आएंगे। लेकिन मिथुनराशि का सम्बन्ध तिलहन बाज़ारों से है, अतः बुध पर शनि की दृष्टि इस समय रुई, कपास, तेलवाना, बारदाना, पाट, हल्दी आदि में तेज़ी का ही संकेत देती है, फिर भी संभलकर व्यापार करें। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, मूंग, उड़द, चना, चावल आदि प्रत्येक जाति के अनाज 15 जून के लगभग सूर्य के मिथुन राशि में आने पर ज़ोरदार तेज़ होंगे। क्योंकि मिथुन राशि में स्थित बुध–सूर्य पर शनि की इस समय विशेष नज़र होगी। 13 से 15 जून तक सोना–चान्दी में भी ज़ोरदार तेज़ी से लाभ मिलेगा।

17 जून को बुध आर्द्रा नक्षत्र में आकर गेहूं, तिल, उड़द, जौ, चना, मूंग, मोठ में मन्दा करे। 22 जून को सूर्य भी आर्द्रा नक्षत्र में आ जाता है। रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूं, चावल, चना, जौ एवं चान्दी में अच्छी तेज़ी रहे। सोने में घटाबढ़ी चले। आर्द्रा नक्षत्र के सूर्य–बुध का विशेष प्रभाव रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, तेल, सरसों, बिनौला, अनाज, सोना, चान्दी, शेयर, हल्दी, कालीमिर्च के बाजारों पर अनुभव किया है। मैंथा ऑयल पर भी विशेष प्रभाव रहता है। क्योंकि, इस समय सूर्य–बुध दोनों शनि की नज़र में है, अतः विशेष तेज़ी से लाभ मिलेगा।

23 जून को बुध के पुनर्वसु और शुक्र के मृगशिरा नक्षत्र में आने से बाज़ारों का रुख मन्दे की तरफ बढ़ेगा। चान्दी, रुई, कपास, सूत, सण में अच्छी मन्दी बनेगी। साथ ही गेहूं, चना, ज्वार एवं शेयर बाज़ार भी मन्दे की तरफ बढ़ेंगे।

24 जून को बुध पश्चिम में उदित होगा। यह भी बाज़ारों में मन्दे का संकेत देता है।

25 जून को गुरु अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में प्रवेश करेगा। इस समय रुई में तेज़ी; सोना–चान्दी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी एवं अनाजों में भी मन्दा रहे।

[नोट–23 से 25 जून तक बाज़ारों में ज़ोरदार मन्दा आएगा, माल पकड़ने का चांस है, आगे लाभ मिलेगा।]

26 जून को मंगल रोहिणी नक्षत्र में दाखिल होगा। रुई, कपास, सूत, वस्त्र, रेशम, सरसों, तिल, तेल, लालमिर्च, हींग एवं शेयर बाज़ार तेज़ होंगे। तुरन्त लाभ लें। 28 जून को बुध के कर्कराशि में आने पर सोना, चान्दी में जल्दी ही मन्दा आ सकता है। सरसों, तारामीरा आदि में घटाबढ़ी हो सकती है।

[नोट– कभी–कभी अकेला बुध ज़ोरदार मन्दीकारक देखा गया है। यदि मन्दा बने तो मन्दे का ही व्यापार करें। यदि कर्कस्थ बुध में तेज़ी बने तो तेज़ी से लाभ लें।]

29 जून को शुक्र भी मिथुन राशि में आकर सूर्य के साथ राशिसम्बन्ध बनाएगा। इस समय सूर्य–बुध पर शनि की दृष्टि भी है। यद्यपि शुक्र मिथुन राशि में आकर अनाजों, तेलों एवं तिलहनों में काफी मन्दी करता है, लेकिन यहां सूर्य के साथ शुक्र होने से गेहूं, चना, जौ, चावल, घी, गुड़ में साधारण घटाबढ़ी के बाद अच्छी तेज़ी बनेगी। तेल, तिलहन, ग्वार में ज़ोरदार मन्दे के झटके आ सकते हैं।

30 जून को शनि हस्त के तीसरे चरण में एवं बुध पुष्य नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय अनाजों में तेज़ी; गुड़, खाण्ड, दालवाना में भी अच्छी तेज़ी से लाभ मिले। ध्यान दें– पुष्य नक्षत्र का बुध सोना, चान्दी में मन्दा एवं रुई के बाज़ारों में घटाबढ़ी करेगा।

जुलाई (सन् 2011 ई.)

जून में सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में आकर वर्षा ऋतु को बुलावा दे चुका है। 2 जुलाई को शनिवारी एवं व्याघात योग में चन्द्रदर्शन कहीं भारी वर्षा से कृषि को हानि पहुंचाएगा। परिणामस्वरूप, बाज़ार तेज़ होंगे।

3 जुलाई को 'रवि–पुष्यामृतयोग' बन रहा है। इसी दिन नेप्च्यून वक्री पोज़ीशन में धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में प्रवेश करेगा। तेल, तिलहन, गुड़ एवम् खाण्ड में तेज़ी; रुई, चान्दी, सोना मन्दे होकर रात्रि में तेज़ रहें।

4 जुलाई को शुक्र आर्द्रा नक्षत्र में आकर जलवायु के कारण गेहूं,चना, जौ, मक्की, बाजरा एवं दालवाना में अचानक मन्दे का वातावरण बना सकता है।

6 जुलाई को सोना, चान्दी, करयाणा, अनाज, मसाले तेज़ होंगे, क्योंकि इसदिन सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र में पदार्पण करेगा। ध्यान दें– इस समय शुक्र–सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि है, अतः बाज़ार तेज़ ही रहें।

9 जुलाई को कर्कराशि का बुध आश्लेषा नक्षत्र में आएगा। अकेला बुध कई बार ज़ोरदार तेज़ी या ज़ोरदार मन्दा बनाता है। इसलिए सोच–समझकर व्यापार को आगे बढ़ावें। 15 दिन में गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग, तेल, सरसों एवं तिलहनों में तेज़ी सम्भव है, फिर भी बाज़ार के रुख को देखकर काम करें।

15 जुलाई को शुक्र पुनर्वसु एवं मंगल मृगशिरा नक्षत्र में आएगा। **इस समय वृषराशिस्थ मंगल का राहु के साथ समतसप्तकयोग बन रहा है एवं शुक्र–सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि है।** 12 दिन में सोना, चान्दी, रुई, कपास, सूत में पहले मन्दा आकर तेज़ी बनेगी। अनाज, तेल, तिलहन में ज़ोरदार तेज़ी बनेगी।

16 जुलाई शनिवार को सूर्य कर्कराशि में प्रविष्ट होगा, श्रावण में अमावस (30 जुलाई) भी शनिवारी है। यह ज्योतिषशास्त्र में 'खप्पर–योग' माना जाता है। खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। रुई, सूत, बादाम, सुपारी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, चान्दी–सोना, तेल, घी में तेज़ी बने। गेहूं, चना, जौ, मटर, उड़द, मूंग, चावल में **ज़ोरदार मन्दा या तेज़ी संभव है। बाज़ार का रुख देखकर आगे बढ़ें।** हमारे विचार से इस समय अनाजों में मन्दा बन सकता है।

17 जुलाई को गुरु भरणी नक्षत्र के पहले चरण में आएगा। अलसी, चावल, जौ, गेहूं, तिल, उड़द, मूंग, तूअर, मोठ, चना, लाख, ऊन व चमड़े का भाव मन्दा रहे। चान्दी, सोना आदि धातु, हीरा–मणि आदि जवाहरात में तेज़ी के बाद 18 जुलाई तक मन्दा आने का योग है।

20 जुलाई को सूर्य पुष्य में एवं बुध मघा नक्षत्र और सिंह राशि में दाखिल होगा। इस समय सिंह राशि के बुध पर गुरु की विशेष दृष्टि है। सोना, चान्दी, रुई, सूत, ऊनीवस्त्र, देवदारु, खट्टे पदार्थों, घी, तेल, करयाणा, गेहूं, जौ, चना में तेज़ी; कपूर, गुड़, खाण्ड आदि में मन्दा रहे।

22 जुलाई को मिथुन राशिस्थ शुक्र पूर्व में अस्त होगा। इस समय शुक्र राहु के साथ षडष्टकयोग भी बना रहा है। शनि की शुक्र पर दृष्टि भी है। रुई में मन्दा रहे। चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी हो। सोना, तांबा, पीतल, जस्ता, हींग, पारा, केसर एवं सोनामक्खी में तेज़ी से लाभ मिलेगा। अनाजों में कुछ तेज़ी आकर मन्दा बनेगा।

23 जुलाई को कर्क राशि का शुक्र सूर्य के साथ मेल करेगा। जब शुक्र–सूर्य एक राशि में होते हैं तो बाज़ार तेज़ी की तरफ बढ़ा करते हैं। घी, शक्कर, रुई, कपास, दालवाना, तेल, तिलहन में तेज़ी बने।

25 जुलाई को मंगल मिथुन राशि में आकर शनि के साथ दशम–चतुर्थसम्बन्ध बनाएगा। इस समय बाज़ारों में ज़ोरदार घटाबढ़ी चलेगी। मूंगफली, अलसी, एरण्ड, बिनौला, सरसों, खाद्य तेल, शेयर बाज़ार ज़ोरदार उठेंगे। इस समय गुड़, खाण्ड, लालमिर्च एवं सोना में अच्छी तेज़ी से लाभ मिलेगा। यह योग पैदावार व फसल के लिए खराब रहेगा, भाव ऊंचा उठेगा।

26 जुलाई को पुष्य नक्षत्र का शुक्र अचानक बाज़ारों को ऊपर–नीचे कर सकता है, लेकिन शनि–मंगल का परस्पर विशेष दृष्टि–सम्बन्ध बाज़ारों को ज़्यादा नीचे नहीं गिरने देगा। रुई, सूत, सण, रेशम, ऊन व अनाजों में तेज़ी ही रहेगी। हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी में बाज़ार कुछ ऊपर–नीचे हो सकते हैं।

ध्यान दें– 30 जुलाई को शनैश्चरी अमावस भी मासान्त किंवा आगे तक तेज़ी का ही संकेत देती है।

अगस्त (सन् 2011 ई.)

1 अगस्त को चन्द्रदर्शन सोमवार के दिन मघा मक्षत्र में हो रहा है। बाज़ारों में उठा–पटक रहेगी। 3 अगस्त को सिंहराशिस्थ बुध वक्री हो जाता है एवम् वक्री बुध पर गुरु की दृष्टि भी है। इसी दिन सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चान्दी, बिनौला, रुई, गेहूं, चावल, चना, उड़द, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ में तेजी बनेगी।

4 अगस्त को मंगल आर्द्रा में आकर गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, अलसी, एरण्ड, कपास, रुई, सूत में तेजी बनाएगा, क्योंकि मंगल पर शनि की विशेष दृष्टि है।

6 अगस्त को शुक्र आश्लेषा नक्षत्र में आएगा। शुक्र अस्त है। शुक्र सूर्य के साथ होने से बाज़ार दोतरफा चलेगा, परन्तु मन्दा प्रधान रहेगा। 12 दिन में रुई, चान्दी, चावल, तूअर एवं अन्य दालवाना में मन्दी प्रधान रहेगी।

8 अगस्त को राहु ज्येष्ठा के तीसरे चरण में एवं केतु मृगशिरा 1 में संचार करने लगेगा। इस समय राहु पर शनि की विशेष दृष्टि भी है। शनि व राहु–दोनों क्रूर ग्रह हैं। इनका बाज़ारों पर प्रभाव तेज़ीसूचक ही है। पैदावार को ये ग्रह चौपट कर देते हैं। चान्दी, सोना, घी, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, दालवाना में अच्छी तेजी बनेगी।

9 अगस्त को बुध पश्चिम में अस्त होगा। इस समय बुध पर बृहस्पति की विशेष दृष्टि है। गह ग्रहस्थिति सभी बाज़ारों में मन्दा ला सकती है; सावधान रहें। इस समय रुई में झटके के साथ अच्छा मन्दा आ सकता है। चान्दी में तेजी, पाट, हैसियन एवं शेयर बाजारों में मन्दा बन जाएगा। 13 अगस्त को शनिवारी रक्षाबन्धन है। शनि–मंगल का परस्पर विशेष दृष्टिसम्बन्ध चल ही रहा है। अतः सोना, चान्दी, तांबा, लोहा, तिलहन, गुड, खाण्ड में तेज़ी का ही विचार करके आगे बढ़ें।

16 अगस्त को वक्री बुध आश्लेषा नक्षत्र एवं पुनः कर्क राशि में आ जाता है। इस समय बुध अस्त भी है। तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग, मूंगफली एवं सोना–चान्दी में पहले तेज़ी बने, फिर मन्दा आए। तेज़ी में बेचें, मन्दा आने पर स्टॉक करें। इस समय मीन राशि में वक्री यूरेनस शनि के साथ समसप्तकयोग बना रहा है। अतः प्राकृतिक प्रकोप या राजनैतिक गतिविधि (पॉलिसी) भी तेज़ी का कारण बन सकती है।

17 अगस्त को सूर्य एवं शुक्र– ये दोनों ग्रह मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में प्रवेश करेंगे। शुक्र की गति 74´/23´´ है। अर्थात् शुक्र अतिचारी होने को है। इस समय सभी प्रमुख बाज़ारों में तूफानी घटाबढ़ी बनेगी। सूर्य के साथ शुक्र का मेल तेज़ीकारक रहेगा– यह हमारा विचार है। शुक्र विशेष करके गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, बारदाना, चान्दी को प्रभावित करेगा। रुई, चान्दी, सोना, मूंग, ज्वार, बाजरा, सरसों, तिल, एरण्ड आदि तिलहन, दाख, मिर्च, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी एवम् अनाजों में अच्छी तेजी बनेगी। यह तेज़ी 24 अगस्त तक चल सकती है।

19 अगस्त को शनि हस्त–4 में एवं 24 अगस्त को मंगल पुनर्वसु में दाखिल होगा। अनाज, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, तिल, तिलहन में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा।

25 अगस्त को बुध पूर्व में उदित होगा। रुई में पहले मन्दी होकर 25 दिन में झटके की तेज़ी से लाभ मिलेगा। गेहूं, चना, दालवाना, घी, तिलहन एवं लालमिर्च में तेज़ी से लाभ मिलेगा।

26 अगस्त को बुध मार्गी होगा। इस समय बाज़ारों का रुख बदल सकता है– सावधानी से काम करें। 27 अगस्त को शुक्र पू.फा. में प्रवेश करेगा। इन दिनों रुई में पहले मन्दी, बाद में तेज़ी हो। तेल, अलसी, गुड़, बिनौला, मूंगफली, चन्दन, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, चना में अच्छे मन्दे का वातावरण बनेगा। यह मन्दे का वातावरण 30 अगस्त तक चल सकता है।

30 अगस्त को मंगलवारी चन्द्रदर्शन एवं इसी दिन गुरु मेष राशि में वक्री हो रहा है। गेहूं, जौ, चावल, चना, दालवाना आदि धान्य, अलसी, घी, तिलहन में झटके का मन्दा या तेज़ी बनेगी। हमारे विचार से मन्दा संभव है, फिर भी बाज़ार का रुख देखकर काम करें। इस समय सोना, चान्दी आदि धातु व ऊनीवस्त्र तेज़ रहेंगे।

31 अगस्त को सूर्य पू.फा. में आएगा। 14 दिन में सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, रुई व सूत में तेज़ी बनेगी। चान्दी में घटाबढ़ी चले।

सितम्बर (सन् 2011 ई.)

मासारम्भ में बाज़ार ऊपर–नीचे चलकर तेज़ी की तरफ बढ़ेंगे। **4 सितम्बर को बुध मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आकर** सोना, चान्दी, सूत, रुई व ऊनी–वस्त्र, अनाज, दालवाना, तेल, तिलहन में तेज़ी करे। *क्योंकि* **सिंह राशि में बुध सूर्य–शुक्र के साथ मेल करेगा, जोकि विशेषतः अनाजों में तेज़ी का सूचक है–**

"एकराशौ यदा ह्येते सौम्य–शुक्रदिनाधिपाः।
सर्वधान्य–महर्घत्वं मेघा स्वल्प–जलप्रदाः।।"

7 सितम्बर को शुक्र उ.फा. में आकर 12 दिन में गेहूं आदि अनाजों व रुई में तेज़ी करे। सोना–चान्दी में घटाबढ़ी चले।

9 सितम्बर को मंगल कर्क (अपनी नीच) राशि में आ जाता है। मंगल तेल, तिलहन, रुई, कपास, जूट, चान्दी, सोना एवं शेयर बाज़ारों में घटाबढ़ी के साथ मन्दा बना सकता है, सावधानी से काम करें। हमारे विचार से मन्दे का काम करें।

10 सितम्बर को अस्त शुक्र कन्या राशि में प्रवेश करेगा। इस समय शनि के साथ मेल करके रुई, गुड़, खाण्ड, कपास, पाट, बारदाना, तिलहन, चान्दी, सोना एवम् शेयर बाज़ारों में ज़ोरदार घटाबढ़ी करेगा। हमारे विचार से सोना, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी; गेहूं, चना, चावल, दालवाना मे अच्छी तेज़ी से भी लाभ मिल सकता है।

12 सितम्बर को श्राद्ध शुरु होंगे। शुभकार्य इन दिनों में न होने से लोगों में खरीद करने की रुचि कम होगी। भारतीय बाज़ार कुछ ठण्डे रहेंगे, लेकिन इन्टरनेशनल बाज़ारों में तेज़ी–मन्दी का सिलसिला चलता रहेगा।

13 सितम्बर को बुध पू.फा. में एवं सूर्य उ.फा. में दाखिल होगा। इसी दिन बुध पूर्व में अस्त भी हो रहा है। इस समय बाज़ार ज़ोरदार ऊपर–नीचे होंगे। हमारे विचार से गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, चावल, दालवाना में मन्दा बने। रुई और सोने में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बने। 14 दिन में घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, नारियल, सोना, चान्दी, कपास में तेज़ी बनेगी।

14 सितम्बर को मंगल पुष्य नक्षत्र में आकर चान्दी और रुई में घटाबढ़ी और सोने के बाज़ार में झटके की तेज़ी बनाएगा–ऐसा विचार है।

17 सितम्बर शनिवार को सूर्य कन्याराशि में आकर शनि एवं शुक्र के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाता है। ध्यान दें– शनि–शुक्र दोनों मित्र ग्रह हैं और सूर्य से इन दोनों की शत्रुता है। शुक्र इस समय अस्त है। इस समय सोना, चान्दी, तिल, तेल, मजीठ, सरसों, तोड़िया, सूरजमुखी, बिनौला, लौंग, काली–लालमिर्च, जीरा एवं दालवाना में ज़ोरदार तेज़ी से लाभ मिलेगा। शेयर बाज़ारों में ज़ोरदार उठा–पटक चलेगी। **इस समय ताज़ा मशवरा प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त कर सकेंगे।**

18 सितंबर को शुक्र हस्त नक्षत्र में दाखिल होकर रुई, चावल एवं अन्य अनाजों में स्टॉक करने का मौका देगा। मन्दा बने तो स्टॉक करें, आगे लाभ मिलेगा।

19 सितंबर को शनि चित्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में प्रवेश करेगा। चित्रा नक्षत्र चान्दी, सोना, तिलहन के बाज़ारों में तेज़ी की प्रक्रिया बनाता है। तिलहन की पैदावार कम होने की संभावना से तेज़ी बन सकती है। सोने से चित्रा नक्षत्र का सम्बन्ध है, अतः चान्दी, विशेषतः सोने में तेज़ी बनेगी। इस समय अनाज, दलहन, गुड़, खाण्ड, रुई, कपास में भी तेज़ी बने।

20 सितंबर को बुध उ.फा. में आकर उड़द, मूंग, मोठ, मसूर, अरहर में कुछ तेज़ी करे। रुई में घटाबढ़ी के साथ मन्दा रहे।

22 सितम्बर को बुध कन्या राशि में आकर सूर्य–शनि एवं शुक्र के साथ मेल करके चतुर्ग्रहीयोग बनाएगा। इन क्रूर ग्रहों के साथ बुध अच्छी तेज़ी करेगा। ये ग्रह कन्या राशि में हैं। कन्याराशि रुई, कपास, तेलवाना आदि जिन्सों की पैदावार की राशि है। बुध–शुक्र– ये दोनों अस्त हैं, फिर भी बुध–शुक्र लगभग अतिचारी हैं। अतः गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, अलसी, हल्दी, रुई, तेल, तिलहन में ज़ोरदार तेजी बनेगी।

26 सितम्बर को शनि अस्त होगा। बाज़ारों का रुख अचानक बदल सकता है; सावधान। रुई, शेयर बाज़ार एवम् अनाज तेज़ रहें।

27 सितम्बर को मंगलवारी अमावस वाले दिन सूर्य हस्त नक्षत्र में आकर एकदम बाजारों को तेज़ करेगा। 15 दिन में गेहूं, जौ, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, सूत, जूट, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी, सण एवं नमक में तेज़ी आने के योग हैं।

28 सितम्बर को बुध हस्त नक्षत्र में एवं 29 सितम्बर को शुक्र चित्रा नक्षत्र में दाखिल होगा तथा इसी दिन तुला राशि में चन्द्रोदय भी होगा। शनि–शुक्र दोनों चित्रा नक्षत्र में अस्त भी हैं। गेहूं आदि अनाजों व दालवाना में मन्दा सम्भव है। सोना–चान्दी तेज़ रहें।

अक्तूबर (सन् 2011 ई.)

मासारम्भ में गेहूं आदि अनाजों में मन्दे का रुख रहेगा। सोना–चान्दी में भी बाज़ार स्थिर रहें। 4 अक्तूबर को शुक्र पश्चिम में उदित होकर तुला राशि में प्रवेश करेगा। सोना, चान्दी, गुड़, सूत, कपड़ा, घी, तेल, अलसी, एरण्ड, बिनौला एवं मूंगफली में मन्दे का रिएक्शन आएगा। रुई और चांदी में पहले मन्दी एवं पीछे तेजी आती है। तुला–राशिस्थ शुक्र पर इस समय गुरु की दृष्टि भी है, जोकि बाज़ारों को मन्दे में रखती है।

5 अक्तूबर को चित्रा नक्षत्र का बुध रुई एवं चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी करेगा। इस समय मोटे अनाज एवम् दालवाना में भी कुछ तेजी बन सकती है। क्योंकि बुध अस्त है, इसलिए यहां बड़ी तेजी की सम्भावना नहीं।

6 अक्तूबर को मंगल आश्लेषा में आ जाता है, इस समय मंगल स्वतन्त्ररूप से अपनी नीचराशि कर्क में है। तेलवाना, रुई, कपास, जूट, सोना, चान्दी तथा शेयर बाज़ारों पर मंगल का विशेष प्रभाव अनुभव किया गया है। सरकार की व्यापारिक नीति किंवा प्राकृतिक गतिविधि की वजह से बाज़ारों में अचानक मन्दा आ सकता है।

इस समय तेल, तिलहन, घी में जोरदार तेज़ी बनेगी, मगर जल्दी मन्दा भी आएगा। चान्दी, सोना, गुड़, खाण्ड में भी जोरदार तेज़ी–मन्दी के झटके आएंगे। बाजार मन्दे की तरफ अधिक रहेगा।

9 अक्तूबर को बुध तुला में एवं शुक्र स्वाती में प्रवेश करेगा। नोट करें– यहां तुलाराशि में शुक्र के साथ बुध का मेल होगा। बुध–शुक्र जब अकेले होते हैं तो बाज़ारों में मन्दे का वातावरण बना देते हैं। पैदावार अच्छी होने की अफवाहों से बाज़ार कमजोर पड़ जाते हैं। सरकार इस समय रुई आदि के निर्यात का ऐलान कर सकती है। परिणामतः, बाज़ार आशा के विपरीत तेज़ी की तरफ भी बढ़ सकते हैं– विचारपूर्वक काम करें। लेकिन बुध–शुक्र पर बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि होने से हमें इन दिनों बाज़ार मन्दे के ही मालूम देते हैं। चान्दी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली में मन्दा रहे। रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, अफीम के बाज़ार तेज़ रहें। अनाजों के बाज़ार मन्दे रहें।

10 अक्तूबर को सूर्य चित्रा नक्षत्र में आएगा। इसी दिन राहु ज्येष्ठा के द्वितीय एवं केतु रोहिणी के चतुर्थ चरण में आकर रुई, सोना, चान्दी, अरहर, गेहूं, चना, तिल, नारियल, कपूर, जीरा, मेथी, लौंग, कालीमिर्च एवं गुड़–शक्कर में अचानक तेज़ी बना देंगे, क्योंकि इस समय राहु पर शनि की विशेष दृष्टि है। शनि एवं राहु– दोनों क्रूरग्रहों का पैदावार पर प्रभाव पड़ता है। पैदावार कम होने की अफवाह या फसलों के खराब होने के समाचारों से बाज़ारों में उछाल आता है। इस समय शेयर बाजार मन्दे एवं बेसन, गेहूं, चना एवम् दालवाना में तेजी बने। यह तेजी–मन्दी 13 अक्तूबर तक चलेगी।

13 अक्तूबर को बुध स्वाती में आकर शुक्र के साथ एकराशि एवं एक–नक्षत्रसम्बन्ध बना लेगा। इन पर मंगल की विशेष दृष्टि भी है। जौ, गेहूं, चावल, चना, घी, गुड़, खाण्ड में तेजी बने। रुई, सोना, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी रहे।

[नोट– 9 से 15 अक्तूबर तक अनाज, दालें, गुड़, खाण्ड, चीनी, चायपत्ती, सोना, चान्दी एवम् मसालों में ज़ोरदार तेज़ी–मन्दी के रिऐक्शन्ज़ आएंगे। मन्दे में स्टॉक करें; तेज़ी में निकालकर लाभ लें।]

17 अक्तूबर को सूर्य अपनी नीच–राशि तुला में प्रवेश करके बुध–शुक्र के साथ मेल करेगा। सूर्य वायदा एवं हाज़र बाज़ारों को प्रभावित करता है।

विशेषतः रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, तेल, अनाज, सोना, चान्दी, शेयर, हल्दी एवं कालीमिर्च के व्यापार को सूर्य ही प्रभावित करता है। इस समय मंगल एवं वक्री गुरु की इन पर दृष्टि है। अतः रुई, सोना, चान्दी, गुड़, शक्कर, बिनौला, मिर्च, अलसी, सरसों, हींग, गुग्गुल एवं अनाजों में तेज़ी ही समझें।

18 अक्तूबर को शनि प्रातः चित्रा–2 मे प्रवेश करेगा एवं सायं बुध पश्चिम में उदय होगा। गुड़, खाण्ड, अनाज तेज़ रहें एवम् शेयर बाज़ारों में मन्दा रहे।

20 अक्तूबर को शुक्र विशाखा नक्षत्र में आकर रुई व अनाजों के बाज़ारों में मन्दा बनाएगा। यह मन्दी 23 अक्तूबर तक चलेगी।

22 अक्तूबर को विशाखा नक्षत्र का बुध रुई के बाजारों में ज़ोरदार मन्दा बना सकता है– सावधानी से काम करें। इस समय अनाजों के बाज़ार भी मन्दे बन सकते हैं।

[नोट– 18 से 23 अक्तूबर तक बाज़ार अनिश्चित रहेंगे, बाज़ार मन्दे की ओर बढ़ सकते हैं।]

24 अक्तूबर को स्वाती नक्षत्र में सूर्य प्रवेश करेगा। इस समय शुक्र भी स्वाती नक्षत्र में है। रुई, सूत, सण, रेशम, कपड़ा, सोना, चान्दी, गुड़, शक्कर, बिनौला, घी, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुग्गुल में तेज़ी से लाभ मिलेगा। यह तेज़ी 28 अक्तूबर तक प्रभावी रह सकती है।

28 अक्तूबर को शुक्र एवं 29 अक्तूबर को बुध वृश्चिक राशि में आकर राहु के साथ मेल करेंगे। इस समय बुध, शुक्र, राहु– ये तीनों शनि की विशेष नज़र में हैं। इस समय बाज़ारों में बहुत मन्दा आने की उम्मीद बनकर तेज़ी बनेगी। शेयर एवं अफीम में मन्दी के बाद तेज़ी बने। रुई में ज़ोरदार मन्दे का रिएक्शन आए। गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोठ एवम् बाजरा में मन्दे की जगह तेज़ी आ सकती है, समझ से काम करें।

30 अक्तूबर को मंगल मघा नक्षत्र एवं सिंहराशि में आकर मेषराशिस्थ गुरु की नज़र में आ जाता है। गुरु वक्री है। इस स्थिति में मूंग, मोठ, उड़द, तिल, सरसों, मूंगफली, राई, गेहूं आदि अनाज, सोना, चान्दी, तांबा, लोहा आदि धातु, गुड़, शक्कर, खाण्ड, अलसी, रुई व घी में तेज़ी बनेगी।

31 अक्तूबर को बुध एवं शुक्र– दोनों अनुराधा नक्षत्र में आकर सूत, सण, रुई, सोना, चान्दी, चावल, नमक में मन्दा बनाएंगे। 31 अक्तूबर को शनि भी उदित होगा। आगामी 8 दिनों में रुई, शेयर, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला एवम् मूंगफली में अच्छा मन्दा बनेगा। लोहा, जस्ता, सीसा आदि काले पदार्थों, लकड़ी, लहसुन, चावल, दालवाना एवम् गुड़–खाण्ड में कुछ तेजी बने।

नवम्बर (सन् 2011 ई.)

मासारम्भ में शनि के उदय होने से कहीं खडी फसलों को प्राकृतिक प्रकोप से हानि पहुंचेगी। परिणामस्वरूप, घी, तेल, तिलहन, दालवाना एवम् सोना, चान्दी के बाज़ारों में ज़ोरदार मन्दा आते ही तेज़ी बनेगी। इस समय गुड़, खाण्ड में भी तेज़ी बनेगी। गत मासान्त में सिंहराशि का मंगल भी दालवाना, सोना, चान्दी, तांबा, गुड़, शक्कर, खाण्ड में तेज़ी बनाएगा। इस ग्रहस्थिति का प्रभाव नवम्बर मास के प्रथम सप्ताह तक बना रहेगा।

6 नवम्बर को सूर्य विशाखा नक्षत्र में आकर जौ, चावल, गेहूं, अरहर, मसूर, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड एवम् अफीम में तेज़ी करेगा। इस समय अलसी एवं चान्दी में घटाबढ़ी होकर तेज़ी बनेगी।

7 नवम्बर को वक्री गुरु अश्विनी के तृतीय चरण में प्रवेश करेगा। तुलास्थ सूर्य की इस पर दृष्टि भी है। रुई में तेज़ी; सोना–चान्दी में घटाबढ़ी चलकर मन्दा बने। अनाजों के बाज़ार भी मन्दे बन सकते हैं।

10 नवम्बर को शुक्र एवं 11 नवम्बर को बुध– ये दोनों ज्येष्ठा नक्षत्र में दाखिल होंगे। इस प्रकार बुध–शुक्र एवं राहु तीनों ज्येष्ठा नक्षत्र में ही हैं– इन पर इस समय शनि एवं मंगल की दृष्टि भी है। यह योग बाज़ारों में मन्दे की उम्मीद होने पर भी बाज़ारों को तेज़ी की तरफ बढ़ाएगा। शुक्र–बुध एवं राहु का विशेष प्रभाव रुई, गुड़, खाण्ड, तिलहन, चान्दी, दालवाना के व्यापार पर अनुभव किया गया है। मंगल की राशि वृश्चिक में बुध तेज़ीसूचक ही है। इस समय शनि–मंगल की दृष्टि ज़ोरदार तेज़ी से लाभ देगी। अनाज, सोना, चीनी, चावल, सरसों, तेल, हींग, घी, गुड़, खाण्ड, सूरजमुखी एवं मैंथा ऑयल में अच्छी तेज़ी बनेगी।

15 नवम्बर को शनि चित्रा नक्षत्र के तीसरे चरण एवं तुलाराशि में आकर बृहस्पति की दृष्टि में आ जाता है। तुला राशि का शनि

उच्चस्थ माना जाता है। इस समय एक दिन के लिए शनि सूर्य के साथ मेल करेगा। इस समय बहुत सावधानी से व्यापार करने की सलाह है। तेलवाना, रुई, कपास, चान्दी, सोना, गुड़, खाण्ड, पाट, बारदाना आदि के व्यापारियों को इस समय मन्दे का व्यापार करने की सलाह देते हैं।

ध्यान रहे–शनि इस संवत् के अन्त तक चित्रा नक्षत्र में ही भ्रमण करेगा। चित्रा नक्षत्र का शनि होने से केवल गुड़, खाण्ड में बाजार ऊपर–नीचे जा सकते हैं, लेकिन तेल, तिलहन के बाज़ारों में ज़ोरदार मन्दा बनने की संभावना अधिक है।

16 नवम्बर को सूर्य वृश्चिक राशि में आकर बुध–राहु एवं शुक्र के साथ एकराशिसम्बन्ध बना लेगा। इस समय इन पर मंगल की दृष्टि भी है, अतः रुई, ताम्बा, सोना, चान्दी व ऊनी वस्त्रों में तेजी बनेगी। इस समय गुड, शक्कर, तेल, तिलहन एवम् घी में भी तेज़ी बनेगी।

19 नवम्बर को सूर्य अनुराधा नक्षत्र में आएगा। जौ, चना, उड़द, मूंग, कुल्थी, मोठ एवं गेहूं आदि एवम् अलसी, लालमिर्च, लौंग, कालीमिर्च में तेजी आकर मन्दा बने, सोना–चान्दी मन्दे रहें।

21 नवम्बर को शुक्र मूल नक्षत्र एवम् धनुराशि में प्रवेश करेगा। इस समय शुक्र पर शनि एवम् गुरु की विशेष दृष्टि है। खडी फसलों को हानि पहुंचेगी, जिससे बाज़ार तेज़ होंगे–

" यदा हि धनुराशिस्थो दैत्याचार्यः प्रवर्तते।
महर्घं च विजानीयात् सर्वं सस्यं विनश्यति।।"

गेहूं, जौ, चना आदि अन्न, चान्दी, सोना, तांबा आदि धातु, वस्त्र एवम् शेयर बाज़ार तेज़ रहें। रुई, सूत, कपास में पहले मन्दी, बाद में तेज़ी एवं अनाजों में तेज़ी बने।

24 नवम्बर को वृश्चिक राशि में स्थित बुध वक्री हो जाता है। इसी राशि में स्थित राहु तो वक्र स्वभावतः चल ही रहा है। इन पर मंगल की विशेष नज़र भी है। इस समय घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल, तिलहन में तेज़ी से लाभ मिलेगा। गेहूं, जौ, चना आदि में अस्थिरता व मन्दा संभव है। सोना, चान्दी, तांबा के व्यापारी ज़ोरदार तेज़ी से लाभ ले सकेंगे।

26 नवम्बर को चन्द्रवारी चन्द्रदर्शन होगा एवं मंगल पू.फा. नक्षत्र में आएगा। मंगल पर गुरु ग्रह की विशेष दृष्टि है। आगामी 20 दिनों में तिल, तेल, सरसों, मूंगफली, घी, गुड़, खाण्ड, नमक, कपास में तेज़ी रहे।

28 नवम्बर को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होगा। इस समय रुई में झटके की मन्दी बनेगी। पाट, हैसियन और शेयर बाज़ार भी मन्दे रहेंगे। चान्दी में तेज़ी का रुख रहे।

[21 से 25 नवम्बर तक बाज़ारों में ज़ोरदार तेजी बनेगी, लाभ लें। बाद में मासान्त तक बाज़ार कमज़ोर रहेंगे।]

29, 30 नवम्बर को बाज़ार अनिश्चित रहेंगे।

दिसम्बर (सन् 2011 ई.)

2 दिसम्बर को पूषा. नक्षत्र में शुक्र का प्रवेश मासारम्भ में मूंग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों व क्षारद्रव्य (नमक आदि) में मन्दा करेगा।

3 दिसम्बर को सूर्य ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर बुध एवं राहु के साथ एक–नक्षत्रसम्बन्ध बना रहा है। इस समय सूर्य–बुध एवं राहु पर मंगल की विशेष दृष्टि है। यह योग तेज़ीकारक है। सोना, चान्दी, चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, पारा, गुड, खाण्ड, दालवाना में तेजी बने। रुई में भी पहले मन्दी आकर तेजी बनेगी।

5 दिसंबर को बुध वक्रगति से अनुराधा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। सूत, सण, सोना, चान्दी में अचानक मन्दे का रुख बना देगा। यदि 5 दिसंबर से 9 दिसंबर तक मन्दा आए तो स्टॉक करें, अगले सप्ताह लाभ मिलेगा।

10 दिसम्बर शनिवार वाले दिन वक्री बुध पूर्व में उदित होगा। इसी दिन शनिवार को खग्रास चन्द्रग्रहण भी घटित होगा। यह योग बाज़ारों को तेज़ी की तरफ बढ़ाएगा। गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, घी, लालमिर्च, तिल एवं अन्य तिलहनों में भी तेज़ी के झटके आएंगे। नोट– यदि इन दिनों चान्दी, सोना, तांबा, रुई के बाज़ार मन्दे हों तो स्टॉक करें, आगे दो मास में भारी लाभ होगा।

11 दिसंबर को राहु ज्येष्ठा के प्रथम चरण में एवं केतु रोहिणी के तीसरे चरण में प्रविष्ट होगा। इस समय मोटे अनाज, दालवाना, सोना, चान्दी, कपास, सूत, गुड, घी में झटके की तेजी से लाभ मिलेगा।

12 दिसम्बर को वक्री गुरु अश्विनी के दूसरे चरण में आकर बाज़ारों में उलटफेर करें। रुई में तेज़ी , सोना–चान्दी में घटा–बढ़ी चलकर मन्दी बने।

13 दिसंबर को शुक्र उ.षा. नक्षत्र में प्रवेश करेगा। इसी दिन (13 दिसं. को ही) बुध मार्गी होगा। रुई में पहले मन्दी आकर बाद में तेज़ी बने। सोना–चान्दी में भी घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। तेल, अलसी, बिनौला, मूंगफली आदि तिलहनों, गुड़, खाण्ड, घी में अचानक बाज़ार गिर सकते हैं, सावधानी से काम करें।

[नोट–12 से 14 दिसम्बर तक बाज़ारों में उठा–पटक रहेगी, लेकिन मन्दे की प्रधानता रहेगी।]

15 दिसम्बर को शुक्र मकर राशि में आकर गुरुदृष्ट मंगल के साथ षडष्टकयोग बनाएगा। मकर राशि का स्वामी शनि है। शनि–शुक्र दोनों मित्र हैं। एक राशि में अकेला शुक्र कभी–कभी ज़ोरदार मन्दी ला देता है, अतः सावधानी से बाज़ार का रुख देखकर काम करें। शुक्र का विशेष प्रभाव तेल, तिलहन, सोना, चान्दी, कपास, रुई, गुड़, खाण्ड एवं शेयर बाज़ारों पर पड़ता है। हमारे विचार से इस समय शुक्र–मंगल का षडष्टक बाज़ारों में तेज़ी बना सकता है। शेयर, अफीम, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, चना आदि अनाजों में अच्छी तेज़ी बन सकती है। रुई और चान्दी में पहले घटाबढ़ी चलकर अन्त में तेज़ी रहेगी।

16 दिसंबर को सूर्य मूल नक्षत्र एवं धनुराशि में आकर रुई, सूत, कपास, तिल, तेल, सोना, चान्दी एवं अलसी में तेज़ी बनाएगा। ध्यान दें–धनुराशि का स्वामी गुरु है। इस समय धनुराशि में स्थित सूर्य पर गुरु की विशेष नज़र है, साथ ही सूर्य पर इस समय शनि की भी विशेष दृष्टि है; शनि–सूर्य पिता–पुत्र होकर भी परमशत्रु हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि– सूर्य इस वक्त शुभग्रह गुरु एवं शत्रुग्रह शनि की नज़र में है, अतः बाज़ार किधर चलेगा– समय पर ताज़ा मशवरा प्राप्त करें, विशेष विचार करना होगा।

19 दिसंबर को चित्रा के चतुर्थ चरण में शनि प्रवेश करेगा। शनि का विशेष प्रभाव तेल, तिलहन, सोना, चान्दी एवम् शेयर बाज़ार पर पड़ता है। इस समय शनि पर गुरु की पूर्ण दृष्टि है, अतः घी, गुड़, खाण्ड, तेल, तिलहन, रुई एवं शेयर बाज़ारों में ज़ोरदार मन्दे के रिएक्शन्ज़ आ सकते हैं। यद्यपि चित्रा नक्षत्र का शनि तेज़ीकारक है, लेकिन बृहस्पति की दृष्टि बाज़ारों में मन्दा ला सकती है– सावधान रहें। इस प्रकार तेज़ी–मन्दी का सिलसिला 23 दिसम्बर तक चल सकता है।

23 दिसम्बर को शुक्र श्रवण नक्षत्र में एवं 24 दिसम्बर को बुध ज्येष्ठा में आकर बाज़ारों में तेज़ी बना सकते हैं। सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मूंगा, चावल, मोठ, उड़द आदि अनाज एवं तिल तेज रहेंगे। ध्यान दें– 24 दिसम्बर को शनैश्चरी अमावस का प्रभाव भी तेज़ीकारक मालूम देता है–

"अमावास्या सहस्यस्य शनि–सूर्यार–वासरे।
यदि स्यादभयमादेश्यं तदा सस्यमहर्घता।।"

इन दिनों दालवाना, चावल एवं अन्य अनाज तेज़ी में रहें।

25 दिसंबर को गुरु मार्गी हो जाएगा। इस समय ज़ोदार तेज़ी या मन्दी के रिएक्शन्ज़ आएंगे। हमारा विचार इस समय मन्दे का ही है। 3 दिन में रुई में ज़ोरदार मन्दे का झटका आकर तेज़ी बनेगी, चान्दी में भी अच्छा मन्दा बनेगा। 8 दिन में चावल, अलसी, सरसों, गुड़ में तेज़ी बनेगी। क्योंकि गुरु के साथ शनि का समसप्तकयोग बन रहा है, अतः बाज़ार के रुख को देखकर काम करें। 26 दिसंबर को मकर राशि में चन्द्रदर्शन तेज़ी भी कर सकता है।

29 दिसम्बर को सूर्य पूर्वाषाढ़ा में आकर 14 दिन में तिल, तेल, सरसों, बिनौला, मूंगफली आदि तिलहन, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गुल, चमड़ा, कपूर, ऊनी वस्त्र, सण एवं चान्दी के बाज़ार में तेज़ी करेगा। यह तेज़ी 31 दिसम्बर तक प्रभावी रह सकती है।

जनवरी (सन् 2012 ई.)

व्यापारी बन्धुओं के लिए अंग्रेज़ी नववर्ष की शुभकामनाओं के साथ जनवरी मास की तेज़ी–मन्दी का विवरण इस प्रकार है–

3/4 जनवरी को शुक्र धनिष्ठा में एवं बुध मूल धनु में दाखिल होगा। इस समय प्लूटो भी धनुराशि में ही चल रहा है। क्योंकि बुध सूर्य के साथ मेल करेगा एवं इन पर शनि–गुरु की दृष्टि भी है, अतः चावल, मूंगा, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चान्दी, सोना, रुई, कपास में साधारण तेज़ी–मन्दी की प्रतिक्रियाएं (Reactions) चलेंगी।

6 जनवरी को मंगल उ.फा. में आएगा। गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेज़ी बनेगी। वायदा व्यापारी लाभ ले सकेंगे।

8 जनवरी को गुरु अश्विनी के तीसरे चरण में आएगा। रुई में तेज़ी; सोना, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बने। इस समय अनाजों में भी मन्दी बनेगी।

9 जनवरी को शुक्र कुम्भराशि में आकर मंगल के साथ समसप्तकयोग बनाएगा। इस समय नेप्च्यून भी कुम्भ राशि में ही चल रहा है। यद्यपि कुम्भराशि का शुक्र बाज़ारों में मन्दा करता है, परन्तु यहां शुक्र पर मंगल की दृष्टि बाज़ारों में मन्दी न बनाकर कुछ तेज़ी ही बनाएगी। रुई, चान्दी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा तथा घी, चीनी, चावल में मन्दे के बाद तेजी बने या पहले तेजी बाद में मन्दा बने–ध्यान से काम करें।

11 जनवरी को सूर्य उ.षा. में आकर उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं, कपास, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, चमड़ा, कपूर, ऊनी वस्त्र, सण, चान्दी में तेज़ी करे, क्योंकि धनुराशि में सूर्य–बुध पर शनि की विशेष दृष्टि है।

13 जनवरी को बुध पू. षा. नक्षत्र में दाखिल होगा। चना, दालवाना में मन्दा बने; सोना, चान्दी में झटके की मन्दी आने का योग है। बिनौला आदि में तेज़ी संभव है।

14 जनवरी शनिवार को सूर्य मकर राशि में आकर मंगल के साथ षडष्टकयोग एवं इसी दिन शुक्र शतभिषा में आकर मंगल के साथ समसप्तकयोग बनाता है। सूर्य का शनि के क्षेत्र में आना महत्वपूर्ण है। घी, तेल, सरसों, अलसी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई एवं सोना–चान्दी में तेज़ी बनेगी। गेहूं आदि अनाज व बारदाना में मन्दे की तरफ रुख रहेगा।

17 जनवरी को धनुस्थ बुध पूर्व में अस्त होगा। इस समय बुध पर शनि की विशेष दृष्टि है। शनि पर गुरु की दृष्टि है, अतः दालवाना, मोटे अनाज, घी, तिलहन एवं तेल मन्दे हों। रुई एवम् सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

21 जनवरी को बुध उ.षा. नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एक–नक्षत्रसम्बन्ध बनाएगा। इस समय अनाजों के भाव मन्दे रहें।

23 जनवरी को बुध मकर राशि में आकर सूर्य के साथ एकराशि एवं एकनक्षत्र सम्बन्ध बना लेगा। इस दिन सोमवती अमा है। 23 जनवरी को ही सिंहस्थ मंगल वक्री हो रहा है। मंगल–शुक्र का समसप्तकयोग भी चल रहा है। लेकिन मंगल पर गुरु की विशेष दृष्टि है। परिणामस्वरूप, रुई, सोना, चान्दी, घी, अलसी, गेहू, गुड़, लालमिर्च, दालवाना में अच्छी तेज़ी की सम्भावना होने पर भी बाज़ारों में (बृहस्पति की नज़र होने से) बड़ी तेज़ी नहीं बन सकती– बाजार का रुख देखकर ही काम करें।

24 जनवरी मंगलवार को चन्द्रदर्शन एवं 25 जनवरी को श्रवण नक्षत्र का सूर्य एवं पू.भा. नक्षत्र का शुक्र तथा 30 जनवरी को श्रवण नक्षत्र का बुध गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल, रुई, सोना, चान्दी, तेल, तिलहन में अच्छी तेज़ी से लाभ देगा।

फरवरी (सन् 2012 ई.)

मासारम्भ में तेल, तिलहन व अनाजों में तेज़ी का रुख रहेगा। 3 फरवरी को शुक्र मीन राशि में आकर शनि एवं मंगल के साथ षडष्टक योग बनाएगा। शनि–मंगल गुरुग्रह की दृष्टि में हैं। अकेला शुक्र कभी–कभी ज़ोरदार मन्दीकारक होता है। अगर मन्दी का ट्रेण्ड चल रहा हो तो मन्दे को बढ़ावा देता है, तेज़ी में यह तेज़ी को तरजीह देता है। शुक्र विशेषतः कपास, गुड़, खाण्ड, रुई, पाट, बारदाना, तिलहन, चान्दी एवम् शेयर बाज़ारों को प्रभावित करता है। हमारे विचार से इस समय गेहूं, गुड़, शक्कर, खाण्ड, उड़द, मोठ, सुपारी, नारियल, कपूर, हाथिदान्त एवं नमक में तेज़ी बने। रुई में 6 मास में 100 रु. की तेज़ी आकर मन्दा बने। तेल, तिलहन एवं घी में मन्दे की लाईन बनेगी तथा जल्दी तेज़ी से लाभ मिलेगा।

5 फरवरी को शुक्र उ.भा. में आकर बाज़ारों में मन्दे के Reactions लाएगा। चावल, मोती, चान्दी, कपूर, नमक, खाण्ड, रुई, कपास आदि सफेद चीज़ों में मन्दी आने का योग है।

6 फरवरी को सूर्य एवं बुध– दोनों धनिष्ठा नक्षत्र में आ जाते हैं। 15 दिन में मणि, मोती, आदि जवाहरात, मूंग, मसूर, गेहूं आदि अनाजों व अलसी में तेज़ी बनेगी। सोने–चान्दी एवं रुई के बाजारों में घटाबढ़ी रहे।

7 फरवरी को शनि वक्री हो रहा है, मंगल पहले ही वक्री चल रहा है। इस समय सोना, चान्दी, तांबा, सिक्का, कली, लोहा, गेहूं, ज्वार, चावल, घी, तिल, तेल, अलसी, सरसों, मूंगफली, घी, गुड़, खाण्ड, एवम् नमक में तेज़ी बने।

10 फरवरी को बुध कुम्भ राशि में आकर 13 फरवरी को सूर्य के साथ मेल करेगा। इस समय सूर्य, बुध पर वक्री मंगल की पूर्ण दृष्टि है। बुध–सूर्य एकराशि में आकर तेज़ी को बल देते हैं। बुध–सूर्य दोनों शनि के क्षेत्र में हैं। इस समय शनि भी वक्री है। अलसी, रुई, सोना, चान्दी, घी, गुड़, रसकट, तेल, तिलहन, दालों आदि में अच्छी तेज़ी बनेगी।

11 फरवरी को गुरु अश्विनी–4 में आकर रुई में तेज़ी, सोना–चान्दी में घटाबढ़ी चलाकर मन्दी करे। इस समय अनाजों में भी मन्दे का रुख रहे।

12 फरवरी को राहु अनुराधा–4 में और केतु रोहिणी–2 में प्रवेश करेगा।

कपास, लाल–कालीमिर्च, केसर, चन्दन, कपूर तेज रहें।

13 फरवरी को सूर्य कुम्भ राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इस समय मंगल की इन पर नज़र भी है। इस समय बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी बनेगी। घी, तेल, तिलहन, नमक, राई, गेहूं आदि अनाज, दालवाना, गुड़, शक्कर एवं खाण्ड में तेजी बनेगी। इस समय तेज़ी से निकल जाएं।

14 फरवरी को बुध शतभिषा नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय सोना, चान्दी में मन्दा एवं अनाजों में कुछ तेज़ी रहे।

17 फरवरी को रेवती नक्षत्र का शुक्र बाज़ारों में मन्दा करे। रुई, कपास, चान्दी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, शक्कर तथा जवाहरात मन्दे रहें।

19 फरवरी को सूर्य शतभिषा नक्षत्र में आकर सोना, चान्दी, सूत, सण, कपड़े, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, दाख, छुहारा, सोंठ, हल्दी, अनाज एवं गुड़ में तेज़ी बनाएगा।

21 फरवरी को पू.भा. नक्षत्र का बुध सोना, चान्दी, लोहा, ताम्बा एवं अनाजों में मन्दा करे तथा रुई में घटाबढ़ी की प्रतिक्रिया बनाएगा।

23 फरवरी को बुध पश्चिम में उदित होगा। इसी दिन बुधवार को चन्द्रदर्शन भी होगा। रुई, वस्त्र, सोने, चान्दी एवं शेयर बाज़ारों में मन्दा बने।

27 फरवरी को बुध मीन राशि में आकर रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी; सोने–चान्दी में घटाबढ़ी करेगा; बिनौला तेज़ रहे। नोट– *क्योंकि मीनराशिस्थ बुध पर मंगल की विशेषदृष्टि है, अतः उपरोक्त चीज़ों में मन्दे की जगह तेजी भी बन सकती है–सावधानी से काम करें।*

29 फरवरी को शुक्र अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में तथा बुध उ.भा. नक्षत्र में प्रवेश करेगा। इस समय शुक्र का गुरु के साथ मेल होगा। गुरु–शुक्र पर शनि की पूर्ण दृष्टि भी है। मेषराशि का शुक्र एवं उ.भा. का बुध मन्दे की तरफ इशारा करते हैं। अलसी, गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, तिल, तेल, सरसों, तिलहन, रुई, ऊन, सोंठ मन्दे हों। जौ, गेहूं, उड़द, अरहर, मूंग, मोठ, चना आदि में तेज़ी से लाभ मिलेगा।

मार्च (सन् 2012 ई.)

2 मार्च को गुरु भरणी के प्रथम चरण में आएगा। इस समय गुरु शुक्र के साथ शनि की नज़र में है। सोना, चान्दी, तांबा, अलसी, जौ, गेहूं, तिल, उड़द, मूंग, मोठ, तूअर, चना, लाख, ऊन एवं चमड़े के भाव मन्दे रहें।

4 मार्च को सूर्य पू.भा. में आ जाता है। इस समय सिंह राशि के मंगल के साथ सूर्य का समसप्तकयोग बन रहा है। मंगल तेलवाना, रुई, कपास, जूट, चान्दी, सोना और शेयर बाज़ारों को प्रभावित करता है। हमारे विचार से इस समय रेशम, सोना, चान्दी, गेहूं, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, मूंगफली, बिनौला, तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, गुड़, खाण्ड, गुग्गुल, पिप्पलामूल, रुई, हल्दी, कालीमिर्च एवं शेयर बाज़ारों में तेज़ी बनेगी। यह तेज़ी 11 मार्च तक उत्तम–मध्यमरूप से चलेगी।

12 मार्च को मीन–राशिस्थ बुध वक्री हो रहा है। इसी दिन शुक्र भरणी नक्षत्र में आकर गुरु के साथ एकनक्षत्रसम्बन्ध बना लेगा। यह योग घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में कुछ तेज़ी बनाएगा, लेकिन गेहूं, जौ, चना आदि अनाज, सोना, चान्दी, अफीम, लाल रंग की चीज़ों, सरसों, तिल, तेल, अलसी, उड़द एवं नारियल में मन्दा बनेगा। इस समय रुई तेज़ रहे।

13 मार्च को वक्री बुध भी पश्चिम में अस्त होकर बाज़ारों में मन्दी का ही संकेत देता है।

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में बुध के साथ मेल करेगा। 17 मार्च को सूर्य उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र–सम्बन्ध भी बना लेगा। यह योग 19 मार्च तक बाज़ारों में अच्छी तेज़ी बनाएगा। तिल, तेल, अलसी, एरण्ड, सूरजमुखी, बिनौला, सरसों, तोड़िया आदि तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, सोना एवं प्रत्येक जाति के अनाजों में अच्छी तेज़ी का झटका आएगा। अनाजों में तेज़ी के बाद जल्दी ही 19 मार्च को मन्दा भी आ सकता है, सावधानी से काम करें। चान्दी में मन्दी सम्भव है।

19 मार्च को गुरु भरणी के दूसरे चरण में आ जाता है। इस समय शुक्र एवं गुरु– दोनों भरणी नक्षत्र में ही चल रहे हैं। इस समय बाज़ारों में अचानक मन्दा आने की सम्भावना है। हमारे विचार से चान्दी, सोना आदि धातु, अलसी आदि तिलहन, चावल, जौ, गेहूं, उड़द, तूअर, मोठ, चना, लाख, ऊन व चमड़े के व्यापार में मन्दा संभव है। यह मन्दा 20 मार्च तक मध्यमरूप से चलेगा।

21 मार्च को वक्री मंगल मघा नक्षत्र में आ जाता है। इस समय मंगल पर बृहस्पति की दृष्टि भी है। मघा नक्षत्र सूर्य का नक्षत्र है। वक्री मंगल से सूर्य अष्टमस्थ है, अतः यह योग मन्दीकारक नहीं होगा। मूंग, मोठ, उड़द, तिल, सरसों, मूंगफली, राई, गेहूं, चना आदि अनाज, गुड़, घी, तेल, तिलहन में तेज़ी का रुख रहेगा।

24 मार्च को शुक्र कृत्तिका में आकर जौ, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रुई, सूत, वस्त्र, चान्दी, सोना, हीरा, मणि, मोती आदि जवाहरात में मन्दा करेगा।

28 मार्च को शुक्र वृषराशि में आकर केतु के साथ मेल करेगा। सोना, चान्दी, रुई और कपास में इस समय झटके के साथ तेज़ी–मन्दी बनेगी। यदि मन्दी आए तो माल पकड़ें, आगे तेज़ी से लाभ मिलेगा।

29 मार्च को बुध पूर्व में उदित होगा। इस समय रुई में पहले मन्दा आकर लगभग एक मास में अच्छी तेज़ी बने। गेहू, चना आदि अनाजों में आगे तेज़ी बनेगी। तिल, घी, लालमिर्च में तेज़ी रहे।

30 मार्च को सूर्य रेवती नक्षत्र में आकर 14 दिन में अलसी, एरण्ड, सरसों, मूंगफली, बिनौला, सूरजमुखी, तोड़िया आदि तिलहन, लहसुन, लाख, मोती, सज्जी, रुई, गेहूं, जौ, चना, चावल एवं दालवाना में तेज़ी बना सकता है।

PHON: 0160-2641 277
FAX- 0160-2641 577

नोटः– गुरुवार को
कार्यालय में अवकाश रहता है।

संयमी शर्मा , **M.A.**, ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
सुपुत्र पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, **M.A.**, ज्योतिषाचार्य,
श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय ,कुराली – **PIN** 140 103
(मोहाली) पंजाब।

यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र–साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(1 जनवरी, सन् 2011 ई. से 22 मार्च, सन् 2012 ई. तक)

जप एवं यन्त्र–मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा सूर्य–चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य–चन्द्रग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिषग्रन्थों में इस विषय के अनेक वचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्टरूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी 'सिद्धान्तशिरोमणि' में कहा है, कि–क्रांतिसाम्य के काल में विवाहादि मंगलकृत्य करना तो निषिद्ध है, लेकिन यदि इस समय जप, अनुष्ठानादि किया जाए तो उसकी वृद्धि होती है–*"पातस्थितिकालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान–जप–होमदानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्॥"* यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रों की साधना में विशेष रुचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे 1 जनवरी, 2011 ई. से 22 मार्च, सन् 2012 ई. तक की सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा क्रान्तिसाम्य के प्रारंभ और समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) दे रहे हैं। इन कालों में यन्त्र–तंत्रों के निर्माण एवम् मंत्रजाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण के पर्वकाल को भी मन्त्रादि–साधना के लिए साधकों को उपयोग में लाना चाहिए। सायन संक्रान्तिपुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य–चन्द्रग्रहण के पर्वकाल के अलावा मन्त्रादि–साधना के लिए अर्धोदय, महोदय, महामहावारुणीपर्व, महावारुणीपर्व और वारुणीपर्व भी महत्त्वपूर्ण माने गए हैं। ये अर्धोदय आदि योग कभी–कभी ही आते हैं। संवत् 2068 वि. में अर्धोदययोग, महावारुणी तथा महा–महावारुणी पर्व घटित नहीं हुए हैं।

सावधान–यंत्र–मंत्र–तंत्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में सद्यः फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल में साधना कीजिए, अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायनसंक्रान्ति–पुण्यकाल (भा. स्टै. टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं. मि.	समाप्त तारीख	घं. मि.
सन् 2011 ई.			
20 जन.	9 48	20 जन.	21 48
18 फर.	23 55	19 फर.	11 55
20 मार्च	22 50	21 मार्च	10 50
20 अप्रै.	9 48	20 अप्रै.	21 48
21 मई	9 51	21 मई	21 51
21 जून	16 47	22 जून	4 47
23 जुला.	3 42	23 जुला.	15 42
23 अग.	10 51	23 अग.	22 51
23 सितं.	8 35	23 सितं.	20 35
23 अक्तू.	17 59	24 अक्तू.	5 59
22 नवं.	15 38	23 नवं.	3 38
22 दिसं.	5 00	22 दिसं.	17 00
सन् 2012 ई.			
20 जन	15 40	21 जन.	3 40
19 फर	5 48	19 फर.	17 48
20 मार्च	4 45	20 मार्च	16 45

निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल की भान्ति निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल में भी यंत्र–मंत्रादि की साधना की जा सकती है, लेकिन सायन संक्रान्तियों का पुण्यकाल इसके लिए विशेष महत्त्व रखता है।

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं. मि.	समाप्त तारीख	घं. मि.
सन् 2011 ई.			
01 जन.	01 51	01 जन.	15 36
14 जन.	20 22	15 जन.	05 38
26 जन.	21 26	27 जन.	03 53
09 फर.	08 15	09 फर.	14 17
21 फर.	13 07	21 फर.	17 30
06 मार्च	13 57	06 मार्च	19 01
31 मार्च	17 43	31 मार्च	22 46
02 अप्रै.	15 30	02 अप्रै.	21 30
14 अप्रै.	01 09	14 अप्रै.	05 38
25 अप्रै.	21 38	26 अप्रै.	03 25
09 मई	10 48	09 मई	17 15
21 मई	05 13	21 मई	13 45
03 जून	14 18	04 जून	05 17
28 जून	22 17	01 जुला.	01 44
11 जुला.	08 44	11 जुला.	21 40
24 जुला.	16 19	25 जुला.	01 22
05 अग.	23 49	06 अग.	05 51
19 अग.	01 11	19 अग.	07 14
31 अग.	15 20	31 अग.	19 44
26 सितं.	09 11	26 सितं.	13 18
08 अक्तू.	10 11	08 अक्तू.	15 22
21 अक्तू.	22 36	22 अक्तू.	03 38
02 नवं.	12 33	02 नवं.	18 44
16 नवं.	01 34	16 नवं.	09 45
27 नवं.	14 49	28 नवं.	02 48
सन् 2012 ई.			
06 जन.	04 43	08 जन.	06 32
18 जन.	11 35	18 जन.	22 01
31 जन.	05 28	31 जन.	13 34
12 फर.	19 57	13 फर.	01 24
25 फर.	08 47	25 फर.	14 26
9 मार्च	08 10	9 मार्च	12 30
21 मार्च	12 04	21 मार्च	17 10

सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य

सूर्य–चन्द्र की राशियों के अनुसार निर्धारित किए जाने वाले क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ–समाप्तिकाल नितान्त स्थूल होता है। यहां दिया गया क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ–समाप्तिकाल महापातगणित द्वारा स्पष्ट किया गया है। यह सर्वथा सूक्ष्म है। विवाहादि मुहूर्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को ही वर्जित किया गया है।

वारुणी पर्व (सन् 2011 ई.) (भा. स्टै. टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं. मि.	समाप्त तारीख	घं. मि.
31 मार्च	12 39	31 मार्च	सू. अ.
1 अप्रैल	सू. उ.	1 अप्रैल	8 25
(सन् 2012 ई.)			
20 मार्च	6 54	20 मार्च	17 32
महोदययोग (सन् 2011 ई.)			
3 फरवरी	सू. उ.	3 फरवरी	8 00

सूर्य–चन्द्रग्रहण

ऊपर लिखे अनुसार यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र–साधना के लिए सूर्य एवम् चन्द्र ग्रहणों का पर्वकाल विशेष महत्त्व रखता है। एतदर्थ पृष्ठ 14 देखिए।

ध्यान रहे– मन्त्रसाधना में उच्चारणादि की शुद्धि परमावश्यक है। इस बारे शास्त्रवचन इस प्रकार है–

"मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा
मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति
यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्॥"

यन्त्र–मन्त्र एवम् तन्त्रों का चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत अनुभूत यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र गतवर्षों से देते आ रहे हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिए गए मन्त्रों को शुभ मुहूर्त्त में गुरुमुख से प्राप्त करके ग्रहणवेला, क्रान्तिसाम्य या सायन–संक्रान्तियों के पुण्यकाल में दृढ़–निश्चयपूर्वक अनुष्ठान करके सिद्ध कर लेना चाहिए। **ध्यान रहे–** दीपमाला के समय एवं महाशिवरात्रि की महत्त्वपूर्ण रात्रियों में किंवा **'यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रों के लिए साधनाकाल'** में उल्लिखित समयावधियों में इन मन्त्र–तन्त्रों को सिद्ध करके इनका चमत्कार आप अविलम्ब देख सकेंगे। यन्त्र–मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश प्राप्त कर सकता है,–**"सिद्धिर्भूषयते विद्याम्।"**

मन्त्र ऐसे दिव्यशब्दों का समूह है, जिसे दृढ़ इच्छाशक्तिपूर्वक उच्चारण एवं मनन से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं। चुने हुए गुप्त शब्द ही मन्त्र हैं। इनमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है, कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र से शून्य महाकाश में एक विचित्र कम्पन उत्पन्न होती है, जिसमें अभीप्सित कार्यसिद्धि एवं रचनात्मक प्रबल–प्रछन्न शक्ति होती है–

" मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः।।"

मन्त्रशास्त्र के अनुसार वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तान्त्रिक प्रयोगों को भगवान् शिव ने शक्तिसम्पन्न किया। इसी प्रकार कलियुग में शिवावतार श्री शाबरनाथ जी ने शाबरमन्त्रों को अद्भुत शक्ति प्रदान की। शाबरमन्त्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है, जो कि अर्थहीन मालूम देते हैं, परन्तु भगवान् शंकर जी के प्रताप से ये मन्त्र अवन्ध्य प्रभाव रखते हैं– **" अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू।।"** अतः शाबरमन्त्रों को यथावत् उच्चारण करें, किसी प्रकार से इनमें न्यूनाधिकता न करें। **नोटः–** मन्त्र का पुरुश्चरण गुरु की देखरेख में गुप्तरूप से करें। प्रकट होने पर पुरुश्चरण अर्थहीन हो जाता है– **" गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।"**

(1) वाक् सिद्धि–प्रयोग

दैवज्ञ के लिए 'वाक्सिद्धि' –प्रयोग अक्षुण्ण यश प्रदान करता है– इसमें सन्देह नहीं। एतदर्थ एक छोटा–सा प्रयोग हम यहां साधकजनहितार्थ लिख रहे हैं।

मन्त्र–" ॐ नमो वाग्वादिन्यै सत्यं वद वद स्वाहा।"

विधि– दीपावली की रात्रि में इस मन्त्र का एकान्त में कम्बलासन पर बैठकर जाप करें। मन्त्र के गुप्तोद्घाटन की ज़रूरत न समझते हुए मन्त्र का स्पष्ट उल्लेख यहां कर दिया है। यह मन्त्रजाप एकान्त में करें। दीपावली के बाद थूहर वृक्ष का बान्दा बाम बाहु में धारण करके कृत्तिका नक्षत्र में मन्त्रजाप पुनः प्रारम्भ करें। मन्त्रजाप से पहले मिट्टी के 5 दीवों में भांग रगड़कर पानी डालकर सामने रखें। 11 माला जाप प्रतिदिन करके भांग का भोग लगाकर प्रतिदिन पान करें। 41 दिन नियम से पाठ करें, वाक्सिद्धि प्राप्त होगी। नोट– 41 दिन तक **मौनव्रत रखें, तो सद्यः चमत्कार अनुभव होगा।**

(2) वाक्सिद्धि के लिए एक और मन्त्र–प्रयोग

मन्त्र–" ॐ नमो भगवति देवि कूष्माण्डिनि सर्वकार्यप्रसाधिनि सर्वनिमित्त–प्रकाशिनि एह्येहि त्वर–त्वर वरं देहि लिहि–लिहि मातङ्गिनि सत्यं ब्रूहि–ब्रूहि स्वाहा।"

इस मन्त्र को दीपावली की रात्रि में सिद्ध करें एवम् खीर–खाण्ड भोजन कन्याओं को कराकर भूमिशयन करें। प्रतिदिन प्रातः मन्त्रजाप करते रहें। जो उच्चारण करोगे, सत्य ही सिद्ध होगा– अनुभव करें।

(3) विद्याबुद्धि लाभ के लिए एक और विशिष्ट मन्त्रानुष्ठान–प्रयोग

विद्या–बुद्धि–प्राप्त्यर्थ एवम् शिक्षाक्षेत्र में प्रगति हेतु कामना अहर्निश हम भगवती श्रीसरस्वती महाविद्या से ही करते हैं। आज शिक्षा एवम् प्रतियोगिताक्षेत्र में प्रत्येक छात्र मर–मिटने को तैयार मालूम देता है,

ऐसी स्थिति में हम विद्यार्थीजगत् को एक रहस्यात्मक प्रयोग एवं अनुष्ठान बताने जा रहे हैं, जो बहुत दुर्लभ एवम् गोपनीय रहा है। इस प्रयोग से बुद्धि की प्रखरता एवम् विद्याक्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति का मार्ग प्रशस्त हो जाता है–

मन्त्र–" ॐ ह्रीम् ऐं ह्रीं ॐ वाग्देव्यै नमः।"

गुरुमुख से इसमन्त्र को प्राप्त करके इस मन्त्र का जाप/अनुष्ठान करना चामत्कारिक रहेगा– अनुभव करें।

अनुष्ठानविधि– शुभ मुहूर्त्त में शुद्धासन पर पूर्वाभिमुख होकर इस मन्त्र का जाप शुरु करने से पूर्व विनियोग इस प्रकार करें–

"ॐ अस्य श्रीवाग्वादिनी–शारदामन्त्रस्य मार्कण्डेयाश्वलायनौ ऋषी, स्रग्धरा–अनुष्टुभौ छन्दसी, श्रीसरस्वतीदेवता श्रीसरस्वतीप्रसाद–सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।"

इस प्रकार विनियोग करके सरस्वती माता का निम्नांकित श्लोकमन्त्र से ध्यान करें–

" ॐ शुक्लां ब्रह्मविचारसार–परमामाद्यां जगद्व्यापिनीम्
वीणा–पुस्तक–धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिक–मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।"

इस प्रकार सरस्वती माता का ध्यान करके उल्लिखित मन्त्र का जाप प्रतिदिन करें। प्रतिभा जागृत होगी, कवित्वशक्ति का उदय होगा, शैक्षणिक एवं व्यावसायिक प्रतियोगिताओं में सफलता आपका साथ देगी। भोग के रूप में मिसरी, इलायची सामने रखें। अनुष्ठान 40 दिन में पूर्ण होगा। नियमपूर्वक रहें। हवन में खीर एवं श्वेत कमलों का प्रयोग करें। तत्पश्चात् प्रतिदिन एकमाला मन्त्रजाप करते रहें। मन्त्रजाप के बाद सरस्वतीस्तोत्र का पाठ करें–

श्रीसरस्वती–स्तोत्र

"ॐ ह्रीं ह्रीं हृद्यैक–विद्ये शशि–रुचि–कमला–कल्प–विस्पष्टशोभे
भव्ये भव्यानुकूले कुमति– वनदहे विश्ववंद्यांघ्रि– पद्मे।।
पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणत– जन– मनोमोद– संपादयित्रि
प्रोत्प्लुष्टाज्ञानकूटे हरि–निज–दयिते देवि संसार –सारे।।१।।

ऐं ऐं ऐं इष्टमन्त्रे कमलभवमुखांऽभोजरूपे स्वरूपे
रूपारूप–प्रकाशे सकलगुणमये निर्गुणे निर्विकारे।
न स्थूले नैव सूक्ष्मेऽप्यविदित–विषये नापि विज्ञान-तत्त्वे
विश्वे विश्वान्तराले सुरवर–नमिते निष्कले नित्यशुद्धे।।२।।

ह्रीम् ह्रीम् ह्रीम् जापतुष्टे हिमरुचि–मुकुटे वल्लकी–व्यग्रहस्ते
मातर्मातर्नमस्ते दह दह जड़तां देहि बुद्धिं प्रशस्ताम्।
विद्ये वेदान्तगीते श्रुति–परिपठिते मोक्षदे मुक्तिमार्गे
मार्गातीतप्रभावे भव मम वरदा शारदे शुभ्रहारे।।३।।

धीं धीं धीं धारणाख्ये धृति–मति–नुतिभिर्नामभिः कीर्तनीये
नित्ये नित्ये निमित्ते मुनिगण–नमिते नूतने वै पुराणे।
पुण्ये पुण्य– प्रभावे हरिहर– नमिते वर्णशुद्धे सुवर्णे
मन्त्रे मन्त्रार्थतत्त्वे मतिमति मतिदे माधव–प्रीतिनादे।।४।।

ह्रीं क्षीं धीं ह्रीं स्वरूपे दह दह दुरितं पुस्तक–व्यग्रहस्ते
संतुष्टाकारचित्ते स्मितमुखि सुभगे भंजनि भंजविद्ये।
मोहे मुग्धप्रबोधे मम कुरु सुमतिं ध्वान्त–विध्वंस नित्ये–
गीर्वाग्गौर्भारती त्वं कविवृषरसना सिद्धिदा सिद्धसाध्या।।५।।

सौं सौं सौं शक्तिबीजे कमलभव–मुखांभोज भूतस्वरूपे–
रूपारूप– प्रकाशे सकलगुणमये निर्गुणे निर्विकारे
न स्थूले नैव सूक्ष्मेऽप्यविदित विभवे जाप्य–विज्ञान–तत्त्वे
विश्वे विश्वान्तराले सुरगणनमिते निष्कले नित्यशुद्धे।।६।।

स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे भज मम रसनां मा कदाचित्त्यजेथाः
मा मे बुद्धिर्विरुद्धा भवतु न च मनो देवि मे जातु पापम्।
मा मे दुःखं कदाचिद् विपदि च समयेऽप्यस्तु मेऽनाकुलत्वम्
शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम धीर्मास्तु कुण्ठा कदाचित्।।७।।

इत्येतैः श्लोकमुख्यैः प्रतिदिनमुषसि स्तौति यो भक्तिनम्रो
देवीं वाचस्पतेरप्यति–मति–विभवो वाक्पटुर्नष्टपंकः।
स स्यादिष्टार्थलाभः सुतमिव सततं याति तं सा च देवी
सौभाग्यं तस्य लोके प्रसरति कविताविघ्नमस्तं प्रयाति।।८।।

ब्रह्मचारी व्रती मौनी त्रयोदश्यां निरामिषः।
सारस्वतो नरः पाठात् स स्यादिष्टार्थ–लाभवान्।।६।।

पक्षद्वयेऽपि यो भक्त्या त्रयोदश्यामेक–विंशतिम्।
अविच्छेदं पठेद्धीमान् ध्यात्वा देवीं सरस्वतीम्।।१०।।

शुक्लाम्बरधरां देवीं शुक्लाभरणभूषिताम्।
वांछितं फलमाप्नोति स लोके नात्र संशयः।।११।।

(4) क्या आप कर्ज (ऋण) से परेशान हैं?

(ऋणमुक्ति के लिए निम्नांकित भैरव–मन्त्र का अनुष्ठान)

मन्त्र– "ॐ ऐं क्लीम् ह्रीम् भम् भैरवाय मम ऋणविमोचनाय मह्यं महाधनप्रदाय क्लीम् स्वाहा।"

विधि– रविवार को शुक्लपक्ष में पुष्य या हस्त नक्षत्र हो तो उस दिन संकल्पपूर्वक उल्लिखित मन्त्र का जाप प्रारम्भ करके प्रतिदिन बारह माला 21 दिन तक लगातार करें। रविवार एवं मंगलवार को कन्याओं एवं छोटे बच्चों को मीठा भोजन दें। शीघ्र ही कर्ज से मुक्ति मिलेगी एव कारोबार में प्रगति भी होगी।

(5) श्री बटुक–अपराध–क्षमापनस्तोत्र

श्रीबटुक भैरव जगदम्बा (दुर्गा) के पुत्र हैं। बटुक भैरव के उपासनाप्रयोग में भूलचूक होने पर बटुक अपराधक्षमापन स्तोत्रपाठ किया जाता है। इस स्तोत्र में भक्तिभाव से भक्त का पूर्णरूपेण समर्पण झलकता है,अतः साधक पाठ के समय स्वयं पूर्णतः समर्पित अथवा विनम्र रहे। हां, स्तोत्र–पाठ में भावों की अभिव्यक्ति तो साधक को स्वतः दुर्गापुत्र के चरणों में समर्पित कर ही देती है। बटुकभैरव के मूलमन्त्र ("ॐ ह्रीं वां बटुकाय क्ष्रौं क्ष्रौं आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं बटुकाय स्वाहा") के जाप के बाद जो इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसे स्वतः सिद्धि प्राप्त हो जाती है। ध्यान दें– बटुक भैरव के इस पाठ के बाद किया गया श्रीदुर्गा सप्तशती का पाठ भी सद्यःफल देने वाला होता है, ऐसा अनुभव किया गया है।

अपराधक्षमापन–स्तोत्र

" ॐ गुरोः सेवां त्यक्त्वा गुरुवचन–शक्तोपि न भवे
भवत्पूजा–ध्यानाज्जप[1]हवन– यागा[2]द्विरहितः।
त्वदर्चा–निर्माणे क्वचिदपि न यत्नं च कृतवान्
जगज्जाल–ग्रस्तो झटिति कुरु हार्दं मयि विभो।।१।।
प्रभो! दुर्गासूनो! तव शरणतां सोऽधिगतवान्
कृपालो! दुःखार्तः कमपि भवदन्यं प्रकथये।
सुहृत्[3]! सम्पत्तेऽहं सरल[4]– विरलः[5] साधकजन
स्त्वदन्यः[6] कस्त्राता भव–दहन–दाहं शमयति।।२।।

---

(1) स्थूलध्यानात् ,
(2) ब्राह्मण–भोजनयज्ञात्,
(3) *हे सदा सहायक मित्र!,*
(4) *निष्कपटः,*
(5) *अन्यतमः,*
(6) ते उपासकः,

वदान्यो[7] मान्यस्त्वं विविधजनपालो भवसि वै
दयालुर्दीनार्तान् भवजलधिपारं गमयसि।
अतस्त्वत्तो याचे नति–नियमतोऽकिञ्चनधनः
सदा भूयाद् भावः पदनलिनयोस्ते तिमिरहा।।३।।
अजापूर्वो विप्रो मिलपदपरो योऽतिपतितो
महामूर्खो दुष्टो वृजननिरतः पामरनृपः।
असत्पानासक्तो यवन– युवती – व्रातरमणः
प्रभावात्त्वन्नाम्नः परमपदवीं सोऽप्यधिगतः।।४।।
दयां दीर्घां[8] दीने बटुक! कुरु विश्वम्भर मयि
न चान्यस्सन्त्राता परमशिव मां पालय विभो।
महाश्चर्यं प्राप्तस्तव सरलदृष्ट्या[9] विरहितः
कृपापूर्णैर्नेत्रैः कजदल[10] निभैर्मां खचयतात्[11]।। ५।।
सहस्ये[12] किं हंसो नहि तपति दीनं जनचयम्
घनान्ते किं चन्द्रोऽसमकर–निपातो भुवितले।
कृपादृष्टेस्तेहं भयहरविभो किं विरहितो
जले वा हर्म्ये वा घनरसनिपातो न विषमः।।६।।
त्रिमूर्तित्वं गीतो हरिहर– विधातात्मकगुणो[13]
निराकारः शुद्धः परतरपरः सोऽप्यविषयः।
दयारूपं शान्तं मुनिगणनुतं भक्तदयितं
कदा पश्यामि त्वां कुटिल-कचशोभि-त्रिनयनम्।।७।।

(7) दानशूरः,
(8) महत्तमाम् ,
(9) उदारदृष्ट्या,
(10) कमल–पत्रनिभैः,
(11) पवित्रीकुरुतात् (खच्=पवित्रीकरणे धातुः),
(12) पौषे,
(13) हर्य्यादीनां स्वभावगुणः, प्रयत्नगुणो वा (उत्पत्ति–स्थिति–विनाशरूपः),

तपोयोगं सांख्यं यम–नियम–चेतः प्रयजनं
न कौलार्च्चा– चक्रं हरिहरविधीनां प्रियतरम्।
न जाने ते भक्तिं परममुनिमार्गं मधुविधिं[14]
तथाप्येषा वाणी परिरटति नित्यं तव यशः।।८।।
न मे कांक्षा धर्मे न वसुनिचये राज्यनिवहे
न मे स्त्रीणां भोगे सखि–सुत–कुटुम्बेषु न च मे।
यदा यद्यद्भाव्यं भवतु भगवन् पूर्वसुकृतान्
ममैतत्तु प्रार्थ्यं तव विमल– भक्तिः प्रभवतात्।।९।।
कियांस्तेस्मद्भारः पतितपतितांस्तारयसि भो!
मदन्यः कः पापी यजन–विमुखः पाठरहितः।
दृढ़ो मे विश्वासस्तव नियति[15]रुद्धार विषयः
सदा स्याद् विश्रम्भः क्वचिदपि मृषा मा च भवतात्।।१०।।
भवद्भावाद्भिन्नो व्यसन–निरतः को मदपरो
मदान्धः पापात्मा बटुक! शिव! ते नामरहितः।
उदारात्मन् बन्धो नहि तवकतुल्यः कलुषहा
पुनः सञ्चिन्त्यैवं कुरु हृदि यथेच्छसि तथा ।।११।।
जपान्ते स्नानान्ते ह्युषसि च निशीथे जपति यो
महासौख्यं देवो वितरति नु तस्मै प्रमुदितः।
अहोरात्रं पार्श्वे परिवसति भक्तानुगमनो
वयोन्ते संहृष्टः परिनयति भक्तान् स्वभुवनम्।।१२।।

(6) घर में धन–धान्यसमृद्धि एवम् व्यापार में प्रगतिलाभार्थ लक्ष्मी–मन्त्रप्रयोग

मन्त्र– ''ॐ क्लीम् कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां। तर्पयन्तीं पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् क्लीम् ॐ।।''

(14) मदिरा(करण)विधानम्,
(15) 'नियतिर्नियमे दैवे' इति विश्वः

पंचदशी यन्त्र		
६	१	८
७	५	३
२	९	४

विधि– यहां अंकित पंचदशी यन्त्र को शुद्ध केसर, अष्टगन्ध आदि से भोजपत्र पर लिखकर धूप–दीप करके कन्या एवं बटुक (छोटे बच्चे) को मीठा देकर अपने कैश–बॉक्स या गल्ले में सिन्दूर एवम् लाल फूलों से सुसज्जित करके स्थापित करें। आप अनुभव करेंगे कि–कारोबार में वृद्धि एवम् धनधान्यसमृद्धि की ओर आप बढ़ रहे हैं। अपनी आय में से दशांश भाग या बीसवां अंश लक्ष्मी माता या अपनी कुलदेवी (कुलमाता) के निमित्त अवश्य निकाला करें। **ध्यान दें–** प्रतिदिन यन्त्र को धूप दें एवम् कमल पर स्थित लक्ष्मी का ध्यान भी प्रतिदिन करते रहें।

(7) आरोग्य–सौभाग्यलाभार्थ, मुकद्दर्मे में विजयलाभ एवम् शत्रुओं को हतप्रभ करने के लिए दुर्गामन्त्र

मन्त्र–'' ॐ क्लीम् देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि क्लीम् ॐ।।''

विधि– शुक्लपक्ष की अष्टमी वाले दिन प्रातः शुद्धासन पर बैठ कर भगवती माता का ध्यान करके **'शत्रुकृत नेष्टफल–शान्त्यर्थं'** किंवा **'अभियोग में विजयार्थ'** संकल्पपूर्वक उल्लिखित मन्त्र का जाप करें। छोटी इलायची एवम् मिसरी एक बर्तन में सामने रख लें। इस उल्लिखित मन्त्र की दो माला प्रतिदिन जाप करें। मन्त्रजाप के बाद इलायची–मिसरी में हाथ चला दें। जब कठिन परिस्थिति बने एक इलायची एवम् थोड़ी मिसरी अपने मुंह में डालें। कोर्ट, कचहरी में फतह होगी, शत्रु कमज़ोर हो जाएंगे।

(८) रूठा/घर से भागा हुआ व्यक्ति शीघ्र घर वापिस आए

पंचदशी यन्त्र		
६	१	८
७	५	३
२	९	४
रूठे या घर से भागे व्यक्ति का नाम		

(i) सम्मुख दिए पंचदशी यन्त्र को शुद्ध केसर, .अष्टगन्ध आदि से अनार की कलम के साथ भोजपत्र पर लिखकर आगे दिए गए मन्त्र का जाप करके अभिमन्त्रित करें। धूप–दीप आदि से इस यन्त्र की पूजा कर के भगौड़े व्यक्ति का नाम यन्त्र के नीचे लिखकर, घर से भागे हुए व्यक्ति के वस्त्र के साथ वज़न देकर सुरक्षित, शुद्ध स्थान पर रख दें। 21 दिन तक इस यन्त्र को दबाव के नीचे रखें। वस्त्र एवम् यन्त्र हिलने नहीं चाहिएं। प्रतिदिन धूप–दीप करते रहें। घर से भागा हुआ व्यक्ति यदि जीवित है तो शीघ्र ही घर वापिस आ जाएगा। अगर व्यक्ति बन्धन में हो तो पता चल जाता है– यह अनुभूत है।

मन्त्र–'' ॐ क्लीम् ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति क्लीम् ॐ।।''

(ii) काले धतूरे के पत्तों के रस एवं गोरोचन के साथ कनेर की कलम से भोजपत्र पर पहले कॉलम में दिया गया **'पंचदशी यन्त्र'** लिखें। यन्त्र के नीचे रूठे किंवा घर से भागे हुए व्यक्ति का नाम लिखें। इस यन्त्र को खदिर (खैर) की लकड़ी की अग्नि में तपाएं (जलाएं नहीं)। व्यक्ति जल्दी ही वापिस आएगा। यह अनुभूत प्रयोग है। व्यक्ति के वापिस आ जाने पर यन्त्र की पूजा करके शुद्ध जल में प्रवाहित कर दें।

(९) वशीकरणार्थ एक सरल मन्त्र

आजकल के युग में परिवार बिखरते जा रहे हैं। बच्चे नशे में या कुसंग में पड़कर माता–पिता का जीना दूभर कर रहे हैं; आज्ञा का पालन न करके निठल्ले बैठे अपना एवम् माता–पिता का जीवन नीरस बना देते हैं। एतदर्थ यह सरल संक्षिप्त वशीकरण मन्त्र रामबाण सिद्ध हुआ है–

मन्त्र–''ॐ क्लीम् क्लीम् 'अमुकं' मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।''

मन्त्र में **'अमुक'** के स्थान पर जिसे कंट्रोल में लाना है, उसके नाम का उच्चारण करें। इस मन्त्र को दीपावली या शुभ मुहूर्त्त में सिद्ध करें। मन्त्रजाप के समय लौंग, इलायची, मिसरी को एक बर्तन में रखकर मन्त्रोच्चारण द्वारा अभिमन्त्रित करते रहें। ये तीनों चीज़ें वश्यंकर व्यक्ति को

प्रतिदिन चाय में या भोग के तौर पर खिलाते रहें, व्यक्ति आपकी आज्ञा का पालन करने लगेगा।

(10) पति–वशीकरणार्थ मन्त्र

(परगामी पति के वशीकरणार्थ मन्त्रप्रयोग)

मन्त्र–'' ॐ ह्रीम् नमो मोहिन्यै (अमुकं) मे वश्यं कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा'' ।

मन्त्र में **'अमुकं'** शब्द की जगह व्यक्ति (पति) का नाम लेकर मन्त्रजाप करें–

विधि–उल्लिखित मन्त्र से जल को 21 बार अभिमन्त्रित करें; फिर वश्यंकर व्यक्ति (पति) के सामने उस जल से मुंह धोकर जाएं अथवा उससे बात करें। 7 दिन के प्रयोग से व्यक्ति का वशीकरण हो जाएगा। इस बारे शास्त्रों में लिखा है–

''वशी भवन्ति सर्वे तु सप्तभिर्क्षालिते मुखे।
सर्वेषु वश्यमन्त्रेषु मन्त्रमिदमुत्तमं मतम्।।''

(11) कुछ अनुभूत तन्त्रप्रयोग

(i) **वशीकरण तन्त्र**– छायाशुष्क (छाया में सूखे हुए) बिल्वपत्र व फल को कपिला (पूर्णरूप से काली) गाय के दूध में रगड़कर गोली बना लें। राजदरबार या जिसे वश में करना हो, उसका नाम लेकर **'' ॐ क्लीं क्लीं 'अमुकं' मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।''**–इस मन्त्र का जाप करते हुए उस गोली को चन्दन की तरह घिसकर तिलक लगाकर सामने जाएं। जज या व्यक्ति आपकी तरफ झुक जाएगा। मन्त्र में **'अमुकं'** की जगह वश्यंकर व्यक्ति का नाम बोलें।

(ii) **सभी प्रकार के कार्यों में सफलता हेतु दुर्गाहवन–विभूतिप्रयोग**——— **'दुर्गासप्तशती'** किंवा दुर्गासप्तशती के किसी मन्त्रविशेष से जब भी (अनुष्ठान के बाद) हवन करें तो हवन की कुछ शुद्ध विभूति शुद्ध, स्वच्छ पात्र में सुरक्षित रख लें। इष्टकार्य–सिद्धि हेतु इस विभूति को **''ॐ रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।''**–इस मन्त्र के साथ पुनः अभिमन्त्रित करके रोग, कष्ट, प्रेतबाधा आदि शान्त्यर्थ कागज़ में रखकर व्यक्ति विशेष के कार्यसिद्ध्यर्थ भगवती जगदम्बा के सामने रख दें। प्रार्थनापूर्वक विभूति देने पर निश्चित कार्य सिद्ध हो जाता है– अनुभूत है। यदि किसी विद्यार्थी का मन पढ़ाई में न लगे तो सरस्वती के मूल मन्त्र से इस विभूति को अभिमन्त्रित करके प्रतिदिन मामूली मात्रा जल में पिला दें, विवेक जागृत होगा, पढ़ाई में रुचि बढ़ेगी।

(iii) **सन्तानतन्त्र**– जिस स्त्री के गर्भ न होता हो या गर्भक्षय होता रहा हो, उसके लिए यह तन्त्र रामबाण है–

अजवायन 1 ग्राम, 40 दानों के लगभग शिवलिंगी बीज(साबुत) कवोष्ण (सामान्यतःगर्म) गाय के दूध के साथ **रात को सोते समय** (शिवलिंगी के बीजों को बिना चबाए ही) निगल लें। गाय गर्भिणी (नए दूध) हो तो उसका दूध उत्तम रहेगा।

मासिक–धर्म के बाद प्रतिदिन 5 दिन उल्लिखित प्रयोग प्रातःकाल करें। दो या तीन मासिकधर्म के बाद इस प्रयोग से निश्चित गर्भ ठहरेगा। तत्पश्चात् **सन्तानगोपालयन्त्र** एवम् **गर्भरक्षायन्त्र** धारण कराएं।

(iv) **सम्मोहनार्थ तन्त्र–**

(क)– ''बिल्वपत्राणि संगृह्य मातुलुंगं तथैव च।
अजाक्षीरेण सम्पिष्टं तिलकं मोहयेत् जनम्।।''

अर्थात्– बिलपत्र एवं बिजोरा नींबू के पत्रों को बकरी के दूध में पीसकर तिलक धारण करें। इच्छितजन सम्मोहित होगा।

(ख)– 'श्वेतार्क–मूलमादाय श्वेत–चन्दनसंयूतम्।
अनेन तिलकं भाले मोहयेत् सर्वतो जगत्।।'

अर्थात्– सफेद आक की जड़ एवम् सफेद चन्दन को घिसकर तिलक करने से सम्पूर्ण व्यक्ति सम्मोहित हो जाते हैं।

(12) कुछ लाभप्रद टोटके

(i) **सिरदर्द नाशक औषध**–सफेद फारमी गेहूं $1\frac{1}{2}$ तोला साफ करके रात को पानी में भिगो दें। प्रातः गेहूं को निथार (जल से छान कर निकाल) कर $1\frac{1}{2}$ तोला पोस्त के दाने मिलाकर खूब अच्छी तरह बारीक पीस लें। यह लुगदी बन जाएगी। इसमें इच्छानुसार गाय का असली (शुद्ध) घी एवं मिश्री मिलाकर हलवा बना लें। प्रातः थोड़ी मात्रा में कुछ दिन सेवन करें। पुराने से पुराने सिरदर्द से मुक्ति मिल जाएगी।

(ii) **पेटदर्द/उदरशूल की औषध**– सफेद कच्ची फिटकरी 2 माशा अच्छी तरह से पीस लें। इसमें 2 माशा असली शहद मिलाकर रोगी को चटा दें। पेटदर्द किंवा उदरशूल तुरन्त शान्त होगा– यह चामत्कारिक टोटका है।

आभार प्रदर्शन

हमारे परम सहयोगी मित्रवर ज्ञानी श्री करतार सिंह जी 'गढ'

(मालिक, कंवल फोटोस्टेट, चौक माता रानी, कुराली PH. 0160-2641274)

श्री करतार सिंह जी ज्ञानी, सन् 1992 ई. से हमारी 'शिरोमणि तिथपत्रिका' (पंजाबी) और 'श्री मार्त्तण्ड आलम जन्त्री' (उर्दू) के अनुवाद, पाण्डुलिपि–लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का श्रमसाध्य पूरा कार्य अत्यन्त आत्मीयभाव, तन्मयता, परिश्रम तथा निःस्वार्थभाव से करते चले आ रहे हैं; जिससे ये दोनों प्रकाशन प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर समृद्ध कलेवर में हमारे पाठकों को उपलब्ध होने लगे हैं। अब तक **श्रीमार्त्तण्डपंचांग** (हिन्दी) की ही संस्कार–समृद्धि की ओर हमारा अधिक झुकाव रहा । अतः ज्योतिष से सम्बद्ध विशेष लेखमाला तथा अन्य ज्ञानवर्धक स्तम्भ हम इसी (हिन्दी) पंचांग में प्रकाशित करते रहे हैं। उर्दू एवम् पंजाबी की इन जन्त्रियों में ऐसे लेख एवम् स्तम्भों को समाविष्ट करने से, हम अनुवाद आदि के लिए समय की कमी के कारण, आज तक कतराते रहे हैं । लेकिन अब **प्रियमित्र ज्ञानी करतार सिंह** जी की हमसे निःस्वार्थ घनिष्ठता एवम् उर्दू–पंजाबी भाषाओं में इनकी प्रशंस्य दक्षता के कारण इन दोनों प्रकाशनों को भी हम ऐसे लेख–स्तम्भों से श्री मार्त्तण्डपंचांग की ही भान्ति अलंकृत करने में अपने आप को समर्थ पा रहे हैं। विगत कुछ वर्षों से दिए जा रहे नए–नए आकर्षक, ज्ञानवर्धक विषयों से वर्धमान कलेवर वाली **'शिरोमणि तिथपत्रिका'** का श्रेय आपको ही है। इन उर्दू–पंजाबी जन्त्रियों के अनुवाद आदि के भारी उत्तरदायित्त्व को पूरी तरह निभाते हुए आप जैसे–तैसे समय निकालकर हिन्दी के श्रीमार्त्तण्डपंचांग की प्रूफ–रीडिंग आदि में भी हाथ बंटाने में हर्ष अनुभव करते हैं। अपने प्रति इस निःस्वार्थ सौहार्दातिशय के लिए हम सभी हृदय से ज्ञानी जी के ऋणी हैं। आप अपने व्यस्त जीवन के क्षणों में भी हमारे लिए प्रचुर पर्याप्त समय सहर्ष निकाल लेते हैं। आपके इस सौहार्दभरे स्पृहणीय सहयोग से हमारा प्रकाशन–कार्यभार काफी कुछ हल्का हुआ है। एतदर्थ हम आपके प्रति विनम्रतापूर्वक आभार प्रकट किए बिना सचमुच नहीं रह सकते।

आपका सहयोग भी हमारे लिए कम महत्त्वपूर्ण नहीं है

श्रीमार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली के प्रबन्धक, हमारे पूज्य पिताजी के प्रियशिष्य, हमारे अनुजकल्प *चि. प्रेमचन्द्र शर्मा;* चि. *श्रीकृष्णशर्मा,* M.A. (संस्कृत), वेदाचार्य, साहित्याचार्य; नालाबलोग (पंचकूला) के निवासी *चि. सुरेशानन्द शर्मा,* बी.ए., सुपुत्र श्री सुन्दरराम शर्मा तथा *चि. दिलबाग शर्मा* सुपुत्र श्री रामचन्द शर्मा, ग्राम एवं डा. सिनन्द (कैथल–हरि.) भी 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' (हिन्दी) की पाण्डुलिपि लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का काम बड़ी तत्परता, सावधानी, अपनापन और आदरभाव से करते हैं। इस पंचांग के प्रकाशनकार्य का हमारा भार इन युवाओं के स्वत्व भरे उत्साहपूर्ण सहयोग से हल्का हुआ है। एतदर्थ इनके निरन्तर प्रगतिमय, परमोज्जवल भविष्य के लिए हमारा इन्हें सस्नेह–आशीर्वाद है।

सम्पादक–मण्डल

ज्योतिष–शास्त्र में वर्षाकारक–योग एवम् जलवायु–विचार

लेखक–संयमी शर्मा,

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में जीवन किंवा प्राणियों का एकमात्र आधार अन्न है, लेकिन अन्न से भी अधिक महत्त्वपूर्ण जलतत्त्व है, जिसे ज्योतिषशास्त्र में वर्षा के आधार " **जलस्तम्भ** " के रूप में जाना जाता है। " **अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्न–संभवः**" अर्थात् अन्न से सभी प्राणियों की उत्पत्ति होती है, और पर्जन्य (जलवायु) से अन्न की उत्पत्ति होती है। स्पष्ट है कि– **'अन्न'** संसार का प्राणभूत तत्त्व है, वर्षा के अभाव में अन्न की उत्पत्ति–स्थिति कतई संभव नहीं। यही कारण है कि– जयोतिषशास्त्र के आधार पर वर्षाकाल में वर्षा–योगों का चिन्तन विचारपूर्वक करना आवश्यक समझा जाता है –

" अन्नं जगतः प्राणाः प्रावृट्कालस्य चान्नमायतनम्।
यस्मादतः परीक्ष्यः प्रावृट्कालः प्रयत्नेन।।"

वायु एवम् मेघों का चोली–दामन सा सम्बन्ध है। नभ–मण्डल में बादलों को वायु ही संचालित करती है, आकाश में मेघमाला को संभाले रखती है। अतः **'वायुमण्डल'** का वर्षा करने एवं स्थानीय वर्षा कराने में महत्वपूर्ण योगदान रहता है। प्रचण्ड वायु (तूफान) जंगलों (सड़कों के आस–पास लगे वृक्षों), मकानों एवं पर्वतों की शिलाओं को उखाड़ फैंकने में समर्थ है। लेकिन जब वर्षाऋतु में **आर्द्रा, आश्लेषा, उ. भा., पुष्य, शतभिषा, पू.षा. एवम् मूल** *नक्षत्रों [वारुण (जलमण्डल) के नक्षत्रों] से ग्रहों का योग होता है तो वर्षा होती है, साथ ही रोहिणी का वास यदि* ***'समुद्र'*** *में हो तो वर्षा बहुत होती है। रेगिस्तानी क्षेत्रों एवम् राजस्थान आदि प्रान्तों के सूखे क्षेत्रों में भी उत्तम वर्षा से राहत मिलती है। यदि रोहिणी का वास* ***'तट'*** *पर हो तो भी वर्षा पर्याप्त होती है।*

वर्षाज्ञान के लिए 'वायुमण्डल' का विचार भी अनिवार्य है। शास्त्रों के अनुसार पूर्व तथा उत्तर की वायु चले तो वर्षाकाल में शीघ्र वर्षा होती है। वायव्यकोण की वायु हवा के जोर के साथ वर्षा कराती है। ईशानकोण की वायु लोगों को आनन्दित करती है और जलवृष्टि भी कराती है। मुख्यतः श्रावण मास में पूर्वदिशा की ओर भाद्रपद में उत्तर दिशा की वायु सुनिश्चित रूप से अत्यधिक वर्षाकारक कही है। शेष महीनों में पश्चिमी–वायु अच्छी मानी है–

" श्रावणे मुख्यतः प्राच्यां नभस्ये चोत्तरो ऽनिलः।
वृष्टिं दृढ़तरां कुर्याच्छेष– मासेषु वारुणः।।"

ग्रहयोग से वर्षा–विचार का निर्णय

(1) बुध–शुक्र एकराशिरथ हों एवम् इन पर बृहस्पति की दृष्टि हो (क्रूरग्रहों की दृष्टि न हो) तो अच्छी वर्षा हो।

(2) गोचर में बुध–गुरु एक राशिस्थ हों, इन पर शुक्र की दृष्टि भी हो (किसी अन्य क्रूरग्रह की दृष्टि न हो) तो उत्तम वर्षा हो।

(3) गुरु–शुक्र एकराशिस्थ हों, बुध की इन पर दृष्टि भी हो, (भले ही क्रूरग्रहों की दृष्टि भी हो) तो (वर्षाऋतु में) महावृष्टि (भयंकरवर्षा) कारक कहे हैं। अनेकत्र बाढ़ भी आती है–

"जीव–शुक्रौ यदा युक्तौ क्रूरेणापि विलोकितौ।
बुध–दृष्टौ महावृष्टिं कुरुतः जलयोगतः।।"

किञ्च– "गुरु–शुक्रौ यदैकस्थौ कुरुत एकार्णवां महीम्।"

ये ग्रह जलराशिगत हों तो अनेकत्र बाढ़ (जलाप्लाव) से जनधनहानि के योग भी देखे गए हैं।

(4) यदि गोचर में बुध–गुरु एवं शुक्र– तीनों एकराशि में हों, परन्तु क्रूर ग्रहों की इन पर दृष्टि न हो तो महावर्षा के योग बनाते हैं–

"गुरु–बुध–दानवेन्द्रा एक राशिंगतास्त्रयः।
अदृष्टाः क्रूर–खचरैर्महावृष्टि–विधायकाः।।"

(5) जब शुक्र, शनि एवं मंगल एक राशि में हों एवं इन पर गुरु की दृष्टि भी हो तो निस्सन्देह वर्षा होती है--

" यदा शुक्रश्च भौमश्च मन्दश्चैकत्र–राशिगः।
तदा वर्षति पर्जन्यो जीव दृष्टाः न संशयः।।"

(6) गोचर में शुक्र का चन्द्र के साथ एकराशिसम्बन्ध हो अथवा मंगल का चन्द्र के साथ एकराशिसम्बन्ध हो अथवा दोनों चन्द्रराशि में हों तो भी महती वृष्टियोग माना गया है।

(7) सूर्य और गुरु एक राशि में हों एवं बुध, गुरु भी एक साथ हों तो वर्षा होती है। यह वर्षायोग तब तक चलता है, जब तक बुध गुरु में से कोई अस्त न हो–

"एकराशिंगतो जीवः सूर्येण सह वर्षति।
यावन्नास्तमनं याति योगो द्वन्द्वज्ञ–जीवयोः।।"

(8) शुक्र, बुध एकराशि में चल रहे हों और उस समय यदि वक्रगति से चलता हुआ बुध शुक्र को छोड़कर राशिपरिवर्तन कर ले (पिछली राशि में चला जाए) अथवा वक्री शुक्र बुध को छोड़कर पिछली राशि में चला जाए (राशि परिवर्तन कर लें) तो वर्षा की झड़ी लग जाती है। पांच या सात दिन तक वर्षा से कहीं बाढ़ की स्थिति भी बन जाती है–

"उन्मार्गगमनं कृत्वा यदा शुक्रं ब्रजेद् बुधः।
तदा वर्षति पर्जन्यो दिनानि पञ्च–सप्त वा।।"

(9) वर्षाऋतु में उदय किंवा अस्त होते हुए ग्रह पर यदि कर्कस्थ गुरु की विशेष या पादोन दृष्टि हो तो वर्षा अवश्य होती है।

नक्षत्रों के आधार पर वर्षा के योग

वर्षाविचारार्थ तीन विधाओं में नक्षत्रों का वर्गीकरण ऋषियों ने किया है, जो इस प्रकार है--

(i) आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पू. फा., उ. फा., हस्त, चित्रा एवम् स्वाती– ये दस नक्षत्र **'स्त्री नक्षत्र'** कहे गए हैं।

(ii) विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा– ये तीन नक्षत्र **नपुंसक नक्षत्र** माने गए हैं।

(iii) मूल, पू.षा., उ.षा., श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पू.भा., उ.भा., रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी एवम् मृगशिरा– ये चौदह नक्षत्र **'पुंनक्षत्र'** (पुरुष नक्षत्र) माने गए हैं।

इन स्त्री–पुरुष–नपुंसक नक्षत्रों के आधार पर दैवज्ञ वर्षा, गर्मी, वायुवेग, बादलचाल, आंधी, तूफान, निरभ्र (निर्मल) आकाश आदि एवम् जलवायु का फलादेश वर्ष में कहते हैं। **ध्यान दें–** यदि चान्द्रनक्षत्र **नर** हो तो ताप (गर्मी) का वातावरण रहेगा। यदि चान्द्रनक्षत्र **नपुंसक** तो महावात (तूफान) की संभावना होती है। यदि **स्त्री** नक्षत्र हो तो भी महावात (आंधी) चले। **स्त्री** एवम् **नर** नक्षत्र का योग बने तो अच्छी वर्षा हो। **नपुंसक** ग्रहों से आकाश निरभ्र (निर्मल) रहे। **स्त्री–नपुसक** ग्रहयोग में बादलचाल एवम् अल्पवर्षा का योग बने-- ऐसा जानें।

सूर्य–चन्द्र से वर्षाज्ञान

विशेष योग– अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पू.षा., उ.षा., श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती--ये नक्षत्र **'चान्द्रनक्षत्र'** हैं। रोहिणी, मृगशिरा, पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल-- ये सब सूर्य के नक्षत्र हैं-- इनसे वर्षा एवम् मौसम का विचार इस प्रकार किया जाएगा--

"सूर्ये सूर्ये भवेद्योगश्चन्द्रे चन्द्रे न वर्षति।
चन्द्रे सूर्ये भवेद्योगस्तदा वर्षति मेघराट्।।"

अर्थात्-- जिस नक्षत्र पर सूर्य हो वह नक्षत्र तथा चान्द्रनक्षत्र– इन दोनों के मेल का परिणाम इस प्रकार समझें --

यदि सूर्य के ही नक्षत्र हों तो वायुवेग रहे, यदि चन्द्र के ही नक्षत्र हों तो वर्षा का अभाव रहता है। चन्द्रनक्षत्र एवम् सूर्य नक्षत्र दोनों का योग हो तो वर्षा हो। जैसे-वर्षाकाल में सूर्य अपने नक्षत्र मृगशिरा पर चल रहा हो और पंचांगस्थ नक्षत्र आर्द्रादि पांच नक्षत्रों में से कोई नक्षत्र (अर्थात् चन्द्र नक्षत्रों में से कोई हो) तो वर्षा--योग बनता है– यह जानें।

वर्षा के कुछ अन्य अनुभूत योग

(1) ग्रहों के उदय–अस्त एवं राशिपरिवर्तन के समय वर्षा होती है।

(2) शनि एवम् मंगल के राशिचार (राशि बदलने) के समय, वक्री–मार्गी, उदयास्त होने पर और बुध, गुरु, शुक्र के उदयास्त के समय भी वर्षा होती है–

" उदयास्तंगतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः।
चलत्यंगारके वृष्टिस्त्रिधावृष्टिः शनैश्चरे।।"

किञ्च :–

" चलत्यंगारके वृष्टिरुदये च बृहस्पतौ।
शुक्रास्तसमये वृष्टिस्त्रिधावृष्टिः शनैश्चरे।।"

(3) गुरु, शुक्र, शनि – ये तीनों ग्रह अस्त होने से कुछ पहले ही वर्षा कर देते है–

"वारिपूर्णां महीं कृत्वा पश्चात् संचरते गुरुः।
शुक्रे वास्तमिते मन्दे त्रिविधोऽपि प्रजायते।।"

(4) बुध–शुक्र के अस्तमनसमय यदि चन्द्र जलराशि में हो तो पक्षान्त (अमा किंवा पूर्णिमा) के समय प्रायः वर्षा होती है।

(5) ग्रहों के उदयास्त, वक्र–मार्ग किंवा ग्रहों के जलराशि (कर्क, मकर, कुम्भ, मीन– इन जलप्रद राशियों) में संक्रमण के समय विशेष वर्षा के योग समझें–

*"उदयास्तमये मार्गे वक्रयुक्ते च संक्रमे।
जलराशिंगता खेटा महावृष्टिप्रदा सदा।।"*

इस प्रकार योगायोगविचार करके जो दैवज्ञ जगत्–हितार्थ वृष्टि–विषयक निर्देश करता है, उसकी भविष्यवाणी मिथ्या नहीं जाती–

" तस्य मुनेरिव वाणी न भवति मिथ्याम्बु–निर्देशे।।"

प्रसूति-लग्न विचार

मेष—जन्मसमय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवम् मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल, मलिन थे। ४। ११। १६। ४४। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे; इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप कराना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो १०० वर्ष जीवे।

वृष— माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आईं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर से पूर्व में सूतिका-स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। १। २८। ३३। ४४। ६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जाप और ब्राह्मणभोजन करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन— माता का सिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, सिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे। ४। १०। १४। ३८। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवाएं। यदि इन वर्षों से बचे, तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव से पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसुन आदि का चिह्न, देर से रोया। ५। २५। ४०। ५८। ६२— इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश के समय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह— माता का पश्चिम या पूर्व में सिर, मलिन या लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्मसमय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान। ५। १३। २८। ३६। ४८— इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और ब्राह्मणों को मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में सिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्ठान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्मसमय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया, घर के नैर्ऋत्यकोण में सूतिका-स्थान। ४। १६। २३। ३६। ५५— ये वर्ष कष्टकारक हैं। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला— माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्मसमय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहरकर अर्धशब्द करके रोया, घर के पश्चिमभाग में सूतिकास्थान। ८। १५। ३१। ३५। ६२। ६४— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रहों का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त या दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक, अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी २ आईं, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। छींक भी किया, दीर्घ केश, घर के पश्चिमभाग में प्रसवस्थान। ११। २८। ३८। ५२। ६२— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु—माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, पीत या रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान। २। १०। १८। ३१। ३८। ४२। ६७— इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मणभोजन श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर— माता का सिर दक्षिण में, ऊपर काला व जीर्ण कमजोर वस्त्र; गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्मसमय स्त्रियां २, पीछे से एक आई। दीपक हाथ में उठाया गया। बालक जन्मोत्तर अर्धशब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तरभाग में पुराना सूतिकास्थान। ५। १३। २७। ३६। ५७। ६३। ८७— इन कष्टकारक वर्षों से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के शुरु में शिवार्चन, मृतसंजीवनी आदि का जाप रखे।

कुम्भ—माता का सिर पश्चिम को, जीर्ण, धुम्रवर्ण या कुरूप वस्त्र, मधुर-शीत शाकादि का भोजन, कष्ट अधिक, जन्मसमय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आईं, उन में एक स्त्री गर्भिणी भी हो, दीपक स्वास्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्धशब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तरभाग में सूतिका-गृह। २। २८। ३३। ४८। ६४— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जयजप हितकारक है। इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन— माता का सिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र अल्प भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान। १। ८। १३। ३६। ४८— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह-शान्ति-हवन, मृतसञ्जीवनीमन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे। स्मरण रहे—अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें – वही बालक का जन्मलग्न जानना चाहिए, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

पितृपरोक्ष जन्मज्ञान— (१) जन्मलग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध-शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनि चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो— इन चारों योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना चाहिए।

जन्मकुण्डली में दिशाज्ञान— प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय-तृतीय ईशान, चतुर्थ उत्तर, पञ्चम-षष्ठ वायव्य, सप्तम पश्चिम, अष्टम-नवम नैर्ऋत्य, दशम दक्षिण, एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना चाहिए।

प्रसूतिस्थान से पाकशालादि का विचार

जन्मकुण्डली में सूर्य, मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना चाहिए। इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ मैला स्थान जानना चाहिए। **दोहा–** लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्न दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार।। केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें, जो बली (स्वराशि, मित्रोच्च, व मूलत्रिकोण राशि का) केन्द्रस्थान में स्वमित्र, शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो, उसकी दिशा में अथवा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है।

ग्रहों की दिशा–सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनि की पश्चिम और राहु, केतु की नैर्ऋत्य।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्– चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तैल ज़्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तैल कहें। यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तैल कहना।

सो०– तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशुजन्म तब आई, तब कही दीपकतैल नहीं। सित–शनि दशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशुजन्म में तब वाम, दीपकतैल सौं युक्त कहि।

लग्नादीपवर्तिज्ञानम्– जन्मलग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहें, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैःस्युरुपसूतिकाः– यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्रपर्यन्त जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करें, अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हो और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें, अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्न–चन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करें और स्वराशि, स्वनवमांश, स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करें, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के, अस्त होवें, उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान रखने योग्य है, कि– वह लग्न, चन्द्रांतर्गत ग्रह लग्न के भोगांश से सप्तमभावपर्यन्त होवे तो सूतिकागृह से बाहर समीप में, और सप्तमभाव से लग्न के भुक्तांशपर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना चाहिए। उन ग्रहों में जो शुभ ग्रह वहां हों तो, धर्मशील, सौभाग्यवती स्त्रियां कहें, अशुभ ग्रहों से विधवा, दुश्चरित्रा कहें।

शय्या–शिर व पादविचार

"लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषट्क्रान्त्येषु पादाः।" लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहें। अर्थात् १। २ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४। ५ में दक्षिण, ६ में नैर्ऋत्य, ७। ८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण, १०। ११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशान कोण की तरफ जानें। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना चाहिए। इन स्थानों में से जिन स्थानों में पाप ग्रह हों, वहां सूतिका के पलंग का पावा फटा, टूटा समझना चाहिए।

दो०– मीन–मिथुन–सिंह–तुला–मेष होय तत्काल।
अन्तरिक्ष भयो बालक, शेषे भूमि विशाल।।

अथचिह्नज्ञानम्– दोहा–षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामे कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण।। भानु तथा सौरी तनधन कुंज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाह।। सुहृद् भाव में कवि तव भौम वा सौरी लग्न। वामपाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न।। नौमे पांचे भृगु बसे तनु व चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे विह्न भणंद।"

प्रसवकष्ट दूर हो– प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकण्डा) की जड़ें लाकर, घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ॐ मुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर–माचिर स्वाहा।।"– इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र ही प्रसव होगा। अगर तीस का यंत्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख, धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि– पहले उपरोक्त मंत्र तथा यन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर सिद्ध कर लें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दोः– "घूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशि जो खीन। कण्टक शुभ खग ना बसै, वेगि ताहियमलीन।। बसैचन्द्रा द्वादसे अष्टभवन दो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव।।"

अथकाणयोगः– "तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसै त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुक्त भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय।। तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिकघर नाथ।। चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान।। भानु राहु दहनों नयन, बुधजन कहत बखान।।"

मूक योगः– "पञ्चमेश गुरुयुक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौ न भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय।। शुक्र त्रिके गुरु सिंह अज दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।।"

दुःखदयोग–रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पापयुक्त लग्नेश। जन्मसमय जाके परे ताको अंग कलेश।। पापयुक्त तनुभवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस।। पापग्रहयुत लग्नपति परै लग्न में आय। वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय।।

बन्धनयोग– क्रूर रहै धन नवम व्यय और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार।।

सर्पवेष्टितयोग– यदि अष्टमेश लग्न में राहुसहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित पैदा होता है।

यमल जन्मयोग–चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धनु के

उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहें। अथवा आधानलग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे– शनि, मंगल से ५/७/९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु–समय–विचार – जिन अरिष्ट योगों में मरणकाल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु कहें। अथवा– जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो, जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु होनी बताएं। अथवा चन्द्रमा जब लग्नराशि में आता है, तब मृत्यु का होना कहें। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योगयुक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मृत्यु कहनी चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके, तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इसलिए आयु का प्रथम विचार करें, फिर मृत्यु कहें।

सुखदयोग – अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह दो परे तो जानो सुख संग।। जन्मलग्न में उच्च ग्रह जो काहु के होय। मित्रदृष्टि ता पर परे सर्वसुखी नर होय।।

क्लीब (नपुंसक) योगः – दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्रभवन से रिष्फ षट् मन्द बसे क्लिब भान।।

कुष्ठयोग :– लग्नप बुध कुज शशियुते राहुयुक्त या केतु। श्वेतकुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु।। भौम भास्कर मन्दयुक्त रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अतिरुष्ट।। जलजगंडयुत, चन्द जो ग्रन्थिगंड कुजसाथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनुनाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयोरोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।।

केमद्रुम योग :– आगे–पीछे चन्द्र के जो ना परे ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय।। उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग् केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय।।

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है भूलि न व्याहेउ कोय।। जाके कुज दशम बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु। क्रूरयुक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पापदृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहै पति को तजि तमारि। छटे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवें भवन में सो पति करै है भंग।। राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दो या तीन।। द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम।। पापग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नासे कुलो दुवो भाषत कविकुलवृन्द।। सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृग बसै बुधजन कहत विचारि।

वैधव्य–विषकन्यायोग :– चौ.–रविवार द्वितीया जो होय। आश्लेषा ताहि दिन में जोय।। १ ।। कृत्तिका होय शनिश्चर वार–साते तिथि को करो विचार ।। २ ।। होय शतभिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार।। ३।। इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जाने सोय।।४।। जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय। एक पाप ग्रह नभ (१०) में जोय ।।५।। शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रैह मानो। ता कन्या को विधवा जानो।। ६।। अश्लेषा द्वितीया को होय। मंदवारयुत लीजो जोय।।७।। परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार ।। ८।। रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ।। ९।। ऐसो योग लखी जो परै। तो कन्या को विधवा करै ।। १०।। दो0– धर्मसदन में भूमिसुत जन्मसदन शनि जान। सूर्य होत सुतसदन में कन्या विधवा मान।। ११।।

वैधव्य–विषकन्याभंगयोग :– जन्मलग्न या चन्द ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय।।

काकवन्ध्यादि योग :– ज्ञे अष्टमे काकबन्ध्यामन्दार्कावष्टमे बन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या।।

स्त्रीणां राजयोगाः – चौपाई– केन्द्रधाम नभगा शुभ होई नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके मन प्रसन्न होई है सुत वाके–चन्द्रज तुग बसे तनु जाई लाभ धन गुरु आवे धाई। सो तिय होय नृपति की नारी जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षड्वर्ग शुद्ध गुरु होई शशि दृग् केन्द्र में भवन में होई।। ऐसे योग जन्म सुकुमारी रानी होय सदन धनमारी।। **दोहा–** कर्क चन्द्रमा सातवें जीवदृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरयुत ताकौ पति नृप शूर।। लाभभवन सित चन्द जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन।।

स्त्रीणां पुत्रभावविचार :– पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्।।

अशुभ प्रसवमास :– कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊँटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चे जन्में तो 6 मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन के समय घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र हो। स्मरण रहे कि– यहां सर्वत्र सौरमासग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर, व्याहृतिमन्त्रों से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करें, बच्चा जन्मे तो कार्तिकशान्ति करने से शुभ होता है।

त्रिखलजन्मफल :– यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लडका पिता को भय, धनहानि आदि कष्टप्रद होते हैं। कृपणता छोडकर, त्रिखलशान्ति करें तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चान्दी, तांबा) दान करें।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दान्त निकले हों तो माता–पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दात से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, प्रथम–बार ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। पहले मास मे दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पाचवें में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, सातवें में पितृसुख, आठवें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में निकले तो धनी हो।

अथैकनक्षत्रजनन–फलम् :– वृद्धगर्ग कहते हैं, कि यदि भ्राताओं व पिता–पुत्र, माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। यहां स्वर्णदान से कल्याण होता है।

जन्मकुण्डली से विशेष विचार

लघुभ्राता का जन्मसमय जानना :– (१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़ें, जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु आए तो भाई या बहन का जन्म होता है। (२) यदि भ्रातृ–प्रतिबन्धक योग न हो तो तृतीयेश, तृतयस्थ ग्रह की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना

(1) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटाएं, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है, तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेशस्पष्ट में से तृतीयेशस्पष्ट घटाएं, शेष में से दशमेशस्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटाएं– शेष राशि में जब गोचर का शनि आता है तब, भ्रातृकष्ट होता है।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम– इन चारों स्पष्टों को जोडकर, जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है, उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काणराशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृकष्ट जानिए।

माता की मृत्यु का समय जानना :– जन्म के सूर्य में से चन्द्रस्पष्ट को घटाएं, शेष की राशि में या त्रिकोणराशि में या उस शेष राशि के नवांशराशि में जब गोचर का शनि व गुरु होगा, तब माता की मृत्यु का समय जानें।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

स्थानम्	शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्योः	जंघाः	जान्वोः	पादे
घटी	४	६	५	५	५	४	९	४	४	
फलम्	पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	

अथ कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल (१/२/३ च.)	आश्लेषा (२/३/४ च.)	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च.)
फलम्	ससुरहानिः	सासनाशः	ज्येष्ठनाशः	देवरनाशः

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः।।

तिथिगण्डान्त– पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरू की दो–दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म, यात्रा, विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

कोष्ठकोक्त ये छः नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक अथवा बालिका माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र का छः मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए; तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणों में जन्मफल

मूल पाद	फल	आश्लेषा पाद	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

अथ मूल पुरुषचक्रम्

स्थानं	मूर्ध्नि	मुखे	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्योः	जान्वोः	पादयोः
घटी	५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६
फलम्	राजा	पि. मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.

मूलजनने वृक्षविभागफलम्

विभाग	मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
घटी	७	८	१०	११	१२	५	४	३
फल	मूलनाश	वंशनाश	मातृ–क्लेश	मातुल–नाश	मन्त्री–पद	मन्त्री–पद	विपुल–लाभ	अल्प–जीवन

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आश्वि. मा. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२/५/८/११	३/६/९/१२	१/४/७/१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार– दोनों प्रकार से भूमि पर आए तो महाभयप्रद होता है। यहां अन्य एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी–शनि–भौम–समन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातःसंहरते कुलम्।। यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्।। दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गण्डातिगंडे च परिघे यमघण्टके।। ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्।। यथा सर्पविषं चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते।। रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निसृतेन जलेन हि।। बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्।। विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः।।

अथाभुक्तमूलविचारः– ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी (किसी के मत से एक घटी) एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है।

इस समय जो बच्चा जन्म ले, उसका परित्याग कर दें या आठ वर्ष, असमर्थ हों तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे।

धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अंन्यथा नाशमाप्नोति चामुक्तर्क्षे विशेषतः।।

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

समय	प्रातः	दिन में	रात्रि में	सन्ध्या में
नक्षत्र	सभी गण्डमूल नक्षत्र	मूल, ज्ये.	मघा, आश्ले.	रे. अश्वि.
फल	पशु हानि	पिता को भय	माता को भय	शरीर को भय

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रह फलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन	2	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी,गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज	3	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत्	4	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहानि	दुःखी
सुत	5	सुतहानि	धनी,पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु	6	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री	7	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहानि
मृत्यु	8	अल्पायु	योगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म	9	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म	10	शूर	तेजयुक्त	तेजस्वी	कीर्तिमान्	सम्पत्तिवान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहीन
लाभ	11	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय	12	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	दरिद्र	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रहफलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	क्रोधिनी	गतायु	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	बन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन	2	दरिद्रा	बहुधना	बन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्ता
सहज	3	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत्	4	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहानि
सुत	5	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकान्तियुता	सुगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु	6	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति	7	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु	8	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म	9	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	बन्ध्या	बन्ध्या	शोकयुक्ता
कर्म	10	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ	11	सधना	गुणज्ञा	सुलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय	12	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिणी

अश्विनीजातस्य फलम्– अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्रीतुल्य, चतुर्थ में नृपतिसमान होता है।

मघाफलम्– मघा के प्रथमचरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन, विद्यालाभ होंगे।

ज्येष्ठापादफलम्– प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। "ज्येष्ठाद्यपाद जो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा।"

रेवतीपादफलम् – रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृपसमान, दूसरे में मंत्री या मुख्तार, तीसरे में सुख–सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ मातृसुखनाश–योग– (१) पाप ग्रहयुक्त चन्द्रमा सातवें भाव में हो, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र हो, (३) पापग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे–सातवें पापग्रह हो, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य और लग्न में मंगल हो, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो– इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप–दान करना चाहिए।

पितृनाशयोग– (१) सूर्य, मंगल दसवें या नवम में गए हों, (२) दशमेश रवि, मंगल से युक्त हो, (३) शत्रुराशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो– इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाशयोग– भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संग त्रिक होय। जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय।।

सन्तानसुखनाशयोग– गुरु ते पंचम गेहपति, जाय परे त्रिकभाव। ऐसा योग जो लखि परे ताकि पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे त्रिकधाम। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोग– शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हों तो स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोग – सहज सप्तम धनसदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई।। सिंहलग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राहुसंग सप्तमभाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।।

गोचरग्रहाणां द्वादशभाव–फलबोध–चक्रम्

भाव→ ग्रह↓	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धनलाभ	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धनलाभ
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्भनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

अथग्रहाणामेक भोगफल–समयादि ज्ञानम्

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा. के.
एकार्थभोग	मास 1	दिन 2¼	मास 1½	मास 1	मास 12	मास 1	मास 30	मास 18
फलसमयः	आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते
गंतव्यराशेः प्राक्फलम्	मास 5	घटी 3	दिन 8	दिन 7	मास 2	दिन 7	मास 6	मास 3

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थ धारणाय मणयः

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवालम्	पन्ना	पुष्परागः	हीरा	नीलमः	गोमेदम्	रौप्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	लोहम्	वैडूर्यम्	लाजवर्तः	लाजवर्तः

जारजयोग – भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न।। रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार।।

पूतनाग्रस्तलक्षण एवं शान्ति– बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा बैठे–बैठे गिर पड़े, या यूं मालूम हो कि–किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि– उसे महा पूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लाभादि के वश में आकर वनदेवता या नागदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्र अवस्था में ही बालक के साथ सो जावे तो बालक्रांता नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल और फूलमाला पहिनाकर बाहिर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है। सिर खुले, जूठे बाल को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्प रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता–खेलता गिर जाए अथवा उसे उल्टी हो या हाथ–पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मल–मूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है। जो नित्यकर्म संध्या–वंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं, जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि, धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

उद्वर्तनम्– दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज–इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते, मुलट्ठी, लसूड़े के पत्ते– इनका काढ़ा बनाकर स्नान कराए, तो यह रोग दूर होगा।

चेष्टाः– जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आए, डर लगे, मन में उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जाए–उसे ग्रहाविष्ट जानना चाहिए

सर्वबालग्रह–शान्त्यर्थं देवालये ज्योतिदर्शनं निवासश्च तत्रारात्रौ – "ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव।।"– इत्यस्य जापः, ततोऽनेनैव मन्त्रेण सदीप दधिभाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः।।

अथ बालरक्षाविधि (प्रयोगसारे)– यदि दुष्टदृष्टि (नज़रादि दोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग, कष्ट हो जाए तो– "ॐ वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः। रक्षतु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।। १।। कृष्ण रक्ष शिशुं शंख–मधुकैटभ–मर्दन। प्रातः–सङ्गव–मध्याह्न–सायाह्नेषु च सन्ध्ययोः।। २।। महानिशि सदा रक्ष कंसारातिं निषूदन। यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि।। ३।। बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महामयान्। त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्।। ४।। – इन चारों मंत्रों से अभिमंत्रित की गई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक को कष्ट दूर होगा।

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है	मूर्ति–निर्माणार्थ द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलि–विधान व समय	स्नान, पूजा, मार्जनमंत्र	धूप
प्रथम दिन–मास–वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5, आटे के सतिए 5, कपूर, लोहवान,	श्वेतभात, 5 पूर्ण पोली (सुहाली) 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।	राई, खस, आक के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्बपत्र, गोघृत
द्वितीय दिन–मास–वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	10 दीपक, 10 झण्डी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिए 10,	भात एक सेर, आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस, संध्यासमय, पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्थानाद्राज्ञया स्वाहा।	
तृतीय दिन–मास–वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्तचन्दन, रक्तपुष्प, श्वेत–ध्वजा, दीपक 10, गेहूं के आटे के सतिए 10,	एक सेर लालभात, आधा सेर पूर्ण पौली, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गोश्रृंग, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
चतुर्थ दिन–मास–वर्ष में मुख मंडिका	तिल–चूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा 5, दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प,	भात, सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्ण पौली, सायं, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन–मास–वर्ष में विडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेत ध्वजा 5, गेहूं के आटे के सतिए,	श्वेत भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखें,	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं मुञ्च रक्षा कुरु कुरु बलिं गृहाण अस्त्र ठ ठ चामुंडे सर्वारि चण्डिके ठ. ठ स्वाहा।	
षष्ठ दिन–मास–वर्ष में षट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 5 मिठाई, 5 सुहाली, 7 पूड़ियां, 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर रखें,	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत।
सप्तम दिन–मास–वर्ष में कालिका	चावल का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 7 पूड़िया, सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन–मास–वर्ष में कामिनी	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5,	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरासाग, छागमांस, संध्या में चौरास्ते पर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
नवम दिन–मास–वर्ष में मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प, 5 दीपक, 5 रंग की झंडी 5,	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखें	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हन् हन् हु फट् स्वाहा।	गोश्रृंग, लहसुन, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशम दिन–मास–वर्ष में रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, 25 झण्डी, 25 दीपक, 25 सतिए,	गुड़ के घी भुने चावल, गोघृत, सायं, दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन् हु फट् स्वाहा।	
एकादश दिन–मास–वर्ष में सुदर्शना	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, 25 दीपक, 25 सफेद झण्डी, 25 आटे के सतिए,	श्वेतभात, 7 पूड़े, सुहाली 7, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास, वज्रहस्ताय ज्वल ज्वल दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन–मास–वर्ष में अद्भुता	चावलों का आटा एक सेर	13 दीपक, 13 झण्डी, 13 सतिए आटे के,	सुहाली, पूड़े 7, पूड़ियां 7, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन् हन् शोषय शोषय मर्दय मर्दय तापय तापय हुँ हुँ हुँ हन् हन् दुष्टानां ह्रां ह्रां स्वाहा।	

अथ बालपूतना–विधान

यहां लिखे बाल–कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखारस्थान– स्पर्श निम्न–लिखित मन्त्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान–विधि तीन दिन निरंतर करें। चौथे दिन पलाश, अश्वत्थ, विल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ– इनके पत्रों को उबालकर बालक को मंत्र–पाठपूर्वक स्नान करावें। तदनन्तर कल्याणार्थ यथाशक्ति भिक्षुकों को तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान भोजन कराएं। तदनन्तर "ओं द्यौः शांतिरन्तरिक्ष..........." इत्यादि शांतिमंत्रों व मार्जनमंत्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखारस्थान स्पर्शपूर्वक यह मंत्र पढ़ें– " ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर। ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।

"ओं सर्वमातर इमं ग्रहं संहरंतु हुं रोदय–रोदय, स्फोटय –स्फोटय स्वाहा। गर्ज–गर्ज सः गृहाण–गृहाण आमर्दय– आमर्दय ह्रीम्–ह्रीम् हन् हन् एवं सिद्धिरुद्रो ज्ञापय स्वाहा।।"

अथ नक्षत्र–कष्टावली

रोग–नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद् रोगदिन–संख्या				रोगशान्त्यर्थ जपनीय मन्त्र	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
		1	2	3	3		
अश्विनी	भोजनदान	9	11	1	20	मृत्युञ्जयमंत्र	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य दें।
भरणी	गो–अन्नादि दान	0	80	40	11	यमायतवेति मंत्रः	हाथी के मुख में तिल चावल दें।
कृत्तिका	स्वर्णदान	9	11	16	28	अग्निर्मूर्धेति	कछुए के मुख में घी दें।
रोहिणी	घृतदान	3	9	18	30	ब्रह्माययेति	सर्प को दूध–दही खिलाएं।
मृगशिरा	तिलदान	9	5	7	10	इमं देवेति मंत्र	खरगोश को दूध पिलाएं।
आर्द्रा	गोदान	0	18	0	0	नमस्ते रुद्र इति मंत्र	बकरे के मुख में रक्त डालें।
पुनर्वसु	पीतलदान	7	14	2	21	अदितिर्द्यौरिति मन्त्रः	सूअर को धान्य खिलाएं।
पुष्य	तैलान्नदान	6	7	10	21	बृहस्पतेति मन्त्रः	बकरे के मुख में दही डालें।
आश्लेषा	गो–अजादि दान	0	0	41	0	नमोस्तुसर्पेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलाएं।
मघा	वस्त्राज्यदान	15	7	17	20	पितृभ्य इति मन्त्रः	बन्दर को तिल उड़द खिलाएं।
पू.फा.	भोजनदान	0	15	0	30	भगम्प्रणेति मन्त्रः	ऊंट के मुख में शहद दें।
उ.फा.	अन्नदान	7	14	7	60	दध्यावद्धेति मन्त्रः	गाय को शाक खिलाएं।
हस्त	तैलदान	15	17	15	0	उदत्यं जातवेदेति मन्त्रः	भैंसे को कमल के फूल खिलाएं।
चित्रा	दुग्धदान	11	9	9	16	त्वष्टा तुरगेति मन्त्रः	बाघ के लिए तगर–धतूरे के फूल वन में रखें।
स्वाती	गौघृतदान	60	17	30	0	वायोरग्नेति मन्त्रः	भैंसे को गुड़, चावल खिलाएं।
विशाखा	गौ–स्वर्णदान	15	0	4	13	इंद्राग्नी इति मन्त्रः	बाघ के मुख में गुड़, भात की बलि दें।
अनुराधा	गौघृतदान	60	12	36	30	नमो मित्रेति मन्त्रः	बकरे को कुल्थीसहित भात, गुड़ दें।
ज्येष्ठा	तिलदान	69	9	6	4	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्रः	बंदरों को गुड़, तिल डालें।
मूल	रौप्यपात्रदान	0	9	15	6	माता पुत्रेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलाएं।
पू.षा.	गोमुक्तादान	0	15	24	10	आपोधर्मेति मन्त्रः	कछुए के मुख में नागरमोथे की बलि दें।
उ.षा.	भोजनदान	30	24	26	16	विश्वेदेवेति मन्त्रः	गौ को धान्य डालें।
श्रवण	श्रीफलदान	60	24	6	9	विष्णोरराटेति मन्त्रः	भैंसे के मुख में रक्त, मीठा की बलि दें।
धनिष्ठा	अश्वान्नदान	15	4	20	21	वसोः पवित्रेति मन्त्रः	मनुष्य के मुख में दहीं, अन्न की बलि दें।
शतभिषा	भोजनान्नदान	4	45	3	22	वरुणस्तम्भेति मन्त्रः	गौ को चावल खिलाएं।
पू.भा.	भोजनदान	0	12	21	19	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	कौए के मुख में फल की बलि छोड़ें।
उ.भा.	अन्नदान	10	3	9	15	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	गाय को चावल खिलाएं।
रेवती	फलदान, कन्यापूजन	18	10	9	20	पूषन्नयेति मन्त्रः	हाथी के मुख में पूरी–पूओं की बलि छोड़ें।

नोट– इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मंत्र पृथक्–पृथक् लिखा है, उसे न जप सकें तो महामृत्युंजय मन्त्र ही जपें। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है, उस चरणानुसार कष्ट व दिन जानें, शून्य से विशेष भय जानें। दान, जप करे। जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है, उसे यहां कष्टावली में रोगनक्षत्र का नाम दिया गया है। रोगनक्षत्र को जानकर, इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्त्यर्थ बलिदान' वाले कॉलम में घोड़ी, हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलिद्रव्य देकर धूप–दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें– ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	आश्लेषा

जन्मे सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गए गए ना बुहरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय

(1) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़ें। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों की त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब पुत्र–संतान उत्पन्न होती है।

(2) चंद्र, लग्न, गुरु– इन तीनों से पंचमस्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में पुत्रसंतानोत्पत्ति होती है।

विवाह (स्त्रीसुख) होने का समय

(1) जन्मलग्नेश, सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो, उस राशि में जब गोचर का गुरु हो, तब विवाह होता है।

(2) चन्द्रराशीश और अष्टमेश को जोड़ने पर प्राप्त राशि में जब गोचर का गुरु आए, तब विवाह होता है।

(3) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो, उस राशि से द्वितीयभाव में जब गोचर में गुरु–चन्द्र होते हैं, तब विवाह होता है।

(4) शुक्र–चन्द्र व सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय

(1) गुलिक स्पष्ट से सूर्य स्पष्ट घटाएं, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो, तब पिता की मृत्यु होती है।

(2) सूर्य से 1/2/7/12 भाव में जो पापग्रह हो, उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

...आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलिद्रव्य देकर धूप–दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें– ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान [illegible]

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(1) रोग के शुरुआती दिन में जन्मराशि, नक्षत्र, लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र या यमघंट कुयोग हो।

(2) सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी, अनुराधा नक्षत्र हो।

(3) सोमवार को आर्द्रा या उ. षा. नक्षत्र हो।

(4) मंगलवार को कृत्तिका, मघा व शतभिषा या नन्दा (1/6/11) तिथि हो।

(5) बुधवार को अश्विनी, विशाखा या भद्रा (2/7/12) तिथि, आश्लेषा हो।

(6) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (3/8/13) तिथि व मघा, हस्त हो।

(7) शुक्रवार–अष्टमी व अश्विनी या आश्ले., श्रवण या रिक्ता (4/9/14) तिथि, आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(8) शनिवार को नवमी व पू. षा. या हस्त व पू. भा. या पूर्णा (5/10/15) तिथि व भरणी हो।

(9) सूर्य, मंगल, शनि वारों को 4। 6। 9। 12/14/30 तिथि, भरणी, कृत्ति. आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वा. 3, विशा., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र हों तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च– जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना चाहिए। क्योंकि– बिना मारकेश आए मृत्यु तो होती ही नहीं। हां– ऐसे योग में कष्ट ज़रूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा मृत्युञ्जयजप करना कल्याणप्रद है।

बाल–रक्षार्थ धूप

राई, लाख, नीम के पत्ते, बांस का छिल्का, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल, अगर, गाय का घी–इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय "खुं खुर्दनं हुं फट् स्वाहा–" इस मन्त्र का उच्चारण करें।

अथ रोगत्रिनाड़ी चक्रम्

प्रथमा	आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.
मध्या	पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू.भा.	अश्वि.	रो.
अन्त्या	पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.

सूर्यनक्षत्र, दिन, जन्म और नाम नक्षत्र रोगत्रिनाड़ीचक्र में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है। मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले, उसी दिन निःसन्देह रोगी की मृत्यु कहनी चाहिए। यह रोगत्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय वर्जित करना चाहिए।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिननक्षत्र से नामनक्षत्र 5/13/23 संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार 10/18वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़) होती है। काल के मुख में दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो, उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की हालत मृत्युपर्यन्त होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह–युद्ध में जाने पर काल के मुख–दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

कालांगचक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अंङ्गविशेष में पीड़ा, कष्ट, घाव, फोड़ा आदि चर्मविकार किंवा वायु–विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगाकर, निम्नलिखित कालांगचक्र में दिए भावों के अनुसार उस पीड़ित भाव को देखें। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की संभावना है। शान्ति के लिए उस ग्रह की शान्ति कराएं। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभग्रहदृष्ट हो तो रोग (कष्ट) शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

कालांगचक्र

भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंग	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	वस्ति/मूत्राशय	लिङ्ग/गुदा	जंघाएं	घुटने	पिण्डलियां	पाद–युगल

तिथिकष्टावली यन्त्रम्

तिथि	तिथीश	कष्ट–दिन	बलि	दान
1	अग्नि	12	शर्कराज्यबलि	घृतदान
2	ब्रह्मा	5	पायसबलि	भोजनदान
3	काम	7	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
4	गणेश	16	मोदकान्नबलि	मूंगादान
5	सर्प	21	पायसबलि	दुग्धदान
6	स्कन्द	12	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
7	सूर्य	8	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
8	ईश्वर	13	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
9	दुर्गा	18	मिष्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
10	यम	25	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
11	विश्वेदेव	7	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
12	विष्णु	7	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
13	काम	10	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
14	शिव	60	मिष्ठान्नबलि	क्षौद्रशाकभोजन
15	चन्द्र	3	दध्योदनबलि	रौप्यदान
30	पितर	18	अपूपकान्नबलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली–यंत्रम्

वार	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	5	पायसबलि, सूर्यदान
चं.	गौरी	8	नानाभक्ष्यबलि, चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	5	दुग्धबलि, भौमदान
बु.	विष्णु	7	मुद्गान्नबलि, बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	5	घृतपक्वबलि, गुरुदान
शु.	इन्द्र	7	तिलयवाज्यमधुबलि, शुक्रदान
श.	यम	15	माषान्नबलि, शनिदान

ग्रहगोचराद्यैर्दशा-क्रमाद्यैर्ग्रह-कृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रहाणां दान-पदार्थाः												जपसंख्या	जपनीयमन्त्राः	दानसमय	हवनसमिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तपुष्प	मूंग, रक्तगाय	रक्तचन्दन	7000	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	शंख	श्वेतपुष्प	कर्पूर, श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	11000	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तकनेर	कस्तूरी, रक्तबैल	रक्तचन्दन	10000	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घटी 2 शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	हाथीदांत	सर्वपुष्प	कर्पूर, शस्त्र	फल	19000	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घटी 5 शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	हल्दी	पीतपुष्प	पुस्तक, घोड़ा	पीतफल	19000	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	सन्ध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	सुगंध	श्वेतपुष्प	दधि, श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	16000	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्योदय	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुल्थी	तेल	कृष्णवस्त्र	कस्तूरी	कृष्णपुष्प	कृष्णांग भैंस	उपानह	23000	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	खड्ग	कृष्णपुष्प	कंबल, घोड़ा	शूर्प	18000	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रि	दूर्वा
केतु	लहसुनिया	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	नारियल	धूम्रपुष्प	कंबल, बकरा	शस्त्र	17000	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रि	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	कपूर	श्वेतपुष्प	मसरी, श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुन्थेशवत्	मुन्थेशमन्त्रः	मुन्थेशकाल	मुन्थेशवत्

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति का कोई ग्रह गोचर से या दशा–अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत–विधान ब्रह्मचर्यपूर्वक करने से अशुभ फल की निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि–सूर्य का व्रत रविवार को करें। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से आरम्भ करके वर्षपर्यन्त तीस या कम से कम 12 व्रत करें। उस रोज केवल गेहूं की रोटी, घी और लालखाण्ड के साथ या गेहू का गुड से बना दलिया या हलवा इलायची डालकर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिल्कुल न खाएं। भोजन से पूर्व हो सके तो लालवस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज–मन्त्र की माला का जप करें। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत, रक्तपुष्प दूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करें। अपने मस्तक में लालचन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण को भोजन कराएं। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणत हो जाएगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्ररोग, चर्मरोग एवम् अन्य शारीरक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्यशान्ति का सरल उपचार :–लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग करें– जैसे– लालचादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि– चन्द्रमा का व्रत शुक्ल–पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार को प्रारम्भ करके 54 या 10 व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके ऊपर चक्रलिखित बीज–मन्त्र की 11 या 3 माला जप करें। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करें। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही–चावल, घी, खाण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके खीर–खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन कराएं। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों से शान्ति होती है। विशेष कार्यसिद्ध्यर्थ भी यह पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्रशान्ति का सरल उपचार :– सफेद जुराब, रुमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दहीं का उपयोग, चान्दी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके 21 या 45 व्रत करने चाहिएं। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लालवस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 1, 5, या 7 माला जप करें। नमक सेवन न करें, यह ज़रूरी है। उस दिन गुड से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी खाएं। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलाएं। मंगलवार का व्रत ऋण–हर्ता तथा सन्तति–सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके लालवस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करें। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन कराएं।

मंगलशान्ति का सरल उपचार :– लालरंग की वस्तुओं का उपयोग, रात को लालवस्त्र पहनें, तांबे के बर्तनों का प्रयोग, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से प्रारम्भ कर 21 या 45 व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 17 या 3 माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमकरहित, खाण्ड–घी से बने पदार्थ, जैसे– मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करें। फिर तीन तुलसीपत्र, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खाएं। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन–पूर्णाहुति करके छोटे बच्चों या अन्नहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन–लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्यलाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रहजन्य नेष्टफल से मुक्ति मिलती है।

बुधशान्ति का सरल उपचार :– हरा रंग, हरे वस्त्र तथा शृंगार की अन्य वस्तुएं, हरा रुमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी का व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्षपर्यन्त या 16 व्रत करें। उस दिन पीतवस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 11 या तीन माला जप करें। पीतपुष्पों से पूजन–अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की घी–खाण्ड से बनी मिठाई, लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खाएं और इन्हीं का दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डूभोजन कराएं। स्वर्ण, पीत–वस्त्र, चने की दाल आदि का दान करें। यह व्रत विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्याप्रद है। धन की स्थिरता तथा यशवृद्धि करता है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पतिशान्ति का सरल उपचार :– पीले वस्त्र, रुमाल आदि, पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ कर, 31 या 21 व्रत करें। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 3 या 21 माला जपें। भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथाशक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, तब हवन–पूर्णाहुति के बाद खीर–खाण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मणबटुकों को खिलाएं। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्रीसुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्रशान्ति का सरल उपचार :–सफेद वस्त्र, सफेद रुमाल, सफेद फूल धारण करना आदि, गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिवपूजन।

शनि के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से आरम्भ करे। व्रत 51 या 31 करने चाहिएं। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 19 या तीन माला का जप करें। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग), गङ्गाजल तथा शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल–वृक्ष की जड़ में डाल दें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पंजीरी, कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दें तथा तैलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन–पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उड़द तथा देसी (चमड़े का) जूता तेल लगाकर दान करें। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक परेशानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह–मशीनरी, कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनिशान्ति का सरल उपचार :– घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रुमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहु–केतु के व्रत की विधि :– शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से ही यह व्रत भी शुरु करना चाहिए। व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीजमन्त्र की माला जपें। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर, पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी, समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें। इस व्रत से शत्रुभय दूर होता है तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहु–केतुशान्ति का सरल उपचार :– नीला रुमाल, नीला घडी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्त्यर्थ स्नानविधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।।
तथा स्नान–विधानेन ग्रह–दोषः प्रणश्यति।।

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी–कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारु, मुलट्ठी, लाल फूल, केसर पानी में उबालकर स्नान करें। चन्द्र शान्त्यर्थ सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबालकर स्नान करें। ऐसे ही मंगलव्रत के दिन अनन्तमूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल–ये सब उबालकर; बुधव्रत के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा; गुरुव्रत के दिन भारंगी, मुलट्ठी, श्वेत सरसों, मालती पुष्प; शुक्रव्रत के दिन इलायची, मजीठ तथा शनिव्रत के दिन काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमरवेल, सफेद बिनौला– उबालकर स्नान करें। ऐसे ही राहु–केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहबान उबालकर स्नान करें, तो ग्रहशान्ति मिलती है।

नोटः– स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो, तो जो वस्तु मिले उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रह किंवा सर्वविधशान्ति के लिए सामान्य औषधस्नान

लाजवन्ती (छुई–मुई), कूट, खिला, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि, लोध– इन औषधियों के जल एवं सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीडा नष्ट होती है तथा पूर्व जो दान कह चुके हैं, उनके करने से शान्ति मिलती है। गुरुवचन, देवता, ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीडा नहीं करते।– (श्रीपतिः)।

शनिविचार-अथ लघुकल्याणी (ढैया) फलम्ः-

कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः
बन्धुविरोधं देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्।
मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि–वह्नेर्भयं
लोहशस्त्रभयं सदैव–असुखं कुर्यादसौ सर्वदा।। १।।

वृहत्कल्याणी साढेसाती फलम् :–.......राशौ द्वादश (12) मूर्ध्नि जन्म (1) हृदये पादौ द्वितीये (2) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्।। हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम् , रामात्रृद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा।। २।।

सप्तधान्य- उड़द, मूंगी, गेहूं, चने, जौ, धान्य (तंडुल), कंगनी।

अष्टगंध-स्याही :-अगर, कस्तूरी, कुंकुम, कर्पूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन, देवदारु।

अष्टगंध-धूप- अगर, छरीला, जटामासी, कर्पूर–कचरी, गुग्गुल, देवदारु, गोघृत, सफेद चन्दन।

नक्षत्र–राशिज्ञान–चक्र

राशि→	मेष			वृष			मिथुन		
नक्षत्र→ चरण ↓	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
प्रथम चरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के
द्वितीय चरण	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को
तृतीय चरण	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह
चतुर्थ चरण	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०

राशि→	कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र→ चरण ↓	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
प्रथम चरण	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे
द्वितीय चरण	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो
तृतीय चरण	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०
चतुर्थ चरण	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०

राशि→	तुला			वृश्चिक			धनु		
नक्षत्र→ चरण ↓	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.
प्रथम चरण	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे
द्वितीय चरण	०	रे	तू	०	नी	या	यो	धा	०
तृतीय चरण	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०
चतुर्थ चरण	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०

राशि→	मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्र→ चरण ↓	उ.षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
प्रथम चरण	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय चरण	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय चरण	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ चरण	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

राशिज्ञाने विशेषः— नक्षत्र व राशि में 'श' और 'स' तथा 'व' और 'ब' में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें— संयोगजाक्षरे नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्।

ध्यान दें — नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा हो तो 'ङ' की जगह 'घ', 'ञ' की जगह 'दु', तथा 'ण' की जगह 'पू' से प्रारम्भ करें। ऐसा करने से भेद नहीं होता।

"बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर–विशारदैः।। प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शाब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णे या मात्रा स स्वर एव हि।।

अथ जन्मराशि-नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते—

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।। नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता।। कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते।। विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम्। काममाक्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा।।

अभिजित्निर्णय :— वैश्यप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति–तिथि–भागतोऽभिजित्स्यात्।।

"उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण और श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करे। उसको अभिजित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करें। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक–एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे, उसके चार भाग करें; उसको श्रवण के १–१ चरण मानें। सामान्य गणक के ज्ञानार्थ ही यह यहां लिखा गया है।

राशिज्ञानम्— चू ल अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम्।।
हीडो कर्कः, माटे सिंहः, टो ष ण ठ पो कन्या।।
राते तुला, तो ना यू वृश्चिकः, ये घफढभे धनुः।।
भोजा खागी मकरः, गुशद : कुम्भः दीथझञची मीनः।।

इस राशिज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह अक्षर भी ले लिया गया है। जैसे–मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा) अश्विनी का और चतुर्थ चरण पर्यन्त भरणी का ग्रहण हुआ और 'अ' से कृत्तिका का प्रथम चरण– इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

विशेष— जहां 'ज्ञ' का उच्चारण 'ज्ञ' होता है वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र उ.षा. और जहां इसका उच्चारण 'ग्य' होता है, वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र धनिष्ठा माना जाएगा। क्योंकि 'ज' और 'ग' वर्ण क्रमशः उ.षा. और धनिष्ठा नक्षत्र में पड़ते हैं।

नोटः—चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने में फलितज्ञ को काफी आसानी रहती है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्मसमय चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र जान लेता है तथा फलितशास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भूस्थित वनस्पति एवम् प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वारभाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार–भाटांक सूर्य के ज्वार–भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्मपत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन फलितवेत्ता जन्मपत्र की अंग्रेज़ी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है, जबकि चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित–शास्त्रियों ने जन्मकालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्मराशि का नाम दिया है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसका विशेष महत्त्व भी है।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2068 वि.)

राशि	वैशाख (14 अप्रै. से 14 मई तक, सन् 2011 ई.)	ज्येष्ठ (15 मई से 14 जून तक, सन् 2011 ई.)	आषाढ़ (15 जून से 15 जुला. तक, सन् 2011 ई.)
मेष	सेहत ठीक, अर्थलाभ, निजीजनों से अनबन, स्थानलाभ, सुखद यात्रा, सन्तानपक्ष शुभ, कष्टमय, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार गड़बड़। अप्रै. 20, 21, 29, 30; मई 1, 9, 10 अशुभ।	सेहत कमज़ोर, अर्थहानि, निजीजनों से कष्ट, नई योजना से हानि, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तरण व स्थानान्तरण का विचार। मई 17, 18, 19, 27, 28; जून 5, 6, 7, 14 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानि, घरेलू विवाद, शत्रु प्रबल, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक, व्यय अधिक। जून 15, 23, 24, 25; जुला. 3, 4, 11, 12 अशुभ।
वृष	सेहत ठीक, अर्थहानि, निजीजनों से सुख, सन्तानकष्ट, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कार्यान्तर का विचार। अप्रै. 14, 15, 22, 23, 24; मई 2, 3, 11, 12 अशुभ।	उदरविकार, धनलाभ होकर हानि, भ्रातृकष्ट, सम्पत्तिविवाद, मित्रों से अनबन, स्त्री से अनबन, आय से व्यय अधिक। मई 20, 21, 29, 30, 31; जून 8, 9 अशुभ।	सेहत खराब, निजीजनों से अनबन, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्रीकष्ट, आय से व्यय अधिक। जून 16, 17, 26, 27; जुला. 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।
मिथुन	उदर-विकार, धनहानि, निजीजनों से सुख, यात्राकष्ट, सन्तानपक्ष से चिन्ता, गुप्त चिन्ता, आय से व्यय अधिक। अप्रै. 16, 17, 24, 25, 26; मई 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ।	मन अशान्त, धनलाभ, घरेलू झंझट, गुप्त शत्रु से भय, सांझे कारोबार से लाभ, दुर्घटना भय। मई 15, 22, 23; जून 1, 2, 10, 11 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थहानि, निजीजनों से अनबन, स्त्रीसुख, कारोबार खराब, घरेलू विवाद। जून 18, 19, 20, 28, 29; जुला. 7, 8 अशुभ।
कर्क	वायुरोग, अर्थलाभ, बन्धुकष्ट, मित्रों से अनबन, सन्तानपक्ष ठीक, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। अप्रै. 18, 19, 27, 28; मई 7, 8 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थहानि, योजना असफल, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक, मासान्त में हानिभय। मई 15, 16, 17, 24, 25, 26; जून 3, 4, 12, 13 अशुभ।	सेहत खराब, मित्रकष्ट, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। जून 21, 22, 30; जुला. 1, 2, 9, 10 अशुभ।
सिंह	सेहत ठीक, अर्थहानिभय, सन्तानकष्ट, स्त्री सुख, गुप्त-शत्रुभय, आय से व्यय अधिक। अप्रै. 20, 21, 29, 30; मई 1, 9, 10 अशुभ।	शरीरकष्ट, निजीजनों से अनबन, व्यापार ठीक, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, राजपक्ष से भय। मई 17, 18, 19, 27, 28; जून 5, 6, 7, 14 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थहानि, मन परेशान, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक, मित्रों से लाभ। जून 15, 23, 24, 25; जुला. 3, 4, 11, 12 अशुभ।
कन्या	नेत्रकष्ट, मित्रों से अनबन, अपमानभय, स्थानान्तरण व कार्यान्तरण का विचार, सन्तानपक्ष से चिन्ता। अप्रै. 14, 15, 22, 23, 24; मई 2, 3, 11, 12 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थलाभ, निजीजनों से कष्ट, स्त्रीसुख, कार्यान्तरण व स्थानान्तरण का विचार। मई 20, 21, 29, 30, 31; जून 8, 9 अशुभ।	मन परेशान, उदर-विकार, स्त्रीकष्ट, गुप्तशत्रु भय, कारोबार ठीक, आय से व्यय अधिक। जून 16, 17, 26, 27; जुला. 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।
तुला	सेहत खराब, अर्थलाभ होकर हानि, गृहक्लेश, शत्रु प्रबल, स्त्रीकष्ट, वृथा विवाद से बचें। अप्रै. 16, 17, 24, 25, 26; मई 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ।	सेहत ठीक, हाथ तंग, सन्तानपक्ष से चिन्ता, शत्रु प्रबल, मन अशान्त, मासान्त अशुभ। मई 15, 22, 23; जून 1, 2, 10, 11 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थलाभ, सन्तान पक्ष शुभ, शत्रु प्रबल, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तरण व स्थानान्तरण का विचार। जून 18, 19, 20, 28, 29; जुला. 7, 8 अशुभ।
वृश्चिक	रक्त-पित्तविकार, धनहानि, निजीजनों से सहयोग, सन्तानकष्ट, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। अप्रै. 18, 19, 27, 28; मई 7, 8 अशुभ।	उदरविकार, धनलाभ, निजीजनों से लाभ, सन्तानप[illegible] शुभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार खराब। मई 15, 16, 17, 24, 25, 26; जून 3, 4, 12, 13 अशुभ।	सेहत खराब, निजीजन सहयोग, सन्तान पक्ष से चिन्ता, असफल योजना, कार्यान्तरण का विचार। जून 21, 22, 30; जुला. 1, 2, 9, 10 अशुभ।
धनु	उदरविकार, निजीजनों से सहयोग, सम्पत्तिविवाद, शुभ सूचना, स्त्रीकष्ट, कारोबार गड़बड़। अप्रै. 20, 21, 29, 30; मई 1, 9, 10 अशुभ।	रक्त-पित्तविकार, अर्थहानि, निजीजनों से सहयोग, मित्र मिलाप, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख। मई 17, 18, 19, 27, 28; जून 5, 6, 7, 14 अशुभ।	रक्त-पित्तविकार, अर्थहानि, निजीजन सहयोग, घरेलू विवाद, असफल योजना, कारोबार कमज़ोर। जून 15, 23, 24, 25; जुला. 3, 4, 11, 12 अशुभ।
मकर	रक्त-पित्तविकार, भ्रातृसुख, मित्रमिलाप, सन्तानपक्ष ठीक, गुप्त शत्रुभय, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। अप्रै. 14, 15, 22, 23, 24; मई 2, 3, 11, 12 अशुभ।	सेहत खराब, अर्थलाभ, मित्रसुख, सन्तान पक्ष से चिन्ता, गुप्तशत्रु भय, आय से व्यय अधिक। मई 20, 21, 29, 30, 31; जून 8, 9 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थलाभ, बन्धुकष्ट सन्तान पक्ष से चिन्ता, अर्थहानि से परेशानी बढ़े। जून 16, 17, 26, 27; जुला. 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।
कुम्भ	सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानि, सम्पत्तिलाभ, सन्तानकष्ट, स्त्रीपक्ष से लाभ, आय से व्यय अधिक। अप्रै. 16, 17, 24, 25, 26; मई 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ।	मन अशान्त, अर्थलाभ होकर हानि, घरेलू विवाद, स्त्रीकष्ट, कारोबार गड़बड़। मई 15, 22, 23; जून 1, 2, 10, 11 अशुभ।	सेहत ठीक, कर्ज़ा बढ़े, निजीजन सहयोग, शत्रु प्रबल, स्त्रीपक्ष से लाभ, मासान्त में कारोबार ठीक। जून 18, 19, 20, 28, 29; जुला. 7, 8 अशुभ।
मीन	वृथाविवाद से बचें, घरेलू झंझट, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार कमज़ोर, अशुभ सूचना। अप्रै. 18, 19, 27, 28; मई 7, 8 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानि, घरेलू विवाद, निजीजनों से अनबन, शत्रु प्रबल, स्त्रीसुख। मई 15, 16, 17, 24, 25, 26; जून 3, 4, 12, 13 अशुभ।	क्रोध बढ़े, दुर्घटनाभय, अर्थहानि, गुप्त-चिन्ता, अपमानभय, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। जून 21, 22, 30; जुला. 1, 2, 9, 10 अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2068 वि.)

राशि	श्रावण (16 जुला. से 16 अग. तक, सन् 2011 ई.)	भाद्रपद (17 अग. से 16 सितं. तक, सन् 2011 ई.)	आश्विन (17 सितं. से 16 अक्तू. तक, सन् 2011 ई.)
मेष	सेहत ठीक, अर्थलाभ, घरेलू विवाद, सन्तानपक्ष से कष्ट, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। जुला. 20, 21, 22, 30, 31; अग. 7, 8, 9 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थहानि, निजीजनविरोध, स्त्रीसुख, कार्यान्तरण व स्थानान्तरण का विचार। अग. 17, 18, 26, 27, 28; सितं. 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ।	स्थान हानि, सेहत खराब, निजीजनों से अनबन, सन्तानपक्ष शुभ, राजपक्ष से भय, आय से व्यय अधिक। सितं. 23, 24; अक्तू. 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।
वृष	सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानि, निजीजन सुख, सम्पत्ति विवाद, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। जुला. 23, 24; अग. 1, 2, 10, 11 अशुभ।	सेहत खराब, अर्थलाभ होकर हानि, निजीजन कष्ट, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक। अग. 19, 20, 21, 29, 30; सितं. 6, 7, 16 अशुभ।	सेहत ठीक, व्यय अधिक, घरेलू परेशानी बढ़े, स्त्रीपक्ष शुभ, आय से व्यय अधिक। सितं. 17, 25, 26; अक्तू. 3, 4, 13, 14 अशुभ।
मिथुन	क्रोध बढ़े, अर्थलाभ, घरेलू विवाद, संतानपक्ष शुभ, गुप्त शत्रुभय, कारोबार ठीक। जुला. 16, 17, 25, 26, 27; अग. 3, 4, 12, 13 अशुभ।	सेहत ठीक, कर्ज़ा चढ़े, शत्रु बढ़ें, आय से व्यय अधिक, यात्राकष्ट, गुप्त शत्रु भय। अग. 22, 23, 31; सितं. 1, 8, 9, 10 अशुभ।	सेहत खराब, उदरविकार, स्त्रीकष्ट, गुप्त शत्रु से सावधान, कारोबार कमज़ोर। सितं. 18, 19, 20, 27, 28 अक्तू. 5, 6, 7, 15, 16 अशुभ।
कर्क	सेहत ठीक, वृथाव्यय, बन्धुपक्ष से मदद, कार्यान्तर से लाभ, आय से व्यय अधिक। जुला. 18, 19, 28, 29; अग. 5, 6, 14, 15, 16 अशुभ।	रक्त-पित्तविकार, अर्थलाभ, संतानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीकष्ट, व्यापार में हानि। अग. 24, 25; सितं. 2, 3, 11, 12 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थलाभ, निजीजन सहयोग, स्त्री-पुत्रपक्ष शुभ, कारोबार में रद्दोबदल का विचार। सितं. 20, 21, 22, 29, 30; अक्तू. 8, 9 अशुभ।
सिंह	उदरविकार, सम्पत्तिलाभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक, मासान्त में अधिक व्यय। जुला. 20, 21, 22, 30, 31; अग. 7, 8, 9 अशुभ।	सेहत ठीक, अच्छे लोगों से मेल, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। अग. 17, 18, 26, 27, 28; सितं. 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ।	रक्त-पित्तविकार, स्त्रीकष्ट, सम्पत्तिलाभ, कारोबार ठीक, अचानक लाभ का योग। सितं. 23, 24; अक्तू. 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।
कन्या	सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजन विरोध, स्त्रीसुख, दुर्घटनाभय, कारोबार में रद्दोबदल। जुला. 23, 24; अग. 1, 2, 10, 11 अशुभ।	अच्छे लोगों से मेल, कारोबार में लाभ, सेहत ठीक, नई योजना से हानि, यात्राकष्ट। अग. 19, 20, 21, 29, 30; सितं. 6, 7, 16 अशुभ।	सेहत ठीक, निजीजन सहयोग, स्त्रीसुख, गुप्त शत्रु से सावधान, कार्यान्तर से लाभ। सितं. 17, 25, 26; अक्तू. 3, 4, 13, 14 अशुभ।
तुला	मन परेशान, अर्थलाभ होकर हानि हो, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, राजपक्ष शुभ, कारोबार खराब। जुला. 16, 17, 25, 26, 27; अग. 3, 4, 12, 13 अशुभ।	अर्थलाभ होकर हानि, वृथाविवाद से बचें, घरेलूविवाद, मन परेशान, कारोबार कमज़ोर। अग. 22, 23, 31; सितं. 1, 8, 9, 10 अशुभ।	कफविकार, अपमानभय, धनलाभ, मासान्त में उत्तम लाभ हो, सन्तानपक्ष से चिन्ता। सितं. 18, 19, 20, 27, 28 अक्तू. 5, 6, 7, 15, 16 अशुभ।
वृश्चिक	रक्त-पित्तविकार, क्रोध बढ़े, घरेलू विवाद, राजपक्ष से हानि, स्त्रीपक्ष से लाभ। जुला. 18, 19, 28, 29; अग. 5, 6, 14, 15, 16 अशुभ।	मन परेशान, सम्पत्तिविवाद, राजपक्ष से भय, कार्यान्तर से लाभ, निजीलोगो से अनबन। अग. 24, 25; सितं. 2, 3, 11, 12 अशुभ।	सेहत ठीक, धनहानिभय, मित्रों से अनबन, शत्रुप्रबल, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। सितं. 20, 21, 22, 29, 30; अक्तू. 8, 9 अशुभ।
धनु	सेहत खराब, निजीलोगों से अनबन, अर्थलाभ, स्त्रीकष्ट, मासान्त में लाभ। जुला. 20, 21, 22, 30, 31; अग. 7, 8, 9 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थहानि, वृथाव्यय, निजीलोगों से अनबन, सन्तानपक्ष शुभ, कार्यान्तर से लाभ। अग. 17, 18, 26, 27, 28; सितं. 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ।	कफ-वायुविकार, धनलाभ, निजीजनों से अनबन, नई योजना से हानि, स्त्रीकष्ट। सितं. 23, 24; अक्तू. 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।
मकर	सेहत ठीक, अर्थहानि, बन्धुसुख, शत्रु बढ़ें, आय से व्यय अधिक। जुला. 23, 24; अग. 1, 2, 10, 11 अशुभ।	उदरविकार, वृथाव्यय, मित्रबन्धुसुख, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक। अग. 19, 20, 21, 29, 30; सितं. 6, 7, 16 अशुभ।	सेहत खराब, आर्थिक परेशानी, निजीलोगों से मन-मुटाव, गुप्तशत्रु भय, कारोबार ठीक। सितं. 17, 25, 26; अक्तू. 3, 4, 13, 14 अशुभ।
कुम्भ	वृथाविवाद से बचें, अर्थलाभ, बन्धुसुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। जुला. 16, 17, 25, 26, 27; अग. 3, 4, 12, 13 अशुभ।	क्रोध बढ़े, अर्थलाभ, निजीजन सहयोग, धोखे से ब[illegible], कारोबार ठीक। अग. 22, 23, 31; सितं. 1, 8, 9, 10 अशुभ।	क्रोध बढ़े, धनलाभ होकर हाथ से निकले। सन्तानपक्ष से चिन्ता, मासान्त में कारोबार ठीक। सितं. 18, 19, 20, 27, 28; अक्तू. 5, 6, 7, 15, 16 अशुभ।
मीन	सेहत ठीक, अर्थलाभ, सम्पत्तिविवाद, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक, मासान्त में खर्च। जुला. 18, 19, 28, 29; अग. 5, 6, 14, 15, 16 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थलाभ, निजीलोगों से अनबन, सन्तानपक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक। अग. 24, 25; सितं. 2, 3, 11, 12 अशुभ।	सेहत ठीक, वृथाव्यय, कारोबार खराब, स्त्रीपक्ष ठीक, मासान्त शुभ। सितं. 20, 21, 22, 29, 30; अक्तू. 8, 9 अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2068 वि.)

राशि	कार्तिक (17 अक्तू. से 15 नवं. तक, सन् 2011 ई.)	मार्गशीर्ष (16 नवं. से 15 दिसं. तक, सन् 2011 ई.)	पौष (16 दिसं., 2011 से 13 जन. तक सन् 2012 ई.)
मेष	सेहत खराब, आर्थिक परेशानी, निजीलोगों से अनबन, स्त्रीसुख, कारोबार खराब। अक्तू. 20, 21, 28, 29; नवं. 6, 7, 8 अशुभ।	सेहत खराब, अर्थलाभ, बन्धुकष्ट, सन्तानपक्ष से सुख,स्त्री रुग्णा, कारोबार में हानि। नवं. 16, 17, 18, 25, 26; दिसं. 4, 5, 14, 15 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थलाभ, भ्रातृसुख, अच्छे लोगों से मेल, विद्या में सफलता, स्त्री से अनबन। दिसं. 22, 23, 31; जन. 1, 2, 10, 11 अशुभ।
वृष	उदरविकार, दुर्घटनाभय, बन्धुसुख, घरेलूविवाद, सन्तानपक्ष से चिन्ता, अपमानभय, कारोबार खराब। अक्तू. 22, 23, 30, 31; नवं. 1, 9, 10, 11 अशुभ।	सेहत खराब, अर्थलाभ, बन्धुकष्ट, सन्तानपक्ष ठीक, नई योजना, स्त्रीकष्ट, मासान्त में हानि। नवं. 19, 20, 27, 28; दिसं. 6, 7, 8 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थलाभ, निजीजन सहयोग, बन्धुसुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक। दिसं. 16, 17, 24, 25, 26; जन. 3, 4, 12, 13 अशुभ।
मिथुन	सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानि, मित्रों से अनबन, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीसुख, कारोबार खराब। अक्तू. 17, 24, 25; नवं. 2, 3, 12, 13 अशुभ।	कफ–वायुविकार, धनहानि, भ्रातृकष्ट, यात्रा में चोटभय, स्त्रीसुख, स्थानान्तरण योग। नवं. 21, 22, 29, 30; दिसं. 9, 10 अशुभ।	सेहत ठीक, धनलाभ, घरेलू परेशानी, यात्रा में कष्ट, स्त्रीसुख, कार्यान्तर से लाभ। दिसं. 18, 19, 26, 27, 28; जन. 5, 6, 7 अशुभ।
कर्क	क्रोध बढ़े, बन्धुकष्ट, सम्पदालाभ, असफल योजना, मन अशांत, आय से व्यय अधिक। अक्तू. 18, 19, 26, 27; नवं. 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।	सेहत खराब, धनलाभ होकर हानि, यात्रा में कष्ट, स्त्री से अनबन, व्यापार में हानि। नवं. 23, 24; दिसं. 1, 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।	वायुविकार, धनलाभ, उत्साह बढ़े, शत्रु प्रबल, स्त्रीपक्ष से मदद, कारोबार ठीक। दिसं. 20, 21, 29, 30; जन. 8, 9 अशुभ।
सिंह	कफ–वायुविकार, भ्रातृसुख, धोखे से बचें, गुप्त शत्रु से भय, स्त्रीसुख, कारोबार कमज़ोर। अक्तू. 20, 21, 28, 29; नवं. 6, 7, 8 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थलाभ हो, सम्पत्तिविवाद, नई योजना से लाभ, शत्रु बढ़ें, राज्यपक्ष से विजय। नवं. 16, 17, 18, 25, 26; दिसं. 4, 5, 14, 15 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थहानि योग, अच्छे लोगों से मेल, सुखद यात्रा, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। दिसं. 22, 23, 31; जन. 1, 2, 10, 11 अशुभ।
कन्या	वायुविकार, धनलाभ, बन्धुकष्ट, असफल योजना, स्त्री से अनबन। अक्तू. 22, 23, 30, 31; नवं. 1, 9, 10, 11 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थहानि, निजीजनकष्ट, अच्छे लोगों से मेल, सन्तानपक्ष से चिन्ता, अपमानभय। नवं. 19, 20, 27, 28; दिसं. 6, 7, 8 अशुभ।	उदरविकार, धनलाभ होकर हानि, बन्धुसुख, यात्रा सुखद, गुप्त शत्रु से भय। दिसं. 16, 17, 24, 25, 26; जन. 3, 4, 12, 13 अशुभ।
तुला	सेहत ठीक, कर्ज़ा चढ़े, सम्पत्तिविवाद, गुप्त शत्रु से भय, कारोबार ठीक। अक्तू. 17, 24, 25; नवं. 2, 3, 12, 13 अशुभ।	उदरविकार, भाई से सहायता, संपदाहानि, शत्रुप्रबल, कारोबार ठीक। नवं. 21, 22, 29, 30; दिसं. 9, 10 अशुभ।	सेहत खराब, धनलाभ, मित्र–बन्धु से मदद, सन्तानपक्ष से सुख, स्त्रीसुख। दिसं. 18, 19, 26, 27, 28; जन. 5, 6, 7 अशुभ।
वृश्चिक	उदरविकार, अर्थलाभ, घरेलूविवाद, यात्रा में कष्ट, गुप्त शत्रु से भय, कारोबार ठीक। अक्तू. 18, 19, 26, 27; नवं. 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।	सेहत खराब, अर्थलाभ, भाई–बन्धु से अनबन, असफल योजना, कारोबार ठीक। नवं. 23, 24; दिसं. 1, 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।	सेहत खराब, धनलाभ होकर हानि, अच्छे लोगों से मेल, स्त्रीसुख, कारोबार से लाभ। दिसं. 20, 21, 29, 30; जन. 8, 9 अशुभ।
धनु	सेहत ठीक, अचानक कारोबार में हानि, यात्रा में कष्ट, सन्तानपक्ष से चिन्ता,स्त्रीपक्ष से लाभ। अक्तू. 20, 21, 28, 29; नवं. 6, 7, 8 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थहानि, निजीजनकष्ट, कारोबार बेहतर, विद्या में असफलता। नवं. 16, 17, 18, 25, 26; दिसं. 4, 5, 14, 15 अशुभ।	कफ–वायुविकार, मित्र–बन्धुसुख, कारोबार ठीक, संपदालाभ। दिसं. 22, 23, 31; जन. 1, 2, 10, 11 अशुभ।
मकर	क्रोध बढ़े, धनलाभ होकर अचानक खर्च, घरेलू परेशानी अधिक, स्त्री से अनबन। अक्तू. 22, 23, 30, 31; नवं. 1, 9, 10, 11 अशुभ।	क्रोध बढ़े, मित्रों से मेल, भ्रातृकष्ट, स्त्रीसुख, कार्यान्तर से लाभ। नवं. 19, 20, 27, 28; दिसं. 6, 7, 8 अशुभ।	सेहत ठीक, व्यापार में लाभ, नई योजना, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीपक्ष से लाभ। दिसं. 16, 17, 24, 25, 26, जन. 3, 4, 12, 13 अशुभ।
कुम्भ	सेहत ठीक, अर्थहानि, मित्र–बन्धु कष्ट, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कार्यान्तर से लाभ। अक्तू. 17, 24, 25; नवं. 2, 3, 12, 13 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थलाभ, भ्रातृसुख, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक, घरेलू परेशानी। नवं. 21, 22, 29, 30; दिसं. 9, 10 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानि, निजीजनों से मदद, कारोबार ठीक। दिसं. 18, 19, 26, 27, 28; जन. 5, 6, 7 अशुभ।
मीन	सेहत खराब, भारी व्यय, राजपक्ष से भय, बन्धुकष्ट, स्त्रीसुख, कारोबार खराब। अक्तू. 18, 19, 26, 27; नवं. 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।	सेहत खराब, अर्थलाभ होकर हानि, निजीलोगों से अनबन, सन्तानकष्ट, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। नवं. 23, 24; दिसं. 1, 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।	उदरविकार, व्यापार में हानि, स्त्रीकष्ट, मन परेशान, मासान्त ठीक। दिसं. 20, 21, 29, 30; जन. 8, 9 अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2068 वि.)

राशि	माघ (14 जन. से 12 फर. तक, सन् 2012 ई.)	फाल्गुन (13 फर. से 13 मार्च तक, सन् 2012 ई.)	चैत्र (14 मार्च से 12 अप्रै. तक, सन् 2012 ई.)
मेष	कफ–वायुविकार, धन–सम्पदा सुख, सुखद यात्रा, सन्तानपक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक, मासान्त में विशेष खर्च। जन. 19, 20, 28, 29; फर. 6, 7, 8 अशुभ।	राजपक्ष से भय, धनलाभ, बन्धुजन सुख, घरेलू झंझट, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, यात्रा में कष्ट। फर. 15, 16, 24, 25; मार्च 5, 6, 13 अशुभ।	सेहत ठीक, धनलाभ, बन्धुकष्ट, शत्रु बढ़ें, आय से व्यय अधिक, कारोबार में सुधार। मार्च 14, 22, 23, 24; अप्रै. 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।
वृष	सेहत ठीक, धनलाभ, बन्धुसुख, अच्छे लोगों से मेल, सन्तति–सुख, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कार्यान्तर का विचार। जन. 21, 22, 30, 31; फर. 1, 9, 10 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थलाभ, भ्रातृ कष्ट, नई योजना से लाभ, शत्रु प्रबल, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। फर. 17, 18, 26, 27, 28; मार्च 7, 8 अशुभ।	सेहत ठीक, कर्ज़ा बढ़े, मित्र–बन्धु से मदद, सन्तानहेतु खर्च, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। मार्च 15, 16, 25, 26; अप्रै. 3, 4, 5, 11, 12 अशुभ।
मिथुन	सेहत खराब, धनलाभ, घरेलू झंझट, स्त्रीसुख, सुखद यात्रा, कारोबार ठीक, अचानक कष्ट। जन. 14, 15, 23, 24; फर. 2, 3, 11, 12 अशुभ।	रुके कार्य बने, अर्थहानि, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख, कारोबार खराब। फर. 19, 20, 29; मार्च 1, 9, 10 अशुभ।	उदरविकार, धनलाभ होकर हानि, भ्रातृकष्ट, मित्र से अनबन, गुप्त शत्रु से भय, कारोबार ठीक। मार्च 17, 18, 19, 27, 28, 29; अप्रै. 5, 6, 7 अशुभ।
कर्क	कारोबार गड़बड़, यात्रा में कष्ट, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख, गुप्त शत्रुभय, राजपक्ष से भय। जन. 16, 17, 18, 25, 26, 27; फर. 4, 5 अशुभ।	सेहत खराब, अर्थलाभ होकर हानि, निजीजनों से अनबन, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीकष्ट। फर. 13, 14, 21, 22, 23; मार्च 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।	सेहत ठीक, धनहानि, घरेलू परेशानी, सन्तानपक्ष शुभ, शत्रु प्रबल, कारोबार ठीक। मार्च 20, 21, 30, 31; अप्रै. 7, 8, 9 अशुभ।
सिंह	उदरविकार, मित्र–बन्धुकष्ट, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार में रुकावट, आय से व्यय अधिक। जन. 19, 20, 28, 29; फर. 6, 7, 8 अशुभ।	सेहत ठीक, निजीलोगों से अनबन, सन्तानपक्ष से चिन्ता, कारोबार सुधरे। फर. 15, 16, 24, 25; मार्च 5, 6, 13 अशुभ।	सेहत खराब, कर्ज़ा बढ़े, धोखे से बचें, असफल योजना, स्त्रीसुख, कारोबार में सुधार। मार्च 14, 22, 23, 24; अप्रै. 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।
कन्या	वायुरोगकष्ट, अर्थहानि, शत्रु प्रबल, नए कारोबार से लाभ, स्त्रीसुख, मासान्त में विशेष लाभ। जन. 21, 22, 30, 31; फर. 1, 9, 10 अशुभ।	मन परेशान, अर्थहानि, निजीजन सहयोग, यात्रा में कष्ट, कार्यान्तर से लाभ। फर. 17, 18, 26, 27, 28; मार्च 7, 8 अशुभ।	क्रोध बढ़े, धनलाभ, बन्धुकष्ट, यात्रा में कष्ट, सन्तानपक्ष शुभ, कार्यान्तर से लाभ। मार्च 15, 16, 25, 26; अप्रै. 3, 4, 5, 11, 12 अशुभ।
तुला	कफविकार, नेत्रकष्ट, सम्पदाविवाद, वृथाव्यय, सन्तानपक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक। जन. 14, 15, 23, 24; फर. 2, 3, 11, 12 अशुभ।	क्रोध बढ़े, अर्थलाभ होकर हानि, मित्र–बन्धु से अनबन, अपमानभय। फर. 19, 20, 29; मार्च 1, 9, 10 अशुभ।	सेहत ठीक, घरेलू परेशानी, वृथाव्यय, स्त्रीकष्ट, कारोबार में रुकावट। मार्च 17, 18, 19, 27, 28, 29; अप्रै. 5, 6, 7 अशुभ।
वृश्चिक	क्रोध बढ़े, धनहानि, बन्धुकष्ट, राजपक्ष से हानि, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक। जन. 16, 17, 18, 25, 26, 27; फर. 4, 5 अशुभ।	सेहत ठीक, कर्ज़ा चढ़े, मित्र से मदद, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में रुकावट। फर. 13, 14, 21, 22, 23; मार्च 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।	सेहत खराब, मानसिक चिन्ता, मित्रों से सहयोग, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीकष्ट। मार्च 20, 21, 30, 31; अप्रै. 7, 8, 9 अशुभ।
धनु	कफ–वायुविकार, विशेष खर्च, निजीलोगों से अनबन, सन्तति चिन्ता, कारोबार में बाधा। जन. 19, 20, 28, 29; फर. 6, 7, 8 अशुभ।	रक्त–पित्तविकार, अर्थहानि, असफल योजना, स्त्रीसुख, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। फर. 15, 16, 24, 25; मार्च 5, 6, 13 अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थलाभ, मित्र से अनबन, सन्तानपक्ष शुभ, शत्रु कमज़ोर, कारोबार में रद्दोबदल। मार्च 14, 22, 23, 24; अप्रै. 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।
मकर	सिर व उदरकष्ट, कष्टप्रद यात्रा, स्त्रीसुख, शत्रु प्रबल, कारोबार ठीक। जन. 21, 22, 30, 31; फर. 1, 9, 10 अशुभ।	उदरविकार, अर्थलाभ, बन्धुकष्ट, सन्तानपक्ष से खुशी, स्त्रीकष्ट, कारोबार में सुधार। फर. 17, 18, 26, 27, 28; मार्च 7, 8 अशुभ।	सेहत खराब, धनलाभ, शत्रु प्रबल, स्त्रीसुख, कारोबार खराब। मार्च 15, 16, 25, 26; अप्रै. 3, 4, 5, 11, 12 अशुभ।
कुम्भ	दुर्घटनाभय, उदरविकार, धनलाभ, मित्र मिलाप, स्त्री से अनबन, कारोबार खराब। जन. 14, 15, 23, 24; फर. 2, 3, 11, 12 अशुभ।	सेहत ठीक, धनलाभ, अच्छे लोगों से मेल, रुके काम बनें, कारोबार ठीक। फर. 19, 20, 29; मार्च 1, 9, 10 अशुभ।	मन परेशान, धनलाभ होकर हानि, अच्छे लोगों से मेल, असफल योजना। मार्च 17, 18, 19, 27, 28, 29; अप्रै. 5, 6, 7 अशुभ।
मीन	सेहत ठीक, धनहानि, खर्चविशेष, मित्र–बन्धु से मदद, नई योजना, कारोबार पूर्ववत्। जन. 16, 17, 18, 25, 26, 27; फर. 4, 5 अशुभ।	सेहत खराब, वृथाव्यय, अर्थहानि, मित्र–बन्धु से मदद, असफल योजना, स्त्री से अनबन। फर. 13, 14, 21, 22, 23; मार्च 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।	रक्त–पित्तविकार, व्यापार में हानि, निजीजन सहयोग, सम्पदा विवाद, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार कमज़ोर। मार्च 20, 21, 30, 31; अप्रै. 7, 8, 9 अशुभ।

अथ वर्षराजादि फल विचार (संवत् २०६८ वि.)

(सन् २०११-१२ ई. की ग्रहपरिषद् का विवरण)

कल्पादि से गत वर्ष १९७२९४९११२, सृष्टि संवत् १९५५८८५११२, श्रीविक्रम संवत् २०६८, शक संवत् १९३३, श्रीकृष्ण-जन्म संवत् ५२४७, कलि-संवत् ५११२, सप्तर्षि-संवत् ५०८७, श्रीजैन महावीर निर्वाण संवत् २५३६-३७, श्रीबुद्ध संवत् २६३४-३५, हिजरी सन् १४३२-३३, फसली सन् १४१८-१९, ईस्वी सन् २०११-१२ ।

वर्षारम्भ में गुरुमान से विष्णुविंशति का 'क्रोधी' नामक संवत्सर है। इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है;-

"क्रोध्यब्दे त्वखिला लोकाः क्रोध-लोभपरायणाः।
ईति-दोषेण संतप्ता मध्य-सस्यार्घवृष्टयः।।"

अर्थात्-- 'क्रोधी' नामक संवत्सर में जन-समाज क्रोध एवं लोभ से अभिभूत रहे। (टिड्डीदल एवं अन्यविध) किसी प्राकृतिक आपदा से जनमानस त्रस्त हो, अन्न की उपज मध्यम एवं वर्षा भी मध्यम हो।

'मेघ महोदय' के अनुसार 'क्रोधी' संवत् का फल इस प्रकार है;-

"विषमस्थं जगत्सर्वं व्याकुलं दारुणात् रणात्।
देशे ज्ञातौ कुटुम्बे च क्रोधी क्रोधपरः परम्।।"

अर्थात् - विश्व एवं शासकवर्ग में सर्वत्र अव्यवस्था एवं कहीं घोर युद्धभय विषम वातावरण बने। देश, ज्ञाति एवं कुटुम्ब में भी अनेकत्र क्रोधपूर्ण व्यवहार से वातावरण क्षुब्ध हो।

किञ्च-"क्रोधिनि वत्सरे शनिःस्वामी, द्वादशमासेषु अन्नं महर्घम्, राज्ञां परस्परं विरोधः, प्रजा पापरता, लोका निर्धना व्यापारहीनाः। चैत्रे वैशाखे वा करकापातः, रोगो मारिभयम्, ज्येष्ठे धान्यं महर्घम्, अल्पो मेघः, श्रावणे रौरवं, भाद्रपदे खण्डवृष्टिः, आश्विने मेघवर्षा, अन्नं-वस्तुसर्वं समर्घम्।"

इस संवत् का राजा (ग्रहपरिषद् के प्रधान) चन्द्र, मन्त्री गुरु, सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी) शनि, धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी) शुक्र, मेघेश (मौसम, वर्षा-पानी के स्वामी) बुध, रसेश (गुड़-खाण्ड, रसकरा आदि के स्वामी) चन्द्र, नीरसेश (सर्वविध धातु आदि व्यापार के स्वामी) शनि, फलेश (फल-फूल आदि के स्वामी) बुध, धनेश (धन-दौलत एवं खजाना के स्वामी) शनि एवं दुर्गेश (सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा के स्वामी) बुध हैं।

संवत् २०६८ वि. के उल्लिखित पदाधिकारियों का फल इस प्रकार है;-

(१) संवत्सर २०६८ वि. के राजा चन्द्र का फल--

"चन्द्रे नृपे मंगल-शोभनानि प्रभूतवृष्टिः प्रचुरं च धान्यम्।
सौख्यं जनानामुदयो नृपाणां प्रशाम्यति व्याधिजरा नराणाम्।।"

अर्थात्- मंगल-शुभकार्य हों, वर्षा अधिक एवं अनाज अच्छी मात्रा में उपलब्ध हों। जनता में सुख-समृद्धि रहे। नए नेतृत्व किंवा शासक का उदय (राजनीति में प्रवेश) हो, जन-जीवन निरामय हो।

(२) मन्त्री गुरु का फल-

"विविधधान्ययुता खलु मेदिनी प्रचुर-तोय-घना मुदिता भवेत्।
नृपतयो जन-पालन-तत्पराः सुरगुरौ ननु मन्त्रिपदं गते।।"

अर्थात्-- अनेकविध धान्य (अनाजों) की उपज बहुत हो। वर्षा बहुत हो। शासक लोग न्यायपूर्ण शैली से जनता का पालन-पोषण करते रहें।

(३) सस्येश शनि का फल-

"रविसुतो यदि धान्यपतिर्जना नृपतिभिः परिपीड़ित-विग्रहाः।
गद-भयं तुष-धान्यहरस्सदा दुरित-वाद-विवादयुता नराः।।"

अर्थात्-- सस्येश शनि होने पर जनता राजभय किंवा राजनैतिक गतिविधि से त्रस्त रहे। रोग-विशेष से जनता पीड़ित रहे। जौ, गेहूं एवम् अन्य अनाजों की फसलों को हानि पहुंचे। जनता अशोभन क्रियाकलाप किंवा वाद-विवाद में उलझी रहे।

(४) धान्येश शुक्र का फल-

"भृगौ पश्चिम-धान्येशे पश्चाद्धान्यं न पच्यते।
सस्यं महर्घतां याति स्वल्पं क्षीरं गवामपि।।"

अर्थात्– धान्याधिप शुक्र हो तो (शरत्–सस्य) शीतकालीन धान्य (अनाज किंवा खेतिया) पकने से पहले ही (रोगादि से किंवा अकालिक वर्षा आदि प्राकृतिक प्रकोप से) खराब (नष्ट) हो जाती हैं। परिणामस्वरूप, अनाज मंहगे एवं गाय आदि दुधारु पशुओं से दूध कम प्राप्त हो।

(५) मेघेश बुध का फल-

"अमृत-रश्मि-सुतो यदि वारिपो बहुजलं तुष-धान्य-रसादिकम्।
द्विजवरा यजनोत्सुक-चेतसो विविध सौख्ययुता धरणी तदा।।"

अर्थात्– बुध मेघेश हो तो वर्षा बहुत हो, जौ, गेहू आदि की खेती (फसल) बहुत अच्छी हो; रसादि (दूध, गुड आदि) भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो। ब्राह्मण किंवा धार्मिक लोग यजन आदि धार्मिक क्रियाकलाप में व्यस्त रहें, पृथ्वी अनेकविध सुख–सम्पदा से युक्त रहे।

(६) रसेश चन्द्र का फल-

"यदि विधू रसपो भुवि मानवो नवनवां प्रगतिं लभते नरः।
जलधरा बहुवारिविधायका रसवती धनधान्यवती मही।।"

अर्थात्– चन्द्रमा रसेश हो तो मनुष्य नई–नई प्रगति के आयाम स्थापित करता है किंवा धर्म का उपभोग करता है। वर्षा बहुत हो। पृथ्वी धन–धान्य एवं रस (दुग्धादि) से युक्त रहे।

(७) नीरसेश शनि का फल-

" अयःपिण्डादि–लोहानां कृष्णवस्त्रादि–वस्तुनाम्।
अर्घ–वृद्धिः प्रजायेत मन्दे नीरस–नायके ।।"

अर्थात्– शनि नीरसेश हो तो लोह आदि धातु किंवा लोह–निर्मित मशीनरी–शस्त्र, काले रंग की वस्तुएं एवं कपडे आदि में विशेषरूप से मंहगाई होती है।

(८) फलेश बुध का फल-

"यदि बुधो फलपः फलमुत्तमं जलधरा जलराशिमुचस्तदा।
बहुतृणैः कुसुमैः कमलैर्युता जनपदा जनसौख्यमुदान्विताः।।"

अर्थात्– यदि बुध फलेश हो तो फल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हों; वर्षा पर्याप्तमात्रा में हो; पशुओं के लिए तृण (चारा) पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो; कमल आदि फूलों से नगर सुशोभित रहें। जनता भी सुखी एवं प्रसन्न रहे।

(९) धनेश शनि का फल-

"द्रविणपे रविजे विरलं धनं गदरता धरणी-पतयस्तदा।
अधनता वणिजां कृषि–जीविनो द्विजवरा परिपीड़ित-मानसाः।।"

अर्थात्– शनि धनेश हो तो जनता आर्थिक संकट का सामना करे; शासक (राजा)वर्ग नानाविध रोगों से पीडित रहे। व्यापारी (वैश्य) एवं किसानवर्ग को भी आर्थिक परेशानी उठानी पडे। बुद्धिजीवि (द्विज)वर्ग मानसिक दृष्टि से परेशान रहे।

(१०) दुर्गेश बुध का फल-

" विषम– साम्य– सुखं शशिजे प्रभौ भवति राष्ट्रजनेषु विशेषतः।
शशिसुते यदि कोटक–पालके पथिषु द्रव्यवतां न भयं क्वचित्।।"

अर्थात्– बुध दुर्गेश हो तो नागरिकों में कोई सुखी, कोई दुखी रहे किंवा नागरिकों को कभी दुःख, कभी सुख मिले। धनी निर्भीक रहें, क्योंकि सफर में चोरी–ठगी की घटनाओं का भय न रहे।

सूचना– यद्यपि वर्ष के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र होता है। किन्तु विशेषतः राजा का फल काश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में; मन्त्री का फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवम् मालवा में; सस्येश का पौण्ड्र, विदर्भ में; धान्येश का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में; मेघेश का मगध एवं बंगाल में; रसेश का कोंकण एवं गोवा में; नीरसेश का मालवा व बिहार में; धनेश का राजस्थान एवं बाड़मेर में; फलेश, दुर्गेश एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है।

वर्षादि के विश्वामान

वर्षाविश्वा ११, धान्य १७, तृण १५, शीत १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ११, तृषा १५, निद्रा ३, आलस्य १३, उद्यम ५, शांति १५, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ६ फल १३, उत्साह ११, उग्रता ५, पाप ३, पुण्य ७, व्याधि ५, व्याधिनाश १, आचार १७, अनाचार ५, मृत्यु १, जन्म ६ देशोपद्रव १५, देशस्वास्थ्य ३, चौर ९, चौरनाश १, अग्नि १५, अग्निशांति १, उद्भिज्ज १३, जरायुज ३, अण्डज ७, स्वेदज ६ टिड्डी ११, तोता ३, मूषक ७, सोना ३, तांबा १६ स्वचक्र ३, परचक्र ५, वृष्टि ७, वृष्टिनाश १५ एवं संवत्विश्वा ५ हैं।

चतुर्मेघ विचार– आवर्तकादि चतुर्मेघों में 'द्रोण' नामक मेघ है।

फलः– "द्रोणो वर्षति सर्वदा"– वर्षा अधिक हो, वर्षा के साथ वायुवेग से भी अनेकत्र हानि के योग बनते हैं।

"महीशा स्वसम्पत्ति-वृद्ध्या समेताः समस्ता मही भूरि–धान्येन युक्ता।
यदा जायते द्रोणनामा पयोदस्तदा देवराजो भवेत् सत्पयोदः।।"

शासक एवं जनता धन–धान्य से समृद्ध रहे, वर्षा कुछ प्रान्तों में पर्याप्त मात्रा में हो। लेकिन 'द्रोण' नामक मेघ में समुद्रतटवर्ती भूभाग एवं अन्य देशों में सुनामी की घटनाओं से हानि संभव है– यह अनुभव में आया है।

नवमेघविचार– इसवर्ष नवमेघों में ' संवर्त ' नामक मेघ है।

"कामाधिक्यं स्वल्पता धर्मकार्ये पृथ्वीपालास्तत्परा नान्यकार्ये।
संवर्ताख्यो नीरदः स्याद्धि यत्र प्राच्यो वायुर्वाति सर्वत्र तत्र।।"

अर्थात्– 'संवर्त' नामक मेघ होने पर जन–जीवन अधिक व्यस्त रहे। किंवा कामुकता में लोगों की प्रवृत्ति अधिक रहे। धर्म–कर्म में जनता की वृत्ति न लगे। राजा लोग (शासकवर्ग) निजकार्य में तत्पर रहें, अन्यत्र ध्यान न दें। वर्षा हो, पूर्व की तरफ से वायुवेग अधिक रहे।

अनन्तादि अष्टनाग– अनन्तादि अष्टनागों में इस वर्ष 'अनन्त' नामक नाग है।

फल– सं. 2068 वि. में काश्मीर, हिमाचल एवं सीमावर्ती प्रान्तों में भारी प्राकृतिक आपदा किंवा उग्रवादजन्य कुकृत्यों से जनधनहानि हो। समुद्र–तटवर्ती भूभाग पर इसवर्ष सुनामी की घटनाएं कहीं भारी विनाश का कारण बनेंगी। अनन्त नामक नाग की स्थिति में सर्पदंश की घटनाएं अधिक घटित होंगी। अग्निकाण्ड एवं विस्फोटों से भी जनधनहानि के योग बनेंगे। मुस्लिम–राष्ट्रविशेष में इसवर्ष सत्ता–परिवर्तन एवं अराजकता व्याप्त हो।

सुबुध्नादि द्वादश नाग– इसवर्ष बारह नागों में 'कर्कोटक' नामक नाग है।

फल– " यदा कर्कोटको नामा जायते पवनाशनः।
तदा नाम्बुद–दातेन्द्रो मरणं स्यान्महीपतेः।।"

अर्थात्– इसवर्ष 'कर्कोटक' नाग होने से वर्षा की अनेकत्र भारी कमी रहे। किसी प्रतिष्ठित (गण्यमान्य)व्यक्ति (शासक, नेता) के निधन से शोक व्याप्त हो।

आवह आदि सप्तवायु विचार– इस वर्ष वायुसप्तक में 'प्रवह' नामक वायु है।

फल– भू–अन्तर्गत उष्णताजन्य तरंगों के प्रवाह से भीषण भूकम्प, आंधी, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से जन–धनहानि हो। समुद्र–तटवर्ती भूभाग एवं दक्षिण–पश्चिमी भूभाग (देशों) में ज्वालामुखी विस्फोट, समुद्री विनाशक लहरों (सुनामी) से भी भारी जन–धनहानि का कारण यह 'प्रवह' नामक वायु बन सकती है। इस स्थिति में शासन निस्सहाय मालूम देगा।

संवत्सर (वि. सं.२०६८) का वाहन– इसवर्ष का राजा 'चन्द्र' होने से संवत् का वाहन 'मृग' है।

फल– देश में प्रगतिप्रद योजनाओं में प्रगति होगी। शासित एवं शासकों में जागृति, नए नेता का उदय होगा। देश के कुछ भागों में भूकम्प एवं प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। वन्यजीवों एवं प्राकृतिक आपदाओं से खड़ी फसलों को भारी हानि से किसानवर्ग परेशान रहे।

इस वर्ष के चार स्तम्भ

(१) जलस्तम्भ–(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) ८१ प्रतिशत है।
(२) वायुस्तम्भ–(ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र) ४६ प्रतिशत है।
(३) तृणस्तम्भ–(वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र) ६२ प्रतिशत है।
(४) अन्नस्तम्भ–(आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र) ६३ प्रतिशत है।

ये उल्लिखित चार स्तम्भ देश के कुशल–क्षेम–ज्ञानार्थ विशेष महत्त्व रखते हैं। क्योंकि, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सत्ता जल, वायु, अन्न एवं तृण (जड़ी–बूटियों) आदि पर ही निर्भर है। संवत् के शुभारम्भ पर देश की प्राकृतिक व्यवस्था के नियामक इन चार स्तम्भों का आकलन आवश्यक समझा गया है।

(१) जलस्तम्भ– इस वर्ष जलस्तम्भ (८१ प्रतिशत होने से) बहुत मजबूत है, वर्षा बहुत अधिक होगी। वर्षेश चन्द्र भी अधिक वर्षा का संकेत देता है। पृथ्वी–जलस्तर सुधरेगा। औद्यौगिक क्षेत्रों में प्रगति होगी। विद्युत–उत्पादन में सुधार एवं खाद्य पदार्थ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होंगे। जल–जीवन का घनिष्ठ सम्बन्ध होने से कृषकवर्ग में नया उत्साह बनेगा। ग्वार, चावल, जीरा, मक्का, गेहूं, बाजरा आदि की फसल एवं जड़ी–बूटियों के व्यापार से लाभ होगा।

(२) वायुस्तम्भ– इसवर्ष वायुस्तम्भ ४६ प्रतिशत (मध्यम) है। वायुवेग

से हानि न हो। कृषि, फल–फूल की वृद्धि हो। वर्षा पर्याप्त हो, कहीं वायुवेग से अग्निप्रकोप बढ़े, जंगलों में अग्निकाण्ड से हानि हो।

(३) **तृणस्तम्भ**– तृणस्तम्भ ६२ प्रतिशत है। इस वर्ष जल–तृण स्तम्भ दृढ़ होने से सुख–सम्पदा का संकेत मिलता है। पशुओं के लिए चारा एवं जंगलों में जड़ी–बूटी आदि काफी उपलब्ध होंगे। देशी जड़ी–औषध के निर्यात से लाभ होगा।

(४) **अन्नस्तम्भ**– इसवर्ष अन्नस्तम्भ ६३ प्रतिशत है। ध्यान दें– इसवर्ष स्तम्भ–चतुष्टय के विचार से यह वर्ष सुदृढ़ है। जल अच्छा बरसेगा, वायुवेग से फसलों को हानि की सम्भावना कम है। अनाजों की फसलें बहुत समृद्धि वाली होंगी। कृषकवर्ग सन्तुष्ट रहेगा। कृषियोग्य भूमि की उपलब्धता पर विशेष ध्यान देना होगा। गेहूं, चना, ग्वार, बाजरा एवं दालवाना के व्यापारी व कृषक सम्पन्नता प्राप्त करेंगे। वर्षरक्षाहेतु उल्लिखित चार स्तम्भों के सुदृढ़ होने से यह संवत् नई उपलब्धियों वाला, नई योजनाओं को कार्यान्वित करने वाला है एवं नए आयाम लेकर देश को अग्रेसर करेगा।

आर्षमान विचार (वर्षरक्षा के लिए चार दुर्ग)

(१) **प्रथम आर्ष**– (अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र) ६८ प्रतिशत है।
(२) **द्वितीय आर्ष**–(गत संवत् २०६७ वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र) ५१ प्रतिशत है।
(३) तृतीय आर्ष– (श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र) ७४ प्रतिशत है।
(४) चतुर्थ आर्ष –(कार्त्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र) का अभाव है।

इसवर्ष देश की रक्षा के लिए स्थापित उल्लिखित चार दुर्गों (किलों) के विचार से यह वर्ष देश के लिए विजयश्री प्राप्त कराने का संकेत देता है। क्योंकि, इसवर्ष प्रथम तीन दुर्ग सुदृढ़ हैं। लेकिन चतुर्थ दुर्ग कार्त्तिकमास के लगभग चीन–पाक सीमाप्रान्तों पर सैन्यबल से देश की गरिमा को हानि पहुंचाने का भय पैदा कर सकता है। एतदर्थ सैन्यबल को सीमा पर सतर्क रहना होगा।

प्रथम आर्ष - ६८ प्रतिशत होने से प्राकृतिक आपदाओं से प्रकृति रक्षात्मक रहेगी। जलवायु अनुकूल रहेगा, अन्न, तृण, फल–फूल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होंगे।

द्वितीय आर्ष - ५१ प्रतिशत होने से सीमाप्रान्त सुदृढ़ रहेंगे एवं जल-वायु- सेना की मारक क्षमता बढ़ेगी।

तृतीय आर्ष - ७५ प्रतिशत होने से धार्मिक क्रियाकलाप अधिक होंगे। राजनैतिक एवं आर्थिक दृष्टि से देश प्रगति की ओर बढ़ेगा। राजनीतिज्ञों को यश प्राप्त होगा। देश की रक्षणक्षमता प्रबल होगी।

चतुर्थ आर्ष का इस वर्ष अभाव होने से सीमाप्रान्तों पर चीन–पाक की कुनीति से कार्तिकादि मासों में सावधान रहना अवश्यक है।

दोहा : "अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्तिक पुण्यो कृतिका टारो।
महीमाह खलबली प्रकाशै, कहै भड्डली साख विनाशै।।"

रोहिणी का वास– इस वर्ष रोहिणी का वास 'समुद्र' में है।

फल– रोहिणी का वास समुद्र में होने से वर्षा अधिक होगी। अधिक जल चाहने वाले अन्नों (जीरी आदि) की फसल अच्छी होगी।

"—समुद्रे तु महावृष्टिः।"
" यदा पयोनिधिस्थले गतं विरंचिभं तदा।
अतीव वर्षणं भवेत् समस्त–धान्य वर्धनम्।।"

अर्थात्– समुद्र में रोहिणी का वास होने से इसवर्ष वर्षा बहुत हो एवं अनाज की फसलें सुसमृद्ध रहें। न्यूनवर्षा वाले बागड़ादि प्रान्तों में भी वर्षा हो। बाजरा अधिक हो।

संवत्सर(समय) का वास–क्योंकि, इसवर्ष 'रोहिणी का वास समुद्र' में है। अतः समय का वास माली के घर में है। फल–फूल आदि से पर्वतीय क्षेत्र में समृद्धि एवं कृषिजीवि वर्ग भी सुसमृद्ध रहे।

शनि की दृष्टि– विक्रमी संवत् २०६८ में शनि संवत् के आरम्भ से १४ नवम्बर २०११ ई. तक कन्या राशि में रहेगा। (तदनन्तर १५ नवंबर मंगलवार से) शनिदेव संवत् २०६८ के अन्त तक व कुछ आगे तक भी तुला राशि में रहेंगे।

१४ नवम्बर, २०११ ई. तक शनि के कन्या राशि में स्थित होने से इसकी दृष्टि दक्षिण की तरफ रहेगी। तत्पश्चात् (१५ नवम्बर, २०११ ई. से) संवत् के अन्त (22 मार्च, 2012 ई.) तक शनि की दृष्टि पश्चिम दिशा की तरफ रहेगी।

फल– १४ नवम्बर, २०११ ई. तक शनि की दृष्टि के अनुसार दक्षिणी प्रान्तों एवं दक्षिणी गोलार्ध के देशों पर शनि की क्रूर दृष्टि रहेगी। दक्षिणी प्रान्तों किंवा दक्षिणी देशों में राजनैतिक परेशानियां बढ़ेंगी। इसवर्ष कहीं राजनैतिक हत्याकाण्डों से शान्ति भंग होगी। सत्ता में परिवर्तन आएगा। १५ नवम्बर, २०११ ई. से संवत् के अन्त (२२ मार्च, २०१२ ई.) तक पश्चिमी देशों में कहीं शासनतन्त्र के विरुद्ध आन्दोलन, ज्वालामुखी–विस्फोट, भयंकर असाध्यरोग, भारी प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, जलाप्लाव, तूफान, अकालजन्य भारी जनधनहानि से शासनतन्त्र आपद्ग्रस्त होगा। समुद्र–तटवर्ती भूभाग पर भारी समुद्री तूफान से जनधनहानि के योग भी चिन्ता का कारण बनेंगे। कन्या, मकर, मेष एवं तुला राशि वाले देश इसवर्ष शनि की दृष्टि में रहेंगे–

"शनैश्चरः क्रमात्पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीड़येत्।
दुर्भिक्ष –देशभङ्गाद्यैर्विग्रहो राजविड्वरैः।।"

संवत् २०६८ वि. में–

(१) सोमवती अमावस्याएं दो हैं– भाद्रपद कृष्ण एवं माघ कृष्ण में।

(२) भौमवती अमावस्याएं तीन हैं– वैशाख कृष्ण, आश्विन कृष्ण एवं फाल्गुन कृष्ण में।

(३) शनिवारी अमावस्याएं दो हैं– श्रावण कृष्ण एवं पौष कृष्ण में।

शरत्सस्य जातक

संवत् २०६८ वि. में वैशाख शुक्ल त्रयोदशी रविवार, तदनुसार १५ मई, सन् २०११ ई. को चित्रा नक्षत्र, सिद्धि योग एवं कन्या राशिस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव ६ घंटा ५० मिनट (भा.स्टैं. टा.) पर वृष राशि में प्रविष्ट होंगे।

शरत्सस्य जातक कुण्डली
(१५ मई, २०११ ई; ६ घं. ५० मि.)

५ | ३ के. | श.६ चं. | ४ | २ सू. | १ | ७ | मं. बु. गु. शु. | ८ | १० | १२ | रा. ६ | ११

फल– वृषस्थ सूर्य से द्वादश भाव में मंगल–गुरु–बुध एवं शुक्र– ये सब मेषस्थ हैं, जोकिं शरदकालीन मूंग, मोठ, जीरी, खाण्ड, शक्कर, बाजरा, अरहर, कपास, तिल आदि में विशेष तेजी से लाभ देंगे। शरत्सस्य कुण्डली में शनि–चन्द्र का एकराशिस्थ होना शारद् धान्यों की फसलों को नुकसान पहुंचाता है एवं सरकार की व्यापारिक नीति भी व्यापारियों के लिए परेशानी का कारण बनेगी।

ग्रीष्मसस्य जातक

सं. २०६८ वि. में मार्गशीर्ष कृष्ण पंचमी (तात्कालिक षष्ठी) बुधवार, तदनुसार १६ नवम्बर, सन् २०११ ई. को पुष्य नक्षत्र, शुक्ल योग एवं कर्क राशिस्थ चन्द्र के समय २३ घं. ३४ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर सूर्यदेव **वृश्चिक राशि** में प्रविष्ट होंगे।

ग्रीष्मसस्य जातक कुण्डली
(१६ नवं., २०११ ई.; २३ घं. ३४ मि.)

५ मं. | ३ | ६ | ४ चं. | २ के. | ७ श. | १ गु. | सू. बु. रा.८ शु. | १० | १२ | ९ | ११

फल– जलराशि कर्क के समय सूर्य वृश्चिक–राशि में प्रविष्ट होगा। वृश्चिकस्थ सूर्य के साथ राहु–बुध–शुक्र एकत्र हैं एवं सूर्य से १२वें भाव में शनि है तथा सूर्य पर अग्नितत्त्व के ग्रह मंगल की विशेष दृष्टि है। सूर्य से सप्तम वृषस्थ केतु भी है। अतः ग्रीष्मधान्य उत्पन्न होने पर भी प्राकृतिक अनुकूलता न होने से नष्ट हों –

" मध्ये पापग्रहयोः सूर्यः सस्यं विनाशयत्यलिगः।
पापः सप्तम–राशौ जातं जातं विनाशयति।।"

अतः इसवर्ष जौ, गेहूं, चना आदि की खड़ी फसल को हानि पहुंचेगी। सूर्य से दशमस्थ मंगल एवं सूर्य से सप्तम केतु– ये दोनों क्रूरग्रह धान्यहानिकर ही हैं; –

" जामित्र–केंद्रसंस्थौ क्रूरौ सूर्यस्य वृश्चिकस्थस्य।
सस्य–निष्पत्तिं न कुरुतः सौम्यैर्दृष्टौ न सर्वत्र।।"

सूर्य का आर्द्रानक्षत्र में प्रवेश

संवत् २०६८ वि. में आषाढ़ कृष्ण सप्तमी बुधवार, तदनुसार २२ जून, सन् २०११ ई. को पूभा. नक्षत्र, आयुष्मान योग एवं कुम्भराशिस्थ चन्द्र के समय १६ घं. ६ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर **सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र** में प्रविष्ट होंगे।

फल– सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश तुला लग्न में हुआ है। इस समय तुला लग्न श. रा. द्वारा निर्मित

कर्तरी योग से ग्रस्त है। अतः अनेकत्र वर्षा का अवरोध रहेगा। कहीं खड़ी फसलें सूखने का भय है। लेकिन आर्द्राप्रवेश कुण्डली में नवमस्थ सूर्य एवं जलराशिस्थ चन्द्र पंचम भाव में होने से सर्वत्र फसलें तो लहलहाएंगी–

"रौद्रप्रवेशे तरणिर्विधुश्चेत् त्रिकोण–संस्थोऽथ चतुष्टयस्थः।
जलर्क्षगो वा शुभवीक्षितो वा धान्यं प्रभूतं निखिलं तदानीम्।।"

सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश १६ घंटा ६ मिनट पर २२ जून को सूर्यास्त से पहले ही हो रहा है। अतः वर्षा का अवरोध पैदा हो – "दिवार्द्रा याति चेद्भानुर्जलभक्षण–कारकः।।"

संवत् २०६८ वि. का शुभारम्भ

गतसंवत् २०६७ वि. में चैत्र कृष्ण अमावस, रविवार, तदनुसार ३ अप्रैल, सन् २०११ ई. को रेवती नक्षत्र, ऐन्द्र योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय नवसंवत् २०६८ वि. का शुभारम्भ २० घं. २ मि.(भा.स्टै.टा.) पर तुला लग्न में होगा।

शुभ संवत् २०६८ वि. की प्रवेशकालीन कुण्डली

८ | ६ श. | ९ रा. | ७ | ५ | १० | ४ | ११शु. | १ | ३ के. | गु. | सू.चं.१२मं.बु. | २

३ अप्रैल, सन् २०११ ई.; २० घं. २ मि.

फल–स. २०६८ वि. का शुभारम्भ तुलालग्न में हो रहा है। लग्नेश शुक्र मित्रक्षेत्री होकर पंचम भाव में है। राजनैतिक घटनाक्रम ठीक ढंग से चलाने की नीति में शनि–मंगल का समसप्तक भारी बाधा उपस्थित करेगा। भारत की प्रभाव राशि मकर का मालिक शनि आपदाग्रस्त है। विशेष नेतृत्व को उग्रवाद एवं विरोधी दलों के चक्रव्यूह से निकलना कठिन मालूम देता है। राजनैतिक संकट उभरेगा। तुला लग्न में संवत् की शुरुआत कुछ विशेष राजनीतिज्ञों के लिए भयावह है;–

"तुलालग्ने मध्यदेशे छत्रभंगश्च विग्रहः।
धान्यस्य विक्रयः प्राच्यां छत्रभंगश्च विप्लवः।।"

मध्यदेश किंवा केन्द्र में, पूर्वी भाग में कहीं उपद्रव, कहीं विग्रह, कहीं शासनतन्त्र में परिवर्तन के कारण बनेंगे। तुला लग्न के फलादेशानुसार कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति, पश्चिमी देशों में युद्धाग्नि से अशान्ति बने। इस प्रकार यह वर्ष विश्व के देशों एवं राष्ट्रनेताओं के लिए अग्निपरीक्षा का ही है।

वर्षेश(जगत्) लग्न

संवत् २०६८ वि. में चैत्र शुक्ल एकादशी गुरुवार, तदनुसार १४ अप्रैल, सन् २०११ ई. को मघा नक्षत्र, गण्ड योग एवं सिंहस्थ चन्द्र के समय १३घं. ०मि.(भा.स्टै.टा.) पर सूर्यदेव मेष राशि में प्रवेश करेंगे।

वर्षेश (जगत्) लग्न कुण्डली

५ चं. | ३ के. | ६ श. | ४ | २ | ७ | १ सू. | ८ | १० | १२गु.बु. | रा.९ | ११ शु. मं.

१४ अप्रैल, २०११ ई., १३ घं. ० मि.

फल– वर्षेशलग्न कर्क एवं कन्या राशिस्थ शनि पर बृहस्पति की दृष्टि है। पंचमेश मंगल भी गुरु की सयुति में है, जोकि शुभ है। इसवर्ष धन–धान्यादि की समृद्धि रहेगी। शासनतन्त्र नई योजनाओं को कार्यान्वित करके देश को सुख–समृद्धि की ओर ले जाए –

" यदा शुभग्रहैर्दृष्टं लग्नं स्यात्तु शुभाशुभम्।
धन–धान्यादि सम्पूर्णं वर्षं स्यात्तु शुभावहम्।।"

लेकिन कन्याराशिस्थ एवं आगे तुलास्थ शनि के समय पाकिस्तान, अफगानिस्तान, चीन, बंगलादेश तथा भारत के सीमावर्ती क्षेत्र(आसाम, बंगाल, त्रिपुरा, केरल, मणिपुर, बिहार के कुछ क्षेत्र)जुलाई से अक्तूबर–नवंबर २०११ ई. तक भारी आतंकवादजन्य विभीषिका से त्रस्त रहेंगे। उग्रवाद का दैत्य बड़े राष्ट्रों एवं भारत के बड़े महानगरों में जनसंहार करेगा। संवत् २०६८ वि. के आषाढ़, भाद्रपद से कार्तिक तक एवं चैत्र मास विशेष दुःखद घटनाप्रद रहेंगे। इन मासों में राजनैतिक हत्याकाण्ड, भूकम्प एवं अन्यविध प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं।

जगत्लग्न से व्यक्तिगत फलविचार

जन्मकुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्मराशि से जगत्लग्न जिस राशि पर आए, वह भाव शुभग्रह या भावेश से दृष्ट या युक्त हो तो उस वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि एवं अपने वर्षलग्न से वर्षेश (जगत्) लग्न आठवें या बारहवें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होगा। इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए भी समझना चाहिए ।

गुर्रा विचार (सन् २०११-१२ ई.)

इस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् प्रारम्भ होता है। उस दिन जो वार होता है, वही इस्लामी मतानुसार साल का राजा किंवा **"गुर्रा"** होता है।

संवत् २०६७ वि. में मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष तृतीया, बुधवार, तदनुसार ८ दिसंबर, सन् २०१० ई. को १ मुहर्रम (यकम मुहर्रम), हिजरी सन् १४३२ का शुभारम्भ होगा। क्योंकि इसवर्ष यकम मुहर्रम (१ मुहर्रम) को बुधवार है, अतः **हिजरी सन् १४३२ का बादशाह बुध ही होगा।**

फल-- गुड़, शक्कर, चीनी आदि पदार्थ मंहगे होंगे। जात--पात के बन्धन कमज़ोर होंगे। हिन्दुत्व का नाम राजनैतिक दृष्टि से सहज स्वीकार्य न रहे। मुस्लिम राष्ट्रविशेष में जनता संकटग्रस्त होकर स्थानान्तरण करने को विवश हो। जनता में रोगभय व्याप्त हो। खड़ी फसलों को हानि पहुंचे। व्यापारीवर्ग हानि से परेशान रहे।

संवत् २०६८ वि. में मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष तृतीया रविवार, तदनुसार 27 नवंबर, सन् २०११ ई. को यकम मुहर्रम (१ मुहर्रम) हिजरी सन् १४३३ का शुभारम्भ होगा। क्योंकि इसवर्ष यकम मुहर्रम (१ मुहर्रम) को रविवार है, अतः इस हिजरी सन् १४३३ का बादशाह 'सूर्य' ही होगा।

फल-- वर्षा बहुत हो, अनाज सस्ते रहें, मेवा पर्याप्त उपलब्ध हो। शासक एवं प्रजा सुखी रहे, पशुधन ठीक रहे, दूध--दही पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों। स्त्रियों के वक्षस्थल से सम्बन्धित रोग बहुत हों। मुस्लिम राष्ट्रविशेष में सत्ता-हस्तान्तरण एवं उग्रवादजन्य मारक घटनाएं अधिक हों।

आय--व्यय चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
व्यय	१४	८	५	२	१४	५	८	१४	५	८	८	५

लाभ--व्यय देखने की रीति-- अपनी राशि के लाभ--व्यय अंको को जोड़कर, उसमें से १ घटाकर, शेष को ८ से भाग देने पर यदि १, २, ६, ७ बचें तो वर्ष में उत्तम लाभ होगा। ३, ४, ५, ० बचें तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

"इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि-तिथौ शुभम् ।
यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत् ।।"

*****

विशेष-- चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन नीम के कोमल पत्ते, कालीमिर्च, हींग, अजवायन, जीरा, तुलसीदल-- ये सब कूट--पीसकर इच्छानुसार खाण्ड या शक्कर में मिलाकर शर्बत बनाकर प्रातः सेवन करने से रक्तविकार, वात--पित्त एवं कफजन्य कष्टों से शान्ति मिलती है।

सन्दिग्ध व्रत-पर्व-व्यवस्था (सं. 2068 वि.)

लेखक- प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला(हरियाणा)-134 109

(यदि इस स्तम्भ में चर्चित या अन्य किसी व्रत-पर्व की तिथि के बारे में किसी को सन्देह/शंका हो तो पत्र देकर मुझसे स्पष्टीकरण मांग लेना चाहिए, - प्रियव्रत शर्मा)
(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

(1) वरूथिनी एकादशी व्रत (वैशाख कृष्ण)

यहां द्वादशी की वृद्धि है, अतः यह एकादशी द्वादशीमात्राधिक्यवती शुद्धा है। यहां 'धर्मसिन्धु'कार लिखते हैं-

"अत्र शुद्धत्वात् स्मार्त्तानां व्रतमेकादश्यामेव उपवासो न द्वादश्याम्-इति माधवमतम्। हेमाद्रिमते तु सर्वैः परा द्वादश्येव उपोष्या।"

इस अनुसार माधव के मत से यहां एकादशी वाले दिन यानी 28 अप्रैल को स्मार्तों और 29 अप्रैल को वैष्णवों का उपवास होगा। यहां हेमाद्रि के मत से तो दोनों (स्मार्तों और वैष्णवों) का उपवास द्वादशी में 29 अप्रैल 2011 ई. को होना चाहिए। लेकिन इस स्थिति में माधव के मत को ही अधिकतर आचार्य मान्यता देते हैं।

(2) श्रीसीतानवमी (श्रीजानकी जयन्ती)

'निर्णयसिन्धु'कार ने श्रीसीता का जन्म फाल्गु. कृष्ण अष्टमी को लिखा है, परन्तु यह भ्रान्तिपूर्ण है, क्योंकि वैशाखकृष्ण नवमी की श्रीसीता जी के आविर्भाव के प्रतिपादक वचनों से इसका विरोध है। श्रीरामानन्दाचार्य जी ने **"वैष्णवमताब्ज भास्कर"** में लिखा है कि- श्रीसीता जी का आविर्भाव वैशाख शुक्ल नवमी, मंगलवार को पुष्य नक्षत्र में मध्याह्न के समय हुआ था-

**"पुष्यान्वितायां तु कुजे नवम्यां श्रीमाधवे मासि सिते हलाग्रतः।
भुवोऽर्चयित्वा जनकेन कर्षणे सीताविरासीद् व्रतमत्र कुर्यात्।।"**

नवमी यदि दोनों दिन मध्याह्न में व्याप्त या अव्याप्त हो तो युग्मवाक्यानुसार इसे पहले दिन अष्टमीयुता नवमी में करना चाहिए। इसवर्ष यह तिथि (वैशाख शुक्ल नवमी) लगभग पूरे भारत में 11 और 12 मई (2011 ई.)- दोनों दिन मध्याह्नव्यापिनी है, अतः उपरोक्त नियमानुसार श्रीसीता जयन्ती 11 मई, 2011 ई. को ही मनाई जाएगी।

11 और 12 मई को मध्याह्नकाल 10^h-58^m से 13^h-40^m तक है।

(3) श्रीसत्यनारायण व्रत (वैशाख)

यह व्रत प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा के दिन किया जाता है। इसवर्ष वैशाख पूर्णिमा केवल 16 मई, 2011 ई. को ही प्रदोषव्यापिनी है। अतः यह व्रत इसी दिन होगा।

(4) गोस्वामी श्रीतुलसीदास जयन्ती (श्राव. शु. सप्तमी)

श्रीतुलसीजयन्ती उदयव्यापिनी श्रावण शुक्ल सप्तमी को मनाई जाती है। इसवर्ष पूर्वी भारत में यह तिथि 6 अगस्त, 2011 ई. को सूर्योदयानन्तर कुछ पल तक विद्यमान होने से उदयव्यापिनी है, जिससे यह जयन्ती पूर्वी भारत में 6 अगस्त, 2011 ई. को ही मनाई जाएगी। लेकिन पश्चिमी भारत (पंजाब, हि. प्र., हरियाणा, जम्मू-काश्मीर, दिल्ली) में यह (सप्तमी) 6 अगस्त को सूर्योदय से कुछ क्षण पहले ही समाप्त हो जाएगी, जिससे यह यहां क्षयतिथि बन गई है, अतः भारत के इस भाग में लोग यह जयन्ती 5 अगस्त, 2011 ई. को ही मनाएंगे।

(5) रक्षाबन्धन (श्रावण पूर्णिमा)

श्रावणी पूर्णिमा को भद्रारहित अपराह्ण में रक्षाबनधन किया जाता है। इसवर्ष श्रावण पूर्णिमा 13 अगस्त, 2011 ई. को $24^{घ}$ $27^{मि}$ तक विद्यमान है। इसी दिन $12^{घ}$ $06^{मि}$ तक भद्रा है। इस दिन अपराह्णकाल $13^{घ}$ $45^{मि}$ से $16^{घ}$ $24^{मि}$ तक है, जो सर्वथा भद्रामुक्त है। अतः $13^{घ}$ $45^{मि}$ से $16^{घ}$ $24^{मि}$ तक की अवधि में रक्षाबन्धन निःशंक होकर कभी भी किया जा सकता है।

(6) दूर्वाष्टमी व्रत (भाद्र. शुक्ल अष्टमी)

यह व्रत रौहिण(दिन के नवम मुहूर्त्त में)व्याप्त भाद्र. शुक्ल अष्टमी में किया जाता है। यदि इसदिन अगस्त्य तारा उदित (दृश्य) हो तो इसे

रौहिणव्यापिनी भाद्र. कृष्ण अष्टमी में, यदि इसदिन भी अगस्त्य उदित हो तब इसे रौहिणव्यापिनी श्रावण शुक्ल अष्टमी में करने का विधान है। इस व्रत को अगस्त्य के उदय के दिनों में करने का सर्वथा निषेध है। इसवर्ष रौहिणव्यापिनी भाद्र. शु. अष्टमी के दिन (4 सितंबर, 2011 ई. को) 31° से 26° अक्षांशीय स्थलों पर अगस्त्य उदित रहेगा, अतः इन स्थलों पर रौहिणव्यापिनी भाद्र. कृष्ण अष्टमी (22 अगस्त, 2011 ई.) को यह व्रत होगा। अपि च– 25° से 18° अक्षांशीय स्थलों पर भाद्र. कृष्ण अष्टमी के दिन भी अगस्त्य उदित रहेगा। अतः इन स्थलों पर यह व्रत रौहिणव्यापिनी श्रावण शुक्ल अष्टमी (6 अगस्त, 2011 ई.)को किया जाएगा।

सारांश यह है– यह व्रत चण्डीगढ़, द. पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, और दिल्ली में 22 अगस्त, 2011 ई. को और उत्तरी पंजाब, हि. प्र., जम्मू–काश्मीर में 4 सितंबर, 2011 ई. को होगा।

लीजिए, इसे और स्पष्ट किए देते हैं– पंजाब के जालन्धर, अमृतसर, फिरोजपुर, कपूरथला, फरीदकोट, गुरदासपुर, पठानकोट, लुधियाना, खेमकरण, मोगा, रोपड़, मोहाली, नवांशहर में यह व्रत 4 सितंबर, 2011 ई. को और पटियाला, अबोहर, संगरूर, बठिण्डा, मुक्तसर, फाज़िल्का, मानसा, फतेहगढ़ साहिब में 22 अगस्त, 2011 ई. को होगा।

ध्यान रहे– इस व्रत के दिन सिंहस्थ सूर्य गुणाधायक (उत्तम) माना जाता है– **"सिंहस्थे सोत्तमा सूर्ये......"** अर्थात् सिंहस्थ सूर्य यहां निर्णायक नहीं है।

(अगस्त्य तारा भारत के विभिन्न अक्षांशों पर कब उदित और कब अस्त होता है– इसके लिए मेरी 'व्रतपर्व–विवेक' पुस्तक देखिए।)

(7) प्रोष्ठपदी श्राद्ध (भाद्र. पूर्णिमा)

यह पार्वण श्राद्ध है, अतः इसे अपराह्णव्यापिनी भाद्र. पूर्णिमा में किया जाता है। यदि दोनों दिन पूर्णिमा अपराह्णव्यापिनी हो तो जिस दिन अपराह्ण को यह अधिक व्यापत करे, उस दिन यह श्राद्ध किया जाता है। इसवर्ष यही स्थिति है। पूर्णिमा 11 और 12 सितंबर– दोनों दिन अपराह्ण को व्याप्त करती है। यह 11 सितंबर, 2011 ई. को अपराह्ण को आधिक्येन व्याप्त कर रही है, अतः शास्त्रानुसार यह श्राद्ध 11 सितंबर को ही किया जाएगा।

प्रोष्ठपदी श्राद्ध महालय का पूर्णिमाश्राद्ध ही है। पूर्णिमा में दिवंगत का महालय श्राद्ध इसी तिथि (भाद्र. पूर्णिमा)को किया जाता है। कुछ लोग परम्परया आश्वि. अमा के दिन ही पूर्णिमाश्राद्ध करते हैं।

शास्त्रानुसार महालयश्राद्धों का यह प्रथम श्राद्ध है, तदुनसार भाद्र. पूर्णिमा के दिन ही महालय श्राद्धारम्भ माना गया है।

(8) मातामह–मातामही श्राद्ध (आश्वि. शुक्ल प्रतिपदा)

मातामह–मातामही (नाना–नानी) का श्राद्ध पार्वणश्राद्ध है, अतः इसे अपराह्णव्यापिनी आश्विन शुक्ल प्रतिपदा में किया जाता है। इसवर्ष यह तिथि दोनों दिन(27 और 28 सितंबर, 2011 ई. को) अपराह्ण का स्पर्श नहीं कर रही है, अतः शास्त्रनियमानुसार यह श्राद्ध पहले ही दिन 27 सितंबर, 2011 ई. को होगा।

(9) कूष्माण्ड(अक्षय)नवमी (कार्तिक शुक्ल नवमी)

यह युगादि तिथि है। इसमें पितृश्राद्ध किया जाता है। शुक्लपक्षीय युगादि तिथि श्राद्धार्थ पूर्वाह्नव्यापिनी ली जाती है। यहां यह नवमी दोनों दिन (3 और 4 नवंबर, 2011 ई. को) पूर्वाह्न (पूर्वाह्न के एकदेश) को व्याप्त कर रही है। ऐसी स्थिति में श्राद्धार्थ पहला दिन (अष्टमीविद्ध तिथिदिन)स्वीकार किया जाता है–"नवमी सर्वत्र अष्टमीविद्धैव ग्राह्या"–(*धर्मसिन्धुः*)। तदनुसार इसवर्ष कूष्माण्डनवमी, जिसे अक्षयनवमी भी कहा जाता है, 3 नवंबर, 2011 ई. को ही होगी।

(10) वैकुण्ठ चतुर्दशी

कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी को 'वैकुण्ठ चतुर्दशी' मनाई जाती है। इसे मनाने की दो परम्पराएं हैं:–

(1) कुछ श्रद्धालु इस दिन उपवास रखकर रात्रि में जागरण करके विष्णुपूजा करते हैं। ये लोग निशीथव्यापिनी चतुर्दशी स्वीकार करते हैं। इनके लिए निशीथव्यापिनी चतुर्दशी में इस पर्व को मनाने का विधान है। यदि दोनों दिन चतुर्दशी निशीथव्यापिनी हो तो प्रदोष और निशीथ दोनों कालों में चतुर्दशी जिस दिन व्याप्त हो, उसी दिन (अर्थात् दूसरे दिन) विष्णुपूजक भक्त वैकुण्ठ चतुर्दशी मनाते हैं– " केचित्तु विष्णुपूजायामियं निशीथव्यापिनी ग्राह्या, दिनद्वये तद्व्याप्तौ निशीथ–प्रदोषोभय–व्यापिनी ग्राह्येत्याहुः "– (*धर्मसिंधुः*)। चतुर्दशी यदि दोनों दिन निशीथ का स्पर्श न करे तो भी यह व्रत दूसरे दिन ही होगा।

(2) दूसरी परम्परा यह है कि– पहले दिन उपवास करके अरुणोदय–

व्यापिनी चतुर्दशी में शिवपूजा करके बाद में प्रातःपारणा की जाती है। इस मत के अनुयायी लोग अरुणोदयव्यापिनी चतुर्दशी जिस अहोरात्र में हो, उस दिन उपवास करते हैं। वे उसी दिन वैकुण्ठ चतुर्दशी मनाते हैं। चतुर्दशी दोनों दिन अरुणोदयव्यापिनी हो तो पहले दिन उपवास और दूसरे दिन अरुणोदय में पूजा करनी चाहिए। यदि चतुर्दशी दोनों दिन अरुणोदय का स्पर्श न करे तो चतुर्दशी तिथि वाले दिन अहोरात्र में अरुणोदय के समय पूजा करें और पूजा से पहले इसी अहोरात्र में उपवास करना चाहिए। यहां *धर्मसिन्धु* का वचन है–

" पूर्वेद्युरुपवासं कृत्वा अरुणोदयव्यापिन्यां चतुर्दश्यां शिवं सम्पूज्य, प्रातः पारणं कार्यम्। तथा च– चतुर्दशीयुक्तारुणोदयवति अहोरात्र उपवासः फलितः। उभयत्रारुणोदयव्याप्तौ परत्रारुणोदये पूजा, पूर्वत्र उपवासः। उभयत्राव्याप्तौ चतुर्दशीयुक्ताहोरात्र एव अरुणोदये पूजा पूर्वत्रोपवासश्च।"

('व्रतपर्व–विवेक' से)

इन उपरोक्त दोनों मतानुसार इसवर्ष यह पर्व 8 नवंबर, 2011 ई. को ही सिद्ध होता है। क्योंकि एकमात्र 8 नवंबर, 2011 ई. को ही चतुर्दशी निशीथ व्यापिनी है, दूसरे दिन (9 नवं. को) यह निशीथ को स्पर्श नहीं करती, अतः प्रथम मतानुसार यह पर्व 8 नवंबर, 2011 ई. को मनाया जाएगा। क्योंकि एकमात्र 8 नवंबर, 2011 को ही चतुर्दशी अरुणोदयव्यापिनी है, अंतः द्वितीय मतानुसार भी यह पर्व 8 नवंबर, 2011 ई. को ही सिद्ध होता है।

(11) पद्मक योग

विशाखा में सूर्य की स्थिति के समय जब चन्द्रमा कृत्तिका नक्षत्र में हो तब **'पद्मक योग'** होता है। किसी तीर्थस्थान, विशेषतः तीर्थराज **पुष्कर (राजस्थान)** पर इस योग में स्नान–दान का विशेष माहात्म्य माना गया है– **"विशाखास्थे सूर्ये सति यद्दिने चन्द्रनक्षत्रं कृत्तिका, तत्र 'पद्मकयोग':, अयं पुष्करेऽति प्रशस्तः।"**– *(धर्मसिन्धुः)*

इसवर्ष 11 नवंबर, 2011 ई. को 7घं 01मि. से 12 नवंबर को 9घं 42मि. तक चन्द्रमा कृत्तिका नक्षत्र में है। इस समय सूर्य भी विशाखा नक्षत्र में है, अतः इसवर्ष 11 नवंबर, 2011 को 7घं 01मि. से 12 नवंबर, 2011 ई. को 9घं 42मि. तक 'पद्मक योग' बनता है। श्रद्धालुओं को कार्त्तिकस्नान–समाप्ति के दूसरे–तीसरे दिन इस योग में पुष्कर सर में स्नान–दान का महापुण्य प्राप्त करना चाहिए।

(12) होलिकादहन (फाल्गु. पूर्णिमा)

भद्रारहित प्रदोषकालव्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा में 'होलिकादहन' किया जाता है। यदि दोनों दिन पूर्णिमा प्रदोषव्यापिनी हो अथवा दूसरे दिन वह प्रदोष के एकदेश को व्याप्त करे तो पहिले दिन भद्रादोष के कारण होलिकादहन दूसरे दिन किया जाता है। यदि दूसरे दिन प्रदोष का वह स्पर्श न करे और पहिले दिन प्रदोष में भद्रा हो, किञ्च – दूसरे दिन पूर्णिमा साढ़े तीन प्रहर तक अथवा उससे ज्यादा हो एवं अगले दिन प्रतिपदा वृद्धिगामिनी [पूर्ववर्त्ती पूर्णिमा से अधिक भोगकाल (अवधि) वाली] हो तब दूसरे दिन ही प्रदोषव्यापिनी प्रतिपदा में 'होलिकादहन' होता है। यदि यहां प्रतिपदा का ह्रास हो अर्थात् प्रतिपदा पूर्ववर्ती पूर्णिमा से कम भोगकाल (अवधि) वाली हो तब पहिले दिन भद्रा के पुच्छ में अथवा भद्रा के मुख को छोड़कर भद्रा में ही 'होलिकादहन' किया जाता है। दूसरे दिन प्रदोष को पूर्णिमा स्पर्श न करे और पहिले दिन निशीथ से पहिले ही भद्रा समाप्त हो जाए तो वहां भद्रासमाप्ति पर होलिकादहन किया जाए। यदि यहां भद्रा निशीथ के बाद समाप्त हो रही हो तो भद्रामुख को छोड़कर भद्रा में ही होलिकादीपन होना चाहिए। यदि प्रदोष में भद्रामुख हो तो भद्रा के बाद अथवा प्रदोष के बाद होलिकादहन किया जाए । यदि दोनों दिन पूर्णिमा प्रदोष को स्पर्श न करे तो पहिले ही दिन भद्रापुच्छ में होली जलाई जाए । यदि वहां भद्रापुच्छ भी न मिले तो भद्रा में ही प्रदोष के अनन्तर होलिकादीपन करे।

पूर्णिमा की भद्रा के मुख एवम् पुच्छ का निर्णय इस प्रकार किया जाएगा–

भद्रा के तृतीय चरण का समाप्तिकाल ज्ञात कीजिए। यह भद्रा के पुच्छ की समाप्ति और मुख का प्रारम्भकाल है। इसमें से तीन घड़ी (1 घं. 12 मि.) घटाएं और पांच घड़ी (2 घं. 00 मि.) जोड़ने पर क्रमशः पुच्छ का प्रारम्भ और मुख का समाप्तिकाल निकल आएगा।

कदाचित् उस समय ग्रहण हो तो स्नान करके होलिका जलानी चाहिए।

('व्रतपर्व–विवेक से उद्धृत)

इसवर्ष पूर्णिमा केवल पहले ही दिन (7 मार्च, 2012 ई. को) प्रदोषव्यापिनी है और वह इसदिन निशीथ के कहीं बाद 28घं 31मि. पर समाप्त हो रही है, अतः उपरोक्त नियमानुसार होलिकादहन इसी दिन प्रदोष में भद्रा के काल में ही किया जाएगा। इसदिन भद्रामुख तो निशीथ के बाद 25घं 52मि. से 27घं 52मि. तक होगा।

श्री वि. सं. २०६८, शाक १९३३, चैत्र शुक्ल पक्ष १

(४ से १८ अप्रैल तक, सन् २०११ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

मं.गु. अस्त हैं।पक्षान्त में बु. पूर्व में दृश्य हो जाएगा। प्रातः शु. पूर्व में और श. पश्चिम क्षितिज में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	चैत्र	अप्रैल	चैत्र	र.उ.सा.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३१	६	१	चं.	४०	२७	रेव.	२७	३६	ऐं.	१०	२९	किं.	७	२८	२२	४	१४	२९	मेष	२७	३६	६	१३	१८	३९	११	१९	५१	५२	पंचक समाप्त २७/३६, राहु मूल १, केतु मृग. ३ में (A)
३१	११	२	मं.	४५	५८	अश्वि.	३४	२९	वै.	१२	२४	बा.	१३	१२	२३	५	१५	३०	मेष			६	११	१८	४०	११	२०	५१	०	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, चन्द्रव्रत,
३१	१५	३	बु.	५०	५२	भर.	४०	५०	वि.	१३	५६	तै.	१८	२५	२४	६	१६	ज.१	वृष	५७	१८	६	१०	१८	४०	११	२१	५०	७	जमद-उल-अव्वल मु. प्रा., श्रीमत्स्य जयन्ती, गौरी तृतीया (B)
३१	२०	४	गु.	५४	५७	कृत्ति.	४६	२५	प्री.	१४	५७	व.	२२	५४	२५	७	१७	२	वृष			६	९	१८	४१	११	२२	४९	११	भ. २२/५४ से ५४/५७ तक, शुक्र पू.भा. में ५४/३२,
३१	२५	५	शु.	५७	५४	रोहि.	५०	५९	आ.	१५	१६	ब.	२६	२५	२६	८	१८	३	वृष			६	८	१८	४२	११	२३	४८	१३	श्री (लक्ष्मी)पञ्चमी, नाग पञ्चमी, हयव्रत,
३१	२९	६	श.	५९	२९	मृग.	५४	१५	सौ.	१४	४०	कौ.	२८	४२	२७	९	१९	४	मिथुन	२२	५०	६	७	१८	४२	११	२४	४७	१३	प्लूटो वक्री २०/२८, स्कन्द षष्ठी,
३१	३४	७	र.	५९	२७	आर्द्रा	५५	५७	शो.	१२	५६	ग.	२९	२८	२८	१०	२०	५	मिथुन			६	५	१८	४३	११	२५	४६	११	भ. ५६/२७ बाद, गुरु रेव. ३ में १७/३२,
३१	३८	८	चं.	५७	३७	पुन.	५५	५५	अ.	९	५५	वि.	२८	३१	२९	११	२१	६	कर्क	४१	७	६	४	१८	४३	११	२६	४५	६	भ. २८/३१ तक, अशोकाष्टमी (पुनर्वसु नक्षत्र २८ घं. (C)
३१	४३	९	मं.	५३	५९	पुष्य	५४	६	सु./घृ.	५/५९	२९/३३	बा.	२५	४८	३०	१२	२२	७	कर्क			६	३	१८	४४	११	२७	४३	५९	श्रीरामनवमी, नवरात्र समाप्त, **क्रोधी नामक संवत्सर**
३१	४७	१०	बु.	४८	३५	आश्ले.	५०	३३	शू.	५२	१६	तै.	२१	१८	३१	१३	२३	८	सिंह	५०	३३	६	२	१८	४५	११	२८	४२	५०	नवरात्रव्रत-पारणा,
३१	५२	११	गु.	४१	४०	मघा	४५	२९	गं.	४३	४४	व.	१५	०८	वै.१	१४	२४	९	सिंह			६	१	१८	४५	११	२९	४१	३८	भ. १५/०८ से ४१/४० तक, सं. सूर्य अश्वि. मेष में (D)
३१	५६	१२	शु.	३३	३१	पू.फा.	३९	१३	वृ.	३४	१३	ब.	७	३५	२	१५	२५	१०	कन्या	५२	२८	६	०	१८	४६	०	०	४०	२४	मंगल रेव. में ५७/१७, प्रदोष व्रत,
३२	०	१३	श.	२४	३१	उ.फा.	३२	८	ध्रु.	२३	५९	तै.	२४	३१	३	१६	२६	११	कन्या			५	५८	१८	४७	०	१	३९	९	शुक्र मीन में १२/१३, अनंग त्रयोदशी, श्रीमहावीर जयन्ती(जैन),
३२	५	१४	र.	१५	६	हस्त	२४	४२	व्या.	१३	२४	व.	१५	०६	४	१७	२७	१२	तुला	५०	५७	५	५७	१८	४७	०	२	३७	५१	भ. १५/०६ से ४०/२५ तक, बुध पूर्व में उदित १४/०,(E)
३२	९	१५	चं.	५	४४	चित्रा	१७	२४	ह./व.	२/५२	४८/३९	ब.	५	४४	५	१८	२८	१३	तुला			५	५६	१८	४८	०	३	३६	३१	शुक्र उ.भा. में ५७/४८, चैत्री पूर्णिमा, वैशाखस्नान प्रारम्भ,

(A) २७/२५, चान्द्र संवत्सर २०६८ वि. प्रारम्भ, वर्षफल श्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, वासन्त नवरात्र प्रारम्भ, (B) (गणगौर), आन्दोलन तृतीया,(C)२७ मि. तक), श्रीदुर्गाष्टमी, (D) १७/२८, मु. ३०, पुण्यकाल १/२५ बाद, मेष संक्रान्ति, श्रीविष्णु दमनोत्सव, वैसाखी (पं.), कामदा एकादशी व्रत (स.), (E) श्रीशिवदमनोत्सव, श्री हनुमान जयन्ती (द.भा.), श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ११ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	११	११	११	१०	५	८	२
२६	२०	१२	२४	२३	२३	१६	२	२
४५	३३	४६	४०	२६	४१	१६	५६	५६
०६	४६	१२	२८	५४	४३	७	१८	१८
५८	८०२	४६	४६	१४	७२	४	३	३
५३	०५	२८	०८	३०	२३	३६	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. ४	पुन. १	पू.भा. ३	रेव. ३	रेव. ३	पू.भा. २	हस्त ३	मूल १	मृग. ३

कुण्डली सूर्योदय (११ अप्रै.)

१ — ११ शु.
बु. गु. सू. १२ मं.
२ — १०
चं. ३ के. — रा. ६
४ — ६ श. — ८
५ — ७

लोक भविष्यः- इस चान्द्रमास (चैत्र) में पांच रविवार एवं पांच सोमवार हैं। जनता में महामारी किंवा कैंसर-यौनरोगादि से परेशानी रहे। कुछ प्रान्तों में दुर्भिक्ष, कहीं शासक के अकस्मात् निधन किंवा सत्तापरिवर्तन से राजनैतिक उलझनें बढ़ें। उग्रवादजन्य संकट का सामना भी करना पड़े। इस पक्ष में गुरु अतिचारी एवं शनि वक्री है, अतः यूरोपीय देशों एवं यावनराष्ट्रों में कहीं अशान्ति एवं हत्याकाण्ड हों-"अतिचारंगते जीवे शनौ वक्रत्वमागते। हा हा भूतं जगत्सर्वं रुण्डमाला महीतले।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में रुई, कपास, बिनौला, चान्दी, नमक, गुड़, खाण्ड, सरसों, अलसी तेज हों। ६ से १७ अप्रै. तक रुई में विशेष घटाबढ़ी रहे। १४ अप्रै. के लगभग तेल, तिलहन, सोना चान्दी, तांबा, रुई, कपास, सूत, घी, गुड़, खाण्ड तेज़ रहें। आकाश लक्षणः- अप्रै. ४, ७, ६, १४ से १७ अप्रै. को आसाम, मुंबई, प. राजस्थान, उ.प्र. के कुछ भाग एवं हि. प्र. में कहीं बादलचाल एवं खण्डवृष्टि के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (१८ अप्रै.)

२ — १२मं.बु.गु.शु.
३ के. — सू. १ — ११
४ — १०
५ — चं. ७ — ६ रा.
श.६ — ८

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १८ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	११	११	११	११	५	८	२
३	१	१८	२०	२५	२	१८	२	२
३६	५६	१३	६	११	८	४७	३७	३७
३०	३६	३६	६	८	५०	२६	३	३
५८	६०४	४६	२४	१४	७२	४	३	३
३८	४८	११	३६	२४	३१	२४	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. २	चित्रा ३	रेव. १	रेव. २	रेव. ३	पू.भा. ४	हस्त ३	मूल १	मृग. ३

श्री वि. सं. २०६८, शाक १९३३, वैशाख कृष्ण पक्ष २															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा.				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(१६ अप्रैल से ३ मई तक, सन् २०११ ई.) उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त–ग्रीष्म ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						२६ अप्रै. से मं. एवम् गु. प्रातः पूर्व में दृश्य हो जाएंगे। प्रातः बु. शु. पूर्व में तथा श. सायं पूर्व में दिखाई देगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	वैशाख	अप्रैल	चैत्र	ज.उ.ल.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	चं.	५६	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३२	१३	२	मं.	४८	५३	स्वाती	१०	४३	सि.	४३	१६	तै.	२२	५०	६	१९	२९	१४	वृश्चि.	५१	२०	५	५५	१८	४९	०	४	३५	९	गुरु उदित २६ अप्रैल
३२	१८	३	बु.	४२	१९	विशा.	५	६	व्य.	३४	५८	व.	१५	३६	७	२०	३०	१५	वृश्चिक			५	५४	१८	४९	०	५	३३	४५	भ. १५/३६ से ४२/१६ तक, सूर्य सायन वृष में (A)
३२	२२	४	गु.	३७	२६	अनु. ज्ये.	० ५८	५५ ३४	व.	२८	२	ब.	९	५२	८	२१	वै.१	१६	धनु	५८	३४	५	५३	१८	५०	०	६	३२	१९	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, शक वैशाख प्रारम्भ,
३२	२६	५	शु.	३४	३१	मूल	५८	१२	प.	२२	३९	कौ.	५	५८	९	२२	२	१७	धनु			५	५२	१८	५०	०	७	३०	५१	अगस्त्य अस्त,
३२	३०	६	श.	३३	४०	पू.षा.	५९	५२	शि.	१८	५५	ग.	४	०५	१०	२३	३	१८	धनु			५	५१	१८	५१	०	८	२९	२२	भ. ३३/४० बाद, बुध मार्गी २४/१७,
३२	३५	७	र.	३४	५१	उ.षा.	६०	०	सि.	१६	४८	वि.	४	१५	११	२४	४	१९	मकर	१५	३९	५	५०	१८	५२	०	९	२७	५१	भ. ४/१५ तक, गुरु रेव. ४ में १०/२५,
३२	३९	८	चं.	३७	५०	उ.षा.	३	२७	सा.	१६	१०	बा.	६	२०	१२	२५	५	२०	मकर			५	४९	१८	५२	०	१०	२६	१९	
३२	४३	९	मं.	४२	१९	श्रव.	८	४१	शु.	१६	४७	तै.	१०	०४	१३	२६	६	२१	कुम्भ	४१	४७	५	४८	१८	५३	०	११	२४	४५	पंचक प्रारम्भ ४१/४७, मंगल उदित ११/४५, गुरु उदित (B)
३२	४७	१०	बु.	४७	४९	धनि.	१५	७	शु.	१८	१९	व.	१५	०३	१४	२७	७	२२	कुम्भ			५	४७	१८	५४	०	१२	२३	९	भ. १५/०३ से ४७/४६ तक, सूर्य भरणी में ५७/४२,
३२	५१	११	गु.	५३	५४	शत.	२२	१९	ब्र.	२०	२७	ब.	२०	५१	१५	२८	८	२३	कुम्भ			५	४६	१८	५४	०	१३	२१	३२	वरूथिनी एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृ. 88), (C)
३२	५५	१२	शु.	६०	०	पू.भा.	२९	५१	ऐं.	२२	५२	कौ.	२७	०१	१६	२९	९	२४	मीन	१२	५८	५	४५	१८	५५	०	१४	१९	५३	शुक्र रेव. में ५६/१७, गुरु बाल्य समाप्त ५ घं. ४८ मि.(D)
३२	५९	१२	श.	०	८	उ.भा.	३७	१९	वै.	२५	१५	तै.	०	०८	१७	३०	१०	२५	मीन			५	४४	१८	५६	०	१५	१८	१३	शनिप्रदोष व्रत,
३३	३	१३	र.	६	११	रेव.	४४	२७	वि.	२७	२५	व.	६	११	१८	म.१	११	२६	मेष	४४	२७	५	४३	१८	५६	०	१६	१६	३१	भ. ६/११ से ३८/५७ तक, पंचक समाप्त ४४/२७, (E)
३३	७	१४	चं.	११	४४	अश्वि.	५१	१	प्री.	२९	१०	श.	११	४४	१९	२	१२	२७	मेष			५	४२	१८	५७	०	१७	१४	४७	वक्री प्लूटो मूल ४ में ४६/३४,
३३	११	३०	मं.	१६	३८	भर.	५६	५३	आ.	३०	२४	ना.	१६	३८	२०	३	१३	२८	मेष			५	४१	१८	५८	०	१८	१३	२	मंगल अश्वि. मेष में २२/४८, भौमवती अमा,

(A) २४/४५, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, (B) ५ घं. ४८ मि., (C) श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती, (D) वरुथिनी एकादशी व्रत (वै.) (देखें पृ. 88), (E) मई प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २५ अप्रै.,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	११	११	११	११	५	८	२
१०	६	२३	१८	२६	१०	१८	२	२
२६	६	३६	५८	५१	३६	१७	१४	१४
१८	४५	११	१३	३७	४८	२५	४७	४७
५८	७३८	४५	१०	१४	७२	४	३	३
२६	२३	५५	१६	१७	३८	६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. ४	उ.भा. ४	रेव. ३	रेव. १	रेव. ४	उ.भा. ३	हस्त ३	मूल १	मृग. ३

कुण्डली सूर्योदय (२५ अप्रै.)

२ | १२मं.बु.गु.शु. | ३ के. | सू. १ | ११ | ४ | चं. १० | ५ | ७ | ९ रा. | श.६ | ८
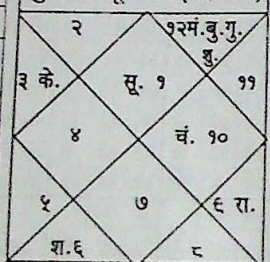
लोक भविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच चन्द्रवार एवं पांच मंगलवार होने से शुभाशुभ मिश्रित फल होगा। जनता में धनधान्य- समृद्धि रहे। मुस्लिम राष्ट्रविशेष में आन्तरिक घोर अशान्ति रहे। कहीं देश में उग्रवादजन्य हिंसा का तांडव शासक वर्ग को भारी पड़ेगा। सत्तापरिवर्तन से कहीं राजनीतिक अस्थिरता बने।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- १६ से २५ अप्रै. तक गुरु के अतिचार एवं शनि के वक्रत्वकाल में सोना, चान्दी आदि धातु; ऊन, रुई, कपास, बारदाना, गुड़, खाण्ड, घी में अच्छी तेज़ी से लाभ मिलेगा। २७ अप्रै. के लगभग सोना, चान्दी, सरसों, गुड़, घी एवं दालवाना में तेजी रहे। ३ मई के लगभग सोना, चान्दी, रुई, कपास, गुड़, खाण्ड, घी तेज रहें।

आकाश लक्षणः- अप्रै. २३, २४, २५ और मई ३ के लगभग तिरुवनन्तपुरम्, आसाम, पूर्वी उड़ीसा, विन्ध्यप्रदेश, हि.प्र., मुम्बई, भूटान, सिक्किम में वर्षा हो। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान में गर्मी का प्रकोप रहे।

कुण्डली सूर्योदय (३ मई)

२ | १२मं.बु.गु.शु. | ३ के. | सू. १ चं. | ११ | ४ | १० | ५ | ७ | ९ रा. | श.६ | ८

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३ मई,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	११	११	११	११	५	८	२
१८	१५	२६	२२	२८	२०	१७	१	१
१३	२	४२	२६	४५	१८	४६	४६	४६
२	२१	२१	०	५	१५	५	२१	२१
५८	७२६	४५	४४	१४	७२	३	३	३
१३	५३	३४	१०	३	४४	३८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. २	भर. १	रेव. ४	रेव. २	रेव. ४	रेव. २	हस्त ३	मूल १	मृग. ३

श्री वि. सं. २०६८, शाक १९३३, वैशाख शुक्ल पक्ष ३

(४ से १७ मई तक, सन् २०११ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

प्रातःकाल मं., गु., शु. एवम् बु. पूर्वक्षितिज में काफी आसन्न दिखाई देंगे। सायं श. पूर्वकपाल में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प	योग	समाप्ति-काल घ	समाप्ति-काल प	करण	समाप्ति काल घ	समाप्ति काल प	तारीखें प्र. वैशाख	अं. मई	श. वैशाख	मु.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ	प	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा	अ	क	वि	
३३	१५	१	बु	२०	४४	कृत्ति.	६०	०	सौ	३१	१	ब.	२०	४४	२१	४	१४	२९	वृष	१३	१६	५	४०	१८	५८	०	१९	११	१५	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, नेप्च्यून शत. १ में २५/४६,
३३	१८	२	गु.	२३	५७	कृत्ति	१	५६	शो	३०	५७	कौ.	२३	५७	२२	५	१५	ज. १	वृष			५	४०	१८	५९	०	२०	९	२६	जमद-उस्सानी मु. प्रा., श्रीपरशुराम जयन्ती, (A)
३३	२२	३	शु.	२६	११	रोहि.	६	६	अ.	३०	६	ग.	२६	११	२३	६	१६	२	मिथुन	३७	४६	५	३९	१९	०	०	२१	७	३५	भ. ५६/४४ बाद, अक्षय तृतीया(रोहिणी नक्षत्र ८घं.५मि. तक),
३३	२६	४	श.	२७	१८	मृग.	९	११	सु.	२८	२३	वि.	२७	१८	२४	७	१७	३	मिथुन			५	३८	१९	०	०	२२	५	४२	भ. २७/१८ तक,
३३	३०	५	र.	२७	१२	आर्द्रा	११	८	धृ.	२५	४४	बा.	२७	१२	२५	८	१८	४	कर्क	५६	४५	५	३७	१९	१	०	२३	३	४८	गुरु अश्वि. १ मेष में २१/२८, श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
३३	३३	६	चं.	२५	४८	पुन.	११	४९	शू.	२२	२	तै.	२५	४८	२६	९	१९	५	कर्क			५	३६	१९	२	०	२४	१	५२	श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती,
३३	३७	७	मं.	२३	२	पुष्य	११	१०	गं	१७	१५	व	२३	०२	२७	१०	२०	६	कर्क			५	३६	१९	२	०	२४	५९	५३	भ. २३/०२ से ५०/५८ तक, शुक्र अश्वि. मेष में (B)
३३	४०	८	बु.	१८	५४	आश्ले.	९	१०	वृ	११	२२	ब.	१८	५४	२८	११	२१	७	सिंह	९	१०	५	३५	१९	३	०	२५	५७	५३	सूर्य कृत्ति. में ४३/२२, बुध अश्वि. मेष में ७/५३,(C)
३३	४४	९	गु.	१३	३०	मघा	५	५२	ध्रु व्या	४ ५६	२५ ३३	कौ.	१३	३०	२९	१२	२२	८	सिंह			५	३४	१९	४	०	२६	५५	५१	
३३	४७	१०	शु	७	०	पू.फा. उ.फा.	१ ५६	२५ ५	ह.	४७	५६	ग.	७	०	३०	१३	२३	९	कन्या	१९	१०	५	३४	१९	४	०	२७	५३	४७	भ. ३३/१७ से ५६/३५ तक, मोहिनी एकादशी व्रत(D)
अवम		११	शु	५९	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
३३	५०	१२	श.	५१	३७	हस्त	५०	९	व.	३८	४६	ब	२५	३६	३१	१४	२४	१०	कन्या			५	३३	१९	५	०	२८	५१	४१	मोहिनी एकादशी व्रत (वै.),
३३	५४	१३	र	४३	२५	चित्रा	४३	५९	सि.	२९	२०	कौ.	१७	३०	ज्ये.१	१५	२५	११	तुला	१७	४	५	३२	१९	६	०	२९	४९	३४	सं. सूर्य वृष में १०/४५, मु. ३०, पुण्यकाल मध्याह्न(E)
३३	५७	१४	च.	३५	२१	स्वाती	३७	५७	व्य.	१९	५५	ग.	९	२२	२	१६	२६	१२	तुला			५	३२	१९	६	१	०	४७	२५	भ. ३५/२१ बाद, श्रीनृसिंह जयन्ती, श्रीसत्यनारायण (F)
३४	०	१५	मं.	२७	४८	विशा.	३२	२८	व.	१०	५२	वि.	१	३४	३	१७	२७	१३	वृश्चि.	१८	४५	५	३१	१९	७	१	१	४५	१४	भ. १/३४ तक, वैशाखी पूर्णिमा, श्रीबुद्ध पूर्णिमा, (G)

(A) श्रीशिवाजी जयन्ती, (B) ५९/३२, श्रीगंगा जन्म, (C) श्रीजानकी जयन्ती (देखें पृ. 88), (D) (स्मा.), (E) तक, प्रदोष व्रत, (F) व्रत (देखें पृ. 88), (G) श्रीबुद्ध जयन्ती, श्रीकूर्म जयन्ती, वैशाख स्नान समाप्त,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ११ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	०	११	०	०	५	८	२
२५	२७	५	२६	०	०	१७	१	१
५७	४६	४५	५०	३६	०	१८	२३	२३
५३	२८	३१	४४	२६	१७	५५	५५	५५
५७	८४४	४५	६८	१३	७२	३	३	३
५८	१८	१०	५५	४४	४६	३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	४	२	४	१	१	३	१	३
भर.	आश्ले.	अश्वि.	रेव.	अश्वि.	अश्वि.	हस्त	मूल.	मृग.

कुण्डली सूर्योदय (११ मई)

२, १२ बु., सू. १ मं. गु. शु., ३ के., ११, ४ चं., १०, ५, ७, ९ रा., श.६, ८

लोक भविष्यः- इस पक्ष में मंगल, गुरु, शुक्र एवम् सूर्य- ये चारों ग्रह मेषराशिस्थ हैं। मेषराशिस्थ अश्विनी नक्षत्र का गुरु सुभिक्ष एवम् आरोग्यकारक है, लेकिन मंगल, शुक्र एवं सूर्य जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में महंगाई, शासकों में परस्पर वैमनस्य, महाराष्ट्र आदि में भारी वर्षा करेंगे। गुरु-शुक्र एकत्र हैं--"गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्। अकाले वा भवेद्वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः॥" कहीं आन्तरिक अशान्ति व युद्धमय वातावरण बने, कहीं अकालिक वर्षा से हानि भी हो।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- ६ मई के लगभग सोना, चान्दी में उछाल आकर ८ मई के लगभग सोना, चान्दी, तांबा, गुड़, घी एवं अनाजों में अचानक मन्दा बनेगा। ११ मई के लगभग ज्वार, बाजरा, चना आदि अनाज; सोना, चान्दी, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड में ज़ोरदार मन्दे के रिएक्शन्ज़ आएंगे। १५ मई को तेल, तिलहन, सोने चान्दी गुड़, खाण्ड, कपास, बाज़ारों में तेज़ी बने; अनाज मन्द रहे। आकाश लक्षणः- मई ८, ९, ११, १२ १५ और १६ को असाम, तिरुवनन्तपुरम्, मुम्बई, उड़ीसा, बिहार में वर्षा के योग हैं। उत्तरी भारत में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि हो।

कुण्डली सूर्योदय (१७ मई)

३ के., १ मं.बु.गु. शु., ४, २ सू., १२, ५, ११, ६ श., ८, १०, चं. ७, ९ रा.

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १७ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	६	०	०	०	०	५	८	२
१	२५	१०	७	१	७	१७	१	१
४५	२४	१५	२२	५८	१७	१	४	४
१४	३	४६	४०	१०	५	४७	५०	५०
५७	८३४	४४	८३	१३	७२	२	३	३
४८	४२	५२	५५	२७	५०	२३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	२	४	३	१	३	३	१	३
कृत्ति.	विशा.	अश्वि.	अश्वि.	अश्वि.	अश्वि.	हस्त	मूल.	मृग.

श्री वि.सं. २०६८, शाक १९३३, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४

(१८ मई से १ जून तक, सन् २०११ ई.)
उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु।

पक्षान्त में बु. पूर्व में अदृश्य हो जाएगा। प्रातः मं., शु. पूर्व में; गु. पूर्वकपाल में तथा सायं श. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व की ओर होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															ज्येष्ठ	मई	वैशाख	ज.उ.मा.												
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	३	१	बु.	२१	११	अनु.	२७	५६	प. शि.	२ ५४	२६ ५९	कौ.	२१	११	४	१८	२८	१४	वृश्चि.			५	३०	१९	८	१	२	४३	२	
३४	६	२	गु.	१५	४८	ज्ये.	२४	४२	सि.	४८	४३	ग.	१५	४८	५	१९	२९	१५	धनु	२४	४२	५	३०	१९	८	१	३	४०	४९	भ. ४३/५४ बाद,
३४	९	३	शु.	१२	०	मूल	२३	४	सा.	४३	५१	वि.	१२	००	६	२०	३०	१६	धनु			५	२९	१९	९	१	४	३८	३४	भ. १२/०० तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
३४	१२	४	श.	९	५९	पू.षा.	२३	१४	शु.	४०	२८	बा.	९	५९	७	२१	३१	१७	मकर	३८	३४	५	२९	१९	९	१	५	३६	१८	मंगल भर. में ६/५३, बुध भर. में ५/०, शुक्र भर.(A)
३४	१५	५	र.	९	५१	उ.षा.	२५	१६	शु.	३८	३६	तै.	९	५१	८	२२	ज्ये.१	१८	मकर			५	२८	१९	१०	१	६	३४	०	शक ज्येष्ठ प्रारम्भ,
३४	१७	६	चं.	११	३६	श्रव.	२९	६	ब्र.	३८	९	व.	११	३६	९	२३	२	१९	मकर			५	२८	१९	११	१	७	३१	४२	भ. ११/३६ से ४३/१६ तक, गुरु अश्वि. २ में ८/४३,
३४	२०	७	मं.	१५	२	धनि.	३४	२९	ऐं.	३८	५३	ब.	१५	०२	१०	२४	३	२०	कुम्भ	१	३७	५	२७	१९	११	१	८	२९	२२	पंचक प्रारम्भ १/३७,
३४	२३	८	बु.	१९	४९	शत.	४१	२	वै.	४०	३३	कौ.	१९	४९	११	२५	४	२१	कुम्भ			५	२७	१९	१२	१	९	२७	२	सूर्य रोहि. में ३४/२७,
३४	२५	९	गु.	२५	२७	पू.भा.	४८	१६	वि.	४२	४५	ग.	२५	२७	१२	२६	५	२२	मीन	३१	२७	५	२६	१९	१३	१	१०	२४	४०	भ. ५८/२७ बाद,
३४	२७	१०	शु.	३१	२८	उ.भा.	५५	४१	प्री.	४५	८	वि.	३१	२८	१३	२७	६	२३	मीन			५	२६	१९	१३	१	११	२२	१८	भ. ३१/२८ तक, वक्री शनि हस्त २ में ५/४३,
३४	३०	११	श.	३७	२१	रेव.	६०	०	आ.	४७	२०	ब.	४	२४	१४	२८	७	२४	मीन			५	२६	१९	१४	१	१२	१९	५५	बुध कृत्ति. में ५६/३७, अपरा एकादशी व्रत (स.), (B)
३४	३२	१२	र.	४२	४१	रेव.	२	५०	सौ.	४९	५	कौ.	१०	०१	१५	२९	८	२५	मेष	२	५०	५	२५	१९	१४	१	१३	१७	३०	पंचक समाप्त २/५०,
३४	३४	१३	चं.	४७	९	अश्वि.	९	२०	शो.	५०	१०	ग.	१४	५५	१६	३०	९	२६	मेष			५	२५	१९	१५	१	१४	१५	५	भ. ४७/०६ बाद, बुध वृष में ४६/४१, सोमप्रदोष व्रत,
३४	३६	१४	मं.	५०	३४	भर.	१४	५३	अ.	५०	२५	वि.	१८	५१	१७	३१	१०	२७	वृष	३१	७	५	२५	१९	१५	१	१५	१२	३९	भ. १८/५१ तक,
३४	३८	३०	बु.	५२	४९	कृत्ति.	१९	२३	सु.	४९	४७	च.	२१	४१	१८	जू.१	११	२८	वृष			५	२५	१९	१६	१	१६	१०	१२	शुक्र कृत्ति. में ५७/०७, बुध पूर्व में अस्त ३७/४७,(C)

(A) में ५८/५५, सूर्य सायन मिथुन में २५/५५, (B) भद्रकाली एकादशी (पं.), (C) जून प्रारम्भ, भावुका अमावस, वट सावित्री व्रत (अमा पक्ष),

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २५ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	०	०	०	०	५	८	२
९	११	१६	१९	३	१७	१६	०	०
२७	४९	१३	३८	४४	०	४३	३९	३९
२	२७	१४	३५	१९	३	४५	२४	२४
५७	७१८	४४	१०२	१३	७२	१	३	३
३८	१९	२७	१४	१	५५	५०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. ४	शत. २	भर. १	भर. २	अश्वि. २	भर. २	हस्त ३	मूल १	मृग. ३

कुण्डली सूर्योदय (२५ मई)

के.३ | २ सू. | मं.बु.गु.शु. १ | १२ | ४ | ५ | चं. ११ | ६ श. | ८ | १० | ७ | ९ रा.

लोक भविष्य:- इस पक्ष के पूर्वार्ध में मंगल, बुध, शुक्र भरणी नक्षत्र में हैं। राजनीतिज्ञों के लिए समय अनुकूल नहीं। रोग-विशेष से जनता कष्ट में रहे। ज्ये. कृष्ण प्रतिपदा बुधवार को मं. बु. गु. एवं शुक्र मेषराशिस्थ हैं;-"छत्रमंगाय कुत्रचित्"। कहीं किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु से शोक हो:- "कृष्णे ज्येष्ठ प्रतिपदि भौमार्क-बुधवासराः। एवं भवेद्यदा योगो लोकानां व्याधिपीड़नम्।।" महाराष्ट्र, उड़ीसा आदि में कहीं प्राकृतिक प्रकोप (जलाप्लाव आदि) से हानि हो।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- २० से २३ मई तक चावल, गेहूं, उड़द आदि अनाजों, सोना, चान्दी, अफीम, तेल, तिलहन रुई में ज़ोरदार मन्दी एवं तेज़ी के रिएक्शन्ज़ आएंगे। २५ मई के लगभग तेल, तिलहन, घी, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, सूत, सुपारी, मिर्च में तेज़ी रहे। २८ मई को चान्दी, अफीम में खास घटाबढ़ी होकर मन्दी बने। पक्षान्त में अनाज, रुई, सूत, तिल, मटर तेज़ होकर मन्दे हों।

आकाश लक्षण:- मई २१ से २३ एवं २५ मई से १ जून तक मुम्बई, आसाम, उड़ीसा, भूटान, शिलांग, काठमाण्डु में वायुवेग के साथ वर्षा हो। उ.प्र., म.प्र., पंजाब, हरियाणा एवं हि.प्र. में कहीं बादलचाल, आंधी एवं कहीं खण्डवृष्टि हो।

कुण्डली सूर्योदय (१ जून)

के. ३ | २ सू. चं. बु. | मं.१ गु.शु. | १२ | ४ | ५ | ११ | ६ श. | ८ | १० | ७ | ९ रा.

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	०	१	०	०	५	८	२
१६	६	२१	२	५	२५	१६	०	०
१०	०	२३	२१	१४	३०	३२	१७	१७
१२	५२	१७	१२	६	४४	५०	८	८
५७	७५३	४४	११७	१२	७३	१	३	३
३१	२३	४	४२	३४	००	१०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. २	कृत्ति. ३	भर. ३	कृत्ति. २	अश्वि. २	भर. ४	हस्त २	मूल १	मृग. ३

श्री वि.सं. २०६८, शाक १९३३, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५

(२ से १५ जून तक, सन् २०११ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

बु. अस्त है। प्रातः मं. शु. पूर्व में, गु. पूर्वकपाल में तथा श. सायं याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. (ज्येष्ठ)	अं. (जून)	श. (ज्येष्ठ)	मु. (र.उ.सा.)	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.
३४	४०	१	गु.	५३	५४	रोहि.	२२	४३	धृ.	४८	१३	किं.	२३	२१	१९	२	१२	२९	मिथुन	५३	५८	५	२४	१९	१६	१	१७	७	४३
३४	४२	२	शु.	५३	४९	मृग.	२४	५६	शू.	४५	४५	बा.	२३	५१	२०	३	१३	३०	मिथुन			५	२४	१९	१७	१	१८	५	१४
३४	४४	३	श.	५२	३९	आर्द्रा	२६	२	गं.	४२	२४	तै.	२३	१३	२१	४	१४	र.१	मिथुन			५	२४	१९	१८	१	१९	२	४४
३४	४६	४	र.	५०	२६	पुन.	२६	५	वृ.	३८	१४	व.	२१	३२	२२	५	१५	२	कर्क	११	१०	५	२४	१९	१८	१	२०	०	१२
३४	४७	५	चं.	४७	१६	पुष्य	२५	९	ध्रु.	३३	१६	ब.	१८	५१	२३	६	१६	३	कर्क			५	२४	१९	१८	१	२०	५७	३९
३४	४९	६	मं.	४३	१३	आश्ले.	२३	२०	व्या.	२७	३४	कौ.	१५	१४	२४	७	१७	४	सिंह	२३	२०	५	२४	१९	१९	१	२१	५५	५
३४	५०	७	बु.	३८	२३	मघा	२०	४१	ह.	२१	१३	ग.	१०	४८	२५	८	१८	५	सिंह			५	२३	१९	१९	१	२२	५२	३०
३४	५१	८	गु.	३२	५३	पू.फा.	१७	२०	व.	१४	१७	वि.	५	३८	२६	९	१९	६	कन्या	३१	२३	५	२३	१९	२०	१	२३	४९	५४
३४	५२	९	शु.	२६	५०	उ.फा.	१३	२४	सि. व्य.	६ ५९	५२ ६	कौ.	२६	५०	२७	१०	२०	७	कन्या			५	२३	१९	२०	१	२४	४७	१६
३४	५४	१०	श.	२०	२६	हस्त	९	४	व.	५१	८	ग.	२०	२६	२८	११	२१	८	तुला	३६	४७	५	२३	१९	२१	१	२५	४४	३८
३४	५५	११	र.	१३	५२	चित्रा स्वाती	४ ५९	३१ ५९	प.	४३	७	वि.	१३	५२	२९	१२	२२	९	तुला			५	२३	१९	२१	१	२६	४१	५९
३४	५५	१२	चं.	७	२१	विशा.	५५	४४	शि.	३५	१७	बा.	७	२१	३०	१३	२३	१०	वृश्चि.	४१	४४	५	२३	१९	२१	१	२७	३९	१८
३४	५६	१३	मं.	१	१०	अनु.	५२	४	सि.	२७	५०	तै.	१	१०	३१	१४	२४	११	वृश्चिक			५	२३	१९	२२	१	२८	३६	३७
अवम		१४	मं.	५५	३४	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३४	५७	१५	बु.	५०	५०	ज्ये.	४९	१४	सा.	२०	५८	वि.	२३	१२	आ.१	१५	२५	१२	धनु	४९	१४	५	२३	१९	२२	१	२९	३३	५५

चन्द्रदर्शन, मु. १५, यूरेनस उ.भा.३ में ४/१०, (A)
बुध रोहि. में ४८/३४, शुक्र वृष में ४१/३२, रम्भा (B)
भ. २१/३२ से ५०/२६ तक, शहीदी दिन श्रीगुरु (C)
राहु ज्येष्ठा ४ वृश्चिक ., केतु मृग. २ वृष में (D)
गुरु अश्वि. ३ में ५७/५७, विंध्यवासिनी पूजा, (E)
भ.३८/२३ बाद, सूर्य मृग. में २६/०३, मंगल (F)
भ. ५/३८ तक,

चन्द्रग्रहण-१५/१६ जून

भ. ४७/०६ बाद, बुध मृग. में २/००, श्रीगंगा (G)
भ. १३/५२ तक, मंगल वृष में ४८/५०, शुक्र रोहि.(H)
शनि मार्गी ६/५५, चम्पक द्वादशी, सोमप्रदोष व्रत,
भ. ५५/३४ बाद, बुध मिथुन में ३/५२, ग्रहणशूल,
चतुर्दशी तिथिक्षय,
भ. २३/१२ तक, सं. सूर्य मिथुन में २७/३८, (I)

(A) नेप्च्यून वक्री १६/०५, (B) तृतीया, रजब मु. प्रारम्भ, श्रीमहाराणा प्रताप जयन्ती (राज.), (C) अर्जुनदेव जी, (D) २३/४०, (E) अरण्य षष्ठी, (F) कृत्ति. में १३/१५, (G) दशहरा (हस्त नक्षत्र ६ घं. १ मि. तक), (H) में ५४/२२, निर्जला एकादशी व्रत (स.), (I) मु. १५, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (देखें पृ. 14), वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष), श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ६ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	०	१	०	१	५	७	१
२३	२२	२७	१८	६	५	१६	२६	२६
४६	३८	१४	५४	५२	१४	२६	५१	५१
५४	६	१४	२०	३०	५६	१५	४२	४२
५७	८५३	४३	१३०	११	७३	०	३	३
२३	५५	३७	३६	५६	४	२३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृग. १	पू.फा. ३	कृत्ति. १	रोहि. ३	अश्वि. ३	कृत्ति. ३	हस्त २	ज्येष्ठा ४	मृग. २

कुण्डली सूर्योदय (६ जून)

भाव	ग्रह
१	मं. गु.
२	सू. के. शु. बु.
३	
४	
५	चं.
६	श.
७	
८	रा.
९	
१०	
११	
१२	

लोकभविष्यः- यहां वृष राशि में सू.मं.शु. के.-ये चार ग्रह एकत्र हैं। आगे श्रावण मास में वर्षा में कमी एवं कहीं मन्त्रिमण्डल में विशेष परिवर्तन हों। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होने के योग है। राहु का वृश्चिक राशि में पदार्पण एवं पक्षान्त में मंगल-राहु का समसप्तकयोग भी, तेल एवं खाद्य वस्तुओं में महंगाई से सामान्यवर्ग को परेशान करे- "ज्येष्ठे-मासे रवियुता ग्रहाः यत्रैक-राशिगाः। श्रावणे मेघरोधाय छत्रभंगाय कुत्रचित्।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- ४ जून के लगभग सोना, चान्दी, रुई, कपास, तेल, तिलहन, चावल, गुड़, खाण्ड में तेज़ी; ७ जून के लगभग बाजार अस्थिर रहें। ८ जून को बाज़ारों में तेज़ी के रिएक्शन आकर मन्दा हो। १३ एवं १५ जून को ज़ोरदार तेज़ी से तिलहन, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में लाभ मिलेगा। **आकाश लक्षणः-** जून २, ४, ६, ७, ८, १२, १३ एवं १५ को भूटान, शिलांग, आसाम, महाराष्ट्र, उड़ीसा में ज़ोरदार वर्षा हो। कहीं बाढ़ से हानि हो। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली में लू से जनहानि हो; कहीं आंधी-तूफ़ान से भी हानि संभव है । हि.प्र. में यत्र-तत्र वर्षा हो ।

कुण्डली सूर्योदय (१५ जून)

भाव	ग्रह
१	गु.
२	सू. मं. के. शु.
३	बु.
४	
५	
६	श.
७	
८	रा. चं.
९	
१०	
११	
१२	

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १५ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	१	२	०	१	५	७	१
२६	१८	१	२	८	१२	१६	२६	२६
३३	३५	३४	३	२	३३	२५	३२	३२
५५	४६	५६	४६	५५	२१	३१	३७	३७
५७	८२७	४३	१२१	११	७३	०	३	३
१७	६	१५	२	२६	७	१४	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृग. २	ज्येष्ठा १	कृत्ति. २	मृग. ३	अश्वि. ३	रोहि. १	हस्त २	ज्येष्ठा ४	मृग. २

श्री वि. सं. २०६८, शाक १९३३, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६

(१६ जून से १ जुलाई तक, सन् २०११ ई.)
उत्तर–दक्षिणायन, उत्तरे गोल, ग्रीष्म–वर्षा ऋतु।

२४ जून से बुध सायं पश्चिम में दृश्य हो जाएगा। इस समय श. याम्योत्तरवृत्त में होगा। प्रातः शु. पूर्व-क्षितिजासन्न, मं. पूर्व में और गु. पूर्वकपाल में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. आषाढ़	तारीखें अं. जून	तारीखें श. ज्येष्ठ	तारीखें मु. रजब	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५८	१	गु.	४७	१३	मूल	४७	३१	शु.	१४	५५	बा.	१९	०१	२	१६	२६	१३	धनु			५	२४	१९	२३	२	०	३१	१२	ग्रहणशूल,
३४	५८	२	शु.	४४	५९	पू.षा.	४७	९	शु.	९	५३	तै.	१६	०६	३	१७	२७	१४	धनु			५	२४	१९	२३	२	१	२८	२८	बुध आर्द्रा में ७/१२, ग्रहणशूल,
३४	५८	३	श.	४४	१८	उ.षा.	४८	२०	ब्र.	६	१	व.	१४	३८	४	१८	२८	१५	मकर	२	१८	५	२४	१९	२३	२	२	२५	४४	भ. १४/३८ से ४४/१८ तक, ग्रहणशूल,
३४	५९	४	र.	४५	१५	श्रव.	५१	७	ऐं.	३	२५	ब.	१४	४६	५	१९	२९	१६	मकर			५	२४	१९	२३	२	३	२३	०	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३४	५९	५	चं.	४७	४८	धनि.	५५	२८	वै.	२	७	कौ.	१६	३१	६	२०	३०	१७	कुम्भ	२३	८	५	२४	१९	२४	२	४	२०	१५	पंचक प्रारम्भ २३/०८,
३४	५९	६	मं.	५१	४८	शत.	६०	०	वि.	२	३	ग.	१९	४८	७	२१	३१	१८	कुम्भ			५	२४	१९	२४	२	५	१७	२९	भ. ५१/४८ बाद, सूर्य सायन कर्क में ४३/२७, (A)
३४	५९	७	बु.	५६	५४	शत.	१	११	प्री.	३	३	वि.	२४	२१	८	२२	आ.१	१९	मीन	५१	१०	५	२४	१९	२४	२	६	१४	४४	भ. २४/२१ तक, सूर्य आर्द्रा में २६/४५, शक अषाढ़ प्रा.,
३४	५९	८	गु.	६०	०	पू.भा.	७	५३	आ.	४	५१	बा.	२९	४६	९	२३	२	२०	मीन			५	२५	१९	२४	२	७	११	५८	बुध पुन. में ३१/४८, शुक्र मृग. में ५०/१८,
३४	५९	८	शु.	२	३९	उ.भा.	१५	८	सौ.	७	४	कौ.	२	३९	१०	२४	३	२१	मीन			५	२५	१९	२४	२	८	९	१३	बुध पश्चिम में उदित २०/२८,
३४	५८	९	श.	८	२८	रेव.	२२	२४	शो.	९	२१	ग.	८	२८	११	२५	४	२२	मेष	२२	२४	५	२५	१९	२५	२	९	६	२७	भ ४१/१० बाद, पंचक समाप्त २२/२४, गुरु अश्वि.(B)
३४	५८	१०	र.	१३	५२	अश्वि.	२९	५	अ.	११	१७	वि.	१३	५२	१२	२६	५	२३	मेष			५	२६	१९	२५	२	१०	३	४१	भ. १३/५२ तक, मंगल रोहि. में ४५/५०,
३४	५७	११	चं.	१८	२१	भर.	३४	४९	सु.	१२	३२	बा.	१८	२१	१३	२७	६	२४	वृष	५१	५	५	२६	१९	२५	२	११	०	५५	योगिनी एकादशी व्रत (स.),
३४	५७	१२	मं.	२१	३५	कृत्ति.	३९	१७	धृ.	१२	५०	तै.	२१	३५	१४	२८	७	२५	वृष			५	२६	१९	२५	२	११	५८	९	बुध कर्क में ४८/१५, भौमप्रदोष व्रत,
३४	५६	१३	बु.	२३	२०	रोहि.	४२	१७	शू.	१२	०	व.	२३	२०	१५	२९	८	२६	वृष			५	२६	१९	२५	२	१२	५५	२३	भ. २३/२० से ५३/२७ तक, शुक्र मिथुन में १७/४०,
३४	५५	१४	गु.	२३	३४	मृग.	४३	४८	गं.	९	५९	श.	२३	३४	१६	३०	९	२७	मिथुन	१३	१३	५	२७	१९	२५	२	१३	५२	३७	बुध पुष्य में ४१/२०, शनि हस्त ३ में १६/०२,
३४	५४	३०	शु.	२२	२१	आर्द्रा	४३	५५	वृ.	६	४७	ना.	२२	२१	१७	जु.१	१०	२८	मिथुन			५	२७	१९	२५	२	१४	४९	५१	जुलाई प्रारम्भ,

(A) दक्षिण अयन एवं वर्षा ऋतु प्रा., (B) ४ में ४०/०८,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २४ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	१	२	०	१	५	७	१
८	१३	८	२०	६	२३	१६	२६	२६
६	४२	२	५६	४२	३२	३१	४	४
१३	४१	१०	२६	२८	७	१२	०	०
५७	७१३	४२	११७	१०	७३	१	३	३
१४	५	४४	१२	३४	१६	८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा १	उ.भा. ४	रोहि. ४	पुन. १	अश्वि. ३	मृग. १	हस्त २	ज्येष्ठा ४	मूल. २

कुण्डली सूर्योदय (२४ जून)

४ | २ मं.शु.के. | ५ | बु. ३ सू. | १ गु. | श.६ | १२ चं. | ७ | ६ | ११ | रा. ८ | १० |

लोक भविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच शुक्रवार प्रजा में सुख-शान्ति एवं सुभिक्ष के सूचक हैं–"शुक्रस्य पंचवाराःस्युर्यत्रमासे निरन्तरम्। प्रजावृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तति।।" इस पक्ष में बुध-सूर्य दोनों आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश कर रहे हैं; अनेकत्र वायुवेग के साथ वर्षा हो एवं कृषकवर्ग को राहत मिलेगी। इस पक्ष में बुध का उदय कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि का संकेत भी देता है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में अनाज मन्दे रहें। २२ जून के लगभग चावल, चना, जौ, चान्दी, खल, बिनौला अलसी, एरण्ड में तेज़ी के बाद २३ जून को चान्दी, रुई, कपास, सूत में ज़ोरदार मन्दा बने। २४ जून से पक्षान्त तक बाज़ारों में उठापटक चलेगी। २६ जून को रुई, कपास, तेल, तिलहन, ग्वार में काफी मन्दा बने। **आकाश लक्षणः-** जून १७, १८ और २२ से ३० जून तक हि.प्र., उ.प्र., पंजाब, हरियाणा, जम्मू-काश्मीर में कहीं आंधी-तूफान के साथ वर्षा के योग हैं। बिहार, उड़ीसा, भूटान, शिलांग, आसाम, महाराष्ट्र में कहीं वर्षा से हानि भी संभव है।

कुण्डली सूर्योदय (१ जुला.)

बु. ४ | २ मं.के. | ५ | चं. ३ सू. शु. | १ गु. | श.६ | १२ | ७ | ६ | ११ | रा. ८ | १० |

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १ जुला.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	१	३	०	२	५	७	१
१४	१०	१३	३	१०	२	१६	२८	२८
४६	१५	०	५२	५४	५	४१	४१	४१
५१	२८	२	४२	१२	२१	११	४४	४४
५७	८०२	४२	१०२	६	७३	१	३	३
१३	५४	१६	१८	४८	२३	५०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा ३	आर्द्रा २	रोहि. १	पुष्य १	अश्वि. ४	मृग. ३	हस्त. ३	ज्येष्ठा ४	मूल. २

श्री वि. सं. २०६८, शाक १९३३, आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७

(२ से १५ जुलाई तक, सन् २०११ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. आषाढ़	तारीखें अं. जुलाई	तारीखें श. आषाढ़	तारीखें मु. रजब	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	प्रातः शु. कुछ ही समय के लिए पूर्व-क्षितिजासन्न दिखाई देगा। इस समय मं. पूर्वकपाल में और गु. याम्योत्तरवृत्त की ओर होगा। सायं बु. पश्चिम में और श. याम्योत्तरवृत्त में होगा।
३४	५३	१	श.	१९	४९	पुन.	४२	४९	धु. व्या.	२ ५७	३० १५	ब.	१९	४९	१८	२	११	२९	कर्क	२८	१०	५	२८	१९	२५	२	१५	४७	४	चन्द्रदर्शन, मु. ४५,
३४	५२	२	र.	१६	१०	पुष्य	४०	४१	ह.	५१	१३	कौ.	१६	१०	१९	३	१२	शा.१	कर्क			५	२८	१९	२५	२	१६	४४	१८	वक्री नेप्च्यून धनि. ४ में ३३/३५, शाबान मु. प्रा.,(A)
३४	५१	३	चं.	११	३७	आश्ले.	३७	४६	व.	४४	३५	ग.	११	३७	२०	४	१३	२	सिंह	३७	४६	५	२८	१९	२५	२	१७	४१	३१	भ. ३६/०१ बाद, शुक्र आर्द्रा में ४४/३५,
३४	५०	४	मं.	६	२६	मघा	३४	१९	सि.	३७	३२	वि.	६	२६	२१	५	१४	३	सिंह			५	२९	१९	२५	२	१८	३८	४३	भ. ६/२६ तक,
३४	४८	५	बु.	०	५०	पू.फा.	३०	३३	व्य.	३०	१३	बा.	०	५०	२२	६	१५	४	कन्या	४४	३५	५	२९	१९	२५	२	१९	३५	५६	सूर्य पुन. में २५/१८, कुमारषष्ठी व्रत,
अवम		६	बु.	५५	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी तिथिक्षय,
३४	४७	७	गु.	४९	७	उ.फा.	२६	४०	व.	२२	४९	ग.	२२	०३	२३	७	१६	५	कन्या			५	३०	१९	२५	२	२०	३३	९	भ. ४६/०७ बाद, विवस्वत् सप्तमी,
३४	४५	८	शु.	४३	२१	हस्त	२२	५०	प.	१५	२६	वि.	१६	१३	२४	८	१७	६	तुला	५०	५८	५	३०	१९	२४	२	२१	३०	२१	भ. १६/१३ तक,
३४	४४	९	श.	३७	४९	चित्रा	१९	११	शि.	८	१२	बा.	१०	३४	२५	९	१८	७	तुला			५	३१	१९	२४	२	२२	२७	३३	बुध आश्ले. में ७/१६,
३४	४२	१०	र.	३२	३९	स्वाती	१५	५१	सि. सा.	१ ५४	१४ ३५	तै.	५	१३	२६	१०	१९	८	वृश्चि.	५८	३९	५	३१	१९	२४	२	२३	२४	४५	यूरेनस वक्री १/३१,
३४	४०	११	चं.	२७	५८	विशा.	१२	५८	शु.	४८	२२	व.	०	१८	२७	११	२०	९	वृश्चिक			५	३२	१९	२४	२	२४	२१	५६	भ. ०/१८ से २७/५८ तक, हरिशयनी एकादशी (B)
३४	३८	१२	मं.	२३	५१	अनु	१०	३९	शु.	४२	४०	बा.	२३	५१	२८	१२	२१	१०	वृश्चिक			५	३२	१९	२३	२	२५	१९	८	भौमप्रदोष व्रत,
३४	३६	१३	बु	२०	२९	ज्ये.	९	०	ब्र.	३७	३५	तै.	२०	२९	२९	१३	२२	११	धनु	९	०	५	३३	१९	२३	२	२६	१६	२०	
३४	३४	१४	गु.	१७	५८	मूल	८	१२	ऐं.	३३	१५	व.	१७	५८	३०	१४	२३	१२	धनु			५	३३	१९	२३	२	२७	१३	३२	भ. १७/५८ से ४७/१४ तक, कोकिला व्रत, (C)
३४	३२	१५	शु.	१६	२९	पू.षा.	८	२३	वै.	२९	४६	ब	१६	२९	३१	१५	२४	१३	मकर	२३	३६	५	३४	१९	२३	२	२८	१०	४४	मंगल मृग. में ४८/१६, शुक्र पुन. में २७/१८. (D)

(A) रथ यात्रा (श्रीजगदीश रथोत्सव)(पुरी) (पुष्य नक्षत्र २१ घं. ४५ मि. तक), (B) व्रत (स.), श्रीविष्णु शयनोत्सव, (C) श्रीशिव शयनोत्सव, श्रीसत्यनारायण व्रत, (D) श्रीगुरुपूर्णिमा(व्यास-पूजा), आषाढ़ी पूर्णिमा, चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ८ जुला.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	१	३	०	२	५	७	१
२१	१७	१७	१५	१२	१०	१६	२८	२८
३०	५४	५४	२	०	३६	५५	१६	१६
२१	५६	५२	५३	१८	२१	५६	२८	२८
५७ १२	८५२ ४६	४१ ५२	८६ ५२	८ ५७	७३ २६	२ २६	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	३	३	४	४	२	३	४	२
पुन.	हस्त	रोहि.	पुष्य	कृत्ति.	आर्द्रा	हस्त	ज्येष्ठा	मृग.

कुण्डली सूर्योदय(८ जुला.)

४ बु. · २ मं.के. · ५ · शु. ३ सू. · १ गु. · चं. ६ श. · १२ · ७ · ९ · ११ · ८ रा. · १०

लोकभविष्य :-शनि की शुक्र सूर्य एवं राहु पर विशेष दृष्टि है। मंगल-राहु का सम-सप्तक[illegible] बना हुआ है। राजनीतिज्ञों के लिए समय कठिन [illegible] वाला है। उग्रवादजन्य हत्याकाण्ड होंगे। प्राकृतिक [illegible] (बाढ़ आदि) से उड़ीसा, राजस्थान, महाराष्ट्र आदि में [illegible] हानि संभव है। कृषकवर्ग को हानि से सरकार [illegible]

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख [illegible] में अनाजों में मन्दी रहे। ६ से १४ जुलाई [illegible] चान्दी, करियाणा, मसाले एवं तेल, तिलहन, [illegible] उड़द, मूंग, मूंगफली, बिनौला में तेज़ी बने। पक्षान्त में सोना, रुई, कपास, सूत में मन्दा रहे। तिल व चान्दी में तेज़ी बने।

कुण्डली सूर्योदय(१५ जुला.)

४ बु. · २ मं.के. · ५ · शु. ३ सू. · १ गु. · ६ श. · १२ · ७ · चं. ९ · ११ · ८ रा. · १०

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १५ जुला.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	१	३	०	२	५	७	१
२८	२४	२२	२४	१३	१६	१७	२७	२७
१०	४७	४६	२१	०	१४	१५	५७	५७
४३	२४	३५	५८	१२	४	१४	१३	१३
५७ १३	७८४ ५४	४१ २५	७० ५	८ २	७३ ३६	३ ७	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	४	४	३	४	४	३	४	२
पुन.	पू.फा.	रोहि.	आश्ले.	कृत्ति.	आर्द्रा	हस्त	ज्येष्ठा	मृग.

आकाश लक्षण:- [illegible] ३ से ९ तक एवं जुलाई ६, १०, १५ को पंजाब, म.प्र., उ.प्र., भूटान, शिलांग, आसाम, उड़ीसा, बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र में अनेकत्र वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं। कहीं आकाशी बिजली से हानि भी संभव है।

श्री वि. सं. २०६८, शाक १९३३, श्रावण कृष्ण पक्ष ८

(१६ से ३० जुलाई तक, सन् २०११ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

२२ जुला. को शु. पूर्व में लुप्त हो जाएगा। प्रातः मं. पूर्व कपाल में और गु. याम्योत्तरवृत्त के पास होगा। सायं बु. पश्चिम में और श. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम में होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ	समाप्ति-काल प	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. श्रावण	अं. जुलाई	श. आषाढ़	मु. शाबान	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ	प्रवेशकाल प	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं	सूर्योदय मि	सूर्यास्त घं	सूर्यास्त मि	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा	अं	क	वि	
३४	३०	१	श.	१६	१०	उ.षा.	९	४१	वि.	२७	१४	कौ.	१६	१०	श्रा.१	१६	२५	१४	मकर			५	३४	१९	२२	२	२९	७	५६	सं. सूर्य कर्क में ५४/२८, मु.३०, पुण्यकाल अगले (A)
३४	२७	२	र.	१७	८	श्रव.	१२	१५	प्री.	२५	४४	ग.	१७	०८	२	१७	२६	१५	कुम्भ	४४	२	५	३५	१९	२२	३	०	५	८	भ. ४८/१७ बाद, पंचक प्रारम्भ ४४/०२, गुरु भर.(B)
३४	२५	३	चं.	१९	२७	धनि.	१६	८	आ.	२५	१७	वि.	१९	२७	३	१८	२७	१६	कुम्भ			५	३५	१९	२१	३	१	२	२१	भ. १६/२७ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३४	२२	४	मं.	२३	४	शत.	२१	१६	सौ.	२५	५०	बा.	२३	०४	४	१९	२८	१७	कुम्भ			५	३६	१९	२१	३	१	५९	३४	शुक्रवार्धक्य प्रारम्भ ५घं. ३८ मि.,
३४	२०	५	बु.	२७	५०	पू.भा.	२७	३१	शो.	२७	१६	तै.	२७	५०	५	२०	२९	१८	मीन	१०	५३	५	३७	१९	२१	३	२	५६	४९	सूर्य पुष्य में २४/०१, बुध मघा सिंह में १५/३३,
३४	१७	६	गु.	३३	२४	उ.भा.	३४	३३	अ.	२९	१९	व	३३	२४	६	२१	३०	१९	मीन			५	३७	१९	२०	३	३	५४	३	भ. ३३/२४ बाद,
३४	१५	७	शु.	३९	१९	रेव.	४१	५६	सु.	३१	३९	वि.	६	२०	७	२२	३१	२०	मेष	४१	५६	५	३८	१९	२०	३	४	५१	१९	भ. ६/२० तक, पंचक समाप्त ४१/५६, शुक्र पूर्व (C)
३४	१२	८	श.	४५	२	अश्वि.	४९	३	धृ.	३३	५३	बा.	१२	१०	८	२३	श्रा.१	२१	मेष			५	३८	१९	१९	३	५	४८	३५	शुक्र कर्क में ४५/४०, सूर्य सायन सिंह में १०/१०,(D)
३४	९	९	र.	४९	५९	भर.	५५	२५	शू.	३५	३६	तै.	१७	३१	९	२४	२	२२	मेष			५	३९	१९	१८	३	६	४५	५२	
३४	६	१०	चं.	५३	३९	कृत्ति.	६०	०	गं.	३६	२४	व.	२१	४९	१०	२५	३	२३	वृष	११	४९	५	४०	१९	१८	३	७	४३	११	भ. २१/४६ से ५३/३६ तक, मंगल मिथुन में ३१/५३,
३४	३	११	मं.	५५	४१	कृत्ति.	०	३१	वृ.	३६	०	ब.	२४	४०	११	२६	४	२४	वृष			५	४०	१९	१७	३	८	४०	३०	शुक्र पुष्य में २८/१३, कामिका एकादशी व्रत (स.),
३४	०	१२	बु.	५५	५३	रोहि.	३	५९	ध्रु.	३४	१२	कौ.	२५	४८	१२	२७	५	२५	मिथुन	३५	३	५	४१	१९	१७	३	९	३७	४९	शुक्र अस्त-२२ जुलाई
३३	५७	१३	गु.	५४	१६	मृग.	५	३८	व्या.	३०	५५	ग.	२५	०५	१३	२८	६	२६	मिथुन			५	४१	१९	१६	३	१०	३५	१०	भ. ५४/१६ बाद, प्रदोष व्रत,
३३	५४	१४	शु.	५०	५५	आर्द्रा	५	३१	ह.	२६	१३	वि.	२२	३५	१४	२९	७	२७	कर्क	४९	२१	५	४२	१९	१५	३	११	३२	३२	भ. २२/३५ तक, श्रावण शिवरात्रि,
३३	५०	३०	श.	४६	७	पुन.	३	४६	व.	२०	१५	च.	१८	३०	१५	३०	८	२८	कर्क			५	४३	१९	१५	३	१२	२९	५४	शनैश्चरी अमा, हरियाली अमा,

(A) दिन मध्याह्न तक, अशून्यशयन व्रत, (B) १ में २६/४५, (C) में अस्त ५ घं. ३८ मि. (D) शक श्रावण प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २३ जुला.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	१	४	०	२	५	७	१
५	३	२८	२	१४	२६	१७	२७	२७
४८	३१	१६	२३	०	३	४२	३१	३१
३५	१	१४	४६	२५	२६	३४	४६	४६
५७	७१५	४०	४६	६	७३	३	३	३
१७	५१	५६	१४	५२	४६	४८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य १	अश्वि. २	मृग. २	मघा १	भर. १	पुन. ३	हस्त ३	ज्येष्ठा ४	मृग. २

कुण्डली सूर्योदय(२३ जुला.)

बु. ५ | ३ शु. | ६ श. | ४ सू. | २ मं. के. | ७ | १ चं. गु. | रा. ८ | १० | १२ | ९ | ११

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच शनिवार हैं। प्रतिपदा एवं कर्कसंक्रान्ति-दोनों शनिवारी हैं; अमावस भी शनिवारी है। इस प्रकार यह खप्परयोग बन रहा है । प्राकृतिक आपदाओं से भारी जनधनहानि के योग हैं। अनेकत्र खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी । उग्रवादियों द्वारा महानगरों में विस्फोट आदि से जनधनहानि का भी संकेत है- यस्मिन् वारेऽस्ति संक्रान्तिस्तत्रैवामावसी तिथिः। लोके खप्परयोगोऽयं जीव-धान्यादि- नाशकः।।"

कुण्डली सूर्योदय (३० जुला.)

बु.५ | ३ मं. | ६ श. | शु. ४ सू. चं. | २ के. | ७ | १ गु. | ८ रा. | १० | १२ | ९ | ११

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३० जुला.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	२	४	०	३	५	७	१
१२	२	३	६	१४	७	१८	२७	२७
२६	२०	१	२७	४५	४०	१०	६	६
५४	३४	२३	२८	१०	१४	४६	३१	३१
५७	८४३	४०	१८	५	७३	४	३	३
२३	१३	२६	१	४५	५४	२२	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य ३	पुन. ४	मृग. ३	मघा २	भर. १	पुष्य २	हस्त ३	ज्येष्ठा ४	मृग. २

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में रुई, सूत, बादाम, सुपारी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल, तिलहन एवं सोने में तेज़ी; अनाज-दालवाना मन्दे रहें। २० जुलाई को तेल, तिलहन, सोने, चान्दी, करियाणे में तेज़ी रहे। २३/२४ जुलाई के लगभग घी, शक्कर, सोने, चान्दी, तांबे, सोनामक्खी में तेज़ी रहे। २५ जुलाई के बाद गुड़, खाण्ड, सोने में ज़ोरदार तेज़ी से तुरन्त लाभ लें।

आकाश लक्षणः- जुलाई १६, १७, २०, २१ एवं २३ से २५ जुलाई तक पंजाब, हि.प्र., काश्मीर, हरियाणा, पश्चिमी एवम् पूर्वी राजस्थान, मध्यप्रदेश, दिल्ली, उ.प्र., भूटान, शिलांग, आसाम, महाराष्ट्र आदि में व्यापक वर्षा के योग हैं।

(३१ जुलाई से १३ अगस्त तक, सन् २०११ ई.)

श्री वि. सं. २०६८, शाक १९३३, श्रावण शुक्ल पक्ष ९

(३१ जुलाई से १३ अगस्त तक, सन् २०११ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु ।

शु. अस्त है । ९ अग. को बु. पश्चिम में लुप्त हो जाएगा। प्रातः मं. पूर्वकपाल में और गु. याम्योत्तर-वृत्तासन्न होगा । सायं श. पश्चिमकपाल में होगा ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	श्रावण	जुलाई	श्रावण	शाबान		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	४७	१	र.	४०	११	पुष्य आश्ले.	० ५६	३७ २४	सि.	१३	१२	किं.	१३	०८	१६	३१	९	२९	सिंह	५६	२४	५	४३	१९	१४	३	१३	२७	१७	
३३	४४	२	चं.	३३	२६	मघा	५१	३०	व्य. व.	५ ५७	२० ०	बा.	६	४८	१७	अ.१	१०	३०	सिंह			५	४४	१९	१३	३	१४	२४	४१	चन्द्र-दर्शन, मु. ३०, अगस्त प्रारम्भ,
३३	४०	३	मं.	२६	१६	पू.फा.	४६	१७	प.	४८	२४	ग.	२६	१६	१८	२	११	र.१	कन्या	५९	५९	५	४४	१९	१३	३	१५	२२	६	भ. ५२/३९ बाद, रमज़ान मु. प्रा., मधुस्रवा तृतीया(A)
३३	३७	४	बु.	१९	२	उ.फा.	४१	७	शि.	३९	५२	वि.	१९	०२	१९	३	१२	२	कन्या			५	४५	१९	१२	३	१६	१९	३१	भ. १९/०२ तक, सूर्य आश्ले. में २०/४५, बुध (B)
३३	३३	५	गु.	१२	१	हस्त	३६	१८	सि.	३१	३६	बा.	१२	०१	२०	४	१३	३	कन्या			५	४६	१९	११	३	१७	१६	५७	मंगल आर्द्रा में २४/३६, नाग पञ्चमी, श्रीकल्कि जयन्ती,
३३	३०	६	शु.	५	३१	चित्रा	३२	५	सा.	२३	४९	तै.	५	३१	२१	५	१४	४	तुला	४	७	५	४६	१९	१०	३	१८	१४	२४	भ. ५९/४४ बाद, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती (C)
अवम		७	शु.	५९	४४	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
३३	२६	८	श.	५४	४६	स्वाती	२८	४०	शु.	१६	४०	वि.	२७	१५	२२	६	१५	५	तुला			५	४७	१९	९	३	१९	११	५१	भ. २७/१५ तक, शुक्र आश्ले. में १७/१०, (D)
३३	२३	९	र.	५०	४४	विशा.	२६	७	शु.	१०	१४	बा.	२२	४५	२३	७	१६	६	वृश्चि.	११	४०	५	४८	१९	९	३	२०	९	२०	
३३	१९	१०	चं.	४७	३९	अनु.	२४	३१	ब्र. ऐं.	४ ५९	३३ ४०	तै.	१९	११	२४	८	१७	७	वृश्चिक			५	४८	१९	८	३	२१	६	४८	राहु ज्ये. ३, केतु मृग. १ में १६/१५,
३३	१५	११	मं.	४५	३१	ज्ये.	२३	५२	वै.	५५	३२	व.	१६	३४	२५	९	१८	८	धनु	२३	५२	५	४९	१९	७	३	२२	४	१८	भ. १६/३४ से ४५/३१ तक, बुध पश्चिम में अस्त(E)
३३	११	१२	बु.	४४	१९	मूल	२४	८	वि.	५२	८	ब.	१४	५४	२६	१०	१९	९	धनु			५	४९	१९	६	३	२३	१	४९	
३३	८	१३	गु.	४४	४	पू.षा.	२५	२०	प्री.	४९	३०	कौ.	१४	११	२७	११	२०	१०	मकर	४०	४७	५	५०	१९	५	३	२३	५९	२०	प्रदोष व्रत,
३३	४	१४	शु.	४४	४७	उ.षा.	२७	२८	आ.	४७	३७	ग.	१४	२६	२८	१२	२१	११	मकर			५	५१	१९	४	३	२४	५६	५२	भ. ४४/४७ बाद,
३३	०	१५	श.	४६	३०	श्रव.	३०	३४	सौ.	४६	३१	वि.	१५	३९	२९	१३	२२	१२	मकर			५	५१	१९	३	३	२५	५४	२६	भ. १५/३९ तक, श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबन्धन(राखी) (F)

(A) (संधारा तीज), (B) वक्री ८/५७, (C) (देखें पृ. ४४), (D) श्रीदुर्गाष्टमी व्रत, (E) ११/४०, पवित्रा एकादशी व्रत (स.), (F) (१३ घं. ४५ मि. से १६ घं. २४ मि. तक) (देखें पृ. ४४), श्री अमरनाथ यात्रा (काश्मीर), श्रीसत्यनारायण व्रत, ऋक् उपाकर्म, यजु उपाकर्म,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ६ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	२	४	०	३	५	७	१
१९	१३	७	६	१५	१६	१८	२६	२६
११	६	४३	४९	२१	१७	४२	४७	४७
५२	२१	१८	३२	५२	५६	५२	१६	१६
५७	८४१	३९	१७	४	७४	४	३	३
२८	३३	५९	३३	३३	२	५२	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. १	स्वाती २	आर्द्रा १	मघा ३	पू.फा. १	पुष्य ४	हस्त ३	ज्येष्ठा ४	मृग. २

कुण्डली सूर्योदय (६ अग.)

बु.५ | ३ मं. | ६ श. | शु. ४ सू. | २ के. | ७ चं. | १ गु. | ८ रा. | १० | १२ | ९ | ११

लोकभविष्यः- इस पक्ष में शुक्र अस्त है, शनि-मंगल का दशम-चतुर्थ दृष्टि-सम्बन्ध चल रहा है। सीमा-प्रान्तों पर कहीं शत्रुकृत अशान्ति चिन्ता का कारण बने। कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति का सामना करना पड़े- "युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्षकारकौ।" इस पक्ष में सप्तमी तिथि का क्षय हो जाने से आगे कार्तिक मास में किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति व नेता का पद रिक्त हो, किसी यावनदेश में घोर अशान्ति का वातावरण बने-" श्रावणे शुक्लपक्षे च क्षीणा क्वापि तिथिर्भवेत्। तदा वै कार्त्तिके मासे छत्रभंगस्तु संभवः ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में बाज़ार अस्थिर रहेंगे। १ अगस्त को नमक, घी, गुड़, खाण्ड, तिलहन, तेल, शक्कर तेज़ रहें। ३ से ५ अगस्त तक सोना, चान्दी, अनाज, गुड़, शक्कर, घी, तेल, तिलहन, लालमिर्च में तेज़ी रहे। ६ से ९ अगस्त तक बाज़ार अनिश्चित व मन्दे रहें। आकाश लक्षणः- अगस्त १, ३, ४, ५, ६, ८, ९ एवं १० को मद्रास एवम् जम्मू-काश्मीर, पंजाब, हरियाणा, उ.प्र., चण्डीगढ़, दिल्ली आदि उत्तर-पश्चिमी भागों में वर्षा के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (१३ अग.)

बु.५ | ३ मं. | ६ श. | शु. ४ सू. | २ के. | ७ | १ गु. | ८ रा. | १० चं. | १२ | ९ | ११

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १३ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	२	४	०	३	५	७	१
२५	१६	१२	३	१५	२४	१९	२६	२६
५४	४२	२१	६	४९	५६	१८	२५	२५
२६	५४	५०	३३	५९	२४	२०	०	०
५७	७५४	३९	४७	३	७४	५	३	३
३४	४३	३१	१०	१७	८	२०	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. ३	श्रवण ३	आर्द्रा २	मघा १	पू.फा. १	आश्ले. ३	हस्त ३	ज्येष्ठा ३	मृग. १

श्री वि. सं. २०६८, शाक १९३३, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १०																तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(१४ से २८ अगस्त तक, सन् २०११ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा–शरद ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल			प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						शु. अस्त है। बु. २५ अग. से पूर्व में दृश्य होगा। प्रातः मं. पूर्वकपाल में और गु. याम्योत्तरवृत्त में होगा। सायं श. को पश्चिमक्षितिज के पास देखें।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		श्रावण	अगस्त	श्रावण	रमज़ान		घ	प	घं.	मि	घं	मि	रा.	अं.	क.	वि.	
३२	५६	१	र.	४९	१६	धनि.	३४	४१	शो.	४६	१४	बा.	१७	५३		३०	१४	२३	१३	कुम्भ	२	३१	५	५२	१९	२	३	२६	५२	०	पंचक प्रारम्भ २/३१,
३२	५२	२	चं.	५३	४	शत.	३९	४८	अ.	४६	४५	तै.	२१	१०		३१	१५	२४	१४	कुम्भ			५	५२	१९	१	३	२७	४९	३५	भारत स्वतन्त्रता दिवस,
३२	४८	३	मं.	५७	५२	पू.भा.	४५	५३	सु.	४८	२	व.	२५	२८		३२	१६	२५	१५	मीन	२९	१७	५	५३	१९	०	३	२८	४७	१२	भ. २५/२८ से ५७/५२ तक, वक्री बुध आश्ले. (A)
३२	४४	४	बु.	६०	०	उ.भा.	५२	४७	धृ.	४९	५७	ब.	३०	३९		भा.१	१७	२६	१६	मीन			५	५४	१८	५९	३	२९	४४	५०	सं. सूर्य मघा सिंह में १४/४७, मु.४५, पुण्यकाल(B)
३२	४०	४	गु.	३	२७	रेव.	६०	०	शू.	५२	१७	बा.	३	२७		२	१८	२७	१७	मीन			५	५४	१८	५८	४	०	४२	३०	
३२	३६	५	शु.	९	३०	रेव.	०	१२	गं.	५४	४५	तै.	९	३०		३	१९	२८	१८	मेष	०	१२	५	५५	१८	५७	४	१	४०	११	पंचक समाप्त ०/१२,
३२	३२	६	श.	१५	३७	अश्वि.	७	४२	वृ.	५६	५८	व.	१५	३७		४	२०	२९	१९	मेष			५	५५	१८	५६	४	२	३७	५४	भ. १५/३७ से ४८/२५ तक, शनि हस्त ४ में (C)
३२	२७	७	र.	२१	१४	भर.	१४	४८	ध्रु	५८	३१	ब.	२१	१४		५	२१	३०	२०	वृष	३१	२९	५	५६	१८	५५	४	३	३५	३८	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मा.)(चन्द्रोदयव्यापिनी अष्टमी में) (D)
३२	२३	८	चं.	२५	४६	कृत्ति.	२०	५५	व्या.	५९	०	कौ.	२५	४६		६	२२	३१	२१	वृष			५	५७	१८	५४	४	४	३३	२४	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वै.) (चन्द्रोदय २३घं. ५१ मि.) (E)
३२	१९	९	मं.	२८	४४	रोहि.	२५	३३	ह.	५८	७	ग.	२८	४४		७	२३	भा.१	२२	मिथुन	५७	१२	५	५७	१८	५३	४	५	३१	१२	भ. ५६/१६ बाद, सूर्य सायन कन्या में २७/१५, (F)
३२	१५	१०	बु.	२९	४७	मृग.	२८	१९	व.	५५	३८	वि.	२९	४७		८	२४	२	२३	मिथुन			५	५८	१८	५२	४	६	२९	२	भ. २६/४७ तक, मंगल पुन. में ४०/५३,
३२	११	११	गु.	२८	४४	आर्द्रा	२९	३	सि.	५१	२८	बा.	२८	४४		९	२५	३	२४	मिथुन			५	५८	१८	५०	४	७	२६	५३	बुध पूर्व में उदित ४०/०५, अजा एकादशी व्रत(स.),(G)
३२	६	१२	शु	२५	३८	पुन.	२७	४५	व्य.	४५	४२	तै.	२५	३८		१०	२६	४	२५	कर्क	१३	१४	५	५९	१८	४९	४	८	२४	४६	बुध मार्गी ५३/५५, प्रदोष व्रत,
३२	२	१३	श	२०	३९	पुष्य	२४	३५	व.	३८	२९	व	२०	३९		११	२७	५	२६	कर्क			५	५९	१८	४८	४	९	२२	४०	भ. २०/३९ से ४७/२२ तक, शुक्र पू.फा. में (H)
३१	५८	१४	र.	१४	६	आश्ले.	१९	५३	प.	३०	४	श.	१४	०६		१२	२८	६	२७	सिंह	१९	५३	६	०	१८	४७	४	१०	२०	३६	
३१	५३	३०	च.	६	२३	मघा	१४	३	शि.	२०	४७	ना.	६	२३		१३	२९	७	२८	सिंह			६	१	१८	४६	४	११	१८	३४	सोमवती अमा, पिठौरी अमा, कुशोत्पाटिनी अमा,

(A) कर्क में ४६/३७, वक्री यूरेनस उ.भा. २ में ३५/३५, (B) मध्याह्न तक, शुक्र मघा सिंह में ४/४०, श्रीगणेश (संकष्ट)चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय २०घं. ४३मि.), बहुला चतुर्थी (C) ३१/००, (D) (चन्द्रोदय २३घं. ०५मि.) (E) गोकुलाष्टमी(नन्दोत्सव), श्रीदुर्वाष्टमी व्रत (देखें पृ. 88), (F)शरद् ऋतु प्रारम्भ, श्रीगुग्गा नवमी, शक भाद्रपद प्रारम्भ, (G) पर्युषणपर्व प्रारम्भ(जैन), (H) ५०/३६,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २२ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	२	३	०	४	५	७	१
४	५	१८	२६	१६	६	२०	२५	२५
३३	३१	१५	९	१२	४	८	५६	५६
२५	५१	५	२	४६	१०	३०	२३	२३
५७	७३५	३८	३१	१	७४	५	३	३
४७	२५	५५	१३	३४	१७	५१	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
मघा २	कृत्ति. ३	आर्द्रा ४	आश्ले. ३	भर. १	मघा २	हस्त ४	ज्येष्ठा ३	मृग. १

कुण्डली सूर्योदय (२२ अग.)

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच रविवार एवं पांच चन्द्रवार है। कहीं दुर्भिक्ष, कहीं किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की हत्या किंवा निधन से शोक व्याप्त हो। सूर्य-शुक्र की स्थिति एवं वक्री बुध का राशि-परिवर्तन कहीं बाढ़ आदि प्राकृतिक आपदा से हानि का भी संकेत देता है-" उन्मार्गगमनं कृत्वा यदा राशिं त्यजेद्बुधः तदा वर्षति पर्जन्यो दिनानि पञ्च सप्त वा।।" लेकिन सिंहस्थ सूर्य-शुक्र देश में कहीं दुर्भिक्ष का भी संकेत देते हैं।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- १६ अगस्त के लगभग रुई में मन्दे का झटका आए; गुड़, तेल, तिलहन, सोना तेज़ी के बाद मन्दे हों। १७ से २४ अगस्त तक सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल, तिलहन, लालमिर्च में तेज़ी बने। २५ से २७ अगस्त तक बाज़ारों में उठापटक चलेगी।

कुण्डली सूर्योदय (२६ अग.)

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २६ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	२	३	०	४	५	७	१
११	६	२२	२४	१६	१४	२०	२५	२५
१८	३२	४५	५७	१६	४४	५०	३४	३४
३४	१६	५६	४३	४०	२८	३६	८	८
५७	८६५	३८	२०	०	७४	६	३	३
५६	४	२४	५७	११	२३	१३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
मघा ४	मघा ३	पुन. १	आश्ले. ३	भर. १	पू.फा. १	हस्त ४	ज्येष्ठा ३	मृग. १

आकाश लक्षणः अगस्त १६, १७, २०, २१, २२ एवं २४ से २७ अगस्त तक पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., जम्मू-काश्मीर, चण्डीगढ़, दिल्ली, उ.प्र., म.प्र. आदि में कहीं वायुवेग से बादल छटें, कहीं बुन्दाबांदी व खण्डवृष्टि हो।

(३० अगस्त से १२ सितम्बर तक, सन् २०११ ई.)

श्री वि. सं. २०६८, शाक १९३३, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११

(३० अगस्त से १२ सितम्बर तक, सन् २०११ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरद् ऋतु।

शु. अस्त है। प्रातः बु. पूर्वक्षितिज में बहुत कम समय के लिए दृश्य होगा। इस समय मं. पूर्वकपाल में और गु. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में दीखेगा। सायं श. पश्चिम-क्षितिजासन्न होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा.				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	भाद्रपद	अगस्त	भाद्रपद	रमज़ान		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	चं.	५७	५७	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३१	४९	२	मं.	४९	१२	पू.फा.	७	३२	सि.	१०	५९	बा.	२३	३४	१४	३०	८	२९	कन्या	२०	५०	६	१	१८	४५	४	१२	१६	३३	चन्द्रदर्शन, मु.४५, गुरु वक्री २१/५८, मेला बाबा (A)
३१	४१	३	बु.	४०	३५	उ.फा. हस्त	० ५४	५० २०	सा. शु.	१ ५१	३ १७	तै.	१४	५३	१५	३१	९	श.१	कन्या			६	२	१८	४४	४	१३	१४	३४	सूर्य पू.फा. में ४/१७, शव्वाल मु. प्रा., हरितालिका (B)
३१	४०	४	गु.	३२	२९	चित्रा	४८	२८	शु.	४२	१	व.	६	३३	१६	सि.१	१०	२	तुला	२१	१६	६	२	१८	४२	४	१४	१२	३६	भ. ६/३३ से ३२/२९ तक, श्रीसिद्धिविनायक व्रत, (C)
३१	३६	५	शु.	२५	१७	स्वाती	४३	३४	ब्र.	३३	३२	वा.	२५	१७	१७	२	११	३	तुला			६	३	१८	४१	४	१५	१०	४०	ऋषि पञ्चमी,
३१	३१	६	श.	१९	१४	विशा.	३९	५५	ऐं.	२६	२	तै.	१९	१४	१८	३	१२	४	वृश्चिक	२५	४२	६	३	१८	४०	४	१६	८	४५	सूर्य षष्ठी व्रत,
३१	२७	७	र.	१४	३१	अनु.	३७	३७	वै.	१९	३७	व.	१४	३१	१९	४	१३	५	वृश्चिक			६	४	१८	३९	४	१७	६	५२	भ. १४/३१ से ४२/५२ तक, बुध मघा सिंह में (D)
३१	२२	८	चं.	११	१४	ज्ये.	३६	४५	वि.	१४	२२	ब.	११	१४	२०	५	१४	६	धनु	३६	४५	६	५	१८	३७	४	१८	५	०	
३१	१८	९	मं.	९	२१	मूल	३७	१३	प्री.	१०	१५	कौ.	९	२१	२१	६	१५	७	धनु			६	५	१८	३६	४	१९	३	९	बा. श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
३१	१३	१०	बु.	८	४९	पू.षा.	३८	५८	आ.	७	११	ग.	८	४९	२२	७	१६	८	मकर	५४	३५	६	६	१८	३५	४	२०	१	२०	भ. ३६/०९ बाद, शुक्र उ.फा. में ३५/२०,
३१	९	११	गु.	९	२९	उ.षा.	४१	५०	सौ.	५	४	वि.	९	२९	२३	८	१७	९	मकर			६	६	१८	३४	४	२०	५९	३२	भ. ९/२९ तक, श्रीवामन जयन्ती, वामनद्वादशी, (E)
३१	४	१२	शु.	११	१५	श्रव.	४५	४१	शो.	३	४९	बा.	११	१५	२४	९	१८	१०	मकर			६	७	१८	३३	४	२१	५७	४६	मंगल कर्क में २४/०३, श्रवण द्वादशी, प्रदोष व्रत,
३१	०	१३	श.	१३	५८	घनि.	५०	२५	अ.	३	२०	तै.	१३	५८	२५	१०	१९	११	कुम्भ	१७	५६	६	७	१८	३१	४	२२	५६	२	पंचक प्रारम्भ १७/५६, शुक्र कन्या में १६/२५,
३०	५५	१४	र.	१७	३५	शत.	५५	५७	सु.	३	३०	व.	१७	३५	२६	११	२०	१२	कुम्भ			६	८	१८	३०	४	२३	५४	१९	भ. १७/३५ से ४९/४८ तक, श्रीअनन्त चतुर्दशी (F)
३०	५१	१५	चं.	२२	०	पू.भा.	६०	०	धृ.	४	१८	ब.	२२	०	२७	१२	२१	१३	मीन	४५	३५	६	८	१८	२९	४	२४	५२	३७	

(A) गोसाईं आणों (कुराली-पं.), (B) तृतीया, गौरी तृतीया, सामवेदियों का उपाकर्म, श्रीवराह जयन्ती, (C) कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध), (चन्द्रास्त २० घं. ४२ मि.), सितंबर प्रारम्भ, (D) ५०/३५, श्रीराधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, (E) पद्मा एकादशी व्रत (स.), (F) व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत, प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा श्राद्ध (देखें पृ. 89),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ५ सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	२	४	०	४	५	७	१
१८	२१	२७	०	१६	२३	२१	२५	२५
५	२५	१३	८	१६	२५	३५	११	११
०	४२	५	५५	४२	२३	११	५३	५३
५८	८०४	३७	७३	१	७४	६	३	३
१०	४६	५१	१०	१४	२८	३२	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा. २	ज्ये. २	पुन. ३	मघा १	भर. १	पू.फा. ४	हस्त ४	ज्ये. ३	मृग. १

कुण्डली सूर्योदय (५ सितं.)

श.६ | ४
५ सू. शु. बु.
७ | मं. ३
चं. ८ रा. | के. २
९ | ११ | १ गु.
१० | १२

लोकभविष्यः- मेषस्थ गुरु वक्री है; सूर्य-शुक्र-ये दोनों सिंहस्थ हैं। शनि की राहु पर क्रूर दृष्टि है। मुस्लिम राष्ट्र में कहीं विस्फोट एवं सत्ता-परिवर्तन की संभावना है । ८ सितंबर तक शनि-मंगल का दशम-चतुर्थ दृष्टि- सम्बन्ध होने से यानदुर्घटना या किसी अप्रत्याशित प्राकृतिक घटना से जनधन-हानि का भी योग बनता है। पक्षमध्य में सिंह राशि का बुध जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में तेज़ी करेगा।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- ३० अगस्त के लगभग गेहूं, जौ, चना, चावल, अलसी एवं घी में मन्दे का रुख रहे। सोना, चान्दी, सरसों, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सूत आदि में तेज़ी बने। ५ सितं. को बाज़ार तेज़ रहें। ९ सितं. के बाद रुई, सरसों, तेल मन्दे; सोना, चान्दी में घटा-बढ़ी चले; अनाजों विशेषतः चावलों में तेज़ी का झटका आए।

आकाश लक्षणः- अग. ३०, ३१; सितंबर ५, ६, ७, ९ और १० को दक्षिणी भारत, नेपाल, सूरत, दार्जिलिंग, विन्ध्यप्रदेश एवं उ.प्र. के कुछ भागों में बादलचाल एवं वर्षा के योग हैं। सिंहस्थ शुक्र से अनेकत्र वर्षा की कमी रहेगी।

कुण्डली सूर्योदय (१२ सितं.)

शु.६ श. | मं. ४
५ सू. बु.
७ | ३
८ रा. | के. २
९ | ११ चं. | १ गु.
१० | १२

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १२ सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	३	४	०	५	५	७	१
२४	२०	१	१०	१६	२	२२	२४	२४
५२	२९	३६	२८	३	६	२१	४९	४९
३८	५६	२१	४२	५६	४२	४४	३८	३८
५८	७२४	३७	१०४	२	७४	६	३	३
२१	३	१८	५	३६	३०	४७	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा. ४	पू.भा. १	पुन. ३	मघा ४	भर. १	उ.फा. २	हस्त ४	ज्ये. ३	मृग. १

श्री वि. सं. २०६८ शाक १९३३, आश्विन कृष्ण पक्ष १२

(१३ से २७ सितम्बर तक, सन् २०११ ई.)
दक्षिणायन, उत्तर-दक्षिणगोल, शरद् ऋतु।

शु. अस्त है। पक्षारम्भ में बु. पूर्व में और पक्षान्त में श. पश्चिम में लुप्त हो जाएगा। प्रातः मं. को पूर्वकपाल में और गु. को याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में देखा जा सकता है।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															भाद्रपद	सितंबर	भाद्रपद	शव्वाल												
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३०	४६	१	मं.	२७	९	पू.भा.	२	१३	शू.	५	४२	कौ.	२७	०९	२८	१३	२२	१४	मीन			६	९	१८	२७	४	२५	५०	५८	सूर्य उ.फा. में ४८/४५, बुध पू.फा. में ३६/१६, (A)
३०	४१	२	बु.	३२	५६	उ.भा.	९	७	गं.	७	३५	तै.	०	०२	२९	१४	२३	१५	मीन			६	१०	१८	२६	४	२६	४९	२०	मंगल पुष्य में ४५/२५, द्वितीया का श्राद्ध,
३०	३७	३	गु.	३९	९	रेव.	१६	३३	वृ.	९	५१	व.	६	०२	३०	१५	२४	१६	मेष	१६	३३	६	१०	१८	२५	४	२७	४७	४५	भ. ६/०२ से ३६/०६ तक, पंचक समाप्त १६/३३,(B)
३०	३२	४	शु.	४५	३०	अश्वि.	२४	११	ध्रु.	१२	२१	ब.	१२	१९	३१	१६	२५	१७	मेष			६	११	१८	२४	४	२८	४६	११	प्लूटो मार्गी ४४/१३, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, चतुर्थी (C)
३०	२८	५	श.	५१	३५	भर.	३१	४२	व्या.	१४	४७	कौ.	१८	३२	आ.१	१७	२६	१८	वृष	४८	३१	६	११	१८	२२	४	२९	४४	३९	सं. सूर्य कन्या में १४/००, मु.१५, पुण्यकाल (D)
३०	२३	६	र.	५६	५४	कृत्ति.	३८	३७	ह.	१६	५१	ग.	२४	१४	२	१८	२७	१९	वृष			६	१२	१८	२१	५	०	४३	१०	भ. ५६/५४ बाद, शुक्र हस्त में १६/१६, षष्ठी का(E)
३०	१८	७	चं.	६०	०	रोहि.	४४	२७	व.	१८	१०	वि.	२८	५४	३	१९	२८	२०	वृष			६	१२	१८	२०	५	१	४१	४३	भ. २८/५४ तक, सप्तमी का श्राद्ध,
३०	१४	७	मं.	०	५५	मृग.	४८	४३	सि.	१८	२४	ब.	०	५५	४	२०	२९	२१	मिथुन	१६	४९	६	१३	१८	१९	५	२	४०	१८	बुध उ.फा. में ४६/३६, शनि चित्रा १ में २४/२३,(F)
३०	९	८	बु.	३	१२	आर्द्रा	५१	३	व्य.	१७	१२	कौ.	३	१२	५	२१	३०	२२	मिथुन			६	१४	१८	१७	५	३	३८	५५	नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,
३०	५	९	गु.	३	२८	पुन.	५१	१६	व.	१४	२२	ग.	३	२८	६	२२	३१	२३	कर्क	३६	२५	६	१४	१८	१६	५	४	३७	३४	भ. ३२/३१ बाद, बुध कन्या में ३६/४५, दशमी (G)
३०	०	१०	शु.	१	३४	पुष्य	४९	२२	प.	९	४८	वि.	१	३४	७	२३	आ.१	२४	कर्क			६	१५	१८	१५	५	५	३६	१६	भ. १/३४ तक, सूर्य सायन तुला में २०/४६, (H)
अवम		११	शु.	५७	३१	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
२९	५५	१२	श.	५१	३४	आश्ले.	४५	३२	शि. सि.	३ ५५	३३ ४६	कौ.	२४	३२	८	२४	२	२५	सिंह	४५	३२	६	१५	१८	१३	५	६	३५	०	द्वादशी का श्राद्ध, संन्यासियों का श्राद्ध, इन्दिरा एकादशी(I)
२९	५१	१३	र.	४४	१	मघा	४०	४	सा.	४६	४२	ग.	१७	४७	९	२५	३	२६	सिंह			६	१६	१८	१२	५	७	३३	४६	भ. ४४/०१ बाद, त्रयोदशी का श्राद्ध, मघा श्राद्ध, (J)
२९	४६	१४	चं.	३५	१९	पू.फा.	३३	२३	शु.	३६	४०	वि.	९	३९	१०	२६	४	२७	कन्या	४६	३४	६	१६	१८	११	५	८	३२	३४	भ. ६/३६ तक, शनि अस्त १७/५३, शस्त्र, विषादि(K)
२९	४२	३०	मं.	२५	५४	उ.फा.	२५	५९	शु.	२६	३	च.	०	३६	११	२७	५	२८	कन्या			६	१७	१८	१०	५	९	३१	२४	सूर्य हस्त में २७/१०, भौमवती अमा, महालय अमा, (L)

(A) बुध पूर्व में अस्त ४२/१५, श्राद्ध (पितृ-पक्ष) प्रारम्भ, प्रतिपदा का श्राद्ध, (B) तृतीया का श्राद्ध, (C) का श्राद्ध, (D) मध्याह्न तक, पञ्चमी का श्राद्ध, भरणी श्राद्ध, (E) श्राद्ध, चन्द्र षष्ठी व्रत, (F) श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त (चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टमी में), अष्टमी का श्राद्ध, (G) का श्राद्ध, (H) विषुव-दिन, दक्षिण गोल प्रा., शक आश्विन प्रारम्भ, एकादशी का श्राद्ध, इन्दिरा एकादशी व्रत (स्मा.), (I) व्रत (वै.), (J) मघा त्रयोदशी, प्रदोष व्रत, (K) से मृतों (अपमृत्यु)वालों का श्राद्ध, (L) सर्वपितृ श्राद्ध, अज्ञात मृत्युतिथि, चतुर्दशी, अमावस एवं पूर्णिमा मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध, मातामह -मातामही श्राद्ध (देखें पृ. 89), श्राद्ध समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २१ सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ ३ ३८ ५५	२ ८ ४० ५	३ ७ ६ ३	४ २६ ५६ १०	० १५ ३३ ३५	५ १३ १७ २८	५ २३ २३ ५८	७ २४ २१ १	१ २४ २१ १
५८ ४०	७७३ ७	३६ ३३	११२ ०	४ १८	७४ ३५	७ ३	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. ३	आर्द्रा १	पुष्य २	उ.फा. १	भर. १	हस्त १	चित्रा १	ज्येष्ठा ३	मृग. १

कुण्डली सूर्योदय (२१ सितं.)

७ | बु. ५ | रा. ८ | सू. ६ शु. श. | ४ मं. | ९ | ३ चं. | १० | १२ | के. २ | ११ | १ गु.

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार एवं पांच बुधवार हैं, जिसका मिलाजुला फल होगा। मंगलवारी प्रतिपदा एवं मंगलवारी अमावस काश्मीर प्रान्त, मुम्बई, अहमदाबाद एवं अन्य महानगरों में विस्फोट आदि दुर्घटना से जनधनहानि का संकेत देती है। किसी नेता का अकस्मात् विछोह सहन करना पड़ेगा। उत्तरी भारत में प्रजा में सुख-समृद्धि रहे। मंगलजन्य-प्रभाव द. भारत में अधिक नेष्ट रहेगा-"यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पञ्चवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत् ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- १३ सितं. के लगभग सोना, चान्दी, कपास, रुई, घी, तेल, तिलहन तेज़ रहें। १४/१५ सितं. को सोने में ज़ोरदार तेज़ी संभव है। १९ सितं. के लगभग तेल, तिलहन, चीनी एवं दालवाना तेज़ रहें। २२ सितं. से पक्षान्त तक बाज़ार अस्थिर रहें। आकाश लक्षण :- सितं. १३, १४, १७ से २२ तक एवं २६, २७ सितं. को आसाम, नेपाल, भूटान एवं काश्मीर में कहीं वायुवेग के साथ वर्षा हो। उ.भारत में आकाश निर्मल रहे। मौसम में परिवर्तन अनुभव होगा।

कुण्डली सूर्योदय (२७ सितं.)

७ | ५ | रा. ८ | सू. चं. शु. श. ६ बु. | ४ मं. | ९ | ३ | १० | १२ | के. २ | ११ | १ गु.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २७ सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ ९ ३१ २४	५ २ ५४ १५	३ १० ४६ ५६	५ ८ ० ४१	० १५ ५ ७	५ २० ४५ ०	५ २४ ६ ३८	७ २४ १ ५७	१ २४ १ ५७
५८ ५३	६१५ ३१	३६ ०	१०८ २५	५ २१	७४ ३७	७ ११	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.	अ.
उ.फा. ४	उ.फा. २	पुष्य ३	उ.फा. ४	भर. १	हस्त ४	चित्रा १	ज्येष्ठा ३	मृग. १

श्री वि. सं. २०६८, शाक १९३३, आश्विन शुक्ल पक्ष १३

(२८ सितम्बर से १२ अक्तूबर तक, सन् २०११ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद् ऋतु।

बु. और श. अस्त हैं। शु. ४ अक्तू. से पश्चिम में दिखाई देने लगेगा। प्रातः मं. पूर्वकपाल में और गु. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर दिखाई देगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	आश्विन	सितंबर	आश्विन	शव्वाल		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२९	३७	१	बु	१६	१५	हस्त	१८	२०	ब्र.	१५	१४	ब.	१६	१५	१२	२८	६	२९	तुला	४४	३३	६	१८	१८	८	५	१०	३०	१६	बुध हस्त में ४/०४, शारद नवरात्र प्रारम्भ, महाराजा(A)
२९	३२	२	गु	६	४९	चित्रा	१०	५६	ऐं. वै.	४ ५४	३७ ३३	कौ.	६	४९	१३	२९	७	३०	तुला			६	१८	१८	७	५	११	२९	१०	चन्द्रदर्शन, मु. १५, शुक्र चित्रा में २/४०, **शुक्र उदित ४ अक्तूबर**
अवम		३	गु.	५८	७	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथिक्षय,
२९	२८	४	शु.	५०	२७	स्वाती विशा.	४ ५८	५९ ४४	वि.	४५	२१	व.	२४	१६	१४	३०	८	जि.१	वृश्चिक	४४	५९	६	१९	१८	६	५	१२	२८	६	भ. २४/१६ से ५०/२७ तक, ज़िल्काद मु. प्रारम्भ,
२९	२३	५	श.	४४	१२	अनु.	५४	३७	प्री.	३७	१६	ब.	१७	१९	१५	अ.१	९	२	वृश्चिक			६	१९	१८	५	५	१३	२७	४	उपाङ्गललिता व्रत, अक्तूबर प्रारम्भ,
२९	१८	६	र.	३९	३५	ज्ये.	५२	११	आ.	३०	३१	कौ	११	५३	१६	२	१०	३	धनु	५२	११	६	२०	१८	३	५	१४	२६	४	जन्मदिन श्री महात्मा गांधी,
२९	१४	७	चं.	३६	४५	मूल	५१	३०	सौ.	२५	११	ग.	८	१०	१७	३	११	४	धनु			६	२१	१८	२	५	१५	२५	६	भ. ३६/४५ बाद, सरस्वती आवाहन,
२९	९	८	मं.	३५	४१	पू.षा.	५२	३२	शो.	२१	१५	वि.	६	१३	१८	४	१२	५	धनु			६	२१	१८	१	५	१६	२४	९	भ. ६/१३ तक, शुक्र तुला में २४/१०, शुक्र (B)
२९	५	९	बु.	३६	१७	उ.षा.	५५	९	अ.	१८	३९	वा.	६	०	१९	५	१३	६	मकर	८	२	६	२२	१८	०	५	१७	२३	१४	बुध चित्रा में ४२/३०, सरस्वती के लिए बलिदान(C)
२९	०	१०	गु.	३८	२३	श्रव.	५९	८	सु.	१७	१५	तै.	७	२०	२०	६	१४	७	मकर			६	२२	१७	५८	५	१८	२२	२१	मंगल आश्ले. में ५३/४०, विजयादशमी (दशहरा),(D)
२८	५५	११	शु.	४१	४३	धनि.	६०	०	धृ.	१६	५३	व.	१०	३	२१	७	१५	८	कुम्भ	३१	३३	६	२३	१७	५७	५	१९	२१	३०	भ. १०/०३ से ४१/४३ तक, पंचक प्रारम्भ (E)
२८	५१	१२	श.	४६	३	धनि.	४	१२	शू.	१७	२०	ब.	१३	५२	२२	८	१६	९	कुम्भ			६	२४	१७	५६	५	२०	२०	४०	
२८	४६	१३	र.	५१	१०	शत.	१०	११	गं.	१८	२७	कौ	१८	३६	२३	९	१७	१०	कुम्भ			६	२४	१७	५५	५	२१	१९	५२	बुध तुला में ४२/५२, शुक्र स्वाती में ४५/४२, (F)
२८	४२	१४	चं.	५६	५०	पू.भा.	१६	४९	वृ.	२०	४	ग.	२४	०	२४	१०	१८	११	मीन	०	७	६	२५	१७	५४	५	२२	१९	६	भ. ५६/५० बाद, सूर्य चित्रा में ५९/२१, राहु (G)
२८	३७	१५	मं.	६०	०	उ.भा.	२३	५५	ध्रु.	२२	२	वि.	२९	५२	२५	११	१९	१२	मीन			६	२६	१७	५२	५	२३	१८	२२	भ. २६/५२ तक, शरत् पूर्णिमा, कोजागर व्रत, (H)
२८	३३	१५	बु.	२	५३	रेव.	३१	२०	व्या.	२४	१४	ब.	२	५३	२६	१२	२०	१३	मेष	३१	२०	६	२६	१७	५१	५	२४	१७	४०	पंचक समाप्त ३१/२०,

(A) अग्रसेन जयन्ती, (B) पश्चिम में उदित १८ घं. ०१ मि., सरस्वती पूजन, श्रीदुर्गाष्टमी(महाष्टमी), (C) महानवमी (पूजा, उपवास एवं बलिदान के लिए,) नवरात्र समाप्त, (D) आयुध पूजा, अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, सरस्वती विसर्जन, श्रीमाध्वाचार्य जयन्ती, (E)३१/३३, शुक्र-बाल्य समाप्त १८ घं. ०१ मि., भरत मिलाप, पापांकुशा एकादशी व्रत (स.), (F) प्रदोष व्रत, (G) ज्येष्ठा २, केतु रोहि. ४ में ९/३५, (H) श्रीसत्यनारायण व्रत, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, कार्त्तिक स्नान प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ४ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	३	५	०	५	५	७	१
१६	१४	१४	२०	१४	२९	२४	२३	२३
२४	४४	५६	२१	२४	२७	५७	३९	३९
१०	४४	५२	५४	२७	१८	१५	४२	४२
५९	७८४	३५	१०२	६	७४	७	३	३
५	५	१८	२८	२४	३७	१६	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.	अ.
हस्त २	पू.षा. १	पुष्य ४	हस्त ४	भ. १	चित्रा २	चित्रा १	ज्येष्ठा ३	मृ. १

कुण्डली सूर्योदय (४ अक्तू.)

७ | ५ | रा. ८ | सू. ६ शु. बु. श. | ४ मं. | चं. ९ | ३ | १० | १२ | के. २ | ११ | १ गु.

लोकभविष्य:- सूर्य, बुध, शुक्र, शनि पक्षमध्य तक कन्या राशि में हैं। शनि, मंगल, शुक्र अस्त हैं। कहीं राष्ट्र में प्राकृतिक आपदा एवं मुस्लिम राष्ट्र में आतंकवादियों द्वारा जघन्य अपराध संभव है-"कन्यायां मिथुने मीने वृषे धनुषि वा स्थिते। शनावस्तं गते चापि युद्धं दुर्भिक्षकारकम्।।" कहीं आन्तरिक अशान्ति, कहीं आगे दुर्भिक्ष की स्थिति बने। इस (शुक्ल)पक्ष में शुक्रोदय भी कहीं राष्ट्रविशेष में अराजकता किंवा रक्तपात का संकेत देता है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख़:- पक्षारम्भ में अनाजों में मन्दी बने। ४ अक्तूबर को तेल, तिलहन, सोना में अच्छा मन्दा बनेगा। ४ अक्तूबर को रुई, चान्दी में पहले तेज़ी, बाद में मन्दी आए। ८ अक्तूबर को रुई व चान्दी में झटके के साथ खासी मन्दी आए। ९ अक्तूबर को गुड़, खाण्ड, सोना तेज़; अनाज, तेल-तिलहन में मन्दी बने। १० अक्तूबर को सोने-चान्दी, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूं, चना में तेज़ी रहे।

आकाश लक्षण:- अक्तूबर १, ४, ८, ९, १० को उ.प्र. के कुछ भाग, श्रीलंका, आसाम, बंगाल में वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि संभव है। इन दिनों चिरापूंजी में भी वर्षा के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (१२ अक्तू.)

बु. शु. ७ | ५ | रा. ८ | सू. ६ श. | ४ मं. | ९ | ३ | १० | चं. १२ | के. २ | ११ | १ गु.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १२ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	३	६	०	६	५	७	१
२४	२३	१९	३	१३	९	२५	२३	२३
१७	२०	३६	३९	२९	२४	५५	१४	१४
४१	४९	१७	०	५०	१०	४१	१६	१६
५९	७१०	३४	९६	७	७४	७	३	३
२०	५४	२७	१२	१९	३६	२०	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
चित्रा १	रेव. ३	आश्ले. १	चित्रा ४	भ. १	स्वा. १	चित्रा १	ज्येष्ठा २	रोहि. ४

श्री वि. सं. २०६८, शाक १९३३, कार्त्तिक कृष्ण पक्ष १४

(१३ से २६ अक्तूबर तक, सन् २०११ ई. ,
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद्-हेमन्त ऋतु।

श. अस्त है। बु. १८ अक्तू. से पश्चिम में दृश्य हो जाएगा। प्रातः मं. पूर्वकपाल में, गु. पश्चिमकपाल में और सायं शु. पश्चिमक्षितिज में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	शः	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	आश्वि.	अक्तू.	आश्वि.	जिल्हिज		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२८	२८	१	गु.	९	१०	अश्वि.	३८	५२	ह.	२६	३४	कौ.	९	१०	२७	१३	२१	१४	मेष			६	२७	१७	५०	५	२५	१७	०	बुध स्वाती में ५०/५५, वक्री गुरु अश्वि. ४ में १८/०२,
२८	२३	२	शु.	१५	२९	भर.	४६	१९	व.	२८	५१	ग.	१५	२९	२८	१४	२२	१५	मेष			६	२८	१७	४९	५	२६	१६	२२	भ. ४८/३१ बाद,
२८	१९	३	श.	२१	३२	कृत्ति.	५३	२२	सि.	३०	५४	वि.	२१	३२	२९	१५	२३	१६	वृष	३	६	६	२८	१७	४८	५	२७	१५	४६	भ. २१/३२ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी (A)
२८	१४	४	र.	२७	१	रोहि.	५९	४३	व्य.	३२	२८	बा.	२७	१	३०	१६	२४	१७	वृष			६	२९	१७	४७	५	२८	१५	१२	
२८	१०	५	चं.	३१	३२	मृग.	६०	०	व.	३३	१६	तै.	३१	३२	का.१	१७	२५	१८	मिथुन	३२	३०	६	३०	१७	४६	५	२९	१४	४१	सं. सूर्य तुला में ४३/१०, मु. ३०, पुण्यकाल (B)
२८	५	६	मं.	३४	४२	मृग.	४	५४	प.	३३	३	ग.	३	७	२	१८	२६	१९	मिथुन			६	३०	१७	४५	६	०	१४	१२	भ. ३४/४२ बाद, शनि चित्रा २ में ०/३०, बुध (C)
२८	१	७	बु.	३६	१०	आर्द्रा	८	३९	शि.	३१	३१	वि.	५	२६	३	१९	२७	२०	कर्क	५५	१९	६	३१	१७	४३	६	१	१३	४६	भ. ५/२६ तक,
२७	५७	८	गु.	३५	४३	पुन.	१०	३६	सि.	२८	३०	बा.	५	५६	४	२०	२८	२१	कर्क			६	३२	१७	४२	६	२	१३	२१	शुक्र विशा. में २८/४८, अहोई अष्टमी (पं.),
२७	५२	९	शु.	३३	१५	पुष्य	१०	३७	सा.	२३	५४	तै.	४	२८	५	२१	२९	२२	कर्क			६	३२	१७	४१	६	३	१२	५९	
२७	४८	१०	श.	२८	४८	आश्ले.	८	३९	शु.	१७	४२	व.	१	१	६	२२	३०	२३	सिंह	८	३९	६	३३	१७	४०	६	४	१२	३९	भ. १/०१ से २८/४८ तक, बुध विशा. में ३०/२२,
२७	४३	११	र	२२	३५	मघा पू.फा.	४ ५९	५० २८	शु.	१०	१	बा.	२२	३५	७	२३	का.१	२४	सिंह			६	३४	१७	३९	६	५	१२	२२	सूर्य सायन वृश्चिक में ४३/३२, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, (D)
२७	३९	१२	चं.	१४	५३	उ.फा.	५२	५२	ब्र. ऐं.	१ ५१	६ १०	तै.	१४	५३	८	२४	२	२५	कन्या	१२	५२	६	३५	१७	३८	६	६	१२	६	सूर्य स्वाती में २५/१८, सोमप्रदोष व्रत, यमप्रीत्यर्थ (E)
२७	३५	१३	मं.	६	६	हस्त	४५	३०	वै.	४०	३५	व.	६	६	९	२५	३	२६	कन्या			६	३५	१७	३७	६	७	११	५३	भ. ६/६ से ३१/२४ तक, धन त्रयोदशी, श्रीहनुमान् (F)
अवम		१४	मं.	५६	४२	० ०	०	०	०	०	०	०	०	.०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
२७	३०	३०	बु.	४७	४	चित्रा	३७	४८	वि.	२९	४१	च.	२१	५३	१०	२६	४	२७	तुला	११	३७	६	३६	१७	३६	६	८	११	४२	दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, श्रीमहावीर निर्वाण (G)

(A) (करवा चौथ) (चंद्रोदय १६ घं. ४४ मि.), (B) मध्याह्न बाद, (C) पश्चिम में उदित १९/४२, (D) शक कार्त्तिक प्रारम्भ, रमा एकादशी व्रत (स.), गोवत्स द्वादशी, (E) दीपदान, (F) जयन्ती (उ.मा.), नरक चतुर्दशी (पर अरुणोदय वाली), (G) दिवस (जैन),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२० अक्तूबर,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	३	६	०	६	५	७	१
२	०	२४	१६	१२	१६	२६	२२	२२
१३	२७	८	६	२८	२१	५४	४८	४८
२२	४८	[illegible]६	३०	५२	०	१६	५०	५०
५९	७८२	[illegible]२	९०	७	७४	७	३	३
३८	४५	३१	५४	५६	३७	१८	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
३	४	३	३	४	४	२	२	४
चित्रा	पुन.	आश्ले.	स्वाती	अश्वि.	स्वाती	चित्रा	ज्येष्ठा	रोहि.

कुण्डली सूर्योदय (२० अक्तू.)

८ रा. | ६ श.
९ | सू. ७ बु. शु. | ५
१० | चं. ४ मं.
११ | गु. १ | ३
१२ | २ के.

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच गुरुवार हैं; पश्चिमी राष्ट्रों में कहीं युद्ध के कारण वातावरण अशान्त रहेगा- "विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते।" नीचस्थ सूर्य एवं शुक्र के साथ गुरु का समसप्तकयोग जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं की उपलब्धता कम करे, जिससे जनता में महंगाई से अशान्ति बढ़े।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- १३ से १६ अक्तूबर तक बाज़ार कुछ ऊपर-नीचे चलेंगे। १७ अक्तूबर को रुई, सोना, चान्दी, गुड़, शक्कर, बिनौला, मिर्च, अलसी, सरसों, हींग, गुग्गुल में तेज़ी आए। १८ से २३ अक्तूबर को बाज़ार कुछ मन्दे रहें। २२ अक्तूबर को रुई में ज़ोरदार मन्दी; सूत, सण, रेशम, सोने, चान्दी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी और सरसों में तेज़ी रहे।

आकाश लक्षणः- अक्तूबर १३, १६, १७ से २०, २२, २४ को जम्मू-काश्मीर, पंजाब, उ.प्र. के कुछ भागो में वायुवेग के साथ बौछारे पड़े, उ.पू. लंका, चिरापूंजी में भी वर्षा संभव है।

कुण्डली सूर्योदय (२६ अक्तू.)

८ रा. | चं. ६ श.
९ | सू. ७ बु. शु. | ५
१० | ४ मं.
११ | गु. १ | ३
१२ | २ के.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२६ अक्तूबर,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	३	६	०	६	५	७	१
८	२६	२७	२५	११	२६	२७	२२	२२
११	१९	२७	५	४०	४८	३७	२६	२६
४३	५३	४८	३७	३७	४०	५८	४६	४६
५९	६१६	३२	८७	८	७४	७	३	३
५०	५५	४३	६	८	३७	१४	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
१	१	४	२	४	३	२	२	४
स्वाती	चित्रा	आश्ले.	विशा.	अश्वि.	विशा.	चित्रा	ज्येष्ठा	रोहि.

श्री वि. सं. २०६८, शाक १९३३, कार्तिक शुक्ल पक्ष १५

(२७ अक्तूबर से १० नवम्बर तक, सन् २०११ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

३१ अक्तू. को श. पूर्व में दृश्य हो जाएगा। प्रातः मं. पूर्वकपाल में और गु. पश्चिम में क्षितिज के पास होगा। सायंकाल बु., शु. पश्चिमक्षितिज में परस्पर काफ़ी आसन्न दिखाई देंगे।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	कार्तिक	अक्तूबर	कार्तिक	ज़िल्काद		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२७	२६	१	गु.	३७	४०	स्वाती	३०	१७	प्री.	१८	५३	किं.	१२	२२	११	२७	५	२८	तुला			६	३७	१७	३५	६	९	११	३२	गोवर्धन पूजा, बलिपूजा, अन्नकूट, गोक्रीड़ा,
२७	२२	२	शु.	२८	५९	विशा.	२३	२४	आ. सौ.	८ ५८	३१ ५८	बा.	३	२०	१२	२८	६	२९	वृश्चि.	१०	१	६	३८	१७	३४	६	१०	११	२५	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, शुक्र वृश्चिक में ३१/०३, (A)
२७	१८	३	श.	२१	२५	अनु.	१७	३६	शो.	५०	२९	ग.	२१	२५	१३	२९	७	ज़ि.१	वृश्चिक			६	३८	१७	३३	६	११	११	२०	भ. ४८/२१ बाद, बुध वृश्चिक में २१/४८, ज़िल्हिज्ज (B)
२७	१४	४	र.	१५	१९	ज्ये.	१३	१४	अ.	४३	१९	वि.	१५	१९	१४	३०	८	२	धनु	१३	१४	६	३९	१७	३३	६	१२	११	१६	भ. १५/१९ तक, मंगल मघा सिंह में ३८/३०,
२७	९	५	चं.	१०	५८	मूल	१०	३५	सु.	३७	३८	बा.	१०	५८	१५	३१	९	३	धनु			६	४०	१७	३२	६	१३	११	१५	बुध अनु. में ४४/१०, शुक्र अनु. में ११/४८, शनि (C)
२७	५	६	मं.	८	३२	पू.षा.	९	५०	धृ.	३३	३०	तै.	८	३२	१६	न.१	१०	४	मकर	२४	५९	६	४१	१७	३१	६	१४	११	१५	सूर्यषष्ठी (बिहार), नवंबर प्रारम्भ,
२७	१	७	बु.	८	५	उ.षा.	११	१	शू.	३०	५४	व.	८	५	१७	२	११	५	मकर			६	४२	१७	३०	६	१५	११	१६	भ. ८/०५ से ३८/४७ तक,
२६	५७	८	गु.	९	३१	श्रव.	१४	०	गं.	२९	४१	ब.	९	३१	१८	३	१२	६	कुम्भ	४६	८	६	४२	१७	२९	६	१६	११	१९	पंचक प्रारम्भ ४६/०८, गोपाष्टमी, अक्षय नवमी, (D)
२६	५३	९	शु.	१२	३८	धनि.	१८	३४	वृ.	२९	४०	कौ.	१२	३८	१९	४	१३	७	कुम्भ			६	४३	१७	२८	६	१७	११	२४	
२६	४९	१०	श.	१७	६	शत.	२४	२५	ध्रु.	३०	३७	ग.	१७	६	२०	५	१४	८	कुम्भ			६	४४	१७	२८	६	१८	११	३१	भ. ४६/४६ बाद,
२६	४५	११	र.	२२	३३	पू.भा.	३१	१०	व्या.	३२	१५	वि.	२२	३३	२१	६	१५	९	मीन	१४	२५	६	४५	१७	२७	६	१९	११	३८	भ. २२/३३ तक, सूर्य विशा. में ४५/०५, भीष्म- (E)
२६	४१	१२	चं.	२८	३८	उ.भा.	३८	२७	ह.	३४	१७	बा.	२८	३८	२२	७	१६	१०	मीन			६	४६	१७	२६	६	२०	११	४८	वक्री गुरु अश्वि. ३ में २४/१३, तुलसी विवाह, (F)
२६	३७	१३	मं.	३४	५९	रेव.	४५	५७	व.	३६	३०	कौ.	१	४९	२३	८	१७	११	मेष	४५	५७	६	४६	१७	२५	६	२१	११	५९	पंचक समाप्त ४५/५७, श्रीवैकुण्ठ चतुर्दशी(दिखे पृ. 89)(G)
२६	३४	१४	बु.	४१	२०	अश्वि.	५३	२३	सि.	३८	४२	ग.	८	१०	२४	९	१८	१२	मेष			६	४७	१७	२५	६	२२	१२	११	भ. ४१/२० बाद, नेप्च्यून मार्गी ४४/०८,
२६	३०	१५	गु.	४७	२४	भर.	६०	०	व्य.	४०	४२	वि.	१४	२२	२५	१०	१९	१३	मेष			६	४८	१७	२४	६	२३	१२	२५	भ. १४/२२ तक, शुक्र ज्येष्ठा में ५५/१२, त्रिपुरोत्सव,(H)

(A) यम द्वितीया, भ्रातृ द्वितीया(भाई दूज), श्रीविश्वकर्मा पूजा, (B) मु. प्रारम्भ, (C) उदित ७/४८, ज्ञानपञ्चमी (जैन), (D) कूष्मांड नवमी (देखें पृ. 89), (E) पंचक प्रारम्भ, देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.), (F) चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त, (G) भौमप्रदोष व्रत, (H) भीष्म पञ्चक समाप्त, कार्तिक स्नान समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत, कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरु नानक जयन्ती, मेला पुष्करराज (राज.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ३ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	४	७	०	७	५	७	१
१६	१६	१	६	१०	६	२८	२२	२२
११	४६	४५	२२	३५	४५	३५	४	४
२०	७	२७	२६	३२	२६	२५	२०	२०
६०	७४८	३१	८०	८	७४	७	३	३
५	५	३२	४७	२	३५	६	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वाती ३	श्रव. ३	मघा १	अनु. १	अश्वि. ४	अनु. २	चित्रा २	ज्येष्ठा २	रोहि. ४

कुण्डली सूर्योदय (३ नवं.)

बु. शु. रा. ८ | ६ श. | ९ | सू. ७ | ५ मं. | चं. १० | ४ | ११ | गु. १ | ३ | १२ | २ के.

लोकभविष्य:- बुध, शुक्र एवं राहु वृश्चिकराशि में हैं। इन पर शनि-मंगल की विशेष दृष्टि है। प्राकृतिक आपदा किंवा यानदुर्घटना से जनधनहानि हो। प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त हो। उग्रवादजन्य अपराधों में वृद्धि हो। लेकिन कार्तिक शुक्ल पंचमी को सोमवार होने से भारत में सुख-सम्पदावृद्धि रहे। नेपाल, बंगलादेश, इराक एवं पाक में आतंकवाद से हानि विशेष हो।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में वृश्चिकस्थ शुक्र पर शनि-मंगल की दृष्टि होने से गुड़, गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोठ एवं बाजरा में तेज़ी बनेगी । २९ अक्तूबर को सूत, सण, रुई, सोना, चान्दी में मन्दी के झटके आएंगे । ३१ अक्तूबर के लगभग से ३ नवंबर तक तेल, तिलहन, सोना-चान्दी, तांबा, गुड़, खाण्ड, मूंग, मोठ, उड़द, तिल, सरसों, मूंगफली में तेज़ी बनेगी । आगे तेज़ी-मन्दी के रिएक्शन्ज़ रहें।

आकाश लक्षण:- अक्तूबर २८ से ३ नवंबर तक जम्मू-काश्मीर, हि.प्र. एवं उत्तरी भारत में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि हो । काश्मीर एवं हिमाचल के उन्नत शिखरों पर कहीं हिमपात हो, उ.भारत में शीत का प्रभाव बढ़ने लगेगा ।

कुण्डली सूर्योदय (१० नवं.)

८ बु. शु. रा. | ६ श. | ९ | सू. ७ | ५ मं. | १० | ४ | ११ | गु. १ चं. | ३ | १२ | २ के.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १० नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	४	७	०	७	५	७	१
२३	१४	५	१५	९	१५	२९	२१	२१
१२	०	२२	२१	४०	२७	२४	४२	४२
२७	२०	४४	२०	१४	२४	३१	४	४
६०	७१४	३०	७०	७	७४	६	३	३
१६	२६	२२	३३	३८	३१	५४	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
विशा. १	भर. १	मघा २	अनु. ४	अश्वि. ३	अनु. ४	चित्रा २	ज्येष्ठा २	रोहि. ४

श्री वि. सं. २०६८, शाक १९३३, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १६

(११ से २५ नवम्बर तक, सन् २०११ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

प्रातः श. पूर्वक्षितिज में तथा मं. याम्योत्तरवृत्त में होगा। सायं बु., शु. को पश्चिमक्षितिज में और गु. को पूर्वकपाल में देख सकते हैं।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. कार्तिक	अं. नवंबर	श. कार्तिक	मु. ज़िल्हिज्ज	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२६	२६	१	शु.	५३	०	भर.	०	३२	व.	४२	२२	बा.	२०	१२	२६	११	२०	१४	वृष	१७	१४	६	४९	१७	२३	६	२४	१२	४१	बुध ज्येष्ठा में ३/५१, पद्मक योग (७ घं.१ मि. (A)
२६	२३	२	श.	५७	५६	कृत्ति.	७	९	प.	४३	३३	तै.	२५	२८	२७	१२	२१	१५	वृष			६	५०	१७	२३	६	२५	१२	५९	
२६	१९	३	र.	६०	०	रोहि.	१३	८	शि.	४४	७	व.	२९	५७	२८	१३	२२	१६	मिथुन	४५	५०	६	५१	१७	२२	६	२६	१३	१८	भ. २६/५७ बाद,
२६	१५	३	चं.	१	५८	मृग.	१८	१४	सि.	४३	५४	वि.	१	५८	२९	१४	२३	१७	मिथुन			६	५१	१७	२२	६	२७	१३	३९	भ. १/५८ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२६	१२	४	मं.	४	५७	आर्द्रा	२२	१५	सा.	४२	४५	बा.	४	५७	३०	१५	२४	१८	मिथुन			६	५२	१७	२१	६	२८	१४	३	शनि चित्रा ३ तुला में ८/१७,
२६	९	५	बु.	६	३९	पुन.	२४	५८	शु.	४०	३२	तै.	६	३९	मा.१	१६	२५	१९	कर्क	९	२५	६	५३	१७	२१	६	२९	१४	२८	सं. सूर्य वृश्चिक में ४१/४३, मु. ३०, पुण्यकाल (B)
२६	५	६	गु.	६	५४	पुष्य	२६	१५	शु.	३७	८	व.	६	५४	२	१७	२६	२०	कर्क			६	५४	१७	२०	७	०	१४	५४	भ. ६/५४ से ३६/१५ तक,
२६	२	७	शु.	५	३५	आश्ले.	२५	५८	ब्र.	३२	२८	ब.	५	३५	३	१८	२७	२१	सिंह	२५	५८	६	५५	१७	२०	७	१	१५	२३	कालाष्टमी (श्री भैरवाष्टमी),
२५	५९	८	श.	२	३८	मघा	२४	७	ऐं.	२६	३२	कौ.	२	३८	४	१९	२८	२२	सिंह			६	५६	१७	१९	७	२	१५	५४	सूर्य अनु. में ५६/५५,
अवम		९	श.	५८	११	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	नवमी तिथिक्षय,
२५	५६	१०	र.	५२	१६	पू.फा.	२०	४७	वै.	१९	२४	व.	२५	१४	५	२०	२९	२३	कन्या	३४	४३	६	५७	१७	१९	७	३	१६	२६	भ. २५/१४ से ५२/१६ तक,
२५	५२	११	चं.	४५	११	उ.फा.	१६	७	वि.	११	११	ब.	१८	४३	६	२१	३०	२४	कन्या			६	५७	१७	१८	७	४	१७	०	शुक्र मूल धनु में ३६/०७, उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),
२५	४९	१२	मं.	३७	१२	हस्त	१०	२५	प्री. आ.	२ ५२	५ २३	कौ.	११	११	७	२२	मा.१	२५	तुला	३७	१५	६	५८	१७	१८	७	५	१७	३६	सूर्य सायन धनु में ३६/४०, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ,
२५	४७	१३	बु.	२८	४२	चित्रा स्वाती	३ ५७	५८ १४	सौ.	४२	१७	ग.	२	५७	८	२३	२	२६	तुला			६	५९	१७	१८	७	६	१८	१४	भ. २८/४२ से ५४/२१ तक, प्रदोष व्रत,
२५	४४	१४	गु.	२०	१	विशा.	५०	३१	शो.	३२	९	श.	२०	१	९	२४	३	२७	वृश्चिक	३७	८	७	०	१७	१८	७	७	१८	५३	बुध वक्री १४/३४, बलिदान दिन श्रीगुरु तेग़बहादुर जी (C)
२५	४१	३०	शु.	११	३६	अनु.	४४	१८	अ.	२२	१७	ना.	११	३६	१०	२५	४	२८	वृश्चिक			७	१	१७	१७	७	८	१९	३३	

(A) से अगले दिन ६ घं. ४२ मि. तक) (पुष्करस्नान माहात्म्य), (देखें पृ. 90), (B) मध्याह्न बाद, (C) (नानकशाही अनुसार),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १६ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	४	७	०	७	६	७	१
२	६	६	२४	८	२६	०	२१	२१
१५	५६	४६	६	३४	३७	२५	१३	१३
५५	३१	२६	३०	५०	५६	२३	२७	२७
६०	८३६	२८	३७	६	७४	६	३	३
३२	५०	४०	२१	४३	२६	३४	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
विशा. ४	मघा ३	मघा ३	ज्येष्ठा ३	अश्वि. ३	ज्येष्ठा ३	चित्रा ३	ज्येष्ठा २	रोहि. ४

कुण्डली सूर्योदय (१६ नवं.)

९ | ७ श. | ८ सू. बु. शु रा. | १० | ६ | ११ | मं. ५ चं. | १२ | के. २ | ४ | गु.१ | ३

लोकभविष्य:- शनि तुला राशि में आकर गुरु के साथ समसप्तकयोग बना रहा है। वृश्चिक राशि में चतुर्ग्रहीयोग पर मंगल की विशेष दृष्टि है- "तुलाराशिंगते शनौ अग्न्युपद्रवमादिशेत् । सर्वधान्यमहर्घाणि मेदिनी नष्टधान्यका।।" कहीं अग्निकाण्ड, बम-विस्फोट आदि से अशान्ति हो। कहीं अकालिक वर्षा एवं प्राकृतिक प्रकोप से धनहानि संभव है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- १५ नवंबर से गुड़, खाण्ड, दालवाना एवम् मोटे अनाजों में तेज़ी बनेगी। रुई, ताम्बा, सोना, चान्दी व ऊनी वस्त्रों तथा तेल-तिलहन में तेज़ी १८ नवंबर तक रहे। २१ नवंबर को गेहूं, जौ, चना आदि अन्न, सोना, चान्दी, तांबा एवं शेयर बाज़ारों में भी तेज़ी बनेगी। रुई, सूत, कपास में पहले मन्दी एवं पीछे तेज़ी रहे। २३ नवंबर के लगभग घी, गुड़, शक्कर में तेज़ी रहे।

आकाश लक्षण:- नवंबर १५, १६, १७, १६, २१, २२, २४ को काश्मीर, हि.प्र. में हिमपात होगा। उत्तरी भारत में सर्वत्र शीतलहर चलने लगेगी। कहीं धुन्ध से यातायात प्रभावित होगा।

कुण्डली सूर्योदय (२५ नवं.)

९ शु. | ७ श. | सू. ८ चं. बु. रा. | १० | ६ | ११ | मं. ५ | १२ | के. २ | ४ | गु.१ | ३

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २५ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	४	७	०	८	६	७	१
८	४	१२	२६	७	४	१	२०	२०
१६	४५	३८	३	५६	४	४	५४	५४
३५	३२	१२	१८	३४	४६	१०	२३	२३
६०	८६०	२७	११	५	७४	६	३	३
४२	३	१६	५६	५२	२७	१८	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. २	अनु. १	मघा ४	ज्येष्ठा ३	अश्वि. ३	मूल २	चित्रा ३	ज्येष्ठा २	रोहि. ४

(२५ नवम्बर से १० दिसम्बर तक, सन् २०११ ई.

श्री वि. सं. २०६८, शाक १९३३, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १७

(२६ नवम्बर से १० दिसम्बर तक, सन् २०११ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

बु. २८ नवम्बर को पश्चिम में अस्त होकर पक्षान्त में पूर्व में उदित हो जाएगा। प्रातः श. पूर्व में और मं. याम्योत्तरवृत्त में होगा। सायं शु. पश्चिम में और गु. पूर्वकपाल में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	अं. नवंबर	श. मार्गशीर्ष	मु. ज़िल्हिज्ज	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	३८	१	श.	३	५०	ज्ये.	३८	५७	सु.	१३	१	ब.	३	५०	११	२६	५	२९	धनु	३८	५७	७	२	१७	१७	७	९	२०	१५	चन्द्रदर्शन, मु. १५, मंगल पू.फा. में २८/१०,
अवम		२	श.	५७	८	० ०	०	०	०	०	०	0	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
२५	३६	३	र.	५१	४७	मूल	३४	५३	धृ. शू.	४ ५७	३९ २९	तै.	२४	२८	१२	२७	६	मु. १	धनु			७	३	१७	१७	७	१०	२०	५९	मुहर्रम (हिजरी सन् १४३३) मु. प्रारम्भ,
२५	३३	४	चं.	४८	९	पू.षा.	३२	२५	गं.	५१	३९	व.	१९	५८	१३	२८	७	२	मकर	४७	५	७	३	१७	१७	७	११	२१	४४	भ. १६/५८ से ४८/०६ तक, बुध पश्चिम में अस्त (A)
२५	३१	५	मं.	४६	२५	उ.षा.	३१	४६	वृ.	४७	२०	ब.	१७	१६	१४	२९	८	३	मकर			७	४	१७	१६	७	१२	२२	२९	वक्री यूरेनस उ.भा. १ में ७/५०, बलिदानी दिन (B)
२५	२८	६	बु.	४६	४१	श्रव.	३३	२	ध्रु.	४४	३४	कौ.	१६	३३	१५	३०	९	४	मकर			७	५	१७	१६	७	१३	२३	१६	स्कन्द (गुह) षष्ठी, चम्पा षष्ठी,
२५	२६	७	गु.	४८	५३	धनि.	३६	१३	व्या.	४३	१७	ग.	१७	४८	१६	दि.१	१०	५	कुम्भ	४	२३	७	६	१७	१६	७	१४	२४	४	भ. ४८/५३ बाद, पंचक प्रारम्भ ४/२३, मित्र सप्तमी, (C)
२५	२४	८	शु.	५२	४८	शत.	४१	५	ह.	४३	१९	वि.	२०	५१	१७	२	११	६	कुम्भ			७	७	१७	१६	७	१५	२४	५३	भ. २०/५१ तक, शुक्र पू.षा. में २३/३६,
२५	२२	९	श.	५८	५	पू.भा.	४७	१९	व.	४४	२४	बा.	२५	२६	१८	३	१२	७	मीन	३०	४०	७	८	१७	१६	७	१६	२५	४३	सूर्य ज्येष्ठा में १०/००,
२५	२०	१०	र.	६०	०	उ.भा.	५४	२७	सि.	४६	१४	तै.	३१	८	१९	४	१३	८	मीन			७	८	१७	१६	७	१७	२६	३४	खग्रास चन्द्रग्रहण १० दिसम्बर
२५	१८	१०	चं.	४	१२	रेव.	६०	०	व्य.	४८	२५	ग.	४	१२	२०	५	१४	९	मीन			७	९	१७	१६	७	१८	२७	२५	भ. ३७/२७ बाद, वक्री बुध अनु. में ८/१६,
२५	१६	११	मं.	१०	४३	रेव.	१	५९	व.	५०	३९	वि.	१०	४३	२१	६	१५	१०	मेष	१	५९	७	१०	१७	१६	७	१९	२८	१७	भ. १०/४३ तक, पंचक समाप्त १/५६, मोक्षदा (D)
२५	१४	१२	बु.	१७	८	अश्वि.	९	२९	प.	५२	३६	बा.	१७	८	२२	७	१६	११	मेष			७	११	१७	१६	७	२०	२९	१०	प्रदोष व्रत,
२५	१३	१३	गु.	२३	२	भर.	१६	३३	शि.	५४	२	तै.	२३	२	२३	८	१७	१२	वृष	३३	१३	७	११	१७	१७	७	२१	३०	४	
२५	११	१४	शु.	२८	७	कृत्ति.	२२	५२	सि.	५४	४८	व.	२८	७	२४	९	१८	१३	वृष			७	१२	१७	१७	७	२२	३०	५८	भ. २८/०७ बाद, ग्रहणशूल,
२५	१०	१५	श.	३२	१३	रोहि.	२८	१५	सा.	५४	४६	वि.	०	९	२५	१०	१९	१४	वृष			७	१३	१७	१७	७	२३	३१	५४	भ. ०/०६ तक, यूरेनस मार्गी १३/३१, बुध पूर्व (E)

(A) ३१/२५, (B) श्रीगुरुतेगबहादुर जी (पुरातन परम्परा),(C) दिसंबर प्रारम्भ; (D) एकादशी व्रत (स.), श्रीगीता जयन्ती, (E) में उदित १०/००, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीदत्त जयन्ती, खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (देखें पृ. 14),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	४	७	०	८	६	७	१
१५	१०	१५	२०	७	१२	१	२०	२०
२४	४५	४४	५६	१८	४५	४७	३२	३२
५५	५५	१५	४६	५४	४५	१२	७	७
६० ४६	७३४ ५८	२५ ३३	७८ १८	४ ४१	७४ २२	५ ५६	३ ११	३ ११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. ४	शत. २	पू.फा. १	ज्येष्ठा २	अश्वि. ३	मूल ४	चित्रा ३	ज्येष्ठा २	रोहि. ४

कुण्डली सूर्योदय (२ दिसं.)

९ शु. | ७ श. | सू. ८ बु. रा. | १० | ६ | चं. ११ | मं. ५ | १२ | के. २ | ४ | गु. १ | ३

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच शनिवार हैं। शुक्लपक्ष में तिथिक्षय भी है। अमेरिका, रूस, चीन, जापान, पाकिस्तान, टर्की, अफगानिस्तान आदि में कहीं भयंकर भूकम्प से जनधनहानि का योग है। कहीं भयंकर अग्निकाण्ड से जनधनहानि भी संभव है। यानदुर्घटना एवं उग्रवादियों द्वारा कृत हमले से किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त हो; कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने-" मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षयः। छत्रभंगं प्रजापीड़ा दुर्भिक्षं च समादिशेत् ॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में तिल, तेल, सरसों, मूंगफली, घृत, गुड़, खाण्ड, नमक में तेज़ी रहे। २८ नवंबर से २ दिसंबर तक बाज़ार ऊपर-नीचे चलेंगे। ३ दिसं. के लगभग सोना, चान्दी, चावल, गेहूं, जौ, धना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, पारा, गुड़, खाण्ड में तेज़ी बने। १० दिसं. के लगभग तिल, घी, पाट, हैसियन, जीरा, अजवायन एवं लालमिर्च में तेजी बने; तांबा व सोना भी तेज़ रहे।

आकाश लक्षणः- नवं. २६, २८, दिसं. २, ३, ५ एवं १० को उत्तरी भारत में भयंकर शीतलहर चलेगी। कहीं धुन्ध से यातायात अवरुद्ध होगा। कहीं वर्षा, शीतलहर एवं हिमाचल में बर्फबारी से जनधनहानि भी संभव है।

कुण्डली सूर्योदय (१० दिसं.)

९ शु. | ७ श. | सू. ८ बु. रा. | १० | ६ | ११ | मं. ५ | १२ | चं. के. २ | ४ | गु. १ | ३

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१० दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	४	७	०	८	६	७	१
२३	१६	१६	११	६	२२	२	२०	२०
३१	४०	०	१६	४६	४०	३२	६	६
५६	३३	४०	३३	३५	११	५८	४१	४१
६० ५६	७३६ १४	२३ १३	३६ १५	३ ११	७४ १३	५ २६	३ ११	३ ११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्येष्ठा ३	रोहि. ३	पू.फा. २	अनु. ३	अश्वि. ३	पू.षा. ३	चित्रा ३	ज्येष्ठा २	रोहि. ४

श्री वि. सं. २०६८, शाक १९३३, पौष कृष्ण पक्ष १८ — (११ से २४ दिसम्बर तक, सन् २०११ ई.)

दक्षिण–उत्तरायण, दक्षिणगोल, हेमन्त–शिशिर ऋतु।

प्रातः बु. पूर्व-क्षितिजासन्न, श. पूर्वकपाल में और मं. याम्योत्तरवृत्त में होगा। सायं शु. पश्चिम में और गु. पूर्वकपाल में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	अं. दिसम्बर	श. मार्गशीर्ष	मु. मुहर्रम	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
२५	९	१	र.	३५	१२	मृग.	३२	३४	शु.	५३	५३	बा.	३	४२	२६	११	२०	१५	मिथुन	०	३३	७	१४	१७	१७	७	२४	३२	५०	ग्रहणशूल,
२५	७	२	चं.	३७	३	आर्द्रा	३५	४९	शु.	५२	८	तै.	६	७	२७	१२	२१	१६	मिथुन			७	१४	१७	१७	७	२५	३३	४८	वक्री गुरु अश्वि. २ में ४/२८, राहु ज्येष्ठा १, केतु (A)
२५	६	३	मं.	३७	४५	पुन.	३७	५७	ब्र.	४९	३१	व.	७	२४	२८	१३	२२	१७	कर्क	२२	३०	७	१५	१७	१८	७	२६	३४	४६	भ. ७/२४ से ३७/४५ तक, बुध मार्गी ५९/५५, (B)
२५	५	४	बु.	३७	२०	पुष्य	३८	५९	ऐं.	४६	१	ब.	७	३२	२९	१४	२३	१८	कर्क			७	१६	१७	१८	७	२७	३५	४६	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२५	५	५	गु.	३५	४९	आश्ले.	३८	५८	वै.	४१	४०	कौ.	६	३४	३०	१५	२४	१९	सिंह	३८	५८	७	१६	१७	१८	७	२८	३६	४६	शुक्र मकर में ५१/२३,
२५	४	६	शु.	३३	१४	मघा	३७	५४	वि.	३६	२९	ग.	४	३१	पौ.१	१६	२५	२०	सिंह			७	१७	१७	१८	७	२९	३७	४७	भ. ३३/१४ बाद, सं. सूर्य मूल धनु में १७/२०, (C)
२५	३	७	श.	२९	३८	पू.फा.	३५	५१	प्री.	३०	३०	वि.	१	२६	२	१७	२६	२१	कन्या	५०	१२	७	१८	१७	१९	८	०	३८	५०	भ. १/२६ तक,
२५	३	८	र.	२५	६	उ.फा.	३२	५४	आ.	२३	४६	कौ.	२५	६	३	१८	२७	२२	कन्या			७	१८	१७	१९	८	१	३९	५३	
२५	२	९	चं.	१९	४३	हस्त	२९	७	सौ.	१६	२२	ग.	१९	४३	४	१९	२८	२३	तुला	५६	५९	७	१९	१७	२०	८	२	४०	५७	भ. ४६/४० बाद, शनि चित्रा ४ में २/२८,
२५	२	१०	मं.	१३	३९	चित्रा	२४	४१	शो.	८	२४	वि.	१३	३९	५	२०	२९	२४	तुला			७	१९	१७	२०	८	३	४२	२	भ. १३/३९ तक,
२५	२	११	बु.	७	४	स्वाती	१९	४७	अ. सु.	० ५१	१ २१	बा.	७	४	६	२१	३०	२५	तुला			७	२०	१७	२१	८	४	४३	८	यूरेनस उ.भा. २ में २४/२३, सफला एकादशी व्रत(स.),
२५	२	१२	गु.	०	१२	विशा.	१४	३९	धृ.	४२	३७	तै.	०	१२	७	२२	पौ.१	२६	वृश्चि.	०	५६	७	२०	१७	२१	८	५	४४	१५	भ. ५३/१८ बाद, सूर्य सायन मकर में ९/१०, (D)
अवम		१३	गु.	५३	१८	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
२५	२	१४	शु.	४६	४०	अनु.	९	३३	शू.	३४	३	वि.	१९	५९	८	२३	२	२७	वृश्चिक			७	२१	१७	२२	८	६	४५	२२	भ. १९/५९ तक शुक्र श्रवण में ५७/३२,
२५	२	३०	श.	४०	३७	ज्ये.	४	५०	गं.	२५	५४	च.	१३	३८	९	२४	३	२८	धनु	४	५०	७	२१	१७	२२	८	७	४६	३०	बुध ज्येष्ठा में २९/४७, शनैश्चरी अमा,

(A) रोहि. ३ में १/३८, ग्रहणशूल (B) शुक्र उ.षा. में ९/३२, ग्रहणशूल (C) मु. ३०, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (D) उत्तर अयन एवं शिशिरऋतु प्रारम्भ, शक पौष प्रारम्भ, प्रदोष व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १८ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ १ ३९ ५५	५ १ १४ १६	४ २१ ५७ ४	७ ११ ० ७	० ६ २६ ४६	९ २ ३३ २२	६ ३ १४ ३४	७ १९ ४१ १४	१ १९ ४१ १४
६१ ४	८४५ ५०	२० २७	३७ ५	१ ३४	७४ ३	४ ५२	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मूल १	उ.फा. २	पू.फा. ३	अनु. ३	अश्वि. २	उ.षा. २	चित्रा ३	ज्येष्ठा १	रोहि. ३

कुण्डली सूर्योदय (१८ दिसं.)

लोकभविष्यः- पौष में शनिवारी अमावस है। गुरु-शनि का समसप्तकयोग भी चल रहा है। जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं में महंगाई ज़ोर पकड़े। जनता में शासन के प्रति आक्रोश बढ़े। सीमाप्रान्तों पर अतिक्रमण की घटनाएं भी हों, उग्रवाद की घटनाएं अधिक हों-"अमावास्या सहस्यास्य शनि-सूर्यारवासरे । यदि स्याद्भयमादेश्यं तदा सस्यमहर्घता ।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में सोना, चान्दी, कपास, सूत, गुड़, घी, अनाज तेज़ रहें। १३ दिसं. के लगभग तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी में अच्छी घटाबढ़ी चलेगी। १४ दिसं. को तेल, तिलहन मन्दे होकर तेज़ हों। १६ दिसं. से पक्षान्त तक बाज़ार मन्दे की तरफ रहेंगे।

कुण्डली सूर्योदय (२४ दिसं.)

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २४ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ ७ ४६ ३२	७ २७ ४३ २९	४ २३ ५३ ५०	७ १६ २ ४०	० ६ २० ३२	९ ९ ५७ २०	६ ३ ४२ ४१	७ १९ २२ ९	१ १९ २२ ९
६१ ८	८५८ ५४	१८ १	६५ ४	० १८	७३ ५४	४ २४	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मूल ३	ज्येष्ठा ४	पू.फा. ४	अनु. ४	अश्वि. २	उ.षा. ४	चित्रा ४	ज्येष्ठा १	रोहि. ३

आकाश लक्षणः- दिसं. ११, १३, १४ से १७ तक उत्तरी भारत में भयंकर शीतलहर चलेगी। कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि एवं धुन्ध के वातावरण से यातायात बाधित हो। पर्वतीय क्षेत्रों में भारी हिमपात के योग हैं।

श्री वि. सं. २०६८, शाक १९३३, पौष शुक्ल पक्ष १६															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(२५ दिसम्बर, २०११ से ९ जनवरी, सन् २०१२ ई.) उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. पौष	अं. दिसम्बर	श. पौष	मु. मुहर्रम				सूर्योदय		सूर्यास्त						प्रातः बु. पूर्व-क्षितिजासन्न, श. पूर्वकपाल में और मं. याम्योत्तरवृत्त में होगा। सायं शु. पश्चिम में और गु. याम्योत्तर-वृत्तासन्न होगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	२	१	र.	३५	३०	मूल पू.षा.	० ५७	४९ ५१	वृ.	१८	२६	किं.	८	३	१०	२५	४	२९	धनु			७	२२	१७	२३	८	८	४७	३८	गुरु मार्गी ५०/४०,
२५	३	२	चं.	३१	३८	उ.षा.	५६	१३	ध्रु.	११	५२	बा.	३	३४	११	२६	५	३०	मकर	१२	१७	७	२२	१७	२३	८	९	४८	४७	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, जोड़मेला श्रीफतेहगढ़ साहिब (पं.),
२५	३	३	मं.	२९	१९	श्रव.	५६	११	व्या.	६	२८	तै.	०	२८	१२	२७	६	स.१	मकर			७	२३	१७	२४	८	१०	४९	५६	भ. ५९/०२ बाद, सफर मु. प्रा.,
२५	४	४	बु.	२८	४६	धनि.	५७	५६	ह. व.	२ ५९	२४ ४५	वि.	२८	४६	१३	२८	७	२	कुम्भ	२६	५०	७	२३	१७	२४	८	११	५१	६	भ. २८/४६ तक, पंचक प्रारम्भ २६/५०,
२५	५	५	गु.	३०	६	शत.	६०	०	सि.	५८	३२	बा.	३०	६	१४	२९	८	३	कुम्भ			७	२३	१७	२५	८	१२	५२	१५	सूर्य पू.षा. में २२/३०,
२५	६	६	शु.	३३	१५	शत.	१	२८	व्य.	५८	३८	कौ.	१	४०	१५	३०	९	४	मीन	५०	१६	७	२४	१७	२६	८	१३	५३	२५	
२५	६	७	श.	३८	०	पू.भा.	६	४१	व.	५९	४८	ग.	५	३७	१६	३१	१०	५	मीन			७	२४	१७	२६	८	१४	५४	३४	भ. ३८/० बाद, अवतारदिन श्रीगुरु [illegible]न्द सिंह जी,
२५	८	८	र.	४३	५५	उ.भा.	१३	१३	प.	६०	०	वि.	१०	५७	१७	ज.१	११	६	मीन			७	२४	१७	२७	८	१५	५५	४४	भ. १०/५७ तक, जनवरी (सन् २[illegible] ई.) प्रारम्भ,
२५	९	९	चं.	५०	२७	रेव.	२०	३७	प.	१	४३	बा.	१७	१०	१८	२	१२	७	मेष	२०	३७	७	२४	१७	२८	८	१६	५६	५३	पंचक समाप्त २०/३७, प्लूटो पू.षा. १ में १२/४०,
२५	१०	१०	मं.	५६	५९	अश्वि.	२८	१३	शि.	३	५८	तै.	२३	४३	१९	३	१३	८	मेष			७	२५	१७	२९	८	१७	५८	१	मंगल उ.फा. में २६/२१, बुध मूल धनु में ५९/३१,(A)
२५	११	११	बु.	६०	०	भर.	३५	३२	सि.	६	८	व.	२९	५८	२०	४	१४	९	वृष	५२	१६	७	२५	१७	२९	८	१८	५९	१०	भ. २९/५८ बाद,
२५	१३	११	गु.	२	५६	कृति.	४२	१	सा.	७	४९	वि.	२	५६	२१	५	१५	१०	वृष			७	२५	१७	३०	८	२०	०	१८	भ. २/५६ तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
२५	१५	१२	शु.	७	५०	रोहि.	४७	१९	शु.	८	४१	बा.	७	५०	२२	६	१६	११	वृष			७	२५	१७	३१	८	२१	१	२६	प्रदोष व्रत,
२५	१६	१३	श.	११	२२	मृग.	५१	१२	शु.	८	३२	तै.	११	२२	२३	७	१७	१२	मिथुन	१९	२६	७	२५	१७	३२	८	२२	२	३४	
२५	१८	१४	र.	१३	२३	आर्द्रा	५३	३९	ब्र.	७	१५	व.	१३	२३	२४	८	१८	१३	मिथुन			७	२५	१७	३२	८	२३	३	४२	भ. १३/२३ से ४३/४० तक, गुरु अश्वि. ३ में (B)
२५	२०	१५	चं.	१३	५६	पुन.	५४	४३	ऐं.	४	५०	ब.	१३	५६	२५	९	१९	१४	कर्क	३९	३४	७	२५	१७	३३	८	२४	४	४९	शुक्र कुम्भ में १५/३३, पौषी पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ,

(A) शुक्र धनि. में ४८/२५, (B) ४०/५८, श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ १५ ५५ ४५	११ १३ ५ १०	४ २६ ५ ७	७ २५ ४८ १५	० ६ २३ ५९	९ १९ ४७ ३७	६ ४ १५ ३६	७ १८ ५६ ४३	१ १८ ५६ ४३
६१ ९	७१४ ३१	१४ १४	८० ५०	१ २३	७३ ३७	३ ४४	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा. १	उ.भा. ३	पू.फा. ४	ज्येष्ठा ३	अश्वि. २	श्रव. ३	चित्रा ४	ज्येष्ठा १	रोहि. ३

कुण्डली सूर्योदय (१ जन.)

१० शु.
बु. ८ रा.
११
सू. ९
७ श.
चं. १२
६
गु.१
३
५ मं.
के. २
४

लोकभविष्य:- पक्षमध्य में सूर्य-बुध पर शनि की दृष्टि है। नेपाल, आसाम, काश्मीर एवं सीमाप्रान्तों पर शत्रुकृत गतिविधि से अशान्ति रहे। लेकिन पक्षारम्भ में गुरु मार्गी हो रहा है। केन्द्रीय शासनसत्ता का सक्रिय सहयोग भारत की गरिमा को उत्तरोत्तर प्रगतिमार्ग पर रखेगा। लेकिन धनुराशि का बुध एवं कुम्भ राशि का शुक्र सत्तारुढ़दलों में कहीं परस्पर वैमत्य का कारण बनेंगे।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में रुई में तेज़ी के बाद मन्दी हो। चावल, अलसी, सरसों, गुड़ तेज़ हों। २९ दिसं. से तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गुल, चान्दी, चावल, दालवाना, रुई एवं कपास तेज़ रहें । ४ जन; सन् २०१२ ई. के लगभग अनाज, सोना, चान्दी, रुई, कपास, सूत में जोरदार मन्दी संभव है। पक्षान्त से आगे रुई, चान्दी, गुड़, खाण्ड, मूंग, ज्वार, बाजरा, जौ, चना में अचानक मन्दा बने।

आकाश लक्षण:- दिसं. २६, २९; जन. ३, ४, ६, ९ के लगभग कहीं खण्डवृष्टि, कहीं शीतलहर से हानि हो। उ.भारत विशेषतः हि. प्र., उ.प्र. में भी शीत का भारी प्रकोप रहे। जम्मू-काश्मीर, हि.प्र. में भारी हिमपात से यातायात बाधित हो ।

कुण्डली सूर्योदय (९ जन.)

१० शु.
८ रा.
११
सू. ९ बु.
७ श.
१२
६
गु.१
चं. ३
५ मं.
के. २
४

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ९ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ २४ ४ ५१	२ २० २० ७	४ २७ ४४ १०	८ ७ १ २३	० ६ ४० ४१	९ २६ ३५ १०	६ ४ ४२ ५२	७ १८ ३१ १६	१ १८ ३१ १६
६१ ८	७८६ १३	९ ५१	८७ ३५	२ ५९	७३ १२	३ ०	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा. ४	पुन. १	उ.फा. १	मूल ३	अश्वि. ३	धनि. २	चित्रा ४	ज्येष्ठा १	रोहि. ३

श्री वि. सं. २०६८, शाक १९३३, माघ कृष्ण पक्ष २०

(१० से २३ जनवरी तक, सन् २०१२ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

१७ जनवरी को बु. पूर्व में अदृश्य हो जाएगा। प्रातः श. को याम्योत्तरवृत्त में तथा मं. को इससे कुछ पश्चिम में देखें। सायं शु. पश्चिम में तथा गु. याम्योत्तरवृत्त में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. पौष	अं. जनवरी	श. पौष	मु. सफर	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२५	२२	१	मं.	१३	६	पुष्य	५४	३५	वै. वि.	१ ५६	२० ५३	कौ.	१३	६	२६	१०	२०	१५	कर्क			७	२५	१७	३४	८	२५	५	५६	
२५	२४	२	बु.	११	६	आश्ले.	५३	२६	प्री.	५१	३८	ग.	११	६	२७	११	२१	१६	सिंह	५३	२६	७	२५	१७	३५	८	२६	७	४	भ. ३६/३६ बाद, सूर्य उ.षा. में २७/३१,
२५	२६	३	गु.	८	७	मघा	५१	३०	आ.	४५	४५	वि.	८	७	२८	१२	२२	१७	सिंह			७	२५	१७	३६	८	२७	८	११	भ. ८/०७ तक, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत (A)
२५	२९	४	शु.	४	२४	पू.फा.	४९	०	सौ.	३९	२३	बा.	४	२४	२९	१३	२३	१८	सिंह			७	२५	१७	३७	८	२८	९	१८	बुध पू.षा. में ११/४०, लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, (B)
२५	३१	५	श.	०	७	उ.फा.	४६	५	शो.	३२	३९	तै.	०	७	मा.१	१४	२४	१९	कन्या	३	१८	७	२५	१७	३७	८	२९	१०	२४	भ. ५५/२७ बाद, सं. सूर्य मकर में ४३/५३, (C)
अवम		६	श.	५५	२७	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी तिथिक्षय,
२५	३४	७	र.	५०	३३	हस्त	४२	५४	अ.	२५	४२	वि.	२३	०	२	१५	२५	२०	कन्या			७	२५	१७	३८	९	०	११	३१	भ. २३/०० तक, पोंगल (द.भा.),
२५	३६	८	चं.	४५	२९	चित्रा	३९	३३	सु.	१८	३५	बा.	१३	१	३	१६	२६	२१	तुला	११	१४	७	२५	१७	३९	९	१	१२	३८	
२५	३९	९	मं.	४०	२१	स्वाती	३६	८	धृ.	११	२३	तै.	१२	५५	४	१७	२७	२२	तुला			७	२५	१७	४०	९	२	१३	४४	बुध पूर्व में अस्त २/५८,
२५	४१	१०	बु.	३५	१४	विशा.	३२	४३	शू. गं.	४ ५६	९ ५७	व.	७	४७	५	१८	२८	२३	वृश्चि.	१८	३४	७	२४	१७	४१	९	३	१४	५०	भ. ७/४७ से ३५/१४ तक,
२५	४४	११	गु.	३०	१४	अनु.	२९	२५	वृ.	४९	५४	ब.	२	४४	६	१९	२९	२४	वृश्चि.			७	२४	१७	४२	९	४	१५	५६	षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
२५	४७	१२	शु.	२५	२७	ज्ये.	२६	२०	ध्रु.	४३	४	तै.	२५	२७	७	२०	३०	२५	धनु	२६	२०	७	२४	१७	४३	९	५	१७	१	सूर्य सायन कुम्भ में ३५/३६, प्रदोष व्रत,
२५	५०	१३	श.	२१	५	मूल	२३	३९	व्या.	३६	३६	व.	२१	५	८	२१	मा.१	२६	धनु			७	२४	१७	४४	९	६	१८	६	भ. २१/०५ से ४६/१२ तक, बुध उ.षा. में (D)
२५	५३	१४	र.	१७	२०	पू.षा.	२१	३५	ह.	३०	४१	श.	१७	२०	९	२२	२	२७	मकर	३६	१०	७	२३	१७	४५	९	७	१९	११	
२५	५६	३०	चं.	१४	२५	उ.षा.	२०	२२	व.	२५	२९	ना.	१४	२५	१०	२३	३	२८	मकर			७	२३	१७	४५	९	८	२०	१५	मंगल वक्री ५७/३३, बुध मकर में ५८/४६, (E)

(A) (चन्द्रोदय २० घं. ५७ मि.), (B) जम्मू काश्मीर), (C) मु. ४५, पुण्यकाल अगले दिन २३/४७ तक, शुक्र शत. में ४४/०३, मकर संक्रान्ति, (D) ५२/३५, श्रीमेरू त्रयोदशी(जैन), शाक माघ प्रारम्भ, (E) सोमवती अमा, मौनी अमावस,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १६ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	४	८	०	१०	६	७	१
१	२६	२८	१७	७	८	५	१८	१८
१२	१३	४०	२६	५	६	१	६	६
४०	३६	१३	४७	४१	२५	४७	१	१
६१	८४७	५	६१	४	७२	२	३	३
६	४२	२५	३४	२०	४८	१८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. २	चित्रा १	उ.फा. १	पू.षा. २	अश्वि. ३	शत. १	चित्रा ४	ज्येष्ठा १	रोहि. ३

कुण्डली सूर्योदय (१६ जन.)

शु. ११ | ९ बु. | १२ | सू. १० | ८ रा. | गु. १ | श. ७ | के.२ | ४ | ६ चं. | ३ | ५ मं.

लोकभविष्यः- इस मास में पांच मंगलवार हैं। शनिवारी मकरसंक्रान्ति, शनि-गुरु एवं मंगल-शुक्र का समसप्तकयोग कहीं भयंकर दुर्घटना, विस्फोट एवं प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानिकारक है । कहीं सत्तापरिवर्तन भी संभव है-

"यत्र मासे महीसूनोर्जायन्तेपंचवासराः ।
रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।।"

मकरस्थ सूर्य उपयोगी वस्तुओं में भारी तेज़ी करेगा ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्ष के प्रारम्भ में उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं, कपास, सरसों, गुड़, खाण्ड, चमड़ा तेज़ रहें। सोना-चान्दी में उतार-चढ़ाव आता रहे। १४ जन. के लगभग घी, तेल, अलसी, सरसों, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, रुई, चावल तेज रहें। १७ से २१ जन. तक बाज़ारों में मन्दी प्रधान रहे। **आकाश लक्षणः**- जन. ११, १२, १४, १७ एवं १८ को उ.भारत शीतग्रस्त रहेगा। कुछ स्थानों पर वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि एवं धुन्ध भी रहे । काश्मीर एवं हि.प्र. में भारी हिमपात के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (२३ जन.)

शु. ११ | ९ बु. | १२ | सू. १० चं. | ८ रा. | गु. १ | श. ७ | के.२ | ४ | ६ | ३ | ५ मं.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २३ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	४	८	०	१०	६	७	१
८	४	२६	२८	७	१६	५	१७	१७
२०	२०	३	१८	३६	३४	१५	४६	४६
१८	२३	२३	५८	५६	३६	४८	४५	४५
६१	८०८	०	६५	५	७२	१	३	३
३	१५	२४	२४	३७	१६	३६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. ४	उ.षा. ३	उ.फा. १	उ.षा. १	अश्वि. ३	शत. ३	चित्रा ४	ज्येष्ठा १	रोहि. ३

श्री वि. सं. २०६८, शाक १९३३ माघ शुक्ल पक्ष २१

(२४ जनवरी से ७ फरवरी तक, सन् २०१२ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

बु. अस्त है। प्रातः श. याम्योत्तरवृत्त में और इससे पश्चिम की ओर मं. होगा। सायं शु. पश्चिम-क्षितिजासन्न तथा गु. पश्चिमकपाल में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	माघ	जनवरी	माघ	सफर		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	०	१	मं.	१२	३८	श्रव.	२०	१६	सि.	२१	१२	ब.	१२	३८	११	२४	४	२९	कुम्भ	५०	४२	७	२३	१७	४६	९	९	२१	१९	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, पंचक प्रारम्भ ५०/४२, (A)
२६	३	२	बु.	१२	१२	धनि.	२१	३१	व्य.	१८	०	कौ.	१२	१२	१२	२५	५	र.१	कुम्भ			७	२२	१७	४७	९	१०	२२	२२	शुक्र पू.भा. में ४५/५५, रबि-उल-अव्वल मु. प्रा.॰
२६	६	३	गु.	१३	१९	शत.	२४	१७	व.	१६	०	ग.	१३	१९	१३	२६	६	२	कुम्भ			७	२२	१७	४८	९	११	२३	२४	भ. ४४/४१ बाद, भारत गणतन्त्रदिवस, गौरी तृतीया (B)
२६	१०	४	शु.	१६	५	पू.भा.	२८	३७	प.	१५	१५	वि.	१६	५	१४	२७	७	३	मीन	१२	२५	७	२१	१७	४९	९	१२	२४	२५	भ. १६/०५ तक,
२६	१३	५	श.	२०	२४	उ.भा.	३४	२५	शि.	१५	४२	बा.	२०	२४	१५	२८	८	४	मीन			७	२१	१७	५०	९	१३	२५	२५	श्री(वसन्त)पञ्चमी, लक्ष्मी-सरस्वती पूजन,
२६	१७	६	र.	२६	१	रेव.	४१	२३	सि.	१७	७	तै.	२६	१	१६	२९	९	५	मेष	४१	२३	७	२०	१७	५१	९	१४	२६	२४	पंचक समाप्त ४१/२३,
२६	२०	७	चं.	३२	२८	अश्वि.	४८	५९	सा.	१९	१४	व.	३२	२८	१७	३०	१०	६	मेष			७	२०	१७	५२	९	१५	२७	२१	भ. ३२/२८ बाद, बुध श्रवण में ७/४५, (C)
२६	२४	८	मं.	३९	९	भर.	५६	३९	शु.	२१	३६	वि.	५	४८	१८	३१	११	७	मेष			७	१९	१७	५३	९	१६	२८	१८	भ. ५/४८ तक, भीष्माष्टमी,
२६	२७	९	बु.	४५	२३	कृत्ति.	६०	०	शु.	२३	४७	बा.	१२	१६	१९	फ.१	१२	८	वृष	१३	३३	७	१९	१७	५४	९	१७	२९	१३	फरवरी प्रारम्भ,
२६	३१	१०	गु.	५०	३२	कृत्ति.	३	४६	ब्र.	२५	१८	तै.	१७	५७	२०	२	१३	९	वृष			७	१८	१७	५४	९	१८	३०	७	
२६	३५	११	शु.	५४	७	रोहि.	९	४१	ऐं.	२५	४७	व.	२२	१९	२१	३	१४	१०	मिथुन	४२	४	७	१७	१७	५५	९	१९	३०	५९	भ. २२/१६ से ५४/०७ तक, शुक्र मीन में ८/००,(D)
२६	३९	१२	श.	५५	५२	मृग.	१४	१	वै.	२४	५८	ब.	२४	५९	२२	४	१५	११	मिथुन			७	१७	१७	५६	९	२०	३१	५०	भीष्म द्वादशी,
२६	४३	१३	र.	५५	४४	आर्द्रा	१६	३४	वि.	२२	४२	कौ.	२५	४८	२३	५	१६	१२	मिथुन			७	१६	१७	५७	९	२१	३२	४०	शुक्र उ.भा. में ५६/४३, प्रदोष व्रत,
२६	४७	१४	चं.	५३	४९	पुन.	१७	१८	प्री.	१९	०	ग.	२४	४६	२४	६	१७	१३	कर्क	२	१७	७	१५	१७	५८	९	२२	३३	२९	भ. ५३/४६ बाद, सूर्य धनि. में ४१/३०, बुध (E)
२६	५१	१५	मं.	५०	२२	पुष्य	१६	२२	आ.	१३	५८	वि.	२२	५	२५	७	१८	१४	कर्क			७	१४	१७	५९	९	२३	३४	१६	भ. २२/०५ तक, शनि वक्री ३०/५०, (F)

(A) सूर्य श्रवण में ३३/१८, (B) (गौंत्तरी), तिल, वरद, कुन्द चतुर्थी, (C) रथ (आरोग्य) सप्तमी (पूर्वअरुणोदयवाली), मर्यादा महोत्सव (जैन), (D) जया एकादशी व्रत (स.), (E) धनि. में ५७/०१, (F) श्रीसत्यनारायण व्रत, माघीपूर्णिमा, श्रीरविदास जयन्ती, माघस्नान समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
३१ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	४	९	०	१०	६	७	१
१६	१४	२८	११	८	२६	५	१७	१७
२८	३६	४५	१९	२९	१०	२५	२१	२१
१९	७	८	१५	४१	४४	३५	१९	१९
६०	७०९	५	१००	६	७१	०	३	३
५६	३४	४७	२८	५८	३६	४५	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रव. २	भर. १	उ.फा. १	श्रव. १	अश्वि. ३	पू.भा. २	चित्रा ४	ज्येष्ठा १	रोहि. ३

कुण्डली सूर्योदय (३१ जन.)

- शु. ११
- ९
- १२
- सू. १० बु.
- ८ रा.
- चं. गु. १
- श. ७
- के.२
- ४
- ६
- ३
- ५ मं.

लोकभविष्य:- इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार होने से किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होने का योग है-" मंगले म्रियते राजा"। माघ शुक्ल सप्तमी को चन्द्रवार होने से कहीं दुर्भिक्ष व कहीं युद्धाग्नि प्रज्वलित हो, कहीं शासकों में परस्पर वैमत्य से स्थिति विषम बने-"सप्तम्यां सोमवारः स्यान्माघे पक्षे सिते यदि । दुर्भिक्षं जायते रौद्रं विग्रहोऽपि च भूभुजाम्।।" केन्द्रीय शासन-सत्ता में किसी विशेष चर्चा को लेकर प्रमुख लोगों को विषम परिस्थिति का सामना करना पड़े।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- २४ जन. को गेहूं, जौ, चावल, रुई, सूत, सण, सोने, चान्दी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी, लौंग, लालमिर्च में ज़ोरदार तेज़ी से लाभ मिले । ३० जन. से गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल तेज़ रहें । ३, ४ फर. को रुई में तेज़ी के बाद मन्दा बने । ६ फर. को बाज़ार मन्दे रहें । ७ फर. को तिल, तेल, सरसों, मूंगफली, घी, गुड़, खाण्ड, नमक में अच्छी तेज़ी से लाभ मिलेगा। आकाश लक्षण:- जन. २४, २५, ३०; फर. ३, ५, ६, ७ को लंका के पूर्वी छोर और शिलांग में बादलचाल, बून्दा-बांदी हो। उ.भारत में हवा का ज़ोर रहेगा एवं मौसम-परिवर्तन के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (७ फर.)

- ११
- ९
- १२ शु.
- सू. १० बु.
- ८ रा.
- गु. १
- श. ७
- के.२
- चं. ४
- ६
- ३
- ५ मं.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
७ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	४	९	०	११	६	७	१
२३	११	२७	२३	९	४	५	१६	१६
३४	५६	४८	१७	२१	२९	२८	५९	५९
१८	४९	१०	३०	४३	३७	३६	४	४
६०	८२६	११	१०५	८	७०	०	३	३
४६	१६	१६	३२	२	४९	१	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
धनि. १	पुष्य ३	उ.फा. १	श्रव. ४	अश्वि. ३	उ.भा. १	चित्रा ४	ज्येष्ठा १	रोहि. ३

श्री वि. सं. २०६८, शाक १९३३, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २२

(८ से २१ फरवरी तक, सन् २०१२ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर–वसन्त ऋतु।

बु. अस्त है। प्रातः श. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में और मं. इससे नीचे होगा। सायं शु. पश्चिम में एवम् गु. पश्चिमकपाल-मध्य दिखाई देगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	माघ	फरवरी	माघ	र.उ.ऊ.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	५५	१	बु.	४५	४३	आश्ले.	१४	४	सौ.	७	४९	बा.	१८	०२	२६	८	१९	१५	सिंह	१४	४	७	१४	१८	०	९	२४	३५	२	
२६	५९	२	गु.	४०	१२	मघा	१०	४२	शो. अ.	० ५३	४८ ८	तै.	१२	५७	२७	९	२०	१६	सिंह			७	१३	१८	०	९	२५	३५	४७	
२७	३	३	शु.	३४	११	पू.फा.	६	४०	सु.	४५	१०	व.	७	१२	२८	१०	२१	१७	कन्या	२०	३४	७	१२	१८	१	९	२६	३६	३१	भ. ७/१२ से ३४/११ तक, बुध कुम्भ में ४२/२५,
२७	७	४	श.	२८	०	उ.फा. हस्त	२ ५७	१९ ५५	धृ.	३७	७	ब.	१	०५	२९	११	२२	१८	कन्या			७	११	१८	२	९	२७	३७	१४	गुरु अश्वि. ४ में ३२/४३, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२७	११	५	र.	२१	५६	चित्रा	५३	४७	शू.	२९	१२	तै.	२१	५६	३०	१२	२३	१९	तुला	२५	४९	७	११	१८	३	९	२८	३७	५५	वक्री मंगल पू.फा. में १२/५२, राहु अनु. ४, केतु (A)
२७	१५	६	चं.	१६	१२	स्वाती	५०	५	गं.	२१	३४	व.	१६	१२	फा.१	१३	२४	२०	तुला			७	१०	१८	४	९	२९	३८	३६	भ. १६/१२ से ४३/३५ तक, सं. सूर्य कुम्भ में (B)
२७	२०	७	मं.	१०	५८	विशा.	४६	५५	वृ.	१४	२०	ब.	१०	५८	२	१४	२५	२१	वृश्चि.	३२	४०	७	९	१८	५	१०	०	३९	१५	बुध शत. में २२/४७,
२७	२४	८	बु.	६	१७	अनु.	४४	२१	ध्रु.	७	३५	कौ.	६	१७	३	१५	२६	२२	वृश्चिक			७	८	१८	६	१०	१	३९	५३	
२७	२८	९	गु.	२	१४	ज्ये.	४२	२५	व्या. ह.	१ ५५	१८ ३०	ग.	२	१४	४	१६	२७	२३	धनु	४२	२५	७	७	१८	६	१०	२	४०	३०	भ. ३०/३० से ५८/४६ तक,
अवम		१०	गु.	५८	४६	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दशमी तिथिक्षय,
२७	३३	११	शु.	५५	५८	मूल	४१	५	व.	५०	१५	ब.	२७	२२	५	१७	२८	२४	धनु			७	६	१८	७	१०	३	४१	६	शुक्र रेवती में २०/१५, विजया एकादशी व्रत (स्मा.),
२७	३७	१२	श.	५३	५२	पू.षा.	४०	२५	सि.	४५	३१	कौ.	२४	५५	६	१८	२९	२५	मकर	५५	२१	७	५	१८	८	१०	४	४१	४०	विजया एकादशी व्रत (वै.),
२७	४१	१३	र.	५२	३०	उ.षा.	४०	२८	व्य.	४१	२३	ग.	२३	११	७	१९	३०	२६	मकर			७	४	१८	९	१०	५	४२	१४	भ. ५२/३० बाद, सूर्य शत. में ५३/२०, सूर्य (C)
२७	४६	१४	चं.	५२	२	श्रव.	४१	२१	व.	३७	५५	वि.	२२	१६	८	२०	फा.१	२७	मकर			७	३	१८	१०	१०	६	४२	४६	भ. २२/१६ तक, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, शक फाल्गुन प्रा.,
२७	५०	३०	मं.	५२	३५	धनि.	४३	१२	प.	३५	१३	च.	२२	१८	९	२१	२	२८	कुम्भ	१२	१०	७	२	१८	१०	१०	७	४३	१६	पंचक प्रारम्भ १२/१०, बुध पू.भा. में ३७/५२, (D)

(A) रोहि. २ में ५५/३०, (B) १७/०१, मु. १५, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (C) सायन मीन में ११/५१, वसन्तऋतु प्रारम्भ, प्रदोष व्रत, (D) भौमवती अमा,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१५ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	४	१०	०	११	६	७	१
१	५	२५	७	१०	१३	५	१६	१६
३९	२५	५६	४०	२९	५२	२५	३३	३३
५५	२४	५९	३९	५७	३२	४२	३८	३८
६०	८३४	९७	११०	९	६९	०	३	३
३७	४०	७	२३	९	४६	५०	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
धनि. ३	अनु. १	पू.फा. ४	शत. १	अश्वि. ४	उ.षा. ४	चित्रा ४	अनु. ४	रोहि. २

कुण्डली सूर्योदय (१५ फर.)

शु. १२ | १०
गु. १ | सू. ११ बु. | ९
के. २ | चं. ८ रा.
३ | ५ मं. | ७ श.
४ | ६

लोकभविष्यः- इस मास में पांच बुधवार एवं पांच गुरुवार हैं। शनि-मंगल दोनों वक्री हैं। पश्चिमी देशों में कहीं भयंकर जनधनहानि के योग बनते हैं-

"विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते।"

भारत में सुभिक्ष एवं प्रजा में सुखसमृद्धि रहे। सौर माघ एवं फाल्गुन मासों में किसी विशिष्ट व्यक्ति की हत्या किंवा निधन से शोक हो एवं कहीं विस्फोट किंवा उग्रवादजन्य जनधनहानि से वातावरण अशांत हो सकता है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- ८ फरवरी को सिक्का, तेल, तिलहन, सीमेण्ट में तेज़ी बनेगी। १० फर. के लगभग गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन में तेज़ी बनेगी। १४ से १८ फरवरी तक बाज़ार मन्दे रहें। १६/२० फर. को सोना, चान्दी, सूत, सण, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, दाख, छुहारा आदि में तेज़ी बनेगी। मासान्त में बाजार मन्दे रहें। आकाश लक्षणः- फर. ८, ९, १०, ११, १२, १४, १७, १६ एवं २१ फर. को शिलांग, लंका के पूर्वी छोर एवं अन्य कुछ प्रान्तों में बादलचाल रहे। उत्तरी भारत में आकाश निर्मल एवं मौसम खुशगवार रहे।

कुण्डली सूर्योदय (२१ फर.)

शु. १२ | चं. १०
गु. १ | सू. ११ बु. | ९
के. २ | रा. ८
३ | ५ मं. | ७ श.
४ | ६

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२१ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	९	४	१०	०	११	६	७	१
७	२६	२४	१८	११	२०	५	१६	१६
४३	३२	४	४३	२६	४८	१९	१४	१४
१८	१५	५०	५९	४५	५४	९	३३	३३
६०	७७३	२०	१०९	९	६८	१	३	३
२९	३३	४१	२३	५४	५१	२६	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. १	धनि. १	पू.फा. ४	शत. ४	अश्वि. ४	रेव. २	चित्रा ४	अनु. ४	रोहि. २

(२२ फरवरी से ८ मार्च तक, सन् २०१२ ई.)

श्री वि. सं. २०६८, शाक १९३३ फाल्गुन शुक्ल पक्ष २३

(२२ फरवरी से ८ मार्च तक, सन् २०१२ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु।

२३ फरवरी से बु. सायं पश्चिम में दृश्य हो जाएगा। इस समय शु., गु. पश्चिमकपाल में क्रमशः नीचे-ऊपर कुछ अन्तर से दिखाई देंगे। प्रातः श. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में और मं. पश्चिमकपाल में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. फाल्गुन	अं. फरवरी	श. फाल्गुन	मु. रबी.ल.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२७	५५	१	बु.	५४	१९	शत.	४६	११	शि.	३३	२४	किं.	२३	२६	१०	२२	३	२९	कुम्भ			७	१	१८	११	१०	८	४३	४५	नेप्च्यून शत. १ में १५/१६,
२७	५९	२	गु.	५७	२०	पू.भा.	५०	२३	सि.	३२	३३	बा.	२५	४९	११	२३	४	३०	मीन	३४	१४	७	०	१८	१२	१०	९	४४	१३	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, बुध पश्चिम में उदित ३६/१९, (A)
२८	४	३	शु.	६०	०	उ.भा.	५५	५१	सा.	३२	४२	तै.	२९	३१	१२	२४	५	र.१	मीन			६	५९	१८	१३	१०	१०	४४	३९	रवि-उस्सानी मु. प्रा.,
२८	८	३	श.	१	४३	रेव.	६०	०	शु.	३३	४८	ग.	१	४३	१३	२५	६	२	मीन			६	५८	१८	१३	१०	११	४५	३	भ. ३४/२७ बाद,
२८	१३	४	र.	७	१३	रेव.	२	३०	शु.	३५	४२	वि.	७	१३	१४	२६	७	३	मेष	२	३०	६	५७	१८	१४	१०	१२	४५	२५	भ. ७/१३ तक, पंचक समाप्त २/३०,
२८	१७	५	चं.	१३	३६	अश्वि.	९	५७	ब्र.	३८	७	बा.	१३	३६	१५	२७	८	४	मेष			६	५६	१८	१५	१०	१३	४५	४६	बुध मीन में २३/०४,
२८	२२	६	मं.	२०	२३	भर.	१७	४९	ऐं.	४०	४०	तै.	२०	२३	१६	२८	९	५	वृष	३४	४८	६	५५	१८	१६	१०	१४	४६	४	
२८	२७	७	बु.	२६	५६	कृत्ति.	२५	३१	वै.	४२	५४	व.	२६	५६	१७	२९	१०	६	वृष			६	५४	१८	१६	१०	१५	४६	२०	भ. २६/५६ से ५९/४६ तक, बुध उ.भा. में (B)
२८	३१	८	गु.	३२	३६	रोहि.	३२	२२	वि.	४४	२३	ब.	३२	३६	१८	मा.१	११	७	वृष			६	५३	१८	१७	१०	१६	४६	३५	होलाष्टक प्रारम्भ, मार्च प्रारम्भ,
२८	३६	९	शु.	३६	४७	मृग.	३७	५०	प्री.	४४	४०	बा.	४	४२	१९	२	१२	८	मिथुन	५	२०	६	५२	१८	१८	१०	१७	४६	४७	गुरु भर. १ में ४६/३७,
२८	४०	१०	श.	३९	३	आर्द्रा	४१	२६	आ.	४३	२९	तै.	७	५५	२०	३	१३	९	मिथुन			६	५०	१८	१९	१०	१८	४६	५७	
२८	४५	११	र.	३९	१२	पुन.	४३	०	सौ.	४०	३९	व.	९	७	२१	४	१४	१०	कर्क	२७	५०	६	४९	१८	१९	१०	१९	४७	५	भ. ९/०७ से ३९/१२ तक, सूर्य पू.भा. में ९/३६, (C)
२८	५०	१२	चं.	३७	१३	पुष्य	४२	३१	शो.	३६	१०	ब.	८	१२	२२	५	१५	११	कर्क			६	४८	१८	२०	१०	२०	४७	११	गोविन्द द्वादशी,
२८	५४	१३	मं.	३३	१९	आश्ले.	४०	९	अ.	३०	९	कौ.	५	१५	२३	६	१६	१२	सिंह	४०	९	६	४७	१८	२१	१०	२१	४७	१५	भौम प्रदोष व्रत,
२८	५९	१४	बु.	२७	४७	मघा	२६	१४	सु.	२२	४९	व.	२७	४७	२४	७	१७	१३	सिंह			६	४६	१८	२१	१०	२२	४७	१८	भ. २७/४७ से ५४/२४ तक, होलिका दहन (D)
२९	४	१५	गु.	२१	१	पू.फा.	३१	९	धृ.	१४	२७	ब.	२१	१	२५	८	१८	१४	कन्या	४४	४३	६	४५	१८	२२	१०	२३	४७	१८	होलाष्टक समाप्त, जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु,

होलाष्टक १ से ८ मार्च

(A) जन्मदिन श्री रामकृष्ण परमहंस, (B) ३२/१९, शुक्र अश्वि. मेष में १/१०, (C) आमला एकादशी व्रत (स.), (D) (दिखें पृ. 90), श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	४	११	०	०	६	७	१
१६	१६	२०	३	१२	१	५	१५	१५
४६	९	४४	५५	५९	२	२	४५	४५
३६	२६	४०	४३	५७	६	३६	५६	५६
६०	७२४	२३	८३	१०	६७	२	३	३
१२	१	३४	४३	५३	९	१९	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. ४	रोहि. २	पू.फा. ३	उ.भा. १	अश्वि. ४	कृत्ति. १	चित्रा ४	अनु. ४	रोहि. २

कुण्डली सूर्योदय (१ मार्च)

बु. १२ | १० | गु. १ शु. | सू. ११ | ९ | के. २ चं. | रा. ८ | ३ | ५ मं. | ७ श. | ४ | ६

लोकभविष्यः- इस पक्ष में बुध का उदय, गुरु-शुक्र का मेष में एकत्र होना, श. मं. का वक्रत्व देश में कहीं प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि का संकेत देता है- "नोत्पात- परित्यक्तः चन्द्रजो व्रजत्युदयम् ।" कहीं यानदुर्घटना किंवा उग्रवादजन्य गतिविधि से यूरोप के देश-विशेष में भारी हानि के योग भी बनते हैं। कहीं अधिक वर्षा एवं कहीं दुर्भिक्ष से खाद्य वस्तुओं में भारी महंगाई से जनसाधारण शासन के समक्ष आवाज़ उठाएगा।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्ष के आरम्भ में सोना-चान्दी में घटाबढ़ी, बिनौला तेज़ । २८ फर. को तेल, तिलहन, दालवाना, अनाजों में ज़ोरदार मन्दा आएगा। जौ, चना, घी, गेहूं में तेज़ी रहे। इस समय सोने-चान्दी में ज़ोरदार तेज़ी बनेगी। ४ मार्च के लगभग सभी अनाज, रेशम, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड में तेज़ी बने। आकाश लक्षणः- फर. २३, २४, २७, २८, २९ एवं मार्च २, ४ को मध्यप्रदेश, आसाम, बंगाल आदि में कहीं बूंदाबांदी व बादलचाल रहे। उ.भारत में हवा का ज़ोर रहे। तापमान में वृद्धि हो।

कुण्डली सूर्योदय (८ मार्च)

बु. १२ | १० | गु. १ शु. | सू. ११ | ९ | के. २ | रा. ८ | ३ | ५ चं. मं. | ७ श. | ४ | ६

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
८ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	४	११	०	०	६	७	१
२३	१८	१७	११	१४	८	४	१५	१५
४७	१८	५९	२५	१८	४७	४४	२३	२३
१९	५४	५	१	१५	१९	३३	४१	४१
५९	८८०	२३	३३	११	६५	२	३	३
५८	२५	२२	३८	३४	२९	५५	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. २	पू.फा. २	पू.फा. २	उ.भा. ३	भर. १	अश्वि. ३	चित्रा ४	अनु. ४	रोहि. २

श्री वि. सं. २०६८, शाक १९३३ चैत्र कृष्ण पक्ष २४

(६ से २२ मार्च तक, सन् २०१२ ई.)
उत्तरायण, दक्षिण–उत्तर गोल, वसन्त ऋतु।

१३ मार्च से बु. पश्चिम में दिखाई देना बन्द हो जाएगा। सायंकाल पश्चिम में गु., शु. काफी नज़दीक दिखाई देंगे। प्रातः श. पश्चिमकपाल में और मं. पश्चिमक्षितिज में डूबने को होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	फाल्गुन	माघ	फाल्गुन	र.उ.आ.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२९	८	१	शु.	१३	२८	उ.फा.	२५	२१	शू. ग.	५ ५५	२३ ५६	कौ.	१३	२८	२६	९	१९	१५	कन्या			६	४३	१८	२३	१०	२४	४७	१६	होला मेला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), वसन्तोत्सव,
२९	१३	२	श.	५	३२	हस्त	१९	१८	वृ.	४६	२९	ग.	५	३२	२७	१०	२०	१६	तुला	४६	१५	६	४२	१८	२३	१०	२५	४७	१३	भ. ३१/३४ से ५७/३६ तक.
अवम		३	श.	५७	३६	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथिक्षय,
२९	१८	४	र.	५०	६	चित्रा	१३	२२	ध्रु.	३७	१९	ब.	२३	५१	२८	११	२१	१७	तुला			६	४१	१८	२४	१०	२६	४७	८	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२९	२२	५	चं.	४३	१९	स्वाती	७	५७	व्या.	२८	४१	कौ.	१६	४२	२९	१२	२२	१८	वृश्चिक	४९	२०	६	४०	१८	२५	१०	२७	४७	१	बुध वक्री १६/३८, शुक्र भर. में ८/३६,
२९	२७	६	मं.	३७	२८	विशा. अनु.	३ ५९	१९ ३७	ह.	२०	४६	ग.	१०	२३	३०	१३	(२३)	१९	वृश्चिक			६	३९	१८	२५	१०	२८	४६	५२	भ. ३७/२८ बाद, बुध पश्चिम में अस्त १२/४५,
२९	३२	७	बु.	३२	४२	ज्ये.	५७	६	व.	१३	४२	वि.	५	५	चै.१	१४	२४	२०	धनु	५७	६	६	३७	१८	२६	१०	२९	४६	४१	भ. ५/०५ तक, सं. सूर्य मीन में १०/३३, मु.१५,(A)
२९	३६	८	गु.	२९	५	मूल	५५	४३	सि.	७	३३	बा.	०	५३	२	१५	२५	२१	धनु			६	३६	१८	२७	११	०	४६	२९	श्री शीतलाष्टमी, मेला श्रीशीतला माता (कुराली-पं.),
२९	४१	९	शु.	२६	३८	पू.षा.	५५	२८	व्य. व.	२ ५७	२० ५९	ग.	२६	३८	३	१६	२६	२२	धनु			६	३५	१८	२७	११	१	४६	१५	भ. ५५/५८ बाद, यूरेनस उ.भा. ३ में १८/१८,
२९	४६	१०	श.	२५	१९	उ.षा.	५६	१८	प.	५४	३२	वि.	२५	१९	४	१७	२७	२३	मकर	१०	३७	६	३४	१८	२८	११	२	४५	५९	भ. २५/१६ तक, सूर्य उ.भा. में ३१/३०,
२९	५१	११	र.	२५	३	श्रव.	५८	८	शि.	५१	५५	बा.	२५	३	५	१८	२८	२४	मकर			६	३२	१८	२९	११	३	४५	४२	पापमोचनी एकादशी व्रत (स.),
२९	५५	१२	चं.	२५	४९	धनि.	६०	०	सि.	५०	५	तै.	२५	४९	६	१९	२९	२५	कुम्भ	२९	२७	६	३१	१८	२९	११	४	४५	२३	पंचक प्रारम्भ २६/२७, गुरु भर. २ में ४५/४५,(B)
३०	०	१३	मं.	२७	३५	धनि.	०	५८	सा.	४९	२	व.	२७	३५	७	२०	३०	२६	कुम्भ			६	३०	१८	३०	११	५	४५	३	भ. २७/३५ से ५८/५८ तक, वारुणी पर्व (C)
३०	५	१४	बु.	३०	२१	शत.	४	४८	शु.	४८	४५	श.	३०	२१	८	२१	चै.१	२७	मीन	५३	१५	६	२९	१८	३१	११	६	४४	४०	वक्री मंगल मघा में ४/२५, मेला पिहोवातीर्थ (हरि.),(D)
३०	९	३०	गु.	३४	८	पू.भा.	९	३४	शु.	४९	१४	च.	२	१४	९	२२	२	२८	मीन			६	२८	१८	३१	११	७	४४	१६	चान्द्र संवत्सर (२०६८ वि.) पूर्ण,

(A) पुण्यकाल मध्याह्न तक, (B) सोमप्रदोष व्रत, (C) (६ घं. ५४ मि. से १७ घं. ३२ मि. तक), सूर्य सायन मेष में १०/३७, उत्तरगोल प्रारम्भ, महाविषुव दिन, (D) शक चैत्र (सं. १९३४) प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.)
१५ मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११ ० ४६ ३०	८ ० १ १४	४ १५ २१ ८	११ १२ १७ १३	० १५ ४० ५८	० १६ १९ ५७	६ ४ २२ २८	७ १५ १ २६	१ १५ १ २६
५९ ४६	८१९ १७	२१ ८	२५ ५०	१२ ८	६३ ३१	३ २७	३ ११	३ ११
		व.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. ४	मूल १	पू.फा. १	उ.भा. ३	भर. १	भर. १	चित्रा ४	अनु. ४	रोहि. २

कुण्डली सूर्योदय (१५ मार्च)

गु.१ शु. | ११ | के. २ | सू. १२ बु. | १० | ३ | ९ चं. | ४ | ६ | रा.८ | ५ मं. | ७ श.

लोकभविष्यः- गुरु-शुक्र का वक्र शनि के साथ समसप्तक, सूर्य-बुध का वक्र मंगल के साथ षडष्टकयोग भारतीय राजनीति में विशेष गतिरोध पैदा करेगा। राजनैतिक दलों को सत्ता के लोभ में देशहित को एक तरफ रख देना ठीक नहीं। सौरमास फाल्गुन एवं चैत्र प्रधान-शासकों के लिए अग्निपरीक्षा के रहेंगे। प्रधाननेताओं एवं प्रतिष्ठित लोगों को शत्रुकृत गतिविधि से सुरक्षित एवं सतर्क रहना चाहिए। कहीं यानदुर्घटना एवं प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी हो।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- १२ मार्च के लगभग सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, तिल, तेल, अलसी में तेज़ी के बाद मन्दा रहे। १४ मार्च को सभी व्यापारिक चीज़ों में तेज़ी का झटका आकर मन्दी बने। १७/१८ मार्च को चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं तेज। १९ मार्च को सोना, चान्दी, तेल, तिलहन, दालचाना में मन्दा आकर २१ मार्च को तेजी बने। आकाश लक्षणः- मार्च १२, १३, १४, १७, १९, २१ को भूटान, सिक्किम, बंगलादेश, पूर्वी आसाम, पूर्वी बिहार में बादल-वर्षा के योग हैं। उत्तरी भारत में तापमान में वृद्धि होगी।

कुण्डली सूर्योदय (२२ मार्च)

गु.१ शु. | ११ | के. २ | सू. १२ बु. चं. | १० | ३ | ९ | ४ | ६ | रा.८ | ५ मं. | ७ श.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.)
२२ मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११ ७ ४४ १७	११ ० ५२ ५३	४ १३ ४ १५	११ ७ २२ १४	० १७ ७ ३२	० २३ ३७ ३९	६ ३ ५६ ५३	७ १४ ३९ ११	१ १४ ३९ ११
५९ ३३	७३३ १३	१७ १०	५४ -७	१२ ३९	६१ ८	३ ५४	३ ११	३ ११
		व.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. २	पू.षा. ४	मघा ४	उ.भा. २	भर. २	भर. ४	चित्रा ४	अनु. ४	रोहि. २

जनवरी, सन् 2011 ई.

श्री वि. सं. 2067 | तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) | जनवरी, सन् 2011 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ सूर्योदय		चण्डीगढ़ सूर्यास्त		दिल्ली सूर्योदय		दिल्ली सूर्यास्त		जयपुर सूर्योदय		जयपुर सूर्यास्त		वाराणसी सूर्योदय		वाराणसी सूर्यास्त		तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
पौष कृष्ण	1	12	श.	15	4	अनु.	25	57	शू.	19	44	वृश्चि.			7	24	17	27	7	18	17	31	7	20	17	40	6	47	17	15	1	शुक्र वृश्चिक में 16/44, शनिप्रदोष व्रत, इंग्लिश (A)
	2	13	र.	14	28	ज्ये.	26	9	गं.	18	6	धनु	26	9	7	24	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	भ. 14/28 से 26/22 तक, [सूर्यग्रहण–4 जनवरी]
	3	14	चं.	14	16	मूल	26	46	वृ.	16	47	धनु			7	25	17	29	7	18	17	32	7	20	17	42	6	48	17	16	3	मंगल उ.षा. में 29/03, ग्रहणवेध.
	4	30	मं.	14	32	पू.षा.	27	50	ध्रु.	15	50	धनु			7	25	17	30	7	19	17	33	7	20	17	42	6	48	17	17	4	शुक्र अनु. में 26/29, भौमवती अमा, खण्डग्रास सूर्यग्रहण (B)
पौष शुक्ल	5	1	बु.	15	17	उ.षा.	29	22	व्या.	15	14	मकर	10	10	7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	48	17	18	5	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45, ग्रहणवेध.
	6	2	गु.	16	32	श्रव.	31	22	ह.	15	1	मकर			7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	44	6	49	17	18	6	गुरु उ.भा. 1 में 21/16, ग्रहणवेध.
	7	3	शु.	18	15	धनि.	—	—	व.	15	10	कुम्भ	20	32	7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	45	6	49	17	19	7	भ. 31/19 बाद, पंचक प्रारम्भ 20/32, बुध मूल धनु में (C)
	8	4	श.	20	23	धनि.	9	46	सि.	15	38	कुम्भ			7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	भ. 20/23 तक, मंगल मकर में 12/02,
	9	5	र.	22	49	शत.	12	34	व्य.	16	20	कुम्भ			7	25	17	33	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	
	10	6	चं.	25	23	पू.भा.	15	31	व.	17	10	मीन	8	47	7	25	17	34	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	21	10	
	11	7	मं.	27	52	उ.भा.	18	29	प.	17	59	मीन			7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	48	6	49	17	22	11	भ. 27/52 बाद, सूर्य उ.षा. में 12/12,
	12	8	बु.	30	4	रेव.	21	14	शि.	18	39	मेष	21	14	7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	23	12	भ. 16/58 तक, पंचक समाप्त 21/14,
	13	9	गु.	—	—	अश्वि.	23	34	सि.	19	0	मेष			7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	24	13	लोहड़ी (पं.),
	14	9	शु.	7	44	भर.	25	18	सा.	18	55	मेष			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	सं. सूर्य मकर में 18/44, मु. 15, पुण्यकाल अगले दिन (D)
	15	10	श.	8	45	कृत्ति.	26	20	शु.	18	17	वृष	7	38	7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	भ. 20/53 बाद, यूरेनस उ.भा. 1 में 11/20, पोंगल (E)
	16	11	र.	9	1	रोहि.	26	37	शु.	17	4	वृष			7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	26	16	भ. 9/01 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.).
	17	12/13	चं.	8 / 31	29 / 13	मृग.	26	10	ब्र.	15	14	मिथुन	14	29	7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	27	17	शुक्र ज्ये. में 24/01, सोमप्रदोष व्रत, त्रयोदशी तिथिक्षय.
	18	14	मं.	29	18	आर्द्रा	25	3	ऐं.	12	51	मिथुन			7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	भ. 29/18 बाद,
	19	15	बु.	26	51	पुन.	23	23	वै./वि.	9/30	57/39	कर्क	17	50	7	24	17	42	7	19	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	भ. 16/04 तक, बुध पू.षा. में 13/02, पौषी पूर्णिमा, (F)
माघ कृष्ण	20	1	गु.	24	1	पुष्य	21	18	प्री.	27	4	कर्क			7	24	17	43	7	18	17	46	7	21	17	55	6	49	17	29	20	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, मंगल श्रव. में 31/19, नेप्च्यून (G)
	21	2	शु.	20	57	आश्ले.	18	59	आ.	23	19	सिंह	18	59	7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	55	6	49	17	30	21	
	22	3	श.	17	49	मघा	16	34	सौ.	19	31	सिंह			7	23	17	45	7	18	17	47	7	20	17	56	6	48	17	30	22	भ. 7/23 से 17/49 तक, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी (H)
	23	4	र.	14	45	पू.फा.	14	14	शो.	15	48	कन्या	19	40	7	23	17	46	7	17	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	23	
	24	5	चं.	11	55	उ.फा.	12	6	अ.	12	16	कन्या			7	22	17	47	7	17	17	49	7	20	17	58	6	48	17	32	24	सूर्य श्रव. में 14/35.
	25	6/7	मं.	9 / 31	24 / 19	हस्त	10	18	सु./धृ.	8/30	59/4	तुला	21	33	7	22	17	47	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	भ. 9/24 से 20/22 तक, सप्तमी तिथिक्षय.
	26	8	बु.	29	43	चित्रा	8	56	शू.	27	31	तुला			7	22	17	48	7	16	17	51	7	19	17	59	6	47	17	33	26	गुरु उ.भा. 2 में 15/44, शनि वक्री 11/40, भारत (I)
	27	9	गु.	28	38	स्वा.	8	2	गं.	25	24	वृश्चि.	25	42	7	21	17	49	7	16	17	52	7	19	18	0	6	47	17	34	27	
	28	10	शु.	28	4	विशा.	7	39	वृ.	23	40	वृश्चि.			7	21	17	50	7	16	17	53	7	18	18	1	6	47	17	35	28	भ. 16/21 से 28/04 तक, बुध उ.षा. में 24/14.
	29	11	श.	28	1	अनु.	7	47	ध्रु.	22	20	वृश्चि.			7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	2	6	46	17	36	29	शुक्र मूल धनु में 28/00, षट्तिला एकादशी व्रत (स.).
	30	12	र.	28	24	ज्ये.	8	23	व्या.	21	22	धनु	8	23	7	20	17	52	7	15	17	54	7	17	18	3	6	46	17	36	30	बुध मकर में 29/54.
	31	13	चं.	29	14	मूल	9	25	ह.	20	44	धनु			7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	3	6	46	17	37	31	भ. 29/14 बाद, राहु मूल 2, केतु मृग. 4 में 19/17. (J)

(A) नववर्ष (सन् 2011 ई.) प्रारम्भ, (B) (भारत में दृश्य), (C) 24/22, ग्रहणवेध, (D) 10/42 तक, मकर संक्रान्ति, (E) (द. भा.), (F) माघस्नान प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत, (G) धनि. 4 में 15/06, सूर्य सायन कुम्भ में 15/48, (H) व्रत (चन्द्रोदय 20 घं. 47 मि.), (I) गणतन्त्र दिवस, (J) सोमप्रदोष व्रत, श्रीमेरु त्रयोदशी (जैन).

श्री वि. सं. 2067 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) फरवरी, सन् 2011 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
माघ कृष्ण	1	14	मं.	30	26	पू.षा.	10	51	व.	20	25	मकर	17	16	7	18	17	54	7	14	17	56	7	16	18	4	6	45	17	38	1	भ. 17/50 तक,
	2	30	बु.	–	–	उ.षा.	12	40	सि.	20	22	मकर			7	18	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	45	17	39	2	मौनी अमावस,
	3	30	गु.	8	0	श्रव.	14	48	व्य.	20	34	कुम्भ	28	0	7	17	17	55	7	12	17	57	7	15	18	6	6	44	17	39	3	पंचक प्रारम्भ 28/00, महोदय योग (8घं. 00मि. तक).
माघ शुक्ल	4	1	शु.	9	55	धनि.	17	15	व.	21	1	कुम्भ			7	16	17	56	7	12	17	58	7	15	18	7	6	44	17	40	4	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15,
	5	2	श.	12	6	शत.	19	59	प.	21	41	कुम्भ			7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	
	6	3	र.	14	32	पू.भा.	22	53	शि.	22	29	मीन	16	9	7	15	17	58	7	11	18	0	7	14	18	8	6	43	17	41	6	भ. 27/49 बाद, सूर्य धनि. में 17/40, मंगल धनि. में (A)
	7	4	चं.	17	6	उ.भा.	25	54	सि.	23	21	मीन			7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	भ. 17/06 तक,
	8	5	मं.	19	39	रेव.	28	51	सा.	24	12	मेष	28	51	7	14	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	पंचक समाप्त 28/51, श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी, (B)
	9	6	बु.	22	1	अश्वि.	–	–	शु.	24	53	मेष			7	13	18	1	7	8	18	2	7	12	18	10	6	41	17	44	9	
	10	7	गु.	24	1	अश्वि.	7	33	शु.	25	16	मेष			7	12	18	2	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	भ. 24/01 बाद, शुक्र पू.षा. में 22/01, रथ (आरोग्य) (C)
	11	8	शु.	25	25	भर.	9	50	ब्र.	25	13	वृष	16	19	7	11	18	2	7	7	18	4	7	10	18	12	6	40	17	45	11	भ. 12/43 तक, भीष्माष्टमी,
	12	9	श.	26	6	कृत्ति.	11	30	ऐं.	24	37	वृष			7	10	18	3	7	6	18	5	7	10	18	12	6	39	17	46	12	गुरु उ.भा. 3 में 7/13,
	13	10	र.	25	58	रोहि.	12	25	वै.	23	23	मिथुन	24	34	7	9	18	4	7	5	18	5	7	9	18	13	6	38	17	46	13	सं. सूर्य कुम्भ में 7/43, मु. 45, पुण्यकाल 14/05 तक,
	14	11	चं.	24	58	मृग.	12	31	वि.	21	29	मिथुन			7	9	18	5	7	5	18	6	7	8	18	14	6	38	17	47	14	भ. 13/28 से 24/58 तक, बुध धनि. में 20/37, (D)
	15	12	मं.	23	10	आर्द्रा	11	48	प्री.	18	56	कर्क	28	46	7	8	18	6	7	4	18	7	7	7	18	15	6	37	17	48	15	मंगल कुम्भ में 16/47, भीष्म द्वादशी,
	16	13	बु.	20	39	पुन.	10	20	आ.	15	48	कर्क			7	7	18	7	7	3	18	8	7	7	18	15	6	36	17	48	16	प्रदोष व्रत,
	17	14	गु.	17	34	पुष्य/	8	14	सौ.	12	11	सिंह	29	38	7	6	18	7	7	2	18	8	7	6	18	16	6	35	17	49	17	भ. 17/34 से 27/50 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत,
						आश्ले.	29	38																								
	18	15	शु.	14	5	मघा	26	46	शो./	8	11	सिंह			7	5	18	8	7	1	18	9	7	5	18	17	6	35	17	49	18	बुध कुम्भ में 17/32, सूर्य सायन मीन में 29/55, (E)
									अ.	27	58																					
फाल्गुन कृष्ण	19	1/	श.	10	23	पू.फा.	23	47	सु.	23	41	कन्या	29	2	7	4	18	9	7	0	18	10	7	4	18	17	6	34	17	50	19	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य शत. में 22/13,
		2		30	39																											द्वितीया तिथिक्षय,
	20	3	र.	27	4	उ.फा.	20	53	धृ.	19	28	कन्या			7	3	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	33	17	51	20	भ. 16/51 से 27/04 तक,
	21	4	चं.	23	49	हस्त	18	17	शू.	15	29	तुला	29	8	7	2	18	11	6	59	18	11	7	2	18	19	6	32	17	51	21	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	22	5	मं.	21	3	चित्रा	16	6	गं.	11	50	तुला			7	1	18	11	6	58	18	12	7	2	18	19	6	31	17	52	22	बुध शत. में 11/28, शुक्र उ.षा. में 9/57,
	23	6	बु.	18	53	स्वा.	14	31	वृ./	8	38	तुला			7	0	18	12	6	57	18	13	7	1	18	20	6	30	17	52	23	भ. 18/53 से 30/09 तक, मंगल शत. में 27/22,
									ध्रु.	29	59																					
	24	7	गु.	17	24	विशा.	13	35	व्या.	27	53	वृश्चि.	7	45	6	59	18	13	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	24	शुक्र मकर में 30/13,
	25	8	शु.	16	39	अनु.	13	22	ह.	26	21	वृश्चि.			6	58	18	14	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	54	25	
	26	9	श.	16	35	ज्ये.	13	50	व.	25	21	धनु	13	50	6	57	18	14	6	54	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	भ. 28/52 बाद,
	27	10	र.	17	10	मूल	14	56	सि.	24	49	धनु			6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	55	27	भ. 17/10 तक, गुरु उ.भा. 4 में 11/06,
	28	11	चं.	18	18	पू.षा.	16	34	व्य.	24	41	मकर	23	3	6	55	18	16	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	विजया एकादशी व्रत (स.).

(A) 30/05, बुध श्रव. में 17/14, बुध पूर्व में अस्त 21/10, गौरी तृतीया (गौंतरी), तिल-वरद-कुन्द चतुर्थी, (B) सरस्वती-पूजा, (C) सप्तमी (पहले अरुणोदय वाली), मर्यादा महोत्सव (जैन), (D) जया एकादशी व्रत (स.), (E) वसन्त ऋतु प्रारम्भ, माघी पूर्णिमा, जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी, माघस्नान समाप्त.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ सूर्योदय		चण्डीगढ़ सूर्यास्त		दिल्ली सूर्योदय		दिल्ली सूर्यास्त		जयपुर सूर्योदय		जयपुर सूर्यास्त		वाराणसी सूर्योदय		वाराणसी सूर्यास्त		तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
फा. कृ.	1	12	मं.	19	52	उ.षा.	18	38	व.	24	52	मकर			6	53	18	17	6	51	18	17	6	55	18	23	6	25	17	56	1	बुध पू.भा. में 15/30.
	2	13	बु.	21	46	श्रव.	21	1	प.	25	17	मकर			6	52	18	17	6	50	18	17	6	54	18	24	6	24	17	56	2	भ. 21/46 बाद, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत. (A)
	3	14	गु.	23	56	धनि.	23	39	शि.	25	52	कुम्भ	10	18	6	51	18	18	6	49	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	3	भ. 10/51 तक, पंचक प्रारम्भ 10/18.
	4	30	शु.	26	16	शत.	26	27	सि.	26	36	कुम्भ			6	50	18	19	6	47	18	19	6	52	18	25	6	22	17	57	4	सूर्य पू.भा. में 28/29.
फाल्गुन शुक्ल	5	1	श.	28	43	पू.भा.	29	22	सा.	27	26	मीन	22	38	6	49	18	19	6	46	18	19	6	51	18	26	6	21	17	58	5	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र श्रव. में 17/43.
	6	2	र.	—	—	उ.भा.	—	—	शु.	28	18	मीन			6	48	18	20	6	45	18	20	6	50	18	26	6	20	17	58	6	चन्द्रदर्शन, मु. 45, बुध मीन में 20/18, जन्मदिन (B)
	7	2	चं.	7	14	उ.भा.	8	21	शु.	29	11	मीन			6	47	18	21	6	44	18	21	6	49	18	27	6	19	17	59	7	
	8	3	मं.	9	44	रेव.	11	18	ब्र.	29	58	मेष	11	18	6	45	18	22	6	43	18	21	6	48	18	28	6	18	17	59	8	भ. 22/55 बाद, पंचक समाप्त 11/18, बुध उ.भा. में (C)
	9	4	बु.	12	7	अश्वि.	14	8	ऐं.	30	35	मेष			6	44	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	18	18	0	9	भ. 12/07 तक,
	10	5	गु.	14	13	भर.	16	42	वै.	—	—	वृष	23	17	6	43	18	23	6	41	18	22	6	46	18	29	6	17	18	0	10	होलाष्टक 13 से 19 मार्च
	11	6	शु.	15	53	कृत्ति.	18	50	वै.	6	56	वृष			6	42	18	24	6	40	18	23	6	45	18	29	6	16	18	1	11	
	12	7	श.	16	58	रोहि.	20	24	वि./ प्री.	6 / 30	52 / 17	वृष			6	41	18	24	6	39	18	24	6	44	18	30	6	15	18	1	12	भ. 16/58 से 29/09 तक, मंगल पू.भा. में 24/57. (D)
	13	8	र.	17	20	मृग.	21	15	आ.	29	6	मिथुन	8	55	6	40	18	25	6	38	18	24	6	43	18	30	6	13	18	2	13	गुरु रेव. 1 में 19/35, होलाष्टक प्रारम्भ.
	14	9	चं.	16	52	आर्द्रा	21	18	सौ.	27	16	मिथुन			6	38	18	26	6	36	18	25	6	42	18	31	6	12	18	2	14	सं. सूर्य मीन में 28/33, मु. 45, पुण्यकाल अगले दिन (E)
	15	10	मं.	15	35	पुन.	20	32	शो.	24	47	कर्क	14	47	6	37	18	26	6	35	18	25	6	41	18	31	6	11	18	3	15	भ. 26/32 बाद, बुध रेव. में 22/26.
	16	11	बु.	13	30	पुष्य	18	59	अ.	21	41	कर्क			6	36	18	27	6	34	18	26	6	39	18	32	6	10	18	3	16	भ. 13/30 तक, शुक्र धनि. में 22/50, प्लूटो पू.षा. 1 (F)
	17	12	गु.	10	42	आश्ले.	16	47	सु.	18	2	सिंह	16	47	6	35	18	28	6	33	18	27	6	38	18	32	6	9	18	4	17	प्रदोष व्रत,
	18	13/ 14	शु.	7 / 27	21 / 37	मघा	14	4	धृ.	13	59	सिंह			6	33	18	28	6	32	18	27	6	37	18	33	6	8	18	4	18	भ. 27/37 बाद, सूर्य उ.भा. में 12/54. चतुर्दशी तिथिक्षय,
	19	15	श.	23	40	पू.फा.	11	0	शू./ गं.	9 / 29	40 / 13	कन्या	16	13	6	32	18	29	6	31	18	28	6	36	18	33	6	7	18	5	19	भ. 13/39 तक, होलिकादहन, जन्मदिन श्रीचैतन्य (G)
चैत्र कृष्ण	20	1	र.	19	43	उ.फा./ हस्त	7 / 28	49 / 42	वृ.	24	48	कन्या			6	31	18	30	6	30	18	28	6	35	18	34	6	6	18	5	20	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य सायन मेष में 28/50. (H)
	21	2	चं.	15	57	चित्रा	25	52	ध्रु.	20	36	तुला	15	15	6	30	18	30	6	28	18	29	6	34	18	34	6	5	18	6	21	भ. 26/15 बाद,
	22	3	मं.	12	33	स्वा.	23	30	व्या.	16	44	तुला			6	28	18	31	6	27	18	29	6	33	18	35	6	4	18	6	22	भ. 12/33 तक, शुक्र कुम्भ में 12/40, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	23	4	बु.	9	42	विशा.	21	45	ह.	13	21	वृश्चि.	16	7	6	27	18	31	6	26	18	30	6	32	18	35	6	3	18	6	23	गुरुवार्धक्य प्रारम्भ 8/45.
	24	5/ 6	गु.	7 / 30	32 / 9	अनु.	20	44	व.	10	32	वृश्चि.			6	26	18	32	6	25	18	30	6	31	18	36	6	2	18	7	24	भ. 30/09 बाद, यूरेनस उ.भा. 2 में 6/56, मेला (I) षष्ठी तिथिक्षय.
	25	7	शु.	29	36	ज्ये.	20	31	सि.	8	21	धनु	20	31	6	25	18	33	6	24	18	31	6	30	18	36	6	1	18	7	25	भ. 17/53 तक, मंगल मीन में 18/37.
	26	8	श.	29	50	मूल	21	6	व्या./ व.	6 / 29	50 / 56	धनु			6	24	18	33	6	23	18	32	6	28	18	37	6	0	18	8	26	गुरु अस्त 8/45, श्रीशीतलाष्टमी. गुरु अस्त 26 मार्च
	27	9	र.	—	—	पू.षा.	22	26	प.	29	36	मकर	28	51	6	22	18	34	6	21	18	32	6	27	18	37	5	59	18	8	27	शुक्र शत. में 26/05, गुरु रेव. 2 में 18/12.
	28	9	चं.	6	48	उ.षा.	24	22	शि.	29	43	मकर			6	21	18	35	6	20	18	33	6	26	18	38	5	58	18	9	28	भ. 19/34 बाद, बुध अश्वि. मेष में 19/39.
	29	10	मं.	8	21	श्रव.	26	47	सि.	30	12	मकर			6	20	18	35	6	19	18	33	6	25	18	38	5	57	18	9	29	भ. 8/21 तक, मंगल उ.भा. में 24/54
	30	11	बु.	10	22	धनि.	29	31	सा.	—	—	कुम्भ	16	7	6	19	18	36	6	18	18	34	6	24	18	39	5	56	18	10	30	पंचक प्रारम्भ 16/07, बुध वक्री 26/19, पापमोचिनी (J)
	31	12	गु.	12	39	शत.	—	—	सा.	6	54	कुम्भ			6	17	18	37	6	17	18	34	6	23	18	39	5	55	18	10	31	सूर्य रेव. में 23/44, प्रदोष व्रत, वारुणीपर्व (K)

(A) प्रदोष व्रत, (B) श्री रामकृष्ण परमहंस, (C) 13/55, (D) बुध पश्चिम में उदित 8/34, (E) मध्याह्न तक, (F) में 24/36, आमला एकादशी व्रत (स.), गोविन्द द्वादशी, (G) महाप्रभु, होलाष्टक समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत, (H) महाविषुवदिन, उत्तरगोल प्रारम्भ, वसन्तोत्सव, होला मेला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), (I) श्रीशीतला माता (कुराली) पं., (J) एकादशी व्रत (स.), (K) 12 घं. 39 मि. से सूर्यास्त तक,

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घं.	मि.	योग	समाप्तिकाल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
चैत्र कृष्ण	1	13	शु.	15	6	शत.	8	25	शु.	7	45	मीन	28	39	6	16	18	37	6	16	18	35	6	22	18	40	5	54	18	10	1	भ. 15/06 से 28/21 तक, बुध पश्चिम में अस्त (A)
	2	14	श.	17	35	पू.भा.	11	24	शु.	8	40	मीन			6	15	18	38	6	15	18	35	6	21	18	40	5	53	18	11	2	वक्री बुध रेव. में 29/31, वक्री शनि हस्त 3 में 10/45,(B)
	3	30	र.	20	2	उ.भा.	14	22	ब्र.	9	34	मीन			6	14	18	38	6	13	18	36	6	20	18	41	5	52	18	11	3	चान्द्र संवत्सर (2067 वि.) पूर्ण,
चैत्र शुक्ल	4	1	चं.	22	23	रेव.	17	15	ऐ.	10	24	मेष	17	15	6	13	18	39	6	12	18	37	6	19	18	41	5	51	18	12	4	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, पंचक समाप्त 17/15, राहु मूल (C)
	5	2	मं.	24	34	अश्वि.	19	59	वै.	11	9	मेष			6	11	18	40	6	11	18	37	6	18	18	42	5	50	18	12	5	चन्द्रदर्शन, मु. 30, चन्द्रव्रत,
	6	3	बु.	26	31	भर.	22	30	वि.	11	45	वृष	29	5	6	10	18	40	6	10	18	38	6	17	18	42	5	49	18	13	6	गौरीतृतीया(गणगौर), आन्दोलन तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती,
	7	4	गु.	28	8	कृति.	24	43	प्री.	12	8	वृष			6	9	18	41	6	9	18	38	6	15	18	43	5	48	18	13	7	भ. 15/19 से 28/08 तक, शुक्र पू.भा. में 27/58,,
	8	5	शु.	29	18	रोहि.	26	32	आ.	12	14	वृष			6	8	18	42	6	8	18	39	6	14	18	43	5	47	18	13	8	श्री(लक्ष्मी)पंचमी, नागपंचमी, हयव्रत,
	9	6	श.	29	54	मृग.	27	49	सौ.	11	58	मिथुन	15	14	6	7	18	42	6	7	18	39	6	13	18	44	5	46	18	14	9	प्लूटो वक्री 14/18, स्कन्द षष्ठी,
	10	7	र.	29	52	आर्द्रा	28	28	शो.	11	16	मिथुन			6	5	18	43	6	6	18	40	6	12	18	44	5	45	18	14	10	भ. 29/52 बाद, गुरु रेव. 3 में 13/06,
	11	8	चं.	29	7	पुन.	28	26	अ.	10	2	कर्क	22	31	6	4	18	43	6	4	18	40	6	11	18	45	5	44	18	15	11	भ. 17/30 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी (पुनर्वसु (D)
	12	9	मं.	27	39	पुष्य	27	42	सु./	8	15	कर्क			6	3	18	44	6	3	18	41	6	10	18	45	5	43	18	15	12	श्रीरामनवमी, नवरात्र समाप्त,
									धृ.	29	52																					
	13	10	बु.	25	28	आश्ले.	26	15	शू.	26	56	सिंह	26	15	6	2	18	45	6	2	18	42	6	9	18	46	5	42	18	16	13	नवरात्र पारणा,
	14	11	गु.	22	41	मघा	24	12	गं.	23	31	सिंह			6	1	18	45	6	1	18	42	6	8	18	46	5	41	18	16	14	भ. 12/04 से 22/41 तक, सं. सूर्य अश्वि. मेष में (E)
	15	12	शु.	19	24	पू.फा.	21	41	वृ.	19	41	कन्या	26	59	6	0	18	46	6	0	18	43	6	7	18	47	5	40	18	17	15	मंगल रेव. में 28/55, प्रदोष व्रत,
	16	13	श.	15	47	उ.फा.	18	50	ध्रु.	15	34	कन्या			5	58	18	47	5	59	18	43	6	6	18	47	5	39	18	17	16	शुक्र मीन में 10/51, अनंग त्रयोदशी, श्रीमहावीर जयन्ती(जैन),
	17	14	र.	12	0	हस्त	15	50	व्या.	11	19	तुला	26	21	5	57	18	47	5	58	18	44	6	5	18	48	5	38	18	18	17	भ. 12/00 से 22/07 तक, बुध पूर्व में उदित 11/33,(F)
	18	15/	चं.	8	14	चित्रा	12	54	ह./	7	5	तुला			5	56	18	48	5	57	18	44	6	4	18	48	5	37	18	18	18	शुक्र उ.भा. में 29/03, चैत्री पूर्णिमा, वैशाखस्नान प्रारम्भ,
									व.	27	0																					
वैशाख कृष्ण		1		28	40																											वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	19	2	मं.	25	28	स्वाती	10	12	सि.	23	14	वृश्चिक	26	28	5	55	18	49	5	56	18	45	6	3	18	49	5	36	18	18	19	
	20	3	बु.	22	50	विशा.	7	57	व्य.	19	53	वृश्चिक			5	54	18	49	5	55	18	46	6	2	18	49	5	35	18	19	20	भद्रा 12/09 से 22/50 तक, सूर्य सायन वृष में (G)
	21	4	गु.	20	52	अनु./	6	16	व.	17	6	धनु	29	19	5	53	18	50	5	54	18	46	6	1	18	50	5	34	18	19	21	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
						ज्येष्ठा	29	19																								
	22	5	शु.	19	41	मूल	29	9	प.	14	56	धनु			5	52	18	50	5	53	18	47	6	1	18	50	5	33	18	20	22	अगस्त्य अस्त,
	23	6	श.	19	19	पू.षा.	29	48	शि.	13	25	धनु			5	51	18	51	5	52	18	47	6	0	18	51	5	33	18	20	23	भद्रा 19/19 बाद बुध मार्गी 15/34,
	24	7	र.	19	46	उ.षा.	—	—	सि.	12	33	मकर	12	5	5	50	18	52	5	51	18	48	5	59	18	51	5	32	18	21	24	भद्रा 7/33 तक, गुरु रेव. 4 में 10/00,
	25	8	चं.	20	57	उ.षा.	7	13	सा.	12	17	मकर			5	49	18	52	5	50	18	48	5	58	18	52	5	31	18	21	25	
	26	9	मं.	22	43	श्रव.	9	17	शु.	12	31	कुम्भ	22	30	5	48	18	53	5	49	18	49	5	57	18	53	5	30	18	22	26	पंचक प्रारम्भ 22/30, मंगल उदित 10/30, गुरु उदित(H)
	27	10	बु.	24	55	धनि.	11	50	शु.	13	7	कुम्भ			5	47	18	54	5	48	18	50	5	56	18	53	5	29	18	22	27	भद्रा 11/50 से 24/55 तक, सूर्य भरणी में 28/52,
	28	11	गु.	27	20	शत.	14	42	ब्र.	13	57	कुम्भ			5	46	18	54	5	47	18	50	5	55	18	54	5	28	18	23	28	वरुथिनी एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृ. 88), (I)
	29	12	शु.	—	—	पू.भा.	17	41	ऐं.	14	54	मीन	10	56	5	45	18	55	5	47	18	51	5	54	18	54	5	28	18	23	29	शुक्र रेव. में 29/28, गुरुबाल्य समाप्त 5/48, (J)
	30	12	श.	5	48	उ.भा.	20	40	वै.	15	50	मीन			5	44	18	56	5	46	18	51	5	54	18	55	5	27	18	24	30	शनिप्रदोष व्रत,

गुरु उदित 26 अप्रैल

(A) 26/47, वारुणी पर्व (8 घं. 25 मि. तक), (B) मेला पिहोवा तीर्थ (हरियाणा), (C) 1, केतु मृग. 3 में 17/11, चान्द्र संवत्सर 2068 वि. प्रारम्भ, वासन्त नवरात्र प्रारम्भ, वर्षफलश्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, (D) नक्षत्र 28 घं. 26 मि. तक), (E) 13/00, मु. 30, पुण्यकाल 6/35 बाद, कामदा एकादशी व्रत(स.), श्रीविष्णु दमनोत्सव, मेष संक्रान्ति, वैशाखी (पं.), (F) श्रीशिव दमनोत्सव, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्री हनुमान् जयन्ती (द.भा.), (G) 15/48, ग्रीष्मऋतु प्रारम्भ, (H) 5/48, (I) श्री वल्लभाचार्य जयन्ती, (J) वरुथिनी एकादशी व्रत (वै.)(देखें पृ. 88).

119 श्री वि. सं. 2068 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) मई, सन् 2011 ई.

श्री वि. सं. 2068 | **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** | **मई, सन् 2011 ई.**

मास पक्ष	मि.	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
वैशाख कृष्ण	1	13	र.	8	12	रेव.	23	30	वि.	16	41	मेष	23	30	5	43	18	56	5	45	18	52	5	53	18	55	5	26	18	24	1	भ. 8/12 से 21/18 तक, पंचक समाप्त 23/30,
	2	14	चं.	10	24	अश्वि.	26	7	प्री.	17	22	मेष			5	42	18	57	5	44	18	53	5	52	18	56	5	25	18	25	2	वक्री प्लूटो मूल 4 में 25/32,
	3	30	मं.	12	21	भर.	28	27	आ.	17	51	मेष			5	41	18	58	5	43	18	53	5	51	18	56	5	25	18	25	3	मंगल अश्वि. मेष में 14/48, भौमवती अमा,
वैशाख शुक्ल	4	1	बु.	13	58	कृत्ति.	—	—	सौ.	18	5	वृष	10	59	5	40	18	58	5	42	18	54	5	50	18	57	5	24	18	26	4	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, नेप्च्यून (A)
	5	2	गु.	15	15	कृत्ति.	6	27	शो.	18	2	वृष			5	40	18	59	5	42	18	54	5	50	18	57	5	23	18	26	5	श्रीपरशुराम जयन्ती, श्रीशिवाजी जयन्ती,
	6	3	शु.	16	7	रोहि.	8	5	अ.	17	41	मिथुन	20	45	5	39	19	0	5	41	18	55	5	49	18	58	5	23	18	27	6	भ. 28/20 बाद, अक्षयतृतीया(रोहिणी नक्षत्र 8घं. 5 मि. तक),
	7	4	श.	16	33	मृग.	9	19	सु.	16	59	मिथुन			5	38	19	0	5	40	18	56	5	48	18	59	5	22	18	27	7	भ. 16/33 तक,
	8	5	र.	16	30	आर्द्रा	10	4	धृ.	15	55	कर्क	28	19	5	37	19	1	5	39	18	56	5	48	18	59	5	21	18	28	8	गुरु अश्वि.1 मेष में 14/12, श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
	9	6	चं.	15	56	पुन.	10	20	शू.	14	25	कर्क			5	36	19	2	5	39	18	57	5	47	19	0	5	21	18	28	9	श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती,
	10	7	मं.	14	49	पुष्य	10	4	गं.	12	30	कर्क			5	36	19	2	5	38	18	57	5	46	19	0	5	20	18	29	10	भ. 14/49 से 25/59 तक, शुक्र अश्वि. मेष में 29/25 (B)
	11	8	बु.	13	9	आश्ले.	9	15	वृ.	10	8	सिंह	9	15	5	35	19	3	5	37	18	58	5	46	19	1	5	19	18	29	11	सूर्य कृत्ति. में 22/56, बुध अश्वि. मेष में 8/44, श्रीसीता (C)
	12	9	गु.	10	59	मघा	7	55	ध्रु./	7	21	सिंह			5	34	19	4	5	37	18	59	5	45	19	1	5	19	18	30	12	
									व्या.	28	12																					
	13	10/	शु.	8	21	पू.फा./	6	8	ह.	24	44	कन्या	11	38	5	34	19	4	5	36	18	59	5	44	19	2	5	18	18	30	13	भ. 18/52 से 29/23 तक, मोहिनी एकादशी व्रत(स्मा.),
		11		29	23	उ.फा.	28	0																								एकादशी तिथिक्षय,
	14	12	श.	26	12	हस्त	25	37	व.	21	3	कन्या			5	33	19	5	5	35	19	0	5	44	19	2	5	18	18	31	14	मोहिनी एकादशी व्रत(वै.),
	15	13	र.	22	54	चित्रा	23	8	सि.	17	16	तुला	12	22	5	32	19	6	5	35	19	0	5	43	19	3	5	17	18	31	15	सं. सूर्य वृष में 9/50, मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न तक, (D)
	16	14	चं.	19	40	स्वाती	20	42	व्य.	13	30	तुला			5	32	19	6	5	34	19	1	5	43	19	4	5	17	18	32	16	भ. 19/40 बाद, श्रीनृसिंह जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत (E)
	17	15	मं.	16	38	विशा.	18	30	व.	9	52	वृश्चिक	13	1	5	31	19	7	5	34	19	2	5	42	19	4	5	16	18	32	17	भ. 6/09 तक, वैशाखी पूर्णिमा, श्रीबुद्ध पूर्णिमा, श्रीबुद्ध (F)
ज्येष्ठ कृष्ण	18	1	बु.	13	59	अनु.	16	41	प./	6	30	वृश्चिक			5	30	19	8	5	33	19	2	5	42	19	5	5	16	18	33	18	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
									शि.	27	30																					
	19	2	गु.	11	49	ज्येष्ठा	15	23	सि.	24	59	धनु	15	23	5	30	19	8	5	32	19	3	5	41	19	5	5	15	18	33	19	भ. 23/03 बाद,
	20	3	शु.	10	17	मूल	14	43	सा.	23	2	धनु			5	29	19	9	5	32	19	3	5	41	19	6	5	15	18	34	20	भ. 10/ 17 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	21	4	श.	9	28	पू.षा.	14	46	शु.	21	40	मकर	20	54	5	29	19	9	5	32	19	4	5	40	19	6	5	15	18	34	21	मंगल भरणी में 8/14, बुध भरणी में 7/29, शुक्र भरणी (G)
	22	5	र.	9	25	उ.षा.	15	35	शु.	20	55	मकर			5	28	19	10	5	31	19	5	5	40	19	7	5	14	18	35	22	
	23	6	चं.	10	6	श्रव.	17	6	ब्र.	20	43	मकर			5	28	19	11	5	31	19	5	5	40	19	7	5	14	18	35	23	भ. 10/06 से 22/48 तक, गुरु अश्वि. 2 में 8/57,
	24	7	मं.	11	28	धनि.	19	15	ऐं.	21	1	कुम्भ	6	6	5	27	19	11	5	30	19	6	5	39	19	8	5	14	18	36	24	पंचक प्रारम्भ 6/6,
	25	8	बु.	13	22	शत.	21	52	वै.	21	40	कुम्भ			5	27	19	12	5	30	19	6	5	39	19	8	5	13	18	36	25	सूर्य रोहि. में 19/14,
	26	9	गु.	15	38	पू.भा.	24	45	वि.	22	32	मीन	18	1	5	26	19	13	5	30	19	7	5	39	19	9	5	13	18	37	26	भ. 28/50 बाद,
	27	10	शु.	18	1	उ.भा.	27	43	प्री.	23	29	मीन			5	26	19	13	5	29	19	7	5	38	19	9	5	13	18	37	27	भ. 18/01 तक, वक्री शनि हस्त 2 में 7/43,
	28	11	श.	20	22	रेव.	—	—	आ.	24	22	मीन			5	26	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	28	बुध कृत्ति. में 29/17, अपरा एकादशी व्रत(स.), (H)
	29	12	र.	22	30	रेव.	6	34	सौ.	25	4	मेष	6	34	5	25	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	29	पंचक समाप्त 6/34,
	30	13	चं.	24	17	अश्वि.	9	9	शो.	25	29	मेष			5	25	19	15	5	28	19	9	5	37	19	11	5	12	18	39	30	भ. 24/17 बाद, बुध वृष में 24/05, सोमप्रदोष व्रत,
	31	14	मं.	25	39	भर.	11	22	अ.	25	35	वृष	17	52	5	25	19	15	5	28	19	9	5	37	19	11	5	12	18	39	31	भ. 12/58 तक,

(A) शत. 1 में 15/58, (B) श्रीगंगाजन्म, (C) नवमी (जानकीजयन्ती) (देखें पृ. 88), (D) प्रदोषव्रत, (E) (देखें पृ. 88), (F) जयन्ती, श्रीकूर्म जयन्ती, वैशाखस्नान समाप्त, (G) में 29/03, सूर्य सायन मिथुन में 15/51, (H) भद्रकाली एकादशी (पं.),

मास पक्ष	ता.	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चन्द्रराशि–प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
ज्ये.कृ.	1	30	बु.	26	32	कृत्ति.	13	10	सु.	25	20	वृष			5	25	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	12	18	40	1	शुक्र कृत्ति. में 28/16, बुध पूर्व में अस्त 20/32, भावुका(A)
ज्येष्ठ शुक्ल	2	1	गु.	26	58	रोहि.	14	30	धृ.	24	42	मिथुन	26	59	5	24	19	16	5	28	19	11	5	37	19	12	5	11	18	40	2	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
	3	2	शु.	26	56	मृग.	15	22	शू.	23	42	मिथुन			5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	3	चन्द्रदर्शन, मु. 15, यूरेनस उ.भा. 3 में 7/04, नेप्च्यून (B)
	4	3	श.	26	27	आर्द्रा	15	49	गं.	22	22	मिथुन			5	24	19	18	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	4	बुध रोहि. में 24/50, शुक्र वृष में 22/01, रम्भा तृतीया, (C)
	5	4	र.	25	34	पुन.	15	50	वृ.	20	41	कर्क	9	52	5	24	19	18	5	27	19	12	5	37	19	14	5	11	18	42	5	भ. 14/01 से 25/34 तक, बलिदानदिवस श्रीगुरु अर्जुनदेव जी,
	6	5	चं.	24	18	पुष्य	15	27	ध्रु.	18	42	कर्क			5	24	19	18	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	6	राहु ज्येष्ठा 4 वृश्चिक, केतु मृग. 2 वृष मे 14/52,
	7	6	मं.	22	41	आश्ले.	14	43	व्या.	16	25	सिंह	14	43	5	24	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	42	7	गुरु अश्वि. 3 में 28/35, विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्यषष्ठी,
	8	7	बु.	20	45	मघा	13	40	ह.	13	53	सिंह			5	23	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	8	भ. 20/45 बाद, सूर्य मृग. में 17/00, मंगल कृत्ति. में (D)
	9	8	गु.	18	32	पू.फा.	12	19	व.	11	6	कन्या	17	57	5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	15	5	11	18	43	9	भ. 7/39 तक,
	10	9	शु.	16	8	उ.फा.	10	45	सि./ व्य.	8 29	8 2	कन्या			5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	44	10	चन्द्रग्रहण 15/16 जून
	11	10	श.	13	34	हस्त	9	1	व.	25	50	तुला	20	7	5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	16	5	11	18	44	11	भ. 24/15 बाद, बुध मृग. में 6/11, श्रीगंगा दशहरा (E)
	12	11	र.	10	56	चित्रा/ स्वाती	7 29	12 23	प.	22	38	तुला			5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	44	12	भ. 10/56 तक, मंगल वृष में 24/55, शुक्र रोहि. में (F)
	13	12	चं.	8	20	विशा.	27	41	शि.	19	30	वृश्चिक	22	6	5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	45	13	शनि मार्गी 9/21, सोमप्रदोष व्रत, चम्पक द्वादशी,
	14	13/ 14	मं.	5 27	51 37	अनु.	26	13	सि.	16	31	वृश्चिक			5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	17	5	11	18	45	14	भ. 27/37 बाद, बुध मिथुन में 6/56, ग्रहणशूल, चतुर्दशी तिथिक्षय,
	15	15	बु.	25	43	ज्येष्ठा	25	5	सा.	13	47	धनु	25	5	5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	18	5	11	18	45	15	भ. 14/41 तक, सं. सूर्य मिथुन में 16/26, मु. 15, (G)
आषाढ़ कृष्ण	16	1	गु.	24	17	मूल	24	24	शु.	11	22	धनु			5	24	19	23	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	46	16	आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, ग्रहणशूल,
	17	2	शु.	23	23	पू.षा.	24	15	शु.	9	21	धनु			5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	18	5	11	18	46	17	बुध आर्द्रा में 8/17, ग्रहणशूल,
	18	3	श.	23	7	उ.षा.	24	44	ब्र.	7	48	मकर	6	19	5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	19	5	12	18	46	18	भ. 11/15 से 23/07 तक, ग्रहणशूल,
	19	4	र.	23	30	श्रव.	25	51	ऐं.	6	46	मकर			5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	19	5	12	18	46	19	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	20	5	चं.	24	31	धनि.	27	36	वै.	6	15	कुम्भ	14	39	5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	20	पंचक प्रारम्भ 14/39,
	21	6	मं.	26	8	शत.	–	–	वि.	6	13	कुम्भ			5	24	19	24	5	28	19	18	5	37	19	19	5	12	18	47	21	भ. 26/08 बाद, सूर्य सायन कर्क में 22/47, दक्षिण (H)
	22	7	बु.	28	10	शत.	5	53	प्री.	6	38	मीन	25	52	5	24	19	24	5	28	19	18	5	38	19	19	5	12	18	47	22	भ. 15/09 तक, सूर्य आर्द्रा में 16/06,
	23	8	गु.	–	–	पू.भा.	8	34	आ.	7	21	मीन			5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	23	बुध पुन. में 18/08, शुक्र मृग. मे 25/32,
	24	8	शु.	6	28	उ.भा.	11	28	सौ.	8	15	मीन			5	25	19	24	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	24	बुध पश्चिम में उदित 13/36,
	25	9	श.	8	49	रेव.	14	22	शो.	9	10	मेष	14	22	5	25	19	25	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	25	भ. 21/54 बाद, पंचक समाप्त 14/22, गुरु अश्वि. 4 (I)
	26	10	र.	10	59	अश्वि.	17	4	अ.	9	57	मेष			5	26	19	25	5	29	19	18	5	39	19	20	5	13	18	48	26	भ. 10/59 तक, मंगल रोहि. में 23/46,
	27	11	चं.	12	46	भर.	19	22	सु.	10	27	वृष	25	51	5	26	19	25	5	29	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	27	योगिनी एकादशी व्रत (स.),
	28	12	मं.	14	4	कृत्ति.	21	9	धृ.	10	34	वृष			5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	28	बुध कर्क में 24/44, भौमप्रदोष व्रत,
	29	13	बु.	14	47	रोहि.	22	21	शू.	10	15	वृष			5	26	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	14	18	48	29	भ. 14/47 से 26/50 तक, शुक्र मिथुन में 12/30,
	30	14	गु.	14	53	मृग.	22	58	गं.	9	26	मिथुन	10	44	5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	30	बुध पुष्य में 21/59, शनि हस्त 3 मे 13/04,

(A) अमा. वटसावित्री व्रत (अमा.पक्ष), (B) वक्री 13/02, (C) श्रीमहाराणा प्रताप जयन्ती (राज),(D) 10/41, (E) (हस्त नक्षत्र 9घं. 01 मि. तक), (F) 27/08, निर्जला एकादशी व्रत (स.), (G) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष), खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य)(देखें पृ. 14), श्रीसत्यनारायण व्रत, (H) अयन एवं वर्षाऋतु प्रारम्भ, (I) में 21/20,

श्री वि. सं. 2068 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — जुलाई, सन् 2011 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
आ.कृ.	1	30	शु.	14	24	आर्द्रा	23	1	वृ.	8	10	मिथुन			5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	21	5	15	18	48	1	
आषाढ़ शुक्ल	2	1	श.	13	23	पुन.	22	35	ध्रु./	6	27	कर्क	16	44	5	28	19	25	5	31	19	19	5	41	19	21	5	15	18	48	2	आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45,
									व्या.	28	22																					
	3	2	र.	11	56	पुष्य	21	44	ह.	25	57	कर्क			5	28	19	25	5	32	19	19	5	41	19	21	5	16	18	48	3	वक्री नेप्च्यून धनि. 4 में 18/54, रथयात्रा (श्रीजगदीश– (A)
	4	3	चं.	10	7	आश्ले.	20	35	व.	23	19	सिंह	20	35	5	28	19	25	5	32	19	19	5	41	19	21	5	16	18	48	4	भ. 21/06 बाद, शुक्र आर्द्रा में 23/18,
	5	4	मं.	8	3	मघा	19	13	सि.	20	30	सिंह			5	29	19	25	5	32	19	19	5	42	19	20	5	16	18	48	5	भ. 8/03 तक,
	6	5/	बु.	5	49	पू.फा.	17	43	व्य.	17	35	कन्या	23	20	5	29	19	25	5	33	19	19	5	42	19	20	5	17	18	48	6	सूर्य पुन. में 15/36, कुमारषष्ठी,
		6		27	29																											षष्ठी तिथिक्षय,
	7	7	गु.	25	9	उ.फा.	16	10	व.	14	37	कन्या			5	30	19	25	5	33	19	18	5	43	19	20	5	17	18	48	7	भ. 25/09 बाद, विवस्वत् सप्तमी,
	8	8	शु.	22	51	हस्त	14	38	प.	11	41	तुला	25	54	5	30	19	24	5	34	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	8	भ. 12/00 तक,
	9	9	श.	20	39	चित्रा	13	11	शि.	8	48	तुला			5	31	19	24	5	34	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	9	बुध आश्ले. में 8/25,
	10	10	र.	18	35	स्वाती	11	52	सि./	6	1	वृश्चिक	28	59	5	31	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	18	18	48	10	यूरेनस वक्री 6/07
									सा.	27	21																					
	11	11	चं.	16	43	विशा.	10	43	शु.	24	53	वृश्चिक			5	32	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	19	18	48	11	भ. 5/39 से 16/43 तक, हरिशयनी एकादशी व्रत (स.).(B)
	12	12	मं.	15	5	अनु.	9	48	शु.	22	36	वृश्चिक			5	32	19	23	5	35	19	18	5	45	19	20	5	19	18	47	12	भौमप्रदोष व्रत, शुक्र अस्त 22 जुलाई
	13	13	बु.	13	44	ज्येष्ठा	9	9	ब्र.	20	35	धनु	9	9	5	33	19	23	5	36	19	17	5	45	19	19	5	20	18	47	13	
	14	14	गु.	12	45	मूल	8	50	ऐं.	18	51	धनु			5	33	19	23	5	36	19	17	5	46	19	19	5	20	18	47	14	भ. 12/45 से 24/27 तक, कोकिला व्रत, श्रीशिव– (C)
	15	15	शु.	12	9	पू.षा.	8	55	वै.	17	28	मकर	15	0	5	34	19	23	5	37	19	17	5	46	19	19	5	21	18	47	15	मंगल मृग. में 24/52, शुक्र पुन. में 20/29, चातुर्मास्य (D)
श्रावण कृष्ण	16	1	श.	12	2	उ.षा.	9	27	वि.	16	28	मकर			5	34	19	22	5	37	19	16	5	47	19	19	5	21	18	47	16	श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सं. सूर्य कर्क में 27/21, (E)
	17	2	र.	12	26	श्रव.	10	29	प्री.	15	52	कुम्भ	23	12	5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	21	18	46	17	भ. 24/54 बाद, पंचक प्रारम्भ 23/12, गुरु भर. 1 में (F)
	18	3	चं.	13	22	धनि.	12	3	आ.	15	42	कुम्भ			5	35	19	21	5	39	19	16	5	48	19	18	5	22	18	46	18	भ. 13/22 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	19	4	मं.	14	50	शत.	14	7	सौ.	15	56	कुम्भ			5	36	19	21	5	39	19	15	5	48	19	18	5	22	18	46	19	शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 5/36,
	20	5	बु.	16	45	पू.भा.	16	37	शो.	16	31	मीन	9	57	5	37	19	21	5	40	19	15	5	49	19	17	5	23	18	45	20	सूर्य पुष्य में 15/13, बुध मघा सिंह में 11/50,
	21	6	गु.	18	59	उ.भा.	19	27	अ.	17	21	मीन			5	37	19	20	5	40	19	15	5	49	19	17	5	23	18	45	21	भ. 18/59 बाद,
	22	7	शु.	21	21	रेव.	22	24	सु.	18	17	मेष	22	24	5	38	19	20	5	41	19	14	5	50	19	16	5	24	18	45	22	भ. 8/10 तक, पंचक समाप्त 22/24, शुक्र पूर्व में अस्त (G)
	23	8	श.	23	39	अश्वि.	25	16	धृ.	19	12	मेष			5	38	19	19	5	41	19	14	5	50	19	16	5	24	18	44	23	शुक्र कर्क में 23/54, सूर्य सायन सिंह में 9/42,
	24	9	र.	25	39	भर.	27	49	शू.	19	53	मेष			5	39	19	18	5	42	19	13	5	51	19	15	5	25	18	44	24	
	25	10	चं.	27	7	कृत्ति.	–	–	गं.	20	13	वृष	10	23	5	40	19	18	5	42	19	13	5	51	19	15	5	25	18	43	25	भ. 14/23 से 27/07 तक, मंगल मिथुन में 18/25,
	26	11	मं.	27	57	कृत्ति.	5	52	वृ.	20	4	वृष			5	40	19	17	5	43	19	12	5	52	19	14	5	26	18	43	26	शुक्र पुष्य में 16/57, कामिका एकादशी व्रत (स.),
	27	12	बु.	28	2	रोहि.	7	16	ध्रु.	19	22	मिथुन	19	42	5	41	19	17	5	43	19	11	5	52	19	14	5	26	18	42	27	
	28	13	गु.	27	24	मृग.	7	57	व्या.	18	4	मिथुन			5	41	19	16	5	44	19	11	5	53	19	13	5	27	18	42	28	भ. 27/24 बाद, प्रदोष व्रत
	29	14	शु.	26	4	आर्द्रा	7	55	ह.	16	11	कर्क	25	26	5	42	19	15	5	44	19	10	5	53	19	13	5	27	18	41	29	भ. 14/45 तक, श्रावण शिवरात्रि,
	30	30	श.	24	10	पुन.	7	13	व.	13	49	कर्क			5	43	19	15	5	45	19	10	5	54	19	12	5	28	18	41	30	शनैश्चरी अमा, हरियाली अमा,
श्रावण शुक्ल	31	1	र.	21	48	पुष्य/	5	57	सि.	11	0	सिंह	28	17	5	43	19	14	5	46	19	9	5	54	19	12	5	28	18	40	31	श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
						आश्ले.	28	17																								

(A) रथोत्सव) (पुरी) (पुष्यनक्षत्र 21/44 तक), (B) श्रीविष्णु–शयनोत्सव, (C) शयनोत्सव, श्रीसत्यनारायण व्रत, (D) व्रत–नियमादि प्रारम्भ, गुरु–पूर्णिमा (व्यासपूजा), आषाढ़ी पूर्णिमा, (E) मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, अशून्यशयन व्रत, (F) 17/29, (G) 5/38,

मास पक्ष	अंग्रेजी	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्रराशि -	प्रवेशकाल घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
श्रावण शुक्ल	1	2	चं.	19 6	मघा	26 20	व्या./	7 52	सिंह		5 44	19 13	5 46	19 8	5 55	19 11	5 29	18 40	1	चन्द्रदर्शन, मु. 30,
							व.	28 32												
	2	3	मं.	16 15	पू.फा.	24 15	प.	25 6	कन्या	29 44	5 44	19 13	5 47	19 8	5 55	19 10	5 29	18 39	2	भ. 26/49 बाद, मधुश्रवा तृतीया (सन्धारा तीज),
	3	4	बु.	13 22	उ.फा.	22 12	शि.	21 42	कन्या		5 45	19 12	5 47	19 7	5 56	19 10	5 29	18 38	3	भ. 13/22 तक, सूर्य आश्ले. में 14/03, बुध वक्री 9/20,
	4	5	गु.	10 34	हस्त	20 17	सि.	18 24	कन्या		5 46	19 11	5 48	19 6	5 56	19 9	5 30	18 38	4	मंगल आर्द्रा में 15/36, नागपंचमी, श्रीकल्कि जयन्ती,
	5	6/	शु.	7 59	चित्रा	18 37	सा.	15 18	तुला	7 25	5 46	19 10	5 48	19 5	5 57	19 8	5 30	18 37	5	भ. 29/40 बाद, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती (देखें पृ. 88),
		7		29 40																सप्तमी तिथिक्षय,
	6	8	श.	27 42	स्वाती	17 15	शु.	12 27	तुला		5 47	19 9	5 49	19 5	5 57	19 8	5 31	18 36	6	भ. 16/42 तक, शुक्र आश्ले. में 12/39, श्रीदुर्गाष्टमी,
	7	9	र.	26 5	विशा.	16 14	शु.	9 53	वृश्चिक	10 27	5 48	19 9	5 50	19 4	5 58	19 7	5 31	18 36	7	
	8	10	चं.	24 52	अनु.	15 37	ब्र./	7 37	वृश्चिक		5 48	19 8	5 50	19 3	5 58	19 6	5 32	18 35	8	राहु ज्ये. 3, केतु मृग. 1 में 12/18,
							ऐं.	29 40												
	9	11	मं.	24 1	ज्येष्ठा	15 21	वै.	28 2	धनु	15 21	5 49	19 7	5 51	19 2	5 59	19 5	5 32	18 34	9	भ. 12/27 से 24/01 तक, बुध पश्चिम में अस्त 10/29(A)
	10	12	बु.	23 33	मूल	15 29	वि.	26 41	धनु		5 49	19 6	5 51	19 1	5 59	19 5	5 33	18 34	10	
	11	13	गु.	23 28	पू.षा.	15 58	प्री.	25 38	मकर	22 9	5 50	19 5	5 52	19 1	6 0	19 4	5 33	18 33	11	प्रदोष व्रत,
	12	14	शु.	23 45	उ.षा.	16 50	आ.	24 53	मकर		5 51	19 4	5 52	19 0	6 0	19 3	5 34	18 32	12	भ. 23/45 बाद,
	13	15	श.	24 27	श्रव.	18 5	सौ.	24 28	मकर		5 51	19 3	5 53	18 59	6 1	19 2	5 34	18 31	13	भ. 12/06 तक, श्री अमरनाथ यात्रा (काश्मीर), रक्षाबन्धन (B)
भाद्रपद कृष्ण	14	1	र.	25 34	धनि.	19 44	शो.	24 21	कुम्भ	6 51	5 52	19 2	5 53	18 58	6 1	19 1	5 35	18 30	14	भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, पंचक प्रारम्भ 6/51,
	15	2	चं.	27 6	शत.	21 48	अ.	24 34	कुम्भ		5 52	19 1	5 54	18 57	6 2	19 0	5 35	18 30	15	भारत स्वतन्त्रता दिवस,
	16	3	मं.	29 2	पू.भा.	24 14	सु.	25 6	मीन	17 36	5 53	19 0	5 54	18 56	6 2	18 59	5 35	18 29	16	भ. 16/04 से 29/02 तक, वक्री बुध आश्ले. कर्क में (C)
	17	4	बु.	— —	उ.भा.	27 1	धृ.	25 52	मीन		5 54	18 59	5 55	18 55	6 3	18 59	5 36	18 28	17	सं. सूर्य मघा सिंह में 11/49, मु. 45, पुण्यकाल मध्याह्न(D)
	18	4	गु.	7 16	रेव.	— —	शू.	26 49	मीन		5 54	18 58	5 55	18 54	6 3	18 58	5 36	18 27	18	
	19	5	शु.	9 43	रेव.	5 59	गं.	27 49	मेष	5 59	5 55	18 57	5 56	18 53	6 4	18 57	5 37	18 26	19	पंचक समाप्त 5/59,
	20	6	श.	12 10	अश्वि.	9 0	वृ.	28 43	मेष		5 55	18 56	5 57	18 52	6 4	18 56	5 37	18 25	20	भ. 12/10 से 25/18 तक, शनि हस्त 4 में 18/19,
	21	7	र.	14 25	भर.	11 51	ध्रु.	29 20	वृष	18 31	5 56	18 55	5 57	18 51	6 5	18 55	5 38	18 24	21	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मा.)(चन्द्रोदयव्यापिनी अष्टमी में)(E)
	22	8	चं.	16 15	कृत्ति.	14 19	व्या.	29 33	वृष		5 57	18 54	5 58	18 50	6 5	18 54	5 38	18 23	22	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वै.), (चन्द्रोदय23घं. 51 मि.), (F)
	23	9	मं.	17 27	रोहि.	16 10	ह.	29 12	मिथुन	28 50	5 57	18 53	5 58	18 49	6 6	18 53	5 38	18 23	23	भ. 29/39 बाद, सूर्य सायन कन्या में 16/51, शरद (G)
	24	10	बु.	17 52	मृग.	17 18	व.	28 13	मिथुन		5 58	18 52	5 59	18 48	6 6	18 52	5 39	18 22	24	भ. 17/52 तक, मंगल पुन. में 22/19,
	25	11	गु.	17 28	आर्द्रा	17 36	सि.	26 34	मिथुन		5 58	18 50	5 59	18 47	6 6	18 51	5 39	18 21	25	बुध पूर्व में उदित 22/00, अजा एकादशी व्रत (स.), (H)
	26	12	शु.	16 14	पुन.	17 5	व्य.	24 16	कर्क	11 17	5 59	18 49	6 0	18 46	6 7	18 50	5 40	18 20	26	बुध मार्गी 27/33, प्रदोषव्रत,
	27	13	श.	14 15	पुष्य	15 50	व.	21 23	कर्क		5 59	18 48	6 0	18 45	6 7	18 49	5 40	18 19	27	भ. 14/15 से 24/57 तक, शुक्र पू.फा. में 26/14,
	28	14	र.	11 39	आश्ले.	13 57	प.	18 2	सिंह	13 57	6 0	18 47	6 1	18 44	6 8	18 48	5 40	18 18	28	
	29	30/	चं.	8 34	मघा	11 38	शि.	14 19	सिंह		6 1	18 46	6 1	18 43	6 8	18 47	5 41	18 17	29	सोमवती अमा, कुशोत्पाटिनी अमा, पिठोरी अमा,
भाद्र. शु.		1		29 11																भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	30	2	मं.	25 42	पू.फा.	9 2	सि.	10 25	कन्या	14 22	6 1	18 45	6 2	18 42	6 9	18 46	5 41	18 16	30	गुरु वक्री 14/48, चन्द्रदर्शन, मु. 45, मेला डेरा बाबा (I)
	31	3	बु.	22 16	उ.फा./	6 21	सा./	6 26	कन्या		6 2	18 44	6 2	18 41	6 9	18 45	5 42	18 15	31	सूर्य पू.फा. में 7/45, हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया, (J)
					हस्त	27 46	शु.	26 32												

(A) पवित्रा एकादशी व्रत (स.), (B) (राखी) (13/45 से 16/24 तक)(देखें पृ. 88), श्रावणी पूर्णिमा, ऋक्–यजु उपाकर्म, श्रीसत्यनारायण व्रत, (C) 24/32, वक्री यूरेनस उ.भा. 2 में 20/07, (D) तक, शुक्र मघा सिंह में 7/46, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत(चन्द्रोदय 20घं. 43मि.), बहुला चतुर्थी, (E) (चन्द्रोदय 23 घं. 05 मि.),(F) गोकुलाष्टमी(नन्दोत्सव), श्रीदूर्वाष्टमी व्रत (देखें 88), (G) ऋतु प्रारम्भ, श्रीगुग्गा नवमी, (H) पर्युषणपर्व प्रारम्भ (जैन), (I) श्रीगोस्वाई आपा–कुराली (पं), (J) सामवेदियों का उपाकर्म, श्रीवराह जयन्ती.

मास पक्ष	सितम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
भाद्रपद शुक्ल	1	4	गु.	19	2	चित्रा	25	25	शु.	22	51	तुला	14	33	6	2	18	42	6	3	18	39	6	10	18	44	5	42	18	14	1	भ. 8 / 39 से 19 / 02 तक, श्रीसिद्धिविनायक व्रत, कलंक (A)
	2	5	शु.	16	10	स्वाती	23	29	ब्र.	19	28	तुला			6	3	18	41	6	3	18	38	6	10	18	43	5	42	18	13	2	ऋषि पंचमी,
	3	6	श.	13	45	विशा.	22	1	ऐं.	16	28	वृश्चिक	16	20	6	3	18	40	6	4	18	37	6	10	18	42	5	43	18	12	3	सूर्यषष्ठी,
	4	7	र.	11	53	अनु.	21	7	वै.	13	55	वृश्चिक			6	4	18	39	6	4	18	36	6	11	18	40	5	43	18	11	4	भ. 11 / 53 से 23 / 14 तक, बुध मघा सिंह में 26 / 18, (B)
	5	8	चं.	10	34	ज्येष्ठा	20	46	वि.	11	50	धनु	20	46	6	5	18	37	6	5	18	35	6	11	18	39	5	43	18	10	5	
	6	9	मं.	9	50	मूल	20	59	प्री.	10	11	धनु			6	5	18	36	6	5	18	34	6	12	18	38	5	44	18	9	6	बाबा श्रीचन्द नवमी(उदासीन संप्रदाय महोत्सव),
	7	10	बु.	9	37	पू.षा.	21	41	आ.	8	58	मकर	27	56	6	6	18	35	6	6	18	32	6	12	18	37	5	44	18	8	7	भ. 21 / 46 बाद, शुक्र उ.फा. में 20 / 14,
	8	11	गु.	9	54	उ.षा.	22	50	सौ.	8	8	मकर			6	6	18	34	6	6	18	31	6	13	18	36	5	45	18	6	8	भ. 9 / 54 तक, पद्मा एकादशी व्रत (स.), श्रीवामन (C)
	9	12	शु.	10	37	श्रव.	24	23	शो.	7	39	मकर			6	7	18	33	6	7	18	30	6	13	18	35	5	45	18	5	9	मंगल कर्क में 15 / 44, प्रदोष व्रत, श्रवण द्वादशी,
	10	13	श.	11	43	धनि.	26	17	अ.	7	27	कुम्भ	13	18	6	7	18	31	6	7	18	29	6	13	18	34	5	45	18	4	10	पंचक प्रारम्भ 13 / 18, शुक्र कन्या में 12 / 41,
	11	14	र.	13	10	शत.	28	31	सु.	7	32	कुम्भ			6	8	18	30	6	8	18	28	6	14	18	33	5	46	18	3	11	भ. 13 / 10 से 26 / 03 तक, श्री अनन्तचतुर्दशी व्रत, (D)
	12	15	चं.	14	56	पू.भा.	–	–	धृ.	7	52	मीन	24	22	6	8	18	29	6	8	18	27	6	14	18	32	5	46	18	2	12	
आश्विन कृष्ण	13	1	मं.	17	1	पू.भा.	7	2	शू.	8	26	मीन			6	9	18	27	6	8	18	25	6	15	18	30	5	46	18	1	13	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य उ.फा. में 25 / 39, (E)
	14	2	बु.	19	20	उ.भा.	9	49	गं.	9	12	मीन			6	10	18	26	6	9	18	24	6	15	18	29	5	47	18	0	14	मंगल पुष्य में 24 / 20, द्वितीया–श्राद्ध,
	15	3	गु.	21	50	रेव.	12	47	वृ.	10	7	मेष	12	47	6	10	18	25	6	9	18	23	6	16	18	28	5	47	17	59	15	भ. 8 / 35 से 21 / 50 तक, पंचक समाप्त 12 / 47, (F)
	16	4	शु.	24	23	अश्वि.	15	51	ध्रु.	11	7	मेष			6	11	18	24	6	10	18	22	6	16	18	27	5	48	17	58	16	प्लूटो मार्गी 23 / 52, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, चतुर्थी–श्राद्ध,
	17	5	श.	26	49	भर.	18	52	व्या.	12	6	वृष	25	35	6	11	18	22	6	10	18	21	6	16	18	26	5	48	17	57	17	सं. सूर्य कन्या में 11 / 47, मु. 15, पुण्यकाल मध्याह्न (G)
	18	6	र.	28	57	कृत्ति.	21	39	ह.	12	56	वृष			6	12	18	21	6	11	18	19	6	17	18	25	5	48	17	56	18	भ. 28 / 57 बाद, शुक्र हस्त में 13 / 56, षष्ठीश्राद्ध, चन्द्र(H)
	19	7	चं.	–	–	रोहि.	23	59	व.	13	29	वृष			6	12	18	20	6	11	18	18	6	17	18	24	5	49	17	55	19	भ. 17 / 46 तक, सप्तमी श्राद्ध,
	20	7	मं.	6	35	मृग.	25	42	सि.	13	35	मिथुन	12	56	6	13	18	19	6	12	18	17	6	18	18	22	5	49	17	53	20	बुध उ.फा. में 26 / 03, शनि चित्रा 1 में 15 / 58, अष्टमी–(I)
	21	8	बु.	7	30	आर्द्रा	26	39	व्य.	13	6	मिथुन			6	14	18	17	6	12	18	16	6	18	18	21	5	49	17	52	21	नवमीश्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,
	22	9	गु.	7	37	पुन.	26	45	व.	11	59	कर्क	20	48	6	14	18	16	6	13	18	15	6	19	18	20	5	50	17	51	22	भ. 19 / 15 बाद, बुध कन्या में 20 / 56, दशमी–श्राद्ध,
	23	10 /	शु.	6	52	पुष्य	26	0	प.	10	10	कर्क			6	15	18	15	6	13	18	13	6	19	18	19	5	50	17	50	23	भ. 6 / 52 तक, सूर्य सायन तुला में 14 / 35, विषुवदिन,(J)
		11		29	15																											एकादशी तिथिक्षय,
	24	12	श.	26	53	आश्ले.	24	28	शि. /	7	40	सिंह	24	28	6	15	18	13	6	14	18	12	6	19	18	18	5	51	17	49	24	इन्दिरा एकादशी व्रत(वै.), द्वादशीश्राद्ध, संन्यासियों का श्राद्ध,
									सि.	28	34																					
	25	13	र.	23	52	मघा	22	18	सा.	24	57	सिंह			6	16	18	12	6	14	18	11	6	20	18	17	5	51	17	48	25	भ. 23 / 52 बाद, प्रदोष व्रत, त्रयोदशीश्राद्ध, मघाश्राद्ध (K)
	26	14	चं.	20	24	पू.फा.	19	38	शु.	20	57	कन्या	24	55	6	16	18	11	6	15	18	10	6	20	18	16	5	51	17	47	26	भ. 10 / 08 तक, शनि अस्त 13 / 25, अपमृत्यु वालों का श्राद्ध,
	27	30	मं.	16	39	उ.फा.	16	41	शु.	16	42	कन्या			6	17	18	10	6	15	18	9	6	21	18	14	5	52	17	46	27	सूर्य हस्त में 17 / 09, भौमवती अमा, महालय अमावस (L)
आश्वि. शुक्ल	28	1	बु.	12	48	हस्त	13	38	ब्र.	12	23	तुला	24	8	6	18	18	8	6	16	18	7	6	21	18	13	5	52	17	45	28	आश्विन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, बुध हस्त में 7 / 56, शारद(M)
	29	2 /	गु.	9	2	चित्रा	10	41	ऐं. /	8	9	तुला			6	18	18	7	6	16	18	6	6	22	18	12	5	53	17	44	29	चन्द्र दर्शन, मु. 15, शुक्र चित्रा में 7 / 22.
		3		29	33				वै.	28	8																					तृतीया तिथिक्षय,
	30	4	शु.	26	30	स्वा. /	8	1	वि.	24	27	वृश्चिक	24	19	6	19	18	6	6	17	18	5	6	22	18	11	5	53	17	43	30	भ. 16 / 02 से 26 / 30 तक,
						विशा.	29	48																								

(A)चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (चन्द्रास्त 20घं. 42मि.), संवत्सरी महापर्व (जैन), (B) श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, श्रीराधाष्टमी, (C) जयन्ती (वामन द्वादशी), (D) श्रीसत्यनारायण व्रत, प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा – श्राद्ध (देखें पृ. 89), (E) बुध पू.फा. में 20 / 40, बुध पूर्व में अस्त 23 / 03, महालय श्राद्ध (पितृपक्ष) पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदाश्राद्ध., (F) तृतीयाश्राद्ध, (G) तक, पञ्चमीश्राद्ध, भरणी श्राद्ध, (H) षष्ठी व्रत, (I) श्राद्ध, महालक्ष्मी व्रत समाप्त (चन्द्रोदयव्यापिनी अष्टमी में), (J) दक्षिणगोल प्रारम्भ, एकादशी–श्राद्ध, इन्दिरा एकादशी व्रत(स्मा.), (K) मघा त्रयोदशी, (L) सर्वपितृ श्राद्ध, चतुर्दशी–अमा–पूर्णिमाश्राद्ध एवं अज्ञात मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध, सर्वपितृ अमा, मातामह / मातामही का श्राद्ध (देखें पृ. 89), श्राद्ध समाप्त, (M) नवरात्रारम्भ, महाराजा श्रीअग्रसेन जयन्ती.

मास पक्ष	अंग्रेजी तारीख	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
आश्विन शुक्ल	1	5	श.	24	0	अनु.	28	10	प्री.	21	14	वृश्चिक			6	19	18	5	6	17	18	4	6	23	18	10	5	53	17	42	1	उपांगललिता व्रत, शुक्र उदित–4 अक्तूबर
	2	6	र.	22	10	ज्येष्ठा	27	13	आ.	18	33	धनु	27	13	6	20	18	3	6	18	18	3	6	23	18	9	5	54	17	41	2	
	3	7	चं.	21	3	मूल	26	57	सौ.	16	25	धनु			6	21	18	2	6	19	18	2	6	24	18	8	5	54	17	40	3	भ. 21/03 बाद, सरस्वती आवाहन,
	4	8	मं.	20	38	पू.षा.	27	22	शो.	14	51	धनु			6	21	18	1	6	19	18	0	6	24	18	7	5	55	17	38	4	भ. 8/51 तक, शुक्र तुला में 16/01, शुक्र पश्चिम में (A)
	5	9	बु.	20	53	उ.षा.	28	25	अ.	13	50	मकर	9	34	6	22	18	0	6	20	17	59	6	25	18	6	5	55	17	37	5	बुध चित्रा में 23/22, महानवमी(उपवास, पूजा, बलिदान (B)
	6	10	गु.	21	44	श्रव.	30	2	सु.	13	17	मकर			6	22	17	58	6	20	17	58	6	25	18	4	5	56	17	36	6	मंगल आश्ले. में 27/50, सरस्वती विसर्जन, विजयादशमी (C)
	7	11	शु.	23	4	धनि.	—	—	धृ.	13	8	कुम्भ	19	0	6	23	17	57	6	21	17	57	6	25	18	3	5	56	17	35	7	भ. 10/24 से 23/04 तक, पंचक प्रारम्भ 19/00, शुक्र(D)
	8	12	श.	24	49	धनि.	8	5	शू.	13	20	कुम्भ			6	24	17	56	6	21	17	56	6	26	18	2	5	56	17	34	8	
	9	13	र	26	52	शत.	10	29	गं.	13	47	कुम्भ			6	24	17	55	6	22	17	55	6	26	18	1	5	57	17	33	9	बुध तुला में 23/33, शुक्र स्वा. में 24/41, प्रदोष व्रत,
	10	14	चं.	29	9	पू.भा.	13	9	वृ.	14	27	मीन	6	27	6	25	17	54	6	22	17	54	6	27	18	0	5	57	17	32	10	भ. 29/09 बाद, सूर्य चित्रा में 30/09, राहु ज्ये. 2, केतु (E)
	11	15	मं.	—	—	उ.भा.	16	0	ध्रु.	15	14	मीन			6	26	17	52	6	23	17	52	6	28	17	59	5	58	17	31	11	भ. 18/22 तक, कोजागर व्रत, कार्तिकस्नान प्रारम्भ, (F)
	12	15	बु.	7	35	रेव.	18	58	व्या.	16	8	मेष	18	58	6	26	17	51	6	24	17	51	6	28	17	58	5	58	17	30	12	पंचक समाप्त 18/58,
कार्तिक कृष्ण	13	1	गु.	10	7	अश्वि.	22	0	ह.	17	5	मेष			6	27	17	50	6	24	17	50	6	29	17	57	5	59	17	29	13	कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, बुध स्वाती में 26/49, वक्री (G)
	14	2	शु.	12	39	भर.	24	59	व.	18	0	मेष			6	28	17	49	6	25	17	49	6	29	17	56	5	59	17	28	14	भ. 25/52 बाद,
	15	3	श.	15	5	कृत्ति.	27	49	सि.	18	50	वृष	7	43	6	28	17	48	6	25	17	48	6	30	17	55	6	0	17	27	15	भ. 15/05 तक, करकचतुर्थी (करवाचौथ) (चन्द्रोदय (H)
	16	4	र.	17	17	रोहि.	30	22	व्य.	19	28	वृष			6	29	17	47	6	26	17	47	6	30	17	54	6	0	17	27	16	
	17	5	चं.	19	6	मृग.	—	—	व.	19	48	मिथुन	19	29	6	30	17	46	6	27	17	46	6	31	17	53	6	1	17	26	17	सं. सूर्य तुला में 23/46, मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न बाद,
	18	6	मं.	20	23	मृग.	8	28	प.	19	44	मिथुन			6	30	17	45	6	27	17	45	6	31	17	52	6	1	17	25	18	भ. 20/23 बाद, शनि चित्रा 2 में 6/42, बुध पश्चिम (I)
	19	7	बु.	20	59	आर्द्रा	9	59	शि.	19	8	कर्क	28	39	6	31	17	43	6	28	17	44	6	32	17	51	6	2	17	24	19	भ. 8/42 तक,
	20	8	गु.	20	49	पुन.	10	46	सि.	17	56	कर्क			6	32	17	42	6	28	17	43	6	32	17	50	6	2	17	23	20	शुक्र विशा. में 18/03, अहोई अष्टमी (पं.),
	21	9	शु.	19	50	पुष्य	10	47	सा.	16	6	कर्क			6	32	17	41	6	29	17	42	6	33	17	49	6	3	17	22	21	
	22	10	श.	18	4	आश्ले.	10	1	शु.	13	38	सिंह	10	1	6	33	17	40	6	30	17	41	6	34	17	48	6	3	17	21	22	भ. 6/57 से 18/04 तक, बुध विशा. में 18/42,
	23	11	र.	15	36	मघा/	8	30	शु.	10	34	सिंह			6	34	17	39	6	30	17	40	6	34	17	48	6	4	17	20	23	सूर्य सायन वृश्चिक में 23/59, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, (J)
						पू.फा.	30	21																								
	24	12	चं.	12	32	उ.फा.	27	44	ब्र./	7	0	कन्या	11	44	6	35	17	38	6	31	17	39	6	35	17	47	6	4	17	20	24	सूर्य स्वाती में 16/42, सोमप्रदोष व्रत, यमप्रीत्यर्थ दीपदान,
									ऐं.	27	3																					
	25	13/	मं.	9	2	हस्त	24	47	वै.	22	49	कन्या			6	35	17	37	6	32	17	38	6	35	17	46	6	5	17	19	25	भ 9/02 से 19/09 तक, श्रीहनुमान् जयन्ती (उ.भा.), (K)
		14		29	16																											चतुर्दशी तिथिक्षय,
	26	30	बु.	25	26	चित्रा	21	44	वि.	18	29	तुला	11	15	6	36	17	36	6	32	17	37	6	36	17	45	6	5	17	18	26	दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, श्रीमहावीरनिर्वाण दिवस (जैन),
कार्तिक शु.	27	1	गु.	21	41	स्वाती	18	44	प्री.	14	10	तुला			6	37	17	35	6	33	17	37	6	37	17	44	6	6	17	17	27	कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गोवर्धन पूजा, बलिपूजा, अन्न-(L)
	28	2	शु.	18	13	विशा.	15	59	आ/.	10	2	वृश्चिक	10	38	6	38	17	34	6	34	17	36	6	37	17	43	6	7	17	16	28	चन्द्रदर्शन, मु. 30,शुक्र वृश्चिक में 19/03, यमद्वितीया (M)
									सौ.	30	13																					
	29	3	श.	15	12	अनु.	13	41	शो.	26	50	वृश्चिक			6	38	17	33	6	34	17	35	6	38	17	43	6	7	17	16	29	भ. 26/00 बाद, बुध वृश्चिक में 15/21,
	30	4	र.	12	47	ज्येष्ठा	11	57	अ.	23	59	धनु	11	57	6	39	17	33	6	35	17	34	6	39	17	42	6	8	17	15	30	भ. 12/47 तक, मंगल मघा सिंह में 22/03,
	31	5	चं.	11	3	मूल	10	54	सु.	21	43	धनु			6	40	17	32	6	36	17	33	6	39	17	41	6	8	17	14	31	बुध अनु. में 24/20, शुक्र अनु. में 11/23, शनि उदित,(N)

(A) उदित 18/01, सरस्वती पूजन, महाष्टमी, श्रीदुर्गाष्टमी, (B) के लिए), सरस्वती के लिए बलिदान, नवरात्र समाप्त, (C) (दशहरा), आयुधपूजन, अपराजिता–पूजन, सीमोल्लंघन, श्रीमध्वाचार्य जयन्ती, (D) बाल्य समाप्त 18/01, भरतमिलाप, पापांकुशा एकादशी व्रत (स.), (E) रोहि. 4 में 10/15, (F) श्रीसत्यनारायण व्रत, शरत्पूर्णिमा, श्रीमहर्षि वाल्मीकि जयन्ती (G) गुरु अश्वि. 4 में 13/40, (H) 19/44), श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (I) उदित 14/23, (J) रमा एकादशी व्रत (स.), गोवत्स द्वादशी, (K) धन त्रयोदशी, नरक चतुर्दशी (पर अरुणोदय वाली), (L) कूट, गोक्रीडा, (M) [illegible], श्रीविश्वकर्मा पूजा, (N) 9/47, [illegible]

मास पक्ष	नवम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ सूर्योदय		चण्डीगढ़ सूर्यास्त		दिल्ली सूर्योदय		दिल्ली सूर्यास्त		जयपुर सूर्योदय		जयपुर सूर्यास्त		वाराणसी सूर्योदय		वाराणसी सूर्यास्त		तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।) .
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
कार्तिक शुक्ल	1	6	मं.	10	6	पू.षा.	10	37	धृ.	20	5	मकर	16	40	6	41	17	31	6	37	17	32	6	40	17	40	6	9	17	14	1	सूर्यषष्ठी (बिहार),
	2	7	बु.	9	56	उ.षा.	11	6	शू.	19	3	मकर			6	42	17	30	6	37	17	32	6	41	17	40	6	10	17	13	2	भ. 9/56 से 22/14 तक,
	3	8	गु.	10	31	श्रव.	12	18	गं.	18	35	कुम्भ	25	9	6	42	17	29	6	38	17	31	6	41	17	39	6	10	17	12	3	पंचक प्रारम्भ 25/09, गोपाष्टमी, अक्षय नवमी, (A)
	4	9	शु.	11	46	धनि.	14	9	वृ.	18	35	कुम्भ			6	43	17	28	6	39	17	30	6	42	17	38	6	11	17	12	4	
	5	10	श.	13	34	शत.	16	30	ध्रु.	18	59	कुम्भ			6	44	17	28	6	40	17	29	6	43	17	38	6	12	17	11	5	भ. 26/41 बाद,
	6	11	र.	15	46	पू.भा.	19	13	व्या.	19	39	मीन	12	30	6	45	17	27	6	40	17	29	6	43	17	37	6	12	17	10	6	भ. 15/46 तक, सूर्य विशा. में 24/47, देवप्रबोधिनी (B)
	7	12	चं.	18	13	उ.भा.	22	8	ह.	20	28	मीन			6	46	17	26	6	41	17	28	6	44	17	36	6	13	17	10	7	वक्री गुरु अश्वि. 3 में 16/27, तुलसीविवाह, चातुर्मास्य (C)
	8	13	मं.	20	46	रेव.	25	9	व.	21	23	मेष	25	9	6	46	17	25	6	42	17	27	6	45	17	36	6	14	17	9	8	पंचक समाप्त 25/09, भौमप्रदोष व्रत, श्रीवैकुण्ठ चतुर्दशी(D)
	9	14	बु.	23	19	अश्वि.	28	8	सि.	22	16	मेष			6	47	17	25	6	43	17	27	6	45	17	35	6	14	17	9	9	भ. 23/19 बाद, नेप्च्यून मार्गी 24/26,
	10	15	गु.	25	46	भर.	—	—	व्य.	23	5	मेष			6	48	17	24	6	43	17	26	6	46	17	35	6	15	17	8	10	भ. 12/33 तक, शुक्र ज्ये. में 28/53, त्रिपुरोत्सव, (E)
मार्गशीर्ष कृष्ण	11	1	शु.	28	1	भर.	7	1	व.	23	46	वृष	13	42	6	49	17	23	6	44	17	26	6	47	17	34	6	16	17	8	11	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, बुध ज्ये. मे 8/21, पद्मक (F)
	12	2	श.	30	0	कृत्ति.	9	42	प.	24	15	वृष			6	50	17	23	6	45	17	25	6	48	17	34	6	16	17	7	12	
	13	3	र.	—	—	रोहि.	12	6	शि.	24	29	मिथुन	25	10	6	51	17	22	6	46	17	25	6	48	17	33	6	17	17	7	13	भ. 18/50 बाद,
	14	3	चं.	7	39	मृग.	14	9	सि.	24	25	मिथुन			6	51	17	22	6	46	17	24	6	49	17	33	6	18	17	6	14	भ. 7/39 तक,श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, बालदिवस,
	15	4	मं.	8	51	आर्द्रा	15	46	सा.	23	58	मिथुन			6	52	17	21	6	47	17	24	6	50	17	32	6	18	17	6	15	शनि चित्रा 3 तुला में 10/11,
	16	5	बु.	9	33	पुन.	16	53	शु.	23	6	कर्क	10	39	6	53	17	21	6	48	17	23	6	51	17	32	6	19	17	6	16	सं. सूर्य वृश्चिक में 23/34, मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न बाद,
	17	6	गु.	9	40	पुष्य	17	24	शु.	21	45	कर्क			6	54	17	20	6	49	17	23	6	51	17	31	6	20	17	5	17	भ. 9/40 से 21/25 तक,
	18	7	शु.	9	9	आश्ले.	17	18	ब्र.	19	54	सिंह	17	18	6	55	17	20	6	50	17	22	6	52	17	31	6	21	17	5	18	श्रीकालाष्टमी (श्रीभैरवाष्टमी),
	19	8/	श.	7	59	मघा	16	35	ऐं.	17	33	सिंह			6	56	17	19	6	50	17	22	6	53	17	31	6	21	17	5	19	सूर्य अनु. में 30/54,
		9		30	12																											नवमी तिथिक्षय,
	20	10	र.	27	51	पू.फा.	15	15	वै.	14	42	कन्या	20	50	6	57	17	19	6	51	17	22	6	54	17	30	6	22	17	4	20	भ. 17/02 से 27/51 तक,
	21	11	चं.	25	2	उ.फा.	13	24	वि.	11	26	कन्या			6	57	17	18	6	52	17	21	6	54	17	30	6	23	17	4	21	शुक्र मूल धनु में 22/36, उत्पन्ना एकादशी व्रत(स.),
	22	12	मं.	21	51	हस्त	11	8	प्री./	7	48	तुला	21	53	6	58	17	18	6	53	17	21	6	55	17	30	6	23	17	4	22	सूर्य सायन धनु में 21/38,
									आ.	27	55																					
	23	13	बु.	18	28	चित्रा/	8	35	सौ.	23	54	तुला			6	59	17	18	6	54	17	21	6	56	17	30	6	24	17	4	23	भ. 18/28 से 28/45 तक, प्रदोष व्रत,
						स्वाती	29	53																								
	24	14	गु.	15	1	विशा.	27	13	शो.	19	52	वृश्चिक	21	52	7	0	17	18	6	54	17	20	6	57	17	29	6	25	17	4	24	बुध वक्री 12/50, बलिदानदिन श्रीगुरु तेगबहादुर जी(G)
	25	30	शु.	11	39	अनु.	24	44	अ.	15	56	वृश्चिक			7	1	17	17	6	55	17	20	6	57	17	29	6	26	17	3	25	
मार्गशीर्ष शुक्ल	26	1/	श.	8	34	ज्येष्ठा	22	37	सु.	12	14	धनु	22	37	7	2	17	17	6	56	17	20	6	58	17	29	6	26	17	3	26	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15. मंगल (H)
		2		29	53																											द्वितीया तिथिक्षय,
	27	3	र.	27	46	मूल	21	0	धृ./	8	54	धनु			7	3	17	17	6	57	17	20	6	59	17	29	6	27	17	3	27	
									शू.	30	2																					
	28	4	चं.	26	19	पू.षा.	20	2	गं.	27	43	मकर	25	54	7	3	17	17	6	58	17	20	7	0	17	29	6	28	17	3	28	भ. 15/03 से 26/19 तक, बुध पश्चिम में अस्त 19/37,
	29	5	मं.	25	38	उ.षा.	19	47	वृ.	26	0	मकर			7	4	17	16	6	58	17	20	7	1	17	29	6	29	17	3	29	वक्री यूरेनस उ.भा. 1 में 10/12, बलिदानदिन श्रीगुरु (I)
	30	6	बु.	25	45	श्रव.	20	18	ध्रु.	24	55	मकर			7	5	17	16	6	59	17	20	7	1	17	29	6	29	17	3	30	स्कन्द(गुह)षष्ठी, चम्पा षष्ठी,

(A) कूष्माण्ड नवमी(देखें पृ 89), (B) एकादशी व्रत (स.), भीष्मपंचक प्रारम्भ, (C) व्रत-नियमादि समाप्त, (D) (देखें पृ. 89), (E) कार्तिक स्नान समाप्त, भीष्म पंचक समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत, मेला पुष्करराज(राज.), श्रीगुरु नानक जयन्ती, कार्तिक पूर्णिमा, (F) योग (7/01 से अगले दिन 9/42 तक)(पुष्करस्नान माहात्म्य)(देखें पृ. 90), (G) (नानकशाही अनुसारी), (H) पू.फा. में 18/18, (I) तेगबहादुर जी, (पुरातन परम्परा अनुसार).

मास पक्ष	दिसम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्रराशि -	प्रवेशकाल घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
मार्गशीर्ष शुक्ल	1	7	गु.	26 39	धनि.	21 35	व्या.	24 25	कुम्भ	8 51	7 6	17 16	7 0	17 19	7 2	17 29	6 30	17 3	1	भ. 26/39 बाद, पचक प्रारम्भ 8/51, मित्रसप्तमी,
	2	8	शु.	28 14	शत.	23 33	ह.	24 26	कुम्भ		7 7	17 16	7 1	17 19	7 3	17 29	6 31	17 3	2	भ. 15/27 तक, शुक्र पू.षा. में 16/33,
	3	9	श.	30 22	पू.भा.	26 3	व.	24 53	मीन	19 23	7 8	17 16	7 2	17 19	7 4	17 29	6 31	17 3	3	सूर्य ज्ये. में 11/08,
	4	10	र.	— —	उ.भा.	28 55	सि.	25 38	मीन		7 8	17 16	7 2	17 20	7 4	17 29	6 32	17 3	4	
	5	10	चं.	8 50	रेव.	— —	व्य.	26 31	मीन		7 9	17 16	7 3	17 20	7 5	17 29	6 33	17 3	5	भ. 22/09 बाद, वक्री बुध अनु. में 10/29,
	6	11	मं.	11 27	रेव.	7 57	व.	27 25	मेष	7 57	7 10	17 16	7 4	17 20	7 6	17 29	6 34	17 4	6	भ. 11/27 तक, पंचक समाप्त 7/57, श्रीगीता जयन्ती.(A)
	7	12	बु.	14 2	अश्वि.	10 58	प.	28 13	मेष		7 11	17 16	7 5	17 20	7 6	17 29	6 34	17 4	7	प्रदोष व्रत,
	8	13	गु.	16 24	भर.	13 49	शि.	28 48	वृष	20 28	7 11	17 17	7 5	17 20	7 7	17 29	6 35	17 4	8	
	9	14	शु.	18 27	कृत्ति.	16 21	सि.	29 7	वृष		7 12	17 17	7 6	17 20	7 8	17 30	6 36	17 4	9	भ. 18/27 बाद, ग्रहणशूल,
	10	15	श.	20 6	रोहि.	18 31	सा.	29 7	वृष		7 13	17 17	7 7	17 20	7 9	17 30	6 36	17 4	10	भ 7/17 तक, यूरेनस मार्गी 12/37, बुध पूर्व में उदित (B)
पौष कृष्ण	11	1	र.	21 19	मृग.	20 15	शु.	28 47	मिथुन	7 26	7 14	17 17	7 7	17 21	7 9	17 30	6 37	17 5	11	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, ग्रहणशूल,
	12	2	चं.	22 4	आर्द्रा	21 34	शु.	28 6	मिथुन		7 14	17 17	7 8	17 21	7 10	17 30	6 38	17 5	12	वक्री गुरु अश्वि. 2 में 9/01, राहु ज्ये. 1, केतु रोहि. 3 (C)
	13	3	मं.	22 21	पुन.	22 26	ब्र.	27 3	कर्क	16 15	7 15	17 18	7 9	17 21	7 10	17 31	6 38	17 5	13	भ. 10/13 से 22/21 तक, बुध मार्गी 31/13, शुक्र (D)
	14	4	बु.	22 12	पुष्य	22 51	ऐं.	25 40	कर्क		7 16	17 18	7 9	17 21	7 11	17 31	6 39	17 6	14	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	15	5	गु.	21 36	आश्ले.	22 51	वै.	23 56	सिंह	22 51	7 16	17 18	7 10	17 22	7 12	17 31	6 39	17 6	15	शुक्र मकर में 27/49,
	16	6	शु.	20 35	मघा	22 27	वि.	21 53	सिंह		7 17	17 18	7 11	17 22	7 12	17 32	6 40	17 6	16	भ. 20/35 बाद, सं. सूर्य मूल धनु में 14/13, मु. 30, (E)
	17	7	श.	19 9	पू.फा.	21 38	प्री.	19 30	कन्या	27 22	7 18	17 19	7 11	17 22	7 13	17 32	6 41	17 7	17	भ. 7/52 तक,
	18	8	र.	17 21	उ.फा.	20 28	आ.	16 49	कन्या		7 18	17 19	7 12	17 23	7 14	17 32	6 41	17 7	18	
	19	9	चं.	15 12	हस्त	18 58	सौ.	13 52	तुला	30 6	7 19	17 20	7 12	17 23	7 14	17 33	6 42	17 7	19	भ. 26/00 बाद, शनि चित्रा 4 में 8/18,
	20	10	मं.	12 47	चित्रा	17 12	शो.	10 41	तुला		7 19	17 20	7 13	17 24	7 15	17 33	6 42	17 8	20	भ. 12/47 तक,
	21	11	बु.	10 9	स्वाती	15 15	अ./ सु.	7 20 / 27 52	तुला		7 20	17 21	7 14	17 24	7 15	17 34	6 43	17 8	21	यूरेनस उ.भा. 2 में 17/05, सफला एकादशी व्रत(स.),
	22	12/ 13	गु.	7 25 / 28 40	विशा.	13 12	धृ.	24 23	वृश्चिक	7 43	7 20	17 21	7 14	17 25	7 16	17 34	6 43	17 9	22	भ. 28/40 बाद, प्रदोष व्रत, सूर्य सायन मकर में 11/0,(F) त्रयोदशी तिथिक्षय,
	23	14	शु.	26 1	अनु.	11 10	शू.	20 58	वृश्चिक		7 21	17 22	7 15	17 25	7 16	17 35	6 44	17 9	23	भ. 15/21 तक, शुक्र श्रव. में 30/22,
	24	30	श.	23 36	ज्येष्ठा	9 17	गं.	17 43	धनु	9 17	7 21	17 22	7 15	17 26	7 17	17 35	6 44	17 10	24	बुध ज्ये. में 19/16, शनैश्चरी अमा,
पौष शुक्ल	25	1	र.	21 34	मूल/ पू.षा.	7 41 / 30 30	वृ.	14 44	धनु		7 22	17 23	7 15	17 26	7 17	17 36	6 45	17 10	25	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गुरु मार्गी 27/38,
	26	2	चं.	20 2	उ.षा.	29 51	ध्रु.	12 7	मकर	12 17	7 22	17 23	7 16	17 27	7 18	17 36	6 45	17 11	26	चन्द्रदर्शन, मु. 45, जोड़मेला श्रीफतेहगढ़ साहिब (पं.),
	27	3	मं.	19 6	श्रव.	29 51	व्या.	9 58	मकर		7 23	17 24	7 16	17 27	7 18	17 37	6 46	17 12	27	भ. 31/00 बाद,
	28	4	बु.	18 54	धनि.	30 33	ह./ व.	8 20 / 31 17	कुम्भ	18 7	7 23	17 24	7 17	17 28	7 18	17 38	6 46	17 12	28	भ. 18/54 तक, पंचक प्रारम्भ 18/07,
	29	5	गु.	19 26	शत.	— —	सि.	30 48	कुम्भ		7 23	17 25	7 17	17 29	7 19	17 38	6 46	17 13	29	सूर्य पू.षा. में 16/23,
	30	6	शु.	20 42	शत.	7 59	व्य.	30 51	मीन	27 30	7 24	17 26	7 17	17 29	7 19	17 39	6 47	17 13		
	31	7	श.	22 36	पू.भा.	10 4	व.	31 19	मीन		7 24	17 26	7 18	17 30	7 19	17 39	6 47	17 14	31	भ. 22/36 बाद, जन्मदिन श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी,

चन्द्रग्रहण 10 दिसंबर

(A) मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), (B) 11/13, श्रीदत्त जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (देखें पृ. 14), (C) में 7/53, ग्रहणशूल, (D) उ.षा. में 11/04, ग्रहणशूल, (E) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (F) उत्तर अयन एवं शिशिरऋतु प्रारम्भ,

श्री वि. सं 2068 — **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** — **जनवरी, सन् 2012 ई.**

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
पौष शुक्ल	1	8	र.	24	58	उ.भा.	12	41	प.	–	–	मीन			7	24	17	27	7	18	17	31	7	20	17	40	6	47	17	15	1	भ. 11/48 तक, इंग्लिश नववर्ष (2012 ई.) प्रारम्भ,
	2	9	चं.	27	35	रेव.	15	39	प.	8	6	मेष	15	39	7	24	17	28	7	18	17	31	7	20	17	41	6	48	17	15	2	पंचक समाप्त 15/39, प्लूटो पू.षा. 1 में 12/28,
	3	10	मं.	30	12	अश्वि.	18	42	शि.	9	0	मेष			7	25	17	29	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	3	मंगल उ.फा. में 17/57, बुध मूल धनु में 31/13, (A)
	4	11	बु.	–	–	भर.	21	38	सि.	9	52	वृष	28	19	7	25	17	29	7	19	17	33	7	20	17	42	6	48	17	17	4	भ. 19/24 बाद,
	5	11	गु.	8	35	कृत्ति.	24	14	सा.	10	33	वृष			7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	48	17	17	5	भ. 8/35 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
	6	12	शु.	10	33	रोहि.	26	21	शु.	10	54	वृष			7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	44	6	49	17	18	6	प्रदोष व्रत,
	7	13	श.	11	58	मृग.	27	54	शु.	10	50	मिथुन	15	12	7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	7	
	8	14	र.	12	47	आर्द्रा	28	53	ब्र.	10	19	मिथुन			7	25	17	32	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	भ. 12/47 से 24/54 तक, गुरु अश्वि. 3 में 23/48, (B)
	9	15	चं.	13	0	पुन.	29	19	ऐं.	9	21	कर्क	23	15	7	25	17	33	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	20	9	शुक्र कुम्भ में 13/38, पौषी पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ,
माघ कृष्ण	10	1	मं.	12	40	पुष्य	29	15	वै./	7	58	कर्क			7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	47	6	49	17	21	10	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
									वि.	30	11																					
	11	2	बु.	11	52	आश्ले.	28	48	प्री.	28	5	सिंह	28	48	7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	22	11	भ. 23/17 बाद, सूर्य उ.षा. में 18/25,
	12	3	गु.	10	40	मघा	28	2	आ.	25	43	सिंह			7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	23	12	भ. 10/40 तक, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत (C)
	13	4	शु.	9	11	पू.फा.	27	1	सौ.	23	10	सिंह			7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	23	13	बुध पू.षा. में 12/05, लोहड़ी (पं.),
	14	5/	श.	7	28	उ.फा.	25	51	शो.	20	29	कन्या	8	44	7	25	17	37	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	भ. 29/36 बाद, सं. सूर्य मकर में 24/58, मु. 45, (D)
		6		29	36																											षष्ठी तिथिक्षय
	15	7	र.	27	38	हस्त	24	35	अ.	17	42	कन्या			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	25	15	भ. 16/37 तक, पोंगल (द.भा.),
	16	8	चं.	25	37	चित्रा	23	14	सु.	14	51	तुला	11	55	7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	26	16	
	17	9	मं.	23	33	स्वाती	21	52	धृ.	11	58	तुला			7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	17	बुध पूर्व में अस्त 8/36,
	18	10	बु.	21	30	विशा.	20	30	शू./	9	4	वृश्चिक	14	50	7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	भ. 10/32 से 21/30 तक,
									गं.	30	11																					
	19	11	गु.	19	30	अनु.	19	10	वृ.	27	22	वृश्चिक			7	24	17	42	7	19	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
	20	12	शु.	17	35	ज्येष्ठा	17	56	ध्रु.	24	37	धनु	17	56	7	24	17	43	7	18	17	46	7	21	17	54	6	49	17	29	20	प्रदोष व्रत, सूर्य सायन कुम्भ में 21/40,
	21	13	श.	15	50	मूल	16	51	व्या.	22	2	धनु			7	24	17	44	7	18	17	46	7	20	17	55	6	49	17	29	21	भ. 15/50 से 27/05 तक, बुध उ.षा. में 28/26, (E)
	22	14	र.	14	19	पू.षा.	16	1	ह.	19	40	मकर	21	52	7	23	17	45	7	18	17	47	7	20	17	56	6	48	17	30	22	
	23	30	चं.	13	9	उ.षा.	15	32	व.	17	35	मकर			7	23	17	45	7	18	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	23	मंगल वक्री 30/24, बुध मकर में 30/55, सोमवती अमा, (F)
माघ शुक्ल	24	1	मं.	12	26	श्रव.	15	29	सि.	15	51	कुम्भ	27	39	7	23	17	46	7	17	17	49	7	20	17	58	6	48	17	32	24	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, पंचक प्रारम्भ (G)
	25	2	बु.	12	15	धनि.	15	59	व्य.	14	34	कुम्भ			7	22	17	47	7	17	17	50	7	19	17	58	6	48	17	32	25	शुक्र पू.भा. में 25/44,
	26	3	गु.	12	42	शत.	17	5	व.	13	46	कुम्भ			7	22	17	48	7	16	17	51	7	19	17	59	6	47	17	33	26	भ. 25/15 बाद, गौरी तृतीया(गोंतरी), तिल-वरद- (H)
	27	4	शु.	13	47	पू.भा.	18	48	प.	13	27	मीन	12	19	7	21	17	49	7	16	17	51	7	19	18	0	6	47	17	34	27	भ. 13/47 तक,
	28	5	श.	15	30	उ.भा.	21	7	शि.	13	37	मीन			7	21	17	50	7	16	17	52	7	18	18	1	6	47	17	35	28	श्री(वसन्त)पंचमी, लक्ष्मी/सरस्वती पूजन,
	29	6	र.	17	45	रेव.	23	53	सि.	14	11	मेष	23	53	7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	2	6	46	17	35	29	पंचक समाप्त 23/53,
	30	7	चं.	20	19	अश्वि.	26	55	सा.	15	1	मेष			7	20	17	52	7	15	17	54	7	17	18	2	6	46	17	36	30	भ. 20/19 बाद, बुध श्रव. में 10/26, रथ सप्तमी (I)
	31	8	मं.	22	59	भर.	29	59	शु.	15	58	मेष			7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	3	6	46	17	37	31	भ. 9/39 तक, भीष्माष्टमी,

(A) शुक्र धनि. में 26/47, (B) श्रीसत्यनारायण व्रत, (C) (चन्द्रोदय 20/57), (D) पुण्यकाल अगले दिन 16/56 तक, शुक्र शत. में 25/02, मकर संक्रान्ति, (E) श्रीमेरु त्रयोदशी (जैन), (F) मौनी अमा, (G) 27/39, सूर्य श्रव. में 20/42, (H) कुन्द चतुर्थी, भारत गणतन्त्र दिवस, (I) (पूर्वारुणोदय वाली), आरोग्य सप्तमी, मर्यादा महोत्सव (जैन).

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
माघ शुक्ल	1	9	बु.	25	28	कृत्ति.	--	–	शु.	16	49	वृष	12	43	7	19	17	54	7	14	17	56	7	16	18	4	6	45	17	38	1	
	2	10	गु.	27	31	कृत्ति.	8	48	ब्र.	17	25	वृष			7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	5	6	45	17	38	2	
	3	11	शु.	28	56	रोहि.	11	10	ऐं.	17	36	मिथुन	24	6	7	17	17	55	7	13	17	57	7	15	18	6	6	44	17	39	3	भ. 16/14 से 28/56 तक, शुक्र मीन में 10/29, (A)
	4	12	श.	29	38	मृग.	12	53	वै.	17	16	मिथुन			7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	40	4	भीष्म द्वादशी,
	5	13	र.	29	34	आर्द्रा	13	53	वि.	16	21	मिथुन			7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	शुक्र उ.भा. मे 29/57, प्रदोष व्रत,
	6	14	चं.	23	47	पुन.	14	10	प्री.	14	51	कर्क	8	10	7	15	17	58	7	11	18	0	7	14	18	8	6	43	17	41	6	भ. 28/47 बाद, सूर्य धनि. में 23/51, बुध धनि. मे (B)
	7	15	मं.	27	23	पुष्य	13	47	आ.	12	50	कर्क			7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	भ. 16/05 तक, शनि वक्री 19/34, श्रीसत्यनारायण (C)
फाल्गुन कृष्ण	8	1	बु.	25	31	आश्ले.	12	51	सौ.	10	22	सिंह	12	51	7	14	18	0	7	9	18	1	7	12	18	9	6	42	17	43	8	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	9	2	गु.	23	18	मघा	11	30	शो./	7	32	सिंह			7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	9	
									अ.	28	28																					
	10	3	शु.	20	53	पू.फा.	9	52	सु.	25	16	कन्या	15	26	7	12	18	1	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	भ. 10/06 से 20/53 तक, बुध कुम्भ में 24/10,
	11	4	श.	18	23	उ.फा./	8	7	धृ.	22	2	कन्या			7	11	18	2	7	7	18	4	7	11	18	12	6	40	17	45	11	गुरु अश्वि. 4 में 20/16, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
						हस्त	30	21																								
	12	5	र.	15	57	चित्रा	28	41	शू.	18	51	तुला	17	30	7	11	18	3	7	6	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	12	वक्री मंगल पू.फा. में 12/20, राहु अनु-4, केतु रोहि. 2 (D)
	13	6	चं.	13	39	स्वाती	27	12	गं.	15	47	तुला			7	10	18	4	7	6	18	5	7	9	18	13	6	38	17	46	13	भ. 13/39 से 24/36 तक, सं. सूर्य कुम्भ में 13/58, (E)
	14	7	मं.	11	32	विशा.	25	55	वृ.	12	53	वृश्चिक	20	13	7	9	18	5	7	5	18	6	7	8	18	14	6	38	17	47	14	बुध शत. में 16/16,
	15	8	बु.	9	39	अनु.	24	53	ध्रु.	10	10	वृश्चिक			7	8	18	6	7	4	18	7	7	8	18	14	6	37	17	47	15	
	16	9/	गु.	8	1	ज्येष्ठा	24	5	व्या./	7	38	धनु	24	5	7	7	18	6	7	3	18	7	7	7	18	15	6	36	17	48	16	भ. 19/20 से 30/37 तक,
		10		30	37				ह.	29	19																					दशमी तिथिक्षय
	17	11	शु.	29	29	मूल	23	32	व.	27	12	धनु			7	6	18	7	7	2	18	8	7	6	18	16	6	35	17	49	17	शुक्र रेव. में 15/12, विजया एकादशी व्रत(स्मा.),
	18	12	श.	28	38	पू.षा.	23	15	सि.	25	18	मकर	29	14	7	5	18	8	7	1	18	9	7	5	18	16	6	35	17	49	18	विजया एकादशी व्रत (वै.),
	19	13	र.	28	4	उ.षा.	23	16	व्य.	23	37	मकर			7	4	18	9	7	1	18	10	7	4	18	17	6	34	17	50	19	भ. 28/04 बाद, सूर्य शत. में 28/24, प्रदोष व्रत, सूर्य (F)
	20	14	चं.	27	52	श्रव.	23	36	व.	22	13	मकर			7	3	18	10	7	0	18	10	7	3	18	18	6	33	17	50	20	भ. 15/59 तक, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत,
	21	30	मं.	28	4	धनि.	24	19	प.	21	7	कुम्भ	11	54	7	2	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	32	17	51	21	पंचक प्रारम्भ 11/54, बुध पू.भा. में 22/11, भौमवती अमा,
फाल्गुन शुक्ल	22	1	बु.	28	45	शत.	25	30	शि.	20	23	कुम्भ			7	1	18	11	6	58	18	12	7	2	18	19	6	32	17	52	22	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, नेप्च्यून शत. 1 में 13/07,
	23	2	गु.	29	56	पू.भा.	27	10	सि.	20	2	मीन	20	42	7	0	18	12	6	57	18	12	7	1	18	20	6	31	17	52	23	चन्द्रदर्शन, मु. 30, बुध पश्चिम में उदित 21/32, (G)
	24	3	शु.	–	–	उ.भा.	29	20	सा.	20	4	मीन			6	59	18	13	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	24	
	25	3	श.	7	39	रेव.	–	–	शु.	20	29	मीन			6	58	18	13	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	53	25	भ. 20/45 बाद,
	26	4	र.	9	50	रेव.	7	57	शु.	21	14	मेष	7	57	6	57	18	14	6	54	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	भ. 9/50 तक, पंचक समाप्त 7/57,
	27	5	चं.	12	22	अश्वि.	10	55	ब्र.	22	11	मेष			6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	55	27	बुध मीन में 16/10,
	28	6	मं.	15	4	भर.	14	3	ऐं.	23	11	वृष	20	49	6	55	18	16	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	[illegible]	28	
	29	7	बु.	17	40	कृत्ति.	17	6	वै.	24	4	वृष			6	54	18	16	6	51	18	17	6	55	18	23	6	25	17	56	29	भ. 17/40 से 30/48 तक, बुध उ.भा. में 19/50, (H)

(A) जया एकादशी व्रत (स.), (B) 30/04, (C) व्रत, माघी पूर्णिमा, जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी, माघस्नान समाप्त, (D) में 29/23, (E) मु. 15, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (F) सायन मीन में 11/48, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, (G) अवतारदिन श्रीरामकृष्ण परमहंस, (H) शुक्र अश्वि. मेष में 7/22.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति-काल (घं. मि.)	नक्षत्र	समाप्ति-काल (घं. मि.)	योग	समाप्ति-काल (घं. मि.)	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल (घं. मि.)	चण्डीगढ़ सूर्योदय (घं. मि.)	चण्डीगढ़ सूर्यास्त (घं. मि.)	दिल्ली सूर्योदय (घं. मि.)	दिल्ली सूर्यास्त (घं. मि.)	जयपुर सूर्योदय (घं. मि.)	जयपुर सूर्यास्त (घं. मि.)	वाराणसी सूर्योदय (घं. मि.)	वाराणसी सूर्यास्त (घं. मि.)	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
फाल्गुन शुक्ल	1	8	गु.	19 55	रोहि.	19 50	वि.	24 38	वृष		6 53	18 17	6 50	18 17	6 54	18 24	6 24	17 56	1	होलाष्टक प्रारम्भ,
	2	9	शु.	21 34	मृग.	21 59	प्री.	24 44	मिथुन	8 59	6 52	18 18	6 49	18 18	6 53	18 25	6 24	17 57	2	गुरु भर. 1 में 25/31, [होलाष्टक–1 से 8 मार्च]
	3	10	श.	22 28	आर्द्रा	23 25	आ.	24 14	मिथुन		6 50	18 19	6 48	18 18	6 52	18 25	6 23	17 57	3	
	4	11	र.	22 30	पुन.	24 1	सौ.	23 5	कर्क	17 57	6 49	18 19	6 47	18 19	6 51	18 26	6 22	17 58	4	भ. 10/29 से 22/30 तक, सूर्य पू.भा. में 10/39. (A)
	5	12	चं.	21 42	पुष्य	23 49	शो.	21 16	कर्क		6 48	18 20	6 46	18 20	6 50	18 26	6 21	17 58	5	गोविन्द द्वादशी,
	6	13	मं.	20 7	आश्ले.	22 50	अ.	18 51	सिंह	22 50	6 47	18 21	6 45	18 20	6 49	18 27	6 20	17 59	6	भौमप्रदोष व्रत,
	7	14	बु.	17 53	मघा	21 15	सु.	15 53	सिंह		6 46	18 21	6 43	18 21	6 48	18 27	6 19	17 59	7	भ. 17/53 से 28/31 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत. (B)
	8	15	गु.	15 9	पू.फा.	19 12	धृ.	12 31	कन्या	24 38	6 45	18 22	6 42	18 22	6 47	18 28	6 18	18 0	8	जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु, होलाष्टक समाप्त,
चैत्र कृष्ण	9	1	शु.	12 7	उ.फा.	16 52	शू./ गं.	8 53 29 6	कन्या		6 43	18 23	6 41	18 22	6 46	18 28	6 17	18 0	9	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, वसन्तोत्सव, होलामेला (C)
	10	2/ 3	श.	8 55 29 45	हस्त	14 25	वृ.	25 18	तुला	25 13	6 42	18 23	6 40	18 23	6 45	18 29	6 16	18 1	10	भ. 19/20 से 29/45 तक, तृतीया तिथिक्षय,
	11	4	र.	26 44	चित्रा	12 2	धु.	21 37	तुला		6 41	18 24	6 39	18 23	6 44	18 30	6 15	18 1	11	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	12	5	चं.	24 0	स्वाती	9 51	व्या.	18 8	वृश्चिक	26 24	6 40	18 25	6 38	18 24	6 43	18 30	6 14	18 2	12	बुध वक्री 13/19, शुक्र भरणी में 10/06,
	13	6	मं.	21 38	विशा./ अनु.	7 58 30 30	ह.	14 57	वृश्चिक		6 39	18 25	6 37	18 25	6 42	18 31	6 13	18 2	13	भ. 21/38 बाद, बुध पश्चिम में अस्त 11/45,
	14	7	बु.	19 42	ज्येष्ठा	29 28	व.	12 6	धनु	29 28	6 37	18 26	6 36	18 25	6 41	18 31	6 12	18 3	14	भ. 8/40 तक, सं. सूर्य मीन में 10/50, मु. 15, पुण्यकाल(D)
	15	8	गु.	18 14	मूल	28 54	सि.	9 37	धनु		6 36	18 27	6 34	18 26	6 40	18 32	6 11	18 3	15	श्रीशीतलाष्टमी, मेला श्रीशीतलामाता,-कुराली (पं.),
	16	9	शु.	17 14	पू.षा.	28 46	व्य./ व.	7 31 29 47	धनु		6 35	18 27	6 33	18 26	6 39	18 32	6 10	18 4	16	भ. 28/57 बाद, यूरेनस उ.भा. 3 में 13/54,
	17	10	श.	16 41	उ.षा.	29 5	प.	28 23	मकर	10 49	6 34	18 28	6 32	18 27	6 38	18 33	6 9	18 4	17	भ. 16/41 तक, सूर्य उ.भा. में 19/10,
	18	11	र.	16 34	श्रव.	29 48	शि.	27 19	मकर		6 32	18 29	6 31	18 28	6 36	18 33	6 8	18 4	18	पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.).
	19	12	चं.	16 51	धनि.	– –	सि.	26 33	कुम्भ	18 18	6 31	18 29	6 30	18 28	6 35	18 34	6 7	18 5	19	पंचक प्रारम्भ 18/18, गुरु भर. 2 में 24/49, सोमप्रदोष व्रत,
	20	13	मं.	17 32	धनि.	6 54	सा.	26 7	कुम्भ		6 30	18 30	6 29	18 29	6 34	18 34	6 5	18 5	20	भ. 17/32 से 30/05 तक, सूर्य सायन मेष में 10/45, (E)
	21	14	बु.	18 37	शत.	8 24	शु.	25 59	मीन	27 47	6 29	18 31	6 28	18 29	6 33	18 35	6 4	18 6	21	वक्री मंगल मघा में 8/15, मेला पिहोवातीर्थ (हरि),
	22	30	गु.	20 7	पू.भा.	10 17	शु.	26 9	मीन		6 28	18 31	6 26	18 [illegible]	6 [illegible]2	18 35	6 3	18 6	22	चान्द्रसंवत्सर 2068 वि. पूर्ण,

(A) आमला एकादशी व्रत (स.), (B) होलिका दहन, (देखें पृ. 90), (C) श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), (D) मध्याह्न तक, (E) उत्तरगोल प्रारम्भ, महाविषुव दिन, वारुणीपर्व (6/54 से 17/32 तक).

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन् 2011 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2011 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	अनु.	2	8	8	3	14	0	19	58
2	ज्येष्ठा	1	57	7	58	14	0	20	4
3	मूल	2	9	8	15	14	24	20	34
4	पू.षा.	2	46	8	59	15	14	21	31
5	उ.षा.	3	50	10	10	16	32	22	56
6/ 7	श्रव.	5	22	11	49	18	19	0	50
7/ 8	धनि.	7	22	13	57	20	32	3	10
8/ 9	शत.	9	48	16	28	23	9	5	51
9/10	पू.भा.	12	34	19	18	2	2	8	47
10/11	उ.भा.	15	31	22	16	5	1	11	45
11/12	रेव.	18	29	1	12	7	54	14	34
12/13	अश्वि.	21	14	3	51	10	28	17	2
13/14	भर.	23	34	6	3	12	31	18	56
15	कृत्ति.	1	18	7	38	13	55	20	9
16	रोहि.	2	20	8	29	14	34	20	37
17	मृग.	2	37	8	34	14	29	20	20
18	आर्द्रा	2	10	7	56	13	41	19	23
19	पुन.	1	3	6	40	12	16	17	50
19/20	पुष्य	23	23	4	53	10	23	15	51
20/21	आश्ले.	21	18	2	44	8	9	13	34
21/22	मघा	18	59	0	23	5	46	11	10
22/23	पू.फा.	16	34	21	58	3	23	8	48
23/24	उ.फा.	14	13	19	40	1	8	6	36
24/25	हस्त	12	6	17	37	23	9	4	43
25/26	चित्रा	10	18	15	55	21	33	3	14
26/27	स्वाती	8	56	14	39	20	25	2	13
27/28	विशा.	8	2	13	54	19	47	1	42
28/29	अनु.	7	39	13	38	19	39	1	42
29/30	ज्येष्ठा	7	47	13	53	20	1	2	11
30/31	मूल	8	23	14	36	20	51	3	7

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2011 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	पि.
31/ 1	पू.षा.	9	25	15	44	22	5	4	28
1/ 2	उ.षा.	10	51	17	16	23	43	6	11
2/ 3	श्रव.	12	40	19	10	1	42	8	14
3/ 4	धनि.	14	48	21	23	4	0	10	37
4/ 5	शत.	17	15	23	55	6	35	13	16
5/ 6	पू.भा.	19	59	2	41	9	25	16	9
6/ 7	उ.भा.	22	53	5	38	12	23	19	9
8	रेव.	1	54	8	39	15	23	22	7
9/10	अश्वि.	4	51	11	33	18	14	0	54
10/11	भर.	7	33	14	10	20	45	3	19
11/12	कृत्ति.	9	50	16	19	22	45	5	9
12/13	रोहि.	11	30	17	48	0	3	6	16
13/14	मृग.	12	25	18	31	0	34	6	34
14/15	आर्द्रा	12	31	18	25	0	16	6	4
15/16	पुन.	11	48	17	30	23	9	4	46
16/17	पुष्य	10	20	15	52	21	21	2	48
17/18	आश्ले.	8	14	13	37	18	59	0	19
18	मघा	5	38	10	56	16	13	21	30
19	पू.फा.	2	46	8	1	13	16	18	31
19/20	उ.फा.	23	47	5	2	10	19	15	36
20/21	हस्त	20	53	2	12	7	32	12	54
21/22	चित्रा	18	17	23	41	5	8	10	36
22/23	स्वाती	16	7	21	39	3	14	8	51
23/24	विशा.	14	31	20	13	1	58	7	45
24/25	अनु.	13	35	19	28	1	23	7	21
25/26	ज्येष्ठा	13	22	19	25	1	31	7	39
26/27	मूल	13	50	20	3	2	19	8	36
27/28	पू.षा.	14	56	21	18	3	41	10	7

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2011 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
28/ 1	उ.षा.	16	34	23	3	5	33	12	5
1/ 2	श्रव.	18	38	1	12	7	47	14	24
2/ 3	धनि.	21	1	3	39	10	18	16	58
3/ 4	शत.	23	39	6	20	13	2	19	44
5	पू.भा.	2	27	9	10	15	54	22	38
6/ 7	उ.भा.	5	22	12	7	18	51	1	36
7/ 8	रेव.	8	21	15	5	21	50	4	34
8/ 9	अश्वि.	11	18	18	2	0	44	7	27
9/10	भर.	14	8	20	48	3	27	10	5
10/11	कृत्ति.	16	42	23	17	5	50	12	21
11/12	रोहि.	18	50	1	17	7	42	14	4
12/13	मृग.	20	24	2	41	8	55	15	6
13/14	आर्द्रा	21	15	3	20	9	22	15	21
14/15	पुन.	21	18	3	11	9	1	14	47
15/16	पुष्य	20	31	2	13	7	51	13	26
16/17	आश्ले.	18	59	0	29	5	57	11	23
17/18	मघा	16	47	22	8	3	28	8	46
18/19	पू.फा.	14	3	19	19	0	34	5	47
19/20	उ.फा.	11	0	16	13	21	25	2	37
20	हस्त	7	49	13	1	18	14	23	28
21	चित्रा	4	42	9	58	15	15	20	33
22	स्वाती	1	52	7	14	12	37	18	2
22/23	विशा.	23	30	5	0	10	32	16	7
23/24	अनु.	21	45	3	25	9	8	14	55
24/25	ज्येष्ठा	20	44	2	36	8	31	14	30
25/26	मूल	20	31	2	35	8	43	14	53
26/27	पू.षा.	21	6	3	22	9	41	16	2
27/28	उ.षा.	22	25	4	51	11	20	17	50
29	श्रव.	0	22	6	56	13	31	20	8
30	धनि.	2	47	9	26	16	7	22	48

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन् 2011 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अप्रैल 2011 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	शत.	5	31	12	13	18	57	1	41
1/2	पू.भा.	8	25	15	10	21	54	4	39
2/3	उ.भा.	11	24	18	9	0	53	7	38
3/4	रेव.	14	22	21	6	3	49	10	32
4/5	अश्वि.	17	15	23	57	6	38	13	19
5/6	भर.	19	59	2	38	9	16	15	54
6/7	कृत्ति.	22	30	5	5	11	39	18	12
8	रोहि.	0	43	7	13	13	41	20	7
9	मृग.	2	31	8	54	15	14	21	33
10	आर्द्रा	3	48	10	2	16	13	22	22
11	पुन.	4	28	10	32	16	33	22	31
12	पुष्य	4	26	10	19	16	9	21	57
13	आश्ले.	3	41	9	24	15	3	20	40
14	मघा	2	15	7	48	13	18	18	46
15	पू.फा.	0	12	5	37	10	59	16	21
15/16	उ.फा.	21	41	2	59	8	17	13	33
16/17	हस्त	18	50	0	5	5	20	10	35
17/18	चित्रा	15	50	21	5	2	21	7	37
18/19	स्वाती	12	54	18	12	23	31	4	51
19/20	विशा.	10	12	15	36	21	1	2	28
20/21	अनु.	7	56	13	28	19	1	0	38
21	ज्येष्ठा	6	16	11	57	17	42	23	29
22	मूल	5	19	11	12	17	8	23	7
23	पू.षा.	5	9	11	14	17	22	23	34
24/25	उ.षा	5	48	12	5	18	25	0	47
25/26	श्रव.	7	13	13	40	20	10	2	42
26/27	धनि.	9	17	15	52	22	30	5	9
27/28	शत.	11	50	18	31	1	14	7	58
28/29	पू.भा.	14	42	21	26	4	11	10	56
29/30	उ.भा.	17	41	0	26	7	11	13	56

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मई 2011 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/1	रेव.	20	40	3	23	10	6	16	48
1/2	अश्वि.	23	30	6	11	12	50	19	29
3	भर.	2	7	8	43	15	19	21	53
4	कृत्ति.	4	27	10	59	17	29	23	59
5/6	रोहि.	6	27	12	54	19	19	1	43
6/7	मृग.	8	5	14	26	20	45	3	3
7/8	आर्द्रा	9	19	15	33	21	45	3	56
8/9	पुन.	10	4	16	11	22	16	4	19
9/10	पुष्य	10	20	16	19	22	16	4	11
10/11	आश्ले.	10	3	15	54	21	43	3	30
11/12	मघा	9	15	14	58	20	39	2	18
12/13	पू.फा.	7	55	13	31	19	5	0	37
13	उ.फा.	6	8	11	38	17	6	22	33
14	हस्त	4	0	9	25	14	49	20	13
15	चित्रा	1	37	6	59	12	22	17	45
15/16	स्वाती	23	8	4	31	9	54	15	18
16/17	विशा.	20	42	2	8	7	34	13	1
17/18	अनु.	18	30	0	0	5	32	11	5
18/19	ज्येष्ठा	16	41	22	18	3	57	9	39
19/20	मूल	15	23	21	9	2	58	8	49
20/21	पू.षा.	14	43	20	40	2	39	8	41
21/22	उ.षा.	14	46	20	54	3	5	9	18
22/23	श्रव.	15	35	21	54	4	15	10	40
23/24	धनि.	17	6	23	35	6	6	12	40
24/25	शत.	19	15	1	52	8	31	15	11
25/26	पू.भा.	21	52	4	34	11	17	18	1
27	उ.भा.	0	45	7	30	14	14	20	58
28	रेव.	3	43	10	26	17	10	23	52
29/30	अश्वि.	6	34	13	14	19	54	2	32
30/31	भर.	9	9	15	44	22	19	4	51

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जून 2011 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	कृत्ति.	11	22	17	52	0	19	6	45
1/2	रोहि.	13	10	19	32	1	53	8	12
2/3	मृग.	14	30	20	45	2	59	9	12
3/4	आर्द्रा	15	22	21	31	3	39	9	44
4/5	पुन.	15	49	21	51	3	52	9	52
5/6	पुष्य	15	50	21	46	3	41	9	35
6/7	आश्ले.	15	27	21	18	3	8	8	56
7/8	मघा	14	43	20	29	2	14	7	57
8/9	पू.फा.	13	40	19	21	1	1	6	41
9/10	उ.फा.	12	19	17	57	23	34	5	10
10/11	हस्त	10	45	16	20	21	54	3	28
11/12	चित्रा	9	1	14	34	20	7	1	39
12	स्वाती	7	12	12	44	18	17	23	50
13	विशा.	5	23	10	57	16	31	22	6
14	अनु.	3	41	9	17	14	55	20	33
15	ज्येष्ठा	2	13	7	54	13	36	19	20
16	मूल	1	5	6	52	12	41	18	31
17	पू.षा.	0	24	6	18	12	15	18	14
18	उ.षा.	0	15	6	19	12	25	18	33
19	श्रव.	0	44	6	57	13	13	19	31
20	धनि.	1	51	8	14	14	39	21	6
21	शत.	3	35	10	7	16	40	23	16
22/23	पू.भा.	5	53	12	31	19	11	1	52
23/24	उ.भा.	8	34	15	17	22	0	4	44
24/25	रेव.	11	28	18	12	0	56	7	39
25/26	अश्वि.	14	22	21	4	3	45	10	25
26/27	भर.	17	4	23	41	6	16	12	50
27/28	कृत्ति.	19	22	1	51	8	19	14	45
28/29	रोहि.	21	9	3	30	9	49	16	6
29/30	मृग.	22	21	4	34	10	44	16	52

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन् 2011 ई.

चन्द्रन-क्षत्रचरण		1		2		3		4	
जुलाई 2011 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/1	आर्द्रा	22	58	5	2	11	4	17	3
1/2	पुन.	23	1	4	57	10	51	16	44
2/3	पुष्य	22	35	4	24	10	12	15	59
3/4	आश्ले.	21	44	3	29	9	12	14	54
4/5	मघा	20	35	2	15	7	55	13	34
5/6	पू.फा.	19	13	0	51	6	28	12	5
6/7	उ.फा.	17	43	23	20	4	56	10	33
7/8	हस्त	16	10	21	47	3	24	9	1
8/9	चित्रा	14	38	20	16	1	54	7	32
9/10	स्वाती	13	11	18	50	0	30	6	11
10/11	विशा.	11	52	17	33	23	16	4	59
11/12	अनु.	10	43	16	28	22	13	4	0
12/13	ज्येष्ठा	9	48	15	36	21	26	3	17
13/14	मूल	9	9	15	2	20	57	2	53
14/15	पू.षा.	8	50	14	49	20	49	2	51
15/16	उ.षा.	8	55	15	0	21	7	3	16
16/17	श्रव.	9	27	15	39	21	54	4	10
17/18	घनि.	10	29	16	49	23	12	5	36
18/19	शत.	12	3	18	31	1	1	7	33
19/20	पू.भा.	14	7	20	42	3	19	9	57
20/21	उ.भा.	16	37	23	18	6	0	12	43
21/22	रेव.	19	26	2	10	8	55	15	39
22/23	अश्वि.	22	24	5	8	11	51	18	34
24	भर.	1	16	7	56	14	35	21	13
25	कृत्ति.	3	49	10	23	16	55	23	24
26/27	रोहि.	5	52	12	17	18	39	0	59
27/28	मृग.	7	16	13	30	19	42	1	51
28/29	आर्द्रा	7	57	14	0	20	1	1	59
29/30	पुन.	7	54	13	47	19	38	1	26
30/31	पुष्य	7	12	12	56	18	39	0	19
31	आश्ले.	5	57	11	34	17	10	22	44

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अगस्त 2011 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	मघा	4	17	9	49	15	20	20	50
2	पू.फा.	2	20	7	49	13	18	18	47
3	उ.फा.	0	15	5	44	11	13	16	42
3/4	हस्त	22	12	3	42	9	13	14	45
4/5	चित्रा	20	17	1	50	7	25	13	0
5/6	स्वाती	18	37	0	14	5	53	11	33
6/7	विशा.	17	15	22	58	4	42	10	27
7/8	अनु.	16	14	22	3	3	53	9	44
8/9	ज्येष्ठा	15	37	21	31	3	26	9	23
9/10	मूल	15	21	21	21	3	22	9	25
10/11	पू.षा.	15	29	21	34	3	41	9	49
11/12	उ.षा.	15	58	22	9	4	21	10	35
12/13	श्रव.	16	50	23	6	5	24	11	44
13/14	घनि.	18	5	0	27	6	51	13	17
14/15	शत.	19	44	2	13	8	43	15	15
15/16	पू.भा.	21	48	4	22	10	58	17	36
17	उ.भा.	0	14	6	54	13	35	20	17
18	रेव.	3	0	9	44	16	29	23	14
19/20	अश्वि.	5	59	12	45	19	30	2	15
20/21	भर.	9	0	15	44	22	28	5	10
21/22	कृत्ति.	11	51	18	31	1	9	7	45
22/23	रोहि.	14	19	20	50	3	19	9	46
23/24	मृग.	16	10	22	31	4	50	11	5
24/25	आर्द्रा	17	17	23	26	5	33	11	36
25/26	पुन.	17	35	23	32	5	26	11	17
26/27	पुष्य	17	5	22	50	4	32	10	12
27/28	आश्ले.	15	49	21	24	2	57	8	28
28/29	मघा	13	57	19	25	0	50	6	15
29/30	पू.फा.	11	38	17	0	22	21	3	42
30/31	उ.फा.	9	2	14	22	19	42	1	1
31	हस्त	6	21	11	41	17	2	22	24

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
सितंबर 2011 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	चित्रा	3	46	9	9	14	33	19	59
2	स्वाती	1	26	6	54	12	24	17	55
2/3	विशा.	23	29	5	4	10	41	16	20
3/4	अनु.	22	1	3	45	9	30	15	17
4/5	ज्येष्ठा	21	7	2	59	8	52	14	48
5/6	मूल	20	46	2	46	8	48	14	53
6/7	पू.षा.	20	58	3	6	9	16	15	28
7/8	उ.षा.	21	41	3	56	10	12	16	30
8/9	श्रव.	22	50	5	11	11	34	17	58
10	घनि.	0	23	6	50	13	18	19	47
11	शत.	2	17	8	49	15	22	21	56
12/13	पू.भा.	4	31	11	7	17	44	0	22
13/14	उ.भा.	7	2	13	42	20	23	3	6
14/15	रेव.	9	49	16	32	23	17	6	2
15/16	अश्वि.	12	47	19	33	2	19	9	5
16/17	भर.	15	51	22	37	5	22	12	8
17/18	कृत्ति.	18	52	1	35	8	18	14	59
18/19	रोहि.	21	39	4	17	10	53	17	27
19/20	मृग.	23	59	6	29	12	56	19	20
21	आर्द्रा	1	42	8	1	14	17	20	29
22	पुन.	2	39	8	45	14	48	20	48
23	पुष्य	2	45	8	38	14	28	20	15
24	आश्ले.	2	0	7	41	13	19	18	55
25	मघा	0	28	5	59	11	27	16	53
25/26	पू.फा.	22	17	3	40	9	0	14	20
26/27	उ.फा.	19	38	0	55	6	10	11	26
27/28	हस्त	16	40	21	55	3	9	8	23
28/29	चित्रा	13	37	18	52	0	8	5	24
29/30	स्वाती	10	41	15	59	21	18	2	39

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन् 2011 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अक्तूबर 2011 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/1	विशा.	8	1	13	25	18	51	0	19
1	अनु.	5	48	11	20	16	55	22	31
2	ज्येष्ठा	4	10	9	52	15	36	21	23
3	मूल	3	13	9	5	14	59	20	57
4	पू.षा.	2	57	8	59	15	4	21	12
5	उ.षा.	3	22	9	34	15	49	22	6
6	श्रव.	4	25	10	47	17	10	23	35
7/8	धनि.	6	2	12	30	19	0	1	32
8/9	शत.	8	5	14	39	21	14	3	51
9/10	पू.भा.	10	29	17	7	23	47	6	27
10/11	उ.भा.	13	8	19	50	2	33	9	16
11/12	रेव.	16	0	22	44	5	28	12	13
12/13	अश्वि.	18	58	1	43	8	29	15	14
13/14	भर.	22	0	4	45	11	30	18	15
15	कृत्ति.	0	59	7	43	14	26	21	8
16	रोहि.	3	49	10	30	17	8	23	46
17/18	मृग.	6	22	12	56	19	29	2	0
18/19	आर्द्रा	8	28	14	54	21	18	3	40
19/20	पुन.	9	59	16	15	22	28	4	39
20/21	पुष्य	10	46	16	51	22	53	4	51
21/22	आश्ले.	10	47	16	40	22	30	4	17
22/23	मघा	10	1	15	42	21	20	2	56
23/24	पू.फा.	8	30	14	1	19	30	0	56
24	उ.फा.	6	21	11	44	17	5	22	25
25	हस्त	3	44	9	1	14	17	19	32
26	चित्रा	0	47	6	1	11	15	16	29
26/27	स्वाती	21	44	2	58	8	12	13	28
27/28	विशा.	18	44	0	1	5	19	10	38
28/29	अनु.	15	59	21	22	2	46	8	12
29/30	ज्येष्ठा	13	41	19	11	0	44	6	19
30/31	मूल	11	57	17	37	23	20	5	6

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
नवंबर 2011 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	पू.षा.	10	54	16	46	22	40	4	37
1/2	उ.षा.	10	37	16	40	22	46	4	54
2/3	श्रव.	11	6	17	20	23	37	5	56
3/4	धनि.	12	18	18	43	1	9	7	38
4/5	शत.	14	9	20	42	3	16	9	52
5/6	पू.भा.	16	30	23	9	5	49	12	30
6/7	उ.भा.	19	13	1	56	8	39	15	24
7/8	रेव.	22	8	4	53	11	38	18	24
9	अश्वि.	1	9	7	54	14	39	21	24
10/11	भर.	4	8	10	52	17	36	0	19
11/12	कृत्ति.	7	1	13	42	20	23	3	3
12/13	रोहि.	9	42	16	19	22	56	5	32
13/14	मृग.	12	6	18	39	1	10	7	41
14/15	आर्द्रा	14	9	20	36	3	1	9	25
15/16	पुन.	15	46	22	6	4	23	10	39
16/17	पुष्य	16	53	23	4	5	13	11	20
17/18	आश्ले.	17	24	23	26	5	26	11	23
18/19	मघा	17	18	23	11	5	1	10	49
19/20	पू.फा.	16	35	22	18	3	59	9	38
20/21	उ.फा.	15	15	20	50	2	23	7	55
21/22	हस्त	13	24	18	52	0	19	5	44
22/23	चित्रा	11	6	16	31	21	53	3	14
23/24	स्वाती	8	34	13	54	19	14	0	34
24	विशा.	5	53	11	12	16	32	21	52
25	अनु.	3	13	8	34	13	56	19	20
26	ज्येष्ठा	0	44	6	10	11	37	17	6
26/27	मूल	22	37	4	9	9	44	15	21
27/28	पू.षा.	21	0	2	42	8	26	14	12
28/29	उ.षा.	20	2	1	54	7	48	13	46
29/30	श्रव.	19	47	1	50	7	57	14	6

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
दिसंबर 2011 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/1	धनि.	20	18	2	33	8	51	15	12
1/2	शत.	21	35	4	1	10	29	17	0
2/3	पू.भा.	23	33	6	8	12	45	19	23
4	उ.भा.	2	3	8	45	15	27	22	11
5/6	रेव.	4	55	11	40	18	26	1	11
6/7	अश्वि.	7	57	14	43	21	29	4	14
7/8	भर.	10	58	17	42	0	25	7	7
8/9	कृत्ति.	13	49	20	28	3	7	9	45
9/10	रोहि.	16	21	22	56	5	29	12	1
10/11	मृग.	18	31	0	59	7	26	13	52
11/12	आर्द्रा	20	15	2	37	8	58	15	17
12/13	पुन.	21	34	3	49	10	3	16	15
13/14	पुष्य	22	26	4	34	10	42	16	47
14/15	आश्ले.	22	51	4	54	10	54	16	54
15/16	मघा	22	51	4	47	10	42	16	35
16/17	पू.फा.	22	27	4	17	10	5	15	52
17/18	उ.फा.	21	38	3	22	9	5	14	47
18/19	हस्त	20	28	2	7	7	45	13	22
19/20	चित्रा	18	58	0	32	6	6	11	39
20/21	स्वाती	17	12	22	43	4	14	9	44
21/22	विशा.	15	14	20	44	2	13	7	43
22/23	अनु.	13	12	18	41	0	10	5	40
23/24	ज्येष्ठा	11	10	16	41	22	12	3	44
24/25	मूल	9	17	14	51	20	27	2	3
25/26	पू.षा.	7	41	13	21	19	2	0	45
26	उ.षा.	6	30	12	17	18	6	23	58
27	श्रव.	5	51	11	47	17	46	23	47
28/29	धनि.	5	51	11	58	18	7	0	19
29/30	शत.	6	33	12	51	19	11	1	34
30/31	पू.भा.	7	59	14	27	20	57	3	30

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन् 2012 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2012 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	उ.भा.	10	4	16	41	23	19	6	0
1/ 2	रेव.	12	41	19	24	2	8	8	53
2/ 3	अश्वि.	15	39	22	24	5	10	11	56
3/ 4	भर.	18	42	1	27	8	12	14	55
4/ 5	कृत्ति.	21	38	4	19	10	59	17	37
6	रोहि.	0	13	6	48	13	21	19	52
7	मृग.	2	20	8	47	15	12	21	34
8	आर्द्रा	3	54	10	12	16	28	22	41
9	पुन.	4	53	11	2	17	9	23	15
10	पुष्य	5	18	11	20	17	20	23	18
11	आश्ले.	5	15	11	10	17	4	22	57
12	मघा	4	48	10	38	16	27	22	15
13	पू.फा.	4	1	9	47	15	33	21	17
14	उ.फा.	3	1	8	44	14	27	20	9
15	हस्त	1	51	7	32	13	13	18	54
16	चित्रा	0	35	6	15	11	55	17	34
16/17	स्वाती	23	14	4	54	10	33	16	12
17/18	विशा.	21	52	3	31	9	11	14	50
18/19	अनु.	20	30	2	9	7	49	13	29
19/20	ज्येष्ठा	19	10	0	51	6	32	12	14
20/21	मूल	17	56	23	39	5	22	11	6
21/22	पू.षा.	16	51	22	37	4	24	10	12
22/23	उ.षा.	16	1	21	52	3	43	9	37
23/24	श्रव.	15	32	21	28	3	27	9	27
24/25	घनि .	15	29	21	33	3	39	9	48
25/26	शत .	15	59	22	12	4	27	10	44
26/27	पू.भा.	17	5	23	27	5	52	12	19
27/28	उ.भा.	18	48	1	20	7	53	14	29
28/29	रेव.	21	7	3	46	10	27	17	9
29/30	अश्वि.	23	53	6	38	13	23	20	9
31	भर.	2	55	9	42	16	28	23	14

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2012 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1/ 2	कृत्ति.	5	59	12	43	19	26	2	8
2/ 3	रोहि.	8	48	15	27	22	3	4	38
3/ 4	मृग.	11	10	17	39	0	6	6	31
4/ 5	आर्द्रा	12	53	19	12	1	29	7	42
5/ 6	पुन.	13	53	20	1	2	7	8	10
6/ 7	पुष्य	14	10	20	8	2	3	7	56
7/ 8	आश्ले.	13	47	19	36	1	23	7	8
8/ 9	मघा	12	51	18	33	0	13	5	52
9/10	पू.फा.	11	30	17	7	22	43	4	18
10/11	उ.फा.	9	52	15	26	21	0	2	34
11/12	हस्त	8	7	13	40	19	14	0	47
12	चित्रा	6	21	11	55	17	30	23	6
13	स्वाती	4	41	10	18	15	55	21	33
14	विशा.	3	12	8	51	14	32	20	13
15	अनु.	1	55	7	38	13	22	19	7
16	ज्येष्ठा	0	52	6	39	12	27	18	15
17	मूल	0	5	5	55	11	47	17	39
17/18	पू.षा.	23	32	5	26	11	22	17	18
18/19	उ.षा.	23	15	5	14	11	13	17	14
19/20	श्रव.	23	15	5	19	11	23	17	29
20/21	घनि .	23	36	5	44	11	54	18	6
22	शत .	0	19	6	34	12	51	19	9
23	पू.भा.	1	30	7	52	14	16	20	42
24	उ.भा.	3	9	9	39	16	11	22	44
25/26	रेव.	5	19	11	56	18	35	1	15
26/27	अश्वि.	7	57	14	40	21	24	4	9
27/28	भर.	10	55	17	41	0	28	7	16
28/29	कृत्ति.	14	3	20	49	3	36	10	22

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2012 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
29/ 1	रोहि.	17	6	23	49	6	31	13	11
1/ 2	मृग.	19	49	2	26	8	59	15	31
2/ 3	आर्द्रा	21	59	4	25	10	48	17	8
3/ 4	पुन.	23	25	5	39	11	49	17	57
5	पुष्य	0	1	6	3	12	1	17	56
5/ 6	आश्ले.	23	48	5	38	11	25	17	9
6/ 7	मघा	22	50	4	30	10	7	15	42
7/ 8	पू.फा.	21	15	2	47	8	16	13	45
8/ 9	उ.फा.	19	12	0	38	6	3	11	28
9/10	हस्त	16	52	22	16	3	39	9	2
10/11	चित्रा	14	25	19	49	1	13	6	37
11/12	स्वाती	12	2	17	28	22	54	4	22
12/13	विशा.	9	50	15	20	20	52	2	24
13/14	अनु.	7	58	13	34	19	11	0	49
14	ज्येष्ठा	6	30	12	12	17	55	23	41
15	मूल	5	28	11	17	17	7	22	59
16	पू.षा.	4	53	10	49	16	47	22	46
17	उ.षा.	4	46	10	49	16	52	22	58
18	श्रव.	5	5	11	13	17	23	23	35
19/20	धनि.	5	48	12	2	18	18	0	35
20/21	शत.	6	54	13	15	19	36	1	59
21/22	पू.भा.	8	24	14	50	21	18	3	47
22/23	उ.भा.	10	17	16	49	23	23	5	57
23/24	रेव.	12	34	19	11	1	50	8	30
24/25	अश्वि.	15	12	21	54	4	38	11	22
25/26	भर.	18	8	0	54	7	41	14	28
26/27	कृत्ति.	21	16	4	3	10	51	17	38
28	रोहि.	0	25	7	12	13	57	20	41
29	मृग.	3	24	10	6	16	46	23	24
30/31	आर्द्रा	6	0	12	33	19	4	1	33

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जनवरी 2011 ई. को अयनांश 24° 0' 56"

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टै. टा.), 1 जनवरी 2011 ई. को अयनांश 24° 0' 56"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध			
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	6	41	12	8	16	11	16	7	5	13	38	8	24	21	25	7	25	49	29
2	6	45	9	8	17	12	26	7	18	38	6	8	25	7	52	7	26	8	11
3	6	49	5	8	18	13	36	8	1	49	48	8	25	54	21	7	26	34	14
4	6	53	2	8	19	14	47	8	14	48	9	8	26	40	52	7	27	6	56
5	6	56	58	8	20	15	57	8	27	32	52	8	27	27	26	7	27	45	35
6	7	0	55	8	21	17	8	9	10	4	10	8	28	14	1	7	28	29	34
7	7	4	51	8	22	18	18	9	22	22	50	8	29	0	39	7	29	18	20
8	7	8	48	8	23	19	28	10	4	30	28	8	29	47	18	8	0	11	20
9	7	12	44	8	24	20	38	10	16	29	26	9	0	34	0	8	1	8	8
10	7	16	41	8	25	21	47	10	28	22	49	9	1	20	43	8	2	8	19
11	7	20	38	8	26	22	56	11	10	14	22	9	2	7	28	8	3	11	31
12	7	24	34	8	27	24	4	11	22	8	25	9	2	54	15	8	4	17	25
13	7	28	31	8	28	25	12	0	4	9	37	9	3	41	3	8	5	25	45
14	7	32	27	8	29	26	19	0	16	22	46	9	4	27	53	8	6	36	16
15	7	36	24	9	0	27	25	0	28	52	28	9	5	14	45	8	7	48	45
16	7	40	20	9	1	28	31	1	11	42	45	9	6	1	38	8	9	3	0
17	7	44	17	9	2	29	36	1	24	56	33	9	6	48	33	8	10	18	52
18	7	48	13	9	3	30	40	2	8	35	16	9	7	35	29	8	11	36	13
19	7	52	10	9	4	31	44	2	22	38	11	9	8	22	27	8	12	54	55
20	7	56	7	9	5	32	48	3	7	2	11	9	9	9	26	8	14	14	52
21	8	0	3	9	6	33	50	3	21	41	50	9	9	56	27	8	15	35	59
22	8	4	0	9	7	34	52	4	6	29	53	9	10	43	29	8	16	58	10
23	8	7	56	9	8	35	54	4	21	18	22	9	11	30	33	8	18	21	23
24	8	11	53	9	9	36	55	5	5	59	48	9	12	17	38	8	19	45	33
25	8	15	49	9	10	37	56	5	20	28	15	9	13	4	44	8	21	10	38
26	8	19	46	9	11	38	56	6	4	39	52	9	13	51	52	8	22	36	36
27	8	23	42	9	12	39	55	6	18	32	59	9	14	39	1	8	24	3	24
28	8	27	39	9	13	40	54	7	2	7	40	9	15	26	11	8	25	31	1
29	8	31	35	9	14	41	52	7	15	25	6	9	16	13	23	8	26	59	24
30	8	35	32	9	15	42	50	7	28	27	8	9	17	0	35	8	28	28	34
31	8	39	29	9	16	43	47	8	11	15	41	9	17	47	49	8	29	58	29

जनवरी	गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	11	2	32	10	6	29	32	58	5	22	38	42	8	8	17	14	8	8	44	19	-23	3	-22	50	-2	55
2	11	2	40	17	7	0	30	52	5	22	41	18	8	8	14	3	8	8	44	58	-22	58	-24	7	-1	49
3	11	2	48	32	7	1	29	15	5	22	43	48	8	8	10	52	8	8	45	23	-22	52	-24	1	-0	38
4	11	2	56	57	7	2	28	8	5	22	46	13	8	8	7	41	8	8	45	21	-22	47	-22	35	0	33
5	11	3	5	31	7	3	27	29	5	22	48	31	8	8	4	30	8	8	44	43	-22	40	-20	2	1	42
6	11	3	14	13	7	4	27	17	5	22	50	43	8	8	1	19	8	8	43	26	-22	34	-16	34	2	45
7	11	3	23	3	7	5	27	31	5	22	52	48	8	7	58	9	8	8	41	33	-22	26	-12	27	3	38
8	11	3	32	2	7	6	28	10	5	22	54	48	8	7	54	58	8	8	39	17	-22	19	-7	54	4	21
9	11	3	41	9	7	7	29	13	5	22	56	41	8	7	51	47	8	8	36	55	-22	11	-3	7	4	52
10	11	3	50	25	7	8	30	40	5	22	58	28	8	7	48	36	8	8	34	46	-22	2	1	44	5	10
11	11	3	59	48	7	9	32	29	5	23	0	9	8	7	45	25	8	8	33	10	-21	53	6	31	5	15
12	11	4	9	19	7	10	34	39	5	23	1	43	8	7	42	15	8	8	32	19	-21	44	11	4	5	7
13	11	4	18	58	7	11	37	11	5	23	3	12	8	7	39	4	8	8	32	21	-21	34	15	15	4	45
14	11	4	28	44	7	12	40	2	5	23	4	33	8	7	35	53	8	8	33	13	-21	24	18	53	4	9
15	11	4	38	38	7	13	43	14	5	23	5	49	8	7	32	42	8	8	34	40	-21	13	21	45	3	22
16	11	4	48	40	7	14	46	44	5	23	6	58	8	7	29	31	8	8	36	19	-21	2	23	36	2	23
17	11	4	58	48	7	15	50	33	5	23	8	0	8	7	26	21	8	8	37	40	-20	51	24	13	1	15
18	11	5	9	4	7	16	54	40	5	23	8	57	8	7	23	10	8	8	38	13	-20	39	23	25	0	0
19	11	5	19	27	7	17	59	5	5	23	9	47	8	7	19	59	8	8	37	35	-20	27	21	8	-1	16
20	11	5	29	56	7	19	3	46	5	23	10	30	8	7	16	48	8	8	35	35	-20	14	17	29	-2	30
21	11	5	40	33	7	20	8	43	5	23	11	7	8	7	13	37	8	8	32	19	-20	2	12	43	-3	34
22	11	5	51	16	7	21	13	56	5	23	11	38	8	7	10	27	8	8	28	10	-19	48	7	9	-4	25
23	11	6	2	5	7	22	19	25	5	23	12	2	8	7	7	16	8	8	23	44	-19	34	1	11	-4	59
24	11	6	13	1	7	23	25	8	5	23	12	19	8	7	4	5	8	8	19	41	-19	20	-4	47	-5	12
25	11	6	24	4	7	24	31	6	5	23	12	31	8	7	0	54	8	8	16	40	-19	6	-10	24	-5	5
26	11	6	35	13	7	25	37	18	5	23	12	35	8	6	57	43	8	8	15	3	-18	51	-15	22	-4	40
27	11	6	46	28	7	26	43	42	5	23	12	34	8	6	54	33	8	8	14	56	-18	36	-19	24	-3	59
28	11	6	57	49	7	27	50	20	5	23	12	25	8	6	51	22	8	8	15	58	-18	21	-22	17	-3	5
29	11	7	9	16	7	28	57	10	5	23	12	11	8	6	48	11	8	8	17	34	-18	5	-23	52	-2	2
30	11	7	20	49	8	0	4	12	5	23	11	50	8	6	45	0	8	8	18	56	-17	49	-24	7	-0	54
31	11	7	32	28	8	1	11	25	5	23	11	22	8	6	41	50	8	8	19	16	-17	32	-23	4	0	16

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2011 ई. को अयनांश 24° 1' 1''

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	8 43 25	9 17 44 43	8 23 52 31	9 18 35 4	9 1 29 9	11 7 44 12	8 2 18 49	5 23 10 48	8 6 38 39	8 8 17 54	-17 16	-20 52	1 23
2	8 47 22	9 18 45 39	9 6 19 2	9 19 22 20	9 3 0 32	11 7 56 3	8 3 26 24	5 23 10 8	8 6 35 28	8 8 14 28	-16 58	-17 42	2 26
3	8 51 18	9 19 46 33	9 18 36 22	9 20 9 37	9 4 32 40	11 8 7 58	8 4 34 9	5 23 9 21	8 6 32 17	8 8 8 54	-16 41	-13 48	3 21
4	8 55 15	9 20 47 26	10 0 45 28	9 20 56 54	9 6 5 32	11 8 19 59	8 5 42 3	5 23 8 28	8 6 29 6	8 8 1 31	-16 23	- 9 24	4 5
5	8 59 11	9 21 48 19	10 12 47 25	9 21 44 13	9 7 39 8	11 8 32 5	8 6 50 7	5 23 7 28	8 6 25 56	8 7 52 57	-16 6	- 4 42	4 39
6	9 3 8	9 22 49 9	10 24 43 34	9 22 31 32	9 9 13 29	11 8 44 16	8 7 58 20	5 23 6 22	8 6 22 45	8 7 43 58	-15 47	0 9	5 0
7	9 7 4	9 23 49 59	11 6 35 50	9 23 18 52	9 10 48 34	11 8 56 33	8 9 6 42	5 23 5 10	8 6 19 34	8 7 35 27	-15 29	4 57	5 7
8	9 11 1	9 24 50 47	11 18 26 44	9 24 6 12	9 12 24 25	11 9 8 54	8 10 15 12	5 23 3 52	8 6 16 23	8 7 28 10	-15 10	9 33	5 2
9	9 14 58	9 25 51 34	0 0 19 30	9 24 53 32	9 14 1 2	11 9 21 20	8 11 23 50	5 23 2 28	8 6 13 13	8 7 22 45	-14 51	13 49	4 43
10	9 18 54	9 26 52 19	0 12 18 4	9 25 40 54	9 15 38 26	11 9 33 50	8 12 32 36	5 23 0 57	8 6 10 2	8 7 19 26	-14 32	17 36	4 12
11	9 22 51	9 27 53 3	0 24 26 59	9 26 28 15	9 17 16 37	11 9 46 26	8 13 41 30	5 22 59 21	8 6 6 51	8 7 18 10	-14 12	20 41	3 30
12	9 26 47	9 28 53 44	1 6 51 6	9 27 15 37	9 18 55 37	11 9 59 5	8 14 50 31	5 22 57 38	8 6 3 40	8 7 18 28	-13 53	22 53	2 36
13	9 30 44	9 29 54 25	1 19 35 19	9 28 2 59	9 20 35 26	11 10 11 49	8 15 59 40	5 22 55 50	8 6 0 30	8 7 19 31	-13 33	23 59	1 34
14	9 34 40	10 0 55 3	2 2 44 3	9 28 50 21	9 22 16 4	11 10 24 37	8 17 8 56	5 22 53 55	8 5 57 19	8 7 20 21	-13 13	23 49	0 25
15	9 38 37	10 1 55 40	2 16 20 35	9 29 37 44	9 23 57 34	11 10 37 30	8 18 18 18	5 22 51 55	8 5 54 8	8 7 19 56	-12 52	22 14	- 0 48
16	9 42 33	10 2 56 16	3 0 26 10	10 0 25 7	9 25 39 56	11 10 50 26	8 19 27 48	5 22 49 49	8 5 50 57	8 7 17 31	-12 32	19 15	- 2 1
17	9 46 30	10 3 56 50	3 14 59 11	10 1 12 30	9 27 23 11	11 11 3 27	8 20 37 24	5 22 47 37	8 5 47 47	8 7 12 40	-12 11	15 0	- 3 7
18	9 50 27	10 4 57 22	3 29 54 36	10 1 59 53	9 29 7 19	11 11 16 31	8 21 47 7	5 22 45 20	8 5 44 36	8 7 5 32	-11 50	9 43	- 4 3
19	9 54 23	10 5 57 53	4 15 4 9	10 2 47 16	10 0 52 21	11 11 29 39	8 22 56 56	5 22 42 57	8 5 41 25	8 6 56 44	-11 29	3 48	- 4 42
20	9 58 20	10 6 58 22	5 0 17 26	10 3 34 39	10 2 38 19	11 11 42 51	8 24 6 51	5 22 40 29	8 5 38 14	8 6 47 17	-11 7	- 2 22	- 5 2
21	10 2 16	10 7 58 50	5 15 23 40	10 4 22 3	10 4 25 11	11 11 56 6	8 25 16 52	5 22 37 55	8 5 35 4	8 6 38 20	-10 46	- 8 20	- 5 0
22	10 6 13	10 8 59 16	6 0 13 35	10 5 9 26	10 6 12 58	11 12 9 25	8 26 26 59	5 22 35 16	8 5 31 53	8 6 30 56	-10 24	-13 43	- 4 39
23	10 10 9	10 9 59 41	6 14 40 47	10 5 56 49	10 8 1 41	11 12 22 47	8 27 37 12	5 22 32 32	8 5 28 42	8 6 25 49	-10 2	-18 10	- 3 59
24	10 14 6	10 11 0 5	6 28 42 14	10 6 44 13	10 9 51 19	11 12 36 13	8 28 47 30	5 22 29 42	8 5 25 31	8 6 23 6	- 9 40	-21 27	- 3 7
25	10 18 2	10 12 0 27	7 12 17 53	10 7 31 36	10 11 41 50	11 12 49 42	8 29 57 54	5 22 26 47	8 5 22 21	8 6 22 24	- 9 18	-23 24	- 2 5
26	10 21 59	10 13 0 48	7 25 29 51	10 8 19 0	10 13 33 14	11 13 3 14	9 1 8 23	5 22 23 48	8 5 19 10	8 6 22 50	- 8 56	-23 59	- 0 58
27	10 25 56	10 14 1 8	8 8 21 27	10 9 6 23	10 15 25 29	11 13 16 49	9 2 18 56	5 22 20 43	8 5 15 59	8 6 23 12	- 8 33	-23 15	0 10
28	10 29 52	10 15 1 26	8 20 56 26	10 9 53 46	10 17 18 31	11 13 30 27	9 3 29 35	5 22 17 33	8 5 12 48	8 6 22 20	- 8 11	-21 20	1 17

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मार्च 2011 ई. को अयनांश 24° 1' 5''

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मार्च 2011 ई. को अयनांश 24° 1' 5''

मार्च	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	10	33	49	10	16	1	43	9	3	18	27	10	10	41	9	10	19	12	17	11	13	44	9	9	4	40	18	5	22	14	19	8	5	9	38	8	6	19	11	- 7	48	-18	27	2	18
2	10	37	45	10	17	1	58	9	15	30	38	10	11	28	31	10	21	6	43	11	13	57	53	9	5	51	5	5	22	11	0	8	5	6	27	8	6	13	10	- 7	25	-14	47	3	12
3	10	41	42	10	18	2	11	9	27	35	33	10	12	15	53	10	23	1	42	11	14	11	40	9	7	1	57	5	22	7	37	8	5	3	16	8	6	4	8	- 7	2	-10	34	3	56
4	10	45	38	10	19	2	23	10	9	35	8	10	13	3	15	10	24	57	7	11	14	25	29	9	8	12	52	5	22	4	8	8	5	0	5	8	5	52	29	- 6	39	- 6	0	4	30
5	10	49	35	10	20	2	33	10	21	30	49	10	13	50	36	10	26	52	49	11	14	39	22	9	9	23	51	5	22	0	36	8	4	56	55	8	5	38	59	- 6	16	- 1	14	4	51
6	10	53	31	10	21	2	41	11	3	23	53	10	14	37	56	10	28	48	38	11	14	53	16	9	10	34	54	5	21	57	0	8	4	53	44	8	5	24	44	- 5	53	3	34	5	0
7	10	57	28	10	22	2	47	11	15	15	36	10	15	25	16	11	0	44	21	11	15	7	13	9	11	46	0	5	21	53	19	8	4	50	33	8	5	10	54	- 5	30	8	12	4	56
8	11	1	25	10	23	2	52	11	27	7	34	10	16	12	35	11	2	39	43	11	15	21	13	9	12	57	10	5	21	49	34	8	4	47	22	8	4	58	38	- 5	6	12	33	4	38
9	11	5	21	10	24	2	54	0	9	1	55	10	16	59	53	11	4	34	28	11	15	35	14	9	14	8	23	5	21	45	46	8	4	44	12	8	4	48	47	- 4	43	16	26	4	9
10	11	9	18	10	25	2	54	0	21	1	30	10	17	47	10	11	6	28	17	11	15	49	18	9	15	19	39	5	21	41	54	8	4	41	1	8	4	41	51	- 4	20	19	40	3	28
11	11	13	14	10	26	2	52	1	3	9	51	10	18	34	27	11	8	20	49	11	16	3	24	9	16	30	58	5	21	37	58	8	4	37	50	8	4	37	49	- 3	56	22	5	2	38
12	11	17	11	10	27	2	48	1	15	31	12	10	19	21	42	11	10	11	40	11	16	17	31	9	17	42	20	5	21	33	59	8	4	34	40	8	4	36	10	- 3	33	23	31	1	39
13	11	21	7	10	28	2	41	1	28	10	12	10	20	8	57	11	12	0	24	11	16	31	41	9	18	53	45	5	21	29	56	8	4	31	29	8	4	35	57	- 3	9	23	46	0	34
14	11	25	4	10	29	2	33	2	11	11	31	10	20	56	10	11	13	46	35	11	16	45	52	9	20	5	13	5	21	25	51	8	4	28	18	8	4	35	56	- 2	45	22	45	- 0	35
15	11	29	0	11	0	2	22	2	24	39	21	10	21	43	22	11	15	29	44	11	17	0	4	9	21	16	44	5	21	21	42	8	4	25	7	8	4	34	51	- 2	22	20	25	- 1	44
16	11	32	57	11	1	2	9	3	8	36	28	10	22	30	33	11	17	9	20	11	17	14	19	9	22	28	17	5	21	17	31	8	4	21	57	8	4	31	40	- 1	58	16	49	- 2	49
17	11	36	54	11	2	1	53	3	23	3	10	10	23	17	43	11	18	44	56	11	17	28	35	9	23	39	53	5	21	13	16	8	4	18	46	8	4	25	47	- 1	34	12	7	- 3	46
18	11	40	50	11	3	1	36	4	7	56	19	10	24	4	52	11	20	16	0	11	17	42	52	9	24	51	32	5	21	8	59	8	4	15	35	8	4	17	16	- 1	10	6	35	- 4	29
19	11	44	47	11	4	1	16	4	23	8	57	10	24	51	59	11	21	42	5	11	17	57	11	9	26	3	13	5	21	4	40	8	4	12	24	8	4	6	43	- 0	47	0	33	- 4	55
20	11	48	43	11	5	0	55	5	8	30	51	10	25	39	6	11	23	2	43	11	18	11	31	9	27	14	57	5	21	0	18	8	4	9	14	8	3	55	15	- 0	23	- 5	35	- 4	59
21	11	52	40	11	6	0	31	5	23	50	10	10	26	26	11	11	24	17	29	11	18	25	52	9	28	26	44	5	20	55	54	8	4	6	3	8	3	44	12	0	1	-11	21	- 4	42
22	11	56	36	11	7	0	6	6	8	55	35	10	27	13	15	11	25	26	0	11	18	40	14	9	29	38	33	5	20	51	28	8	4	2	52	8	3	34	47	0	24	-16	20	- 4	5
23	12	0	33	11	7	59	39	6	23	38	14	10	28	0	17	11	26	27	54	11	18	54	38	10	0	50	24	5	20	47	0	8	3	59	42	8	3	27	49	0	48	-20	11	- 3	13
24	12	4	29	11	8	59	10	7	7	52	55	10	28	47	19	11	27	22	54	11	19	9	2	10	2	2	18	5	20	42	30	8	3	56	31	8	3	23	37	1	12	-22	40	- 2	10
25	12	8	26	11	9	58	39	7	21	38	5	10	29	34	19	11	28	10	45	11	19	23	28	10	3	14	14	5	20	37	58	8	3	53	20	8	3	21	48	1	35	-23	41	- 1	2
26	12	12	23	11	10	58	6	8	4	55	12	11	0	21	17	11	28	51	13	11	19	37	54	10	4	26	13	5	20	33	25	8	3	50	9	8	3	21	31	1	59	-23	18	0	8
27	12	16	19	11	11	57	32	8	17	47	40	11	1	8	15	11	29	24	11	11	19	52	21	10	5	38	13	5	20	28	50	8	3	46	59	8	3	21	32	2	22	-21	40	1	16
28	12	20	16	11	12	56	56	9	0	19	53	11	1	55	11	11	29	49	33	11	20	6	49	10	6	50	16	5	20	24	14	8	3	43	48	8	3	20	37	2	46	-18	59	2	17
29	12	24	12	11	13	56	18	9	12	36	28	11	2	42	5	0	0	7	17	11	20	21	18	10	8	2	21	5	20	19	37	8	3	40	37	8	3	17	41	3	9	-15	31	3	11
30	12	28	9	11	14	55	38	9	24	41	47	11	3	28	58	0	0	17	27	11	20	35	47	10	9	14	28	5	20	14	59	8	3	37	26	8	3	12	3	3	33	-11	28	3	56
31	12	32	5	11	15	54	56	10	6	39	41	11	4	15	49	0	0	20	9	11	20	50	17	10	10	26	36	5	20	10	20	8	3	34	16	8	3	3	31	3	56	- 7	1	4	30

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अप्रैल 2011 ई. को अयनांश 24° 1' 8"

अप्रैल	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	12	36	2	11	16	54	13	10	18	33	18	11	5	2	39	0	0	15	35	11	21	4	47	10	11	38	46	5	20	5	41	8	3	31	5	8	2	52	22	4	19	-2	21	4	51
2	12	39	58	11	17	53	28	11	0	25	3	11	5	49	27	0	0	4	4	11	21	19	17	10	12	50	58	5	20	1	1	8	3	27	54	8	2	39	20	4	43	2	23	5	0
3	12	43	55	11	18	52	41	11	12	16	48	11	6	36	13	11	29	45	59	11	21	33	48	10	14	3	11	5	19	56	21	8	3	24	44	8	2	25	26	5	6	7	2	4	56
4	12	47	52	11	19	51	51	11	24	10	1	11	7	22	58	11	29	21	47	11	21	48	19	10	15	15	26	5	19	51	41	8	3	21	33	8	2	11	51	5	29	11	26	4	39
5	12	51	48	11	20	51	0	0	6	6	0	11	8	9	40	11	28	52	6	11	22	2	50	10	16	27	42	5	19	47	0	8	3	18	22	8	1	59	40	5	51	15	24	4	10
6	12	55	45	11	21	50	7	0	18	6	13	11	8	56	21	11	28	17	33	11	22	17	21	10	17	39	59	5	19	42	20	8	3	15	11	8	1	49	47	6	14	18	47	3	29
7	12	59	41	11	22	49	11	1	0	12	28	11	9	42	59	11	27	38	55	11	22	31	52	10	18	52	18	5	19	37	40	8	3	12	1	8	1	42	44	6	37	21	23	2	39
8	13	3	38	11	23	48	13	1	12	27	8	11	10	29	36	11	26	57	1	11	22	46	23	10	20	4	37	5	19	33	1	8	3	8	50	8	1	38	37	7	0	23	2	1	40
9	13	7	34	11	24	47	13	1	24	53	10	11	11	16	10	11	26	12	42	11	23	0	54	10	21	16	58	5	19	28	22	8	3	5	39	8	1	37	0	7	22	23	34	0	36
10	13	11	31	11	25	46	11	2	7	34	8	11	12	2	42	11	25	26	53	11	23	15	24	10	22	29	20	5	19	23	44	8	3	2	28	8	1	37	4	7	44	22	54	-0	32
11	13	15	27	11	26	45	6	2	20	33	49	11	12	49	12	11	24	40	28	11	23	29	54	10	23	41	43	5	19	19	7	8	2	59	18	8	1	37	41	8	7	21	0	-1	39
12	13	19	24	11	27	43	59	3	3	55	54	11	13	35	40	11	23	54	20	11	23	44	24	10	24	54	6	5	19	14	31	8	2	56	7	8	1	37	40	8	29	17	54	-2	43
13	13	23	21	11	28	42	50	3	17	43	13	11	14	22	6	11	23	9	21	11	23	58	53	10	26	6	31	5	19	9	57	8	2	52	56	8	1	36	2	8	51	13	44	-3	40
14	13	27	17	11	29	41	38	4	1	57	0	11	15	8	29	11	22	26	16	11	24	13	21	10	27	18	57	5	19	5	23	8	2	49	45	8	1	32	11	9	12	8	42	-4	25
15	13	31	14	0	0	40	24	4	16	35	45	11	15	54	50	11	21	45	50	11	24	27	49	10	28	31	24	5	19	0	51	8	2	46	35	8	1	26	4	9	34	3	3	-4	54
16	13	35	10	0	1	39	8	5	1	34	47	11	16	41	8	11	21	8	40	11	24	42	16	10	29	43	51	5	18	56	21	8	2	43	24	8	1	18	8	9	55	-2	54	-5	4
17	13	39	7	0	2	37	50	5	16	46	8	11	17	27	25	11	20	35	16	11	24	56	42	11	0	56	20	5	18	51	53	8	2	40	13	8	1	9	19	10	17	-8	46	-4	53
18	13	43	3	0	3	36	30	6	1	59	36	11	18	13	39	11	20	6	6	11	25	11	8	11	2	8	50	5	18	47	26	8	2	37	3	8	1	0	42	10	38	-14	6	-4	21
19	13	47	0	0	4	35	8	6	17	4	24	11	18	59	50	11	19	41	30	11	25	25	32	11	3	21	21	5	18	43	2	8	2	33	52	8	0	53	20	10	59	-18	30	-3	32
20	13	50	56	0	5	33	44	7	1	51	3	11	19	46	0	11	19	21	42	11	25	39	56	11	4	33	53	5	18	38	40	8	2	30	41	8	0	47	59	11	19	-21	37	-2	28
21	13	54	53	0	6	32	18	7	16	12	51	11	20	32	7	11	19	6	52	11	25	54	18	11	5	46	26	5	18	34	20	8	2	27	30	8	0	44	57	11	40	-23	15	-1	17
22	13	58	50	0	7	30	51	8	0	6	25	11	21	18	11	11	18	57	5	11	26	8	40	11	6	59	0	5	18	30	2	8	2	24	20	8	0	43	59	12	0	-23	22	-0	3
23	14	2	46	0	8	29	22	8	13	31	33	11	22	4	14	11	18	52	25	11	26	23	0	11	8	11	35	5	18	25	47	8	2	21	9	8	0	44	28	12	21	-22	5	1	8
24	14	6	43	0	9	27	51	8	26	30	24	11	22	50	14	11	18	52	49	11	26	37	19	11	9	24	11	5	18	21	35	8	2	17	58	8	0	45	30	12	41	-19	40	2	14
25	14	10	39	0	10	26	18	9	9	6	45	11	23	36	11	11	18	58	13	11	26	51	37	11	10	36	48	5	18	17	25	8	2	14	47	8	0	46	6	13	0	-16	21	3	11
26	14	14	36	0	11	24	44	9	21	25	8	11	24	22	6	11	19	8	32	11	27	5	54	11	11	49	26	5	18	13	19	8	2	11	37	8	0	45	27	13	20	-12	24	3	58
27	14	18	32	0	12	23	9	10	3	30	18	11	25	7	59	11	19	23	38	11	27	20	9	11	13	2	5	5	18	9	15	8	2	8	26	8	0	42	58	13	39	-8	2	4	34
28	14	22	29	0	13	21	32	10	15	26	51	11	25	53	49	11	19	43	23	11	27	34	22	11	14	14	45	5	18	5	15	8	2	5	15	8	0	38	29	13	58	-3	26	4	57
29	14	26	25	0	14	19	53	10	27	18	54	11	26	39	37	11	20	7	36	11	27	48	34	11	15	27	26	5	18	1	18	8	2	2	4	8	0	32	8	14	17	1	16	5	7
30	14	30	22	0	15	18	12	11	9	9	55	11	27	25	22	11	20	36	8	11	28	2	45	11	16	40	7	5	17	57	24	8	1	58	54	8	0	24	23	14	36	5	55	5	4

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मई 2011 ई. को अयनांश 24° 1' 11"

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 मई 2011 ई. को अयनांश 24° 1' 11''

ता.	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्यक्रां.	चन्द्रक्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	14 34 19	0 16 16 31	11 21 2 47	11 28 11 4	11 21 8 50	11 28 16 53	11 17 52 49	5 17 53 34	8 1 55 43	8 0 15 57	14 54	10 21	4 48
2	14 38 15	0 17 14 47	0 2 59 40	11 28 56 44	11 21 45 30	11 28 31 0	11 19 5 32	5 17 49 48	8 1 52 32	8 0 7 38	15 13	14 26	4 19
3	14 42 12	0 18 13 2	0 15 2 21	11 29 42 21	11 22 26 0	11 28 45 5	11 20 18 15	5 17 46 5	8 1 49 21	8 0 0 12	15 30	17 58	3 38
4	14 46 8	0 19 11 15	0 27 12 14	0 0 27 55	11 23 10 10	11 28 59 8	11 21 30 59	5 17 42 27	8 1 46 10	7 29 54 17	15 48	20 45	2 47
5	14 50 5	0 20 9 26	1 9 30 35	0 1 13 26	11 23 57 52	11 29 13 9	11 22 43 43	5 17 38 52	8 1 43 0	7 29 50 18	16 6	22 37	1 48
6	14 54 1	0 21 7 35	1 21 58 44	0 1 58 55	11 24 48 56	11 29 27 8	11 23 56 28	5 17 35 22	8 1 39 49	7 29 48 20	16 23	23 24	0 42
7	14 57 58	0 22 5 42	2 4 38 16	0 2 44 20	11 25 43 15	11 29 41 4	11 25 9 13	5 17 31 56	8 1 36 38	7 29 48 9	16 40	23 0	- 0 26
8	15 1 54	0 23 3 48	2 17 31 4	0 3 29 42	11 26 40 42	11 29 54 58	11 26 21 58	5 17 28 34	8 1 33 27	7 29 49 14	16 56	21 22	- 1 35
9	15 5 51	0 24 1 52	3 0 39 13	0 4 15 2	11 27 41 10	0 0 8 50	11 27 34 44	5 17 25 16	8 1 30 17	7 29 50 50	17 12	18 34	- 2 40
10	15 9 48	0 24 59 53	3 14 4 49	0 5 0 18	11 28 44 33	0 0 22 39	11 28 47 30	5 17 22 4	8 1 27 6	7 29 52 10	17 28	14 44	- 3 38
11	15 13 44	0 25 57 53	3 27 49 28	0 5 45 31	11 29 50 44	0 0 36 26	0 0 0 17	5 17 18 55	8 1 23 55	7 29 52 36	17 44	10 3	- 4 25
12	15 17 41	0 26 55 51	4 11 53 46	0 6 30 41	0 0 59 39	0 0 50 10	0 1 13 3	5 17 15 52	8 1 20 44	7 29 51 43	18 0	4 44	- 4 57
13	15 21 37	0 27 53 47	4 26 16 47	0 7 15 49	0 2 11 13	0 1 3 52	0 2 25 51	5 17 12 53	8 1 17 34	7 29 49 26	18 15	- 0 56	- 5 12
14	15 25 34	0 28 51 41	5 10 55 26	0 8 0 53	0 3 25 21	0 1 17 31	0 3 38 39	5 17 9 59	8 1 14 23	7 29 46 1	18 29	- 6 39	- 5 6
15	15 29 30	0 29 49 34	5 25 44 27	0 8 45 53	0 4 42 0	0 1 31 7	0 4 51 27	5 17 7 10	8 1 11 12	7 29 41 59	18 44	-12 3	- 4 41
16	15 33 27	1 0 47 25	6 10 36 41	0 9 30 51	0 6 1 7	0 1 44 40	0 6 4 16	5 17 4 26	8 1 8 1	7 29 38 0	18 58	-16 46	- 3 56
17	15 37 23	1 1 45 14	6 25 24 3	0 10 15 46	0 7 22 40	0 1 58 10	0 7 17 5	5 17 1 47	8 1 4 50	7 29 34 40	19 12	-20 24	- 2 56
18	15 41 20	1 2 43 2	7 9 58 45	0 11 0 38	0 8 46 35	0 2 11 37	0 8 29 55	5 16 59 14	8 1 1 40	7 29 32 26	19 26	-22 40	- 1 45
19	15 45 17	1 3 40 48	7 24 14 26	0 11 45 26	0 10 12 50	0 2 25 1	0 9 42 45	5 16 56 45	8 0 58 29	7 29 31 28	19 39	-23 24	- 0 29
20	15 49 13	1 4 38 34	8 8 6 57	0 12 30 12	0 11 41 25	0 2 38 23	0 10 55 37	5 16 54 22	8 0 55 18	7 29 31 41	19 52	-22 38	0 47
21	15 53 10	1 5 36 17	8 21 34 35	0 13 14 54	0 13 12 18	0 2 51 41	0 12 8 28	5 16 52 4	8 0 52 7	7 29 32 45	20 4	-20 34	1 58
22	15 57 6	1 6 34 0	9 4 37 49	0 13 59 34	0 14 45 28	0 3 4 55	0 13 21 21	5 16 49 51	8 0 48 56	7 29 34 12	20 16	-17 28	3 1
23	16 1 3	1 7 31 42	9 17 18 55	0 14 44 10	0 16 20 55	0 3 18 7	0 14 34 14	5 16 47 44	8 0 45 46	7 29 35 35	20 28	-13 38	3 53
24	16 4 59	1 8 29 22	9 29 41 22	0 15 28 44	0 17 58 37	0 3 31 15	0 15 47 8	5 16 45 42	8 0 42 35	7 29 36 27	20 40	- 9 19	4 33
25	16 8 56	1 9 27 2	10 11 49 27	0 16 13 14	0 19 38 35	0 3 44 19	0 17 0 3	5 16 43 45	8 0 39 24	7 29 36 34	20 51	- 4 43	5 0
26	16 12 52	1 10 24 40	10 23 47 46	0 16 57 41	0 21 20 49	0 3 57 20	0 18 12 58	5 16 41 55	8 0 36 13	7 29 35 49	21 2	0 0	5 13
27	16 16 49	1 11 22 18	11 5 40 53	0 17 42 5	0 23 5 18	0 4 10 17	0 19 25 54	5 16 40 9	8 0 33 2	7 29 34 18	21 12	4 40	5 13
28	16 20 46	1 12 19 55	11 17 33 5	0 18 26 26	0 24 52 2	0 4 23 11	0 20 38 51	5 16 38 30	8 0 29 52	7 29 32 11	21 22	9 10	5 0
29	16 24 42	1 13 17 30	11 29 28 12	0 19 10 44	0 26 41 0	0 4 36 1	0 21 51 48	5 16 36 56	8 0 26 41	7 29 29 46	21 32	13 21	4 33
30	16 28 39	1 14 15 5	0 11 29 33	0 19 54 58	0 28 32 13	0 4 48 47	0 23 4 46	5 16 35 28	8 0 23 30	7 29 27 23	21 41	17 2	3 55
31	16 32 35	1 15 12 39	0 23 39 46	0 20 39 9	1 0 25 37	0 5 1 29	0 24 17 45	5 16 34 6	8 0 20 19	7 29 25 18	21 50	20 3	3 5

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 जून 2011 ई. को अयनांश 24° 1' 16"

दिनांक	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्यक्रां.	चन्द्रक्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	16 36 32	1 16 10 12	1 6 0 52	0 21 23 17	1 2 21 12	0 5 14 6	0 25 30 44	5 16 32 50	8 0 17 8	7 29 23 47	21 59	22 12	2 6
2	16 40 28	1 17 7 43	1 18 34 15	0 22 7 21	1 4 18 54	0 5 26 40	0 26 43 44	5 16 31 40	8 0 13 58	7 29 22 55	22 7	23 17	0 59
3	16 44 25	1 18 5 14	2 1 20 44	0 22 51 22	1 6 18 39	0 5 39 9	0 27 56 44	5 16 30 35	8 0 10 47	7 29 22 43	22 14	23 11	- 0 11
4	16 48 21	1 19 2 44	2 14 20 42	0 23 35 20	1 8 20 24	0 5 51 34	0 29 9 45	5 16 29 37	8 0 7 36	7 29 23 4	22 22	21 49	- 1 22
5	16 52 18	1 20 0 12	2 27 34 16	0 24 19 14	1 10 24 1	0 6 3 54	1 0 22 46	5 16 28 44	8 0 4 25	7 29 23 47	22 29	19 14	- 2 30
6	16 56 15	1 20 57 39	3 11 1 17	0 25 3 4	1 12 29 23	0 6 16 10	1 1 35 48	5 16 27 58	8 0 1 14	7 29 24 35	22 36	15 36	- 3 31
7	17 0 11	1 21 55 5	3 24 41 25	0 25 46 51	1 14 36 20	0 6 28 21	1 2 48 50	5 16 27 18	7 29 58 4	7 29 25 17	22 42	11 5	- 4 21
8	17 4 8	1 22 52 30	4 8 34 3	0 26 30 35	1 16 44 44	0 6 40 28	1 4 1 53	5 16 26 43	7 29 54 53	7 29 25 43	22 48	5 56	- 4 56
9	17 8 4	1 23 49 54	4 22 38 9	0 27 14 14	1 18 54 20	0 6 52 30	1 5 14 56	5 16 26 15	7 29 51 42	7 29 25 50	22 53	0 26	- 5 15
10	17 12 1	1 24 47 17	5 6 52 4	0 27 57 51	1 21 4 56	0 7 4 26	1 6 28 0	5 16 25 52	7 29 48 31	7 29 25 40	22 58	- 5 9	- 5 14
11	17 15 57	1 25 44 38	5 21 13 24	0 28 41 23	1 23 16 17	0 7 16 18	1 7 41 4	5 16 25 36	7 29 45 20	7 29 25 21	23 3	-10 31	- 4 54
12	17 19 54	1 26 41 59	6 5 38 49	0 29 24 52	1 25 28 7	0 7 28 5	1 8 54 9	5 16 25 26	7 29 42 10	7 29 25 1	23 7	-15 20	- 4 16
13	17 23 50	1 27 39 18	6 20 4 11	1 0 8 18	1 27 40 9	0 7 39 47	1 10 7 14	5 16 25 22	7 29 38 59	7 29 24 46	23 11	-19 16	- 3 21
14	17 27 47	1 28 36 37	7 4 24 45	1 0 51 40	1 29 52 8	0 7 51 23	1 11 20 20	5 16 25 24	7 29 35 48	7 29 24 40	23 14	-21 59	- 2 14
15	17 31 44	1 29 33 55	7 18 35 46	1 1 34 59	2 2 3 46	0 8 2 55	1 12 33 27	5 16 25 31	7 29 32 37	7 29 24 40	23 17	-23 18	- 1 0
16	17 35 40	2 0 31 12	8 2 32 52	1 2 18 14	2 4 14 48	0 8 14 21	1 13 46 34	5 16 25 45	7 29 29 26	7 29 24 43	23 19	-23 6	0 17
17	17 39 37	2 1 28 28	8 16 12 41	1 3 1 25	2 6 25 0	0 8 25 42	1 14 59 43	5 16 26 5	7 29 26 16	7 29 24 42	23 22	-21 31	1 32
18	17 43 33	2 2 25 44	8 29 33 5	1 3 44 33	2 8 34 6	0 8 36 57	1 16 12 52	5 16 26 31	7 29 23 5	7 29 24 31	23 23	-18 46	2 39
19	17 47 30	2 3 23 0	9 12 33 28	1 4 27 38	2 10 41 56	0 8 48 6	1 17 26 2	5 16 27 3	7 29 19 54	7 29 24 9	23 25	-15 7	3 37
20	17 51 26	2 4 20 15	9 25 14 36	1 5 10 39	2 12 48 19	0 8 59 10	1 18 39 13	5 16 27 41	7 29 16 43	7 29 23 37	23 26	-10 53	4 22
21	17 55 23	2 5 17 29	10 7 38 35	1 5 53 37	2 14 53 4	0 9 10 8	1 19 52 25	5 16 28 25	7 29 13 32	7 29 22 59	23 26	- 6 18	4 54
22	17 59 19	2 6 14 44	10 19 48 34	1 6 36 31	2 16 56 4	0 9 21 1	1 21 5 38	5 16 29 15	7 29 10 21	7 29 22 24	23 26	- 1 33	5 12
23	18 3 16	2 7 11 58	11 1 48 29	1 7 19 22	2 18 57 13	0 9 31 47	1 22 18 52	5 16 30 10	7 29 7 11	7 29 22 0	23 26	3 11	5 16
24	18 7 13	2 8 9 13	11 13 42 41	1 8 2 10	2 20 56 26	0 9 42 28	1 23 32 7	5 16 31 12	7 29 4 0	7 29 21 55	23 25	7 46	5 7
25	18 11 9	2 9 6 27	11 25 35 46	1 8 44 54	2 22 53 38	0 9 53 2	1 24 45 23	5 16 32 20	7 29 0 49	7 29 22 13	23 24	12 3	4 44
26	18 15 6	2 10 3 41	0 7 32 19	1 9 27 34	2 24 48 47	0 10 3 30	1 25 58 40	5 16 33 34	7 28 57 38	7 29 22 54	23 22	15 55	4 9
27	18 19 2	2 11 0 55	0 19 36 37	1 10 10 11	2 26 41 50	0 10 13 51	1 27 11 59	5 16 34 54	7 28 54 27	7 29 23 51	23 20	19 9	3 23
28	18 22 59	2 11 58 9	1 1 52 29	1 10 52 44	2 28 32 46	0 10 24 6	1 28 25 18	5 16 36 19	7 28 51 17	7 29 24 55	23 18	21 36	2 27
29	18 26 55	2 12 55 23	1 14 22 59	1 11 35 14	3 0 21 34	0 10 34 15	1 29 38 38	5 16 37 51	7 28 48 6	7 29 25 49	23 15	23 4	1 22
30	18 30 52	2 13 52 37	1 27 10 18	1 12 17 40	3 2 8 13	0 10 44 17	2 0 51 59	5 16 39 28	7 28 44 55	7 29 26 20	23 12	23 21	0 13

2011 ई. को अयनांश 24° 1' 21"

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जुलाई 2011 ई. को अयनांश 24° 1' 21"

जुलाई	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	18 34 48	2 14 49 51	2 10 15 28	1 13 0 2	3 3 52 42	0 10 54 12	2 2 5 21	5 16 41 11	7 28 41 44	7 29 26 12	23 9	+22 23	-0 59
2	18 38 45	2 15 47 4	2 23 38 22	1 13 42 21	3 5 35 0	0 11 4 0	2 3 18 44	5 16 43 1	7 28 38 33	7 29 25 19	23 5	20 0	-2 10
3	18 42 42	2 16 44 18	3 7 17 35	1 14 24 36	3 7 15 8	0 11 13 41	2 4 32 8	5 16 44 55	7 28 35 23	7 29 23 41	23 8	16 43	-3 14
4	18 46 38	2 17 41 31	3 21 10 41	1 15 6 47	3 8 53 5	0 11 23 15	2 5 45 33	5 16 46 56	7 28 32 12	7 29 21 30	22 56	12 20	-4 8
5	18 50 35	2 18 38 44	4 5 14 30	1 15 48 54	3 10 28 51	0 11 32 42	2 6 58 58	5 16 49 3	7 28 29 1	7 29 19 5	22 50	7 15	-4 47
6	18 54 31	2 19 35 56	4 19 25 26	1 16 30 57	3 12 2 25	0 11 42 1	2 8 12 25	5 16 51 15	7 28 25 50	7 29 16 51	22 45	+1 44	-5 10
7	18 58 28	2 20 33 9	5 3 40 0	1 17 12 57	3 13 33 45	0 11 51 13	2 9 25 52	5 16 53 33	7 28 22 39	7 29 15 12	22 39	-3 53	-5 14
8	19 2 24	2 21 30 21	5 17 54 59	1 17 54 52	3 15 2 53	0 12 0 18	2 10 39 21	5 16 55 56	7 28 19 28	7 29 14 25	22 32	-9 17	-4 58
9	19 6 21	2 22 27 33	6 2 7 45	1 18 36 44	3 16 29 45	0 12 9 15	2 11 52 50	5 16 58 25	7 28 16 18	7 29 14 35	22 26	-14 12	-4 25
10	19 10 17	2 23 24 45	6 16 16 3	1 19 18 32	3 17 54 21	0 12 18 4	2 13 6 20	5 17 1 0	7 28 13 7	7 29 15 32	22 19	-18 18	-3 35
11	19 14 14	2 24 21 57	7 0 17 59	1 20 0 16	3 19 16 38	0 12 26 46	2 14 19 51	5 17 3 40	7 28 9 56	7 29 16 55	22 11	-21 19	-2 33
12	19 18 11	2 25 19 8	7 14 11 46	1 20 41 57	3 20 36 36	0 12 35 19	2 15 33 23	5 17 6 25	7 28 6 45	7 29 18 10	22 3	-23 2	-1 22
13	19 22 7	2 26 16 20	7 27 55 42	1 21 23 33	3 21 54 10	0 12 43 45	2 16 46 56	5 17 9 16	7 28 3 34	7 29 18 46	21 55	-22 19	-0 8
14	19 26 4	2 27 13 32	8 11 28 6	1 22 5 6	3 23 9 19	0 12 52 3	2 18 0 29	5 17 12 13	7 28 0 24	7 29 18 14	21 46	-22 12	+1 6
15	19 30 0	2 28 10 43	8 24 47 24	1 22 46 35	3 24 21 58	0 13 0 12	2 19 14 4	5 17 15 14	7 27 57 13	7 29 16 18	21 37	-19 53	2 15
16	19 33 57	2 29 7 56	9 7 52 18	1 23 28 0	3 25 32 3	0 13 8 14	2 20 27 40	5 17 18 21	7 27 54 2	7 29 12 59	21 28	-16 34	3 15
17	19 37 53	3 0 5 8	9 20 42 5	1 24 9 22	3 26 39 31	0 13 16 7	2 21 41 18	5 17 21 33	7 27 50 51	7 29 8 30	21 18	-12 31	4 4
18	19 41 50	3 1 2 21	10 3 16 46	1 24 50 40	3 27 44 16	0 13 23 52	2 22 54 56	5 17 24 51	7 27 47 40	7 29 3 20	21 8	-8 1	4 42
19	19 45 46	3 1 59 34	10 15 37 21	1 25 31 54	3 28 46 12	0 13 31 28	2 24 8 36	5 17 28 13	7 27 44 30	7 28 58 2	20 57	-3 15	5 3
20	19 49 43	3 2 56 49	10 27 45 48	1 26 13 4	3 29 45 14	0 13 38 55	2 25 22 16	5 17 31 41	7 27 41 19	7 28 53 12	20 46	+1 31	5 11
21	19 53 40	3 3 54 3	11 9 45 0	1 26 54 11	4 0 41 15	0 13 46 14	2 26 35 58	5 17 35 13	7 27 38 8	7 28 49 20	20 35	6 10	5 6
22	19 57 36	3 4 51 19	11 21 38 38	1 27 35 14	4 1 34 8	0 13 53 24	2 27 49 42	5 17 38 51	7 27 34 57	7 28 46 47	20 24	10 35	4 47
23	20 1 33	3 5 48 35	0 3 31 1	1 28 16 14	4 2 23 46	0 14 0 25	2 29 3 26	5 17 42 34	7 27 31 46	7 28 45 40	20 12	14 37	4 16
24	20 5 29	3 6 45 52	0 15 26 52	1 28 57 10	4 3 10 0	0 14 7 17	3 0 17 12	5 17 46 22	7 27 28 36	7 28 45 50	19 59	18 1	3 34
25	20 9 26	3 7 43 10	0 27 31 8	1 29 38 2	4 3 52 42	0 14 13 59	3 1 31 0	5 17 50 14	7 27 25 25	7 28 46 56	19 47	20 45	2 42
26	20 13 22	3 8 40 29	1 9 48 38	2 0 18 50	4 4 31 42	0 14 20 33	3 2 44 48	5 17 54 12	7 27 22 14	7 28 48 22	19 34	22 35	1 43
27	20 17 19	3 9 37 49	1 22 23 40	2 0 59 34	4 5 6 51	0 14 26 56	3 3 58 38	5 17 58 14	7 27 19 3	7 28 49 27	19 21	23 19	+0 35
28	20 21 15	3 10 35 10	2 5 19 38	2 1 40 14	4 5 37 59	0 14 33 11	3 5 12 29	5 18 2 21	7 27 15 53	7 28 49 29	19 7	22 51	-0 35
29	20 25 12	3 11 32 32	2 18 38 31	2 2 20 51	4 6 4 55	0 14 39 15	3 6 26 21	5 18 6 33	7 27 12 42	7 28 47 55	18 53	21 6	-1 45
30	20 29 9	3 12 29 54	3 2 20 34	2 3 1 23	4 6 27 28	0 14 45 10	3 7 40 14	5 18 10 49	7 27 9 31	7 28 44 30	18 39	18 5	-2 51
31	20 33 5	3 13 27 17	3 16 23 47	2 3 41 52	4 6 45 29	0 14 50 55	3 8 54 8	5 18 15 11	7 27 6 20	7 28 39 20	18 25	+13 58	-3 48

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अगस्त 2011 ई. को अयनांश 24° 1' 26''

तारीख	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	20 37 2	3 14 24 41	4 0 44 3	2 4 22 17	4 6 58 47	0 14 56 30	3 10 8 4	5 18 19 36	7 27 3 9	7 28 32 51	18 9	8 59	-4 32
2	20 40 58	3 15 22 6	4 15 15 31	2 5 2 37	4 7 7 11	0 15 1 55	3 11 22 0	5 18 24 7	7 26 59 59	7 28 25 52	17 54	3 28	-4 59
3	20 44 55	3 16 19 31	4 29 51 26	2 5 42 53	4 7 10 34	0 15 7 10	3 12 35 58	5 18 28 41	7 26 56 48	7 28 19 15	17 39	-2 16	-5 7
4	20 48 51	3 17 16 57	5 14 25 14	2 6 23 6	4 7 8 48	0 15 12 14	3 13 49 56	5 18 33 20	7 26 53 37	7 28 13 54	17 23	-7 52	-4 55
5	20 52 48	3 18 14 24	5 28 51 27	2 7 3 14	4 7 1 48	0 15 17 8	3 15 3 56	5 18 38 4	7 26 50 26	7 28 10 21	17 7	-12 59	-4 25
6	20 56 44	3 19 11 52	6 13 6 21	2 7 43 18	4 6 49 32	0 15 21 52	3 16 17 56	5 18 42 52	7 26 47 16	7 28 8 46	16 51	-17 19	-3 38
7	21 0 41	3 20 9 20	6 27 7 54	2 8 23 17	4 6 31 59	0 15 26 25	3 17 31 58	5 18 47 44	7 26 44 5	7 28 8 50	16 34	-20 36	-2 39
8	21 4 38	3 21 6 49	7 10 55 29	2 9 3 13	4 6 9 15	0 15 30 48	3 18 46 0	5 18 52 40	7 26 40 54	7 28 9 47	16 18	-22 37	-1 31
9	21 8 34	3 22 4 18	7 24 29 27	2 9 43 5	4 5 41 29	0 15 34 59	3 20 0 3	5 18 57 40	7 26 37 43	7 28 10 38	16 1	-23 16	-0 20
10	21 12 31	3 23 1 49	8 7 50 33	2 10 22 52	4 5 8 56	0 15 39 1	3 21 14 7	5 19 2 44	7 26 34 32	7 28 10 20	15 43	-22 34	0 52
11	21 16 27	3 23 59 20	8 20 59 31	2 11 2 35	4 4 31 57	0 15 42 51	3 22 28 12	5 19 7 52	7 26 31 22	7 28 8 2	15 26	-20 37	1 59
12	21 20 24	3 24 56 52	9 3 56 53	2 11 42 15	4 3 50 58	0 15 46 30	3 23 42 17	5 19 13 4	7 26 28 11	7 28 3 15	15 8	-17 38	2 59
13	21 24 20	3 25 54 26	9 16 42 54	2 12 21 50	4 3 6 33	0 15 49 59	3 24 56 24	5 19 18 20	7 26 25 0	7 27 55 57	14 50	-13 52	3 49
14	21 28 17	3 26 52 0	9 29 17 37	2 13 1 21	4 2 19 23	0 15 53 16	3 26 10 32	5 19 23 40	7 26 21 49	7 27 46 33	14 32	-9 32	4 27
15	21 32 13	3 27 49 36	10 11 41 12	2 13 40 48	4 1 30 15	0 15 56 23	3 27 24 40	5 19 29 4	7 26 18 39	7 27 35 47	14 13	-4 53	4 52
16	21 36 10	3 28 47 12	10 23 54 14	2 14 20 11	4 0 39 59	0 15 59 18	3 28 38 50	5 19 34 31	7 26 15 28	7 27 24 38	13 55	-0 7	5 3
17	21 40 7	3 29 44 51	11 5 57 52	2 14 59 31	3 29 49 33	0 16 2 2	3 29 53 1	5 19 40 2	7 26 12 17	7 27 14 6	13 36	4 35	5 0
18	21 44 3	4 0 42 30	11 17 54 4	2 15 38 46	3 28 59 55	0 16 4 34	4 1 7 13	5 19 45 37	7 26 9 6	7 27 5 3	13 17	9 4	4 44
19	21 48 0	4 1 40 11	11 29 45 37	2 16 17 57	3 28 12 4	0 16 6 55	4 2 21 25	5 19 51 15	7 26 5 56	7 26 58 7	12 57	13 11	4 16
20	21 51 56	4 2 37 54	0 11 36 6	2 16 57 4	3 27 27 1	0 16 9 5	4 3 35 39	5 19 56 56	7 26 2 45	7 26 53 33	12 38	16 48	3 36
21	21 55 53	4 3 35 38	0 23 29 52	2 17 36 6	3 26 45 42	0 16 11 3	4 4 49 54	5 20 2 41	7 25 59 34	7 26 51 13	12 18	19 44	2 48
22	21 59 49	4 4 33 25	1 5 31 51	2 18 15 5	3 26 9 2	0 16 12 49	4 6 4 10	5 20 8 30	7 25 56 23	7 26 50 36	11 58	21 52	1 51
23	22 3 46	4 5 31 12	1 17 47 16	2 18 54 0	3 25 37 49	0 16 14 23	4 7 18 27	5 20 14 21	7 25 53 13	7 26 50 51	11 38	23 0	0 48
24	22 7 42	4 6 29 2	2 0 21 17	2 19 32 50	3 25 12 46	0 16 15 46	4 8 32 45	5 20 20 16	7 25 50 2	7 26 50 56	11 18	23 0	-0 19
25	22 11 39	4 7 26 53	2 13 18 29	2 20 11 36	3 24 54 31	0 16 16 57	4 9 47 4	5 20 26 15	7 25 46 51	7 26 49 48	10 57	21 48	-1 26
26	22 15 36	4 8 24 46	2 26 42 12	2 20 50 18	3 24 43 34	0 16 17 56	4 11 1 24	5 20 32 16	7 25 43 40	7 26 46 39	10 36	19 21	-2 31
27	22 19 32	4 9 22 40	3 10 33 50	2 21 28 55	3 24 40 17	0 16 18 42	4 12 15 44	5 20 38 21	7 25 40 30	7 26 41 0	10 15	15 43	-3 30
28	22 23 29	4 10 20 36	3 24 52 1	2 22 7 28	3 24 44 57	0 16 19 17	4 13 30 6	5 20 44 28	7 25 37 19	7 26 32 57	9 54	11 5	-4 17
29	22 27 25	4 11 18 34	4 9 32 19	2 22 45 56	3 24 57 43	0 16 19 40	4 14 44 28	5 20 50 39	7 25 34 8	7 26 23 4	9 33	5 43	-4 48
30	22 31 22	4 12 16 33	4 24 27 23	2 23 24 20	3 25 18 40	0 16 19 51	4 15 58 51	5 20 56 52	7 25 30 57	7 26 12 22	9 12	-0 4	-5 1
31	22 35 18	4 13 14 31	5 9 27 58	2 24 2 39	3 25 47 45	0 16 19 49	4 17 13 15	5 21 3 9	7 25 27 47	7 26 2 6	8 50	-5 52	-4 53

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 सितम्बर 2011 ई. को अयनांश 24° 1' 30''

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 सितंबर 2011 ई. को अयनांश 24° 1' 30"

सितंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	22 39 15	4 14 12 37	5 24 24 34	2 24 40 53	3 26 24 53	0 16 19 36	4 18 27 40	5 21 9 28	7 25 24 36	7 25 53 24	8 29	-11 18	-4 25
2	22 43 11	4 15 10 40	6 9 8 58	2 25 19 3	3 27 9 51	0 16 19 10	4 19 42 5	5 21 15 50	7 25 21 25	7 25 47 3	8 7	-16 1	-3 40
3	22 47 8	4 16 8 46	6 23 35 27	2 25 57 8	3 28 2 24	0 16 18 33	4 20 56 31	5 21 22 14	7 25 18 15	7 25 43 20	7 45	-19 40	-2 41
4	22 51 5	4 17 6 52	7 7 41 9	2 26 35 9	3 29 2 13	0 16 17 43	4 22 10 57	5 21 28 42	7 25 15 4	7 25 41 52	7 23	-22 2	-1 34
5	22 55 1	4 18 5 0	7 21 25 42	2 27 13 5	4 0 8 55	0 16 16 42	4 23 25 23	5 21 35 11	7 25 11 53	7 25 41 46	7 1	-23 1	-0 23
6	22 58 58	4 19 3 10	8 4 50 28	2 27 50 56	4 1 22 5	0 16 15 28	4 24 39 51	5 21 41 43	7 25 8 42	7 25 41 47	6 39	-22 38	0 48
7	23 2 54	4 20 1 21	8 17 57 45	2 28 28 42	4 2 41 14	0 16 14 2	4 25 54 18	5 21 48 18	7 25 5 32	7 25 40 37	6 17	-21 0	1 55
8	23 6 51	4 20 59 33	9 0 50 4	2 29 6 23	4 4 5 53	0 16 12 25	4 27 8 46	5 21 54 55	7 25 2 21	7 25 37 11	5 54	-18 18	2 54
9	23 10 47	4 21 57 47	9 13 29 46	2 29 44 0	4 5 35 30	0 16 10 35	4 28 23 14	5 22 1 34	7 24 59 10	7 25 30 51	5 32	-14 47	3 44
10	23 14 44	4 22 56 2	9 25 58 47	3 0 21 32	4 7 9 32	0 16 8 34	4 29 37 43	5 22 8 15	7 24 55 59	7 25 21 31	5 9	-10 40	4 22
11	23 18 40	4 23 54 19	10 8 18 29	3 0 58 59	4 8 47 27	0 16 6 21	5 0 52 12	5 22 14 58	7 24 52 49	7 25 9 35	4 46	-6 10	4 47
12	23 22 37	4 24 52 38	10 20 29 56	3 1 36 21	4 10 28 42	0 16 3 56	5 2 6 42	5 22 21 44	7 24 49 38	7 24 55 57	4 23	-1 30	4 59
13	23 26 34	4 25 50 59	11 2 33 59	3 2 13 39	4 12 12 47	0 16 1 20	5 3 21 12	5 22 28 31	7 24 46 27	7 24 41 45	4 1	3 11	4 57
14	23 30 30	4 26 49 21	11 14 31 41	3 2 50 51	4 13 59 12	0 15 58 32	5 4 35 42	5 22 35 21	7 24 43 17	7 24 28 9	3 38	7 42	4 42
15	23 34 27	4 27 47 45	11 26 24 24	3 3 27 59	4 15 47 30	0 15 55 32	5 5 50 13	5 22 42 12	7 24 40 6	7 24 16 14	3 15	11 54	4 15
16	23 38 23	4 28 46 12	0 8 14 8	3 4 5 2	4 17 37 15	0 15 52 21	5 7 4 44	5 22 49 6	7 24 36 55	7 24 6 48	2 52	15 38	3 36
17	23 42 20	4 29 44 40	0 20 3 39	3 4 42 1	4 19 28 6	0 15 48 58	5 8 19 16	5 22 56 1	7 24 33 44	7 24 0 12	2 28	18 45	2 49
18	23 46 16	5 0 43 11	1 1 56 27	3 5 18 54	4 21 19 41	0 15 45 24	5 9 33 49	5 23 2 58	7 24 30 34	7 23 56 24	2 5	21 5	1 54
19	23 50 13	5 1 41 43	1 13 56 49	3 5 55 42	4 23 11 43	0 15 41 39	5 10 48 21	5 23 9 56	7 24 27 23	7 23 54 50	1 42	22 30	0 53
20	23 54 9	5 2 40 18	1 26 9 38	3 6 32 25	4 25 3 57	0 15 37 43	5 12 2 55	5 23 16 56	7 24 24 12	7 23 54 36	1 19	22 53	-0 12
21	23 58 6	5 3 38 55	2 8 40 5	3 7 9 3	4 26 56 10	0 15 33 35	5 13 17 28	5 23 23 58	7 24 21 1	7 23 54 36	0 55	22 7	-1 17
22	0 2 3	5 4 37 35	2 21 33 12	3 7 45 36	4 28 48 10	0 15 29 17	5 14 32 3	5 23 31 1	7 24 17 51	7 23 53 39	0 32	20 12	-2 21
23	0 5 59	5 5 36 16	3 4 53 18	3 8 22 4	5 0 39 49	0 15 24 48	5 15 46 37	5 23 38 6	7 24 14 40	7 23 50 49	0 9	17 8	-3 19
24	0 9 56	5 6 35 0	3 18 43 3	3 8 58 26	5 2 30 59	0 15 20 8	5 17 1 13	5 23 45 12	7 24 11 29	7 23 45 31	-0 15	13 1	-4 8
25	0 13 52	5 7 33 46	4 3 2 34	3 9 34 43	5 4 21 34	0 15 15 18	5 18 15 48	5 23 52 20	7 24 8 19	7 23 37 45	-0 38	8 3	-4 43
26	0 17 49	5 8 32 34	4 17 48 35	3 10 10 54	5 6 11 30	0 15 10 17	5 19 30 24	5 23 59 28	7 24 5 8	7 23 28 4	-1 1	2 30	-5 0
27	0 21 45	5 9 31 24	5 2 54 15	3 10 46 59	5 8 0 41	0 15 5 7	5 20 45 0	5 24 6 38	7 24 1 57	7 23 17 26	-1 25	-3 20	-4 57
28	0 25 42	5 10 30 17	5 18 9 46	3 11 22 59	5 9 49 6	0 14 59 46	5 21 59 37	5 24 13 49	7 23 58 46	7 23 7 6	-1 48	-9 1	-4 34
29	0 29 38	5 11 29 11	6 3 23 59	3 11 58 53	5 11 36 41	0 14 54 16	5 23 14 13	5 24 21 1	7 23 55 36	7 22 58 14	-2 11	-14 8	-3 50
30	0 33 35	5 12 28 7	6 18 26 23	3 12 34 41	5 13 23 27	0 14 48 36	5 24 28 50	5 24 28 14	7 23 52 25	7 22 51 40	-2 35	-18 18	-2 52

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अक्तूबर 2011 ई. को अयनांश 24° 1' 33"

अक्तूबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	0 37 32	5 13 27 5	7 3 8 53	3 13 10 23	5 15 9 21	0 14 42 47	5 25 43 27	5 24 35 28	7 23 49 14	7 22 47 44	-2 58	-21 11	-1 42
2	0 41 28	5 14 26 5	7 17 26 40	3 13 45 59	5 16 54 24	0 14 36 49	5 26 58 4	5 24 42 43	7 23 46 4	7 22 46 10	-3 21	-22 37	-0 28
3	0 45 25	5 15 25 6	8 1 18 15	3 14 21 29	5 18 38 34	0 14 30 42	5 28 12 41	5 24 49 58	7 23 42 53	7 22 46 9	-3 45	-22 36	0 45
4	0 49 21	5 16 24 10	8 14 44 44	3 14 56 52	5 20 21 54	0 14 24 27	5 29 27 18	5 24 57 15	7 23 39 42	7 22 46 35	-4 8	-21 15	1 54
5	0 53 18	5 17 23 15	8 27 48 49	3 15 32 10	5 22 4 22	0 14 18 3	6 0 41 55	5 25 4 31	7 23 36 31	7 22 46 14	-4 31	-18 47	2 55
6	0 57 14	5 18 22 22	9 10 33 57	3 16 7 21	5 23 46 0	0 14 11 32	6 1 56 31	5 25 11 49	7 23 33 21	7 22 44 4	-4 54	-15 27	3 46
7	1 1 11	5 19 21 30	9 23 3 41	3 16 42 27	5 25 26 49	0 14 4 52	6 3 11 8	5 25 19 7	7 23 30 10	7 22 39 27	-5 17	-11 30	4 25
8	1 5 7	5 20 20 41	10 5 21 21	3 17 17 25	5 27 6 49	0 13 58 6	6 4 25 45	5 25 26 25	7 23 26 59	7 22 32 13	-5 40	-7 9	4 50
9	1 9 4	5 21 19 53	10 17 29 49	3 17 52 18	5 28 46 1	0 13 51 12	6 5 40 21	5 25 33 44	7 23 23 48	7 22 22 42	-6 3	-2 35	5 3
10	1 13 1	5 22 19 7	10 29 31 22	3 18 27 4	6 0 24 26	0 13 44 11	6 6 54 58	5 25 41 2	7 23 20 38	7 22 11 35	-6 26	2 3	5 1
11	1 16 57	5 23 18 23	11 11 27 51	3 19 1 44	6 2 2 5	0 13 37 4	6 8 9 34	5 25 48 22	7 23 17 27	7 21 59 53	-6 48	6 34	4 47
12	1 20 54	5 24 17 41	11 23 20 49	3 19 36 17	6 3 39 0	0 13 29 50	6 9 24 10	5 25 55 41	7 23 14 16	7 21 48 36	-7 11	10 49	4 20
13	1 24 50	5 25 17 1	0 5 11 43	3 20 10 44	6 5 15 12	0 13 22 31	6 10 38 46	5 26 3 1	7 23 11 6	7 21 38 44	-7 33	14 39	3 41
14	1 28 47	5 26 16 23	0 17 2 9	3 20 45 4	6 6 50 40	0 13 15 6	6 11 53 23	5 26 10 20	7 23 7 55	7 21 30 58	-7 56	17 53	2 53
15	1 32 43	5 27 15 47	0 28 54 9	3 21 19 17	6 8 25 28	0 13 7 35	6 13 7 59	5 26 17 40	7 23 4 44	7 21 25 43	-8 18	20 24	1 58
16	1 36 40	5 28 15 14	1 10 50 14	3 21 53 23	6 9 59 34	0 12 59 59	6 14 22 35	5 26 24 59	7 23 1 33	7 21 22 58	-8 40	22 2	0 56
17	1 40 36	5 29 14 42	1 22 53 38	3 22 27 23	6 11 33 1	0 12 52 19	6 15 37 11	5 26 32 19	7 22 58 23	7 21 22 20	-9 2	22 40	-0 8
18	1 44 33	6 0 14 13	2 5 8 8	3 23 1 16	6 13 5 49	0 12 44 34	6 16 51 47	5 26 39 38	7 22 55 12	7 21 23 6	-9 24	22 13	-1 14
19	1 48 30	6 1 13 47	2 17 38 3	3 23 35 1	6 14 37 59	0 12 36 45	6 18 6 24	5 26 46 57	7 22 52 1	7 21 24 20	-9 46	20 39	-2 17
20	1 52 26	6 2 13 22	3 0 27 48	3 24 8 39	6 16 9 30	0 12 28 52	6 19 21 0	5 26 54 16	7 22 48 50	7 21 25 5	-10 8	18 1	-3 15
21	1 56 23	6 3 13 0	3 13 41 33	3 24 42 10	6 17 40 24	0 12 20 56	6 20 35 37	5 27 1 34	7 22 45 40	7 21 24 31	-10 29	14 24	-4 5
22	2 0 19	6 4 12 40	3 27 22 29	3 25 15 33	6 19 10 41	0 12 12 57	6 21 50 13	5 27 8 52	7 22 42 29	7 21 22 8	-10 51	9 54	-4 42
23	2 4 16	6 5 12 22	4 11 31 53	3 25 48 49	6 20 40 21	0 12 4 55	6 23 4 50	5 27 16 9	7 22 39 18	7 21 17 52	-11 12	4 45	-5 4
24	2 8 12	6 6 12 7	4 26 8 18	3 26 21 57	6 22 9 24	0 11 56 51	6 24 19 27	5 27 23 26	7 22 36 7	7 21 12 3	-11 33	-0 49	-5 8
25	2 12 9	6 7 11 54	5 11 6 58	3 26 54 56	6 23 37 49	0 11 48 45	6 25 34 3	5 27 30 42	7 22 32 57	7 21 5 24	-11 54	-6 29	-4 50
26	2 16 5	6 8 11 43	5 26 19 53	3 27 27 48	6 25 5 37	0 11 40 37	6 26 48 40	5 27 37 58	7 22 29 46	7 20 58 49	-12 15	-11 51	-4 12
27	2 20 2	6 9 11 33	6 11 36 48	3 28 0 31	6 26 32 46	0 11 32 29	6 28 3 17	5 27 45 12	7 22 26 35	7 20 53 11	-12 35	-16 29	-3 16
28	2 23 59	6 10 11 26	6 26 46 51	3 28 33 5	6 27 59 15	0 11 24 20	6 29 17 53	5 27 52 [illegible]	7 22 23 24	7 20 49 10	-12 55	-19 59	-2 7
29	2 27 55	6 11 11 21	7 11 40 28	3 29 5 31	6 29 25 3	0 11 16 10	7 0 32 30	5 27 59 39	7 22 20 14	7 20 47 2	-13 16	-22 4	-0 49
30	2 31 52	6 12 11 17	7 26 10 44	3 29 37 49	7 0 50 8	0 11 8 1	7 1 47 6	5 28 6 50	7 22 17 3	7 20 46 40	-13 35	-22 35	0 29
31	2 35 48	6 13 11 16	8 10 13 58	4 0 9 57	7 2 14 28	0 10 59 52	7 3 1 42	5 28 14 1	7 22 13 52	7 20 47 34	-13 55	-21 38	1 44

145

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 नवंबर 2011 ई. को अयनांश 24° 1' 36"

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 नवंबर 2011 ई. को अयनांश 24° 1' 36''

नवंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	2 39 45	6 14 11 16	8 23 49 33	4 0 41 56	7 3 38 0	0 10 51 44	7 4 16 18	5 28 21 10	7 22 10 41	7 20 49 2	-14 15	-19 26	2 50
2	2 43 41	6 15 11 17	9 6 59 12	4 1 13 46	7 5 0 40	0 10 43 37	7 5 30 54	5 28 28 18	7 22 7 31	7 20 50 14	-14 34	-16 16	3 45
3	2 47 38	6 16 11 20	9 19 46 7	4 1 45 27	7 6 22 26	0 10 35 32	7 6 45 29	5 28 35 25	7 22 4 20	7 20 50 30	-14 53	-12 24	4 28
4	2 51 34	6 17 11 25	10 2 14 12	4 2 16 59	7 7 43 13	0 10 27 29	7 8 0 4	5 28 42 31	7 22 1 9	7 20 49 22	-15 12	-8 7	4 56
5	2 55 31	6 18 11 32	10 14 27 38	4 2 48 21	7 9 2 55	0 10 19 28	7 9 14 38	5 28 49 35	7 21 57 58	7 20 46 41	-15 30	-3 35	5 10
6	2 59 28	6 19 11 39	10 26 30 25	4 3 19 33	7 10 21 27	0 10 11 30	7 10 29 12	5 28 56 37	7 21 54 48	7 20 42 37	-15 48	1 1	5 11
7	3 3 24	6 20 11 49	11 8 26 11	4 3 50 36	7 11 38 43	0 10 3 36	7 11 43 45	5 29 3 38	7 21 51 37	7 20 37 33	-16 6	5 32	4 57
8	3 7 21	6 21 12 0	11 20 18 5	4 4 21 28	7 12 54 33	0 9 55 44	7 12 58 19	5 29 10 38	7 21 48 26	7 20 32 3	-16 24	9 49	4 31
9	3 11 17	6 22 12 12	0 2 8 45	4 4 52 11	7 14 8 49	0 9 47 57	7 14 12 51	5 29 17 35	7 21 45 15	7 20 26 43	-16 41	13 44	3 54
10	3 15 14	6 23 12 27	0 14 0 20	4 5 22 44	7 15 21 20	0 9 40 14	7 15 27 24	5 29 24 31	7 21 42 4	7 20 22 5	-16 59	17 7	3 6
11	3 19 10	6 24 12 43	0 25 54 46	4 5 53 6	7 16 31 53	0 9 32 36	7 16 41 55	5 29 31 25	7 21 38 54	7 20 18 36	-17 16	19 48	2 10
12	3 23 7	6 25 13 0	1 7 53 46	4 6 23 18	7 17 40 16	0 9 25 2	7 17 56 27	5 29 38 17	7 21 35 43	7 20 16 30	-17 32	21 39	1 8
13	3 27 3	6 26 13 20	1 19 59 10	4 6 53 19	7 18 46 10	0 9 17 34	7 19 10 58	5 29 45 7	7 21 32 32	7 20 15 46	-17 48	22 30	0 2
14	3 31 0	6 27 13 41	2 2 12 57	4 7 23 9	7 19 49 19	0 9 10 11	7 20 25 29	5 29 51 55	7 21 29 21	7 20 16 13	-18 4	22 18	-1 5
15	3 34 57	6 28 14 4	2 14 37 27	4 7 52 48	7 20 49 21	0 9 2 54	7 21 40 0	5 29 58 41	7 21 26 11	7 20 17 29	-18 20	20 59	-2 10
16	3 38 53	6 29 14 29	2 27 15 16	4 8 22 16	7 21 45 52	0 8 55 43	7 22 54 30	6 0 5 25	7 21 23 0	7 20 19 4	-18 35	18 37	-3 10
17	3 42 50	7 0 14 56	3 10 9 17	4 8 51 32	7 22 38 24	0 8 48 38	7 24 9 0	6 0 12 7	7 21 19 49	7 20 20 30	-18 50	15 18	-4 2
18	3 46 46	7 1 15 25	3 23 22 16	4 9 20 37	7 23 26 28	0 8 41 41	7 25 23 29	6 0 18 46	7 21 16 38	7 20 21 22	-19 5	11 8	-4 42
19	3 50 43	7 2 15 55	4 6 56 31	4 9 49 29	7 24 9 30	0 8 34 50	7 26 37 59	6 0 25 23	7 21 13 27	7 20 21 26	-19 19	6 20	-5 8
20	3 54 39	7 3 16 27	4 20 53 21	4 10 18 9	7 24 46 51	0 8 28 7	7 27 52 28	6 0 31 57	7 21 10 17	7 20 20 39	-19 33	1 5	-5 16
21	3 58 36	7 4 17 2	5 5 12 26	4 10 46 36	7 25 17 51	0 8 21 32	7 29 6 57	6 0 38 29	7 21 7 6	7 20 19 12	-19 47	-4 22	-5 6
22	4 2 32	7 5 17 38	5 19 51 13	4 11 14 50	7 25 41 46	0 8 15 5	8 0 21 26	6 0 44 58	7 21 3 55	7 20 17 23	-20 0	-9 42	-4 35
23	4 6 29	7 6 18 15	6 4 44 42	4 11 42 51	7 25 57 49	0 8 8 46	8 1 35 54	6 0 51 25	7 21 0 44	7 20 15 34	-20 13	-14 33	-3 46
24	4 10 26	7 7 18 54	6 19 45 40	4 12 10 38	7 26 5 15	0 8 2 35	8 2 50 22	6 0 57 49	7 20 57 33	7 20 14 4	-20 26	-18 32	-2 41
25	4 14 22	7 8 19 35	7 4 45 32	4 12 38 12	7 26 3 18	0 7 56 34	8 4 4 49	6 1 4 10	7 20 54 23	7 20 13 8	-20 38	-21 16	-1 25
26	4 18 19	7 9 20 17	7 19 35 35	4 13 5 31	7 25 51 19	0 7 50 42	8 5 19 16	6 1 10 28	7 20 51 12	7 20 12 50	-20 50	-22 29	-0 4
27	4 22 15	7 10 21 0	8 4 8 14	4 13 32 36	7 25 28 45	0 7 44 59	8 6 33 43	6 1 16 44	7 20 48 1	7 20 13 5	-21 1	-22 9	1 16
28	4 26 12	7 11 21 45	8 18 18 4	4 13 59 27	7 24 55 19	0 7 39 26	8 7 48 9	6 1 22 56	7 20 44 50	7 20 13 43	-21 12	-20 23	2 30
29	4 30 8	7 12 22 31	9 2 2 10	4 14 26 2	7 24 11 1	0 7 34 3	8 9 2 34	6 1 29 5	7 20 41 39	7 20 14 30	-21 23	-17 28	3 32
30	4 34 5	7 13 23 18	9 15 20 10	4 14 52 22	7 23 16 18	0 7 28 49	8 10 16 58	6 1 35 11	7 20 38 29	7 20 15 14	-21 33	-13 43	4 21

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 दिसंबर 2011 ई. को अयनांश 24° 1' 40"

दिसंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	4	38	1	7	14	24	6	9	28	13	42	4	15	18	26	7	22	12	5	0	7	23	47	8	11	31	22	6	1	41	13	7	20	35	18	7	20	15	45	-21	43	-9	27	4	54
2	4	41	58	7	15	24	55	10	10	45	55	4	15	44	15	7	20	59	49	0	7	18	54	8	12	45	45	6	1	47	12	7	20	32	7	7	20	16	1	-21	52	-4	53	5	13
3	4	45	55	7	16	25	44	10	23	0	53	4	16	9	48	7	19	41	31	0	7	14	13	8	14	0	7	6	1	53	8	7	20	28	56	7	20	16	2	-22	1	-0	15	5	17
4	4	49	51	7	17	26	35	11	5	3	5	4	16	35	4	7	18	19	35	0	7	9	42	8	15	14	28	6	1	59	0	7	20	25	45	7	20	15	53	-22	9	4	20	5	7
5	4	53	48	7	18	27	26	11	16	57	7	4	17	0	3	7	16	56	46	0	7	5	23	8	16	28	48	6	2	4	49	7	20	22	35	7	20	15	42	-22	17	8	42	4	44
6	4	57	44	7	19	28	18	11	28	47	18	4	17	24	46	7	15	35	52	0	7	1	14	8	17	43	7	6	2	10	34	7	20	19	24	7	20	15	34	-22	25	12	43	4	9
7	5	1	41	7	20	29	12	0	10	37	36	4	17	49	11	7	14	19	35	0	6	57	17	8	18	57	25	6	2	16	16	7	20	16	13	7	20	15	34	-22	32	16	15	3	23
8	5	5	37	7	21	30	5	0	22	31	27	4	18	13	19	7	13	10	16	0	6	53	31	8	20	11	41	6	2	21	54	7	20	13	2	7	20	15	40	-22	39	19	9	2	28
9	5	9	34	7	22	31	0	1	4	31	40	4	18	37	9	7	12	9	49	0	6	49	57	8	21	25	57	6	2	27	28	7	20	9	51	7	20	15	50	-22	45	21	14	1	26
10	5	13	30	7	23	31	56	1	16	40	33	4	19	0	40	7	11	19	33	0	6	46	35	8	22	40	11	6	2	32	58	7	20	6	41	7	20	15	58	-22	51	22	23	0	20
11	5	17	27	7	24	32	52	1	28	59	47	4	19	23	53	7	10	40	18	0	6	43	24	8	23	54	24	6	2	38	24	7	20	3	30	7	20	15	56	-22	57	22	27	-0	48
12	5	21	24	7	25	33	50	2	11	30	35	4	19	46	47	7	10	12	22	0	6	40	25	8	25	8	36	6	2	43	47	7	20	0	19	7	20	15	37	-23	2	21	24	-1	55
13	5	25	20	7	26	34	48	2	24	13	49	4	20	9	21	7	9	55	38	0	6	37	38	8	26	22	47	6	2	49	5	7	19	57	8	7	20	14	58	-23	6	19	15	-2	58
14	5	29	17	7	27	35	47	3	7	10	9	4	20	31	36	7	9	49	43	0	6	35	3	8	27	36	56	6	2	54	19	7	19	53	57	7	20	14	2	-23	10	16	7	-3	52
15	5	33	13	7	28	36	48	3	20	20	3	4	20	53	29	7	9	54	0	0	6	32	41	8	28	51	5	6	2	59	29	7	19	50	47	7	20	12	56	-23	14	12	8	-4	35
16	5	37	10	7	29	37	49	4	3	43	55	4	21	15	2	7	10	7	42	0	6	30	30	9	0	5	12	6	3	4	35	7	19	47	36	7	20	11	51	-23	17	7	29	-5	4
17	5	41	6	8	0	38	51	4	17	22	1	4	21	36	14	7	10	30	1	0	6	28	32	9	1	19	18	6	3	9	36	7	19	44	25	7	20	11	3	-23	20	2	24	-5	17
18	5	45	3	8	1	39	55	5	1	14	16	4	21	57	4	7	11	0	7	0	6	26	46	9	2	33	22	6	3	14	34	7	19	41	14	7	20	10	42	-23	22	-2	53	-5	11
19	5	48	59	8	2	40	59	5	15	20	6	4	22	17	31	7	11	37	12	0	6	25	12	9	3	47	25	6	3	19	26	7	19	38	3	7	20	10	56	-23	24	-8	6	-4	47
20	5	52	56	8	3	42	4	5	29	38	7	4	22	37	35	7	12	20	29	0	6	23	51	9	5	1	27	6	3	24	14	7	19	34	53	7	20	11	42	-23	25	-12	59	-4	5
21	5	56	53	8	4	43	10	6	14	5	48	4	22	57	15	7	13	9	18	0	6	22	42	9	6	15	28	6	3	28	58	7	19	31	42	7	20	12	47	-23	26	-17	10	-3	7
22	6	0	49	8	5	44	17	6	28	39	21	4	23	16	32	7	14	2	58	0	6	21	46	9	7	29	27	6	3	33	37	7	19	28	31	7	20	13	52	-23	26	-20	19	-1	57
23	6	4	46	8	6	45	24	7	13	13	50	4	23	35	23	7	15	0	56	0	6	21	3	9	8	43	24	6	3	38	11	7	19	25	20	7	20	14	33	-23	26	-22	9	-0	39
24	6	8	42	8	7	46	32	7	27	43	29	4	23	53	50	7	16	2	40	0	6	20	32	9	9	57	20	6	3	42	41	7	19	22	9	7	20	14	30	-23	25	-22	30	0	41
25	6	12	39	8	8	47	40	8	12	2	23	4	24	11	51	7	17	7	44	0	6	20	14	9	11	11	14	6	3	47	5	7	19	18	58	7	20	13	29	-23	24	-21	20	1	58
26	6	16	35	8	9	48	49	8	26	5	14	4	24	29	25	7	18	15	43	0	6	20	8	9	12	25	7	6	3	51	25	7	19	15	48	7	20	11	29	-23	23	-18	53	3	5
27	6	20	32	8	10	49	58	9	9	48	1	4	24	46	32	7	19	26	16	0	6	20	15	9	13	38	57	6	3	55	40	7	19	12	37	7	20	8	40	-23	21	-15	24	4	0
28	6	24	28	8	11	51	8	9	23	8	27	4	25	3	12	7	20	39	5	0	6	20	35	9	14	52	46	6	3	59	49	7	19	9	26	7	20	5	23	-23	18	-11	13	4	41
29	6	28	25	8	12	52	17	10	6	6	13	4	25	19	24	7	21	53	55	0	6	21	7	9	16	6	32	6	4	3	54	7	19	6	15	7	20	2	5	-23	15	-6	39	5	6
30	6	32	22	8	13	53	26	10	18	42	47	4	25	35	8	7	23	10	30	0	6	21	52	9	17	20	16	6	4	7	53	7	19	3	4	7	19	59	17	-23	12	-1	56	5	15
31	6	36	18	8	14	54	36	11	1	1	6	4	25	50	22	7	24	28	41	0	6	22	49	9	18	33	58	6	4	11	47	7	18	59	54	7	19	57	20	-23	8	2	46	5	9

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जनवरी 2012 ई. को अयनांश 24° 1' 46"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	6 40 15	8 15 55 45	11 13 5 10	4 26 5 7	7 25 48 15	0 6 23 59	9 19 47 37	6 4 15 36	7 18 56 43	7 19 56 29	-23 4	7 15	4 50
2	6 44 11	8 16 56 54	11 24 59 41	4 26 19 21	7 27 9 5	0 6 25 22	9 21 1 14	6 4 19 20	7 18 53 32	7 19 56 46	-22 59	11 25	4 18
3	6 48 8	8 17 58 3	0 6 49 37	4 26 33 5	7 28 31 2	0 6 26 56	9 22 14 48	6 4 22 58	7 18 50 21	7 19 58 0	-22 54	15 8	3 35
4	6 52 4	8 18 59 12	0 18 39 58	4 26 46 18	7 29 54 0	0 6 28 43	9 23 28 19	6 4 26 31	7 18 47 10	7 19 59 48	-22 48	18 15	2 44
5	6 56 1	8 20 0 20	1 0 35 27	4 26 58 58	8 1 17 54	0 6 30 43	9 24 41 47	6 4 29 58	7 18 44 0	7 20 1 38	-22 42	20 37	1 45
6	6 59 57	8 21 1 28	1 12 40 16	4 27 11 6	8 2 42 39	0 6 32 54	9 25 55 13	6 4 33 20	7 18 40 49	7 20 2 55	-22 35	22 5	0 40
7	7 3 54	8 22 2 36	1 24 57 50	4 27 22 42	8 4 8 11	0 6 35 18	9 27 8 35	6 4 36 36	7 18 37 38	7 20 3 4	-22 28	22 32	-0 27
8	7 7 51	8 23 3 44	2 7 30 41	4 27 33 43	8 5 34 26	0 6 37 53	9 28 21 54	6 4 39 47	7 18 34 27	7 20 1 41	-22 21	21 52	-1 34
9	7 11 47	8 24 4 51	2 20 20 7	4 27 44 10	8 7 1 23	0 6 40 41	9 29 35 10	6 4 42 52	7 18 31 16	7 19 58 33	-22 13	20 3	-2 38
10	7 15 44	8 25 5 59	3 3 26 20	4 27 54 1	8 8 28 58	0 6 43 40	10 0 48 22	6 4 45 52	7 18 28 6	7 19 53 48	-22 4	17 9	-3 35
11	7 19 40	8 26 7 6	3 16 48 18	4 28 3 17	8 9 57 11	0 6 46 51	10 2 1 31	6 4 48 45	7 18 24 55	7 19 47 52	-21 56	13 20	-4 21
12	7 23 37	8 27 8 13	4 0 24 4	4 28 11 56	8 11 25 59	0 6 50 14	10 3 14 37	6 4 51 33	7 18 21 44	7 19 41 24	-21 46	8 46	-4 53
13	7 27 33	8 28 9 20	4 14 11 5	4 28 19 58	8 12 55 22	0 6 53 49	10 4 27 39	6 4 54 16	7 18 18 33	7 19 35 16	-21 37	3 43	-5 9
14	7 31 30	8 29 10 26	4 28 6 38	4 28 27 22	8 14 25 18	0 6 57 35	10 5 40 38	6 4 56 52	7 18 15 22	7 19 30 14	-21 27	-1 35	-5 7
15	7 35 26	9 0 11 33	5 12 8 11	4 28 34 7	8 15 55 46	0 7 1 32	10 6 53 33	6 4 59 22	7 18 12 12	7 19 26 52	-21 16	-6 50	-4 46
16	7 39 23	9 1 12 40	5 26 13 39	4 28 40 13	8 17 26 47	0 7 5 41	10 8 6 25	6 5 1 47	7 18 9 1	7 19 25 23	-21 5	-11 45	-4 9
17	7 43 20	9 2 13 46	6 10 21 21	4 28 45 38	8 18 58 21	0 7 10 1	10 9 19 13	6 5 4 5	7 18 5 50	7 19 25 33	-20 54	-16 3	-3 16
18	7 47 16	9 3 14 52	6 24 29 55	4 28 50 22	8 20 30 26	0 7 14 33	10 10 31 57	6 5 6 18	7 18 2 39	7 19 26 42	-20 42	-19 26	-2 11
19	7 51 13	9 4 15 58	7 8 37 57	4 28 54 24	8 22 3 3	0 7 19 16	10 11 44 37	6 5 8 24	7 17 59 28	7 19 27 55	-20 30	-21 39	-0 58
20	7 55 9	9 5 17 4	7 22 43 38	4 28 57 44	8 23 36 12	0 7 24 9	10 12 57 13	6 5 10 24	7 17 56 18	7 19 28 12	-20 18	-22 29	0 18
21	7 59 6	9 6 18 9	8 6 44 38	4 29 0 21	8 25 9 54	0 7 29 14	10 14 9 45	6 5 12 19	7 17 53 7	7 19 26 42	-20 5	-21 54	1 32
22	8 3 2	9 7 19 14	8 20 37 59	4 29 2 14	8 26 44 9	0 7 34 29	10 15 22 13	6 5 14 6	7 17 49 56	7 19 22 53	-19 51	-19 59	2 40
23	8 6 59	9 8 20 18	9 4 20 23	4 29 3 23	8 28 18 58	0 7 39 56	10 16 34 36	6 5 15 48	7 17 46 45	7 19 16 42	-19 38	-16 56	3 38
24	8 10 55	9 9 21 21	9 17 48 38	4 29 3 47	8 29 54 22	0 7 45 33	10 17 46 55	6 5 17 24	7 17 43 34	7 19 8 31	-19 24	-13 2	4 22
25	8 14 52	9 10 22 24	10 1 0 9	4 29 3 26	9 1 30 21	0 7 51 20	10 18 59 9	6 5 18 53	7 17 40 24	7 18 59 7	-19 9	-8 36	4 51
26	8 18 49	9 11 23 26	10 13 53 30	4 29 2 19	9 3 6 55	0 7 57 18	10 20 11 18	6 5 20 16	7 17 37 13	7 18 49 27	-18 55	-3 53	5 5
27	8 22 45	9 12 24 27	10 26 28 42	4 29 0 26	9 4 44 6	0 8 3 27	10 21 23 22	6 5 21 32	7 17 34 2	7 18 40 31	-18 40	0 53	5 3
28	8 26 42	9 13 25 27	11 8 47 14	4 28 57 47	9 6 21 55	0 8 9 45	10 22 35 21	6 5 22 42	7 17 30 51	7 18 33 8	-18 24	5 31	4 47
29	8 30 38	9 14 26 25	11 20 51 53	4 28 54 21	9 8 0 22	0 8 16 14	10 23 47 14	6 5 23 46	7 17 27 41	7 18 27 51	-18 9	9 51	4 19
30	8 34 35	9 15 27 23	0 2 46 37	4 28 50 8	9 9 39 29	0 8 22 52	10 24 59 2	6 5 24 44	7 17 24 30	7 18 24 48	-17 53	13 45	3 40
31	8 38 31	9 16 28 19	0 14 36 7	4 28 45 8	9 11 19 15	0 8 29 41	10 26 10 44	6 5 25 35	7 17 21 19	7 18 23 45	-17 36	17 4	2 51

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2012 ई. को अयनांश 24° 1' 51"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	8 42 28	9 17 29 15	0 26 25 41	4 28 39 21	9 12 59 43	0 8 36 39	10 27 22 20	6 5 26 20	7 17 18 8	7 18 24 4	-17 20	19 43	1 55
2	8 46 24	9 18 30 8	1 8 20 44	4 28 32 47	9 14 40 52	0 8 43 46	10 28 33 49	6 5 26 58	7 17 14 57	7 18 24 54	-17 3	21 31	0 54
3	8 50 21	9 19 31 1	1 20 26 36	4 28 25 26	9 16 22 44	0 8 51 3	10 29 45 12	6 5 27 30	7 17 11 47	7 18 25 13	-16 45	22 21	-0 11
4	8 54 18	9 20 31 52	2 2 48 2	4 28 17 17	9 18 5 20	0 8 58 29	11 0 56 29	6 5 27 56	7 17 8 36	7 18 24 3	-16 28	22 8	-1 16
5	8 58 14	9 21 32 42	2 15 28 53	4 28 8 22	9 19 48 39	0 9 6 5	11 2 7 39	6 5 28 16	7 17 5 25	7 18 20 38	-16 10	20 47	-2 19
6	9 2 11	9 22 33 31	2 28 31 36	4 27 58 39	9 21 32 43	0 9 13 49	11 3 18 41	6 5 28 29	7 17 2 14	7 18 14 36	-15 52	18 19	-3 17
7	9 6 7	9 23 34 18	3 11 56 49	4 27 48 10	9 23 17 30	0 9 21 43	11 4 29 37	6 5 28 36	7 16 59 4	7 18 6 2	-15 33	14 49	-4 5
8	9 10 4	9 24 35 4	3 25 43 5	4 27 36 54	9 25 3 2	0 9 29 45	11 5 40 26	6 5 28 36	7 16 55 53	7 17 55 33	-15 15	10 27	-4 40
9	9 14 0	9 25 35 49	4 9 46 52	4 27 24 51	9 26 49 17	0 9 37 56	11 6 51 7	6 5 28 30	7 16 52 42	7 17 44 10	-14 56	5 27	-4 59
10	9 17 57	9 26 36 33	4 24 3 4	4 27 12 4	9 28 36 15	0 9 46 15	11 8 1 41	6 5 28 18	7 16 49 31	7 17 33 6	-14 37	0 6	-5 0
11	9 21 53	9 27 37 15	5 8 25 46	4 26 58 30	10 0 23 54	0 9 54 43	11 9 12 7	6 5 27 59	7 16 46 21	7 17 23 34	-14 17	-5 18	-4 42
12	9 25 50	9 28 37 57	5 22 49 16	4 26 44 12	10 2 12 13	0 10 3 20	11 10 22 25	6 5 27 34	7 16 43 10	7 17 16 27	-13 58	-10 25	-4 7
13	9 29 47	9 29 38 37	6 7 8 54	4 26 29 11	10 4 1 10	0 10 12 4	11 11 32 36	6 5 27 3	7 16 39 59	7 17 12 6	-13 38	-14 56	-3 15
14	9 33 43	10 0 39 16	6 21 21 30	4 26 13 26	10 5 50 39	0 10 20 57	11 12 42 38	6 5 26 26	7 16 36 48	7 17 10 17	-13 18	-18 33	-2 12
15	9 37 40	10 1 39 55	7 5 25 24	4 25 56 59	10 7 40 39	0 10 29 57	11 13 52 32	6 5 25 42	7 16 33 38	7 17 10 6	-12 57	-21 2	-1 2
16	9 41 36	10 2 40 32	7 19 20 4	4 25 39 52	10 9 31 2	0 10 39 6	11 15 2 18	6 5 24 52	7 16 30 27	7 17 10 20	-12 37	-22 13	0 11
17	9 45 33	10 3 41 8	8 3 5 33	4 25 22 5	10 11 21 42	0 10 48 23	11 16 11 55	6 5 23 56	7 16 27 16	7 17 9 35	-12 16	-22 1	1 23
18	9 49 29	10 4 41 42	8 16 41 58	4 25 3 39	10 13 12 30	0 10 57 47	11 17 21 23	6 5 22 54	7 16 24 5	7 17 6 40	-11 55	-20 31	2 30
19	9 53 26	10 5 42 16	9 0 9 7	4 24 44 37	10 15 3 18	0 11 7 19	11 18 30 43	6 5 21 45	7 16 20 55	7 17 0 49	-11 34	-17 53	3 26
20	9 57 22	10 6 42 48	9 13 26 15	4 24 25 0	10 16 53 52	0 11 16 58	11 19 39 53	6 5 20 30	7 16 17 44	7 16 51 51	-11 12	-14 21	4 11
21	10 1 19	10 7 43 18	9 26 32 15	4 24 4 50	10 18 43 59	0 11 26 45	11 20 48 54	6 5 19 9	7 16 14 33	7 16 40 12	-10 51	-10 10	4 42
22	10 5 16	10 8 43 47	10 9 25 48	4 23 44 9	10 20 33 22	0 11 36 39	11 21 57 45	6 5 17 43	7 16 11 22	7 16 26 46	-10 29	-5 36	4 58
23	10 9 12	10 9 44 15	10 22 5 53	4 23 22 59	10 22 21 43	0 11 46 40	11 23 6 26	6 5 16 10	7 16 8 12	7 16 12 46	-10 8	-0 53	4 58
24	10 13 9	10 10 44 41	11 4 32 10	4 23 1 23	10 24 8 40	0 11 56 48	11 24 14 57	6 5 14 31	7 16 5 1	7 15 59 28	-9 46	3 47	4 45
25	10 17 5	10 11 45 5	11 16 45 16	4 22 39 22	10 25 53 49	0 12 7 3	11 25 23 17	6 5 12 46	7 16 1 50	7 15 47 57	-9 23	8 13	4 18
26	10 21 2	10 12 45 27	11 28 46 54	4 22 16 59	10 27 36 45	0 12 17 24	11 26 31 26	6 5 10 55	7 15 58 39	7 15 39 0	-9 1	12 17	3 40
27	10 24 58	10 13 45 47	0 10 39 54	4 21 54 17	10 29 16 56	0 12 27 53	11 27 39 24	6 5 8 59	7 15 55 29	7 15 32 54	-8 39	15 48	2 53
28	10 28 55	10 14 46 5	0 22 28 6	4 21 31 18	11 0 53 52	0 12 38 28	11 28 47 10	6 5 6 57	7 15 52 18	7 15 29 30	-8 16	18 40	1 59
29	10 32 51	10 15 46 22	1 4 16 11	4 21 8 5	11 2 26 59	0 12 49 9	11 29 54 44	6 5 4 49	7 15 49 7	7 15 28 11	-7 54	20 44	0 59

149
1 मार्च 2012 ई. को अयनांश 24° 1' 54"

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मार्च 2012 ई. को अयनांश 24° 1' 54"

मार्च	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां	चन्द्र क्रां	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
										7 15 27 59	-7 31	21 55	-0 4
1	10 36 48	10 16 46 36	1 16 9 26	4 20 44 40	11 3 55 43	0 12 59 57	0 1 2 6	6 5 2 36	7 15 45 56	7 15 27 45	-7 8	22 6	-1 7
2	10 40 45	10 17 46 48	1 28 13 27	4 20 21 6	11 5 19 26	0 13 10 50	0 2 9 15	6 5 0 17	7 15 42 46	7 15 26 22	-6 45	21 13	-2 9
3	10 44 41	10 18 46 59	2 10 33 43	4 19 57 26	11 6 37 34	0 13 21 50	0 3 16 11	6 4 57 53	7 15 39 35	7 15 22 52	-6 22	19 15	-3 6
4	10 48 38	10 19 47 7	2 23 15 14	4 19 33 43	11 7 49 31	0 13 32 56	0 4 22 53	6 4 55 23	7 15 36 24	7 15 16 44	-5 59	16 14	-3 55
5	10 52 34	10 20 47 13	3 6 21 47	4 19 9 58	11 8 54 44	0 13 44 7	0 5 29 21	6 4 52 48	7 15 33 13	7 15 7 57	-5 35	12 17	-4 33
6	10 56 31	10 21 47 17	3 19 55 24	4 18 46 15	11 9 52 41	0 13 55 24	0 6 35 35	6 4 50 8	7 15 30 3	7 14 57 4	-5 12	7 33	-4 55
7	11 0 27	10 22 47 19	4 3 55 34	4 18 22 37	11 10 42 55	0 14 6 47	0 7 41 34	6 4 47 23	7 15 26 52	7 14 45 5	-4 49	2 18	-5 0
8	11 4 24	10 23 47 19	4 18 18 54	4 17 59 5	11 11 25 1	0 14 18 15	0 8 47 19	6 4 44 33	7 15 23 41	7 14 33 18	-4 25	-3 11	-4 46
9	11 8 20	10 24 47 17	5 2 59 19	4 17 35 43	11 11 58 39	0 14 29 49	0 9 52 48	6 4 41 38	7 15 20 31	7 14 22 58	-4 2	-8 33	-4 12
10	11 12 17	10 25 47 14	5 17 48 47	4 17 12 33	11 12 23 36	0 14 41 27	0 10 58 1	6 4 38 38	7 15 17 20	7 14 15 4	-3 38	-13 24	-3 21
11	11 16 14	10 26 47 8	6 2 38 44	4 16 49 38	11 12 39 43	0 14 53 11	0 12 2 58	6 4 35 33	7 15 14 9	7 14 10 3	-3 15	-17 25	-2 17
12	11 20 10	10 27 47 1	6 17 21 30	4 16 26 59	11 12 46 58	0 15 5 0	0 13 7 39	6 4 32 24	7 15 10 58	7 14 7 43	-2 51	-20 16	-1 5
13	11 24 7	10 28 46 53	7 1 51 21	4 16 4 40	11 12 45 27	0 15 16 55	0 14 12 2	6 4 29 10	7 15 7 48	7 14 7 17	-2 27	-21 48	0 10
14	11 28 3	10 29 46 42	7 16 4 59	4 15 42 42	11 12 35 25	0 15 28 54	0 15 16 9	6 4 25 51	7 15 4 37	7 14 7 34	-2 4	-21 55	1 23
15	11 32 0	11 0 46 30	8 0 1 14	4 15 21 8	11 12 17 13	0 15 40 58	0 16 19 57	6 4 22 28	7 15 1 26	7 14 7 12	-1 40	-20 43	2 30
16	11 35 56	11 1 46 16	8 13 40 31	4 15 0 0	11 11 51 23	0 15 53 6	0 17 23 28	6 4 19 1	7 14 58 16	7 14 5 0	-1 16	-18 22	3 27
17	11 39 53	11 2 46 1	8 27 4 9	4 14 39 21	11 11 18 35	0 16 5 19	0 18 26 39	6 4 15 30	7 14 55 5	7 14 0 12	-0 53	-15 7	4 12
18	11 43 49	11 3 45 43	9 10 13 39	4 14 19 12	11 10 39 37	0 16 17 37	0 19 29 32	6 4 11 54	7 14 51 54	7 13 52 32	-0 29	-11 11	4 43
19	11 47 46	11 4 45 25	9 23 10 25	4 13 59 35	11 9 55 26	0 16 30 0	0 20 32 5	6 4 8 14	7 14 48 43	7 13 42 20	-0 5	-6 48	5 0
20	11 51 43	11 5 45 4	10 5 55 29	4 13 40 32	11 9 7 3	0 16 42 26	0 21 34 17	6 4 4 31	7 14 45 33	7 13 30 25	0 19	-2 13	5 1
21	11 55 39	11 6 44 41	10 18 29 30	4 13 22 5	11 8 15 36	0 16 54 57	0 22 36 9	6 4 0 44	7 14 42 22	7 13 17 52	0 42	2 24	4 48
22	11 59 36	11 7 44 17	11 0 52 53	4 13 4 15	11 7 22 14	0 17 7 32	0 23 37 39	6 3 56 53	7 14 39 11	7 13 5 50	1 6	6 51	4 23
23	12 3 32	11 8 43 50	11 13 6 6	4 12 47 5	11 6 28 7	0 17 20 11	0 24 38 47	6 3 52 59	7 14 36 0	7 12 55 20	1 30	10 59	3 45
24	12 7 29	11 9 43 22	11 25 9 58	4 12 30 35	11 5 34 23	0 17 32 55	0 25 39 31	6 3 49 1	7 14 32 50	7 12 47 8	1 53	14 39	2 58
25	12 11 25	11 10 42 51	0 7 5 48	4 12 14 47	11 4 42 6	0 17 45 42	0 26 39 52	6 3 45 0	7 14 29 39	7 12 41 34	2 17	17 41	2 3
26	12 15 22	11 11 42 18	0 18 55 41	4 11 59 42	11 3 52 13	0 17 58 32	0 27 39 48	6 3 40 56	7 14 26 28	7 12 38 35	2 40	19 59	1 3
27	12 19 18	11 12 41 43	1 0 42 29	4 11 45 21	11 3 5 35	0 18 11 27	0 28 39 19	6 3 36 49	7 14 23 18	7 12 37 45	3 4	21 25	0 1
28	12 23 15	11 13 41 6	1 12 29 55	4 11 31 44	11 2 22 57	0 18 24 25	0 29 38 23	6 3 32 40	7 14 20 7	7 12 38 15	3 27	21 53	-1 3
29	12 27 12	11 14 40 26	1 24 22 23	4 11 18 53	11 1 44 52	0 18 37 26	1 0 37 0	6 3 28 27	7 14 16 56	7 12 39 10	3 50	21 22	-2 4
30	12 31 8	11 15 39 44	2 6 24 52	4 11 6 48	11 1 11 48	0 18 50 31	1 1 35 8	6 3 19 55	7 14 13 45	7 12 39 29	4 14	19 49	-3 1
31	12 35 5	11 16 39 0	2 18 42 39	4 10 55 29	11 0 44 5	0 19 3 39	1 2 32 47		7 14 10 35				

अक्षांशभेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें और चन्द्र के उन्नत श्रृंग की दिशा तथा अंश (सं. 2068 वि.)

मास	चैत्र		वैशाख		ज्येष्ठ		आषाढ़		श्रावण		भाद्रपद		आश्विन		कार्तिक		मार्गशीर्ष		पौष		माघ		फाल्गुन	
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (2011 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2011 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2011 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2011 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2011 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2011 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2011 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2011 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2011 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2011 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2012 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2012 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)
+ 5°	5 अप्रै.	द. 30	4 मई.	द. 23	3 जून	उ. 1	2 जुला.	उ. 20	1 अग.	उ. 34	30 अग.	उ. 42	29 सितं.	उ. 44	28 अक्तू.	उ. 31	26 नवं.	उ. 13	26 दिसं.	द. 8	24 जन.	द. 26	23 फर.	द. 33
+ 15°	5 "	द. 20	4 "	द. 12	3 "	उ. 12	2 "	उ. 30	1 "	उ. 45	30 "	उ. 52	29 "	उ. 54	28 "	उ. 42	26 "	उ. 23	26 "	उ. 3	24 "	द. 16	23 "	द. 23
+ 25°	5 "	द. 10	4 "	द. 2	3 "	उ. 22	3 "	उ. 42	1 "	उ. 54	31 "	उ. 59	29 "	उ. 64	28 "	उ. 52	26 "	उ. 32	26 "	उ. 14	24 "	द. 6	23 "	द. 13
+ 35°	5 "	उ. 1	4 "	उ. 8	3 "	उ. 33	3 "	उ. 52	2 "	उ. 64	31 "	उ. 66	29 "	उ. 74	29 "	उ. 60	27 "	उ. 46	26 "	उ. 25	24 "	उ. 4	23 "	द. 2

नोट– यहां दिए गए शृङ्गोन्नति के अंश लगभग हैं।

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2011 ई.

तारीख	जनवरी 2011				फरवरी 2011				मार्च 2011				अप्रैल 2011			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	4	23	14	47	5	49	16	28	4	29	15	20	4	40	16	53
2	5	23	15	41	6	29	17	26	5	5	16	16	5	9	17	45
3	6	19	16	39	7	4	18	22	5	38	17	11	5	38	18	38
4	7	9	17	39	7	36	19	17	6	8	18	4	6	8	19	32
5	7	52	18	38	8	5	20	10	6	37	18	57	6	41	20	27
6	8	30	19	36	8	34	21	3	7	6	19	50	7	18	21	23
7	9	4	20	31	9	3	21	56	7	35	20	43	7	59	22	18
8	9	35	21	25	9	32	22	49	8	6	21	37	8	45	23	13
9	10	4	22	18	10	4	23	44	8	39	22	32	9	36	--	--
10	10	32	23	11	10	39	--	--	9	17	23	28	10	32	0	5
11	11	1	--	--	11	18	0	40	9	59	--	--	11	32	0	53
12	11	31	0	4	12	3	1	37	10	47	0	24	12	35	1	38
13	12	4	0	58	12	55	2	34	11	41	1	18	13	40	2	20
14	12	42	1	55	13	54	3	30	12	41	2	10	14	46	2	59
15	13	25	2	53	14	58	4	22	13	44	2	59	15	54	3	36
16	14	14	3	51	16	6	5	11	14	51	3	44	17	2	4	14
17	15	11	4	50	17	15	5	55	15	59	4	26	18	13	4	53
18	16	14	5	45	18	25	6	36	17	8	5	6	19	24	5	35
19	17	22	6	37	19	34	7	15	18	18	5	44	20	34	6	21
20	18	31	7	23	20	43	7	53	19	28	6	23	21	41	7	12
21	19	39	8	5	21	52	8	31	20	39	7	3	22	43	8	7
22	20	47	8	44	23	1	9	11	21	49	7	46	23	37	9	6
23	21	54	9	21	--	--	9	55	22	57	8	34	--	--	10	7
24	23	1	9	57	0	7	10	42	24	0	9	26	0	24	11	7
25	--	--	10	34	1	11	11	33	--	--	10	21	1	5	12	5
26	0	7	11	14	2	9	12	28	0	56	11	19	1	40	13	1
27	1	12	11	57	3	2	13	25	1	46	12	18	2	12	13	55
28	2	16	12	44	3	48	14	23	2	29	13	16	2	42	14	48
29	3	17	13	36					3	6	14	12	3	11	15	40
30	4	14	14	32					3	40	15	7	3	40	16	33
31	5	5	15	30					4	11	16	00				

तारीख	मई 2011				जून 2011				जुलाई 2011				अगस्त 2011			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	4	10	17	26	4	39	19	1	5	10	19	30	7	11	20	11
2	4	43	18	21	6	23	19	56	6	11	20	16	8	17	20	48
3	5	18	19	17	6	22	20	48	7	15	20	57	9	23	21	25
4	5	58	20	13	7	20	21	35	8	20	21	36	10	30	22	3
5	6	43	21	8	8	22	22	18	9	24	22	12	11	36	22	45
6	7	33	22	1	9	25	22	58	10	28	22	48	12	42	23	30
7	8	28	22	51	10	28	23	34	11	33	23	24	13	47	--	--
8	9	27	23	36	11	31	--	--	12	38	--	--	14	49	0	20
9	10	28	--	--	12	35	0	10	13	43	0	2	15	47	1	14
10	11	31	0	18	13	39	0	46	14	50	0	44	16	38	2	12
11	12	34	0	57	14	46	1	23	15	54	1	31	17	24	3	13
12	13	39	1	33	15	53	2	3	16	56	2	23	18	4	4	13
13	14	44	2	9	17	1	2	47	17	53	3	20	18	40	5	12
14	15	51	2	46	18	6	3	37	18	43	4	21	19	12	6	9
15	17	0	3	26	19	8	4	33	19	27	5	22	19	43	7	4
16	18	10	4	9	20	3	5	33	20	6	6	23	20	13	7	58
17	19	19	4	57	20	51	6	35	20	40	7	22	20	43	8	52
18	20	24	5	50	21	33	7	37	21	12	8	19	21	14	9	45
19	21	23	6	49	22	9	8	37	21	42	9	14	21	47	10	39
20	22	15	7	50	22	42	9	35	22	12	10	7	22	24	11	33
21	22	59	8	52	23	12	10	30	22	42	11	0	23	5	12	27
22	23	38	9	53	23	42	11	24	23	14	11	54	23	51	13	22
23	--	--	10	51	--	--	12	17	23	48	12	48	--	--	14	16
24	0	12	11	46	0	11	13	10	--	--	13	43	0	42	15	8
25	0	43	12	40	0	42	14	4	0	27	14	38	1	39	15	57
26	1	12	13	33	1	15	14	58	1	10	15	34	2	40	16	43
27	1	41	14	26	1	51	15	54	2	00	16	28	3	45	17	25
28	2	11	15	19	2	32	16	51	2	55	17	20	4	51	18	5
29	2	42	16	13	3	19	17	47	3	56	18	8	5	58	18	44
30	3	17	17	9	4	12	18	40	4	59	18	52	7	6	19	22
31	3	55	18	5					6	5	19	33	8	14	20	1

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2011–12 ई.

तारीख	सितंबर 2011				अक्तूबर 2011				नवंबर 2011				दिसंबर 2011				जनवरी 2012				फरवरी 2012				मार्च 2012				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	9	23	20	42	10	30	21	3	11	59	22	52	11	48	23	34	11	52	0	6	12	13	1	30	11	37	1	6	1
2	10	32	21	28	11	33	22	1	12	40	23	51	12	20	--	--	12	24	0	59	12	57	2	24	12	28	1	56	2
3	11	39	22	17	12	30	23	1	13	16	--	--	12	51	0	29	12	59	1	53	13	46	3	16	13	23	2	45	3
4	12	43	23	11	13	20	--	--	13	49	0	48	13	21	1	22	13	36	2	47	14	40	4	7	14	21	3	31	4
5	13	42	--	--	14	3	0	1	14	20	1	42	13	52	2	15	14	18	3	41	15	37	4	55	15	22	4	14	5
6	14	35	0	8	14	41	1	0	14	50	2	36	14	25	3	8	15	5	4	35	16	38	5	41	16	25	4	55	6
7	15	22	1	7	15	16	1	58	15	20	3	29	15	1	4	2	15	57	6	20	17	41	6	23	17	29	5	33	7
8	16	4	2	7	15	47	2	53	15	51	4	21	15	40	4	56	16	53	6	17	18	44	7	2	18	35	6	11	8
9	16	40	3	5	16	18	3	47	16	25	5	15	16	24	5	50	17	52	7	4	19	48	7	40	19	42	6	50	9
10	17	14	4	2	16	47	4	40	17	2	6	9	17	13	6	44	18	53	7	48	20	53	8	17	20	50	7	29	10
11	17	45	4	58	17	18	5	33	17	43	7	3	18	6	7	35	19	55	8	28	21	58	8	54	21	59	8	12	11
12	18	15	5	52	17	50	6	26	18	28	7	57	19	3	8	24	20	57	9	5	23	4	9	33	23	6	8	58	12
13	18	45	6	45	18	24	7	20	19	18	8	49	20	2	9	8	22	00	9	41	--	--	10	15	--	--	9	49	13
14	19	16	7	38	19	2	8	14	20	12	9	39	21	2	9	49	23	3	10	17	0	11	11	2	0	11	10	45	14
15	19	48	8	32	19	44	9	8	21	9	10	26	22	3	10	27	--	--	10	53	1	16	11	53	1	11	11	44	15
16	20	23	9	25	20	30	10	1	22	7	11	9	23	4	11	3	0	7	11	32	2	18	12	49	2	5	12	45	16
17	21	2	10	20	21	21	10	53	23	8	11	48	--	--	11	39	1	12	12	15	3	16	13	48	2	53	13	45	17
18	21	46	11	14	22	16	11	42	--	--	12	26	0	6	12	14	2	18	13	3	4	8	14	50	3	36	14	45	18
19	22	34	12	7	23	14	12	28	0	9	13	2	1	9	12	52	3	23	13	56	4	55	15	51	4	13	15	44	19
20	23	27	12	58	--	--	13	10	1	11	13	38	2	15	13	33	4	25	14	55	5	36	16	52	4	48	16	40	20
21	--	--	13	47	0	15	13	50	2	16	14	15	3	22	14	18	5	23	15	57	6	13	17	51	5	21	17	36	21
22	0	25	14	33	1	17	14	28	3	22	14	56	4	30	15	10	6	14	17	1	6	47	18	48	5	52	18	30	22
23	1	26	15	16	2	22	15	6	4	31	15	40	5	36	16	8	6	59	18	3	7	20	19	43	6	24	19	24	23
24	2	30	15	56	3	27	15	43	5	41	16	30	6	38	17	10	7	39	19	4	7	51	20	38	6	56	20	18	24
25	3	36	16	35	4	35	16	23	6	51	17	26	7	35	18	14	8	15	20	3	8	23	21	32	7	31	21	12	25
26	4	43	17	14	5	45	17	7	7	57	18	28	8	24	19	19	8	49	21	00	8	56	22	26	8	8	22	5	26
27	5	51	17	53	6	57	17	55	8	57	19	32	9	7	20	21	9	20	21	55	9	31	23	20	8	48	22	58	27
28	7	1	18	35	8	8	18	48	9	49	20	36	9	45	21	20	9	52	22	49	10	9	--	--	9	32	23	49	28
29	8	12	19	20	9	15	19	47	10	34	21	38	10	19	22	17	10	23	23	42	10	51	0	13	10	20	--	--	29
30	9	22	20	9	10	17	20	48	11	14	22	37	10	51	23	12	10	57	--	--					11	12	0	37	30
31					11	12	21	51					11	21	--	--	11	33	0	36					12	8	1	23	31

153

यूरेनस नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2011 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2011 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2011 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. 1	11 2 57	10 2 43	8 11 19	-23 10	-0 59	-20 13	2 50	-2 32	-1 16	-15 17	3 30	-4 19	2 25	-1 53	-0 44	-13 3	-0 29	-18 49	4 31
4	11 3 1	10 2 48	8 11 25	-22 50	-1 0	-20 39	2 29	-2 22	-1 15	-15 57	3 31	-4 21	2 25	-1 51	-0 44	-13 2	-0 29	-18 49	4 30
7	11 3 5	10 2 54	8 11 31	-22 28	-1 1	-21 12	2 4	-2 11	-1 15	-16 37	3 30	-4 23	2 26	-1 49	-0 44	-13 0	-0 29	-18 49	4 30
10	11 3 10	10 2 59	8 11 38	-22 4	-1 2	-21 46	1 37	-1 59	-1 14	-17 16	3 28	-4 25	2 27	-1 47	-0 44	-12 58	-0 29	-18 49	4 30
13	11 3 16	10 3 5	8 11 44	-21 38	-1 2	-22 17	1 10	-1 47	-1 13	-17 53	3 25	-4 26	2 28	-1 45	-0 44	-12 56	-0 29	-18 49	4 30
16	11 3 22	10 3 11	8 11 50	-21 10	-1 3	-22 42	0 43	-1 35	-1 13	-18 28	3 20	-4 26	2 29	-1 43	-0 44	-12 54	-0 29	-18 49	4 30
19	11 3 28	10 3 17	8 11 56	-20 39	-1 3	-22 59	0 17	-1 22	-1 12	-19 1	3 15	-4 27	2 30	-1 40	-0 44	-12 52	-0 29	-18 49	4 30
22	11 3 34	10 3 23	8 12 2	-20 6	-1 4	-23 7	-0 8	-1 9	-1 12	-19 30	3 8	-4 27	2 30	-1 37	-0 43	-12 50	-0 29	-18 49	4 29
25	11 3 41	10 3 30	8 12 8	-19 32	-1 4	-23 5	-0 31	-0 55	-1 11	-19 57	3 0	-4 26	2 31	-1 35	-0 43	-12 47	-0 29	-18 49	4 29
28	11 3 48	10 3 36	8 12 14	-18 55	-1 4	-22 52	-0 52	-0 41	-1 11	-20 20	2 52	-4 25	2 32	-1 32	-0 43	-12 45	-0 29	-18 48	4 29
31	11 3 56	10 3 43	8 12 20	-18 17	-1 4	-22 28	-1 10	-0 27	-1 10	-20 38	2 43	-4 24	2 33	-1 29	-0 43	-12 43	-0 29	-18 48	4 29
फर. 1	11 3 58	10 3 45	8 12 22	-18 3	-1 5	-22 17	-1 16	-0 22	-1 10	-20 44	2 40	-4 24	2 33	-1 28	-0 43	-12 42	-0 29	-18 48	4 29
4	11 4 6	10 3 52	8 12 27	-17 23	-1 5	-21 37	-1 32	-0 8	-1 10	-20 57	2 30	-4 22	2 34	-1 24	-0 43	-12 40	-0 29	-18 48	4 29
7	11 4 15	10 3 58	8 12 32	-16 40	-1 5	-20 45	-1 45	0 7	-1 9	-21 5	2 19	-4 20	2 35	-1 21	-0 43	-12 38	-0 29	-18 48	4 29
10	11 4 23	10 4 5	8 12 37	-15 56	-1 5	-19 41	-1 55	0 22	-1 9	-21 8	2 8	-4 18	2 36	-1 17	-0 43	-12 35	-0 29	-18 47	4 29
13	11 4 32	10 4 12	8 12 42	-15 11	-1 5	-18 24	-2 2	0 38	-1 8	-21 7	1 57	-4 15	2 36	-1 14	-0 43	-12 33	-0 29	-18 47	4 29
16	11 4 41	10 4 19	8 12 47	-14 24	-1 5	-16 54	-2 6	0 53	-1 8	-21 0	1 46	-4 12	2 37	-1 10	-0 43	-12 31	-0 29	-18 47	4 29
19	11 4 50	10 4 26	8 12 51	-13 35	-1 5	-15 12	-2 6	1 9	-1 8	-20 49	1 34	-4 9	2 38	-1 7	-0 43	-12 28	-0 29	-18 47	4 29
22	11 4 59	10 4 32	8 12 56	-12 46	-1 4	-13 17	-2 2	1 25	-1 7	-20 32	1 22	-4 5	2 39	-1 3	-0 43	-12 26	-0 29	-18 46	4 29
25	11 5 9	10 4 39	8 13 0	-11 55	-1 4	-11 11	-1 54	1 42	-1 7	-20 10	1 10	-4 1	2 39	-0 59	-0 43	-12 24	-0 29	-18 46	4 29
28	11 5 19	10 4 46	8 13 4	-11 4	-1 4	-8 52	-1 40	1 58	-1 7	-19 42	0 58	-3 57	2 40	-0 55	-0 43	-12 21	-0 29	-18 46	4 29
मार्च 1	11 5 22	10 4 48	8 13 5	-10 46	-1 4	-8 3	-1 35	2 3	-1 7	-19 32	0 54	-3 56	2 40	-0 54	-0 43	-12 20	-0 29	-18 46	4 29
4	11 5 32	10 4 55	8 13 8	-9 53	-1 3	-5 31	-1 15	2 20	-1 6	-18 58	0 42	-3 51	2 41	-0 50	-0 42	-12 18	-0 29	-18 46	4 30
7	11 5 42	10 5 2	8 13 11	-9 0	-1 3	-2 51	-0 50	2 37	-1 6	-18 20	0 31	-3 47	2 41	-0 46	-0 42	-12 16	-0 29	-18 45	4 30
10	11 5 52	10 5 8	8 13 14	-8 6	-1 2	-0 6	-0 19	2 53	-1 6	-17 36	0 19	-3 42	2 42	-0 42	-0 42	-12 14	-0 29	-18 45	4 30
13	11 6 2	10 5 15	8 13 17	-7 11	-1 2	2 38	0 16	3 10	-1 6	-16 48	0 8	-3 37	2 42	-0 38	-0 42	-12 11	-0 29	-18 45	4 30
16	11 6 12	10 5 21	8 13 19	-6 15	-1 1	5 15	0 54	3 27	-1 5	-15 56	-0 2	-3 32	2 43	-0 33	-0 42	-12 9	-0 30	-18 45	4 30
19	11 6 23	10 5 27	8 13 22	-5 19	-1 0	7 36	1 32	3 44	-1 5	-15 0	-0 13	-3 26	2 43	-0 29	-0 42	-12 7	-0 30	-18 44	4 30
22	11 6 33	10 5 33	8 13 23	-4 23	-0 59	9 36	2 9	4 1	-1 5	-14 0	-0 23	-3 21	2 43	-0 25	-0 42	-12 5	-0 30	-18 44	4 30
25	11 6 43	10 5 39	8 13 25	-3 26	-0 58	11 8	2 41	4 18	-1 5	-12 56	-0 32	-3 16	2 44	-0 21	-0 42	-12 3	-0 30	-18 44	4 30
28	11 6 53	10 5 45	8 13 26	-2 30	-0 58	12 7	3 5	4 35	-1 5	-11 49	-0 41	-3 10	2 44	-0 17	-0 42	-12 1	-0 30	-18 44	4 30
31	11 7 4	10 5 51	8 13 27	-1 33	-0 57	12 31	3 18	4 51	-1 5	-10 39	-0 50	-3 5	2 44	-0 13	-0 42	-11 59	-0 30	-18 43	4 31

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2011 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2011 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अप्रैल 1	11 7 7	10 5 52	8 13 28	-1 14	-0 56	12 30	3 20	4 57	-1 5	-10 15	-0 52	-3 3	2 44	-0 12	-0 42	-11 58	-0 30	-18 43	4 31
4	11 7 17	10 5 58	8 13 28	-0 17	-0 55	12 6	3 15	5 14	-1 5	-9 1	-1 0	-2 57	2 44	-0 8	-0 42	-11 57	-0 30	-18 43	4 31
7	11 7 27	10 6 3	8 13 29	0 40	-0 54	11 9	2 55	5 31	-1 5	-7 45	-1 7	-2 52	2 44	-0 4	-0 42	-11 55	-0 30	-18 43	4 31
10	11 7 37	10 6 8	8 13 29	1 36	-0 53	9 48	2 22	5 47	-1 5	-6 27	-1 14	-2 46	2 44	0 0	-0 42	-11 53	-0 30	-18 43	4 31
13	11 7 47	10 6 13	8 13 28	2 32	-0 52	8 15	1 38	6 4	-1 5	-5 8	-1 19	-2 41	2 44	0 4	-0 42	-11 52	-0 30	-18 43	4 31
16	11 7 57	10 6 17	8 13 28	3 28	-0 50	6 44	0 49	6 20	-1 5	-3 46	-1 24	-2 36	2 44	0 8	-0 42	-11 50	-0 30	-18 43	4 31
19	11 8 6	10 6 22	8 13 27	4 23	-0 49	5 24	-0 0	6 37	-1 5	-2 24	-1 29	-2 31	2 44	0 12	-0 42	-11 49	-0 30	-18 43	4 31
22	11 8 16	10 6 26	8 13 26	5 18	-0 48	4 24	-0 47	6 53	-1 5	-1 1	-1 32	-2 26	2 44	0 15	-0 43	-11 47	-0 30	-18 43	4 31
25	11 8 25	10 6 30	8 13 25	6 12	-0 46	3 47	-1 28	7 9	-1 5	0 23	-1 35	-2 22	2 43	0 19	-0 43	-11 46	-0 30	-18 43	4 32
28	11 8 34	10 6 33	8 13 23	7 6	-0 45	3 33	-2 2	7 25	-1 5	1 47	-1 38	-2 17	2 43	0 23	-0 43	-11 45	-0 30	-18 43	4 32
मई 1	11 8 43	10 6 37	8 13 21	7 58	-0 43	3 41	-2 29	7 41	-1 5	3 11	-1 39	-2 13	2 43	0 26	-0 43	-11 44	-0 31	-18 43	4 32
4	11 8 51	10 6 40	8 13 19	8 50	-0 42	4 9	-2 49	7 56	-1 5	4 34	-1 40	-2 9	2 42	0 29	-0 43	-11 43	-0 31	-18 43	4 32
7	11 8 59	10 6 42	8 13 17	9 41	-0 40	4 55	-3 1	8 11	-1 5	5 57	-1 40	-2 5	2 42	0 33	-0 43	-11 42	-0 31	-18 43	4 32
10	11 9 7	10 6 45	8 13 14	10 32	-0 39	5 57	-3 8	8 27	-1 5	7 19	-1 40	-2 2	2 41	0 36	-0 43	-11 41	-0 31	-18 43	4 32
13	11 9 15	10 6 47	8 13 12	11 21	-0 37	7 12	-3 8	8 41	-1 6	8 40	-1 39	-1 59	2 41	0 39	-0 43	-11 40	-0 31	-18 43	4 32
16	11 9 22	10 6 49	8 13 9	12 9	-0 35	8 38	-3 2	8 56	-1 6	9 59	-1 37	-1 56	2 40	0 41	-0 43	-11 40	-0 31	-18 43	4 32
19	11 9 29	10 6 51	8 13 5	12 55	-0 33	10 14	-2 51	9 11	-1 6	11 16	-1 35	-1 53	2 40	0 44	-0 43	-11 39	-0 31	-18 43	4 32
22	11 9 36	10 6 52	8 13 2	13 41	-0 32	11 58	-2 35	9 25	-1 6	12 31	-1 32	-1 51	2 39	0 47	-0 43	-11 39	-0 31	-18 44	4 32
25	11 9 43	10 6 53	8 12 58	14 25	-0 30	13 48	-2 15	9 39	-1 6	13 44	-1 28	-1 50	2 38	0 49	-0 43	-11 38	-0 31	-18 44	4 32
28	11 9 49	10 6 54	8 12 55	15 8	-0 28	15 41	-1 50	9 52	-1 7	14 54	-1 24	-1 48	2 38	0 52	-0 43	-11 38	-0 31	-18 44	4 32
31	11 9 55	10 6 54	8 12 51	15 49	-0 26	17 34	-1 21	10 5	-1 7	16 0	-1 20	-1 47	2 37	0 54	-0 43	-11 38	-0 31	-18 44	4 32
जून 1	11 9 56	10 6 54	8 12 50	16 3	-0 25	18 11	-1 11	10 10	-1 7	16 21	-1 18	-1 47	2 37	0 55	-0 43	-11 38	-0 31	-18 44	4 32
4	11 10 2	10 6 54	8 12 45	16 42	-0 24	19 59	-0 40	10 23	-1 7	17 23	-1 13	-1 46	2 36	0 57	-0 44	-11 38	-0 31	-18 45	4 31
7	11 10 6	10 6 54	8 12 41	17 20	-0 22	21 37	-0 7	10 35	-1 8	18 21	-1 8	-1 46	2 35	0 58	-0 44	-11 38	-0 32	-18 45	4 31
10	11 10 11	10 6 54	8 12 37	17 57	-0 20	23 1	0 25	10 48	-1 8	19 15	-1 2	-1 46	2 35	1 0	-0 44	-11 38	-0 32	-18 45	4 31
13	11 10 15	10 6 53	8 12 33	18 31	-0 18	24 4	0 54	10 59	-1 8	20 4	-0 55	-1 46	2 34	1 2	-0 44	-11 39	-0 32	-18 46	4 31
16	11 10 19	10 6 52	8 12 28	19 5	-0 16	24 44	1 19	11 11	-1 9	20 48	-0 49	-1 47	2 33	1 3	-0 44	-11 39	-0 32	-18 46	4 31
19	11 10 22	10 6 50	8 12 24	19 36	-0 14	24 59	1 37	11 22	-1 9	21 27	-0 42	-1 49	2 32	1 4	-0 44	-11 40	-0 32	-18 47	4 31
22	11 10 25	10 6 49	8 12 19	20 6	-0 12	24 49	1 50	11 33	-1 9	22 1	-0 35	-1 50	2 32	1 5	-0 44	-11 41	-0 32	-18 47	4 30
25	11 10 27	10 6 47	8 12 15	20 33	-0 9	24 17	1 56	11 43	-1 10	22 30	-0 28	-1 52	2 31	1 6	-0 44	-11 41	-0 32	-18 48	4 30
28	11 10 29	10 6 45	8 12 10	20 59	-0 7	23 26	1 55	11 53	-1 10	22 53	-0 21	-1 54	2 30	1 7	-0 44	-11 42	-0 32	-18 48	4 30

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2011 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2011 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जुलाई 1	11 10 31	10 6 42	8 12 5	21 24	-0 5	22 21	1 48	12 3	-1 11	23 9	-0 13	-1 57	2 29	1 7	-0 44	-11 43	-0 32	-18 49	4 29
4	11 10 32	10 6 40	8 12 1	21 46	-0 3	21 4	1 36	12 12	-1 11	23 20	-0 6	-2 0	2 29	1 8	-0 45	-11 44	-0 32	-18 49	4 29
7	11 10 32	10 6 37	8 11 56	22 6	-0 1	19 38	1 18	12 21	-1 12	23 25	0 1	-2 3	2 28	1 8	-0 45	-11 45	-0 32	-18 50	4 29
10	11 10 32	10 6 34	8 11 52	22 25	0 1	18 6	0 56	12 29	-1 12	23 23	0 9	-2 7	2 27	1 8	-0 45	-11 46	-0 32	-18 50	4 28
13	11 10 32	10 6 30	8 11 47	22 42	0 3	16 32	0 30	12 37	-1 13	23 16	0 16	-2 10	2 27	1 8	-0 45	-11 48	-0 33	-18 51	4 28
16	11 10 32	10 6 27	8 11 43	22 57	0 6	14 57	-0 1	12 45	-1 13	23 2	0 23	-2 15	2 26	1 7	-0 45	-11 49	-0 33	-18 52	4 27
19	11 10 31	10 6 23	8 11 39	23 9	0 8	13 23	-0 34	12 52	-1 14	22 42	0 30	-2 19	2 25	1 7	-0 45	-11 50	-0 33	-18 52	4 27
22	11 10 29	10 6 19	8 11 34	23 20	0 10	11 54	-1 10	12 58	-1 14	22 16	0 36	-2 24	2 25	1 6	-0 45	-11 52	-0 33	-18 53	4 27
25	11 10 27	10 6 15	8 11 30	23 29	0 12	10 31	-1 48	13 4	-1 15	21 44	0 43	-2 29	2 24	1 5	-0 45	-11 53	-0 33	-18 53	4 26
28	11 10 25	10 6 11	8 11 26	23 37	0 15	9 18	-2 27	13 10	-1 16	21 6	0 49	-2 34	2 23	1 4	-0 45	-11 55	-0 33	-18 54	4 26
31	11 10 22	10 6 6	8 11 23	23 42	0 17	8 18	-3 5	13 15	-1 16	20 23	0 54	-2 40	2 23	1 3	-0 45	-11 56	-0 33	-18 55	4 25
अगस्त 1	11 10 21	10 6 5	8 11 21	23 43	0 18	8 2	-3 18	13 17	-1 16	20 7	0 56	-2 42	2 22	1 3	-0 45	-11 57	-0 33	-18 55	4 25
4	11 10 18	10 6 0	8 11 18	23 46	0 20	7 25	-3 53	13 21	-1 17	19 17	1 1	-2 47	2 22	1 1	-0 46	-11 58	-0 33	-18 56	4 24
7	11 10 14	10 5 56	8 11 14	23 47	0 22	7 11	-4 23	13 25	-1 18	18 22	1 6	-2 54	2 21	1 0	-0 46	-12 0	-0 33	-18 56	4 24
10	11 10 10	10 5 51	8 11 11	23 46	0 24	7 20	-4 43	13 28	-1 18	17 22	1 10	-3 0	2 21	0 58	-0 46	-12 2	-0 33	-18 57	4 23
13	11 10 6	10 5 46	8 11 8	23 44	0 27	7 55	-4 51	13 31	-1 19	16 18	1 14	-3 6	2 20	0 56	-0 46	-12 4	-0 33	-18 58	4 23
16	11 10 1	10 5 41	8 11 5	23 40	0 29	8 51	-4 42	13 33	-1 20	15 10	1 17	-3 13	2 20	0 54	-0 46	-12 5	-0 33	-18 59	4 22
19	11 9 56	10 5 36	8 11 3	23 34	0 32	10 2	-4 18	13 35	-1 20	13 58	1 20	-3 20	2 19	0 52	-0 46	-12 7	-0 33	-18 59	4 21
22	11 9 51	10 5 31	8 11 1	23 26	0 34	11 19	-3 38	13 36	-1 21	12 43	1 22	-3 27	2 19	0 50	-0 46	-12 9	-0 33	-19 0	4 21
25	11 9 45	10 5 27	8 10 58	23 17	0 36	12 29	-2 48	13 37	-1 22	11 24	1 24	-3 34	2 18	0 48	-0 46	-12 11	-0 33	-19 1	4 20
28	11 9 39	10 5 22	8 10 57	23 6	0 39	13 24	-1 53	13 37	-1 22	10 3	1 25	-3 42	2 18	0 45	-0 46	-12 12	-0 33	-19 2	4 19
31	11 9 33	10 5 17	8 10 55	22 54	0 41	13 56	-0 59	13 37	-1 23	8 39	1 25	-3 49	2 18	0 43	-0 46	-12 14	-0 33	-19 2	4 19
सितं. 1	11 9 31	10 5 15	8 10 54	22 49	0 42	14 1	-0 42	13 37	-1 23	8 11	1 25	-3 52	2 17	0 42	-0 46	-12 15	-0 33	-19 2	4 18
4	11 9 24	10 5 10	8 10 53	22 35	0 44	13 55	0 6	13 35	-1 24	6 45	1 25	-4 0	2 17	0 40	-0 46	-12 16	-0 33	-19 3	4 18
7	11 9 18	10 5 6	8 10 52	22 20	0 47	13 19	0 45	13 34	-1 24	5 16	1 24	-4 7	2 17	0 37	-0 46	-12 18	-0 33	-19 4	4 17
10	11 9 11	10 5 1	8 10 51	22 3	0 49	12 13	1 15	13 31	-1 25	3 47	1 22	-4 15	2 16	0 34	-0 46	-12 20	-0 33	-19 5	4 16
13	11 9 4	10 4 56	8 10 51	21 45	0 52	10 42	1 35	13 29	-1 25	2 16	1 20	-4 23	2 16	0 31	-0 46	-12 21	-0 33	-19 5	4 16
16	11 8 57	10 4 52	8 10 51	21 25	0 54	8 50	1 46	13 25	-1 26	0 45	1 18	-4 31	2 16	0 29	-0 46	-12 23	-0 33	-19 6	4 15
19	11 8 50	10 4 47	8 10 51	21 5	0 57	6 44	1 50	13 21	-1 26	-0 47	1 14	-4 40	2 16	0 26	-0 46	-12 24	-0 33	-19 7	4 14
22	11 8 43	10 4 43	8 10 51	20 44	0 59	4 28	1 46	13 17	-1 27	-2 19	1 11	-4 48	2 16	0 23	-0 46	-12 26	-0 33	-19 7	4 14
25	11 8 36	10 4 39	8 10 52	20 21	1 2	2 8	1 38	13 12	-1 27	-3 50	1 6	-4 56	2 15	0 20	-0 46	-12 27	-0 33	-19 8	4 13
28	11 8 28	10 4 35	8 10 53	19 58	1 5	-0 13	1 25	13 7	-1 28	-5 21	1 2	-5 4	2 15	0 17	-0 46	-12 29	-0 33	-19 9	4 12

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2011 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., मा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2011 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अक्तू. 1	11 8 21	10 4 32	8 10 54	19 33	1 7	-2 34	1 10	13 1	-1 28	-6 51	0 57	-5 13	2 15	0 14	-0 46	-12 30	-0 33	-19 9	4 11
4	11 8 14	10 4 28	8 10 55	19 8	1 10	-4 52	0 52	12 55	-1 28	-8 20	0 51	-5 21	2 15	0 11	-0 46	-12 31	-0 33	-19 10	4 11
7	11 8 7	10 4 25	8 10 57	18 42	1 13	-7 6	0 33	12 49	-1 29	-9 47	0 45	-5 29	2 15	0 9	-0 46	-12 32	-0 33	-19 11	4 10
10	11 8 0	10 4 22	8 10 59	18 16	1 15	-9 16	0 13	12 42	-1 29	-11 12	0 39	-5 38	2 15	0 6	-0 46	-12 33	-0 33	-19 11	4 9
13	11 7 53	10 4 19	8 11 2	17 49	1 18	-11 20	-0 7	12 35	-1 29	-12 35	0 32	-5 46	2 15	0 3	-0 46	-12 34	-0 33	-19 12	4 9
16	11 7 46	10 4 17	8 11 4	17 21	1 21	-13 18	-0 28	12 27	-1 29	-13 55	0 25	-5 54	2 15	0 1	-0 46	-12 35	-0 33	-19 13	4 8
19	11 7 40	10 4 15	8 11 7	16 53	1 24	-15 9	-0 49	12 20	-1 29	-15 12	0 18	-6 2	2 15	-0 2	-0 46	-12 36	-0 33	-19 13	4 7
22	11 7 33	10 4 13	8 11 10	16 25	1 27	-16 54	-1 9	12 12	-1 29	-16 25	0 10	-6 10	2 15	-0 4	-0 46	-12 36	-0 33	-19 14	4 7
25	11 7 27	10 4 11	8 11 13	15 56	1 30	-18 30	-1 28	12 4	-1 29	-17 35	0 3	-6 18	2 15	-0 7	-0 46	-12 37	-0 33	-19 14	4 6
28	11 7 21	10 4 9	8 11 17	15 27	1 33	-19 59	-1 46	11 56	-1 29	-18 41	-0 5	-6 26	2 15	-0 9	-0 46	-12 37	-0 33	-19 15	4 5
31	11 7 16	10 4 8	8 11 21	14 58	1 36	-21 18	-2 2	11 48	-1 29	-19 43	-0 13	-6 34	2 16	-0 11	-0 46	-12 38	-0 33	-19 15	4 5
नव. 1	11 7 14	10 4 8	8 11 22	14 48	1 37	-21 42	-2 7	11 46	-1 29	-20 2	-0 16	-6 37	2 16	-0 12	-0 46	-12 38	-0 33	-19 15	4 5
4	11 7 9	10 4 7	8 11 26	14 19	1 40	-22 49	-2 21	11 38	-1 28	-20 57	-0 23	-6 44	2 16	-0 14	-0 46	-12 38	-0 33	-19 16	4 4
7	11 7 4	10 4 7	8 11 31	13 49	1 43	-23 44	-2 32	11 30	-1 28	-21 46	-0 31	-6 52	2 16	-0 16	-0 45	-12 38	-0 33	-19 16	4 3
10	11 7 0	10 4 7	8 11 35	13 20	1 46	-24 28	-2 39	11 23	-1 27	-22 31	-0 39	-6 59	2 16	-0 17	-0 45	-12 38	-0 33	-19 17	4 3
13	11 6 55	10 4 7	8 11 40	12 51	1 50	-25 0	-2 42	11 15	-1 27	-23 9	-0 46	-7 7	2 17	-0 19	-0 45	-12 38	-0 33	-19 17	4 2
16	11 6 52	10 4 7	8 11 45	12 23	1 53	-25 18	-2 38	11 8	-1 26	-23 41	-0 54	-7 14	2 17	-0 20	-0 45	-12 38	-0 33	-19 17	4 2
19	11 6 48	10 4 8	8 11 50	11 54	1 56	-25 22	-2 27	11 2	-1 26	-24 7	-1 1	-7 21	2 17	-0 22	-0 45	-12 38	-0 33	-19 18	4 1
22	11 6 45	10 4 9	8 11 56	11 26	2 0	-25 9	-2 7	10 56	-1 25	-24 27	-1 8	-7 27	2 18	-0 23	-0 45	-12 37	-0 33	-19 18	4 1
25	11 6 43	10 4 11	8 12 1	10 59	2 4	-24 38	-1 35	10 50	-1 25	-24 39	-1 14	-7 34	2 18	-0 23	-0 45	-12 37	-0 33	-19 18	4 0
28	11 6 41	10 4 12	8 12 7	10 32	2 7	-23 47	-0 49	10 45	-1 24	-24 46	-1 20	-7 40	2 19	-0 24	-0 45	-12 36	-0 33	-19 18	4 0
दिसं. 1	11 6 39	10 4 14	8 12 13	10 6	2 11	-22 35	0 8	10 40	-1 23	-24 45	-1 26	-7 47	2 19	-0 25	-0 45	-12 35	-0 33	-19 19	3 59
4	11 6 38	10 4 17	8 12 18	9 40	2 15	-21 8	1 9	10 36	-1 22	-24 38	-1 31	-7 53	2 20	-0 25	-0 45	-12 35	-0 33	-19 19	3 59
7	11 6 37	10 4 19	8 12 25	9 16	2 19	-19 43	2 1	10 33	-1 21	-24 23	-1 36	-7 58	2 20	-0 25	-0 44	-12 34	-0 33	-19 19	3 58
10	11 6 37	10 4 22	8 12 31	8 52	2 23	-18 39	2 35	10 30	-1 20	-24 3	-1 40	-8 4	2 21	-0 25	-0 44	-12 33	-0 33	-19 19	3 58
13	11 6 37	10 4 25	8 12 37	8 29	2 27	-18 11	2 49	10 27	-1 20	-23 35	-1 43	-8 9	2 21	-0 25	-0 44	-12 32	-0 33	-19 19	3 57
16	11 6 38	10 4 29	8 12 43	8 8	2 32	-18 15	2 47	10 26	-1 19	-23 2	-1 46	-8 14	2 22	-0 25	-0 44	-12 30	-0 33	-19 19	3 57
19	11 6 39	10 4 33	8 12 49	7 48	2 36	-18 43	2 34	10 25	-1 18	-22 22	-1 48	-8 19	2 22	-0 24	-0 44	-12 29	-0 33	-19 19	3 57
22	11 6 40	10 4 36	8 12 56	7 29	2 41	-19 26	2 15	10 24	-1 17	-21 36	-1 50	-8 23	2 23	-0 23	-0 44	-12 28	-0 33	-19 19	3 56
25	11 6 42	10 4 41	8 13 2	7 11	2 45	-20 15	1 53	10 25	-1 16	-20 45	-1 51	-8 28	2 24	-0 23	-0 44	-12 26	-0 33	-19 19	3 56
28	11 6 45	10 4 45	8 13 9	6 56	2 50	-21 6	1 28	10 26	-1 15	-19 49	-1 51	-8 31	2 24	-0 21	-0 44	-12 25	-0 33	-19 19	3 56
31	11 6 48	10 4 50	8 13 15	6 41	2 55	-21 53	1 3	10 27	-1 14	-18 47	-1 50	-8 35	2 25	-0 20	-0 43	-12 23	-0 33	-19 19	3 55

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2012 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2012 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. 1	11 6 49	10 4 52	8 13 17	6 37	2 56	-22 8	0 55	10 28	-1 14	-18 26	-1 50	-8 36	2 25	-0 20	-0 43	-12 22	-0 33	-19 19	3 55
4	11 6 52	10 4 57	8 13 24	6 25	3 1	-22 47	0 30	10 31	-1 13	-17 18	-1 48	-8 39	2 26	-0 18	-0 43	-12 21	-0 33	-19 19	3 55
7	11 6 56	10 5 2	8 13 30	6 16	3 7	-23 19	0 7	10 34	-1 12	-16 7	-1 46	-8 42	2 27	-0 16	-0 43	-12 19	-0 33	-19 19	3 55
10	11 7 1	10 5 7	8 13 36	6 8	3 12	-23 40	-0 16	10 38	-1 11	-14 51	-1 43	-8 45	2 27	-0 15	-0 43	-12 17	-0 33	-19 19	3 55
13	11 7 6	10 5 13	8 13 43	6 3	3 17	-23 52	-0 37	10 42	-1 10	-13 32	-1 39	-8 47	2 28	-0 13	-0 43	-12 15	-0 33	-19 19	3 54
16	11 7 11	10 5 19	8 13 49	5 59	3 22	-23 52	-0 56	10 47	-1 9	-12 10	-1 34	-8 49	2 29	-0 10	-0 43	-12 13	-0 33	-19 19	3 54
19	11 7 16	10 5 25	8 13 55	5 59	3 27	-23 41	-1 14	10 53	-1 8	-10 46	-1 28	-8 51	2 30	-0 8	-0 43	-12 11	-0 33	-19 18	3 54
22	11 7 23	10 5 31	8 14 1	6 0	3 33	-23 18	-1 29	10 59	-1 7	-9 18	-1 22	-8 52	2 31	-0 6	-0 43	-12 9	-0 33	-19 18	3 54
25	11 7 29	10 5 37	8 14 7	6 5	3 38	-22 42	-1 42	11 5	-1 7	-7 49	-1 15	-8 53	2 31	-0 3	-0 43	-12 6	-0 33	-19 18	3 54
28	11 7 36	10 5 43	8 14 13	6 12	3 43	-21 54	-1 52	11 12	-1 6	-6 18	-1 7	-8 53	2 32	-0 0	-0 42	-12 4	-0 33	-19 18	3 54
31	11 7 43	10 5 50	8 14 19	6 21	3 48	-20 52	-2 0	11 20	-1 5	-4 46	-0 58	-8 54	2 33	0 3	-0 42	-12 2	-0 33	-19 17	3 53
फर. 1	11 7 45	10 5 52	8 14 21	6 25	3 50	-20 28	-2 2	11 23	-1 5	-4 15	-0 55	-8 54	2 33	0 4	-0 42	-12 1	-0 33	-19 17	3 53
4	11 7 53	10 5 59	8 14 26	6 38	3 54	-19 9	-2 5	11 31	-1 4	-2 41	-0 45	-8 53	2 34	0 7	-0 42	-11 59	-0 33	-19 17	3 53
7	11 8 1	10 6 5	8 14 31	6 54	3 59	-17 37	-2 4	11 39	-1 3	-1 7	-0 35	-8 53	2 35	0 10	-0 42	-11 56	-0 33	-19 17	3 53
10	11 8 9	10 6 12	8 14 37	7 11	4 3	-15 51	-2 0	11 48	-1 2	0 27	-0 24	-8 52	2 36	0 13	-0 42	-11 54	-0 33	-19 17	3 53
13	11 8 17	10 6 19	8 14 42	7 31	4 6	-13 53	-1 50	11 58	-1 2	2 1	-0 13	-8 51	2 36	0 17	-0 42	-11 52	-0 33	-19 16	3 53
16	11 8 26	10 6 26	8 14 46	7 54	4 9	-11 42	-1 36	12 8	-1 1	3 35	-0 1	-8 49	2 37	0 20	-0 42	-11 49	-0 33	-19 16	3 53
19	11 8 35	10 6 32	8 14 51	8 17	4 11	-9 20	-1 16	12 18	-1 0	5 8	0 12	-8 48	2 38	0 24	-0 42	-11 47	-0 33	-19 16	3 53
22	11 8 44	10 6 39	8 14 55	8 42	4 12	-6 50	-0 50	12 28	-0 59	6 41	0 25	-8 45	2 39	0 28	-0 42	-11 45	-0 33	-19 16	3 53
25	11 8 53	10 6 46	8 15 0	9 8	4 13	-4 16	-0 19	12 39	-0 59	8 12	0 38	-8 43	2 39	0 31	-0 42	-11 42	-0 33	-19 15	3 53
28	11 9 3	10 6 53	8 15 3	9 35	4 13	-1 44	0 18	12 50	-0 58	9 41	0 52	-8 40	2 40	0 35	-0 42	-11 40	-0 33	-19 15	3 53
मार्च 1	11 9 9	10 6 57	8 15 6	9 52	4 12	-0 7	0 45	12 57	-0 58	10 39	1 2	-8 38	2 41	0 38	-0 42	-11 38	-0 33	-19 15	3 53
4	11 9 19	10 7 4	8 15 9	10 18	4 10	2 4	1 27	13 8	-0 57	12 5	1 16	-8 35	2 41	0 42	-0 42	-11 36	-0 33	-19 14	3 53
7	11 9 29	10 7 11	8 15 13	10 43	4 8	3 52	2 9	13 20	-0 57	13 29	1 30	-8 32	2 42	0 46	-0 42	-11 34	-0 33	-19 14	3 53
10	11 9 39	10 7 17	8 15 16	11 7	4 4	5 6	2 46	13 31	-0 56	14 50	1 45	-8 28	2 42	0 50	-0 41	-11 31	-0 33	-19 14	3 53
13	11 9 49	10 7 24	8 15 19	11 29	4 0	5 41	3 15	13 43	-0 55	16 8	1 59	-8 24	2 43	0 54	-0 41	-11 29	-0 33	-19 14	3 53
16	11 9 59	10 7 30	8 15 21	11 48	3 55	5 35	3 32	13 55	-0 55	17 23	2 14	-8 20	2 44	0 58	-0 41	-11 27	-0 33	-19 14	3 53
19	11 10 9	10 7 37	8 15 23	12 6	3 49	4 49	3 32	14 7	-0 54	18 34	2 28	-8 16	2 44	1 2	-0 41	-11 24	-0 33	-19 13	3 53
22	11 10 19	10 7 43	8 15 25	12 21	3 43	3 32	3 15	14 19	-0 54	19 42	2 43	-8 12	2 44	1 6	-0 41	-11 22	-0 33	-19 13	3 53
25	11 10 30	10 7 49	8 15 27	12 33	3 36	2 0	2 43	14 31	-0 53	20 46	2 57	-8 7	2 45	1 10	-0 41	-11 20	-0 33	-19 13	3 54
28	11 10 40	10 7 55	8 15 28	12 42	3 29	0 26	2 1	14 44	-0 53	21 46	3 10	-8 2	2 45	1 14	-0 41	-11 18	-0 34	-19 13	3 54
31	11 10 50	10 8 0	8 15 29	12 49	3 21	-0 56	1 15	14 56	-0 53	22 41	3 24	-7 58	2 45	1 18	-0 41	-11 16	-0 34	-19 13	3 54

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (1 जनवरी, 2011 से 31 मार्च, 2012 ई. तक)

सूर्य–चार (सन् 2011–12 ई.)

तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)	तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)	तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)	तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 1		पू.षा.	2	16 47	अप्रैल 14	मेष	अश्वि.	1	13 00	जुलाई 31		पुष्य	4	2 27	नवम्बर 13		विशा.	3	16 06
4		पू.षा.	3	23 14	17		अश्वि.	2	22 45	अगस्त 3		आश्ले.	1	14 03	16	वृश्चिक	विशा.	4	23 34
8		पू.षा.	4	5 43	21		अश्वि.	3	8 39	7		आश्ले.	2	1 36	20		अनु.	1	6 54
11		उ.षा.	1	12 12	24		अश्वि.	4	18 42	10		आश्ले.	3	13 05	23		अनु.	2	14 06
14	मकर	उ.षा.	2	18 44	28		भर.	1	4 52	14		आश्ले.	4	0 30	26		अनु.	3	21 12
18		उ.षा.	3	1 18	मई 1		भर.	2	15 10	17	सिंह	मघा	1	11 49	30		अनु.	4	4 12
21		उ.षा.	4	7 55	5		भर.	3	1 37	20		मघा	2	23 00	दिसम्बर 3		ज्येष्ठा	1	11 08
24		श्रव.	1	14 35	8		भर.	4	12 12	24		मघा	3	10 03	6		ज्येष्ठा	2	18 00
27		श्रव.	2	21 16	11		कृत्ति.	1	22 56	27		मघा	4	20 58	10		ज्येष्ठा	3	0 48
31		श्रव.	3	4 01	15	वृष	कृत्ति.	2	9 50	31		पू.फा.	1	7 45	13		ज्येष्ठा	4	7 33
फरवरी 3		श्रव.	4	10 48	18		कृत्ति.	3	20 51	सितम्बर 3		पू.फा.	2	18 24	16	धनु	मूल	1	14 13
6		धनि.	1	17 40	22		कृत्ति.	4	8 00	7		पू.फा.	3	4 57	19		मूल	2	20 50
10		धनि.	2	0 38	25		रोहि.	1	19 14	10		पू.फा.	4	15 22	23		मूल	3	3 23
13	कुम्भ	धनि.	3	7 43	29		रोहि.	2	6 32	14		उ.फा.	1	1 39	26		मूल	4	9 53
16		धनि.	4	14 54	जून 1		रोहि.	3	17 56	17	कन्या	उ.फा.	2	11 47	29		पू.षा.	1	16 23
19		शत.	1	22 13	5		रोहि.	4	5 25	20		उ.फा.	3	21 45	(सन् 2012 ई.)				
23		शत.	2	5 37	8		मृग.	1	17 00	24		उ.फा.	4	7 32	जनवरी 1		पू.षा.	2	22 52
26		शत.	3	13 08	12		मृग.	2	4 40	27		हस्त	1	17 09	5		पू.षा.	3	5 22
मार्च 1		शत.	4	20 45	15	मिथुन	मृग.	3	16 26	अक्तूबर 1		हस्त	2	2 37	8		पू.षा.	4	11 53
5		पू.भा.	1	4 29	19		मृग.	4	4 15	4		हस्त	3	11 56	11		उ.षा.	1	18 25
8		पू.भा.	2	12 21	22		आर्द्रा	1	16 06	7		हस्त	4	21 07	15	मकर	उ.षा.	2	0 58
11		पू.भा.	3	20 22	26		आर्द्रा	2	3 57	11		चित्रा	1	6 09	18		उ.षा.	3	7 31
15	मीन	पू.भा.	4	4 33	29		आर्द्रा	3	15 49	14		चित्रा	2	15 03	21		उ.षा.	4	14 05
18		उ.भा.	1	12 54	जुलाई 3		आर्द्रा	4	3 42	17	तुला	चित्रा	3	23 46	24		श्रव.	1	20 42
21		उ.भा.	2	21 24	6		पुन.	1	15 36	21		चित्रा	4	8 19	28		श्रव.	2	3 21
25		उ.भा.	3	6 03	10		पुन.	2	3 30	24		स्वाती	1	16 42	31		श्रव.	3	10 06
28		उ.भा.	4	14 50	13		पुन.	3	15 26	28		स्वाती	2	0 55	फरवरी 3		श्रव.	4	16 56
31		रेव.	1	23 44	17	कर्क	पुन.	4	3 21	31		स्वाती	3	9 00	6		धनि.	1	23 51
अप्रैल 4		रेव.	2	8 48	20		पुष्य	1	15 13	नवम्बर 3		स्वाती	4	16 57	10		धनि.	2	6 52
7		रेव.	3	18 01	24		पुष्य	2	3 02	7		विशा.	1	0 47	13	कुम्भ	धनि.	3	13 58
11		रेव.	4	3 25	27		पुष्य	3	14 47	10		विशा.	2	8 31	16		धनि.	4	21 08

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (1 जनवरी, 2011 से 31 मार्च, 2012 ई. तक)

सूर्य–चार (सन् 2012)

तारीख 2012 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 20		शत.	1	4 24
23		शत.	2	11 45
26		शत.	3	19 15
मार्च 1		शत.	4	2 52
4		पू.भा.	1	10 39
7		पू.भा.	2	18 34
11		पू.भा.	3	2 38
14	मीन	पू.भा.	4	10 50
17		उ.भा.	1	19 10
21		उ.भा.	2	3 37
24		उ.भा.	3	12 13
27		उ.भा.	4	20 58
31		रेव.	1	5 54

मंगल–चार (सन् 2011 ई.)

तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 4		उ.षा.	1	5 03
8	मकर	उ.षा.	2	12 02
12		उ.षा.	3	18 42
17		उ.षा.	4	1 08
21		श्रव.	1	7 19
25		श्रव.	2	13 17
29		श्रव.	3	19 02
फरवरी 3		श्रव.	4	0 37
7		धनि.	1	6 05
11		धनि.	2	11 27
15	कुम्भ	धनि.	3	16 47
19		धनि.	4	22 05
24		शत.	1	3 22
28		शत.	2	8 40
मार्च 4		शत.	3	14 0
8		शत.	4	19 25
13		पू.भा.	1	0 57

मंगल–चार (सन् 2011–2012 ई.)

तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 17		पू.भा.	2	6 40
21		पू.भा.	3	12 33
25	मीन	पू.भा.	4	18 37
30		उ.भा.	1	0 54
अप्रैल 3		उ.भा.	2	7 26
7		उ.भा.	3	14 15
11		उ.भा.	4	21 24
16		रेव.	1	4 55
20		रेव.	2	12 47
24		रेव.	3	21 03
29		रेव.	4	5 42
मई 3	मेष	अश्वि.	1	14 48
8		अश्वि.	2	0 22
12		अश्वि.	3	10 27
16		अश्वि.	4	21 04
21		भर.	1	8 14
25		भर.	2	19 57
30		भर.	3	8 14
जून 3		भर.	4	21 08
8		कृत्ति.	1	10 41
13	वृष	कृत्ति.	2	0 55
17		कृत्ति.	3	15 50
22		कृत्ति.	4	7 27
26		रोहि.	1	23 46
जुलाई 1		रोहि.	2	16 49
6		रोहि.	3	10 40
11		रोहि.	4	5 21
16		मृग.	1	0 52
20		मृग.	2	21 13
25	मिथुन	मृग.	3	18 25
30		मृग.	4	16 32

तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अगस्त 4		आर्द्रा	1	15 36
9		आर्द्रा	2	15 42
14		आर्द्रा	3	16 50
19		आर्द्रा	4	19 02
24		पुन.	1	22 19
30		पुन.	2	2 48
सितम्बर 4		पुन.	3	8 34
9	कर्क	पुन.	4	15 44
15		पुष्य	1	0 20
20		पुष्य	2	10 28
25		पुष्य	3	22 16
अक्तूबर 1		पुष्य	4	11 59
7		आश्ले.	1	3 50
12		आश्ले.	2	22 01
18		आश्ले.	3	18 49
24		आश्ले.	4	18 37
30	सिंह	मघा	1	22 03
नवम्बर 6		मघा	2	5 51
12		मघा	3	18 50
19		मघा	4	14 17
26		पू.फा.	1	18 18
दिसम्बर 4		पू.फा.	2	10 13
12		पू.फा.	3	19 31
22		पू.फा.	4	9 53
(सन् 2012)				
जनवरी 3		उ.फा.	1	17 57
24	वक्री			6 24
फरवरी 12		पू.फा.	4	12 20
23		पू.फा.	3	8 51
मार्च 3		पू.फा.	2	2 54
11		पू.फा.	1	15 40
21		मघा	4	8 15

बुध–चार (सन् 2011 ई.)

तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 3		ज्येष्ठा	4	9 44
8	धनु	मूल	1	0 22
11		मूल	2	8 35
14		मूल	3	6 44
16		मूल	4	23 32
19		पू.षा.	1	13 02
22		पू.षा.	2	0 12
24		पू.षा.	3	9 35
26		पू.षा.	4	17 30
29		उ.षा.	1	0 14
31	मकर	उ.षा.	2	5 54
फरवरी 2		उ.षा.	3	10 34
4		उ.षा.	4	14 20
6		श्रव.	1	17 14
8		श्रव.	2	19 18
10		श्रव.	3	20 33
12		श्रव.	4	20 59
14		धनि.	1	20 37
16		धनि.	2	19 28
18	कुम्भ	धनि.	3	17 32
20		धनि.	4	14 52
22		शत.	1	11 28
24		शत.	2	7 23
26		शत.	३	2 39
27		शत.	4	21 19
मार्च 1		पू.भा.	1	15 30
3		पू.भा.	2	9 18
5		पू.भा.	3	2 50
6	मीन	पू.भा.	4	20 18
8		उ.भा.	1	13 55
10		उ.भा.	2	8 00

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (1 जनवरी, 2011 से 31 मार्च, 2012 ई. तक)

बुध–चार (सन् 2011 ई.)

तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 12		उ.भा.	3	2 58
13		उ.भा.	4	23 29
15		रेव.	1	22 26
18		रेव.	2	1 17
20		रेव.	3	11 03
23		रेव.	4	10 47
28	मेष	अश्वि.	1	19 39
31	वक्री			2 19
अप्रैल 3		रेव.	4	5 31
8		रेव.	3	14 43
12		रेव.	2	23 49
18		रेव.	1	11 27
23	मार्गी			15 34
28		रेव.	2	21 58
मई 4		रेव.	3	10 27
6		रेव.	4	5 12
11	मेष	अश्वि.	1	8 44
14		अश्वि.	2	3 46
16		अश्वि.	3	16 57
19		अश्वि.	4	1 56
21		भर.	1	7 29
23		भर.	2	10 11
25		भर.	3	10 32
27		भर.	4	8 48
29		कृत्ति.	1	5 17
31	वृष	कृत्ति.	2	0 05
जून 1		कृत्ति.	3	17 29
3		कृत्ति.	4	9 42
5		रोहि.	1	0 50
6		रोहि.	2	15 04
8		रोहि.	3	4 37

तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जून 9		रोहि.	4	17 34
11		मृग.	1	6 11
12		मृग.	2	18 34
14	मिथुन	मृग.	3	6 56
15		मृग.	4	19 28
17		आर्द्रा	1	8 17
18		आर्द्रा	2	21 38
20		आर्द्रा	3	11 36
22		आर्द्रा	4	2 22
23		पुन.	1	18 08
25		पुन.	2	11 0
27		पुन.	3	5 07
29	कर्क	पुन.	4	0 44
30		पुष्य	1	21 59
जुलाई 2		पुष्य	2	21 05
4		पुष्य	3	22 16
7		पुष्य	4	1 53
9		आश्ले.	1	8 25
11		आश्ले.	2	18 31
14		आश्ले.	3	9 02
17		आश्ले.	4	5 41
20	सिंह	मघा	1	11 50
24		मघा	2	11 07
30		मघा	3	22 11
अगस्त 3	वक्री			9 20
6		मघा	2	18 32
12		मघा	1	22 14
17	कर्क	आश्ले.	4	0 32
21		आश्ले.	3	9 14
27	मार्गी			3 33
सितंबर 1		आश्ले.	4	13 34

तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
सितंबर 5	सिंह	मघा	1	2 18
7		मघा	2	16 29
9		मघा	3	21 58
11		मघा	4	22 42
13		पू.फा.	1	20 40
15		पू.फा.	2	16 59
17		पू.फा.	3	12 22
19		पू.फा.	4	7 16
21		उ.फा.	1	2 03
22	कन्या	उ.फा.	2	20 56
24		उ.फा.	3	16 08
26		उ.फा.	4	11 46
28		हस्त	1	7 56
30		हस्त	2	4 44
अक्तूबर 2		हस्त	3	2 13
4		हस्त	4	0 25
5		चित्रा	1	23 22
7		चित्रा	2	23 04
9	तुला	चित्रा	3	23 33
12		चित्रा	4	0 48
14		स्वाती	1	2 49
16		स्वाती	2	5 37
18		स्वाती	3	9 12
20		स्वाती	4	13 33
22		विशा.	1	18 42
25		विशा.	2	0 40
27		विशा.	3	7 30
29	वृश्चिक	विशा.	4	15 21
नवंबर 1		अनु.	1	0 20
3		अनु.	2	10 43
5		अनु.	3	22 57

तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
नवंबर 8		अनु.	4	13 44
11		ज्येष्ठा	1	8 21
14		ज्येष्ठा	2	9 46
18		ज्येष्ठा	3	2 16
24	वक्री			12 50
30		ज्येष्ठा	2	3 53
दिसंबर 2		ज्येष्ठा	1	23 50
5		अनु.	4	10 29
8		अनु.	3	2 08
12		अनु.	2	23 15
14	मार्गी			7 13
15		अनु.	3	16 01
21		अनु.	4	10 17
24		ज्येष्ठा	1	19 16
27		ज्येष्ठा	2	16 37
30		ज्येष्ठा	3	8 25
(सन् 2012 ई.)				
जनवरी 1		ज्येष्ठा	4	20 52
4	धनु	मूल	1	7 13
6		मूल	2	15 59
8		मूल	3	23 36
11		मूल	4	6 16
13		पू.षा.	1	12 05
15		पू.षा.	2	17 10
17		पू.षा.	3	21 34
20		पू.षा.	4	1 20
22		उ.षा.	1	4 26
24	मकर	उ.षा.	2	6 55
26		उ.षा.	3	8 44
28		उ.षा.	4	9 54
30		श्रव.	1	10 26

ग्रहों के निरयण राशि—नक्षत्र चरण—चार (1 जनवरी, 2011 से 31 मार्च, 2012 ई. तक)

बुध—चार (सन् 2012 ई.)

तारीख 2012 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 1		श्रव.	2	10 19
3		श्रव.	3	9 32
5		श्रव.	4	8 07
7		धनि.	1	6 04
9		धनि.	2	3 24
11	कुम्भ	धनि.	3	0 10
12		धनि.	4	20 26
14		शत.	1	16 16
16		शत.	2	11 47
18		शत.	3	7 07
20		शत.	4	2 29
21		पू.भा.	1	22 11
23		पू.भा.	2	18 35
25		पू.भा.	3	16 16
27	मीन	पू.भा.	4	16 10
29		उ.भा.	1	19 50
मार्च 3		उ.भा.	2	6 19
6		उ.भा.	3	9 00
12	वक्री			13 19
19		उ.भा.	2	3 01
23		उ.भा.	1	0 14
26		पू.भा.	4	22 05

गुरु—चार (सन् 2011 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 6		उ.भा.	1	21 16
26		उ.भा.	2	15 44
फरवरी 12		उ.भा.	3	7 13
27		उ.भा.	4	11 06
मार्च 13		रेव.	1	19 35
27		रेव.	2	18 12
अप्रैल 10		रेव.	3	13 06
24		रेव.	4	10 00

गुरु—चार (सन् 2011—12 ई.)

तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मई 8	मेष	अश्वि.	1	14 12
23		अश्वि.	2	8 57
जून 8		अश्वि.	3	4 35
25		अश्वि.	4	21 28
जुलाई 17		भर.	1	17 29
अगस्त 30	वक्री			14 48
अक्तूबर 13		अश्वि.	4	13 40
नवंबर 7		अश्वि.	3	16 27
दिसंबर 12		अश्वि.	2	9 01
26	मार्गी			3 38
(सन् 2012 ई.)				
जनवरी 8		अश्वि.	3	23 48
फरवरी 11		अश्वि.	4	20 16
मार्च 3		भर.	1	1 31
20		भर.	2	0 49

शुक्र—चार (सन् 2011 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 1	वृश्चिक	विशा.	4	16 44
5		अनु.	1	2 29
8		अनु.	2	10 10
11		अनु.	3	16 08
14		अनु.	4	20 41
18		ज्येष्ठा	1	0 01
21		ज्येष्ठा	2	2 17
24		ज्येष्ठा	3	3 38
27		ज्येष्ठा	4	4 10
30	धनु	मूल	1	4 00
फरवरी 2		मूल	2	3 14
5		मूल	3	1 56
8		मूल	4	0 11
10		पू.षा.	1	22 01

शुक्र—चार (सन् 2011 ई.)

तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 13		पू.षा.	2	19 29
16		पू.षा.	3	16 36
19		पू.षा.	4	13 25
22		उ.षा.	1	9 57
25	मकर	उ.षा.	2	6 13
28		उ.षा.	3	2 15
मार्च 2		उ.षा.	4	22 04
5		श्रव.	1	17 43
8		श्रव.	2	13 12
11		श्रव.	3	8 32
14		श्रव.	4	3 45
16		धनि.	1	22 50
19		धनि.	2	17 48
22	कुम्भ	धनि.	3	12 40
25		धनि.	4	7 25
28		शत.	1	2 05
30		शत.	2	20 39
अप्रैल 2		शत.	3	15 09
5		शत.	4	9 35
8		पू.भा.	1	3 58
10		पू.भा.	2	22 18
13		पू.भा.	3	16 36
16	मीन	पू.भा.	4	10 51
19		उ.भा.	1	5 03
21		उ.भा.	2	23 13
24		उ.भा.	3	17 20
27		उ.भा.	4	11 25
30		रेव.	1	5 28
मई 2		रेव.	2	23 29
5		रेव.	3	17 28
8		रेव.	4	11 27

तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मई 11	मेष	अश्वि.	1	5 25
13		अश्वि.	2	23 21
16		अश्वि.	3	17 17
19		अश्वि.	4	11 11
22		भर.	1	5 03
24		भर.	2	22 54
27		भर.	3	16 43
30		भर.	4	10 30
जून 2		कृत्ति.	1	4 16
4	वृष	कृत्ति.	2	22 01
7		कृत्ति.	3	15 44
10		कृत्ति.	4	9 27
13		रोहि.	1	3 08
15		रोहि.	2	20 47
18		रोहि.	3	14 24
21		रोहि.	4	7 59
24		मृग.	1	1 32
26		मृग.	2	19 02
29	मिथुन	मृग.	3	12 30
जुलाई 2		मृग.	4	5 55
4		आर्द्रा	1	23 18
7		आर्द्रा	2	16 39
10		आर्द्रा	3	9 58
13		आर्द्रा	4	3 14
15		पुन.	1	20 29
18		पुन.	2	13 40
21		पुन.	3	6 49
23	कर्क	पुन.	4	23 54
26		पुष्य	1	16 57
29		पुष्य	2	9 56
अगस्त 1		पुष्य	3	2 53

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (1 जनवरी, 2011 से 31 मार्च, 2012 ई. तक)

शुक्र–चार (सन् 2011–12 ई.)

तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अगस्त 3		पुष्य	4	19 47
6		आश्ले.	1	12 39
9		आश्ले.	2	5 29
11		आश्ले.	3	22 17
14		आश्ले.	4	15 02
17	सिंह	मघा	1	7 46
20		मघा	2	0 26
22		मघा	3	17 05
25		मघा	4	9 41
28		पू.फा.	1	2 14
30		पू.फा.	2	18 46
सितंबर 2		पू.फा.	3	11 17
5		पू.फा.	4	3 46
7		उ.फा.	1	20 14
10	कन्या	उ.फा.	2	12 41
13		उ.फा.	3	5 07
15		उ.फा.	4	21 32
सितम्बर 18		हस्त	1	13 56
21		हस्त	2	6 19
23		हस्त	3	22 41
26		हस्त	4	15 01
29		चित्रा	1	7 22
अक्तूबर 1		चित्रा	2	23 41
4	तुला	चित्रा	3	16 01
7		चित्रा	4	8 21
10		स्वाती	1	0 41
12		स्वाती	2	17 02
15		स्वाती	3	9 22
18		स्वाती	4	1 42
20		विशा.	1	18 03
23		विशा.	2	10 23

तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अक्तूबर 26		विशा.	3	2 43
28	वृश्चिक	विशा.	4	19 03
31		अनु.	1	11 23
नवंबर 3		अनु.	2	3 44
5		अनु.	3	20 06
8		अनु.	4	12 29
11		ज्येष्ठा	1	4 53
13		ज्येष्ठा	2	21 18
16		ज्येष्ठा	3	13 43
19		ज्येष्ठा	4	6 09
21	धनु	मूल	1	22 36
24		मूल	2	15 03
27		मूल	3	7 32
30		मूल	4	0 01
दिसंबर 2		पू.षा.	1	16 33
5		पू.षा.	2	9 07
8		पू.षा.	3	1 43
10		पू.षा.	4	18 22
13		उ.षा.	1	11 04
16	मकर	उ.षा.	2	3 49
18		उ.षा.	3	20 37
21		उ.षा.	4	13 28
24		श्रव.	1	6 22
26		श्रव.	2	23 20
29		श्रव.	3	16 23
(सन् 2012 ई.)				
जनवरी 1		श्रव.	4	9 32
4		धनि.	1	2 47
6		धनि.	2	20 09
9	कुम्भ	धनि.	3	13 38
12		धनि.	4	7 16

तारीख 2012 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 15		शत.	1	1 02
17		शत.	2	18 57
20		शत.	3	13 02
23		शत.	4	7 17
26		पू.भा.	1	1 44
28		पू.भा.	2	20 24
31		पू.भा.	3	15 18
फरवरी 3	मीन	पू.भा.	4	10 29
6		उ.भा.	1	5 57
9		उ.भा.	2	1 43
11		उ.भा.	3	21 51
14		उ.भा.	4	18 19
17		रेव.	1	15 12
20		रेव.	2	12 29
23		रेव.	3	10 15
26		रेव.	4	8 31
29	मेष	अश्वि.	1	7 22
मार्च 3		अश्वि.	2	6 52
6		अश्वि.	3	7 06
9		अश्वि.	4	8 09
12		भर.	1	10 06
15		भर.	2	13 04
18		भर.	3	17 11
21		भर.	4	22 36
25		कृत्ति.	1	5 33
28	वृष	कृत्ति.	2	14 20

शनि–चार (सन् 2011–12 ई.)

तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जून 13	मार्गी			9 21
30		हस्त	3	13 04
अगस्त 20		हस्त	4	18 19
सितंबर 20		चित्रा	1	15 58
अक्तूबर 18		चित्रा	2	6 42
नवंबर 15	तुला	चित्रा	3	10 11
दिसंबर 19		चित्रा	4	8 18
फरवरी 7	वक्री			19 34
मार्च 31		चित्रा	3	5 01

राहु–चार (सन् 2011–12 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 31		मूल	2	19 17
अप्रैल 4		मूल	1	17 11
जून 6	वृश्चिक	ज्येष्ठा	4	14 52
अगस्त 8		ज्येष्ठा	3	12 18
अक्तूबर 10		ज्येष्ठा	2	10 15
दिसंबर 12		ज्येष्ठा	1	7 53
फरवरी 13		अनु.	4	5 23

केतु–चार (सन् 2011–12 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 31		मृग.	4	19 17
अप्रैल 4		मृग.	3	17 11
जून 6	वृष	मृग.	2	14 52
अगस्त 8		मृग.	1	12 18
अक्तूबर 10		रोहि.	4	10 15
दिसंबर 12		रोहि.	3	7 53
फरवरी 13		रोहि.	2	5 23

शनि–चार (सन् 2011 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 26	वक्री			11 40
अप्रैल 2		हस्त	3	10 45
मई 27		हस्त	2	7 43

यूरेनस–चार (2011 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 15		उ.भा.	1	11 20
मार्च 24		उ.भा.	2	6 56
जून 3		उ.भा.	3	7 04

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (1 जनवरी, 2011 से 31 मार्च, 2012 ई. तक)

यूरेनस–चार (2011–12 ई.)

तारीख 2011–12 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जुलाई 10	वक्री			6 07
अगस्त 16		उ.भा.	2	20 07
नवंबर 29		उ.भा.	1	10 12
दिसंबर 10	मार्गी			12 37
21		उ.भा.	2	17 05
मार्च 16		उ.भा.	3	13 54

नेप्च्यून–चार (2011–12 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 20		धनि.	4	15 06
मई 4		शत.	1	15 58
जून 3	वक्री			13 02
जुलाई 3		धनि.	4	18 54
नवंबर 10	मार्गी			0 26
फरवरी 22		शत.	1	13 07

प्लूटो–चार (2011–12 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
मार्च 17		पू.षा.	1	0 36
अप्रैल 9	वक्री			14 18
मई 3		मूल	4	1 32
सितंबर 16	मार्गी			23 52
जनवरी 2		पू.षा.	1	12 28

ग्रहों के वक्र–मार्ग / उदयास्त की तारीखें

(1 जनवरी, सन् 2011 ई. से 31 मार्च, 2012 ई. तक)

ग्रह	वक्र / मार्ग	तारीख
मंगल	वक्री	24 जन., 2012 ई.
बुध	वक्री	31 मार्च, 2011 ई.
बुध	मार्गी	23 अप्रै., 2011 ई.
बुध	वक्री	3 अग., 2011 ई.
बुध	मार्गी	27 अग., 2011 ई.
बुध	वक्री	24 नवं., 2011 ई.
बुध	मार्गी	14 दिसं., 2011 ई.
बुध	वक्री	12 मार्च, 2012 ई.
गुरु	वक्री	30 अग. 2011 ई.
गुरु	मार्गी	26 दिसं., 2011 ई.
शनि	वक्री	26 जन., 2011 ई.
शनि	मार्गी	13 जून, 2011 ई.
शनि	वक्री	7 फर., 2012 ई.
यूरेनस	वक्री	10 जुला., 2011 ई.
यूरेनस	मार्गी	10 दिसं., 2011 ई.
नेप्च्यून	वक्री	3 जून, 2011 ई.
नेप्च्यून	मार्गी	10 नवं., 2011 ई.
प्लूटो	वक्री	9 अप्रै., 2011 ई.
प्लूटो	मार्गी	16 सितं., 2011 ई.

ग्रह	उदय / अस्त	तारीख
मंगल	उदित	26 अप्रै., 2011 ई.
बुध	पू. में अस्त	6 फर., 2011 ई.
बुध	प. में उदित	12 मार्च, 2011 ई.
बुध	प. में अस्त	1 अप्रै., 2011 ई.
बुध	पू. में उदित	17 अप्रै., 2011 ई.
बुध	पू. में अस्त	1 जून, 2011 ई.
बुध	प. में उदित	24 जून, 2011 ई.
बुध	प. में अस्त	9 अग., 2011 ई.
बुध	पू. में उदित	25 अग., 2011 ई.
बुध	पू. में अस्त	13 सितं., 2011 ई.
बुध	प. में उदित	18 अक्तू., 2011 ई.
बुध	प. में अस्त	28 नवं., 2011 ई.
बुध	पू. में उदित	10 दिसं., 2011 ई.
बुध	पू. में अस्त	17 जन., 2012 ई.
बुध	प. में उदित	23 फर., 2012 ई.
बुध	प. में अस्त	13 मार्च, 2012 ई.
गुरु	अस्त	26 मार्च, 2011 ई.
गुरु	उदित	26 अप्रै., 2011 ई.
शुक्र	पू. में अस्त	22 जुला., 2011 ई.
शुक्र	प. में उदित	4 अक्तू., 2011 ई.
शनि	अस्त	26 सितं., 2011 ई.
शनि	उदित	31 अक्तू., 2011 ई

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

संक्षिप्तरूपः— अं. नि.= अण्डेमान एवं निकोबार, अरुणा.= अरुणाचल प्रदेश, आं.=आन्ध्र प्रदेश, आसा.= आसाम , उ.= उड़ीसा, उ.प्र.=उत्तरप्रदेश, उ.आं उत्तरांचल, क.= कर्णाटक , के.= केरल, गु.= गुजरात, गोवा= गोवा, का.= जम्मू–काश्मीर, ता.= तामिलनाडु, त्रि.= त्रिपुरा, दा.ना.= दादर एण्ड नागर हवेली, डा.= डामन ड्यू, ना.= नागालैण्ड, बं.= प. बंगाल, पं.= पंजाब, पां.= पाण्डिचेरी, बि.=बिहार, झा.ख.= झारखण्ड, मणि.= मणिपुर, म.प्र.= मध्यप्रदेश, छ.ग.= छत्तीसगढ़, म.= महाराष्ट्र, मिज़ो.= मिज़ोरम, मे.= मेघालय, रा.= राजस्थान, लक्ष.= लक्षद्वीप, सि.= सिक्किम, ह.= हरियाणा, हि.= हिमाचल प्रदेश,

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अकबरपुर	(उ.प्र.)	26 25	82 33	+ 0 12
अंकलेश्वर	(गु.)	21 38	73 02	−37 52
अकोला	(म.)	20 40	77 05	−21 40
अखनूर	(का.)	32 53	74 45	−31 00
अगरतला	(त्रि.)	23 48	91 15	+35 00
अगरोहा	(ह.)	29 21	75 38	−27 28
अंगुल	(उ.)	20 48	85 04	+10 16
अच्छीवाल	(का.)	33 41	75 14	−29 04
अजन्ता	(म.)	20 30	75 48	−26 48
अजनाला	(पं.)	31 51	74 48	−30 48
अजमेर	(रा.)	26 27	74 42	−31 12
अटारी	(पं.)	31 36	74 35	−31 40
अतनेर	(म.प्र.)	21 40	77 59	−18 04
अनन्तनाग	(का.)	33 44	75 10	−29 20
अनन्तपुर	(आं.)	14 42	77 36	−19 36
अनामलै	(ता.)	10 34	76 50	−22 40
अनूपगढ़	(रा.)	29 07	73 06	−37 36
अनूपशहर	(उ.प्र.)	28 22	78 16	−16 56
अबोहर	(पं.)	30 09	74 11	−33 16
अमरकंटक	(म.प्र.)	22 40	81 45	− 3 00
अमरनाथगुफा	(का.)	34 13	75 32	−27 52
अमरावती	(म.)	20 56	77 45	−19 00
अमरावती	(आं.)	16 35	80 20	− 8 40
अमरेली	(गु.)	21 36	71 18	−44 48
अमरोहा	(उ.प्र.)	28 54	78 29	−16 04
अमलापुरम्	(आं.)	16 36	82 03	− 1 48
अमलोह	(पं.)	30 37	76 14	−25 04

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अमीनगांव	(आसा.)	26 13	91 45	+37 00
अमृतसर	(पं.)	31 37	74 55	−30 20
अमेठी	(उ.प्र.)	26 08	81 50	− 2 40
अम्ब	(हि.)	31 42	76 07	−25 32
अम्बाला	(ह.)	30 21	76 52	−22 32
अम्बाह	(उ.प्र.)	26 43	78 15	−17 00
अम्बिकापुर	(छ.ग.)	23 07	83 12	+ 2 48
अयोध्या	(उ.प्र.)	26 48	82 12	− 1 12
अरकोट	(ता.)	12 54	79 20	−12 40
अरकोणम्	(ता.)	13 05	79 40	−11 20
अर्की	(हि.)	31 09	76 58	−22 08
अर्वी.	(म.)	21 00	78 18	−16 48
अरारिया	(बि.)	26 08	87 24	+19 36
अल्मोड़ा	(उ.आं.)	29 37	79 40	−11 20
अलवर	(रा.)	27 34	76 38	−23 28
अलीगंज	(उ.प्र.)	27 30	79 11	−13 16
अलीगढ़	(उ.प्र.)	27 53	78 05	−17 40
अलीपुर	(बं.)	22 32	88 20	+23 20
अलीपुर दुआर	(बं.)	26 29	89 44	+28 56
अलीबाग	(म.)	18 38	72 55	−38 20
अवनिगड्डा	(आं.)	16 03	80 59	− 6 04
अशोकनगर	(म.प्र.)	24 33	77 43	−19 08
अहमदनगर	(म.)	19 05	74 44	−31 04
अहमदाबाद	(गु.)	23 03	72 40	−39 20
अहवा	(गु.)	20 44	73 41	−35 16
आगरा	(उ.प्र.)	27 11	78 01	−17 56
आजमगढ़	(उ.प्र.)	26 04	83 11	+ 2 44

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
आडोनी	(आं.)	15 38	77 16	−20 56
आदिलाबाद	(आं.)	19 40	78 31	−15 56
आनन्द	(गु.)	22 34	73 01	−37 56
आनन्दपुरसाहिब	(पं.)	31 15	76 31	−23 56
आनी	(हि.)	31 27	77 25	−20 20
आबू	(रा.)	24 40	72 45	−39 00
आरा	(बि.)	25 34	84 40	+ 8 40
आरामबाग	(बं.)	22 53	87 47	+21 08
आसनसोल	(बं.)	23 41	86 59	+17 56
आसिन्द	(रा.)	25 42	74 21	−32 36
इच्छापुरम्	(उ.)	19 10	84 43	+ 8 52
इटारसी	(म.प्र.)	22 37	77 45	−19 00
इटावा	(उ.प्र.)	26 47	79 02	−13 52
इन्दौर	(म.प्र.)	22 44	75 50	−26 40
इन्दौरा	(हि.)	32 07	75 40	−27 20
इम्फाल	(मणि.)	24 47	93 57	+45 48
इलाहाबाद	(उ.प्र.)	देखें	प्रयाग	—
ईटानगर	(अरुणा.)	27 05	93 40	+44 40
ईसागढ़	(म.प्र.)	24 50	77 53	−18 28
उखरूल	(मणि.)	25 07	94 23	+47 32
उगाला	(ह.)	30 11	76 59	−22 04
उज्जैन	(म.प्र.)	23 09	75 43	−27 08
उड़ी	(का.)	34 05	74 01	−33 56
उडुपी	(क.)	13 23	74 45	−31 00
उत्तरकाशी	(उ.आं.)	30 44	78 27	−16 12
उदयगिरि	(उ.)	19 08	84 10	+ 6 40
उदयपुर	(त्रि.)	23 32	91 29	+35 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
उदयपुर	(रा.)	24 35	73 41	−35 16	कपूरथला	(पं.)	31 23	75 23	−28 28	कालिकट	(के.)	11 15	75 46	−26 56
उन्नाव	(उ.प्र.)	26 32	80 30	− 8 00	करतारपुर	(पं.)	31 27	75 30	−28 00	कालिम्पोंग	(बं.)	27 04	88 29	+23 56
उपशी	(का.)	33 52	77 50	−18 40	कर्णप्रयाग	(उ.आं.)	30 13	79 17	−12 52	काशी	(उ.प्र.)	देखें	वाराणसी	— —
उमरकोट	(उ.)	19 39	82 18	− 0 48	करनाल	(ह.)	29 42	77 02	−21 52	कियारीघाट	(हि.)	31 00	77 05	−21 40
उरई	(उ.प्र.)	25 59	79 28	−12 08	करसोग	(हि.)	31 23	77 13	−21 08	किरकी	(म.)	18 36	73 57	−34 12
उल्हासनगर	(म.)	19 13	73 07	−37 32	कराड	(म.)	17 15	74 12	−33 12	किश्तवाड़	(का.)	33 19	75 48	−26 48
ऊटकमण्ड	(ता.)	11 24	76 44	−23 04	करूर	(ता.)	10 58	78 03	−17 48	किशनगंज	(बि.)	26 10	87 56	+21 44
ऊधमपुर	(का.)	32 54	75 06	−29 36	कालाअम्ब	(हि.)	30 30	77 13	−21 08	किशनगढ़ (अजमेर)	(रा.)	26 34	74 52	−30 32
ऊना	(हि.)	31 29	76 17	−24 52	काल्पा	(हि.)	31 32	78 15	−17 00	कीरतपुरसाहिब	(पं.)	31 11	76 34	−23 44
एकलिंगजी	(रा.)	24 43	73 46	−34 56	करीमगंज	(आसा.)	24 48	92 30	+40 00	कुड्डप्पा	(ता.)	14 28	78 50	−14 40
एटा	(उ.प्र.)	27 38	78 40	−15 20	करीमनगर	(आं.)	18 27	79 06	−13 36	कुड्डालूर	(ता.)	11 43	79 49	−10 44
एरोड	(ता.)	11 20	77 46	−18 56	करौली	(रा.)	26 30	77 01	−21 56	कुफरी	(हि.)	31 06	77 12	−21 12
एर्नाकुलम्	(के.)	10 00	76 16	−24 56	कर्नूल	(आं.)	15 50	78 05	−17 40	कुंभकोणम्	(ता.)	10 59	79 24	−12 24
एलिचपुर	(म.)	21 18	77 33	−19 48	कल्याण	(म.)	19 17	73 11	−37 16	कुमारी अन्तरीप	(ता.)	8 05	77 34	−19 44
एलुरु	(आं.)	16 43	81 09	− 5 24	कवरत्ती	(लक्ष.)	10 33	72 38	−39 28	कुम्हारहट्टी	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
एलेप्पे	(के.)	9 30	76 22	−24 32	कवार्धा	(छ.ग.)	22 00	81 15	− 5 00	कुराली	(पं.)	30 50	76 35	−23 40
एलोरा	(म.)	20 04	75 15	−29 00	कसारागोड	(के.)	12 30	75 00	−30 00	कुरुक्षेत्र	(ह.)	29 59	76 50	−22 40
ऐजावल	(मिज़ो.)	23 43	92 44	+40 56	कसौली	(हि.)	30 55	76 57	−22 12	कुल्लू	(हि.)	31 58	77 06	−21 36
ओखा	(गु.)	22 26	69 02	−53 52	काकिनाडा	(आं.)	16 56	82 13	− 1 08	कूच बिहार	(बं.)	26 19	89 26	+27 44
ओंगोल	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36	कांकेर	(म.प्र.)	20 17	81 32	− 3 52	कृष्णानगर	(बं.)	23 24	88 30	+24 00
ओरैय्या	(उ.प्र.)	26 28	79 31	−11 56	कांगड़ा	(हि.)	32 05	76 18	−24 48	केओंजरगढ़	(उ.)	21 38	85 35	+12 20
ओस्मानाबाद	(म.)	18 09	76 06	−25 36	कांचीपुरम्	(ता.)	12 50	79 44	−11 04	केन्द्रपाड़ा	(उ.)	20 30	86 25	+15 40
औट	(हि.)	31 47	77 11	−21 16	काठगोदाम	(उ.आं.)	29 16	79 32	−11 52	केदारनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 04	−13 44
औरंगाबाद	(म.)	19 52	75 22	−28 32	काठियावाड़	(गु.)	22 00	71 00	−46 00	केप कैमोरिन	(ता.)	देखें	कुमारी	अन्तरीप
कटक	(उ.)	20 26	85 56	+13 44	कादियां	(पं.)	31 49	75 23	−28 28	केसरी	(ह.)	30 14	76 54	−22 24
कटनी	(म.प्र.)	23 47	80 27	− 8 12	कानपुर	(उ.प्र.)	26 28	80 21	− 8 36	कैथल	(ह.)	29 48	76 26	−24 16
कटरा	(का.)	32 59	74 57	−30 12	कामठी (काम्पटी)	(म.)	21 12	79 16	−12 56	कैलाशहर	(त्रि.)	24 18	92 01	+38 04
कटराई	(हि.)	32 07	77 07	−21 32	कारकाल	(क.)	13 12	74 59	−30 04	कोचीन	(के.)	9 58	76 14	−25 04
कटिहार	(बि.)	25 30	87 35	+20 20	कारगिल	(का.)	34 31	76 13	−25 08	कोटकपूरा	(पं.)	30 36	74 54	−30 24
कठुआ	(का.)	32 22	75 32	−27 52	कारवाड़	(क.)	14 50	74 09	−33 24	कोटखाई	(हि.)	31 08	77 36	−19 36
कण्डाघाट	(हि.)	30 58	77 07	−21 32	कारिकाल	(पां.)	10 55	79 50	−10 40	कोटगढ़	(हि.)	31 19	77 29	−20 04
कन्नूर	(के.)	11 52	75 25	−28 20	कालका	(ह.)	30 50	76 56	−22 16	कोटा	(रा.)	25 10	75 52	−26 32
कन्नौज	(उ.प्र.)	27 04	79 55	−10 20	कालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12	कोट्टागुडम्	(आं.)	17 32	80 39	− 7 24

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कोट्टायम्	(के.)	9 34	76 31	−23 56
कोटद्वारा	(उ.आं.)	29 45	78 32	−15 52
कोंटई	(बं.)	21 50	87 48	+21 12
कोडैकनाल	(ता.)	10 14	77 29	−20 04
कोणार्क	(उ.)	19 54	86 07	+14 28
कोप्पल	(क.)	15 21	76 09	−25 24
कोयम्बटूर	(ता.)	11 00	77 00	−22 00
कोरबा	(छ.ग.)	22 22	82 42	+ 0 48
कोरापुट	(उ.)	18 48	82 41	+ 0 44
कोलकाता	(बं.)	22 34	88 24	+23 36
कोल्हापुर	(म.)	16 42	74 19	−32 44
कोलार	(क.)	13 10	78 10	−17 20
कोल्लेगाल	(क.)	12 08	77 06	−21 36
कोलेबीरा	(बि.)	22 43	84 42	+ 8 48
कोहिमा	(नागा.)	25 39	94 08	+46 32
क्विलोन	(के.)	8 54	76 38	−23 28
खजियार	(हि.)	32 32	76 04	−25 44
खड़गपुर	(बं.)	22 20	87 20	+19 20
खंडवा	(म.प्र.)	21 50	76 23	−24 28
खतौली	(उ.प्र.)	29 17	77 43	−19 08
खन्ना	(पं.)	30 42	76 13	−25 08
खम्भालिया	(गु.)	22 12	69 39	−51 24
खम्मम्	(आं.)	17 16	80 13	− 9 08
खरगोन	(म.प्र.)	21 52	75 36	−27 36
खरड़	(पं.)	30 45	76 37	−23 32
खलीलाबाद	(उ.प्र.)	26 47	83 04	+ 2 16
खुर्जा	(उ.प्र.)	28 13	77 50	−18 40
खुर्दा	(उ.)	20 10	85 38	+12 32
खेड़ा	(गु.)	22 45	72 45	−39 00
खेमकरण	(पं.)	31 08	74 34	−31 44
गगरेट	(हि.)	31 40	76 04	−25 44
गंगटोक	(सि.)	27 22	88 36	+24 24
गंजम्	(उ.)	19 28	85 05	+10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
गढ़चिराली	(म.)	20 12	80 00	−10 00
गढ़मुक्तेश्वर	(उ.प्र.)	28 48	78 06	−17 36
गढ़वा (गरवा)	(झा.खं.)	24 10	83 52	+ 5 28
गढ़शंकर	(पं.)	31 13	76 08	−25 28
गदग	(क.)	15 26	75 42	−27 12
गया	(बि.)	24 49	85 01	+10 04
गाजियाबाद	(उ.प्र.)	28 40	77 26	−20 16
गाजीपुर	(उ.प्र.)	25 35	83 34	+ 4 16
गांधीधाम	(गु.)	23 06	70 08	−49 28
गिरडीह	(झा.खं.)	24 12	86 21	+15 24
गिलगित	(का.)	35 55	74 21	−32 36
गुड़गांव	(ह.)	28 27	77 04	−21 44
गुंटकल	(आं.)	15 11	77 24	−20 24
गुंटूर	(आं.)	16 20	80 27	− 8 12
गुड़ीवाड़ा	(आं.)	16 27	81 00	− 6 00
गुडूर	(आं.)	14 10	79 51	−10 36
गुना	(म.प्र.)	24 40	77 20	−20 40
गुम्मा	(हि.)	31 06	77 28	−20 08
गुरदासपुर	(पं.)	32 02	75 27	−28 12
गुलबर्गा	(क.)	17 20	76 50	−22 40
गुलमर्ग	(का.)	34 05	74 25	−32 20
गुवाहाटी	(आसा.)	26 10	91 45	+37 00
गोइन्दवाल	(पं.)	31 22	75 08	−29 28
गोंडल	(गु.)	21 56	70 50	−46 40
गोंडा	(उ.प्र.)	27 08	82 01	− 1 56
गोधरा	(गु.)	22 49	73 40	−35 20
गोपालगंज	(बि.)	26 28	84 26	+ 7 44
गोम्पा	(का.)	35 02	77 20	−20 40
गोरखपुर	(उ.प्र.)	26 45	83 22	+ 3 28
गोरस	(म.प्र.)	25 32	76 56	−22 16
गोहाना	(ह.)	29 08	76 42	−23 12
गोंडीया	(म.)	21 26	80 14	− 9 04
ग्वालियर	(म.प्र.)	26 14	78 10	−17 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
घरौण्डा	(ह.)	29 33	76 58	−22 08
घाटल	(बं.)	22 40	87 43	+20 52
घाटसिला	(झा.खं.)	22 36	86 29	+15 56
घुमारवीं	(हि.)	31 26	76 43	−23 08
चच्योट	(हि.)	31 32	77 01	−21 56
चण्डीगढ़	(यू.टी.)	30 45	76 50	−22 40
चण्डीमन्दिर कैंट	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
चन्दननगर	(बं.)	22 51	88 21	+23 24
चन्दौसी	(उ.प्र.)	28 27	78 46	−14 56
चन्द्रपुर	(म.)	19 57	79 18	−12 48
चम्बा	(हि.)	32 34	76 08	−25 28
चमौली	(उ.आं.)	30 24	79 21	−12 36
चरखी दादरी	(ह.)	28 37	76 18	−24 48
चामुण्डा जी	(हि.)	32 07	76 23	−24 28
चायल	(हि.)	30 59	77 12	−21 12
चास	(झा.खं.)	23 38	86 10	+14 40
चिक मंगलूर	(क.)	13 19	75 47	−26 52
चिंगलपुट	(ता.)	12 42	80 01	− 9 56
चित्तरंजन	(बं.)	23 52	86 52	+17 28
चित्तूर	(आं.)	13 12	79 07	−13 32
चितौड़गढ़	(रा.)	24 54	74 40	−31 20
चित्रदुर्ग	(क.)	14 14	76 24	−24 24
चित्रौद	(गु.)	23 25	70 42	−47 12
चिदम्बरम्	(ता.)	11 25	79 42	−11 12
चिन्तपूरणी	(हि.)	31 49	76 07	−25 32
चिनसुरा	(बं.)	22 53	88 25	+23 40
चिरगांव	(उ.प्र.)	25 35	78 49	−14 44
चिराला	(आं.)	15 50	80 21	− 8 36
चुंगतास	(का.)	35 37	78 37	−15 32
चुनार	(उ.प्र.)	25 08	82 56	+ 1 44
चुशुल	(का.)	33 34	78 38	−15 28
चूड़चांदपुर	(मणि.)	24 19	93 40	+44 40
चूरू	(रा.)	28 19	75 01	−29 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
चेन्नई	(ता.)	देखें	मद्रास	–	जालन्धर	(पं.)	31 19	75 34	−27 44	टुण्डला	(उ.प्र.)	27 12	78 17	−16 52
चेरापूंजी	(मे.)	25 17	91 42	+36 48	जालेश्वर	(उ.)	21 48	87 14	+18 56	टोंक	(रा.)	26 11	75 50	−26 40
चौपाल	(हि.)	30 57	77 36	−19 36	जालोर	(रा.)	25 22	72 38	−39 28	टोडा रायसिंह	(रा.)	26 00	75 29	−28 04
छतरपुर	(उ.)	19 24	85 00	+10 00	जालौन	(उ.प्र.)	26 09	79 21	−12 36	टोहाना	(ह.)	29 42	75 54	−26 24
छतरपुर	(म.प्र.)	24 54	79 38	−11 28	ज़िरो	(अरुणा.)	27 32	93 47	+45 08	ट्रावनकोर	(के.)	9 00	77 00	−22 00
छपरा	(बि.)	25 47	84 45	+ 9 00	जींद	(ह.)	29 19	76 19	−24 44	ठयोग	(हि.)	31 07	77 21	−20 36
छिंदवाड़ा	(म.प्र.)	22 03	78 58	−14 08	ज़ीरा	(पं.)	30 58	74 59	−30 04	डगशई	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
छिब्रामऊ	(उ.प्र.)	27 09	79 31	−11 56	जुब्बल	(हि.)	31 07	77 39	−19 14	डबवाली	(पं.)	29 58	74 45	−31 00
छोटा उदयपुर	(गु.)	22 19	74 01	−33 56	जूनागढ़	(गु.)	21 32	70 34	−47 44	डमटाल	(हि.)	32 12	75 40	−27 20
जगदलपुर	(छ.ग.)	19 05	82 04	− 1 44	जेतपुर	(गु)	21 43	70 42	−47 12	डलहौज़ी	(हि.)	32 32	75 59	−26 04
जगराव	(पं.)	30 47	75 29	−28 04	जैतों	(पं.)	30 28	74 53	−30 28	डामन	(डा.)	20 25	72 53	−38 28
जगाधरी	(ह.)	30 10	77 18	−20 48	जैसलमेर	(रा)	26 55	70 54	−46 24	डायमंड हार्बर	(बं.)	22 12	88 12	+22 48
जंगीपुर	(बं.)	24 28	88 04	+22 16	जोगिन्द्रनगर	(हि.)	31 59	76 46	−22 56	डालटनगंज	(झा.खं.)	24 02	84 04	+ 6 16
जण्डयाला	(पं.)	31 36	75 03	−29 48	जोधपुर	(रा.)	26 18	73 04	−37 44	डिगबोई	(आसा.)	27 22	95 40	+52 40
जतोग	(हि.)	31 06	77 07	−21 32	जोरहाट	(आसा.)	26 45	94 12	+46 48	डिंडीगुल	(क.)	10 22	78 00	−18 00
जनगांव	(आं.प्र.)	17 44	79 10	−13 20	जौनपुर	(उ.प्र.)	25 44	82 41	+ 0 44	डिबाई	(उ.प्र.)	28 13	78 15	−17 00
जबलपुर	(म.प्र.)	23 10	79 59	−10 04	ज्वालाजी	(हि.)	31 53	76 22	−24 32	डिब्रूगढ़	(आसा.)	27 29	94 56	+49 44
जम्बूसार	(गु.)	22 00	72 50	−38 40	ज्वालामुखी	(हि.)	31 53	76 19	−24 44	डीडवाना	(रा.)	27 24	74 34	−31 44
जमशेदपुर	(बि.)	22 50	86 10	+14 40	झज्जर	(ह.)	28 37	76 39	−23 24	डीसा	(गु.)	24 14	72 13	−41 08
जमालपुर	(बि.)	25 19	86 32	+16 08	झाबुआ	(म.प्र.)	22 45	74 38	−31 28	डूंगरपुर	(रा.)	23 50	73 43	−35 08
जमुई	(बि.)	24 55	86 13	+14 52	झरिया	(झा.खं.)	23 45	86 24	+15 36	डोडा	(का.)	33 10	75 35	−27 40
जम्मू	(का.)	32 43	74 54	−30 24	झांसी	(उ.प्र.)	25 26	78 35	−15 40	ड्यू	(डा.)	20 42	71 01	−45 56
जयपुर	(आसा.)	27 14	95 24	+51 36	झालरापाटन	(रा.)	24 33	76 10	−25 20	ढुबरी	(आसा.)	26 02	89 58	+29 52
जयपुर	(रा.)	26 55	75 52	−26 32	झालावाड़	(रा.)	24 36	76 09	−25 24	तंजावर	(ता.)	10 46	79 09	−13 24
जलगांव	(म.)	21 03	75 39	−27 24	झुंझुनू	(रा.)	28 06	75 25	−28 20	तपा	(पं.)	30 19	75 21	−28 36
जलपाईगुड़ी	(बं.)	26 31	88 44	+24 56	टांडा उरमुर	(पं.)	31 42	75 38	−27 28	तरनतारन	(पं.)	31 27	74 58	−30 08
जलालाबाद	(उ.प्र.)	27 43	79 40	−11 20	टिकापाड़ा डैम	(उ.)	20 32	84 56	+ 9 44	तवांग	(अरुणा.)	27 35	91 52	+37 28
जशपुरनगर	(छ.ग.)	22 53	84 12	+ 6 48	टिथवाल	(का.)	34 24	73 47	−34 52	तांगला	(आसा.)	26 40	91 57	+37 48
जसरा	(उ.प्र.)	25 17	81 48	− 2 48	टिहरी	(उ.आं.)	30 20	78 30	−16 00	ताड़पत्री	(आं.)	14 55	77 59	−18 04
जसरोटा	(का.)	32 29	75 27	−28 12	टीकमगढ़	(म.प्र.)	24 45	78 53	−14 28	तामलुक	(बं.)	22 18	87 55	+21 40
जाखल	(ह.)	29 48	75 50	−26 40	टीहरा सुजानपुर	(हि.)	31 51	76 32	−23 52	ताम्बरम्	(ता.)	12 55	80 07	− 9 32
जामनगर	(गु.)	22 28	70 06	−49 36	टुंकुर	(क.)	13 21	77 05	−21 40	तारकेश्वर	(बं.)	22 54	88 02	+22 08
जालना	(म.)	19 50	75 58	−26 08	टूटीकोरिन	(ता.)	8 40	78 11	−17 16	तारा	(गु.)	24 00	71 51	−42 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
तारादेवी	(हि.)	31 03	77 08	−21 28
तिनसुकिया	(आसा.)	27 28	95 20	+51 20
तिरुवनन्तपुरम्	(के.)	8 30	76 58	−22 08
तिरुपति	(आं.)	13 39	79 25	−12 20
तिरुप्पर	(क.)	11 05	77 20	−20 40
तिरुवन्नामलै	(ता.)	12 13	79 04	−13 44
तुर्रा	(मे.)	25 30	90 13	+30 52
तेजपुर	(आसा.)	26 38	92 49	+41 16
तेनाली	(आं.)	16 13	80 36	− 7 36
तेरुनेलवेली	(ता.)	8 45	77 43	−19 08
त्रिचुरापल्ली	(ता.)	10 49	78 41	−15 16
त्रिचूर	(के.)	10 32	76 14	−25 04
त्रिवेन्द्रम्	(के.)	देखें —	तिरुवनन्तपुरम्	
थराड़	(गु.)	24 26	71 40	−43 20
थानेधार	(हि.)	31 20	77 34	−19 44
थानेसर	(ह.)	29 58	76 56	−22 16
दतिया	(म.प्र.)	25 39	78 27	−16 12
दन्तेवाड़ा	(छ.ग.)	18 52	81 22	− 4 32
दमोई	(गु.)	22 08	73 28	−36 08
दमोह	(म.प्र.)	23 50	79 29	−12 04
दरमंगा	(बि.)	26 10	85 57	+13 48
दसूहा	(पं.)	31 49	75 38	−27 28
दादरी	(ह.)	28 34	77 33	−19 48
दानापुर	(बि.)	25 38	85 05	+10 20
दार्जिलिंग	(बं.)	27 02	88 16	+23 04
दावनगेरे	(क.)	14 30	75 52	−26 32
दिल्ली	(यू.टी.)	28 38	77 12	−21 12
दीनानगर	(पं.)	32 09	75 28	−28 08
दीमापुर	(नागा.)	25 53	93 43	+44 52
दुजाना	(ह.)	28 41	76 37	−23 32
दुमका	(झा.खं.)	24 16	87 15	+19 00
दुर्ग	(म.प्र.)	21 11	81 17	− 4 52

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
दुर्गापुर	(बं.)	23 29	87 20	+19 20
देओगढ़	(उ.)	21 32	84 46	+ 9 04
देओट सिद्ध	(हि.)	31 28	76 34	−23 44
देवघर	(बि.)	24 30	86 42	+16 48
देवप्रयाग	(उ.आं.)	30 09	78 37	−15 32
देवबन्द	(उ.प्र.)	29 42	77 41	−19 16
देवरिया	(उ.प्र.)	26 31	83 47	+ 5 08
देवलाली	(म.)	19 58	73 52	−34 32
देवास	(म.प्र.)	22 58	76 06	−25 36
देहरा गोपीपुर	(हि.)	31 54	76 13	−25 08
देहरादून	(उ.आं.)	30 19	78 02	−17 52
देहरी	(बि.)	24 52	84 11	+ 6 44
दोराहा मण्डी	(पं.)	30 49	76 02	−25 52
दौसा	(रा.)	26 51	76 21	−24 36
द्रास	(का.)	34 27	75 46	−26 56
द्वारिका	(गु.)	22 14	69 02	−53 52
धनबाद	(झा.खं.)	23 47	86 30	+16 00
धनुष्कोडी	(ता.)	9 12	79 25	−12 20
धमतरी	(छ.ग.)	20 42	81 34	− 3 44
धर्मजयगढ़	(म.प्र.)	22 28	83 13	+ 2 52
धर्मपुर	(हि.)	30 53	77 02	−21 52
धर्मशाला	(हि.)	32 16	76 23	−24 28
धांगधरा	(गु.)	22 59	71 29	−44 04
धार	(म.प्र.)	22 35	75 20	−28 40
धारवाड़	(क.)	15 30	75 04	−29 44
धुले	(म.)	20 58	74 47	−30 52
धेन कानाल	(उ.)	20 40	85 39	+12 36
धौलपुर	(रा.)	26 42	77 53	−18 28
नईहाटी	(बं.)	22 57	88 25	+23 40
नकोदर	(पं.)	31 07	75 29	−28 04
नगर	(हि.)	32 07	77 08	−21 28
नगरोटा बगवां	(हि.)	32 06	76 22	−24 32
नजीबाबाद	(उ.प्र.)	29 38	78 20	−16 40

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
नडियाद	(गु.)	22 42	72 55	−38 20
नन्दापुर	(उ.)	18 32	82 52	+ 1 28
नन्दुरबार	(म.)	21 22	74 15	−33 00
नयागढ़	(उ.)	20 10	85 08	+10 32
नरवाणा	(ह.)	29 37	76 07	−25 32
नरसिंहपुरा	(उ.)	20 28	85 08	+10 32
नरेन्द्रनगर	(उ.आं.)	30 10	78 20	−16 40
नरैना	(रा.)	26 50	74 11	−33 16
नवद्वीप	(बं.)	23 25	88 22	+23 28
नवरंगपुर	(उ.)	19 15	82 39	+ 0 36
नवलगढ़	(रा.)	27 51	75 18	−28 48
नवसारी	(गु.)	20 52	72 56	−38 16
नवांशहर	(पं.)	31 07	76 08	−25 28
नसीराबाद	(रा.)	26 18	74 46	−30 56
नागापट्टनम्	(ता.)	10 45	79 50	−10 40
नागपुर	(म.)	21 10	79 10	−13 20
नागरकोयल	(ता.)	8 10	77 26	−20 16
नागौर	(रा.)	27 11	73 44	−35 04
नाचना	(रा.)	27 29	71 45	−43 00
नाथद्वारा	(रा.)	24 56	73 50	−34 40
नान्देड़	(म.)	19 11	77 21	−20 36
नानपाड़ा	(उ.प्र.)	27 52	81 30	− 4 00
नान्दोड़	(गु.)	21 52	73 32	−35 52
नाभा	(पं.)	30 22	76 08	−25 28
नारकण्डा	(हि.)	31 16	77 27	−20 12
नारनौल	(ह.)	28 03	76 14	−25 04
नारायणगढ़	(ह.)	30 29	77 08	−21 28
नालगोंडा	(आं.)	17 04	79 15	−13 00
नालन्दा	(बि.)	25 07	85 25	+11 40
नालागढ़	(हि.)	31 03	76 42	−23 12
नालिया	(गु.)	23 19	68 51	−54 36
नासिक	(म.)	20 00	73 52	−34 32
नाहन	(हि.)	30 33	77 21	−20 36

169
अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
निज़ामाबाद	(आं.)	18 40	78 07	−17 40
निम्बहेड़ा	(रा.)	24 37	74 45	−31 00
निरमण्ड	(हि.)	31 27	77 34	−19 44
नीमच	(म.प्र.)	24 27	74 52	−30 32
नीलगिरि	(उ.)	21 29	86 49	+17 16
नीलोखेड़ी	(ह.)	29 51	76 55	−22 20
नूरपुर	(हि.)	32 18	75 54	−26 24
नूरपुरबेदी	(पं.)	31 09	76 29	−24 04
नैनवा	(रा.)	25 45	75 57	−26 12
नैनीताल	(उ.आं.)	29 23	79 27	−12 12
नैल्लूर	(आं.)	14 29	80 00	−10 00
नोखामण्डी	(रा.)	27 35	73 29	−36 04
नोंगस्टोइन	(मे.)	25 31	91 16	+35 04
नोहर	(रा.)	29 11	74 46	−30 56
नौशहरा	(का.)	33 10	74 15	−33 00
पचपदरा	(रा.)	25 55	72 21	−40 36
पंचकूला	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
पंचमढ़ी	(म.प्र.)	22 28	78 26	−16 16
पंजिम	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40
पटना	(बि.)	25 37	85 13	+10 52
पटियाला	(पं.)	30 20	76 25	−24 20
पट्टी	(पं.)	31 17	74 51	−30 36
पटौदी	(ह.)	28 18	76 48	−22 48
पठानकोट	(पं.)	32 17	75 42	−27 12
पंढरपुर	(म.)	17 42	75 24	−28 24
पन्ना	(म.प्र.)	24 44	80 14	− 9 04
परमानी	(म.)	19 16	76 51	−22 36
पराकसम	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36
पलवल	(ह.)	28 09	77 20	−20 40
पहलगाम	(का.)	34 01	75 20	−28 40
पाकौर	(झा.खं.)	24 38	87 54	+21 36
पाटन	(गु.)	23 50	72 09	−41 24
पाटनगढ़	(उ.)	20 43	83 09	+ 2 36

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
पाठलगांव	(म.प्र.)	22 34	83 28	+ 3 52
पाण्डिचेरी	(पां.)	11 58	79 54	−10 24
पणजी	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40
पानीपत	(ह.)	29 23	77 00	−22 00
पापड़हांडी	(उ.)	19 22	82 34	+ 0 16
पालनपुर	(गु.)	24 12	72 29	−40 04
पालमपुर	(हि.)	32 07	76 33	−23 48
पालिताणा	(गु.)	21 30	71 50	−42 40
पाली	(रा.)	25 46	73 20	−36 40
पालयंकोट्टै	(ता.)	8 42	77 46	−18 56
पांवटा साहिब	(हि.)	30 27	77 37	−19 32
पासीघाट	(अरुणा.)	28 05	95 20	+51 20
पिठोरागढ़	(उ.आं.)	29 35	80 13	− 9 08
पिपली	(ह.)	29 58	76 53	−22 28
पिहोवा	(ह.)	29 57	76 37	−23 32
पीलीभीत	(उ.प्र.)	28 38	79 48	−10 48
पुंछ	(का.)	33 51	74 06	−33 36
पुट्टापर्त्ती	(आं.)	14 15	77 45	−19 00
पुदुक्कोट्टै	(ता.)	10 23	78 49	−14 44
पुरनिया	(बि.)	25 49	87 31	+20 04
पुरी	(उ.)	19 48	85 52	+13 28
पुरुलिया	(बं.)	23 20	86 22	+15 28
पुष्कर	(रा.)	26 30	74 33	−31 48
पूना	(म.)	18 34	73 53	−34 28
पोरबन्दर	(गु.)	21 40	69 36	−51 36
पोर्टब्लेयर	(अं.नि.)	11 41	92 43	+40 52
पोलाची	(ता.)	10 38	77 00	−22 00
पौड़ी	(उ.आं.)	30 09	78 47	−14 52
प्रतापगढ़	(उ.प्र.)	25 50	81 59	− 2 04
प्रतापगढ़	(म.प्र.)	24 02	74 47	−30 52
प्रयाग	(उ.प्र.)	25 28	81 54	− 2 24
प्रोद्दातूर	(ता.)	14 45	78 35	−15 40
फगवाड़ा	(पं.)	31 14	75 46	−26 56

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
फतेहपुर	(उ.प्र.)	25 56	80 52	− 6 32
फतेहपुर सीकरी	(उ.प्र.)	27 06	77 40	−19 20
फतेहाबाद	(उ.प्र.)	27 01	78 19	−16 44
फतेहाबाद	(ह.)	29 31	75 28	−28 08
फरीदकोट	(पं.)	30 40	74 40	−31 20
फरीदाबाद	(ह.)	28 26	77 19	−20 44
फर्रुखाबाद	(उ.प्र.)	27 24	79 34	−11 44
फाज़िल्का	(पं.)	30 25	74 04	−33 44
फिरोज़पुर	(पं.)	30 55	74 40	−31 20
फिरोज़ाबाद	(उ.प्र.)	27 09	78 24	−16 24
फिल्लौर	(पं.)	31 01	75 47	−26 52
फुलेरा	(रा.)	26 52	75 16	−28 56
फूलबानी	(उ.)	20 30	84 18	+ 7 12
फैज़ाबाद	(उ.प्र.)	26 47	82 08	− 1 28
बक्सर	(बि.)	25 34	83 59	+ 5 56
बंगलौर	(क.)	13 00	77 35	−19 40
बंगा	(पं.)	31 11	75 59	−26 04
बटाला	(पं.)	31 48	75 12	−29 12
बठिण्डा	(पं.)	30 11	75 00	−30 00
बड़ानगर	(बं.)	22 38	88 22	+23 28
बड़ौदा	(गु.)	22 18	73 13	−37 08
बदायूं	(उ.प्र.)	28 03	79 07	−13 32
बद्दी	(हि.)	30 55	76 48	−22 48
बद्रीनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 29	−12 04
बनगांव	(बं.)	23 04	88 49	+25 16
बनिहाल	(का.)	33 30	75 18	−28 48
बबीना	(उ.प्र.)	25 15	78 28	−16 08
बंबई	(म.)	देखें —	मुम्बई	
बरवाला	(ह.)	29 22	75 54	−26 24
बरेली	(उ.प्र.)	28 22	79 27	−12 12
बरौनी	(बि.)	25 30	85 58	+13 52
बर्दवान	(बं.)	23 16	87 52	+21 28
बलरामपुर	(उ.प्र.)	27 26	82 11	− 1 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
बलिया	(उ.प्र.)	25 45	84 10	+ 6 40	बिलासपुर	(हि.)	31 20	76 47	−22 52	ब्यास	(पं.)	31 31	75 18	−28 48
बल्लभगढ	(ह.)	28 21	77 19	−20 44	बिलासीपाड़ा	(आसा.)	26 13	90 13	+30 52	भटिण्डा	(पं.)	देखें	बठिण्डा	(पं.)
बसीरहाट	(बं.)	22 40	88 53	+25 32	बिष्णुपुर	(बं.)	23 05	87 19	+19 16	भण्डारा	(म.)	21 10	79 41	−11 16
बस्ति	(उ.प्र.)	26 48	82 43	+ 0 52	बिहारशरीफ	(बि.)	25 11	85 32	+12 08	भदोही	(उ.प्र.)	25 25	82 34	+ 0 16
ब्रह्मकुण्ड	(आसा.)	27 52	96 23	+55 32	बीकानेर	(रा.)	28 01	73 20	−36 40	भद्रक	(उ.)	21 05	86 30	+16 00
बहराईच	(उ.प्र.)	27 35	81 36	− 3 36	बीजापुर	(क.)	16 50	75 45	−27 00	भद्रवाह	(का.)	32 59	75 43	−27 08
बागलकोट	(क.)	16 14	75 47	−26 52	बीड़	(म.)	18 59	75 46	−28 56	भद्राचलम्	(आं.)	17 42	80 53	− 6 28
बाघ	(म.प्र.)	22 22	74 49	−30 44	बीदर	(क.)	17 56	77 35	−19 40	भरतपुर	(रा.)	27 15	77 30	−20 00
बातल	(हि.)	32 22	77 36	−19 36	बुक्क पत्तनम	(आं.)	14 12	77 46	−18 56	भरमौर	(हि.)	32 27	76 32	−23 52
बांकीपुर	(बि.)	25 40	85 12	+10 48	बुढलाडा	(पं.)	29 56	75 34	−27 44	भरूच	(गु.)	21 40	72 58	−38 08
बांकुरा	(बं.)	23 15	87 04	+18 16	बुटाणा	(ह.)	29 11	76 38	−23 28	भवानीपत्तन	(उ.)	19 54	83 10	+ 2 40
बाघपत	(उ.प्र.)	28 57	77 13	−21 08	बुद्धगया	(बि.)	24 41	84 58	+ 9 52	भागलपुर	(बि.)	25 15	87 00	+18 00
बाटानगर	(बं.)	22 31	88 15	+23 00	बुरनपुर	(बं.)	23 42	86 58	+17 52	भातपाड़ा	(बं.)	22 52	88 24	+23 36
बाड़मेर	(रा.)	25 45	71 25	−44 20	बुरहानपुर	(म.प्र.)	21 18	76 14	−25 04	भादसों	(पं.)	30 31	76 15	−25 00
बांदा	(उ.प्र.)	25 29	80 20	− 8 40	बुलन्दशहर	(उ.प्र.)	28 24	77 51	−18 36	भाभर	(गु.)	24 08	71 42	−43 12
बामनघाटी	(उ.)	22 13	86 15	+15 00	बुलसार	(गु.)	20 36	72 56	−38 16	भावनगर	(गु.)	21 46	72 10	−41 20
बारपेटा	(आसा.)	26 20	91 02	+34 08	बूंदी	(रा.)	25 27	75 40	−27 20	भिंड	(म.प्र.)	26 35	78 46	−14 56
बारसी	(म.)	18 14	75 44	−27 04	बृन्दावन	(उ.प्र.)	27 33	77 44	−19 04	भिलाई	(छ.ग.)	21 13	81 26	− 4 16
बारागढ़	(उ.)	21 25	83 35	+ 4 20	बेगूसराय	(बि.)	25 25	86 08	+14 32	भिवंडी	(गु.)	19 18	73 04	−37 44
बाराबंकी	(उ.प्र.)	26 55	81 12	− 5 12	बेट्टिया	(बि.)	26 48	84 33	+ 8 12	भिवानी	(ह.)	28 48	76 08	−25 28
बारामूला	(का.)	34 12	74 20	−32 40	बेलगांव	(क.)	15 54	74 36	−31 36	भीनमाल	(रा.)	25 00	72 19	−40 44
बारासत	(बं.)	22 43	88 29	+23 56	बेला	(पं.)	30 56	76 23	−24 28	भीमावरम्	(आं.)	16 34	81 35	− 3 40
बारीपाड़ा	(उ.)	21 56	86 44	+16 56	बेला(प्रतापगढ़)	(उ.प्र.)	25 54	82 01	− 1 56	भीलवाड़ा	(रा.)	25 21	74 40	−31 20
बालाघाट	(म.प्र.)	21 48	80 11	− 9 16	बेल्लारी	(क.)	15 11	76 54	−22 24	भुज	(गु.)	23 16	69 40	−51 20
बालामऊ	(उ.प्र.)	27 15	80 23	− 8 28	बैकुण्ठपुर	(छ.ग.)	23 15	82 33	+ 0 12	भुवनेश्वर	(उ.)	20 13	85 50	+13 20
बालासौर	(उ.)	21 31	86 54	+17 36	बैजनाथ	(हि.)	32 04	76 37	−23 32	भुसावल	(म.)	21 01	75 50	−26 40
बालीपाड़ा	(आसा.)	26 09	92 09	+38 36	बैरकपुर	(बं.)	22 46	88 24	+23 36	भोपाल	(म.प्र.)	23 16	77 24	−20 24
बालूरघाट	(बं.)	25 13	88 46	+25 04	बोम्डिला	(अरुणा.)	27 19	92 25	+39 40	मऊ	(उ.प्र.)	25 17	81 23	− 4 28
बालेश्वर	(उ.)	21 31	86 59	+17 56	बोरसाद	(गु.)	22 24	72 59	−38 04	मंगलोर	(क.)	12 54	74 51	−30 36
बालोतरा	(रा.)	25 49	72 14	−41 04	बोलपुर	(बं.)	23 40	87 43	+20 52	मंगलौर	(उ.आं.)	29 48	77 52	−18 32
बांस्वाड़ा	(रा.)	23 30	74 24	−32 24	बोलानगिर	(उ.)	20 41	83 30	+ 4 00	मंगालदै	(आसा.)	26 23	92 02	+38 08
बिजनौर	(उ.प्र.)	29 22	78 08	−17 28	बौडा	(उ.)	20 50	84 22	+ 7 28	मछलीपट्टणम्	(आं.)	16 10	81 08	− 5 28
बिलासपुर	(छ.ग.)	22 05	82 09	− 1 24	ब्यावर	(रा.)	26 06	74 20	−32 40	मजीठा	(पं.)	31 46	74 57	−30 12

171

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
मण्डला	(म.प्र.)	22 37	80 22	− 8 32
मण्ड्या	(क.)	12 34	76 55	−22 20
मण्डी	(हि.)	31 43	76 58	−22 08
मणिकर्ण	(हि.)	32 02	77 21	−20 36
मथुरा	(उ.प्र.)	27 30	77 41	−19 16
मदुरै	(ता.)	9 58	78 10	−17 20
मद्रास	(ता.)	13 05	80 18	− 8 48
मधुपुर	(झा.खं.)	24 16	86 39	+16 36
मधुबनी	(बि.)	26 22	86 05	+14 20
मधेपुरा	(बि.)	25 55	86 47	+17 08
मनाली	(हि.)	32 16	77 10	−21 20
मन्दसौर	(म.प्र.)	24 05	75 06	−29 36
मन्सूरी	(उ.आं.)	30 27	78 07	−17 32
मनसादेवी	(ह.)	30 43	76 51	−22 36
मनीमाजरा	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
मलोट	(पं.)	30 13	74 29	−32 04
मवाना	(उ.प्र.)	29 06	77 55	−18 20
महबूबनगर	(आं.)	16 44	77 59	−18 04
महवा	(रा.)	27 03	76 56	−22 16
महाबलिपुरम्	(ता.)	12 37	80 12	− 9 12
महाबलेश्वर	(गु.)	17 58	73 43	−35 08
महुआ	(गु.)	21 05	71 48	−42 48
महेन्द्रगढ़	(ह.)	28 17	76 09	−25 24
महेसाणा	(गु.)	23 37	72 28	−40 08
माछीवाड़ा	(पं.)	30 55	76 11	−25 16
मांगरोल	(गु.)	21 07	70 08	−49 28
माण्डवी (कच्छ)	(गु.)	22 50	69 28	−52 08
मानसा	(पं.)	29 59	75 23	−28 28
मायूरम्	(ता.)	11 08	79 40	−11 20
मारवाड़ जं.	(रा.)	25 43	73 36	−35 36
मालदा	(बं.)	25 05	88 09	+22 36
मालेगांव(नासिक)	(म.)	20 32	74 38	−31 28
मालेरकोटला	(पं.)	30 31	75 52	−26 32

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
माहे	(पां.)	11 42	75 32	−27 52
मिदनापुर	(बं.)	22 25	87 21	+19 24
मिराज	(म.)	16 51	74 42	−31 12
मिर्जापुर	(उ.प्र.)	25 09	82 35	+ 0 20
मीरपुर	(का.)	33 32	73 51	−34 36
मुक्तसर	(पं.)	30 29	74 31	−31 56
मुकेरियां	(पं.)	31 57	75 37	−27 32
मुगलसराय	(उ.प्र.)	25 18	83 07	+ 2 28
मुंगेर	(बि.)	25 23	86 30	+16 00
मुजफ्फरनगर	(उ.प्र.)	29 28	77 41	−19 16
मुजफ्फरपुर	(बि.)	26 07	85 27	+11 48
मुजफ्फराबाद	(का.)	34 23	73 30	−36 00
मुद्रा	(म.प्र.)	24 43	77 35	−19 40
मुन्दरा	(गु.)	22 50	69 48	−50 48
मुम्बई	(म.)	19 00	72 54	−38 24
मुरवाड़ा	(म.प्र.)	23 51	80 22	− 8 32
मुरादाबाद	(उ.प्र.)	28 50	78 47	−14 52
मुरी	(झा.खं.)	23 51	82 34	+ 0 16
मुलाना	(ह.)	30 17	77 03	−21 48
मुर्शिदाबाद	(बं.)	24 11	88 16	+23 04
मेतूर	(ता.)	11 50	77 51	−18 36
मेढ़क	(आं.)	18 03	78 15	−17 00
मेरठ	(उ.प्र.)	28 59	77 42	−19 12
मेलघाट	(म.)	21 44	77 12	−21 12
मैनपुरी	(उ.प्र.)	27 14	79 01	−13 56
मैसूर	(क.)	12 18	76 37	−23 32
मैहर	(म.प्र.)	24 16	80 45	− 7 00
मोकोक चुंग	(नागा.)	26 19	94 32	+48 08
मोगा	(पं.)	30 48	75 10	−29 20
मोतीहारी	(बि.)	26 40	84 57	+ 9 48
मोरवी	(गु.)	22 50	70 50	−46 40
मोरार	(म.प्र.)	26 13	78 14	−17 04
मोरिण्डा	(पं.)	30 48	76 30	−24 00

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
मोरेना (मुरैना)	(म.प्र.)	26 23	78 04	−17 44
मोहनिया	(बि.)	25 11	83 37	+ 4 28
मोहाना	(म.)	25 54	77 45	−19 00
मोहाली	(पं.)	30 43	76 42	−23 12
यनम्	(पां.)	16 44	82 13	− 1 08
यमुनानगर	(ह.)	30 07	77 18	−20 48
यवतमाल	(म.)	20 24	78 08	−17 28
योल	(हि.)	32 11	76 23	−24 28
रक्सौल	(बि.)	26 58	84 51	+ 9 24
रंगिया	(आसा.)	26 28	91 35	+36 20
रतलाम	(म.प्र.)	23 21	75 07	−29 32
रतनगढ़	(रा.)	28 05	74 39	−31 24
रत्नागिरि	(म.)	17 00	73 22	−36 32
राऊरकेला	(उ.)	22 15	84 52	+ 9 28
रांची	(झा.खं.)	23 23	85 23	+11 32
राजकोट	(गु.)	22 18	70 53	−46 28
राजगढ़	(म.प्र.)	24 01	76 45	−23 00
राजनन्दगांव	(छ.ग.)	21 05	81 05	− 5 40
राजपालैयम्	(ता.)	9 27	77 34	−19 44
राजपुरा	(पं.)	30 29	76 36	−23 36
राजमहल	(झा.खं.)	25 03	87 53	+21 32
राजमहेन्द्री	(आं.)	17 05	81 48	− 2 48
राजुला	(गु.)	21 01	71 26	−44 16
राजौरी	(का.)	33 22	74 17	−32 52
रादौर	(ह.)	30 01	77 08	−21 28
राधनपुर	(गु.)	23 52	71 36	−43 36
रानाघाट	(बं.)	23 11	88 35	+24 20
रानीखेत	(उ.आं.)	29 39	79 25	−12 20
रापर	(गु.)	23 33	70 38	−47 28
राबर्ट्सगंज	(उ.प्र.)	24 42	83 04	+ 2 16
रामनाथपुरम्	(ता.)	9 23	78 53	−14 28
रामपुर	(उ.प्र.)	28 49	79 02	−13 52
रामबन	(का.)	33 15	75 15	−29 00

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
रामपुरबुशहर	(हि.)	31 27	77 38	−19 28	लुम्डिंग	(आसा.)	25 46	93 10	+42 40	शाहदरा	(दिल्ली)	28 41	77 17	−20 52
रामपुराफूल	(पं.)	30 17	75 14	−29 04	लूनावाड़ा	(गु.)	23 08	73 37	−35 32	शाहपुर	(हि.)	32 12	76 10	−25 20
रामानुजगंज	(छ.ग.)	23 48	83 42	+ 4 48	लूनी	(रा.)	26 00	73 00	−38 00	शाहाबाद	(ह.)	30 10	76 52	−22 32
रामेश्वरम्	(ता.)	9 18	79 19	−12 44	लेह	(का.)	34 09	77 35	−19 40	शाहाबाद	(उ.प्र.)	27 39	79 57	−10 12
रायकोट	(पं.)	30 39	75 36	−27 36	लैंस डाऊन	(उ.आं.)	29 50	78 41	−15 16	शिकोहाबाद	(उ.प्र.)	27 06	78 36	−15 36
रायगढ़	(छ.ग.)	21 54	83 26	+ 3 44	लोहारू	(ह.)	28 27	75 49	−26 44	शिमला	(हि.)	31 06	77 10	−21 20
रायचूर	(क.)	16 15	77 20	−20 40	वर्धा	(म.)	20 42	78 40	−15 20	शिमोग	(क.)	13 56	75 34	−27 44
रायपुर	(उ.प्र.)	30 19	78 06	−17 36	वलपरै	(ता.)	10 22	76 58	−22 08	शिलांग	(मे.)	25 36	91 53	+37 32
रायपुर	(छ.ग.)	21 15	81 41	− 3 16	वल्लभीपुर	(गु.)	20 52	71 58	−42 08	शिवपुरी	(म.प्र.)	25 26	77 40	−19 20
रायबरेली	(उ.प्र.)	26 14	81 16	− 4 56	वलसाड़	(गु.)	20 40	72 55	−38 20	शिवसागर	(आसा.)	26 58	94 39	+48 36
रायसिंहनगर	(रा.)	29 32	73 27	−36 12	वारंगल	(आं.)	18 00	79 35	−11 40	शिवहार (शिवविहार)	(बि.)	26 35	85 18	+11 12
रायसेन	(म.प्र.)	23 18	77 47	−18 52	वाल्टेअर	(आं.)	17 47	83 22	+ 3 28	शिवाकाशी	(ता.)	9 26	77 50	−18 40
रियांग	(अरुणा.)	27 32	92 55	+41 40	वाराणसी	(उ.प्र.)	25 20	83 00	+ 2 00	शेखपुरा	(बि.)	25 09	85 53	+13 32
रिवालसर	(हि.)	31 38	76 50	−22 40	विजयनगर	(क.)	15 20	76 30	−24 00	शैलम्	(आं.)	16 02	78 56	−14 16
रीवां	(म.प्र.)	24 31	81 19	− 4 44	विजयपुरी	(आं.)	16 52	79 35	−11 40	शोलापुर	(म.)	17 43	75 56	−26 16
रुड़की	(उ.आं.)	29 52	77 53	−18 28	विजयवाड़ा	(आं.)	16 31	80 39	− 7 24	श्योपुर	(म.प्र.)	25 40	76 40	−23 20
रुद्रप्रयाग	(उ.आं.)	30 16	78 59	−14 04	विदिशा	(म.प्र.)	23 32	77 50	−18 40	श्रीकाकुलम्	(आं.)	18 19	84 00	+ 6 00
रिवाड़ी	(ह.)	28 12	76 40	−23 20	विरामग्राम	(गु.)	23 08	72 04	−41 44	श्रीकालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12
रोन्दू	(का.)	35 37	75 06	−29 36	विरुदुनगर	(ता.)	9 36	77 58	−18 08	श्रीगंगानगर	(रा.)	29 49	73 50	−34 40
रोपड़	(पं.)	30 57	76 32	−23 52	विल्लुपुरम्	(ता.)	11 56	79 29	−12 04	श्रीनगर	(उ.आं.)	30 13	78 47	−14 52
रोहड़ू	(हि.)	31 13	77 45	−19 00	विशाखापट्टनम्	(आं.)	17 42	83 18	+ 3 12	श्रीनगर	(का.)	34 07	74 50	−30 40
रोहतक	(ह.)	28 54	76 38	−23 28	विसनगर	(गु.)	23 41	72 36	−39 36	श्रीमाधोपुर	(रा.)	27 25	75 32	−27 52
लक्सर	(उ.आं.)	29 48	78 02	−17 52	वेंकटपलम्	(उ.)	18 05	81 40	− 3 20	श्रीरंगम्	(ता.)	10 52	78 40	−15 20
लखनऊ	(उ.प्र.)	26 51	80 55	− 6 20	वेरावल	(गु.)	20 53	70 28	−48 08	संगरूर	(पं.)	30 12	75 53	−26 28
लखपत	(गु.)	23 49	68 47	−54 52	वेल्लूर	(ता.)	12 56	79 09	−13 24	संगारेड्डी पेठ	(आं.)	17 37	78 04	−17 44
लखीमपुर	(उ.प्र.)	27 57	80 49	− 6 44	वैष्णोदेवी	(का.)	33 02	74 57	−30 12	सढौरा	(हि.)	30 23	77 13	−21 08
लखीसराय	(बि.)	25 12	86 06	+14 24	व्यारा	(गु.)	21 09	73 28	−36 08	सतना	(म.प्र.)	24 34	80 55	− 6 20
ललितपुर	(उ.प्र.)	24 41	78 25	−15 20	शहडोल	(म.प्र.)	23 20	81 22	− 4 32	सतारा	(म.)	17 49	74 05	−33 40
लाटूर	(म.)	18 24	76 34	−23 44	शाजापुर	(म.प्र.)	23 26	76 18	−24 48	सदरा	(गु.)	23 20	72 48	−38 48
लाडवा	(ह.)	29 59	77 05	−21 40	शान्ति निकेतन	(बं.)	23 40	87 42	+20 48	सदिया	(अरुणा.)	27 48	95 38	+52 32
लालसोत	(रा.)	26 34	76 23	−24 28	शान्तिपुर	(बं.)	23 15	88 26	+23 44	सनौर	(प.)	30 18	76 28	−24 08
लिम्बड़ी	(गु.)	22 36	71 48	−42 48	शामली	(उ.प्र.)	29 27	77 19	−20 44	सपाटू	(हि.)	30 59	76 59	−22 04
लुधियाना	(पं.)	30 55	75 54	−26 24	शाहजहांपुर	(उ.प्र.)	27 53	79 55	−10 20	समराला	(पं.)	30 51	76 11	−25 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
समाना	(पं.)	30 09	76 12	−25 12
समस्तीपुर	(बि.)	25 55	85 50	+13 20
सम्बलपुर	(उ.)	21 28	84 01	+ 6 04
सरदारशहर	(रा.)	28 27	74 30	−32 00
सरहिंद	(पं.)	30 38	76 22	−24 32
सलीम	(म.)	11 39	78 12	−17 12
सवाई माधोपुर	(रा.)	25 58	76 25	−24 20
सहरसा	(बि.)	25 55	86 35	+16 20
सहसवां	(उ.प्र.)	28 05	78 45	−15 00
सहारनपुर	(उ.प्र.)	29 58	77 33	−19 48
सागर	(म.प्र.)	23 50	78 50	−14 40
सांगला	(हि.)	31 29	78 12	−17 12
सांगली	(म.)	16 55	74 37	−31 32
सांगानेर	(रा.)	26 49	75 49	−26 44
सांचोर	(रा.)	24 40	71 50	−42 40
साम्बा	(का.)	32 32	75 08	−29 28
सांभर	(रा.)	26 54	75 13	−29 08
सारनाथ	(उ.प्र.)	25 24	83 01	+ 2 04
सासनी	(उ.प्र.)	27 43	78 05	−17 40
सासाराम	(बि.)	24 57	84 03	+ 6 12
साहिबगंज	(झा.खं.)	25 13	87 40	+20 40
सिऊनी	(म.प्र.)	22 06	79 35	−11 40
सिऊरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सिकती	(बि.)	26 24	87 33	+20 12
सिकन्दराबाद	(आं.)	17 27	78 30	−16 00
सिकन्दराराऊ	(उ.प्र.)	27 42	78 27	−16 12
सिन्दरी	(रा.)	25 33	71 55	−42 20
सिन्दरी	(बं.)	23 45	86 42	+16 48
सिवाना	(रा.)	25 36	72 27	−40 12
सिरसा	(ह.)	29 32	75 04	−29 44
सिरोही	(रा.)	24 53	72 54	−38 24
सिल्चर	(आसा.)	24 49	92 47	+41 08
सिल्वासा	(दा.ना.)	20 17	72 59	−38 04
सिलीगुड़ी	(बं.)	26 42	88 26	+23 44
सिहोरा	(म.प्र.)	23 29	80 07	− 9 32
सिंहभूम	(झा.खं.)	22 24	85 30	+12 00
सीकर	(रा.)	27 36	75 09	−29 24
सीतापुर	(उ.प्र.)	27 34	80 41	− 7 16
सीतामढ़ी	(बि.)	26 35	85 32	+12 08
सीवां	(बि.)	26 12	84 23	+ 7 32
सुईगांव	(गु.)	24 10	71 23	−44 28
सुन्दरगढ़	(उ.)	22 07	84 02	+ 6 08
सुन्दरनगर	(हि.)	31 32	76 53	−22 28
सुनाम	(पं.)	30 08	75 48	−26 48
सुपौल	(बि.)	26 07	86 36	+16 24
सुरेन्द्रनगर	(गु.)	22 42	71 41	−43 16
सुल्तानपुर	(उ.प्र.)	26 16	82 04	− 1 44
सूरत	(गु.)	21 10	72 50	−38 40
सूरतगढ़	(रा.)	29 19	73 57	−34 12
सूरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सेरमपुर	(बं.)	22 45	88 21	+23 24
सैंज	(हि.)	31 49	77 19	−20 44
सोजत	(रा.)	25 56	73 42	−35 12
सोनगढ़	(गु.)	21 42	71 58	−42 08
सोनपुर	(बि.)	25 42	85 12	+10 48
सोनपुर	(उ.)	20 50	83 58	+ 5 52
सोनहाट	(छ.ग.)	23 29	82 30	0 00
सोनामर्ग	(का.)	34 18	75 18	−28 48
सोनीपत	(ह.)	28 59	77 01	−21 56
सोमनाथ	(गु.)	21 04	70 26	−48 16
सोलन	(हि.)	30 55	77 09	−21 24
हजारीबाग़	(झा.खं.)	23 59	85 25	+11 40
हडसर	(हि.)	32 22	76 33	−23 48
हनुमानगढ़	(रा.)	29 35	74 21	−32 36
हफलोंग	(आसा.)	25 11	93 02	+42 08
हमीरपुर	(उ.प्र.)	25 57	80 09	− 9 24
हमीरपुर	(हि.)	31 41	76 31	−23 56
हरदोई	(उ.प्र.)	27 25	80 07	− 9 32
हरसीपत्तन	(हि.)	31 53	76 39	−23 24
हरिद्वार	(उ.आं.)	29 58	78 13	−17 08
हरिपुर	(हि.)	31 59	76 05	−25 40
हरिपुरधार	(हि.)	30 52	77 28	−20 08
हरीकेपत्तन	(पं.)	31 30	74 57	−30 12
हल्द्वानी	(उ.आं.)	29 13	79 31	−11 56
हल्दिया	(बं.)	22 02	88 05	+22 20
हास्सन	(क.)	13 01	76 03	−25 48
हसनपुर	(ह.)	27 58	77 30	−20 00
हसनपुर	(उ.प्र.)	28 43	78 17	−16 52
हाजीपुर	(बि.)	25 43	85 14	+10 56
हाटकोटी	(हि.)	31 08	77 45	−19 00
हाथरस	(उ.प्र.)	27 36	78 03	−17 48
हापुड़	(उ.प्र.)	28 43	77 47	−18 52
हालीशहर	(बं.)	22 56	88 25	+23 40
हावड़ा	(बं.)	22 36	88 19	+23 16
हावेरी	(क.)	14 46	75 26	−28 16
हासपेट	(क.)	15 16	76 26	−24 16
हांसी	(हि.)	32 27	77 50	−18 40
हांसी	(ह.)	29 06	76 00	−26 00
हिंगनघाट	(म.)	20 32	78 52	−14 32
हिम्मतनगर	(गु.)	23 35	73 00	−38 00
हिसार	(ह.)	29 10	75 46	−26 56
हीराकुण्ड डैम	(उ.)	21 31	83 57	+ 5 48
हुबली	(क.)	15 20	75 14	−29 04
हैदराबाद	(आं.)	17 22	78 30	−16 00
होडल	(ह.)	27 53	77 22	−20 32
होशंगाबाद	(म.प्र.)	22 46	77 45	−19 00
होशियारपुर	(पं.)	31 32	75 57	−26 12
होसुर	(ता.)	12 45	77 51	−18 36

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन अं. क.	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर) मि. से.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*Abadan	Iran	52 30 पू.	30 20 उ.	48 16 पू.	−16 56	+02 00
*Abbottabad	Pakistan	75 00 पू.	34 09 उ.	73 13 पू.	−07 08	+00 30
Abu Dhabi	U.A.E.	60 00 पू.	24 28 उ.	54 22 पू.	−22 32	+01 30
Accra	Ghana	00 00	05 33 उ.	00 13 प.	−00 52	+05 30
Addis Ababa	Ethiopia	45 00 पू.	09 02 उ.	38 44 पू.	−25 04	+02 30
Aden	Yemen	45 00 पू.	12 45 उ.	45 04 पू.	+00 16	+02 30
Akyab	Myanmar	97 30 पू.	20 09 उ.	92 55 पू.	−18 20	−01 00
*Alexandria	Egypt	30 00 पू.	31 12 उ.	29 53 पू.	−00 28	+03 30
Algiers	Algeria	15 00 पू.	36 47 उ.	03 03 पू.	−47 48	+04 30
*Amman	Jordan	30 00 पू.	31 57 उ.	35 56 पू.	+23 44	+03 30
*Amsterdam	Netherlands	15 00 पू.	52 22 उ.	04 53 पू.	−40 28	+04 30
*Angmagssalik	Greenland	45 00 प.	65 36 उ.	37 41 प.	+29 16	+08 30
*Ankara	Turkey	30 00 पू.	39 57 उ.	32 54 पू.	+11 36	+03 30
Anuradhapur	Sri Lanka	82 30 पू.	08 21 उ.	80 23 पू.	−08 28	00 00
*Athens	Greece	30 00 पू.	37 54 उ.	23 43 पू.	−25 08	+03 30
*Auckland	New Zealand	180 00 पू.	36 52 द.	174 42 पू.	−21 12	−06 30
*Austin (Texas)	U.S.A.	90 00 प.	30 16 उ.	97 44 प.	−30 56	+11 30
Bacolod	Phill.	120 00 पू.	10 40 उ.	122 57 पू.	+11 48	−02 30
*Baghdad	Iraq	45 00 पू.	33 20 उ.	44 27 पू.	−02 12	+02 30
*Bahawalpur	Pakistan	75 00 पू.	29 59 उ.	73 16 पू.	−06 56	+00 30
Bangkok	Thailand	105 00 पू.	13 44 उ.	100 30 पू.	−18 00	−01 30
Batticoloa	Sri Lanka	82 30 पू.	07 43 उ.	81 45 पू.	−03 00	00 00
Beijing	China	120 00 पू.	39 55 उ.	116 25 पू.	−14 20	−02 30
*Beirut	Lebanon	30 00 पू.	33 50 उ.	35 25 पू.	+21 40	+03 30
*Belgrade	Yugoslavia	15 00 पू.	44 50 उ.	20 30 पू.	+22 00	+04 30
*Berlin	Germany	15 00 पू.	52 32 उ.	13 25 पू.	−06 20	+04 30
*Berne	Switzerland	15 00 पू.	46 57 उ.	07 26 पू.	−30 16	+04 30
Biratnagar	Nepal	86 15 पू.	26 29 उ.	87 17 पू.	+04 08	−00 15

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन अं. क.	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर) मि. से.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*Birmingham	England	00 00	52 30 उ.	01 50 प.	−07 20	+05 30
Bogota	Colombia	75 00 प.	04 36 उ.	74 05 प.	+03 40	+10 30
Bogra	Bangladesh	90 00 पू.	24 51 उ.	89 22 पू.	−02 32	−00 30
*Bonn	Germany	15 00 पू.	50 44 उ.	07 04 पू.	−31 44	+04 30
*Boston	U.S.A.	75 00 प.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	+10 30
*Brasilia	Brazil	45 00 प.	15 47 द.	47 55 प.	−11 40	+08 30
*Bratislava	Slovakia	15 00 पू.	48 09 उ.	17 07 पू.	+08 28	+04 30
Brazzaville	Congo	15 00 पू.	04 16 द.	15 17 पू.	+01 08	+04 30
*Brisbane	Australia	150 00पू.	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	−04 30
*Brussels	Belgium	15 00 पू.	50 52 उ.	04 22 पू.	−42 32	+04 30
*Bucharest	Romania	30 00 पू.	44 25 उ.	26 07 पू.	−15 32	+03 30
*Budapest	Hungary	15 00 पू.	47 29 उ.	19 03 पू.	+16 12	+04 30
Buenos Aires	Argentina	45 00 प.	34 35 द.	58 27 प.	−53 48	+08 30
*Buffalo (N.Y.)	U.S.A.	75 00 प.	42 55 उ.	78 50 प.	−15 20	+10 30
*Cairo	Egypt	30 00 पू.	30 03 उ.	31 14 पू.	+04 56	+03 30
*California City	U.S.A.	120 00प.	35 07 उ.	117 59प.	+08 04	+13 30
*Canberra	Australia	150 00पू.	35 19 द.	149 08पू.	−03 28	−04 30
*Cape Town	South Africa	30 00 पू.	33 56 द.	18 22 पू.	−46 32	+03 30
Caracas	Venezuela	60 00 प.	10 30 उ.	66 56 प.	−39 44	+09 30
*Charlotti Amali	Virgin Is (U.K.)	60 00 प.	18 21 उ.	64 56 प.	−19 44	+09 30
*Chicago	U.S.A.	90 00 प.	41 53 उ.	87 38 प.	+09 28	+11 30
Chittagong	Bangla.	90 00 पू.	22 20 उ.	91 50 पू.	+07 20	−00 30
*Cleveland (Ohio)	U.S.A.	75 00 प.	41 30 उ.	81 41 प.	−26 44	+10 30
Colombo	Sri Lanka	82 30 पू.	06 56 उ.	79 51 पू.	−10 36	00 00
Comilla	Bangladesa	90 00 पू.	23 27 उ.	91 12 पू.	+04 48	−00 30
*Copenhagen	Denmark	15 00 पू.	55 40 उ.	12 35 पू.	−09 40	+04 30
Dakar	Senegal	00 00	14 40 उ.	17 26 प.	−69 44	+05 30
*Dallas (Texas)	U.S.A.	90 00 प.	32 47 उ.	96 48 प.	−27 12	+11 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer Time) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं मि.
Damascus	Syria	30 00 पू.	33 30 उ.	36 18 पू.	+25 12	+03 30
Dar-es-salaam	Tanzania	45 00 पू.	06 50 द.	39 17 पू.	−22 52	+02 30
Detroit (Mich.)	U.S.A.	75 00 प.	42 23 उ.	83 05 प.	−32 20	+10 30
Dhaka	Bangla.	90 00 पू.	23 43 उ.	90 25 पू.	+01 40	−00 30
Djibouti	Djibouti	45 00 पू.	11 36 उ.	43 09 पू.	−07 24	+02 30
Dinajpur	Bangla.	90 00 पू.	25 38 उ.	88 38 पू.	−05 28	−00 30
Doha	Qatar	45 00 पू.	25 17 उ.	51 32 पू.	+26 08	+02 30
*Dublin	Ireland	00 00	53 20 उ.	06 15 प.	−25 00	+05 30
Dubai	U.A.E.	60 00 पू.	25 18 उ.	55 18 पू.	−18 48	+01 30
*Edinburgh	Scotland	00 00	55 56 उ.	03 11 प.	−12 44	+05 30
*Edmonton	Canada	105 00 प.	53 33 उ.	113 28 प.	−33 52	+12 30
*Florida City	U.S.A.	75 00 प.	25 27 उ.	80 29 प.	−21 56	+10 30
*Frankfurt	Germany	15 00 पू.	50 06 उ.	08 40 पू.	−25 20	+04 30
Fukuoka	Japan	135 00 पू.	35 34 उ.	137 27 पू.	+09 48	−03 30
Galle	Sri Lanka	82 30 पू.	06 02 उ.	80 13 पू.	−09 08	00 00
Guatemala	Guatemala	90 00 प.	14 38 उ.	90 31 प.	−02 04	+11 30
*Geneva	Switzerland	15 00 पू.	46 12 उ.	06 09 पू.	−35 24	+04 30
*Glasgow	Scotland	00 00	55 52 उ.	04 15 प.	−17 00	+05 30
*Greenwich	England	00 00	51 29 उ.	00 00	00 00	+05 30
Guiyang	China	120 00 पू.	26 35 उ.	106 43 पू.	−53 08	−02 30
*Hamilton	Canada	75 00 प.	43 15 उ.	79 50 प.	−19 20	+10 30
Hanoi	North Vietnam	105 00 पू.	21 02 उ.	105 52 पू.	+03 28	−01 30
*Havana	Cuba	75 00 प.	23 08 उ.	82 22 प.	−29 28	+10 30
*Heidelberg	Germany	15 00 पू.	49 24 उ.	08 43 पू.	−25 08	+04 30
*Helsinki	Finland	30 00 पू.	60 09 उ.	24 57 पू.	−20 12	+03 30
Hiroshima	Japan	135 00 पू.	34 24 उ.	132 27 पू.	−10 12	−03 30
Hongkong	China	120 00 पू.	22 18 उ.	114 10 पू.	−23 20	−02 30
Honolulu	Hawai Island	150 00 प.	21 19 उ.	157 52 प.	−31 28	+15 30

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं मि.
*Houston (Texas)	U.S.A.	90 00 प.	29 45 उ.	95 21 प.	−21 24	+11 30
*Hyderabad	Pakistan	75 00 पू.	25 22 उ.	68 22 पू.	−26 32	+00 30
*Isfahan	Iran	52 30 पू.	32 40 उ.	51 38 पू.	−03 28	+02 00
*Islamabad	Pakistan	75 00 पू.	33 42 उ.	73 10 पू.	−07 20	+00 30
*Istanbul	Turkey	30 00 पू.	41 00 उ.	29 00 पू.	−04 00	+03 30
Jaffna	Sri Lanka	82 30 पू.	09 40 उ.	80 00 पू.	−10 00	00 00
Jakarta	Indonesia	105 00 पू.	06 10 द.	106 49 पू.	+07 16	−01 30
Jamaica	West Indies	75 00 प.	18 00 उ.	76 48 प.	−07 12	+10 30
*Jerusalem	Israel	30 00 पू.	31 46 उ.	35 14 पू.	+20 56	+03 30
Jessore	Bangla	90 00 पू.	23 10 उ.	89 13 पू.	−03 08	−00 30
Johannesburg	South Africa	30 00 पू.	26 15 द.	28 00 पू.	−08 00	+03 30
Kabul	Afghanistan	67 30 पू.	34 33 उ.	69 12 पू.	+06 48	+01 00
Kampala	Uganda	45 00 पू.	00 19 उ.	32 25 पू.	−50 20	+02 30
Kandahar	Afghanistan	67 30 पू.	31 32 उ.	65 30 पू.	−08 00	+01 00
Kandy	SriLanka	82 30 पू.	07 18 उ.	80 38 पू.	−07 28	00 00
*Karachi	Pakistan	75 00 पू.	24 [illegible] उ.	67 03 पू.	−31 48	+00 30
Kathmandu	Nepal	86 15 पू.	27 43	85 19 पू.	−03 44	−00 15
Khartoum	Sudan	30 00 पू.	15 35 उ.	[illegible] 35 पू.	+10 20	+03 30
Kingston	*Jamaica*	75 00 प.	18 00 उ.	76 48 प.	−07 12	+10 30
Khulna	Bangla.	90 00 पू.	22 48 उ.	89 33 पू.	−01 48	−00 30
Kuala Lumpur	Malaysia	120 00 पू.	03 09 उ.	101 43 पू.	−73 08	−02 30
Kushtia	Bangla.	90 00 पू.	23 55 उ.	89 07 पू.	−03 32	−00 30
Kuwait	Kuwait	45 00 पू.	29 20 उ.	47 59 पू.	+11 56	+02 30
Kwangchow	China	120 00 पू.	23 06 उ.	113 16 पू.	−26 56	−02 30
Lagos	Nigeria	15 00 पू.	06 25 उ.	03 27 पू.	−46 12	+04 30
*Leeds	England	00 00	53 50 उ.	01 35 प.	−06 20	+05 30
*Leipzig	Germany	15 00 पू.	51 20 उ.	12 23 पू.	−10 28	+04 30
*Leningrad	Russia	30 00 पू.	59 57 उ.	30 18 पू.	+01 12	+03 30

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय(*Summer Time*) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (अं. क.)	अक्षांश (अं. क.)	रेखांश (अं. क.)	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर) (मि. से.)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर (घं मि.)
Leopoldville	Zaire	15 00 पू.	04 18 द.	15 18 पू.	+01 12	+04 30
Lhasa	China	120 00 पू.	29 40 उ.	91 07 पू.	−115 32	−02 30
Lima	Peru	75 00 प.	12 02 द.	77 02 प.	−08 08	+10 30
*Lisbon	Portugal	00 00	38 43 उ.	09 11 प.	−36 44	+05 30
*Liverpool	England	00 00	53 25 उ.	02 55 प.	−11 40	+05 30
*London	England	00 00	51 32 उ.	00 05 प.	−00 20	+05 30
*Long Beach, Ca.	U.S.A.	120 00 प.	33 46 उ.	118 12 प.	+07 12	+13 30
*Los Angeles	U.S.A.	120 00 प.	34 03 उ.	118 14 प.	+07 04	+13 30
Luanda	Angola	15 00 पू.	08 48 द.	13 14 पू.	−07 04	+04 30
Lusaka	Zambia	30 00 पू.	15 25 द.	28 17 पू.	−06 52	+03 30
*Luxembourg	Luxembourg	15 00 पू.	49 36 उ.	06 09 पू.	−35 24	+04 30
*Madrid	Spain	15 00 पू.	40 25 उ.	03 41 प.	−74 44	+04 30
*Manchester	England	00 00	53 30 उ.	02 15 प.	−09 00	+05 30
Mandlay	Myanmar	97 30 पू.	22 00 उ.	96 05 पू.	−05 40	−01 00
Manila	Philippines	120 00 पू.	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	−02 30
Mecca	SaudiArabia	45 00 पू.	21 25 उ.	39 54 पू.	−20 24	+02 30
*Melbourne	Australia	150 00 पू.	37 50 द.	144 59 पू.	−20 04	−04 30
*Mexico City	Mexico	90 00 प.	19 26 उ.	99 10 प.	−36 40	+11 30
*Milan	Italy	15 00 पू.	45 28 उ.	09 11 पू.	−23 16	+04 30
Mombasa	Kenya	45 00 पू.	04 00 द	39 40 पू.	−21 20	+02 30
*Montreal	Canada	75 00 प.	45 30 उ.	73 34 प.	+05 44	+10 30
*Moscow	Russia	45 00 पू.	55 45 उ.	37 34 पू.	−29 44	+02 30
Moulmein	Myanmar	97 30 पू.	16 30 उ.	97 38 पू.	+00 32	−01 00
*Multan	Pakistan	75 00 पू.	30 11 उ.	71 29 पू.	−14 04	+00 30
*Munich	Germany	15 00 पू.	48 08 उ.	11 35 पू.	−13 40	+04 30
Muscat	Oman	60 00 पू.	23 37 उ.	58 35 पू.	−05 40	+01 30
Mymensingh	Bangla.	90 00 पू.	24 45 उ.	90 24 पू.	+01 36	−00 30
Nagoya	Japan	135 00 पू.	35 10 उ.	136 55 पू.	+07 40	−03 30
Nairobi	Kenya	45 00 पू.	01 18 द.	36 52 पू.	−32 32	+02 30
*New Castle	England	00 00	52 27 उ.	03 06 प.	−12 24	+05 30
*New Orleans	U.S.A.	90 00 प.	29 57 उ.	90 04 प.	−00 16	+11 30
*New York	U.S.A.	75 00 प.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	+10 30
Noakhali	Bangla.	90 00 पू.	22 49 उ	91 06 पू.	+04 24	−00 30
*Nuuk	Greenland	45 00 प.	64 11 उ.	51 44 प.	+26 56	+08 30
Osaka	Japan	135 00 पू.	34 40 उ.	135 30 पू.	+02 00	−03 30
*Oslo	Norway	15 00 पू.	59 54 उ.	10 45 पू.	−17 00	+04 30
*Ottawa	Canada	75 00 प.	45 24 उ.	75 43 प.	−02 52	+10 30
Pabna	Bangla.	90 00 पू.	24 00 उ.	89 15 पू.	−03 00	−00 30
Paramaribo	Suriname	45 00 प.	05 50 उ.	55 10 प.	−40 40	+08 30
*Paris	France	15 00 पू.	48 50 उ.	02 20 पू.	−50 40	+04 30
Pegu	Myanmar	97 30 पू.	17 20 उ.	96 29 पू.	−04 04	−01 00
Peking	China	देखें – Beijing		—	—	—
Penang	Malaysia	120 00 पू.	05 25 उ.	100 20 पू.	−78 40	−02 30
Perth	Australia	120 00 पू.	32 00 द.	115 50 पू.	−16 40	−02 30
*Peshawar	Pakistan	75 00 पू.	34 01 उ.	71 33 पू.	−13 48	+00 30
*Philadelphia, Pa.	U.S.A.	75 00 प.	39 58 उ.	75 10 प.	−00 40	+10 30
Phnom penh	Cambodia	105 00 पू.	11 35 उ.	104 57 पू.	−00 12	−01 30
*Pittsburgh, Pa.	U.S.A.	75 00 प.	40 25 उ.	79 55 प.	−19 40	+10 30
Port Elizabeth	South Africa	30 00 पू.	33 58 द.	25 40 पू.	−17 20	+03 30
Port Louis	Mauritius	60 00 पू.	20 10 द.	57 30 पू.	−10 00	+01 30
Port of Spain	Trininad and Tobago	60 00 प.	10 39 उ.	61 31 प.	−06 04	+09 30
*Prague	Czecho.	15 00 पू.	50 05 उ.	14 24 पू.	−02 24	+04 30
Prome	Myanmar	97 30 पू.	18 47 उ.	95 15 पू.	−09 00	−01 00
Punakha	Bhutan	90 00 पू.	27 42 उ.	89 52 पू.	−00 32	−00 30
*Quetta	Pakistan	75 00 पू.	30 12 उ.	67 00 पू.	−32 00	+00 30
Rabat*	Morocco	00 00	34 02 उ.	06 51 प.	−27 24	+05 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer Time) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं मि.
Rangoon	Myanmar	97 30 पू.	16 47 उ.	96 10 पू.	−05 20	−01 00
Rangpur	Bangla.	90 00 पू.	25 45 उ.	89 15 पू.	−03 00	−00 30
Rajshahi	Bangla.	90 00 पू.	24 22 उ.	88 36 पू.	−05 36	−00 30
*Rawalpindi	Pakistan	75 00 पू.	33 36 उ.	73 04 पू.	−07 44	+00 30
Riyadh	Saudi Arabia	45 00 पू.	24 39 उ.	46 41 पू.	+06 44	+02 30
Road Town	Virgin Is. (U.K.)	60 00 प.	18 27 उ.	64 37 प.	−18 28	+09 30
*Rome	Italy	15 00 पू.	41 55 उ.	12 27 पू.	−10 12	+04 30
Saigon	SouthVietnam	105 00 पू.	10 49 उ.	106 41 पू.	+06 44	−01 30
Salisbury (Harare)	Zimbabwe	30 00 पू.	17 50 द.	31 03 पू.	+04 12	+03 30
San'a'	Yeman	45 00 पू.	15 23 उ.	44 12 पू.	−03 12	+02 30
*San Diego, Ca.	U.S.A.	120 00 प.	32 43 उ.	117 10 प.	+10 40	+13 30
*San Francisco	U.S.A.	120 00 प.	37 48 उ.	122 25 प.	−09 40	+13 30
*San Juan	Puetro Rico	60 00 प.	18 28 उ.	66 07 प.	−24 28	+09 30
Santiago	Chile	60 0C प.	33 27 द.	70 40 प.	−42 40	+09 30
*Seattle	U.S.A	120 00 प.	47 41 उ.	122 15 प	−09 00	+13 30
Seoul	South Korea	135 00 पू.	37 31 उ.	126 58 पू.	−32 08	−03 30
Shanghai	China	120 00 पू.	31 14 उ.	121 28 पू.	+05 52	−02 30
Sharjah	U.A.E.	60 00 पू.	25 20 उ.	55 24 पू.	−18 24	+01 30
Singapore	Singapore	120 00 पू.	01 17 उ.	103 54 पू.	−64 24	−02 30
*Sofia	Bulgaria	30 00 पू.	42 41 उ.	23 21 पू.	−26 36	+03 30
*Stanley	Falkland Is.	60 00 प.	51 42 द.	57 51 प.	+08 36	+09 30
*Stockholm	Sweden	15 00 पू.	59 20 उ.	18 00 पू.	+12 00	+04 30
*Sukkur	Pakistan	75 00 पू.	27 42 उ.	68 52 पू.	−24 32	+00 30
Suva	Fiji	180 00 पू.	18 08 द.	178 25 पू.	−06 20	−06 30
*Sydney	Australia	150 00 पू.	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	−04 30
Sylhet	Bangla.	90 00 पू.	24 54 उ.	91 52 पू.	+07 28	−00 30
Taipei	Taiwan	120 00 पू.	25 03 उ.	121 30 पू.	+06 00	−02 30
Taskent	Uzbekistan	75 00 पू.	41 20 उ.	69 18 पू.	−22 48	+00 30
*Tehran	Iran	52 30 पू.	35 41 उ.	51 26 पू.	−04 16	+02 00
Thimpu	Bhutan	90 00 पू.	27 28 उ.	89 39 पू.	−01 24	−00 30
*Tirane	Albania	15 00 पू.	41 20 उ.	19 50 पू.	+19 20	+04 30
Tokyo	Japan	135 00 पू.	35 40 उ.	139 46 पू.	+19 04	−03 30
*Toronto	Canada	75 00 प.	43 39 उ.	79 23 प.	−17 32	+10 30
Trincomalee	Sri Lanka	82 30 पू.	08 31 उ.	81 14 पू.	−05 04	00 00
Tripoli	Libya	30 00 पू.	32 54 उ.	13 15 पू.	−67 00	+03 30
*Ulan Bator	Mongolia	105 00 पू.	47 55 उ.	106 53 पू.	+07 32	−01 30
*Vancouver	Canada	120 00 प.	49 16 उ.	123 07 प	−12 28	+13 30
Vatican City	Vatican City	15 00 पू.	41 54 उ.	12 27 पू.	−10 12	+04 30
*Vienna	Austria	15 00 पू.	48 12 उ.	16 22 पू.	+05 28	+04 30
*Volgograd	Russia	45 00 पू.	48 44 उ.	44 25 पू.	−02 20	+02 30
Wakayama	Japan	135 00 पू.	34 13 उ.	135 11 पू.	+00 44	−03 30
*Warsaw	Poland	15 00 पू.	52 12 उ.	21 00 पू.	+24 00	+04 30
*Washington (D.C.)	U.S.A.	75 00 प.	38 55 उ.	77 04 प.	−08 16	+10 30
*Wellington	New Zealand	180 00 पू.	41 16 द.	174 47 पू.	−20 52	−06 30
Yokohama	Japan	135 00 पू.	35 27 उ.	139 39 पू.	+18 36	−03 30
Zanzibar	Tanzania	45 00 पू.	06 10 द.	39 11 पू.	−23 16	+02 30
*Zurich	Switzerland	15 00 पू.	47 23 उ.	08 32 पू.	−25 52	+04 30

** इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय(Summer Time) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।*

स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी (विश्व के लगभग सभी मुख्य देशों/कालक्षेत्रों की स्टैंडर्ड टाईम मेरिडियन्स)

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
Afghanistan	67 30 पू.	+ 01 00
*Albania	15 00 पू.	+ 04 30
Algeria	15 00 पू.	+ 04 30
Angola	15 00 पू.	+ 04 30
Argentina	45 00 प.	+ 08 30
*AUSTRALIA यह देश इन 3 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बटा है –		
(i) E.S.T. (Eastern St. Time) (इस कालक्षेत्र में Victoria, Tasmania आदि क्षेत्र आते हैं)	150 00 पू.	– 04 30
(ii) C.S.T. (Central St. Time) (इस कालक्षेत्र में South Australia, Broken Hill Area आदि आते हैं।)	142 30 पू.	– 04 00
(iii) W.S.T. (इस कालक्षेत्र में Western Australia आता है)	120 00 पू.	– 02 30
*Austria	15 00 पू.	+ 04 30
Bahrain	45 00 पू.	+ 02 30
Bangladesh	90 00 पू.	– 00 30
*Belgium	15 00 पू.	+ 04 30
Bhutan	90 00 पू.	– 00 30
Bolivia	60 00 प.	+ 09 30
*Bulgaria	30 00 पू.	+ 03 30
Burundi	30 00 पू.	+ 03 00
Cameroon	15 00 पू.	+ 04 30
*CANADA यह देश मुख्यतः इन 4 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बटा है -		
(i) E.S.T. (Eastern St. Time) इस काल-क्षेत्र में N.W. Territories और Ontario का पू. भाग पड़ता है।	75 00 प.	+ 10 30

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
(ii) C.S.T. (Central St. Time) इसमें N.W. Territories का मध्यभाग और Ontario का प. भाग पड़ता है।	90 00 प.	+ 11 30
(iii) M.S.T. (Mountain St. Time) इसमें N.W. Territories का कुछ प. भाग तथा Alberta आदि प्रान्त पड़ते हैं।	105 00 प.	+12 30
(iv) P.S.T. (Pacific St. Time) इस कालक्षेत्र में N.W. Territories का अन्तिम प. भाग तथा B.Columbia पड़ता है।	120 00 प.	+ 13 30
*Chile	60 00 प.	+ 09 30
China	120 00 पू.	– 02 30
Colombia	75 00 प.	+ 10 30
Congo	15 00 पू.	+ 04 30
*Cuba	75 00 प.	+ 10 30
Ceylon	देखें ——	Sri Lanka
Cyprus	30 00 पू.	+ 03 30
*Denmark	15 00 पू.	+ 04 30
Ecuador	75 00 प.	+ 10 30
*Egypt	30 00 पू.	+ 03 30
*England(U.K.)	00 00	+ 05 30
Ethiopia	45 00 पू.	+ 02 30
*Falkland Islands	60 00 प.	+ 09 30
Fiji	180 00 पू.	– 06 30
*Finland	30 00 पू.	+ 03 30
*France	15 00 पू.	+ 04 30
Gambia	00 00	+ 05 30
*Germany	15 00 पू.	+ 04 30
Ghana	00 00	+ 05 30
*Greece	30 00 पू.	+ 03 30

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*Guatemala	90 00 प.	+ 11 30
Honduras	90 00 प.	+ 11 30
Hong Kong	120 00 पू.	– 02 30
*Iceland	00 00	+ 05 30
India	82 30 पू.	00 00
INDONESIA, REPUBLIC OF:- यह देश छोटे-बड़े 13000 से भी अधिक द्वीपों से बना है। पहिले यह 30-30 मिनटों के अन्तर वाले छः कालक्षेत्रों में विभाजित था। अब इसे एक-एक घण्टा के अन्तर वाले इन तीन कालक्षेत्रों में विभाजित किया गया है–		
(i) Bali, Bangka, Enggano, Java, Madura एवम् Sumatra द्वीप;.........................	105 00 पू.	– 1 30
(ii) Alore, Borneo, Celebes (Sulawesi), Flores, Kabaena, Lombok, Sangihe, Talaud, Sumba, Sumbawa (Soembawa) और Timor (Timur) (द्वीपसमूह)	120 00 पू.	– 2 30
(iii) Aru, Babar, Buru, Cerem (Seram), Irian Jaya (West Irian), Larat, Maluku(Moluccas = Molukken), Schouten, Tanah Merah और Tanimbar (द्वीपसमूह)...	135 00 पू.	– 3 30

स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी (विश्व के लगभग सभी मुख्य देशों / कालक्षेत्रों की स्टैंडर्ड टाईम मेरिडियन्स)

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
	अं. क.	घं. मि.
Iran	52 30 पू.	+ 02 00
Iraq	45 00 पू.	+ 02 30
Irish Republic	00 00	+ 05 30
Israel	30 00 पू.	+ 03 30
Italy	15 00 पू.	+ 04 30
*Jamaica	75 00 प.	+ 10 30
Japan	135 00 पू.	− 03 30
*Jordan	30 00 पू.	+ 03 30
***KAZAKHSTAN** – यह देश, जो पहिले Soviet Union का भाग था, इन तीन कालक्षेत्रों में बंटा है:–		
(i) Kazakhstan (West) .	60 00 पू.	+ 01 30
(ii) Kazakhstan (Central)..	75 00 पू.	+ 0 30
(iii) Kazakhstan (East) ..	90 00 पू.	− 0 30
Kumpuchia	105 00 पू.	− 01 30
Kenya	45 00 पू.	+ 02 30
Korea	135 00 पू.	− 03 30
Kuwait	45 00 पू.	+ 02 30
Laos	105 00 पू.	− 01 30
*Lebanon	30 00 पू.	+ 03 30
Libya	30 00 पू.	+ 03 30
Macao	120 00 पू.	− 02 30
Madagascar	45 00 पू.	+ 02 30
Malaysia	120 00 पू.	− 02 30
Maldive Islands	75 00 पू.	+ 00 30
Mauritius	60 00 पू.	+ 01 30

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
	अं. क.	घं. मि.
*KYRGHIZSTAN (KIRGIZSTAN= KIRGHIZIA= KIRGIZIA) (यह पहिले Soviet Union का भाग था)......	0 00 पू.	+ 0 30
*MEXICO यह देष इन 3 कालक्षेत्रों में बंटा है:–		
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) (इस कालक्षेत्र में Compeche, Chiapas आदि प्रान्त आते हैं)	90 00 प.	+ 11 30
(ii) **C.S.T.** (Central St. Time) (इस कालक्षेत्र मे Baja California, Sur, Nayarit आदि पड़ते हैं।)	105 00 प.	+ 12 30
(iii) **W.S.T.** (Western St Time) (इस कालक्षेत्र में Baja California- Norte आते हैं)	120 00 प.	+ 13 30
Morocco	00 00	+ 05 30
Mozambique	30 00 पू.	+ 03 30
Myanmar (Burma)	97 30 पू.	− 01 00
Nepal	86 15 पू.	− 00 15
Netherlands	15 00 पू.	+ 04 30
*New Zealand	180 00 पू.	− 06 30
Nicaragua	90 00 प.	+ 11 30
Nigeria	15 00 पू.	+ 04 30
*Northern Ireland (U.K.)	00 00	+ 05 30
*Norway	15 00 पू.	+ 04 30
Oman (Muscat and Oman)	60 00 पू.	+ 01 30
*Pakistan	75 00 पू.	+ 00 30
Panama	75 00 प	+ 10 30

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
	अं. क.	घं. मि.
*Paraguay	60 00 प.	+ 09 30
Peru	75 00 प.	+ 10 30
Philippines	120 00 पू.	− 02 30
*Poland	15 00 पू.	+ 04 30
*Portugal	00 00	+ 05 30
Qatar	45 00 पू.	+ 02 30
Rwanda	30 00 पू.	+ 03 30
Romania	30 00 पू.	+ 03 30
*RUSSIA यह महादेश, जो Soviet Union का मूल घटक राष्ट्र रहा है, यह इन ग्यारह कालक्षेत्रों में बँटा है–		
(i) कालक्षेत्र Kaliningrad area	30 00 पू.	+ 3 30
(ii) कालक्षेत्र Novaja Zemla, European RSFSR (पश्चिमी भाग)....	45 00 पू.	+ 2 30
(iii) कालक्षेत्र European RSFSR (मध्य भाग)..............	60 00 पू.	+ 1 30
(iv) कालक्षेत्र European RSFSR (पू. भाग), Asian RSFSR (प. भाग)	75 00 पू.	+ 0 30
(v) कालक्षेत्र Asian RSFSR ...	90 00 पू.	− 0 30
(vi) कालक्षेत्र Asian RSFSR, Severnaja Zemla	105 00 पू.	− 1 30
(vii) कालक्षेत्र Asian RSFSR ...	120 00 पू.	− 2 30
(viii) कालक्षेत्र Asian RSFSR...	135 00 पू.	− 3 30
(ix) कालक्षेत्र Asian RSFSR, Novosibirskije Ostrova	150 00 पू.	− 4 30
(x) कालक्षेत्र Asian RSFSR (पू. भाग) , Ostrov Sachalin, Kuril Islands	165 00 पू.	− 5 30
(xi) कालक्षेत्र Asian RSFSR (अन्तिम पूर्वी छोर), Komandorskije Ostrova...	180 00 पू.	− 6 30

स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी

(विश्व के लगभग सभी मुख्य देशों/कालक्षेत्रों की स्टैंडर्ड टाईम मेरिडियन्स)

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
	अं. क.	घं. मि.
Saudi Arabia	45 00 पू	+ 02 30
*Scotland (U.K.)	00 00	+ 05 30
Singapore	120 00 पू	− 02 30
South Africa	30 00 पू	+ 03 30
*Spain	15 00 पू	+ 04 30
Sri Lanka	82 30 पू	00 00
Sudan	30 00 पू	+ 03 30
Suriname	45 00 प.	+ 08 30
*Sweden	15 00 पू	+ 04 30
*Switzerland	15 00 पू	+ 04 30
*Syria	30 00 पू	+ 03 30
TAJIKISTAN (TADZHIKISTAN) (यह पहिले Soviet Union का भाग था)......	75 00 पू	+ 00 30
Taiwan	120 00 पू	− 02 30
Tanzania	45 00 पू	+ 02 30
Thailand	105 00 पू	− 01 30
Trinidad andTobago	60 00 प.	+ 09 30
Tunisia	15 00 पू	+ 04 30
*Turkey	30 00 पू	+ 03 30

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
	अं. क.	घं. मि.
U.A.E. (UNITED ARAB EMIRATES) .[Abu Dhabi, Ajman, Dubai, Fujairah, Ras-al-Khaimah, .Sharjah, और Umma-al-Quiwain)	60 00 पू	+ 01 30
Uganda	45 00 पू	+ 02 30
*U.K.	00 00	+ 05 30
Uruguay	45 00 प.	+ 08 30
UKRAIN यह पहिले Soviet Union का भाग था। यह इन दो कालक्षेत्रों में बँटा है–		
(i) इस कालक्षेत्र में Ukraine का प्रमुख भाग [Black और Azov Sea से घिरे दक्षिणी भाग (द्वीप) को छोड़ कर शेष पूरा भाग आता है।...........	30 00 पू	+ 03 30
(ii) इसमें Black और Azov Sea से घिरा इसका केवल दक्षिणी भाग(द्वीप) आता है।....	45 00 पू	+ 02 30
UZBEKISTAN.................. (यह पहले Soviet Union का भाग था)	75 00 पू	+ 00 30

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
	अं. क.	घं. मि.
*U.S.A. यह देश इन 4 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बंटा है :–		
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) (इस कालक्षेत्र में Delaware, Florida, Ohio आदि States पड़ती हैं।)	75 00 प.	+ 10 30
(ii) **C.S.T.** (Centrar St. Time) (इस कालक्षेत्र में Alabama, Illinois आदि States पड़ती हैं।)	90 00 प.	+ 11 30
(iii) **M.S.T.** (Mountain St. Time) (इस कालक्षेत्र में Arizona, Colorado आदि States पड़ती हैं।)	105 00 प.	+ 12 30
(iv) **P.S.T.** (Pacific St. Time) (इस कालक्षेत्र में California, Nevada आदि States पड़ती हैं।)	120 00 प.	+ 13 30
Vatican State	15 00 पू	+ 04 30
Venezuela	60 00 प.	+ 09 30
Vietnam	105 00 पू	− 01 30
*Wales(U.K.)	00 00	+ 05 30
*Yugoslavia	15 00 पू	+ 04 30
Zamibia	30 00 पू	+ 03 30
Zaire	30 00 पू	+ 03 30
Zimbabwe	30 00 पू	+ 03 30

* इन देशों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer Time) प्रचलित है। Summer Time के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक " विश्वलग्न सारणी " देखें।

धन (+) चिह्न वाले 'अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर ' का अर्थ है, कि भा. स्टैं. टा.. अभीष्ट स्थानीय (देश/कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से आगे है। इसी प्रकार ऋण (–) चिह्न वाला "अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" बतलाता है, कि भा. स्टैं. टा. अभीष्ट स्थानीय (देश/कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से पीछे है।

181 दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

वैशाख

मास	अंग्रेज़ी तारीख	वैशाख तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अप्रैल	१३	१	७ ३६	९ ३०	११ ४४	१४ ०७	१६ २७	१८ ४४	२१ ०६	२३ २६	१ ३१	३ १२	४ ३७	५ ५९
	१४	२	७ ३२	९ २६	११ ४०	१४ ०३	१६ २३	१८ ४०	२१ ०२	२३ २२	१ २७	३ ०८	४ ३३	५ ५५
	१५	३	७ २८	९ २२	११ ३७	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ५८	२३ १८	१ २३	३ ०४	४ २९	५ ५१
	१६	४	७ २४	९ १८	११ ३३	१३ ५५	१६ १५	१८ ३३	२० ५४	२३ १४	१ १९	३ ००	४ २५	५ ४७
	१७	५	७ २०	९ १४	११ २९	१३ ५१	१६ ११	१८ २९	२० ५०	२३ १०	१ १५	२ ५६	४ २१	५ ४३
	१८	६	७ १६	९ ११	११ २५	१३ ४७	१६ ०७	१८ २५	२० ४६	२३ ०६	१ ११	२ ५२	४ १७	५ ३९
	१९	७	७ १२	९ ०७	११ २१	१३ ४३	१६ ०३	१८ २१	२० ४२	२३ ०२	१ ०७	२ ४८	४ १३	५ ३५
	२०	८	७ ०८	९ ०३	११ १७	१३ ३९	१५ ५९	१८ १७	२० ३८	२२ ५८	१ ०३	२ ४४	४ ०९	५ ३१
	२१	९	७ ०४	८ ५९	११ १३	१३ ३५	१५ ५५	१८ १३	२० ३४	२२ ५४	० ५९	२ ४०	४ ०५	५ २८
	२२	१०	७ ००	८ ५५	११ ०९	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० ३०	२२ ५१	० ५५	२ ३६	४ ०१	५ २४
	२३	११	६ ५६	८ ५१	११ ०५	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० २७	२२ ४७	० ५१	२ ३२	३ ५७	५ २०
	२४	१२	६ ५२	८ ४७	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० २३	२२ ४३	० ४७	२ २८	३ ५३	५ १६
	२५	१३	६ ४८	८ ४३	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० १९	२२ ३९	० ४३	२ २४	३ ४९	५ १२
	२६	१४	६ ४४	८ ३९	१० ५३	१३ १६	१५ ३६	१७ ५३	२० १५	२२ ३५	० ३९	२ २०	३ ४५	५ ०८
	२७	१५	६ ४१	८ ३५	१० ४९	१३ १२	१५ ३२	१७ ४९	२० ११	२२ ३१	० ३५	२ १६	३ ४२	५ ०४
	२८	१६	६ ३७	८ ३१	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४५	२० ०७	२२ २७	० ३२	२ १३	३ ३८	५ ००
	२९	१७	६ ३३	८ २७	१० ४२	१३ ०४	१५ २४	१७ ४१	२० ०३	२२ २३	० २८	२ ०९	३ ३४	४ ५६
	३०	१८	६ २९	८ २३	१० ३८	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५९	२२ १९	० २४	२ ०५	३ ३०	४ ५२
मई	१	१९	६ २५	८ १९	१० ३४	१२ ५६	१५ १६	१७ ३४	१९ ५५	२२ १५	० २०	२ ०१	३ २६	४ ४८
	२	२०	६ २१	८ १६	१० ३०	१२ ५२	१५ १२	१७ ३०	१९ ५१	२२ ११	० १६	१ ५७	३ २२	४ ४४
	३	२१	६ १७	८ १२	१० २६	१२ ४८	१५ ०८	१७ २६	१९ ४७	२२ ०७	० १२	१ ५३	३ १८	४ ४०
	४	२२	६ १३	८ ०८	१० २२	१२ ४४	१५ ०४	१७ २२	१९ ४३	२२ ०३	० ०८	१ ४९	३ १४	४ ३६
	५	२३	६ ०९	८ ०४	१० १८	१२ ४०	१५ ००	१७ १८	१९ ३९	२१ ५९	० ०४	१ ४५	३ १०	४ ३२
	६	२४	६ ०५	८ ००	१० १४	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ ३५	२१ ५६	० ००	१ ४१	३ ०६	४ २९
	७	२५	६ ०१	७ ५६	१० १०	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ ३२	२१ ५२	२३ ५६	१ ३७	३ ०२	४ २५
	८	२६	५ ५७	७ ५२	१० ०६	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ २८	२१ ४८	२३ ५२	१ ३३	२ ५८	४ २१
	९	२७	५ ५३	७ ४८	१० ०२	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ २४	२१ ४४	२३ ४८	१ २९	२ ५४	४ १७
	१०	२८	५ ४९	७ ४४	९ ५८	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ २०	२१ ४०	२३ ४४	१ २५	२ ५०	४ १३
	११	२९	५ ४६	७ ४०	९ ५४	१२ १७	१४ ३६	१६ ५४	१९ १६	२१ ३६	२३ ४०	१ २१	२ ४६	४ ०९
	१२	३०	५ ४२	७ ३६	९ ५०	१२ १३	१४ ३३	१६ ५०	१९ १२	२१ ३२	२३ ३७	१ १८	२ ४३	४ ०५
	१३	३१	५ ३८	७ ३२	९ ४६	१२ ०९	१४ २९	१६ ४६	१९ ०८	२१ २८	२३ ३३	१ १४	२ ३९	४ ०१
	१४	ज्ये.१	५ ३४											

ज्येष्ठ

मास	अंग्रेज़ी तारीख	ज्येष्ठ तिथि	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मई	१४	१	७ २८	९ ४३	१२ ०५	१४ २५	१६ ४२	१९ ०४	२१ २४	२३ २९	१ १०	२ ३५	३ ५७	५ ३०
	१५	२	७ २४	९ ३९	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१९ ००	२१ २०	२३ २५	१ ०६	२ ३१	३ ५३	५ २६
	१६	३	७ २०	९ ३५	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ५६	२१ १६	२३ २१	१ ०२	२ २७	३ ४९	५ २२
	१७	४	७ १७	९ ३१	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ५२	२१ १२	२३ १७	० ५८	२ २३	३ ४५	५ १८
	१८	५	७ १३	९ २७	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ४८	२१ ०८	२३ १३	० ५४	२ १९	३ ४१	५ १४
	१९	६	७ ०९	९ २३	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ ४४	२१ ०४	२३ ०९	० ५०	२ १५	३ ३७	५ १०
	२०	७	७ ०५	९ १९	११ ४१	१४ ०१	१६ १९	१८ ४०	२१ ०१	२३ ०५	० ४६	२ ११	३ ३४	५ ०६
	२१	८	७ ०१	९ १५	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ ३६	२० ५७	२३ ०१	० ४२	२ ०७	३ ३०	५ ०२
	२२	९	६ ५७	९ ११	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ ३३	२० ५३	२२ ५७	० ३८	२ ०३	३ २६	४ ५८
	२३	१०	६ ५३	९ ०७	११ २९	१३ ४९	१६ ०७	१८ २९	२० ४९	२२ ५३	० ३४	१ ५९	३ २२	४ ५४
	२४	११	६ ४९	९ ०३	११ २५	१३ ४५	१६ ०३	१८ २५	२० ४५	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १८	४ ५०
	२५	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २१	२० ४१	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १४	४ ४७
	२६	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३८	१५ ५५	१८ १७	२० ३७	२२ ४२	० २२	१ ४८	३ १०	४ ४३
	२७	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३४	१५ ५१	१८ १३	२० ३३	२२ ३८	० १९	१ ४४	३ ०६	४ ३९
	२८	१५	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ ३०	१५ ४७	१८ ०९	२० २९	२२ ३४	० १५	१ ४०	३ ०२	४ ३५
	२९	१६	६ २९	८ ४४	११ ०६	१३ २६	१५ ४३	१८ ०५	२० २५	२२ ३०	० ११	१ ३६	२ ५८	४ ३१
	३०	१७	६ २५	८ ४०	११ ०२	१३ २२	१५ ४०	१८ ०१	२० २१	२२ २६	० ०७	१ ३२	२ ५४	४ २७
	३१	१८	६ २२	८ ३६	१० ५८	१३ १८	१५ ३६	१७ ५७	२० १७	२२ २२	० ०३	१ २८	२ ५०	४ २३
जून	१	१९	६ १८	८ ३२	१० ५४	१३ १४	१५ ३२	१७ ५३	२० १३	२२ १८	२३ ५९	१ २४	२ ४६	४ १९
	२	२०	६ १४	८ २८	१० ५०	१३ १०	१५ २८	१७ ४९	२० ०९	२२ १४	२३ ५५	१ २०	२ ४२	४ १५
	३	२१	६ १०	८ २४	१० ४६	१३ ०६	१५ २४	१७ ४५	२० ०५	२२ १०	२३ ५१	१ १६	२ ३८	४ ११
	४	२२	६ ०६	८ २०	१० ४२	१३ ०२	१५ २०	१७ ४१	२० ०२	२२ ०६	२३ ४७	१ १२	२ ३५	४ ०७
	५	२३	६ ०२	८ १६	१० ३८	१२ ५८	१५ १६	१७ ३७	१९ ५८	२२ ०२	२३ ४३	१ ०८	२ ३१	४ ०३
	६	२४	५ ५८	८ १२	१० ३४	१२ ५४	१५ १२	१७ ३४	१९ ५४	२१ ५८	२३ ३९	१ ०४	२ २७	३ ५९
	७	२५	५ ५४	८ ०८	१० ३०	१२ ५०	१५ ०८	१७ ३०	१९ ५०	२१ ५४	२३ ३५	१ ००	२ २३	३ ५५
	८	२६	५ ५०	८ ०४	१० २६	१२ ४६	१५ ०४	१७ २६	१९ ४६	२१ ५०	२३ ३१	० ५६	२ १९	३ ५१
	९	२७	५ ४६	८ ००	१० २३	१२ ४३	१५ ००	१७ २२	१९ ४२	२१ ४६	२३ २७	० ५२	२ १५	३ ४८
	१०	२८	५ ४२	७ ५६	१० १९	१२ ३९	१४ ५६	१७ १८	१९ ३८	२१ ४३	२३ २३	० ४९	२ ११	३ ४४
	११	२९	५ ३८	७ ५२	१० १५	१२ ३५	१४ ५२	१७ १४	१९ ३४	२१ ३९	२३ २०	० ४५	२ ०७	३ ४०
	१२	३०	५ ३४	७ ४९	१० ११	१२ ३१	१४ ४८	१७ १०	१९ ३०	२१ ३५	२३ १६	० ४१	२ ०३	३ ३६
	१३	३१	५ ३०	७ ४५	१० ०७	१२ २७	१४ ४५	१७ ०६	१९ २६	२१ ३१	२३ १२	० ३७	१ ५९	३ ३२
	१४	आ.१	५ २६											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

आषाढ़

मास	अंग्रेज़ी तारीख	आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जून	१४	१	७ ४२	१० ०३	१२ २३	१४ ४२	१७ ०२	१९ २२	२१ २७	२३ ०८	० ३३	१ ५५	३ २८	५ २३
	१५	२	७ ३७	९ ५९	१२ १९	१४ ३७	१६ ५८	१९ १८	२१ २३	२३ ०४	० २९	१ ५१	३ २४	५ १९
	१६	३	७ ३३	९ ५५	१२ १५	१४ ३३	१६ ५४	१९ १४	२१ १९	२३ ००	० २५	१ ४७	३ २०	५ १५
	१७	४	७ २९	९ ५१	१२ ११	१४ २९	१६ ५०	१९ १०	२१ १५	२२ ५६	० २१	१ ४३	३ १६	५ ११
	१८	५	७ २५	९ ४७	१२ ०७	१४ २५	१६ ४६	१९ ०६	२१ ११	२२ ५२	० १७	१ ३९	३ १२	५ ०७
	१९	६	७ २१	९ ४३	१२ ०३	१४ २१	१६ ४२	१९ ०३	२१ ०७	२२ ४८	० १३	१ ३६	३ ०८	५ ०३
	२०	७	७ १७	९ ३९	११ ५९	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४४	० ०९	१ ३२	३ ०४	४ ५९
	२१	८	७ १३	९ ३५	११ ५५	१४ १३	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	० ०५	१ २८	३ ००	४ ५५
	२२	९	७ ०९	९ ३१	११ ५१	१४ ०९	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	० ०१	१ २४	२ ५६	४ ५१
	२३	१०	७ ०५	९ २७	११ ४७	१४ ०५	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	१ २०	२ ५३	४ ४७
	२४	११	७ ०१	९ २४	११ ४४	१४ ०१	१६ २३	१८ ४३	२० ४८	२२ २८	२३ ५४	१ १६	२ ४९	४ ४३
	२५	१२	६ ५७	९ २०	११ ४०	१३ ५७	१६ १९	१८ ३९	२० ४४	२२ २५	२३ ५०	१ १२	२ ४५	४ ३९
	२६	१३	६ ५३	९ १६	११ ३६	१३ ५३	१६ १५	१८ ३५	२० ४०	२२ २१	२३ ४६	१ ०८	२ ४१	४ ३५
	२७	१४	६ ५०	९ १२	११ ३२	१३ ४९	१६ ११	१८ ३१	२० ३६	२२ १७	२३ ४२	१ ०४	२ ३७	४ ३१
	२८	१५	६ ४६	९ ०८	११ २८	१३ ४६	१६ ०७	१८ २७	२० ३२	२२ १३	२३ ३८	१ ००	२ ३३	४ २७
	२९	१६	६ ४२	९ ०४	११ २४	१३ ४२	१६ ०३	१८ २३	२० २८	२२ ०९	२३ ३४	० ५६	२ २९	४ २४
	३०	१७	६ ३८	९ ००	११ २०	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० २४	२२ ०५	२३ ३०	० ५२	२ २५	४ २०
जुलाई	१	१८	६ ३४	८ ५६	११ १६	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० २०	२२ ०१	२३ २६	० ४८	२ २१	४ १६
	२	१९	६ ३०	८ ५२	११ १२	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० १६	२१ ५७	२३ २२	० ४४	२ १७	४ १२
	३	२०	६ २६	८ ४८	११ ०८	१३ २६	१५ ४७	१८ ०८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	० ४१	२ १३	४ ०८
	४	२१	६ २२	८ ४४	११ ०४	१३ २२	१५ ४३	१८ ०४	२० ०८	२१ ४९	२३ १४	० ३७	२ ०९	४ ०४
	५	२२	६ १८	८ ४०	११ ००	१३ १८	१५ ४०	१८ ००	२० ०४	२१ ४५	२३ १०	० ३३	२ ०५	४ ००
	६	२३	६ १४	८ ३६	१० ५६	१३ १४	१५ ३६	१७ ५६	२० ००	२१ ४१	२३ ०६	० २९	२ ०१	३ ५६
	७	२४	६ १०	८ ३२	१० ५२	१३ १०	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५७	३ ५२
	८	२५	६ ०६	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २८	१७ ४८	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
	९	२६	६ ०२	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ २४	१७ ४४	१९ ४९	२१ २९	२२ ५५	० १७	१ ५०	३ ४४
	१०	२७	५ ५८	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ २०	१७ ४०	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	० १३	१ ४६	३ ४०
	११	२८	५ ५५	८ १७	१० ३७	१२ ५४	१५ १६	१७ ३६	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	० ०९	१ ४२	३ ३६
	१२	२९	५ ५१	८ १३	१० ३३	१२ ५०	१५ १२	१७ ३२	१९ ३७	२१ १८	२२ ४३	० ०५	१ ३८	३ ३२
	१३	३०	५ ४७	८ ०९	१० २९	१२ ४७	१५ ०८	१७ २८	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	० ०१	१ ३४	३ २९
	१४	३१	५ ४३	८ ०५	१० २५	१२ ४३	१५ ०४	१७ २४	१९ २९	२१ १०	२२ ३४	२३ ५७	१ ३०	३ २५
	१५	३२	५ ३९	८ ०१	१० २१	१२ ३९	१५ ००	१७ २०	१९ २५	२१ ०६	२२ ३१	२३ ५३	१ २६	३ २१
	१६	श्रा.	५ ३५											

श्रावण

मास	अंग्रेज़ी तारीख	श्रावण प्रविष्टे	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जुलाई	१६	१	७ ५७	१० १७	१२ ३५	१४ ५६	१७ १६	१९ २१	२१ ०२	२२ २७	२३ ४९	१ २२	३ १७	५ ३१
	१७	२	७ ५३	१० १३	१२ ३१	१४ ५२	१७ १२	१९ १७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	१ १८	३ १३	५ २७
	१८	३	७ ४९	१० ०९	१२ २७	१४ ४८	१७ ०९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	१ १४	३ ०९	५ २३
	१९	४	७ ४५	१० ०५	१२ २३	१४ ४५	१७ ०५	१९ ०९	२० ५०	२२ १५	२३ ३८	१ १०	३ ०५	५ १९
	२०	५	७ ४१	१० ०१	१२ १९	१४ ४१	१७ ०१	१९ ०५	२० ४६	२२ ११	२३ ३४	१ ०६	३ ०१	५ १५
	२१	६	७ ३७	९ ५७	१२ १५	१४ ३७	१६ ५७	१९ ०१	२० ४२	२२ ०७	२३ ३०	१ ०२	२ ५७	५ ११
	२२	७	७ ३३	९ ५३	१२ ११	१४ ३३	१६ ५३	१८ ५७	२० ३८	२२ ०३	२३ २६	० ५८	२ ५३	५ ०७
	२३	८	७ ३०	९ ५०	१२ ०७	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४९	५ ०३
	२४	९	७ २६	९ ४६	१२ ०३	१४ २५	१६ ४५	१८ ५०	२० ३०	२१ ५६	२३ १८	० ५१	२ ४५	४ ५९
	२५	१०	७ २२	९ ४२	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ४६	२० २७	२१ ५२	२३ १४	० ४७	२ ४१	४ ५६
	२६	११	७ १८	९ ३८	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४२	२० २३	२१ ४८	२३ १०	० ४३	२ ३७	४ ५२
	२७	१२	७ १४	९ ३४	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ३८	२० १९	२१ ४४	२३ ०६	० ३९	२ ३३	४ ४८
	२८	१३	७ १०	९ ३०	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३४	२० १५	२१ ४०	२३ ०२	० ३५	२ ३०	४ ४४
	२९	१४	७ ०६	९ २६	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ ३०	२० ११	२१ ३६	२२ ५८	० ३१	२ २६	४ ४०
	३०	१५	७ ०२	९ २२	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २६	२० ०७	२१ ३२	२२ ५४	० २७	२ २२	४ ३६
	३१	१६	६ ५८	९ १८	११ ३६	१३ ५७	१६ १७	१८ २२	२० ०३	२१ २८	२२ ५०	० २३	२ १८	४ ३१
अगस्त	१	१७	६ ५४	९ १४	११ ३२	१३ ५३	१६ १३	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४७	० १९	२ १४	४ २८
	२	१८	६ ५०	९ १०	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४३	० १५	२ १०	४ २४
	३	१९	६ ४६	९ ०६	११ २४	१३ ४६	१६ ०६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३९	० ११	२ ०६	४ २०
	४	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४२	१६ ०२	१८ ०६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३५	० ०७	२ ०२	४ १६
	५	२१	६ ३८	८ ५८	११ १६	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०८	२२ ३१	० ०३	१ ५८	४ १२
	६	२२	६ ३४	८ ५४	११ १२	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २७	० ००	१ ५४	४ ०८
	७	२३	६ ३१	८ ५१	११ ०८	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५५	१९ ३५	२१ ०१	२२ २३	२३ ४६	१ ५०	४ ०४
	८	२४	६ २७	८ ४७	११ ०४	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३२	२० ५७	२२ १९	२३ ४२	१ ४६	४ ००
	९	२५	६ २३	८ ४३	११ ००	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २८	२० ५३	२२ १५	२३ ४८	१ ४२	३ ५७
	१०	२६	६ १९	८ ३९	१० ५६	१३ १८	१५ ३८	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५३
	११	२७	६ १५	८ ३५	१० ५३	१३ १४	१५ ३४	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ०७	२३ ४०	१ ३४	३ ४९
	१२	२८	६ ११	८ ३१	१० ४९	१३ १०	१५ ३०	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ०३	२३ ३६	१ ३१	३ ४५
	१३	२९	६ ०७	८ २७	१० ४५	१३ ०६	१५ २६	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २७	३ ४१
	१४	३०	६ ०३	८ २३	१० ४१	१३ ०२	१५ २२	१७ २७	१९ ०८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २३	३ ३७
	१५	३१	५ ५९	८ १९	१० ३७	१२ ५८	१५ १८	१७ २३	१९ ०४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	१ १९	३ ३३
	१६	भा.१	५ ५५											

183

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

भाद्रपद

अंग्रेज़ी तारीख	भाद्रपद प्रविष्टे	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अगस्त १६	१	८ १५	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १९	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
१७	२	८ ११	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
१८	३	८ ०७	१० २५	१२ ४७	१५ ०७	१७ ११	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
१९	४	८ ०३	१० २१	१२ ४३	१५ ०३	१७ ०७	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
२०	५	७ ५९	१० १७	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०३	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३६
२१	६	७ ५६	१० १३	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३२
२२	७	७ ५२	१० ०९	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५६	१८ ३६	२० ०२	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २८
२३	८	७ ४८	१० ०५	१२ २७	१४ ४७	१६ ५२	१८ ३३	१९ ५८	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०२	५ २४
२४	९	७ ४४	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४८	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४३	२ ५८	५ २०
२५	१०	७ ४०	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४४	१८ २५	१९ ५०	२१ १२	२२ ४५	० ३९	२ ५४	५ १६
२६	११	७ ३६	९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ४०	१८ २१	१९ ४६	२१ ०८	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
२७	१२	७ ३२	९ ५०	१२ ११	१४ ३१	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०४	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
२८	१३	७ २८	९ ४६	१२ ०७	१४ २७	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ००	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
२९	१४	७ २४	९ ४२	१२ ०३	१४ २३	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५६	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
३०	१५	७ २०	९ ३८	११ ५९	१४ १९	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५२	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
३१	१६	७ १६	९ ३४	११ ५५	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितम्बर १	१७	७ १२	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
२	१८	७ ०८	९ २६	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
३	१९	७ ०४	९ २२	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ ०९	० ०४	२ १८	४ ४०
४	२०	७ ००	९ १८	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३७
५	२१	६ ५७	९ १४	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३३
६	२२	६ ५३	९ १०	११ ३२	१३ ५२	१५ ५७	१७ ३८	१९ ०३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २९
७	२३	६ ४९	९ ०६	११ २८	१३ ४८	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०३	४ २५
८	२४	६ ४५	९ ०२	११ २४	१३ ४४	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५५	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५९	४ २१
९	२५	६ ४१	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४५	१७ २६	१८ ५१	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५५	४ १७
१०	२६	६ ३७	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४१	१७ २२	१८ ४७	२० ०९	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १३
११	२७	६ ३३	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३७	१७ १८	१८ ४३	२० ०५	२१ ३८	२३ ३३	१ ४७	४ ०९
१२	२८	६ २९	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३३	१७ १४	१८ ३९	२० ०१	२१ ३४	२३ २९	१ ४३	४ ०५
१३	२९	६ २५	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २९	१७ १०	१८ ३५	१९ ५७	२१ ३०	२३ २५	१ ३९	४ ०१
१४	३०	६ २१	८ ३९	११ ००	१३ २१	१५ २५	१७ ०६	१८ ३१	१९ ५४	२१ २६	२३ २१	१ ३५	३ ५७
१५	३१	६ १७	८ ३५	१० ५६	१३ १७	१५ २१	१७ ०२	१८ २७	१९ ५०	२१ २२	२३ १७	१ ३१	३ ५३
१६	आ.१	६ १३											

आश्विन

अंग्रेज़ी तारीख	आश्विन प्रविष्टे	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
सितम्बर १६	१	८ ३१	१० ५३	१३ १३	१५ १७	१६ ५८	१८ २३	१९ ४६	२१ १८	२३ १३	१ २७	३ ४९	६ ०९
१७	२	८ २७	१० ४९	१३ ०९	१५ १३	१६ ५४	१८ १९	१९ ४२	२१ १४	२३ ०९	१ २३	३ ४५	६ ०५
१८	३	८ २३	१० ४५	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५०	१८ १५	१९ ३८	२१ १०	२३ ०५	१ १९	३ ४२	६ ०१
१९	४	८ १९	१० ४१	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४६	१८ ११	१९ ३४	२१ ०७	२३ ०१	१ १५	३ ३८	५ ५८
२०	५	८ १५	१० ३७	१२ ५७	१५ ०२	१६ ४२	१८ ०८	१९ ३०	२१ ०३	२२ ५७	१ ११	३ ३४	५ ५४
२१	६	८ ११	१० ३३	१२ ५३	१४ ५८	१६ ३९	१८ ०४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	१ ०७	३ ३०	५ ५०
२२	७	८ ०७	१० २९	१२ ४९	१४ ५४	१६ ३५	१८ ००	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	१ ०४	३ २६	५ ४६
२३	८	८ ०३	१० २५	१२ ४५	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	१ ००	३ २२	५ ४२
२४	९	८ ००	१० २१	१२ ४१	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	० ५६	३ १८	५ ३८
२५	१०	७ ५६	१० १७	१२ ३७	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३८	० ५२	३ १४	५ ३४
२६	११	७ ५२	१० १३	१२ ३३	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ०६	२० ३९	२२ ३४	० ४८	३ १०	५ ३०
२७	१२	७ ४८	१० ०९	१२ २९	१४ ३४	१६ १५	१७ ४०	१९ ०२	२० ३५	२२ ३०	० ४४	३ ०६	५ २६
२८	१३	७ ४४	१० ०५	१२ २५	१४ ३०	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	० ४०	३ ०२	५ २२
२९	१४	७ ४०	१० ०१	१२ २२	१४ २६	१६ ०७	१७ ३२	१८ ५५	२० २७	२२ २२	० ३६	२ ५८	५ १८
३०	१५	७ ३६	९ ५७	१२ १८	१४ २२	१६ ०३	१७ २८	१८ ५१	२० २३	२२ १८	० ३२	२ ५४	५ १४
अक्तूबर १	१६	७ ३२	९ ५४	१२ १४	१४ १८	१५ ५९	१७ २४	१८ ४७	२० १९	२२ १४	० २८	२ ५०	५ १०
२	१७	७ २८	९ ५०	१२ १०	१४ १४	१५ ५५	१७ २०	१८ ४३	२० १५	२२ १०	० २४	२ ४६	५ ०६
३	१८	७ २४	९ ४६	१२ ०६	१४ १०	१५ ५१	१७ १६	१८ ३९	२० ११	२२ ०६	० २०	२ ४३	५ ०३
४	१९	७ २०	९ ४२	१२ ०२	१४ ०६	१५ ४७	१७ १२	१८ ३५	२० ०८	२२ ०२	० १६	२ ३९	४ ५९
५	२०	७ १६	९ ३८	११ ५८	१४ ०३	१५ ४३	१७ ०९	१८ ३१	२० ०४	२१ ५८	० १२	२ ३५	४ ५५
६	२१	७ १२	९ ३४	११ ५४	१३ ५९	१५ ४०	१७ ०५	१८ २७	२० ००	२१ ५४	० ०८	२ ३१	४ ५१
७	२२	७ ०८	९ ३०	११ ५०	१३ ५५	१५ ३६	१७ ०१	१८ २३	१९ ५६	२१ ५०	० ०५	२ २७	४ ४७
८	२३	७ ०५	९ २६	११ ४६	१३ ५१	१५ ३२	१६ ५७	१८ १९	१९ ५२	२१ ४६	० ०१	२ २३	४ ४३
९	२४	७ ०१	९ २२	११ ४२	१३ ४७	१५ २८	१६ ५३	१८ १५	१९ ४८	२१ ४३	२३ ५७	२ १९	४ ३९
१०	२५	६ ५७	९ १८	११ ३८	१३ ४३	१५ २४	१६ ४९	१८ ११	१९ ४४	२१ ३९	२३ ५३	२ १५	४ ३५
११	२६	६ ५३	९ १४	११ ३४	१३ ३९	१५ २०	१६ ४५	१८ ०७	१९ ४०	२१ ३५	२३ ४९	२ ११	४ ३१
१२	२७	६ ४९	९ १०	११ ३०	१३ ३५	१५ १६	१६ ४१	१८ ०३	१९ ३६	२१ ३१	२३ ४५	२ ०७	४ २७
१३	२८	६ ४५	९ ०६	११ २६	१३ ३१	१५ १२	१६ ३७	१७ ५९	१९ ३२	२१ २७	२३ ४१	२ ०३	४ २३
१४	२९	६ ४१	९ ०२	११ २३	१३ २७	१५ ०८	१६ ३३	१७ ५६	१९ २८	२१ २३	२३ ३७	१ ५९	४ १९
१५	३०	६ ३७	८ ५९	११ १९	१३ २३	१५ ०४	१६ २९	१७ ५२	१९ २४	२१ १९	२३ ३३	१ ५५	४ १५
१६	का.१	६ ३३											

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

कार्तिक

माह	अंग्रेज़ी तारीख	कार्तिक प्रविष्टे	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.
अक्टूबर	१६	१	८ ५५	११ १५	१३ १९	१५ ००	१६ २५	१७ ४८	१९ २०	२१ १५	२३ २९	१ ५१	४ ११	६ २९
	१७	२	८ ५१	११ ११	१३ १५	१४ ५६	१६ २१	१७ ४४	१९ १६	२१ ११	२३ २५	१ ४७	४ ०७	६ २५
	१८	३	८ ४७	११ ०७	१३ ११	१४ ५२	१६ १७	१७ ४०	१९ १३	२१ ०७	२३ २१	१ ४४	४ ०४	६ २१
	१९	४	८ ४३	११ ०३	१३ ०८	१४ ४८	१६ १४	१७ ३६	१९ ०९	२१ ०३	२३ १७	१ ४०	४ ००	६ १७
	२०	५	८ ३९	१० ५९	१३ ०४	१४ ४५	१६ १०	१७ ३२	१९ ०५	२० ५९	२३ १३	१ ३६	३ ५६	६ १३
	२१	६	८ ३५	१० ५५	१३ ००	१४ ४१	१६ ०६	१७ २८	१९ ०१	२० ५५	२३ ०९	१ ३२	३ ५२	६ ०९
	२२	७	८ ३१	१० ५१	१२ ५६	१४ ३७	१६ ०२	१७ २४	१८ ५७	२० ५१	२३ ०६	१ २८	३ ४८	६ ०६
	२३	८	८ २७	१० ४७	१२ ५२	१४ ३३	१५ ५८	१७ २०	१८ ५३	२० ४७	२३ ०२	१ २४	३ ४४	६ ०२
	२४	९	८ २३	१० ४३	१२ ४८	१४ २९	१५ ५४	१७ १६	१८ ४९	२० ४४	२२ ५८	१ २०	३ ४०	५ ५८
	२५	१०	८ १९	१० ३९	१२ ४४	१४ २५	१५ ५०	१७ १२	१८ ४५	२० ४०	२२ ५४	१ १६	३ ३६	५ ५४
	२६	११	८ १५	१० ३५	१२ ४०	१४ २१	१५ ४६	१७ ०८	१८ ४१	२० ३६	२२ ५०	१ १२	३ ३२	५ ५०
	२७	१२	८ ११	१० ३१	१२ ३६	१४ १७	१५ ४२	१७ ०४	१८ ३७	२० ३२	२२ ४६	१ ०८	३ २८	५ ४६
	२८	१३	८ ०७	१० २८	१२ ३२	१४ १३	१५ ३८	१७ ०१	१८ ३३	२० २८	२२ ४२	१ ०४	३ २४	५ ४२
	२९	१४	८ ०३	१० २४	१२ २८	१४ ०९	१५ ३४	१६ ५७	१८ २९	२० २४	२२ ३८	१ ००	३ २०	५ ३८
	३०	१५	८ ००	१० २०	१२ २४	१४ ०५	१५ ३०	१६ ५३	१८ २५	२० २०	२२ ३४	० ५६	३ १६	५ ३४
	३१	१६	७ ५६	१० १६	१२ २०	१४ ०१	१५ २६	१६ ४९	१८ २१	२० १६	२२ ३०	० ५२	३ १२	५ ३०
नवम्बर	१	१७	७ ५२	१० १२	१२ १६	१३ ५७	१५ २२	१६ ४५	१८ १७	२० १२	२२ २६	० ४८	३ ०९	५ २६
	२	१८	७ ४८	१० ०८	१२ १२	१३ ५३	१५ १८	१६ ४१	१८ १३	२० ०८	२२ २२	० ४५	३ ०५	५ २२
	३	१९	७ ४४	१० ०४	१२ ०९	१३ ४९	१५ १५	१६ ३७	१८ ०९	२० ०४	२२ १८	० ४१	३ ०१	५ १८
	४	२०	७ ४०	१० ००	१२ ०५	१३ ४६	१५ ११	१६ ३३	१८ ०६	२० ००	२२ १५	० ३७	२ ५७	५ १४
	५	२१	७ ३६	९ ५६	१२ ०१	१३ ४२	१५ ०७	१६ २९	१८ ०२	१९ ५६	२२ ११	० ३३	२ ५३	५ १०
	६	२२	७ ३२	९ ५२	११ ५७	१३ ३८	१५ ०३	१६ २५	१७ ५८	१९ ५२	२२ ०७	० २९	२ ४९	५ ०७
	७	२३	७ २८	९ ४८	११ ५३	१३ ३४	१४ ५९	१६ २१	१७ ५४	१९ ४९	२२ ०३	० २५	२ ४५	५ ०३
	८	२४	७ २४	९ ४४	११ ४९	१३ ३०	१४ ५५	१६ १७	१७ ५०	१९ ४५	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ५९
	९	२५	७ २०	९ ४०	११ ४५	१३ २६	१४ ५१	१६ १३	१७ ४६	१९ ४१	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ५५
	१०	२६	७ १६	९ ३६	११ ४१	१३ २२	१४ ४७	१६ ०९	१७ ४२	१९ ३७	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ५१
	११	२७	७ १२	९ ३२	११ ३७	१३ १८	१४ ४३	१६ ०५	१७ ३८	१९ ३३	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ४७
	१२	२८	७ ०८	९ २९	११ ३३	१३ १४	१४ ३९	१६ ०२	१७ ३४	१९ २९	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ ४३
	१३	२९	७ ०५	९ २५	११ २९	१३ १०	१४ ३५	१५ ५८	१७ ३०	१९ २५	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ ३९
	१४	३०	७ ०१	९ २१	११ २५	१३ ०६	१४ ३१	१५ ५४	१७ २६	१९ २१	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ ३५
	१५	मा. १	६ ५७											

मार्गशीर्ष

माह	अंग्रेज़ी तारीख	मार्गशीर्ष प्रविष्टे	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.
नवम्बर	१५	१	९ १७	११ २१	१३ ०२	१४ २७	१५ ५०	१७ २२	१९ १७	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ ३१	६ ५३
	१६	२	९ १३	११ १७	१२ ५८	१४ २३	१५ ४६	१७ १८	१९ १३	२१ २७	२३ ५०	२ १०	४ २७	६ ४९
	१७	३	९ ०९	११ १३	१२ ५४	१४ १९	१५ ४२	१७ १५	१९ ०९	२१ २३	२३ ४६	२ ०६	४ २३	६ ४५
	१८	४	९ ०५	११ १०	१२ ५०	१४ १६	१५ ३८	१७ ११	१९ ०५	२१ १९	२३ ४२	२ ०२	४ १९	६ ४१
	१९	५	९ ०१	११ ०६	१२ ४७	१४ १२	१५ ३४	१७ ०७	१९ ०१	२१ १६	२३ ३८	१ ५८	४ १५	६ ३७
	२०	६	८ ५७	११ ०२	१२ ४३	१४ ०८	१५ ३०	१७ ०३	१८ ५७	२१ १२	२३ ३४	१ ५४	४ १२	६ ३३
	२१	७	८ ५३	१० ५८	१२ ३९	१४ ०४	१५ २६	१६ ५९	१८ ५३	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	४ ०८	६ २९
	२२	८	८ ४९	१० ५४	१२ ३५	१४ ००	१५ २२	१६ ५५	१८ ५०	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	४ ०४	६ २५
	२३	९	८ ४५	१० ५०	१२ ३१	१३ ५६	१५ १८	१६ ५१	१८ ४६	२१ ००	२३ २२	१ ४२	४ ००	६ २१
	२४	१०	८ ४१	१० ४६	१२ २७	१३ ५२	१५ १४	१६ ४७	१८ ४२	२० ५६	२३ १८	१ ३८	३ ५६	६ १७
	२५	११	८ ३७	१० ४२	१२ २३	१३ ४८	१५ १०	१६ ४३	१८ ३८	२० ५२	२३ १४	१ ३४	३ ५२	६ १३
	२६	१२	८ ३३	१० ३८	१२ १९	१३ ४४	१५ ०७	१६ ३९	१८ ३४	२० ४८	२३ १०	१ ३०	३ ४८	६ ०९
	२७	१३	८ ३०	१० ३४	१२ १५	१३ ४०	१५ ०३	१६ ३५	१८ ३०	२० ४४	२३ ०६	१ २६	३ ४४	६ ०६
	२८	१४	८ २६	१० ३०	१२ ११	१३ ३६	१४ ५९	१६ ३१	१८ २६	२० ४०	२३ ०२	१ २२	३ ४०	६ ०२
	२९	१५	८ २२	१० २६	१२ ०७	१३ ३२	१४ ५५	१६ २७	१८ २२	२० ३६	२२ ५८	१ १८	३ ३६	५ ५८
	३०	१६	८ १८	१० २२	१२ ०३	१३ २८	१४ ५१	१६ २३	१८ १८	२० ३२	२२ ५४	१ १४	३ ३२	५ ५४
दिसम्बर	१	१७	८ १४	१० १८	११ ५९	१३ २४	१४ ४७	१६ २०	१८ १४	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ २८	५ ५०
	२	१८	८ १०	१० १५	११ ५५	१३ २१	१४ ४३	१६ १६	१८ १०	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ २४	५ ४६
	३	१९	८ ०६	१० ११	११ ५२	१३ १७	१४ ३९	१६ १२	१८ ०६	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ २०	५ ४२
	४	२०	८ ०२	१० ०७	११ ४८	१३ १३	१४ ३५	१६ ०८	१८ ०२	२० १७	२२ ३९	० ५९	३ १६	५ ३८
	५	२१	७ ५८	१० ०३	११ ४४	१३ ०९	१४ ३१	१६ ०४	१७ ५८	२० १३	२२ ३५	० ५५	३ १३	५ ३४
	६	२२	७ ५४	९ ५९	११ ४०	१३ ०५	१४ २७	१६ ००	१७ ५४	२० ०९	२२ ३१	० ५१	३ ०९	५ ३०
	७	२३	७ ५०	९ ५५	११ ३६	१३ ०१	१४ २३	१५ ५६	१७ ५१	२० ०५	२२ २७	० ४७	३ ०५	५ २६
	८	२४	७ ४६	९ ५१	११ ३२	१२ ५७	१४ १९	१५ ५२	१७ ४७	२० ०१	२२ २३	० ४३	३ ०१	५ २२
	९	२५	७ ४२	९ ४७	११ २८	१२ ५३	१४ १५	१५ ४८	१७ ४३	१९ ५७	२२ १९	० ३९	२ ५७	५ १८
	१०	२६	७ ३८	९ ४३	११ २४	१२ ४९	१४ ११	१५ ४४	१७ ३९	१९ ५३	२२ १५	० ३५	२ ५३	५ १४
	११	२७	७ ३५	९ ३९	११ २०	१२ ४५	१४ ०८	१५ ४०	१७ ३५	१९ ४९	२२ ११	० ३१	२ ४९	५ १०
	१२	२८	७ ३१	९ ३५	११ १६	१२ ४१	१४ ०४	१५ ३६	१७ ३१	१९ ४५	२२ ०७	० २७	२ ४५	५ ०७
	१३	२९	७ २७	९ ३१	११ १२	१२ ३७	१४ ००	१५ ३२	१७ २७	१९ ४१	२२ ०३	० २३	२ ४१	५ ०३
	१४	३०	७ २३	९ २७	११ ०८	१२ ३३	१३ ५६	१५ २८	१७ २३	१९ ३७	२१ ५९	० १९	२ ३७	४ ५९
	१५	पौ. १	७ १९											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

पौष

मास	अंग्रेज़ी तारीख	पौष प्रविष्टे	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.
दिसम्बर	१५	१	९ २३	११ ४	१२ २९	१३ ५२	१५ २४	१७ १९	१९ ३३	२१ ५६	० १६	२ ३३	४ ५५	७ १५
	१६	२	९ १९	११ ००	१२ २५	१३ ४८	१५ २१	१७ १५	१९ २९	२१ ५२	० १२	२ २९	४ ५१	७ ११
	१७	३	९ १६	१० ५६	१२ २२	१३ ४४	१५ १७	१७ ११	१९ २५	२१ ४८	० ०८	२ २५	४ ४७	७ ०७
	१८	४	९ १२	१० ५३	१२ १८	१३ ४०	१५ १३	१७ ०७	१९ २२	२१ ४४	० ०४	२ २१	४ ४३	७ ०३
	१९	५	९ ०८	१० ४९	१२ १४	१३ ३६	१५ ०९	१७ ०३	१९ १८	२१ ४०	० ००	२ १७	४ ३९	६ ५९
	२०	६	९ ०४	१० ४५	१२ १०	१३ ३२	१५ ०५	१६ ५९	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ १४	४ ३५	६ ५५
	२१	७	९ ००	१० ४१	१२ ०६	१३ २८	१५ ०१	१६ ५६	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	२ १०	४ ३१	६ ५१
	२२	८	८ ५६	१० ३७	१२ ०२	१३ २४	१४ ५७	१६ ५२	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	२ ०६	४ २७	६ ४७
	२३	९	८ ५२	१० ३३	११ ५८	१३ २०	१४ ५३	१६ ४८	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	२ ०२	४ २३	६ ४३
	२४	१०	८ ४८	१० २९	११ ५४	१३ १६	१४ ४९	१६ ४४	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ५८	४ १९	६ ३९
	२५	११	८ ४४	१० २५	११ ५०	१३ १२	१४ ४५	१६ ४०	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ५४	४ १५	६ ३६
	२६	१२	८ ४०	१० २१	११ ४६	१३ ०९	१४ ४१	१६ ३६	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ५०	४ १२	६ ३२
	२७	१३	८ ३६	१० १७	११ ४२	१३ ०५	१४ ३७	१६ ३२	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ४६	४ ०८	६ २८
	२८	१४	८ ३२	१० १३	११ ३८	१३ ०१	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ ४२	४ ०४	६ २४
	२९	१५	८ २८	१० ०९	११ ३४	१२ ५७	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ ३८	४ ००	६ २०
	३०	१६	८ २४	१० ०५	११ ३०	१२ ५३	१४ २६	१६ २०	१८ ३४	२० ५७	२३ १७	१ ३४	३ ५६	६ १६
	३१	१७	८ २०	१० ०१	११ २६	१२ ४९	१४ २२	१६ १६	१८ ३०	२० ५३	२३ १३	१ ३०	३ ५२	६ १२
जनवरी	१	१८	८ १६	९ ५७	११ २२	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २६	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ ४७	६ ०७
	२	१९	८ १२	९ ५३	११ १८	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २२	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ ४३	६ ०३
	३	२०	८ ०८	९ ४९	११ १४	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १८	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ ३९	५ ५९
	४	२१	८ ०४	९ ४५	११ १०	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १४	२० ३६	२२ ५६	१ १४	३ ३५	५ ५५
	५	२२	८ ००	९ ४१	११ ०६	१२ २८	१४ ०१	१५ ५६	१८ १०	२० ३२	२२ ५२	१ १०	३ ३१	५ ५१
	६	२३	७ ५६	९ ३७	११ ०२	१२ २४	१३ ५७	१५ ५२	१८ ०६	२० २८	२२ ४८	१ ०६	३ २७	५ ४७
	७	२४	७ ५२	९ ३३	१० ५८	१२ २०	१३ ५३	१५ ४८	१८ ०२	२० २४	२२ ४४	१ ०२	३ २३	५ ४३
	८	२५	७ ४८	९ २९	१० ५४	१२ १६	१३ ४९	१५ ४४	१७ ५८	२० २०	२२ ४०	० ५८	३ १९	५ ३९
	९	२६	७ ४४	९ २५	१० ५०	१२ १३	१३ ४५	१५ ४०	१७ ५४	२० १६	२२ ३६	० ५४	३ १५	५ ३६
	१०	२७	७ ४०	९ २१	१० ४६	१२ ०९	१३ ४१	१५ ३६	१७ ५०	२० १२	२२ ३२	० ५०	३ १२	५ ३२
	११	२८	७ ३६	९ १७	१० ४२	१२ ०५	१३ ३७	१५ ३२	१७ ४६	२० ०८	२२ २८	० ४६	३ ०८	५ २८
	१२	२९	७ ३२	९ १३	१० ३८	१२ ०१	१३ ३३	१५ २८	१७ ४२	२० ०४	२२ २४	० ४२	३ ०४	५ २४
	१३	माघ १	७ २८											

माघ

मास	अंग्रेज़ी तारीख	माघ प्रविष्टे	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.
जनवरी	१३	१	९ ०९	१० ३४	११ ५७	१३ २९	१५ २४	१७ ३८	२० ००	२२ २०	० ३८	३ ००	५ २०	७ २४
	१४	२	९ ०५	१० ३०	११ ५३	१३ २६	१५ २०	१७ ३४	१९ ५७	२२ १७	० ३४	२ ५६	५ १६	७ २०
	१५	३	९ ०१	१० २७	११ ४९	१३ २२	१५ १६	१७ ३०	१९ ५३	२२ १३	० ३०	२ ५२	५ १२	७ १७
	१६	४	८ ५८	१० २३	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २६	१९ ४९	२२ ०९	० २६	२ ४८	५ ०८	७ १३
	१७	५	८ ५४	१० १९	११ ४१	१३ १४	१५ ०८	१७ २३	१९ ४५	२२ ०५	० २२	२ ४४	५ ०४	७ ०९
	१८	६	८ ५०	१० १५	११ ३७	१३ १०	१५ ०४	१७ १९	१९ ४१	२२ ०१	० १९	२ ४०	५ ००	७ ०५
	१९	७	८ ४६	१० ११	११ ३३	१३ ०६	१५ ०१	१७ १५	१९ ३७	२१ ५७	० १५	२ ३६	४ ५६	७ ०१
	२०	८	८ ४२	१० ०७	११ २९	१३ ०२	१४ ५७	१७ ११	१९ ३३	२१ ५३	० ११	२ ३२	४ ५२	६ ५७
	२१	९	८ ३८	१० ०३	११ २५	१२ ५८	१४ ५३	१७ ०७	१९ २९	२१ ४९	० ०७	२ २८	४ ४८	६ ५३
	२२	१०	८ ३४	९ ५९	११ २१	१२ ५४	१४ ४९	१७ ०३	१९ २५	२१ ४५	० ०३	२ २४	४ ४४	६ ४९
	२३	११	८ ३०	९ ५५	११ १७	१२ ५०	१४ ४५	१६ ५९	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ २०	४ ४१	६ ४५
	२४	१२	८ २६	९ ५१	११ १४	१२ ४६	१४ ४१	१६ ५५	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	२ १६	४ ३७	६ ४१
	२५	१३	८ २२	९ ४७	११ १०	१२ ४२	१४ ३७	१६ ५१	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	२ १३	४ ३३	६ ३७
	२६	१४	८ १८	९ ४३	११ ०६	१२ ३८	१४ ३३	१६ ४७	१९ ०९	२१ २९	२३ ४७	२ ०९	४ २९	६ ३३
	२७	१५	८ १४	९ ३९	११ ०२	१२ ३४	१४ २९	१६ ४३	१९ ०५	२१ २५	२३ ४३	२ ०५	४ २५	६ २९
	२८	१६	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३०	१४ २५	१६ ३९	१९ ०२	२१ २२	२३ ३९	२ ०१	४ २१	६ २५
	२९	१७	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १८	२३ ३५	१ ५७	४ १७	६ २२
	३०	१८	८ ०२	९ २८	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १४	२३ ३१	१ ५३	४ १३	६ १८
	३१	१९	७ ५९	९ २४	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २८	१८ ५०	२१ १०	२३ २७	१ ४९	४ ०९	६ १४
फरवरी	१	२०	७ ५५	९ २०	१० ४२	१२ १५	१४ ०९	१६ २४	१८ ४६	२१ ०६	२३ २३	१ ४५	४ ०५	६ १०
	२	२१	७ ५१	९ १६	१० ३८	१२ ११	१४ ०५	१६ २०	१८ ४२	२१ ०२	२३ २०	१ ४१	४ ०१	६ ०६
	३	२२	७ ४७	९ १२	१० ३४	१२ ०७	१४ ०२	१६ १६	१८ ३८	२० ५८	२३ १६	१ ३७	३ ५७	६ ०२
	४	२३	७ ४३	९ ०८	१० ३०	१२ ०३	१३ ५८	१६ १२	१८ ३४	२० ५४	२३ १२	१ ३३	३ ५३	५ ५८
	५	२४	७ ३९	९ ०४	१० २६	११ ५९	१३ ५४	१६ ०८	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ २९	३ ४९	५ ५४
	६	२५	७ ३५	९ ००	१० २२	११ ५५	१३ ५०	१६ ०४	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ २५	३ ४५	५ ५०
	७	२६	७ ३१	८ ५६	१० १९	११ ५१	१३ ४६	१६ ००	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ २१	३ ४२	५ ४६
	८	२७	७ २७	८ ५२	१० १५	११ ४७	१३ ४२	१५ ५६	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३८	५ ४२
	९	२८	७ २३	८ ४८	१० ११	११ ४३	१३ ३८	१५ ५२	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ १४	३ ३४	५ ३८
	१०	२९	७ १९	८ ४४	१० ०७	११ ३९	१३ ३४	१५ ४८	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ १०	३ ३०	५ ३४
	११	३०	७ १५	८ ४०	१० ०३	११ ३५	१३ ३०	१५ ४४	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	१ ०६	३ २६	५ ३०
	१२	फा.१	७ ११											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

फाल्गुन

अंग्रेज़ी तारीख		फाल्गुन प्रविष्टे	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.
फरवरी	१२	१	८ ३६	९ ५९	११ ३२	१३ २६	१५ ४०	१८ ०३	२० २३	२२ ४०	१ ०२	३ २२	५ २६	७ ०७
	१३	२	८ ३३	९ ५५	११ २८	१३ २२	१५ ३६	१७ ५९	२० १९	२२ ३६	० ५८	३ १८	५ २३	७ ०४
	१४	३	८ २९	९ ५१	११ २४	१३ १८	१५ ३२	१७ ५५	२० १५	२२ ३२	० ५४	३ १४	५ १९	७ ००
	१५	४	८ २५	९ ४७	११ २०	१३ १४	१५ २९	१७ ५१	२० ११	२२ २८	० ५०	३ १०	५ १५	६ ५६
	१६	५	८ २१	९ ४३	११ १६	१३ १०	१५ २५	१७ ४७	२० ०७	२२ २४	० ४६	३ ०६	५ ११	६ ५२
	१७	६	८ १७	९ ३९	११ १२	१३ ०६	१५ २१	१७ ४३	२० ०३	२२ २१	० ४२	३ ०२	५ ०७	६ ४८
	१८	७	८ १३	९ ३५	११ ०८	१३ ०३	१५ १७	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३८	२ ५८	५ ०३	६ ४४
	१९	८	८ ०९	९ ३१	११ ०४	१२ ५९	१५ १३	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० ३४	२ ५४	४ ५९	६ ४०
	२०	९	८ ०५	९ २७	११ ००	१२ ५५	१५ ०९	१७ ३१	१९ ५१	२२ ०९	० ३०	२ ५०	४ ५५	६ ३६
	२१	१०	८ ०१	९ २३	१० ५६	१२ ५१	१५ ०५	१७ २७	१९ ४७	२२ ०५	० २६	२ ४६	४ ५१	६ ३२
	२२	११	७ ५७	९ २०	१० ५२	१२ ४७	१५ ०१	१७ २३	१९ ४३	२२ ०१	० २२	२ ४३	४ ४७	६ २८
	२३	१२	७ ५३	९ १६	१० ४८	१२ ४३	१४ ५७	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
	२४	१३	७ ४९	९ १२	१० ४४	१२ ३९	१४ ५३	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
	२५	१४	७ ४५	९ ०८	१० ४०	१२ ३५	१४ ४९	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ११	२ ३१	४ ३५	६ १६
	२६	१५	७ ४१	९ ०४	१० ३६	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०७	१९ २७	२१ ४५	० ०७	२ २७	४ ३१	६ १२
	२७	१६	७ ३७	९ ००	१० ३३	१२ २७	१४ ४१	१७ ०४	१९ २४	२१ ४१	० ०३	२ २३	४ २८	६ ०८
	२८	१७	७ ३४	८ ५६	१० २९	१२ २३	१४ ३७	१७ ००	१९ २०	२१ ३७	२३ ५९	२ १९	४ २४	६ ०५
मार्च	१	१८	७ ३०	८ ५२	१० २५	१२ १९	१४ ३३	१६ ५६	१९ १६	२१ ३३	२३ ५५	२ १५	४ २०	६ ०१
	२	१९	७ २६	८ ४८	१० २१	१२ १५	१४ ३०	१६ ५२	१९ १२	२१ २९	२३ ५१	२ ११	४ १६	५ ५७
	३	२०	७ २२	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २६	१६ ४८	१९ ०८	२१ २६	२३ ४७	२ ०७	४ १२	५ ५३
	४	२१	७ १८	८ ४०	१० १३	१२ ०८	१४ २२	१६ ४४	१९ ०४	२१ २२	२३ ४३	२ ०३	४ ०८	५ ४९
	५	२२	७ १४	८ ३६	१० ०९	१२ ०४	१४ १८	१६ ४०	१९ ००	२१ १८	२३ ३९	१ ५९	४ ०४	५ ४५
	६	२३	७ १०	८ ३२	१० ०५	१२ ००	१४ १४	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३५	१ ५५	४ ००	५ ४१
	७	२४	७ ०६	८ २८	१० ०१	११ ५६	१४ १०	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ ३१	१ ५१	३ ५६	५ ३७
	८	२५	७ ०२	८ २४	९ ५७	११ ५२	१४ ०६	१६ २८	१८ ४८	२१ ०६	२३ २७	१ ४८	३ ५२	५ ३३
	९	२६	६ ५८	८ २१	९ ५३	११ ४८	१४ ०२	१६ २४	१८ ४४	२१ ०२	२३ २३	१ ४४	३ ४८	५ २९
	१०	२७	६ ५४	८ १७	९ ४९	११ ४४	१३ ५८	१६ २०	१८ ४०	२० ५८	२३ २०	१ ४०	३ ४४	५ २५
	११	२८	६ ५०	८ १३	९ ४५	११ ४०	१३ ५४	१६ १६	१८ ३६	२० ५४	२३ १६	१ ३६	३ ४०	५ २१
	१२	२९	६ ४६	८ ०९	९ ४१	११ ३६	१३ ५०	१६ १२	१८ ३२	२० ५०	२३ १२	१ ३२	३ ३६	५ १७
	१३	३०	६ ४२	८ ०५	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०९	१८ २९	२० ४६	२३ ०८	१ २८	३ ३२	५ १३
	१४	चै.१	६ ३८											

चैत्र

अंग्रेज़ी तारीख		चैत्र प्रविष्टे	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.
मार्च	१४	१	८ ०१	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०५	१८ २५	२० ४२	२३ ०४	१ २४	३ २९	५ ०९	६ ३५
	१५	२	७ ५७	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१६ ०१	१८ २१	२० ३८	२३ ००	१ २०	३ २५	५ ०६	६ ३१
	१६	३	७ ५३	९ २६	११ २०	१३ ३५	१५ ५७	१८ १७	२० ३४	२२ ५६	१ १६	३ २१	५ ०२	६ २७
	१७	४	७ ४९	९ २२	११ १६	१३ ३१	१५ ५३	१८ १३	२० ३०	२२ ५२	१ १२	३ १७	४ ५८	६ २३
	१८	५	७ ४५	९ १८	११ १२	१३ २७	१५ ४९	१८ ०९	२० २७	२२ ४८	१ ०८	३ १३	४ ५४	६ १९
	१९	६	७ ४१	९ १४	११ ०९	१३ २३	१५ ४५	१८ ०५	२० २३	२२ ४४	१ ०४	३ ०९	४ ५०	६ १५
	२०	७	७ ३७	९ १०	११ ०५	१३ १९	१५ ४१	१८ ०१	२० १९	२२ ४०	१ ००	३ ०५	४ ४६	६ ११
	२१	८	७ ३३	९ ०६	११ ०१	१३ १५	१५ ३७	१७ ५७	२० १५	२२ ३६	० ५६	३ ०१	४ ४२	६ ०७
	२२	९	७ २९	९ ०२	१० ५७	१३ ११	१५ ३३	१७ ५३	२० ११	२२ ३२	० ५२	२ ५७	४ ३८	६ ०३
	२३	१०	७ २५	८ ५८	१० ५३	१३ ०७	१५२९	१७ ४९	२० ०७	२२ २८	० ४९	२ ५३	४ ३४	५ ५९
	२४	११	७ २२	८ ५४	१० ४९	१३ ०३	१५ २५	१७ ४५	२० ०३	२२ २५	० ४५	२ ४९	४ ३०	५ ५५
	२५	१२	७ १८	८ ५०	१० ४५	१२ ५९	१५ २१	१७ ४१	१९ ५९	२२ २१	० ४१	२ ४५	४ २६	५ ५१
	२६	१३	७ १४	८ ४६	१० ४१	१२ ५५	१५ १७	१७ ३७	१९ ५५	२२ १७	० ३७	२ ४१	४ २२	५ ४७
	२७	१४	७ १०	८ ४२	१० ३७	१२ ५१	१५ १३	१७ ३३	१९ ५१	२२ १३	० ३३	२ ३७	४ १८	५ ४३
	२८	१५	७ ०६	८ ३८	१० ३३	१२ ४७	१५ १०	१७ ३०	१९ ४७	२२ ०९	० २९	२ ३३	४ १४	५ ३९
	२९	१६	७ ०२	८ ३५	१० २९	१२ ४३	१५ ०६	१७ २६	१९ ४३	२२ ०५	० २५	२ ३०	४ १०	५ ३६
	३०	१७	६ ५८	८ ३१	१० २५	१२ ३९	१५ ०२	१७ २२	१९ ४०	२२ ०१	० २१	२ २६	४ ०७	५ ३२
	३१	१८	६ ५४	८ २७	१० २१	१२ ३६	१४ ५८	१७ १८	१९ ३६	२१ ५७	० १७	२ २२	४ ०३	५ २८
अप्रैल	१	१९	६ ५०	८ २३	१० १७	१२ ३२	१४ ५४	१७ १४	१९ ३२	२१ ५३	० १३	२ १८	३ ५९	५ २४
	२	२०	६ ४६	८ १९	१० १३	१२ २८	१४ ५०	१७ १०	१९ २८	२१ ४९	० ०९	२ १४	३ ५५	५ २०
	३	२१	६ ४२	८ १५	१० १०	१२ २४	१४ ४६	१७ ०६	१९ २४	२१ ४५	० ०५	२ १०	३ ५१	५ १६
	४	२२	६ ३८	८ ११	१० ०६	१२ २०	१४ ४२	१७ ०२	१९ २०	२१ ४१	० ०१	२ ०६	३ ४७	५ १२
	५	२३	६ ३४	८ ०७	१० ०२	१२ १६	१४ ३८	१६ ५८	१९ १६	२१ ३७	२३ ५७	२ ०२	३ ४३	५ ०८
	६	२४	६ ३०	८ ०३	९ ५८	१२ १२	१४ ३४	१६ ५४	१९ १२	२१ ३३	२३ ५३	१ ५८	३ ३९	५ ०४
	७	२५	६ २७	७ ५९	९ ५४	१२ ०८	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०८	२१ २९	२३ ५०	१ ५४	३ ३५	५ ००
	८	२६	६ २३	७ ५५	९ ५०	१२ ०४	१४ २६	१६ ४६	१९ ०४	२१ २६	२३ ४६	१ ५०	३ ३१	४ ५६
	९	२७	६ १९	७ ५१	९ ४६	१२ ००	१४ २२	१६ ४२	१९ ००	२१ २२	२३ ४२	१ ४६	३ २७	४ ५२
	१०	२८	६ १५	७ ४७	९ ४२	११ ५६	१४ १८	१६ ३८	१८ ५६	२१ १८	२३ ३८	१ ४२	३ २३	४ ४८
	११	२९	६ ११	७ ४३	९ ३८	११ ५२	१४ १४	१६ ३४	१८ ५२	२१ १४	२३ ३४	१ ३८	३ १९	४ ४४
	१२	३०	६ ०७	७ ४०	९ ३४	११ ४८	१४ ११	१६ ३१	१८ ४८	२१ १०	२३ ३०	१ ३५	३ १५	४ ४१
	१३	चै.१	६ ०३											

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

यहां जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बतलाती है। इसी लग्नसारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :-दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्तिकाल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। जैसे-मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्नसारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास, के आगे मिथुन के नीचे + १९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मिनट में जोड़ने पर १२ घं. १९ मिनट मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बन गया।

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
जमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	-१	०	+४	+८	+१२
म्बाला	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	०	०	०
मृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
लवर	+७	+८	+७	+५	+२	-२	-५	-६	-६	-३	०	+४
लीगढ़	+१	+२	+१	-१	-४	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६	-२
हमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	-१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	-१	-४	-८	-११	-१३	-१३	-९	-६	-२
उज्जैन	+२८	+२१	+१९	+१३	+६	-१	-८	-१३	-११	-४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	-२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	-३	-१०	-१५	-१३	-६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	-१	-२	-२	-२	-१	-१	०
कलकत्ता	-३२	-२८	-३०	-३६	-४५	-५३	-६०	-६५	-६३	-५६	-४७	-४०
कांगड़ा	०	-१	-१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	-६	-५	-६	-९	-१३	-१७	-२२	-२४	-२३	-१९	-१५	-११
काशी	-१५	-१३	-१४	-१८	-२४	-२९	-३४	-३७	-३६	-३१	-२५	-२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	-१	-१	-१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	-५	-८	-७	-२	+४	+९
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	-२	-४	-५	-५	-३	-१	+१
गुरदासपुर	+३	+२	+२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	-१८	-१७	-१८	-२१	-२५	-२९	-३४	-३६	-३५	-३१	-२७	-२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	-४	-९	-१३	-१६	-१५	-११	-६	-२
चम्बा	-१	-२	-१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	H१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	-३	-५	-४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	-१	-१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	-६	-११	-१६	-१९	-१८	-१३	-७	-२
दिल्ली	+३	+३	+३	+१	-१	-३	-५	-६	-६	-४	-२	०
देहरादून	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	-७	-१७	-२६	-३१	-३९	-२०	-११	-२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+२	+३	+३	+३

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
नैनीताल	-८	-७	-८	-९	-१०	-१२	-१३	-१४	-१४	-१२	-११	-९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	-२४	-२२	-२३	-२७	-३२	-३८	-४२	-४५	-४४	-३९	-३४	-२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२४	-२९	-३१	-३१	-२६	-२१	-१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	-४	-१०	-८	+३	+१४	+२५
बरेली	-६	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११	-९
बंगलौर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	-१६	-३२	-४०	-३७	-२२	-६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	-२	-४	-६	-८	-९	-९	-७	-५	-३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	-२	-६	-९	-११	-११	-७	-४	०
भुवनेश्वर	-१८	-१४	-१६	-२४	-३४	-४४	-५४	-५८	-५७	-४८	-३८	-२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	-१	-८	-१५	-२०	-१८	-११	-४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	-११	-२७	-४३	-५१	-४८	-३३	-१७	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	-२	-६	-९	-१०	-१०	-७	-४	०
मण्डी (हि.प्र.)	-२	-३	-३	-२	-१	०	+२	+२	+२	+१	०	-१
मलेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	-१	०	-१	-२	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-२
रोपड़	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	-२	-३	-३	-१	+१	+२
लखनऊ	-९	-८	-९	-१२	-१५	-१९	-२३	-२५	-२४	-२०	-१७	-१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-२
श्रीनगर (का.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	-१	-१	-१	-२	-२	-३	-४	-४	-४	-३	-३	-२
हरिद्वार	-४	-४	-४	-५	-५	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	-५	-१७	-२९	-३५	-३३	-२२	-९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+३	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

दैनिक लग्न प्रारम्भकाल सारणी (भा.स्टैं.टा.) दिल्ली (DELHI) जनवरी–फरवरी (JAN.-FEB.)

जन.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु
ता.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
1	8 10	9 53	11 21	12 45	14 21	16 16	18 30	20 50	23 09	1 25	3 43	6 02
2	8 06	9 49	11 17	12 41	14 17	16 12	18 26	20 47	23 05	1 21	3 39	5 58
3	8 02	9 45	11 13	12 37	14 13	16 08	18 22	20 43	23 01	1 17	3 35	5 54
4	7 58	9 41	11 09	12 33	14 09	16 04	18 18	20 39	22 57	1 13	3 31	5 50
5	7 54	9 37	11 05	12 29	14 05	16 00	18 14	20 35	22 53	1 09	3 27	5 46
6	7 50	9 33	11 01	12 25	14 01	15 56	18 10	20 31	22 49	1 05	3 23	5 42
7	7 46	9 29	10 57	12 21	13 57	15 52	18 06	20 27	22 45	1 01	3 19	5 38
8	7 42	9 25	10 53	12 17	13 53	15 48	18 02	20 23	22 41	0 57	3 15	5 34
9	7 38	9 21	10 49	12 13	13 49	15 44	17 58	20 18	22 37	0 53	3 11	5 30
10	7 34	9 17	10 45	12 09	13 45	15 40	17 54	20 15	22 33	0 49	3 07	5 26
11	7 30	9 13	10 41	12 05	13 41	15 36	17 50	20 11	22 29	0 45	3 03	5 22
12	7 26	9 09	10 37	12 01	13 37	15 32	17 46	20 07	22 25	0 41	2 59	5 18
13	7 22	9 05	10 33	11 57	13 33	15 28	17 42	20 04	22 22	0 37	2 55	5 14
14	7 18	9 01	10 29	11 53	13 29	15 24	17 38	20 00	22 18	0 33	2 51	5 10
15	7 14	8 57	10 25	11 49	13 25	15 20	17 34	19 56	22 14	0 29	2 47	5 06
16	7 10	8 54	10 22	11 46	13 22	15 17	17 31	19 52	22 10	0 26	2 43	5 02
17	7 06	8 50	10 18	11 42	13 18	15 13	17 27	19 48	22 06	0 22	2 39	4 58
18	7 02	8 46	10 14	11 38	13 14	15 09	17 23	19 44	22 02	0 18	2 35	4 54
19	6 58	8 42	10 10	11 34	13 10	15 05	17 19	19 40	21 58	0 14	2 31	4 51
20	6 54	8 38	10 06	11 30	13 06	15 01	17 15	19 36	21 54	0 10	2 27	4 47
21	6 50	8 34	10 02	11 26	13 02	14 57	17 11	19 32	21 50	0 06	2 23	4 43
22	6 47	8 30	9 58	11 22	12 58	14 53	17 07	19 28	21 46	0 02	2 19	4 39
23	6 43	8 26	9 54	11 18	12 54	14 49	17 03	19 24	21 42	23 58	2 15	4 35
24	6 39	8 22	9 50	11 14	12 50	14 45	16 59	19 20	21 38	23 54	2 12	4 31
25	6 35	8 18	9 46	11 10	12 46	14 41	16 55	19 16	21 34	23 50	2 08	4 27
26	6 31	8 15	9 43	11 07	12 43	14 38	16 52	19 13	21 31	23 47	2 04	4 23
27	6 27	8 11	9 39	11 03	12 39	14 34	16 48	19 09	21 27	23 43	2 00	4 19
28	6 23	8 07	9 35	10 59	12 35	14 30	16 44	19 05	21 23	23 39	1 56	4 16
29	6 19	8 03	9 31	10 55	12 31	14 26	16 40	19 01	21 19	23 35	1 52	4 12
30	6 15	7 59	9 27	10 51	12 27	14 22	16 36	18 57	21 15	23 31	1 48	4 08
31	6 12	7 55	9 23	10 47	12 23	14 18	16 32	18 53	21 11	23 27	1 44	4 04
फर. 1	6 08	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

फर.	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर
ता.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
1	7 51	9 19	10 43	12 19	14 14	16 28	18 49	21 07	23 23	1 40	4 00	6 04
2	7 47	9 15	10 39	12 15	14 10	16 24	18 45	21 03	23 19	1 36	3 56	6 00
3	7 43	9 11	10 35	12 11	14 06	16 20	18 41	20 59	23 15	1 32	3 52	5 56
4	7 39	9 07	10 31	12 07	14 02	16 16	18 37	20 55	23 11	1 28	3 48	5 52
5	7 35	9 03	10 27	12 03	13 58	16 12	18 33	20 52	23 07	1 24	3 44	5 48
6	7 31	8 59	10 23	11 59	13 54	16 08	18 29	20 48	23 03	1 21	3 40	5 44
7	7 27	8 55	10 19	11 55	13 50	16 04	18 25	20 44	22 59	1 17	3 36	5 40
8	7 23	8 51	10 15	11 51	13 46	16 00	18 21	20 40	22 55	1 13	3 32	5 36
9	7 19	8 47	10 11	11 47	13 42	15 56	18 18	20 36	22 51	1 09	3 28	5 32
10	7 15	8 43	10 07	11 43	13 38	15 52	18 14	20 32	22 47	1 05	3 24	5 28
11	7 11	8 39	10 03	11 39	13 34	15 48	18 10	20 28	22 43	1 01	3 20	5 24
12	7 07	8 35	9 59	11 35	13 30	15 44	18 06	20 24	22 39	0 57	3 16	5 20
13	7 04	8 31	9 55	11 31	13 26	15 40	18 02	20 20	22 35	0 53	3 12	5 16
14	7 00	8 27	9 51	11 27	13 22	15 36	17 58	20 16	22 31	0 49	3 08	5 12
15	6 56	8 23	9 47	11 23	13 18	15 32	17 54	20 12	22 27	0 45	3 04	5 08
16	6 52	8 19	9 43	11 19	13 14	15 28	17 50	20 08	22 23	0 41	3 00	5 04
17	6 48	8 15	9 39	11 15	13 10	15 24	17 46	20 04	22 19	0 37	2 56	5 01
18	6 44	8 11	9 35	11 11	13 06	15 20	17 42	20 00	22 15	0 33	2 52	4 57
19	6 40	8 07	9 31	11 07	13 02	15 16	17 38	19 56	22 11	0 29	2 48	4 53
20	6 36	8 04	9 28	11 04	12 58	15 13	17 34	19 52	22 07	0 25	2 44	4 49
21	6 32	8 00	9 24	11 00	12 55	15 09	17 30	19 48	22 03	0 21	2 41	4 45
22	6 28	7 56	9 20	10 56	12 51	15 05	17 26	19 44	21 59	0 17	2 37	4 41
23	6 24	7 52	9 16	10 52	12 47	15 01	17 22	19 40	21 55	0 14	2 33	4 37
24	6 20	7 48	9 12	10 48	12 43	14 57	17 18	19 36	21 51	0 10	2 29	4 33
25	6 16	7 44	9 08	10 44	12 39	14 53	17 14	19 32	21 47	0 06	2 25	4 29
26	6 12	7 40	9 04	10 40	12 35	14 49	17 10	19 28	21 43	0 02	2 21	4 25
27	6 08	7 36	9 00	10 36	12 31	14 45	17 06	19 24	21 39	23 58	2 17	4 21
28	6 05	7 32	8 57	10 32	12 27	14 41	17 02	19 20	21 35	23 54	2 13	4 17
मार्च 1	6 01	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न प्रारम्भकाल सारणी (भा.स्टैं.टा.) दिल्ली (DELHI) मार्च–अप्रैल (MAR.-APR.)

मार्च	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ
ता.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
1	7 28	8 53	10 28	12 23	14 37	16 58	19 16	21 31	23 50	2 09	4 13	5 57
2	7 24	8 49	10 24	12 19	14 33	16 54	19 12	21 27	23 46	2 05	4 09	5 53
3	7 21	8 45	10 21	12 16	14 30	16 50	19 08	21 23	23 42	2 01	4 05	5 49
4	7 17	8 41	10 17	12 12	14 26	16 46	19 04	21 19	23 38	1 57	4 01	5 45
5	7 13	8 37	10 13	12 08	14 22	16 42	19 00	21 15	23 35	1 53	3 58	5 41
6	7 09	8 33	10 09	12 04	14 18	16 38	18 56	21 11	23 31	1 49	3 54	5 37
7	7 05	8 29	10 05	12 00	14 14	16 34	18 52	21 08	23 27	1 45	3 50	5 33
8	7 01	8 25	10 01	11 56	14 10	16 30	18 48	21 04	23 23	1 41	3 46	5 29
9	6 57	8 21	9 57	11 52	14 06	16 27	18 45	21 00	23 19	1 38	3 42	5 25
10	6 53	8 17	9 53	11 48	14 02	16 23	18 41	20 56	23 15	1 34	3 38	5 21
11	6 49	8 13	9 49	11 44	13 58	16 19	18 37	20 52	23 11	1 30	3 34	5 17
12	6 45	8 09	9 45	11 40	13 54	16 15	18 33	20 48	23 08	1 26	3 30	5 14
13	6 41	8 05	9 41	11 36	13 50	16 11	18 29	20 44	23 04	1 23	3 27	5 10
14	6 37	8 01	9 37	11 32	13 46	16 07	18 25	20 40	23 00	1 19	3 23	5 06
15	6 33	7 57	9 33	11 28	13 42	16 03	18 21	20 36	22 56	1 15	3 19	5 02
16	6 29	7 53	9 29	11 24	13 38	15 59	18 17	20 32	22 52	1 11	3 15	4 58
17	6 25	7 49	9 25	11 20	13 34	15 55	18 13	20 28	22 48	1 07	3 11	4 54
18	6 21	7 45	9 21	11 16	13 30	15 51	18 09	20 24	22 44	1 03	3 07	4 50
19	6 17	7 41	9 17	11 12	13 26	15 47	18 05	20 20	22 40	0 59	3 03	4 46
20	6 13	7 37	9 13	11 08	13 23	15 43	18 01	20 16	22 36	0 55	2 59	4 42
21	6 09	7 33	9 09	11 04	13 19	15 39	17 57	20 12	22 32	0 51	2 55	4 38
22	6 05	7 29	9 05	11 00	13 15	15 35	17 53	20 08	22 28	0 47	2 51	4 34
23	6 01	7 26	9 01	10 56	13 11	15 31	17 49	20 04	22 24	0 43	2 47	4 30
24	5 57	7 22	8 57	10 53	13 07	15 27	17 45	20 00	22 20	0 39	2 43	4 27
25	5 53	7 18	8 53	10 49	13 03	15 23	17 41	19 56	22 16	0 35	2 39	4 23
26	5 49	7 14	8 49	10 45	12 59	15 19	17 37	19 53	22 12	0 31	2 35	4 19
27	5 45	7 10	8 46	10 41	12 55	15 15	17 33	19 49	22 08	0 27	2 31	4 15
28	5 41	7 06	8 42	10 37	12 51	15 11	17 29	19 45	22 04	0 23	2 28	4 11
29	5 37	7 02	8 38	10 33	12 47	15 07	17 25	19 41	22 00	0 19	2 24	4 07
30	5 34	6 58	8 34	10 29	12 44	15 03	17 21	19 37	21 56	0 15	2 20	4 03
31	5 30	6 54	8 30	10 25	12 40	14 59	17 17	19 33	21 52	0 11	2 16	3 59
अप्रै.1	5 26	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अप्रै.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
ता.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
1	6 50	8 26	10 21	12 36	14 55	17 13	19 29	21 48	0 07	2 12	3 55	5 22
2	6 46	8 22	10 17	12 32	14 51	17 09	19 25	21 44	0 03	2 08	3 51	5 18
3	6 42	8 18	10 13	12 28	14 47	17 05	19 21	21 40	23 59	2 04	3 47	5 14
4	6 38	8 14	10 09	12 24	14 43	17 01	19 18	21 36	23 55	2 00	3 43	5 10
5	6 34	8 10	10 05	12 20	14 39	16 57	19 14	21 33	23 52	1 56	3 39	5 06
6	6 31	8 07	10 01	12 16	14 35	16 53	19 10	21 29	23 48	1 52	3 35	5 02
7	6 27	8 03	9 58	12 12	14 31	16 49	19 06	21 25	23 44	1 48	3 31	4 58
8	6 23	7 59	9 54	12 08	14 27	16 46	19 02	21 21	23 40	1 44	3 27	4 54
9	6 19	7 55	9 50	12 04	14 23	16 42	18 58	21 17	23 36	1 40	3 23	4 51
10	6 15	7 51	9 46	12 00	14 20	16 38	18 54	21 13	23 32	1 36	3 19	4 47
11	6 11	7 47	9 42	11 56	14 16	16 34	18 50	21 09	23 28	1 32	3 15	4 43
12	6 07	7 43	9 38	11 52	14 12	16 30	18 46	21 05	23 24	1 28	3 11	4 39
13	6 03	7 39	9 34	11 48	14 08	16 26	18 42	21 01	23 20	1 24	3 07	4 35
14	5 59	7 35	9 30	11 44	14 04	16 22	18 38	20 57	23 16	1 20	3 03	4 31
15	5 55	7 31	9 26	11 41	14 00	16 18	18 34	20 53	23 12	1 16	2 59	4 27
16	5 51	7 27	9 22	11 37	13 56	16 14	18 30	20 49	23 08	1 12	2 55	4 23
17	5 47	7 23	9 18	11 33	13 52	16 10	18 26	20 45	23 04	1 08	2 51	4 19
18	5 43	7 19	9 15	11 29	13 49	16 06	18 23	20 41	23 00	1 04	2 47	4 15
19	5 39	7 15	9 11	11 25	13 45	16 02	18 19	20 37	22 56	1 00	2 43	4 11
20	5 35	7 11	9 07	11 21	13 41	15 58	18 15	20 33	22 52	0 56	2 39	4 07
21	5 31	7 07	9 03	11 17	13 37	15 54	18 11	20 29	22 49	0 52	2 35	4 03
22	5 27	7 03	8 59	11 13	13 33	15 50	18 07	20 25	22 45	0 48	2 31	3 59
23	5 23	6 59	8 55	11 09	13 29	15 46	18 03	20 22	22 41	0 44	2 27	3 55
24	5 19	6 55	8 51	11 05	13 25	15 42	17 59	22 18	22 37	0 40	2 23	3 51
25	5 15	6 51	8 47	11 01	13 21	15 38	17 55	20 14	22 33	0 36	2 19	3 47
26	5 11	6 47	8 43	10 57	13 17	15 34	17 51	20 10	22 29	0 32	2 15	3 43
27	5 07	6 44	8 39	10 53	13 13	15 30	17 47	20 06	22 25	0 28	2 11	3 39
28	5 03	6 40	8 35	10 49	13 10	15 26	17 43	20 02	22 21	0 24	2 07	3 35
29	4 59	6 36	8 31	10 45	13 06	15 22	17 39	19 58	22 17	0 20	2 03	3 31
30	4 55	6 32	8 27	10 41	13 02	15 19	17 35	19 54	22 13	0 17	1 59	3 27
मई 1	4 51	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न प्रारम्भकाल सारणी (भा.स्टैं.टा.) दिल्ली (DELHI) मई–जून (MAY-JUNE)

मई	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
ता.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
1	6 28	8 23	10 37	12 58	15 15	17 31	19 50	22 09	0 13	1 56	3 23	4 47
2	6 24	8 19	10 33	12 54	15 11	17 27	19 46	22 05	0 09	1 52	3 19	4 44
3	6 20	8 15	10 29	12 50	15 07	17 24	19 42	22 01	0 05	1 48	3 16	4 40
4	6 16	8 11	10 25	12 46	15 03	17 20	19 38	21 57	0 01	1 44	3 12	4 36
5	6 12	8 07	10 21	12 42	14 59	17 16	19 34	21 53	23 57	1 40	3 08	4 32
6	6 08	8 03	10 17	12 38	14 55	17 12	19 30	21 49	23 53	1 36	3 04	4 28
7	6 04	7 59	10 13	12 34	14 51	17 08	19 26	21 45	23 49	1 32	3 00	4 24
8	6 00	7 55	10 09	12 30	14 47	17 04	19 22	21 41	23 45	1 28	2 56	4 20
9	5 56	7 51	10 05	12 26	14 43	17 00	19 18	21 37	23 41	1 24	2 52	4 16
10	5 52	7 47	10 01	12 22	14 39	16 56	19 14	21 33	23 37	1 20	2 48	4 12
11	5 48	7 44	9 57	12 18	14 35	16 52	19 10	21 29	23 33	1 16	2 44	4 08
12	5 44	7 40	9 53	12 14	14 31	16 48	19 06	21 25	23 29	1 12	2 40	4 04
13	5 40	7 36	9 49	12 10	14 28	16 44	19 02	21 21	23 25	1 08	2 36	4 00
14	5 36	7 32	9 45	12 06	14 24	16 40	18 58	21 17	23 21	1 04	2 32	3 56
15	5 32	7 28	9 41	12 02	14 20	16 36	18 54	21 13	23 17	1 00	2 28	3 52
16	5 28	7 24	9 37	11 58	14 16	16 32	18 50	21 09	23 13	0 56	2 24	3 48
17	5 24	7 20	9 33	11 54	14 12	16 28	18 46	21 05	23 09	0 52	2 20	3 44
18	5 20	7 16	9 29	11 50	14 08	16 24	18 42	21 01	23 05	0 48	2 16	3 40
19	5 16	7 12	9 25	11 46	14 04	16 20	18 38	20 57	23 01	0 44	2 12	3 36
20	5 12	7 08	9 21	11 42	14 00	16 16	18 34	20 53	22 57	0 40	2 09	3 32
21	5 08	7 04	9 17	11 38	13 56	16 12	18 30	20 49	22 53	0 36	2 05	3 28
22	5 04	7 00	9 13	11 34	13 52	16 08	18 26	20 45	22 49	0 32	2 01	3 24
23	5 00	6 56	9 09	11 30	13 48	16 04	18 22	20 41	22 45	0 28	1 57	3 20
24	4 56	6 52	9 05	11 26	13 44	16 01	18 19	20 38	22 42	0 25	1 53	3 16
25	4 52	6 48	9 01	11 22	13 40	15 57	18 15	20 34	22 38	0 21	1 49	3 12
26	4 48	6 44	8 58	11 18	13 36	15 53	18 11	20 30	22 34	0 17	1 45	3 08
27	4 44	6 40	8 54	11 14	13 32	15 49	18 07	20 26	22 30	0 13	1 41	3 04
28	4 40	6 36	8 50	11 10	13 28	15 45	18 03	20 22	22 26	0 09	1 37	3 01
29	4 36	6 32	8 46	11 06	13 24	14 41	17 59	20 18	22 22	0 05	1 33	2 57
30	4 [illegible]	6 28	8 42	11 02	13 20	15 37	17 55	20 14	22 18	0 01	1 29	2 53
31	4 29	6 24	8 38	10 58	13 16	15 33	17 51	20 10	22 14	23 57	1 25	2 49
जून 1	4 25	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

जून	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
ता.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
1	6 20	8 35	10 54	13 12	15 29	17 47	20 06	22 10	23 53	1 21	2 45	4 21
2	6 16	8 31	10 50	13 08	15 25	17 43	20 02	22 06	23 49	1 17	2 41	4 17
3	6 12	8 27	10 46	13 04	15 21	17 39	19 58	22 02	23 45	1 13	2 37	4 13
4	6 08	8 23	10 42	13 00	15 17	17 35	19 54	21 58	23 41	1 09	2 33	4 09
5	6 04	8 19	10 38	12 56	15 13	17 31	19 50	21 54	23 37	1 05	2 29	4 05
6	6 00	8 15	10 34	12 52	15 09	17 27	19 46	21 50	23 33	1 01	2 25	4 01
7	5 57	8 11	10 31	12 48	15 05	17 23	19 42	21 46	23 29	0 57	2 21	3 58
8	5 53	8 07	10 27	12 44	15 01	17 19	19 39	21 43	23 26	0 53	2 17	3 54
9	5 49	8 03	10 23	12 40	14 58	17 16	19 35	21 39	23 22	0 49	2 13	3 50
10	5 45	7 59	10 19	12 37	14 54	17 12	19 31	21 35	23 18	0 46	2 09	3 46
11	5 41	7 55	10 15	12 33	14 50	17 08	19 27	21 31	23 14	0 42	2 05	3 42
12	5 37	7 51	10 11	12 29	14 46	17 04	19 23	21 27	23 10	0 38	2 02	3 38
13	5 33	7 47	10 07	12 25	14 42	17 00	19 19	21 23	23 06	0 34	1 58	3 34
14	5 29	7 43	10 03	12 21	14 38	16 56	19 15	21 19	23 02	0 30	1 54	3 30
15	5 25	7 39	9 59	12 17	14 34	16 52	19 11	21 15	22 58	0 26	1 50	3 26
16	5 21	7 35	9 55	12 13	14 30	16 48	19 07	21 11	22 54	0 22	1 46	3 22
17	5 17	7 31	9 51	12 09	14 26	16 44	19 03	21 07	22 50	0 18	1 42	3 18
18	5 13	7 27	9 47	12 05	14 22	16 40	18 59	21 03	22 46	0 14	1 38	3 14
19	5 09	7 23	9 43	12 02	14 18	16 36	18 55	20 59	22 42	0 10	1 34	3 10
20	5 05	7 19	9 39	11 58	14 14	16 32	18 51	20 55	22 38	0 06	1 30	3 06
21	5 01	7 15	9 36	11 54	14 10	16 28	18 47	20 51	22 34	0 02	1 26	3 02
22	4 57	7 11	9 32	11 50	14 06	16 24	18 43	20 47	22 30	23 58	1 22	2 58
23	4 53	7 07	9 28	11 46	14 02	16 20	18 39	20 43	22 26	23 54	1 18	2 54
24	4 49	7 03	9 24	11 42	13 58	16 16	18 36	20 39	22 22	23 51	1 15	2 50
25	4 46	6 59	9 20	11 38	13 54	16 13	18 32	20 35	22 18	23 47	1 11	2 46
26	4 42	6 55	9 16	11 34	13 50	16 09	18 28	20 31	22 14	23 43	1 07	2 43
27	4 38	6 51	9 12	11 30	13 46	16 05	18 24	20 27	22 10	23 39	1 03	2 39
28	4 34	6 47	9 09	11 26	14 43	16 01	18 20	20 23	22 06	23 35	0 59	2 35
29	4 30	6 43	9 05	11 23	13 39	15 57	18 16	20 20	22 02	23 31	0 55	2 31
30	4 26	6 39	9 01	1[illegible]	13 35	15 54	18 13	20 16	21 59	23 28	0 52	2 28
जुला. 1	4 22	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न प्रारम्भकाल सारणी (भा.स्टैं.टा.) दिल्ली (DELHI) जुलाई–अगस्त (JUL.- AUG.)

जुला.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
ता.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
1	6 35	8 57	11 15	13 31	15 50	18 09	20 13	21 56	23 24	0 48	2 24	4 18
2	6 31	8 53	11 11	13 27	15 46	18 05	20 09	21 52	23 20	0 44	2 20	4 14
3	6 27	8 49	11 07	13 23	15 42	18 01	20 05	21 48	23 16	0 40	2 16	4 10
4	6 24	8 46	11 04	13 19	15 38	17 57	20 01	21 44	23 12	0 36	2 12	4 06
5	6 20	8 42	11 00	13 15	15 34	17 53	19 57	21 40	23 08	0 32	2 08	4 02
6	6 16	8 38	10 56	13 11	15 30	17 49	19 53	21 36	23 04	0 28	2 04	3 58
7	6 12	8 34	10 52	13 07	15 26	17 46	19 49	21 32	23 00	0 24	2 00	3 55
8	6 09	8 30	10 48	13 04	15 22	17 42	19 46	21 28	22 56	0 21	1 56	3 51
9	6 05	8 26	10 44	13 00	15 18	17 38	19 42	21 24	22 53	0 17	1 53	3 47
10	6 01	8 22	10 40	12 56	15 15	17 34	19 38	21 21	22 49	0 13	1 49	3 43
11	5 57	8 18	10 36	12 52	15 11	17 30	19 34	21 17	22 45	0 09	1 45	3 39
12	5 53	8 14	10 32	12 48	15 07	17 26	19 30	21 13	22 41	0 05	1 41	3 36
13	5 49	8 10	10 28	12 45	15 03	17 22	19 26	21 09	22 37	0 01	1 37	3 32
14	5 45	8 06	10 25	12 41	14 59	17 18	19 22	21 05	22 34	23 57	1 33	3 28
15	5 41	8 03	10 21	12 37	14 55	17 14	19 19	21 02	22 30	23 54	1 30	3 24
16	5 37	7 59	10 17	12 33	14 51	17 10	19 15	20 58	22 26	23 50	1 26	3 20
17	5 34	7 55	10 13	12 29	14 47	17 06	19 11	20 54	22 22	23 46	1 22	3 16
18	5 30	7 51	10 09	12 25	14 43	17 02	19 07	20 50	22 18	23 42	1 18	3 12
19	5 26	7 47	10 05	12 21	14 40	16 58	19 03	20 46	22 14	23 38	1 14	3 08
20	5 22	7 43	10 02	12 17	14 36	16 54	18 59	20 42	22 10	23 34	1 10	3 04
21	5 18	7 39	9 58	12 13	14 32	16 51	18 55	20 38	22 06	23 30	1 06	3 00
22	5 15	7 35	9 54	12 09	14 28	16 47	18 51	20 34	22 02	23 26	1 02	2 56
23	5 11	7 32	9 50	12 05	14 24	16 43	18 47	20 30	21 58	23 22	0 58	2 53
24	5 07	7 28	9 46	12 01	14 20	16 39	18 43	20 26	21 55	23 18	0 54	2 49
25	5 03	7 24	9 42	11 58	14 16	16 35	18 40	20 23	21 51	23 14	0 50	2 45
26	5 00	7 20	9 38	11 54	14 12	16 31	18 36	20 19	21 47	23 10	0 46	2 41
27	4 56	7 16	9 34	11 50	14 08	16 27	18 32	20 15	21 43	23 06	0 42	2 37
28	4 52	7 12	9 30	11 46	14 04	16 23	18 28	20 11	21 39	23 02	0 38	2 34
29	4 48	7 08	9 27	11 42	14 00	16 19	18 24	20 07	21 35	22 58	0 35	2 30
30	4 44	7 04	9 23	11 38	13 56	16 15	18 20	20 03	21 31	22 54	0 31	2 26
31	4 40	7 00	9 19	11 34	13 53	16 12	18 16	19 59	21 27	22 50	0 27	2 22
अग.1	4 36	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अग.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
ता.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
1	6 56	9 15	11 31	13 49	16 08	18 12	19 55	21 23	22 47	0 23	2 18	4 32
2	6 52	9 11	11 27	13 45	16 05	18 09	19 51	21 19	22 43	0 19	2 14	4 28
3	6 48	9 07	11 23	13 42	16 01	18 05	19 47	21 15	22 39	0 15	2 10	4 24
4	6 44	9 03	11 19	13 38	15 57	18 01	19 44	21 11	22 35	0 11	2 06	4 20
5	6 40	9 00	11 15	13 34	15 53	17 57	19 40	21 08	22 31	0 08	2 02	4 16
6	6 36	8 56	11 12	13 30	15 49	17 53	19 36	21 04	22 28	0 04	1 58	4 13
7	6 32	8 52	11 08	13 26	15 45	17 49	19 32	21 00	22 24	0 00	1 54	4 09
8	6 29	8 48	11 04	13 22	15 41	17 45	19 28	20 56	22 20	23 56	1 50	4 05
9	6 25	8 44	11 00	13 18	15 37	17 42	19 24	20 52	22 16	23 52	1 46	4 01
10	6 21	8 41	10 56	13 14	15 33	17 38	19 21	20 48	22 12	23 48	1 43	3 57
11	6 17	8 37	10 53	13 10	15 29	17 34	19 17	20 44	22 08	23 44	1 39	3 54
12	6 13	8 33	10 49	13 06	15 25	17 30	19 13	20 40	22 04	23 40	1 35	3 50
13	6 09	8 29	10 45	13 02	15 21	17 26	19 09	20 36	22 00	23 36	1 32	3 46
14	6 05	8 25	10 41	12 59	15 17	17 22	19 05	20 33	21 56	23 32	1 28	3 42
15	6 01	8 21	10 37	12 55	15 14	17 18	19 01	20 29	21 53	23 29	1 24	3 38
16	5 57	8 17	10 33	12 51	15 10	17 14	18 57	20 25	21 49	23 25	1 20	3 34
17	5 54	8 13	10 29	12 47	15 06	17 10	18 53	20 21	21 45	23 21	1 16	3 30
18	5 50	8 09	10 25	12 43	15 02	17 06	18 49	20 17	21 41	23 17	1 12	3 26
19	5 46	8 05	10 21	12 39	14 58	17 02	18 45	20 13	21 37	23 13	1 08	3 22
20	5 42	8 02	10 17	12 35	14 54	16 58	18 41	20 09	21 33	23 09	1 04	3 18
21	5 39	7 58	10 13	12 31	14 50	16 54	18 37	20 05	21 29	23 05	1 00	3 14
22	5 35	7 54	10 09	12 27	14 46	16 50	18 33	20 01	21 25	23 01	0 56	3 10
23	5 31	7 50	10 05	12 23	14 42	16 46	18 29	19 57	21 21	22 57	0 52	3 06
24	5 27	7 46	10 02	12 19	14 38	16 42	18 25	19 53	21 17	22 53	0 48	3 02
25	5 23	7 42	9 58	12 15	14 34	16 38	18 21	19 49	21 13	22 49	0 44	2 58
26	5 19	7 38	9 54	12 11	14 30	16 34	18 17	19 45	21 09	22 45	0 41	2 54
27	5 15	7 34	9 50	12 08	14 27	16 31	18 14	19 42	21 06	22 42	0 37	2 50
28	5 11	7 30	9 46	12 04	14 23	16 27	18 10	19 38	21 02	22 38	0 33	2 46
29	5 07	7 26	9 42	12 00	14 19	16 23	18 06	19 34	20 58	22 34	0 29	2 42
30	5 03	7 22	9 38	11 56	14 15	16 19	18 02	19 30	20 54	22 30	0 25	2 38
31	4 59	7 18	9 34	11 52	14 11	16 15	17 58	19 26	20 50	22 26	0 21	2 34
सितं. 1	4 55	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न प्रारम्भकाल सारणी (भा.स्टैं.टा.) दिल्ली (DELHI) सितम्बर–अक्तूबर (SEP.- OCT.)

सितं.	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
ता.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
1	7 14	9 30	11 48	14 07	16 11	17 54	19 22	20 46	22 22	0 17	2 31	4 52
2	7 10	9 26	11 44	14 03	16 07	17 50	19 18	20 42	22 18	0 13	2 27	4 48
3	7 06	9 22	11 40	13 59	16 03	17 46	19 14	20 38	22 14	0 09	2 23	4 44
4	7 02	9 18	11 36	13 55	15 59	17 42	19 10	20 34	22 10	0 05	2 19	4 40
5	6 58	9 14	11 32	13 51	15 55	17 38	19 06	20 30	22 06	0 01	2 15	4 36
6	6 54	9 10	11 28	13 47	15 51	17 34	19 02	20 26	22 02	23 57	2 11	4 32
7	6 50	9 06	11 24	13 43	15 47	17 30	18 58	20 22	21 58	23 53	2 07	4 28
8	6 46	9 02	11 20	13 39	15 43	17 26	18 54	20 18	21 54	23 49	2 03	4 24
9	6 42	8 58	11 16	13 35	15 39	17 22	18 50	20 14	21 50	23 45	1 59	4 20
10	6 38	8 54	11 12	13 31	15 35	17 18	18 46	20 10	21 46	23 41	1 55	4 16
11	6 34	8 50	11 08	13 27	15 31	17 14	18 42	20 06	21 42	23 37	1 51	4 12
12	6 30	8 46	11 04	13 23	15 27	17 10	18 38	20 02	21 38	23 33	1 47	4 08
13	6 26	8 42	11 00	13 19	15 23	17 06	18 34	19 58	21 34	23 29	1 43	4 04
14	6 22	8 38	10 56	13 15	15 19	17 02	18 30	19 54	21 30	23 25	1 39	4 00
15	6 18	8 34	10 52	13 11	15 15	16 58	18 26	19 50	21 26	23 21	1 35	3 56
16	6 14	8 30	10 48	13 07	15 11	16 54	18 22	19 46	21 22	23 17	1 31	3 52
17	6 10	8 26	10 44	13 03	15 07	16 50	18 18	19 42	21 18	23 13	1 27	3 48
18	6 06	8 22	10 40	12 59	15 03	16 46	18 14	19 38	21 14	23 09	1 23	3 44
19	6 02	8 18	10 36	12 55	14 59	16 42	18 10	19 34	21 10	23 05	1 19	3 40
20	5 58	8 14	10 32	12 51	14 55	16 38	18 06	19 30	21 06	23 01	1 15	3 36
21	5 54	8 10	10 28	12 47	14 51	16 34	18 02	19 26	21 02	22 57	1 11	3 32
22	5 50	8 06	10 24	12 43	14 47	16 30	17 58	19 22	20 58	22 53	1 07	3 28
23	5 46	8 02	10 20	12 39	14 43	16 26	17 54	19 18	20 54	22 49	1 03	3 24
24	5 42	7 58	10 16	12 35	14 39	16 22	17 50	19 14	20 50	22 45	0 59	3 20
25	5 38	7 54	10 12	12 31	14 35	16 18	17 46	19 10	20 46	22 41	0 55	3 16
26	5 34	7 50	10 08	12 27	14 31	16 14	17 42	19 06	20 42	22 37	0 51	3 12
27	5 30	7 46	10 04	12 23	14 27	16 10	17 38	19 02	20 38	22 33	0 47	3 08
28	5 26	7 42	10 00	12 19	14 23	16 06	17 34	18 58	20 34	22 29	0 43	3 04
29	5 22	7 38	9 56	12 15	14 19	16 02	17 30	18 54	20 30	22 25	0 39	3 00
30	5 [illegible]8	7 34	9 53	12 12	14 16	15 59	17 27	18 51	20 27	22 22	0 36	2 57
अक्तू.1	5 1[illegible]	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अक्तू.	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
ता.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
1	7 30	9 49	12 08	14 12	15 55	17 23	18 47	20 23	22 18	0 32	2 53	5 11
2	7 26	9 45	12 04	14 08	15 51	17 19	18 43	20 19	22 14	0 28	2 49	5 07
3	7 23	9 42	12 00	14 04	15 47	17 15	18 39	20 15	22 10	0 24	2 45	5 03
4	7 19	9 38	11 56	14 00	15 43	17 11	18 35	20 11	22 06	0 20	2 41	4 59
5	7 15	9 34	11 52	13 56	15 39	17 07	18 31	20 07	22 02	0 16	2 37	4 55
6	7 11	9 30	11 48	13 52	15 35	17 03	18 27	20 03	21 58	0 12	2 33	4 51
7	7 07	9 26	11 44	13 48	15 31	16 59	18 23	19 59	21 54	0 08	2 29	4 47
8	7 03	9 22	11 40	13 44	15 27	16 55	18 19	19 55	21 50	0 04	2 25	4 43
9	6 59	9 18	11 36	13 40	15 23	16 51	18 15	19 51	21 46	0 00	2 21	4 39
10	6 55	9 14	11 32	13 36	15 19	16 47	18 11	19 47	21 42	23 56	2 17	4 35
11	6 51	9 10	11 28	13 32	15 15	16 43	18 07	19 43	21 38	23 52	2 13	4 31
12	6 47	9 06	11 24	13 28	15 11	16 39	18 03	19 39	21 34	23 48	2 09	4 27
13	6 43	9 02	11 20	13 24	15 07	16 35	17 59	19 35	21 30	23 44	2 05	4 23
14	6 39	8 58	11 16	13 20	15 03	16 31	17 55	19 31	21 26	23 40	2 01	4 19
15	6 35	8 54	11 12	13 16	14 59	16 27	17 51	19 27	21 22	23 36	1 57	4 15
16	6 31	8 50	11 08	13 12	14 55	16 23	17 47	19 23	21 18	23 32	1 53	4 11
17	6 27	8 46	11 04	13 08	14 51	16 19	17 43	19 19	21 14	23 28	1 49	4 07
18	6 23	8 42	11 00	13 04	14 47	16 15	17 39	19 15	21 10	23 24	1 45	4 03
19	6 19	8 38	10 56	13 00	14 43	16 11	17 35	19 11	21 06	23 20	1 41	3 59
20	6 15	8 34	10 52	12 56	14 39	16 07	17 31	19 07	21 02	23 16	1 37	3 55
21	6 11	8 30	10 48	12 52	14 35	16 03	17 27	19 03	20 58	23 12	1 33	3 51
22	6 07	8 26	10 44	12 48	14 31	15 59	17 23	18 59	20 54	23 08	1 29	3 47
23	6 03	8 22	10 40	12 44	14 27	15 55	17 19	18 55	20 50	23 04	1 25	3 43
24	5 59	8 18	10 36	12 40	14 23	15 51	17 15	18 51	20 46	23 00	1 21	3 39
25	5 56	8 15	10 33	12 37	14 20	15 48	17 12	18 48	20 42	22 57	1 17	3 36
26	5 52	8 11	10 29	12 33	14 16	15 44	17 08	18 44	20 38	22 53	1 13	3 32
27	5 48	8 07	10 25	12 29	14 12	15 40	17 04	18 40	20 34	22 49	1 09	3 28
28	5 44	8 03	10 21	12 25	14 08	15 36	17 00	18 36	20 30	22 45	1 06	3 24
29	5 40	7 59	10 17	[illegible]	14 04	15 32	16 56	18 32	20 27	22 41	1 02	3 20
30	5 36	7 55	10 13	12 17	14 00	15 28	16 52	18 28	20 23	22 37	0 58	3 16
31	5 33	7 51	10 09	12 13	13 56	15 24	16 48	18 24	20 19	22 33	0 54	3 12
नवं. 1	5 29	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न प्रारम्भकाल सारणी (भा.स्टैं.टा.) दिल्ली (DELHI) नवम्बर–दिसम्बर (NOV.- DEC.)

दैनिक लग्न प्रारम्भकाल सारणी (भा.स्टैं.टा.) दिल्ली (DELHI) नवम्बर–दिसम्बर (NOV.- DEC.)

नवं.	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
ता.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
1	7 47	10 06	12 10	13 53	15 21	16 44	18 20	20 15	22 29	0 50	3 08	5 25
2	7 43	10 02	12 06	13 49	15 17	16 40	18 16	20 11	22 25	0 46	3 04	5 21
3	7 39	9 58	12 02	13 45	15 13	16 37	18 13	20 08	22 22	0 43	3 00	5 17
4	7 35	9 54	11 58	13 41	15 09	16 33	18 09	20 04	22 18	0 39	2 56	5 13
5	7 31	9 50	11 54	13 37	15 05	16 29	18 05	20 00	22 14	0 35	2 52	5 09
6	7 27	9 46	11 50	13 33	15 01	16 25	18 01	19 56	22 10	0 31	2 48	5 05
7	7 24	9 42	11 46	13 29	14 57	16 21	17 57	19 52	22 06	0 27	2 45	5 01
8	7 20	9 38	11 42	13 25	14 53	16 17	17 53	19 48	22 02	0 23	2 41	4 57
9	7 16	9 34	11 38	13 21	14 49	16 13	17 49	19 44	21 58	0 19	2 37	4 53
10	7 12	9 30	11 34	13 17	14 45	16 09	17 45	19 40	21 54	0 15	2 33	4 49
11	7 08	9 26	11 30	13 13	14 41	16 05	17 41	19 36	21 50	0 11	2 29	4 45
12	7 04	9 22	11 26	13 09	14 37	16 01	17 37	19 32	21 46	0 07	2 25	4 41
13	7 00	9 18	11 22	13 05	14 33	15 57	17 33	19 28	21 42	0 03	2 21	4 37
14	6 56	9 14	11 18	13 01	14 29	15 53	17 29	19 24	21 38	23 59	2 17	4 33
15	6 52	9 10	11 14	12 57	14 25	15 49	17 25	19 20	21 34	23 55	2 13	4 29
16	6 48	9 06	11 10	12 53	14 21	15 45	17 21	19 16	21 30	23 51	2 09	4 25
17	6 43	9 02	11 06	12 49	14 17	15 41	17 17	19 12	21 26	23 47	2 05	4 21
18	6 39	8 58	11 02	12 45	14 13	15 37	17 13	19 08	21 22	23 43	2 01	4 17
19	6 35	8 54	10 58	12 41	14 09	15 33	17 09	19 04	21 18	23 39	1 57	4 13
20	6 31	8 50	10 54	12 37	14 05	15 29	17 05	19 00	21 14	23 35	1 53	4 09
21	6 27	8 46	10 50	12 33	14 01	15 25	17 01	18 56	21 10	23 31	1 49	4 05
22	6 23	8 43	10 47	12 30	13 58	15 22	16 58	18 53	21 07	23 28	1 46	4 02
23	6 20	8 39	10 43	12 26	13 54	15 18	16 54	18 49	21 03	23 24	1 42	3 58
24	6 16	8 35	10 39	12 22	13 50	15 14	16 50	18 45	20 59	23 20	1 38	3 54
25	6 12	8 31	10 35	12 18	13 46	15 10	16 46	18 41	20 55	23 16	1 34	3 50
26	6 08	8 28	10 31	12 14	13 42	15 06	16 42	18 37	20 51	23 12	1 30	3 46
27	6 04	8 23	10 27	12 10	13 38	15 02	16 38	18 33	20 47	23 08	1 26	3 42
28	6 00	8 19	10 23	12 06	13 34	14 58	16 34	18 29	20 43	23 04	1 22	3 38
29	5 56	8 16	10 20	12 03	13 31	14 55	16 31	18 26	20 40	23 01	1 19	3 35
30	5 53	8 12	10 16	11 59	13 27	14 51	16 27	18 22	20 36	22 57	1 15	3 31
दिसं.1	5 49	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दिसं.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
ता.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
1	8 08	10 12	11 55	13 23	14 47	16 23	18 18	20 32	22 53	1 11	3 27	5 45
2	8 04	10 08	11 51	13 19	14 43	16 19	18 14	20 28	22 49	1 07	3 23	5 41
3	8 00	10 04	11 47	13 15	14 39	16 15	18 10	20 24	22 45	1 03	3 19	5 37
4	7 56	10 00	11 43	13 11	14 35	16 11	18 06	20 20	22 41	0 59	3 15	5 33
5	7 52	9 56	11 39	13 07	14 31	16 07	18 02	20 16	22 37	0 55	3 11	5 29
6	7 48	9 52	11 35	13 03	14 27	16 03	17 58	20 12	22 33	0 51	3 07	5 25
7	7 44	9 48	11 31	12 59	14 23	15 59	17 54	20 08	22 29	0 47	3 03	5 21
8	7 40	9 44	11 27	12 55	14 19	15 55	17 50	20 04	22 25	0 43	2 59	5 17
9	7 36	9 40	11 23	12 51	14 15	15 51	17 46	20 00	22 21	0 39	2 55	5 13
10	7 33	9 37	11 20	12 48	14 12	15 48	17 43	19 57	22 18	0 36	2 52	5 10
11	7 29	9 33	11 16	12 44	14 08	15 44	17 39	19 53	22 14	0 32	2 48	5 06
12	7 25	9 29	11 12	12 40	14 04	15 40	17 35	19 49	22 10	0 28	2 44	5 02
13	7 21	9 25	11 08	12 36	14 01	15 36	17 31	19 45	22 06	0 24	2 40	4 58
14	7 17	9 21	11 04	12 32	13 56	15 32	17 27	19 41	22 02	0 20	2 36	4 54
15	7 13	9 17	11 00	12 28	13 52	15 28	17 23	19 37	21 58	0 16	2 32	4 50
16	7 09	9 13	10 56	12 24	13 48	15 24	17 19	19 33	21 54	0 12	2 28	4 46
17	7 05	9 09	10 52	12 21	13 44	15 20	17 15	19 29	21 50	0 08	2 24	4 42
18	7 01	9 05	10 49	12 17	13 41	15 16	17 11	19 25	21 46	0 04	2 20	4 38
19	6 5[illegible]	9 01	10 45	12 13	13 36	15 12	17 07	19 21	21 42	0 00	2 16	4 34
20	6 53	8 57	10 41	12 09	13 32	15 08	17 03	19 17	21 38	23 56	2 12	4 30
21	6 49	8 53	10 37	12 05	13 28	15 04	16 59	19 13	21 34	23 52	2 09	4 26
22	6 45	8 49	10 33	12 01	13 24	15 00	16 55	19 10	21 30	23 49	2 05	4 22
23	6 41	8 45	10 29	11 57	13 20	14 56	16 51	19 06	21 26	23 45	2 01	4 18
24	6 37	8 42	10 25	11 53	13 16	14 52	16 48	19 02	21 23	23 41	1 57	4 14
25	6 33	8 38	10 21	11 49	13 12	14 48	16 44	18 58	21 19	23 37	1 53	4 10
26	6 30	8 34	10 17	11 45	13 09	14 44	16 40	18 54	21 15	23 33	1 49	4 06
27	6 26	8 30	10 13	11 41	13 05	14 41	16 36	18 50	21 11	23 29	1 45	4 03
28	6 22	8 26	10 09	11 37	13 01	14 37	16 32	18 46	21 07	23 25	1 41	3 59
29	6 18	8 22	10 05	11 33	12 57	14 33	16 28	18 42	21 03	23 21	1 37	3 55
30	6 14	8 18	10 01	11 29	12 53	14 29	16 24	18 38	20 59	23 17	1 33	3 51
31	6 10	8 14	9 57	11 25	12 49	14 25	16 20	18 34	20 55	23 13	1 29	3 47
जन.1	6 06	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीयकाल का ज्ञान होना चाहिए, नगरों के अक्षांश–रेखांशों की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए, किन्तु भिन्न–भिन्न अक्षांशों की लग्नसारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्नसारणी का ही प्रयोग होता है। आगे हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्टकालिक सूर्य की जरूरत नहीं होती, जबकि प्रचीन विधि में इनकी जरूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न साधनविधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदयकाल ज्ञात कीजिए। सूर्योदयकाल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ. प.) बना लीजिए और इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पंचांग में दी गई **"अक्षांशादि सारणी"** से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कर लीजिए। अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिएः–

आगे 29, 30, 31 अक्षांशों की तीन लग्नसारणियां दी गई हैं, जो दिल्ली, पंजाब, तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी में इष्टकालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी, पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी, पलों के दाईं ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी–पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घडी, पलों का अन्तर जानिए। अन्तर के इन पलों को **"सहायक सारणी"** (जो अगले पृष्ठ पर दी गई है) के बाईं ओर पहले कॉलम में देखिए। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला–विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला–विकलाएं लिखी हों, उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखे हों, उन्हें लेकर अलग लिखे हुए घडी, पलों में जोड़ दीजिए और उसमें इष्टकाल के घडीपल भी जोड दीजिए। इसे हम **"अभीष्ट घड़ी–पल"** कहेंगे। "अभीष्ट घडी–पल" यदि 60 घड़ी से अधिक हों तो उनमें से 60 घडी घटाकर, शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घडी– पलों" के बराबर (बराबर न मिलें तो उनसे कुछ कम) घडी, पल लग्नसारणी में ढूंढिये, जिन्हें **"सारणीस्थ घड़ी–पल"** कहा जाएगा। "सारणीस्थ घडी–पलों" के बाईं ओर लग्नसारणी के पहले कॉलम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिए। "सारणीस्थ घडी–पलों" के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिए गए घडी–पलों का "सारणीस्थ घडी–पलों" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घडी–पलों" और "अभीष्ट घडी–पलों "का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन मे जहां लिखे हैं, उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला– विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि, अंशों में जोड दें। अव इसमें अगले पृष्ठ पर दी गई "अयनांश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिन्ह के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण– मान लीजिए– वि. सं. 2029 के वैशाख प्रविष्टे 3 को 58 घ. 45 प. इष्ट पर शिमला (हि.प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य 0 रा., 2 अंश 37 क. 47 वि. है। शिमला के अक्षांश 31 अंश 6 क. (उत्तर) हैं, अतः 31 अक्षांश वाली लग्नसारणी में स्पष्ट सूर्य की 0 (मेष) राशि के आगे 2 अंश के नीचे 2 घ. 55 प. हैं, इन्हें अलग लिखा। सारणी में 2 घ. 55 प. के दाईं ओर 3 अंश के नीचे 3 घ. 2 प. लिखे हैं। इनका 2 घ. 55 प. से अन्तर 7 पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहले कॉलम में लिखे हुए 7 पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की 37 क. 47 वि. नहीं मिलीं। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर 34 क. 17 वि. देखें, जिनके बिल्कुल ऊपर 4 पल लिखे हैं। इन्हें अलग लिखे 2 घ. 55 पल में जोड़ा और इष्टकाल के घ. प. भी इसमें जोड़े तो 61 घ. 44 प. (60 घ. घटाने पर 1 घ. 44 प.) 'अभीष्ट घड़ी--पल' हुए। लग्नसारणी में 'अभीष्ट घड़ी–पल' 1 घ. 44 प. नहीं हैं, अतः इससे कुछ कम 1 घ. 40 प. सारणी में देखें, जो "सारणीस्थ घडी पल" हैं। इनके बाईं ओर सारणी के पहले कॉलम में 11 राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में 21 अंश लिखे हैं। इन 11 रा. 21 अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घड़ी–पलों" (1 घ. 40 प.) के दाईं ओर 22 अंश के नीचे 1 घ. 46 प. का 1 घ. 40 प. से अन्तर 6 पल 'सारणीस्थ अन्तर' है। "अभीष्ट घड़ी–पल" (1 घ. 44 प.) और सारणीस्थ घड़ी–पल (1 घ. 40 प.) का अन्तर 4 पल है। 'सहायक सारणी' की ऊपर वाली लाईन में लिखे गए 4 पल के नीचे सारणीस्थ अन्तर के बराबर 6 पल के आगे 40क. 00वि. लिखा है। इन्हें 11रा. 21 अं. में जोडने पर 11 रा. और 21अं. 40क. 00 वि. हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. 2029 के आगे +1 कला लिखा है। इसे चिन्हानुसार 11 रा. 21 अं. 40 क. 0 वि. में जोड़ने पर 11 रा. 21 अं. 41 क. 00 वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्नसाधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्यस्पष्ट जानने की अवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सब की आवश्यकता रहती है।

सारणी (अक्षांश २९° उत्तर) (पलभा ६।३९।६)

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जींद, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२ प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिं. घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७ प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
धनु घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
कु. घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१० प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४८

लग्न सारणी ३०° उत्तर (पलभा ६।५५।४२)

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२ प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिं. घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
कु. घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	३	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर) (पलभा ७।१२।३७)

कपूरथला, चण्डीगढ़ , जालंधर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष घ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मि. घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
क. घ	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिं. घ	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
क. घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तु. घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृ. घ	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७ प	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
म. घ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९ प	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कु. घ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	१५
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
० प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
१ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मि. घ	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
क. घ	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिं. घ	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४ प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
क. घ	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तु. घ	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६ प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृ. घ	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
७ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु घ	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
म. घ	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कु. घ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१० प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

दशमलग्न साधनविधि

इष्टकाल के घ. प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिनमान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह नतकाल होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्नसारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए जैसे कि ऊपर लग्नसारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्नसारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

दशमलग्न साधन का उदाहरणः— वि. सं. २०२६ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं. ३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५९ प. है, अतः दिनार्ध १६ घ. ० प. हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प. में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ, जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है। दशमलग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं. के नीचे) ४ घ. ०६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क. ०० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३ घ. ५६ प. में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प. 'अमीष्ट घड़ी–पल' हुए। "दशम लग्नसारणी" में इन "अमीष्ट घड़ी–पलों" से कुछ कम घ. प. ४६।४२ 'सारणीस्थ घड़ी पल' धनु (८) राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं। अतः ८ रा. १६ अं. को अलग लिखा। सारणी में ४६।४२ के दाईं ओर (१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल का "सारणीस्थ अन्तर" हुआ। 'सारणीस्थ घड़ी–पल' ४६।४२ और अभीष्ट घड़ीपल ४६।४७ का अन्तर ५ पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० पल के आगे ५ पल के नीचे ३० क. ०० वि. मिली। इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं. में जोड़ने पर ८ रा.१६ अं. में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ० वि. हुई। इसमें "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२६ के आगे **दिया गया अयनांश संस्कार + १क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३१ क. ०० वि. निरयण दशमलग्न स्पष्ट हुआ।**

सहायक सारणी

पल	१		२		३		४		५		६		७		८		९		१०		११		१२		१३	
→ ↓	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.
६	१०	०	२०	०	३०	०	४०	०	५०	०	६०	०														
७	८	३४	१७	९	२५	४३	३४	१७	४२	५१	५१	२६	६०	०												
८	७	३०	१५	०	२२	३०	३०	०	३७	३०	४५	०	५२	३०	६०	०										
९	६	४०	१३	२०	२०	०	२६	४०	३३	२०	४०	०	४६	४०	५३	२०	६०	०								
१०	६	०	१२	०	१८	०	२४	०	३०	०	३६	०	४२	०	४८	०	५४	०	६०	०						
११	५	२७	१०	५५	१६	२२	२१	४९	२७	१६	३२	४४	३८	११	४३	३८	४९	५	५४	३३	६०	०				
१२	५	०	१०	०	१५	०	२०	०	२५	०	३०	०	३५	०	४०	०	४५	०	५०	०	५५	०	६०	०		
१३	४	३७	९	१४	१३	५१	१८	२८	२३	५	२७	४२	३२	१९	३६	५६	४१	३३	४६	१०	५०	४७	५५	२३	६०	०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला
२०२३	+ ७	२०३१	०	२०३९	— ७	२०४७	— १३	२०५५	— २०	२०६३	—२६	२०७१	—३३
२०२४	+ ६	२०३२	— १	२०४०	— ८	२०४८	— १४	२०५६	— २१	२०६४	—२७	२०७२	—३४
२०२५	+ ५	२०३३	— २	२०४१	— ९	२०४९	— १५	२०५७	— २२	२०६५	—२८	२०७३	—३५
२०२६	+ ४	२०३४	— ३	२०४२	— ९	२०५०	— १६	२०५८	—२२	२०६६	—२९	२०७४	—३६
२०२७	+ ३	२०३५	— ४	२०४३	—१०	२०५१	— १७	२०५९	—२३	२०६७	—३०	२०७५	—३६
२०२८	+ २	२०३६	— ४	२०४४	—११	२०५२	— १८	२०६०	—२४	२०६८	—३१	२०७६	—३७
२०२९	+ १	२०३७	— ५	२०४५	—१२	२०५३	— १८	२०६१	—२५	२०६९	—३१	२०७७	—३८
२०३०	+ १	२०३८	— ६	२०४६	— १३	२०५४	— १९	२०६२	—२६	२०७०	—३२	२०७८	—३९

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधिी दे रहे है । स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पस्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने 'साम्पातिककाल' की पद्धति को अपनाया है । यहां हम "साम्पातिककाल क्या है"- इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक- विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट-करने की सर्व- साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं ।

विधि:- सां. का. (साम्पातिककाल)से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों)से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते है , तैयार करें -

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर(+या-)
ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी 'से उठाइये।

विशेष- यदि "**अक्षांशादि सारणी** " में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते है ।

ध्यान रहे- भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही है ।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीयमध्यमकाल- जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड - टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के स्टैण्डर्ड - अन्तर के मिनटादि(या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का "**स्थानीयमध्यमकाल**" बन जाता है + यह चिह्न जोड़ने की एवं- यह चिह्न घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है ।

जैसे- चण्डीगढ में दोपहर के १२घं. ५७ मि. (भा. स्टैं टा.) पर स्थानीयमध्यकाल जानने के लिए इस (भा. स्टैं टा.)में से चण्डीगढ का स्टैण्डर्ड अन्तर -२२ मिनट ३२ सेकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सें. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१सितं.१९४२ ई. से १५ अक्तू १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थी । अतः इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे- सन्१९४४ की २० अग. को काई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन में १२ बज कर ४५ मि. पर पैदा हुआ । इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्म काल भा. स्टै.टा. के अनुसार ११ घं ४५ मि. मानना होगा ।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश - आगे दो [नं.(१) और नं.(२)]अयनांशसारणियां दी गई है । अयनांशसारणी नं.(१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखाअंशादि अयनांश लें, और अयनांशसारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड दें; - यह अभीष्ट तारीख का अयनांश होगा ।

जैसे - १५ जुलाई १९६९ ई. को अयनांश जानने के लिए अयनांशसारणी नं.(१) में से सन् १९६९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३अं.२५ क २६ वि. प्राप्त किया । इसमें अयनांशसारणी नं.(२)से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोडने पर २३ अं.२५क. ५६ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल - आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गये है । इनके आधार पर इष्टकालिक साम्पातिककाल इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है-

सां. का. कोष्ठक नं. (१) में से अभीष्ट सन् का सां. की उठाएं। उसमें साम्पातिक काल कोष्ठक नं.(२)से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीप ईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें । इसमें सां. का. कोष्ठक नं.(३)से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठा कर चिन्हानुसार जोडें या घटाएं । इस प्रकार मिले सां. का के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल(जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा- मिनटादि जोडें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा- मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं.(४)से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का बन जाएगा । इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं. से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए ।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण - यहां हम १५ जुलाई १९६९ को भा. स्टै.टा. के अनुसार प्रात: १०घं.४५मि. पर चम्बा (हि. प्र.)में सां. का. स्पष्ट करेगें । अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १०क.(पूर्व)एंव स्टैं. अन्तर - २५ मि. २० से. है । स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण चिह्न वाला है, अत: इसे १० घण्टे४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ । सां. का . कोष्ठक नं. (१)से सन् १९६९ ई. का सां. का. (८घं.४१ मि. २ से.) लिया । इसमें कोष्ठक नं.(२)सें लिया गया १५ जुला. का सां का. (१२घं. ४८ मि. ४९ से.)जोड़ा तो १९ घं.२९ मि. ५१ सै. हुआ । चम्बा के रेखांश ७६अं.१० क. के लिए कोष्ठक नं.(३)वाला संस्कार तो० है। अब १९घं. २९ मि. ५१सैं. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १०घं.१९मि ४० सै. जोडा तो २९घं. ४९मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक न. (४)से स्थानीयमध्यमकाल के १०घं. २० मि. उठाए गए १ मि. ४२सै. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से. हुए । क्योकि यहां घण्टे२४से अधिक हैं अत:२४ घं. घटाए तो ५घं. ५१मि. १३से. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन बातों को भी ध्यान में रखें:-

(१)यदि धन (+)चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.)के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें से २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में ४ मि. जोड कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें । जैसे - कलकता में २जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बज कर ५५ मि.)भा. स्टै. टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । कलकता का रेखांश ८८अं. २४ क, (पूर्व)और स्टैं. अन्तर +२३ मि. ३६ से. है। **स्थानीयमध्यमकाल बनाने** के लिए२३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि. ३६ से. हुए यह २४ घं. से ज्यादा हो गया है , अत: इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ से.

स्थानीयमध्यमकाल हुआ । अब सां. का. बनाने के लिए ... लिखे ८ घं. ४० मि. १२ से. में कोष्ठक नं.(२) से लिए गए २ जन. के ० घं. ३ मि. ५७ से.

... काल से लग्नसाधन की विधि:-

ऊपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी

स्थानीयमध्यमकाल हुआ । अब सां. का. बनाने के लिए कोष्ठक नं.(१) से १९७४ के आगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ से. में कोष्ठक नं.(२) से लिए गए २ जन. के ० घं. ३ मि. ५७ से. जोडने पर ६ घं. ४४ मि. ९ से. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (३) से कलकता के रेखांश ८८ से प्राप्त –८ से. चिह्न के अनुसार घटाए, तो ६ घं. ४४ मि. १ से. हुए । इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं., २ मि. ३७ से. हुए । इसमें कोष्ठक नं.(४)से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ से. जोडने पर ७घं. २ मि. ४० से. हुए । क्योंकि स्टैं.टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोडने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था । अत: उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० से. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना । लग्न और दशम को स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. को प्रयोग में लाइए ।

(२)सा. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें कि यदि स्टैं. टा. से ऋण चिह्न वाले स्टैं. अन्तर के मिनटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सा.का. कोष्ठक नं. (४)का प्रयोग नहीं करना चाहिए । जैसे- जयपुर में १५ मार्च १९७० को ०घं. १५ मि.(भा. स्टैं. टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व)और स्टैं अं.- २६ मि. ३२ से. है । यहां स्टैं टा. के घं. मि. में से स्टैं. अं. ज्यादा है, अत: स्टैं. टा. में २४ घं. जोड़ कर स्टैं अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ से. स्थानीयमध्यमकाल बना । सां. का. के कोष्ठक नं.(१)से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ से. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४७ मि. ४९ से जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४ से. हुए । जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. ३ वाला संस्कार लगभग ० है । अब ११ घं. २७ मि. ५४ से. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ से. हुए । क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं. अं. से कम था अत: यहां साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(४)का प्रयोग हम नहीं करेगें । इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११घं. १६ मि. २२ से. ही हुआ । यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए हैं।

(३)जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं - लीप इयर (२९ फरवरी वाले साल)में फरवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) को प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे -मान लीजिए, १५ मार्च सन् १९८४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है। साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१) में सन् १९८४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ से. मिलें । क्योंकि हमारा सन् लीप इयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च)फरवरी के बाद की भी है, इसलिए "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)" में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं.५१ मि. ४५ से.)ही लेगें और इन्हें ही ६ घं. ३७मि. १७ से. में जोड़ेंगे । ध्यान रहे- यदि सन् १९८४ की १० फर. को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो "साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(२)"से १० फर.के ही घं. मि. से. उठाने होगें ।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधिः-

उपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाई और वाले पहिले कालम में देखें । इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश कला लिखी हैं, उन्हें अलग नोट कर लें। क्योंकि सारणी में सां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है । अत: अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्न सारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मिं. न मिले और यह भी अधिकतर सभव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ठ सां का. के घं. मि. न मिलें और यह भी सम्भव है कि अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी भी न मिले । ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम)सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम(अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखीं लग्न की अंश - कलाएं नोट करें - यह "स्थूलतम लग्न"है । अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३०मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है) ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें "स्थूलतम लग्न" में जोड़ देने से "स्थूललग्न" बन जाएगा। अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें । ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह "३ अक्षाशों की लग्नगति" ऋण, अन्यथा धन होगी । अपने अक्षांश की शेष अंश-कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें "३ अक्षाशों की लग्नगति" की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें "३ अक्षाशों की लग्नगति" के धन,ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा । इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :- लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशमलग्न)दिया गया है । इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात् -दशम स्पष्ट करने के लिए अंक्षाशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं. मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न)की अंश-कलाएं उठा लें। यह "स्थूलदशमलग्न" है। सां.का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३०से भाग देने पर कलाएं मिलेगी। इन्हें "स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा । इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरणः- चम्बा (हि.प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.)पर लग्न स्पष्ट करना है ।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रात: १० घंटे ४५मि. (भा. स्टै. टा.)पर सां.का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है । चम्बा के अक्षांश ३२ अ.२९ क. है । लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क. लिखा है । यह "स्थूलतम लग्न"है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां का. ५ घ. ३० मि. के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का.६घं. ० मि. के आगे १८० अं.० क. लिखा है । इन दोनों का अन्तर ६अं. २६ क. (=३८६क.) लग्न की ३० मि. की गति है । हमारे अभीष्ट सां. का. ५ घं. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है । इन २१ मि. (सा.का.के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मिनट की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७० क. (= ४ अं. ३० क.) मिलीं। इन्हें " स्थूलतम लग्न " में जोड़ने पर १७८ अं. ४ क. "स्थूल लग्न "हुआ ।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग १ म}

साम्पातिक काल घं.	मि.	सभी स्थलों के लिए दशम अं.	क.	अक्षांश ८°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश ११°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश १४°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश १७°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश २०°(उ.) लग्न अं.	क.
०	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४
०	३०	८	१०	१००	३	१०१	१५	१०२	२७	१०३	४१	१०४	५७
१	०	१६	१७	१०६	५४	१०८	३	१०९	१३	११०	२४	१११	३६
१	३०	२४	१८	११३	४७	११४	५३	११५	५९	११७	६	११८	१४
२	०	३२	११	१२०	४३	१२१	४५	१२२	४७	१२३	५०	१२४	५२
२	३०	३९	५५	१२७	४५	१२८	४३	१२९	४०	१३०	३६	१३१	३३
३	०	४७	२८	१३४	५४	१३५	४५	१३६	३६	१३७	२७	१३८	१८
३	३०	५४	५१	१४२	१०	१४२	५५	१४३	३९	१४४	२२	१४५	६
४	०	६२	५	१४९	३३	१५०	१०	१५०	४६	१५१	२३	१५१	५८
४	३०	६९	१२	१५७	३	१५७	३१	१५८	०	१५८	२७	१५८	५५
५	०	७६	११	१६४	३८	१६४	५८	१६५	१७	१६५	३६	१६५	५४
५	३०	८३	७	१७२	१८	१७२	२८	१७२	३८	१७२	४७	१७२	५७
६	०	९०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८७	४२	१८७	३२	१८७	२२	१८७	१३	१८७	३
७	०	१०३	४९	१९५	२२	१९५	२	१९४	४३	१९४	२४	१९४	६
७	३०	११०	४८	२०२	५७	२०२	२९	२०२	०	२०१	३३	२०१	५
८	०	११७	५५	२१०	२७	२०९	४०	२०९	१४	२०८	३७	२०८	२
८	३०	१२५	९	२१७	५०	२१७	५	२१६	२१	२१५	३८	२१४	५४
९	०	१३२	३२	२२५	६	२२४	१५	२२३	२४	२२२	३३	२२१	४२
९	३०	१४०	५	२३२	१५	२३१	१७	२३०	२०	२२९	२४	२२८	२७
१०	०	१४७	४९	२३९	१७	२३८	१५	२३७	१३	२३६	१०	२३५	८
१०	३०	१५५	४२	२४६	१३	२४५	७	२४४	१	२४२	५४	२४१	४६
११	०	१६३	४३	२५३	६	२५१	५७	२५०	४७	२४९	३६	२४८	२४
११	३०	१७१	५०	२५९	५७	२५८	४५	२५७	३३	२५६	१९	२५५	३
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६

साम्पातिक काल घं.	मि.	सभी स्थलों के लिए दशम अं.	क.	अक्षांश ८°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश ११°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश १४°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश १७°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश २०°(उ.) लग्न अं.	क.
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६
१२	३०	१८८	१०	२७३	४१	२७२	२७	२७१	११	२६९	५३	२६८	३३
१३	०	१९६	१७	२८०	३९	२७९	२५	२७८	९	२७६	५०	२७५	२९
१३	३०	२०४	१८	२८७	४३	२८६	३०	२८५	१५	२८३	५७	२८२	३५
१४	०	२१२	११	२९४	५७	२९३	४६	२९२	३३	२९१	१६	२८९	५५
१४	३०	२१९	५५	३०२	२१	३०१	१४	३००	४	२९८	५०	२९७	३२
१५	०	२२७	२८	३०९	५८	३०८	५६	३०७	५१	३०६	४२	३०५	२८
१५	३०	२३४	५१	३१७	४९	३१६	५४	३१५	५५	३१४	५३	३१३	४५
१६	०	२४२	५	३२५	५४	३२५	७	३२४	१७	३२३	२३	३२२	२५
१६	३०	२४९	१२	३३४	१२	३३३	३५	३३२	५५	३३२	१२	३३१	२६
१७	०	२५६	११	३४२	४१	३४२	१५	३४१	४८	३४१	१८	३४०	४५
१७	३०	२६३	७	३५१	१८	३५१	५	३५०	५१	३५०	३६	३५०	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	८	४१	८	५५	९	९	९	२४	९	४१
१९	०	२८३	४९	१७	१९	१७	४५	१८	१२	१८	४२	१९	१५
१९	३०	२९०	४८	२५	४८	२६	२५	२७	५	२७	४८	२८	३४
२०	०	२९७	५५	३४	६	३४	५३	३५	४३	३६	३७	३७	३५
२०	३०	३०५	९	४२	११	४३	६	४४	५	४५	७	४६	१४
२१	०	३१२	३२	५०	२	५१	४	५२	९	५३	१८	५४	३२
२१	३०	३२०	५	५७	३९	५८	४६	५९	५६	६१	१०	६२	२८
२२	०	३२७	४९	६५	३	६६	१४	६७	२७	६८	४४	७०	५
२२	३०	३३५	४२	७२	१७	७३	३०	७४	४५	७६	३	७७	२५
२३	०	३४३	४३	७९	२१	८०	३४	८१	५१	८३	१०	८४	३१
२३	३०	३५१	५०	८६	१९	८७	३३	८८	४९	९०	७	९१	२७
२४	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४

अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां.का. ५घं. ३० मि. के आगे क्रमशः १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ। यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है। अतः यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गति कलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्न गति धन है अतः इसे "स्थूल लग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३अं. २६क. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (= ५ रा ४ अं. ३९ क.) निरयणलग्न बन गया।

दशमलग्न साधन का उदाहरण- १५ जुला. १९६९ ई. को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा.स्टै.टा.) पर जो चम्बा, हि.प्र. में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां का ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालम में सां.का. ५ घं. ३० मिनट के आगे दशमलग्न८३ अं.७क. है, यह "स्थूल दशमलग्न" है। सारणी में सां.का. ५ घं.३०मि. और ६ घं. ० मि. के आगे क्रमशः ८३ अं. ७ क. एवं ९० अं. ० क. है इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (= ४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.- ५घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४अं.४९क.) मिली। इन्हें "स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं. ५६ क. सायन दशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं.३० क. (= २ रा.४अं. ३०क.) इष्टकालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान दें-यहां हमने सां.का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझकर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुतः अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में संभव नहीं है; इस तथ्य का विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा "गणकमार्तण्ड" में हमने किया है वहाँ पढ़ें।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग २ य}

साम्पातिक काल घं.	मि.	सभी स्थानों के लिए दशम अं. क.	अंक्षाश २३° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २६° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २९° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न अं. क.
०	०	० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४
०	३०	८ १०	१०६ १४	१०७ ३४	१०८ ५७	११० २४	१११ ५३
१	०	१६ १७	११२ ४९	११४ ४	११५ २२	११६ ४३	११८ ७
१	३०	२४ १८	११९ २२	१२० ३३	१२१ ४५	१२३ ०	१२४ १७
२	०	३२ ११	१२५ ५६	१२७ ०	१२८ ७	१२९ १७	१३० २५
२	३०	३९ ५५	१३२ ३१	१३३ २९	१३४ २९	१३५ ३०	१३६ ३२
३	०	४७ २८	१३९ ३	१४० ००	१४० ५२	१४१ ४५	१४२ ४०
३	३०	५४ ५१	१४५ ५०	१४६ ३४	१४७ १८	१४८ ४	१४८ ५०
४	०	६२ ५	१५२ ३४	१५३ १०	१५३ ४७	१५४ २४	१५५ १
४	३०	६९ १२	१५९ २२	१५९ ५०	१६० १७	१६० ४६	१६१ १४
५	०	७६ ११	१६६ १३	१६६ ३२	१६६ ५०	१६७ ९	१६७ २८
५	३०	८३ ७	१७३ ६	१७३ १५	१७३ २५	१७३ ३४	१७३ ४४
६	०	९० ०	१८० ००	१८० ००	१८० ०	१८० ०	१८० ०
६	३०	९६ ५३	१८६ ५४	१८६ ४५	१८६ ३५	१८६ २६	१८६ १६
७	०	१०३ ४९	१९३ ४७	१९३ २८	१९३ १०	१९२ ५१	१९२ ३२
७	३०	११० ४८	२०० ३८	२०० १०	१९९ ४३	१९९ १४	१९८ ४६
८	०	११७ ५५	२०७ २६	२०६ ५०	२०६ १३	२०५ ३६	२०४ ५९
८	३०	१२५ ५९	२१४ १०	२१३ २६	२१२ ४२	२११ ५६	२११ १०
९	०	१३२ ३२	२२० ५१	२२० ००	२१९ ८	२१८ १५	२१७ २०
९	३०	१४० ५	२२७ २९	२२६ ३१	२२५ ३१	२२४ ३०	२२३ २८
१०	००	१४७ ४९	२३४ ४	२३३ ०	२३१ ५३	२३० ४५	२२९ ३५
१०	३०	१५५ ४२	२४० ३८	२३९ २७	२३८ १५	२३७ ०	२३५ ४३
११	०	१६३ ४३	२४७ ११	२४५ ५६	२४४ ३८	२४३ १७	२४१ ५३
११	३०	१७१ ५०	२५३ ४६	२५२ २६	२५१ ३	२४९ ३६	२४८ ७
१२	०	१८० ००	२६० २५	२५९ ३	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६

साम्पातिक काल घं.	मि.	सभीस्थलों के लिए दशम अं. क.	अंक्षाश २३° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २६° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २९° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न अं. क.
१२	०	१८० ००	२६० २५	२५९ १	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६
१२	३०	१८८ १०	२६७ १०	२६५ ४३	२६४ १२	२६२ ३६	२६० ५४
१३	०	१९६ १७	२७४ ३	२७२ ३४	२७१ ०	२६९ २१	२६७ ३३
१३	३०	२०४ १८	२८१ ९	२७९ ३९	२७८ २	२७६ १९	२७४ २९
१४	०	२१२ ११	२८८ ३०	२८६ ५९	२८५ २२	२८३ ३६	२८१ ४५
[illegible]	[illegible]	२१९ ५५	२९६ ९	२९४ ४०	२९३ ४	२९१ २०	२८९ २६
१५	०	२२७ २८	३०४ १०	३०२ ४४	३०१ १२	२९९ २८	२९७ ३८
१५	३०	२३४ ५१	३१२ ३३	३११ १५	३०९ ४८	३०८ १३	३०६ २५
[illegible]	[illegible]	२४२ ५	३२१ २२	३२० १३	३१८ ५६	३१७ ३०	३१५ ५४
१६	३०	२४९ १२	३३० ३५	३२९ ३९	३२८ ३६	३२७ २५	३२६ ४
१७	०	२५६ ११	३४० ९	३३९ ३०	३३८ ४५	३३७ ५४	३३६ ५५
१७	३०	२६३ ७	३५० ००	३४९ ४०	३४९ १६	३४८ ४९	३४८ १९
१८	०	२७० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
१८	३०	२७६ ५३	१० ०	१४ २०	१० ४४	११ ११	११ ४१
१९	०	२८३ ४९	१९ ५१	२० ३०	२१ १५	२२ ६	२३ ४
१९	३०	२९० ४८	२९ २५	३० २१	३१ २४	३२ ३५	३३ ५६
२०	०	२९७ ५५	३८ ३८	३९ ४७	४१ ४	४२ ३०	४४ ६
२०	३०	३०५ ९	४७ २७	४८ ४५	५० १२	५१ ४७	५३ ३५
२१	०	३१२ ३२	५५ ४०	५७ १६	५८ ४८	६० ३२	६२ २२
२१	३०	३२० ५	६३ ५१	६५ २०	६६ ५६	६८ ४०	७० ३४
२२	०	३२७ ४९	७१ ३०	७३ १	७४ ३८	७६ २४	७८ १५
२२	३०	३३५ ४२	७८ ५१	८० २१	८१ ५८	८३ ४१	८५ ३१
२३	०	३४३ ४३	८५ ५६	८७ २६	८९ ०	९० ३९	९२ २६
२३	३०	३५१ ५०	९२ ५०	९४ १७	९५ ४८	९७ २४	९९ ६
२४	०	००० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. 1

सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.
१९७१	६ ३९ ०७	१९७८	६ ४० १९	१९८५	६ ४१ ३२	१९९२	६ ३८ ४७	१९९९	६ ३९ ५९	२००६	६ ४१ ११	२०१३	६ ४२ २३	२०२०	६ ३९ ३९
१९७२	६ ३८ १०	१९७९	६ ३९ २२	१९८६	६ ४० ३५	१९९३	६ ४१ ४६	२०००	६ ३९ ०२	२००७	६ ४० १४	२०१४	६ ४१ २६	२०२१	६ ४२ ३८
१९७३	६ ४१ १०	१९८०	६ ३८ २४	१९८७	६ ३९ ३८	१९९४	६ ४० ४९	२००१	६ ४२ ०१	२००८	६ ३९ १७	२०१५	६ ४० २९	२०२२	६ ४१ ४०
१९७४	६ ४० १२	१९८१	६ ४१ २३	१९८८	६ ३८ ४०	१९९५	६ ३९ ५२	२००२	६ ४१ ०४	२००९	६ ४२ १६	२०१६	६ ३९ ३१	२०२३	६ ४० ४३
१९७५	६ ३९ १५	१९८२	६ ४० २६	१९८९	६ ४१ ३९	१९९६	६ ३८ ५४	२००३	६ ४० ०७	२०१०	६ ४१ १९	२०१७	६ ४२ ३१	२०२४	६ ३९ ४६
१९७६	६ ३८ १७	१९८३	६ ३९ २९	१९९०	६ ४० ४१	१९९७	६ ४१ ५३	२००४	६ ३९ ०९	२०११	६ ४० २१	२०१८	६ ४१ ३३	२०२५	६ ४२ ४५
१९७७	६ ४१ १६	१९८४	६ ३८ ३२	१९९१	६ ३९ ४४	१९९८	६ ४० ५६	२००५	६ ४२ ०९	२०१२	६ ३९ २४	२०१९	६ ४० ३६	२०२६	६ ४१ ४८

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० २

ता.	जनवरी			फरवरी			मार्च			अप्रैल			मई			जून		
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.
१	०	०	०	२	२	१३	३	५२	३७	५	५४	५१	७	५३	७	९	५५	२१
२	०	३	५७	२	६	९	३	५६	३३	५	५८	४७	७	५७	४	९	५९	१७
३	०	७	५३	२	१०	६	४	०	३०	६	२	४३	८	१	०	१०	३	१४
४	०	११	५०	२	१४	२	४	४	२६	६	६	४०	८	४	५७	१०	७	१०
५	०	१५	४६	२	१७	५९	४	८	२३	६	१०	३६	८	८	५३	१०	११	७
६	०	१९	४३	२	२१	५५	४	१२	१९	६	१४	३३	८	१२	५०	१०	१५	३
७	०	२३	३९	२	२५	५२	४	१६	१६	६	१८	२९	८	१६	४६	१०	१९	०
८	०	२७	३६	२	२९	४८	४	२०	१२	६	२२	२६	८	२०	४३	१०	२२	५६
९	०	३१	३२	२	३३	४५	४	२४	९	६	२६	२२	८	२४	३९	१०	२६	५३
१०	०	३५	२९	२	३७	४२	४	२८	५	६	३०	१९	८	२८	३६	१०	३०	४९
११	०	३९	२५	२	४१	३९	४	३२	२	६	३४	१६	८	३२	३२	१०	३४	४६
१२	०	४३	२२	२	४५	३५	४	३५	५९	६	३८	१३	८	३६	२९	१०	३८	४२
१३	०	४७	१८	२	४९	३२	४	३९	५६	६	४२	९	८	४०	२५	१०	४२	३९
१४	०	५१	१५	२	५३	२८	४	४३	५२	६	४६	६	८	४४	४२	१०	४६	३५
१५	०	५५	१२	२	५७	२५	४	४७	४९	६	५०	२	८	४८	१८	१०	५०	३२
१६	०	५९	८	३	१	२१	४	५१	४५	६	५३	५९	८	५२	१५	१०	५४	२८
१७	१	३	४	३	५	१८	४	५५	४२	६	५७	५५	८	५६	११	१०	५८	२५
१८	१	७	१	३	९	१४	४	५९	३८	७	१	५२	९	०	८	११	२	२१
१९	१	१०	५७	३	१३	११	५	३	३५	७	५	४८	९	४	४	११	६	१८
२०	१	१४	५४	३	१७	८	५	७	३१	७	९	४५	९	८	१	११	१०	१५
२१	१	१८	५१	३	२१	५	५	११	२८	७	१३	४१	९	११	५८	११	१४	१२
२२	१	२२	४८	३	२५	१	५	१५	२५	७	१७	३८	९	१५	५५	११	१८	८
२३	१	२६	४४	३	२८	५८	५	१९	२२	७	२१	३४	९	१९	५१	११	२२	५
२४	१	३०	४१	३	३२	५४	५	२३	१८	७	२५	३१	९	२३	४८	११	२६	१
२५	१	३४	३७	३	३६	५१	५	२७	१५	७	२९	२८	९	२७	४४	११	२९	५८
२६	१	३८	३४	३	४०	४७	५	३१	११	७	३३	२४	९	३१	४१	११	३३	५४
२७	१	४२	३०	३	४४	४४	५	३५	८	७	३७	२०	९	३५	३७	११	३७	५१
२८	१	४६	२७	३	४८	४०	५	३९	५	७	४१	१७	९	३९	३४	११	४१	४७
२९	१	५०	२३	३	५२	३७	५	४३	१	७	४५	१३	९	४३	३०	११	४५	४४
३०	१	५४	२०				५	४६	५८	७	४९	१०	९	४७	२७	११	४९	४१
३१	१	५८	१६				५	५०	५४				९	५१	२४			

ता.	जुलाई			अगस्त			सितम्बर			अक्तूबर			नवम्बर			दिसम्बर		
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.
१	११	५३	३८	१३	५५	५०	१५	५८	४	१७	५६	२१	१९	५८	३४	२१	५६	५०
२	११	५७	३४	१३	५९	४७	१६	२	०	१८	०	१७	२०	२	३१	२२	०	४७
३	१२	१	३१	१४	३	४४	१६	५	५७	१८	४	१४	२०	६	२७	२२	४	४३
४	१२	५	२७	१४	७	४०	१६	९	५३	१८	८	१	२०	१०	२४	२२	८	४०
५	१२	९	२४	१४	११	३६	१६	१३	५०	१८	१२	७	२०	१४	२०	२२	१२	३६
६	१२	१३	२१	१४	१५	३३	१६	१७	४६	१८	१६	३	२०	१८	१७	२२	१६	३३
७	१२	१७	१७	१४	१९	२९	१६	२१	४३	१८	२०	०	२०	२२	१३	२२	२०	३०
८	१२	२१	१४	१४	२३	२६	१६	२५	४०	१८	२३	५७	२०	२६	१०	२२	२४	२७
९	१२	२५	१०	१४	२७	२३	१६	२९	३७	१८	२७	५४	२०	३०	६	२२	२८	२३
१०	१२	२९	६	१४	३१	२०	१६	३३	३३	१८	३१	५०	२०	३४	३	२२	३२	२०
११	१२	३३	३	१४	३५	१६	१६	३७	३०	१८	३५	४७	२०	३८	०	२२	३६	१६
१२	१२	३६	५९	१४	३९	१३	१६	४१	२६	१८	३९	४३	२०	४१	५६	२२	४०	१३
१३	१२	४०	५६	१४	४३	९	१६	४५	२३	१८	४३	४०	२०	४५	५२	२२	४४	९
१४	१२	४४	५२	१४	४७	६	१६	४९	१९	१८	४७	३७	२०	४९	४९	२२	४८	६
१५	१२	४८	४९	१४	५१	२	१६	५३	१६	१८	५१	३३	२०	५३	४५	२२	५२	२
१६	१२	५२	४५	१४	५४	५९	१६	५७	१२	१८	५५	३०	२०	५७	४२	२२	५५	५९
१७	१२	५६	४२	१४	५८	५५	१७	१	९	१८	५९	२६	२१	१	३९	२२	५९	५६
१८	१३	०	३८	१५	२	५२	१७	५	५	१९	३	२२	२१	५	३६	२३	३	५३
१९	१३	४	३५	१५	६	४८	१७	९	२	१९	७	१९	२१	९	३२	२३	७	४९
२०	१३	८	३२	१५	१०	४५	१७	१२	५८	१९	११	१५	२१	१३	२९	२३	११	४६
२१	१३	१२	२९	१५	१४	४१	१७	१६	५५	१९	१५	१२	२१	१७	२५	२३	१५	४२
२२	१३	१६	२५	१५	१८	३८	१७	२०	५१	१९	१९	८	२१	२१	२२	२३	१९	३९
२३	१३	२०	२२	१५	२२	३४	१७	२४	४८	१९	२३	५	२१	२५	१८	२३	२३	३५
२४	१३	२४	१८	१५	२६	३१	१७	२८	४४	१९	२७	१	२१	२९	१५	२३	२७	३२
२५	१३	२८	१५	१५	३०	२७	१७	३२	४१	१९	३०	५८	२१	३३	११	२३	३१	२८
२६	१३	३२	११	१५	३४	२४	१७	३६	३७	१९	३४	५४	२१	३७	८	२३	३५	२५
२७	१३	३६	८	१५	३८	२०	१७	४०	३४	१९	३८	५१	२१	४१	४	२३	३९	२१
२८	१३	४०	४	१५	४२	१७	१७	४४	३१	१९	४२	४८	२१	४५	१	२३	४३	१८
२९	१३	४४	१	१५	४६	१४	१७	४८	२८	१९	४६	४५	२१	४८	५७	२३	४७	१४
३०	१३	४८	५७	१५	५०	११	१७	५२	२४	१९	५०	४१	२१	५२	५४	२३	५१	११
३१	१३	५१	५४	१५	५४	७				१९	५४	३८				२३	५५	७
३२																२३	५९	३

लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं० २ को प्रयोग में लाइए ।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ३

रेखांश	०°	पू.२०°	पू.४०°	पू.६०°	पू.८०°	पू.१००°	पू.१२०°	पू.१४०°	पू.१६०°
संस्कार सेकण्ड	+५०	+३७	+२४	+११	-२	-१५	-२८	-४१	-५४
रेखांश	१८०°	प.१६०°	प.१४०°	प.१२०°	प.१००°	प.८०°	प.६०°	प.४०°	प.२०°
संस्कार सेकण्ड	-६७/+१६१	+१५५	+१४२	+१२९	+११६	+१०३	+८९	+७७	+६३

साम्पातिक काल ... सारणी नं० १

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ४

मि. / घं.	० मि. से.	५ मि. से.	१० मि. से.	१५ मि. से.	२० मि. से.	२५ मि. से.	३० मि. से.	३५ मि. से.	४० मि. से.	४५ मि. से.	५० मि. से.	५५ मि. से.
०	० ००	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ७	० ७	० ८	० ९
१	० १०	० ११	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १६	० १७	० १८	० १९
२	० २०	० २१	० २[illegible]	० २२	० २३	० २४	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९
३	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	० ३७	० ३८	० ३९
४	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४४	० ४५	० ४६	० ४७	० ४८	० ४८
५	- ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५३	० ५३	० ५४	० ५५	० ५६	० ५७	० ५७	० ५८
६	० ५९	१ ००	१ १	१ २	१ २	१ ३	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ७	१ ८
७	१ ९	१ १०	१ ११	१ ११	१ १२	१ १३	१ १४	१ १५	१ १६	१ १६	१ १७	१ १८
८	१ १९	१ २०	१ २०	१ २१	१ २२	१ २३	१ २४	१ २५	१ २५	१ २६	१ २७	१ २८
९	१ २९	१ ३०	१ ३०	१ ३१	१ ३२	१ ३३	१ ३४	१ ३४	१ ३५	१ ३६	१ ३७	१ ३८
१०	१ ३९	१ ३९	१ ४०	१ ४१	१ ४२	१ ४३	१ ४३	१ ४४	१ ४५	१ ४६	१ ४७	१ ४८
११	१ ४८	१ ४९	१ ५०	१ ५१	१ ५२	१ ५३	१ ५३	१ ५४	१ ५५	१ ५६	१ ५७	१ ५७
१२	१ ५८	१ ५९	२ ०	२ १	२ २	२ २	२ ३	२ ४	२ ५	२ ६	२ ६	२ ७
१३	२ ८	२ ९	२ १०	२ ११	२ ११	२ १२	२ १३	२ १४	२ १५	२ १६	२ १६	२ १७
१४	२ १८	२ १९	२ २०	२ २०	२ २१	२ २२	२ २३	२ २४	२ २५	२ २५	२ २६	२ २७
१५	२ २८	२ २९	२ २९	२ ३०	२ ३१	२ ३२	२ ३३	२ ३४	२ ३४	२ ३५	२ ३६	२ ३७
१६	२ ३८	२ ३९	२ ३९	२ ४०	२ ४१	२ ४२	२ ४३	२ ४३	२ ४४	२ ४५	२ ४६	२ ४७
१७	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ५०	२ ५१	२ ५२	२ ५३	२ ५३	२ ५४	२ ५५	२ ५६	२ ५७
१८	२ ५७	२ ५८	२ ५९	३ ०	३ १	३ २	३ २	३ ३	३ ४	३ ५	३ ६	३ ६
१९	३ ७	३ ८	३ ९	३ १०	३ ११	३ ११	३ १२	३ १३	३ १४	३ १५	३ १५	३ १६
२०	३ १७	३ १८	३ १९	३ २०	३ २०	३ २१	३ २२	३ २३	३ २४	३ २५	३ २५	३ २६
२१	३ २७	३ २८	३ २९	३ २९	३ ३०	३ ३१	३ ३२	३ ३३	३ ३४	३ ३४	३ ३५	३ ३६
२२	३ ३७	३ ३८	३ ३८	३ ३९	३ ४०	३ ४१	३ ४२	३ ४३	३ ४३	३ ४४	३ ४५	३ ४६
२३	३ ४७	३ ४८	३ ४८	३ ४९	३ ५०	३ ५१	३ ५२	३ ५२	३ ५३	३ ५४	३ ५५	३ ५६

अयनांश सारणी नं० १

ई. सन्	अयनांश अं. क. वि.	ई. सन्	अयनांश अं. क. वि.	ई. सन्	अयनांश अं. क. वि.
१९५१	२३ १० २१	१९७५	२३ ३० २८	१९९९	२३ ५० ३४
१९५२	२३ ११ १२	१९७६	२३ ३१ १७	२०००	२३ ५१ २४
१९५३	२३ १२ ०२	१९७७	२३ ३२ ०८	२००१	२३ ५२ १५
१९५४	२३ १२ ५२	१९७८	२३ ३२ ५६	२००२	२३ ५३ ०५
१९५५	२३ १३ ४२	१९७९	२३ ३३ ४६	२००३	२३ ५३ ५५
१९५६	२३ १४ ३३	१९८०	२३ ३४ ३६	२००४	२३ ५४ ४६
१९५७	२३ १५ २३	१९८१	२३ ३५ २६	२००५	२३ ५५ ३६
१९५८	२३ १६ १३	१९८२	२३ ३६ २०	२००६	२३ ५६ २६
१९५९	२३ १७ ०३	१९८३	२३ ३७ १०	२००७	२३ ५७ १७
१९६०	२३ १७ ५४	१९८४	२३ ३८ ००	२००८	२३ ५८ ०७
१९६१	२३ १८ ४४	१९८५	२३ ३८ ५१	२००९	२३ ५८ ५७
१९६२	२३ १९ ३५	१९८६	२३ ३९ ४१	२०१०	२३ ५९ ४८
१९६३	२३ २० २५	१९८७	२३ ४० ३१	२०११	२४ ०० ३८
१९६४	२३ २१ १५	१९८८	२३ ४१ २१	२०१२	२४ ०१ २८
१९६५	२३ २२ ०५	१९८९	२३ ४२ १२	२०१३	२४ ०२ १८
१९६६	२३ २२ ५५	१९९०	२३ ४३ ०२	२०१४	२४ ०३ ०९
१९६७	२३ २३ ४६	१९९१	२३ ४३ ५२	२०१५	२४ ०३ ५९
१९६८	२३ २४ ३६	१९९२	२३ ४४ ४२	२०१६	२४ ०४ ४९
१९६९	२३ २५ २६	१९९३	२३ ४५ ३३	२०१७	२४ ०५ ४०
१९७०	२३ २६ १६	१९९४	२३ ४६ २३	२०१८	२४ ०६ ३०
१९७१	२३ २७ ०७	१९९५	२३ ४७ १३	२०१९	२४ ०७ २०
१९७२	२३ २७ ५७	१९९६	२३ ४८ ०३	२०२०	२४ ०८ १०
१९७३	२३ २८ ४७	१९९७	२३ ४८ ५४	२०२१	२४ ०९ ०१
१९७४	२३ २९ ३७	१९९८	२३ ४९ ४४	२०२२	२४ ०९ ५१

अयनांश सारणी नं. २

तारीख	१ वि.	४ वि.	७ वि.	१० वि.	१३ वि.	१६ वि.	१९ वि.	२२ वि.	२५ वि.	२८ वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

विंशोत्तरीदशा साधन

(जन्म के समय विंशोत्तरीदशा का भोग्य–भुक्त)

जातक के जन्मकालिक स्पष्टचन्द्रमा के राशि, अंश, कला द्वारा नीचे दी गई " विंशोत्तरीदशा–भोग्यकाल सारणी " से विंशोत्तरी दशा के जन्मकालिक दशेश (महादशा के स्वामी ग्रह) एवं उसकी भोग्यदशा के वर्ष आदि सरलता से इस प्रकार जाने जा सकते हैं :–

इस सारणी में जन्मकालिक स्पष्टचन्द्र की राशि के नीचे चन्द्र की अंश, कला के आगे जन्मकालिक दशेश और उसकी दशा के भोग्य वर्षादि लिखे हैं। इन भोग्य वर्षादि में से चन्द्र की शेष कलाओं द्वारा आगे दी गई " भोग्यदशासाधन सहायक सारणी " से स्पष्टचन्द्र की शेष कलाओं के आगे दशेश ग्रह के नीचे लिखे, मासादि लेकर घटाने पर जन्मकालिक दशा के भोग्य वर्ष आदि ज्ञात हो जाते हैं। नीचे दिया गया उदाहरण देखें :–

उदाहरण :– जन्मकालीन स्पष्टचन्द्र 5 रा. 10 अं. 30 क. है। " विंशोत्तरीदशा भोग्यकाल सारणी " से कन्या राशि के नीचे 10 अंश 20 कला के आगे चन्द्र की दशा का भोग्यकाल 9 वर्ष 9 मास 0 दिन मिला। " भोग्यदशासाधन सहायक सारणी " में दशेश चन्द्र के नीचे चन्द्र की शेष कला 10 के आगे 1 मास 15 दिन मिले। इन्हें 9 वर्ष 9 मास 0 दिन में से घटाने पर 9 वर्ष 7 मास 15 दिन प्राप्त हुए। यह जन्म के समय चन्द्रदशा का भोग्य (शेष बचा) काल है। इसे चन्द्र के पूर्णदशाकाल (10 वर्ष) में से घटाने पर 4 मास 15 दिन चन्द्रदशा का जन्मकालिक भुक्त काल हुआ।

विंशोत्तरीदशा-भोग्यकाल सारणी (भाग 1)

(स्पष्ट चन्द्र की राश्यादि के अनुसार)

स्पष्ट चन्द्र	चन्द्रराशि– मेष, सिंह, धनु ,	चन्द्रराशि– वृष, कन्या, मकर,	चन्द्रराशि– मिथुन, तुला, कुम्भ,	चन्द्रराशि– कर्क, वृश्चिक, मीन	स्पष्ट चन्द्र	चन्द्रराशि– मेष, सिंह, धनु ,	चन्द्रराशि– वृष, कन्या, मकर,	चन्द्रराशि– मिथुन, तुला, कुम्भ,	चन्द्रराशि– कर्क, वृश्चिक, मीन
अं. क.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	अं. क.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.
0 00	केतु 07 00 00	सूर्य 04 06 00	मंगल 03 06 00	गुरु 04 00 00	6 40	केतु 03 06 00	सूर्य 01 06 00	राहु 18 00 00	शनि 14 03 00
0 20	06 09 27	04 04 06	03 03 27	03 07 06	7 00	03 03 27	01 04 06	17 06 18	13 09 09
0 40	06 07 24	04 02 12	03 01 24	03 02 12	7 20	03 01 24	01 02 12	17 01 06	13 03 18
1 00	06 05 21	04 00 18	02 11 21	02 09 18	7 40	02 11 21	01 00 18	16 07 24	12 09 27
1 20	06 03 18	03 10 24	02 09 18	02 04 24	8 00	02 09 18	00 10 24	16 02 12	12 04 06
1 40	06 01 15	03 09 00	02 07 15	02 00 00	8 20	02 07 15	00 09 00	15 09 00	11 10 15
2 00	05 11 12	03 07 06	02 05 12	01 07 06	8 40	02 05 12	00 07 06	15 03 18	11 04 24
2 20	05 09 09	03 05 12	02 03 09	01 02 12	9 00	02 03 09	00 05 12	14 10 06	10 11 03
2 40	05 07 06	03 03 18	02 01 06	00 09 18	9 20	02 01 06	00 03 18	14 04 24	10 05 12
3 00	05 05 03	03 01 24	01 11 03	00 04 24	9 40	01 11 03	00 01 24	13 11 12	09 11 21
3 20	05 03 00	03 00 00	01 09 00	शनि 19 00 00	10 00	01 09 00	चन्द्र 10 00 00	13 06 00	09 06 00
3 40	05 00 27	02 10 06	01 06 27	18 06 09	10 20	01 06 27	09 09 00	13 00 18	09 00 09
4 00	04 10 24	02 08 12	01 04 24	18 00 18	10 40	01 04 24	09 06 00	12 07 06	08 06 18
4 20	04 08 21	02 06 18	01 02 21	17 06 27	11 00	01 02 21	09 03 00	12 01 24	08 00 27
4 40	04 06 18	02 04 24	01 00 18	17 01 06	11 20	01 00 18	09 00 00	11 08 12	07 07 06
5 00	04 04 15	02 03 00	00 10 15	16 07 15	11 40	00 10 15	08 09 00	11 03 00	07 01 15
5 20	04 02 12	02 01 06	00 08 12	16 01 24	12 00	00 08 12	08 06 00	10 09 18	06 07 24
5 40	04 00 09	01 11 12	00 06 09	15 08 03	12 20	00 06 09	08 03 00	10 04 06	06 02 03
6 00	03 10 06	01 09 18	00 04 06	15 02 12	12 40	00 04 06	08 00 00	09 10 24	05 08 12
6 20	03 08 03	01 07 24	00 02 03	14 08 21	13 00	00 02 03	07 09 00	09 05 12	05 02 21

विंशोत्तरीदशा–भोग्यकाल सारणी (भाग 2)

विंशोत्तरीदशा—भोग्यकाल सारणी (भाग 2)
(स्पष्ट चन्द्र की राश्यादि के अनुसार)

स्पष्ट चन्द्र	चन्द्रराशि— मेष, सिंह, धनु ,	चन्द्रराशि— वृष, कन्या, मकर,	चन्द्रराशि— मिथुन, तुला, कुम्भ,	चन्द्रराशि— कर्क, वृश्चिक, मीन,
अं. क.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.
13 20	शुक्र 20 00 00	चन्द्र 07 06 00	राहु 09 00 00	शनि 04 09 00
13 40	19 06 00	07 03 00	08 06 18	04 03 09
14 00	19 00 00	07 00 00	08 01 06	03 09 18
14 20	18 06 00	06 09 00	07 07 24	03 03 27
14 40	18 00 00	06 06 00	07 02 12	02 10 06
15 00	17 06 00	06 03 00	06 09 00	02 04 15
15 20	17 00 00	06 00 00	06 03 18	01 10 24
15 40	16 06 00	05 09 00	05 10 06	01 05 03
16 00	16 00 00	05 06 00	05 04 24	00 11 12
16 20	15 06 00	05 03 00	04 11 12	00 05 21
16 40	15 00 00	05 00 00	04 06 00	बुध 17 00 00
17 00	14 06 00	04 09 00	04 00 18	16 06 27
17 20	14 00 00	04 06 00	03 07 06	16 01 24
17 40	13 06 00	04 03 00	03 01 24	15 08 21
18 00	13 00 00	04 00 00	02 08 12	15 03 18
18 20	12 06 00	03 09 00	02 03 00	14 10 15
18 40	12 00 00	03 06 00	01 09 18	14 05 12
19 00	11 06 00	03 03 00	01 04 06	14 00 09
19 20	11 00 00	03 00 00	00 10 24	13 07 06
19 40	10 06 00	02 09 00	00 05 12	13 02 03
20 00	10 00 00	02 06 00	गुरु 16 00 00	12 09 00
20 20	09 06 00	02 03 00	15 07 06	12 03 27
20 40	09 00 00	02 00 00	15 02 12	11 10 24
21 00	08 06 00	01 09 00	14 09 18	11 05 21
21 20	08 00 00	01 06 00	14 04 24	11 00 18
21 40	07 06 00	01 03 00	14 00 00	10 07 15
22 00	07 00 00	01 00 00	13 07 06	10 02 12
22 20	06 06 00	00 09 00	13 02 12	09 09 09
22 40	06 00 00	00 06 00	12 09 18	09 04 06
23 00	05 06 00	00 03 00	12 04 24	08 11 03

स्पष्ट चन्द्र	चन्द्रराशि— मेष, सिंह, धनु ,	चन्द्रराशि— वृष, कन्या, मकर,	चन्द्रराशि— मिथुन, तुला, कुम्भ,	चन्द्रराशि— कर्क, वृश्चिक, मीन,
अं. क.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.
23 20	शुक्र 05 00 00	मंगल 07 00 00	गुरु 12 00 00	बुध 08 06 00
23 40	04 06 00	06 09 27	11 07 06	08 00 27
24 00	04 00 00	06 07 24	11 02 12	07 07 24
24 20	03 06 00	06 05 21	10 09 18	07 02 21
24 40	03 00 00	06 03 18	10 04 24	06 09 18
25 00	02 06 00	06 01 15	10 00 00	06 04 15
25 20	02 00 00	05 11 12	09 07 06	05 11 12
25 40	01 06 00	05 09 09	09 02 12	05 06 09
26 00	01 00 00	05 07 06	08 09 18	05 01 06
26 20	00 06 00	05 05 03	08 04 24	04 08 03
26 40	सूर्य 06 00 00	05 03 00	08 00 00	04 03 00
27 00	05 10 06	05 00 27	07 07 06	03 09 27
27 20	05 08 12	04 10 24	07 02 12	03 04 24
27 40	05 06 18	04 08 21	06 09 18	02 11 21
28 00	05 04 24	04 06 18	06 04 24	02 06 18
28 20	05 03 00	04 04 15	06 00 00	02 01 15
28 40	05 01 06	04 02 12	05 07 06	01 08 12
29 00	04 11 12	04 00 09	05 02 12	01 03 09
29 20	04 09 18	03 10 06	04 09 18	00 10 06
29 40	04 07 24	03 08 03	04 04 24	00 05 03
30 00	04 06 00	03 06 00	04 00 00	00 00 00

भोग्य दशासाधन सहायक सारणी

स्पष्ट चन्द्र की शेष कलाएं	दशेश केतु (7 वर्ष)	दशेश शुक्र (20 वर्ष)	दशेश सूर्य (6 वर्ष)	दशेश चन्द्र (10 वर्ष)	दशेश मंगल (7 वर्ष)	दशेश राहु (18 वर्ष)	दशेश गुरु (16 वर्ष)	दशेश शनि (19 वर्ष)	दशेश बुध (17 वर्ष)	स्पष्ट चन्द्र की शेष कलाएं
	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	
1	00 03	00 09	00 03	00 05	00 03	00 08	00 07	00 09	00 08	1
2	00 06	00 18	00 05	00 09	00 06	00 16	00 14	00 17	00 15	2
3	00 09	00 27	00 08	00 14	00 09	00 24	00 22	00 26	00 23	3
4	00 13	01 06	00 11	00 18	00 13	01 02	00 29	01 04	01 01	4
5	00 16	01 15	00 14	00 23	00 16	01 11	01 06	01 13	01 08	5
6	00 19	01 24	00 16	00 27	00 19	01 19	01 13	01 21	01 16	6
7	00 22	02 03	00 19	01 02	00 22	01 27	01 20	02 00	01 24	7
8	00 25	02 12	00 22	01 06	00 25	02 05	01 28	02 08	02 01	8
9	00 28	02 21	00 24	01 11	00 28	02 13	02 05	02 17	02 09	9
10	01 01	03 00	00 27	01 15	01 01	02 21	02 12	02 26	02 17	10
11	01 04	03 09	00 29	01 20	01 05	02 29	02 20	03 04	02 24	11
12	01 07	03 18	01 02	01 24	01 08	03 07	02 27	03 13	03 02	12
13	01 10	03 27	01 05	01 29	01 11	03 15	03 04	03 21	03 10	13
14	01 13	04 06	01 08	02 03	01 14	03 24	03 11	04 00	03 17	14
15	01 17	04 15	01 11	02 08	01 17	04 02	03 18	04 08	03 25	15
16	01 20	04 24	01 13	02 12	01 20	04 10	03 25	04 17	04 03	16
17	01 23	05 03	01 16	02 17	01 23	04 18	04 02	04 26	04 11	17
18	01 26	05 12	01 18	02 21	01 27	04 26	04 09	05 04	04 18	18
19	01 29	05 21	01 21	02 25	02 00	05 04	04 16	05 12	04 25	19
20	02 03	06 00	01 24	03 00	02 03	05 12	04 24	05 21	05 03	20

महर्षि–पराशरोक्त विंशोत्तरी

महर्षि–पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान–चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६ एक घड़ी में ३६ दिन	चंद्रदशा वर्ष १० एक घड़ी में ६० दिन	भौम दशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	राहु दशा वर्ष १८ एक घड़ी में १०८ दिन	गुरु दशा वर्ष १६ एक घड़ी में ९६ दिन	शनिदशा वर्ष १९ एक घड़ी में ११४ दिन	बुधदशा वर्ष १७ एक घड़ी में १०२ दिन	केतुदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	शुक्रदशा वर्ष २० एक घड़ी में १२० दिन
कृ उ.फा. उ.षा.	रो. ह. श्रव.	मृ. चि. ध.	आर्द्रा स्वा. श.	पुन. वि. पू.भा.	पु. अनु. उ.भा.	आश्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अश्वि.	पू.फा. पूषा. भ.
तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्
ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.
र. ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	बृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	बृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ९	के. ० ११ २७	शु. १ २ ०	र. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	बृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	र. ० ४ ६	चं. १ ८ ०
रा. ० १० २४	बृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	र. ० १० ६	चं. ० ७ ०	मं. १ २ ०
बृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	र. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	र. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	बृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	र. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	बृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	र. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ०६	रा. २ १० ६	बृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	र. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	बृ. २ ६ १२	श. २ ८ ९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

शिवोक्त योगिनी–दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मंगला व. १	पिंगला व. २	धान्या व. ३	भ्रामरी व. ४	भद्रा व. ५	उल्का व. ६	सिद्धा व. ७	संकटा व. ८	दशा तथा वर्ष
चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	केतु	दशेश ग्रह
आर्द्रा चि. श्रव.	पुन. स्वा. ध.	पुष्य वि. श.	अश्वि आश्ले अनु पूभा	भ. म. ज्ये. उ.भा.	कृ. पूफा. मू. रे.	रो. उ.फा. पूषा.	मृ. ह. उ.षा.	जन्म नक्षत्र
मं. ० १०	पि. १ १०	धा. ३ ०	भ्रा. ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं. २१ १०	अन्तर्दशा के मास, दिन
पि. ० २०	धा. २ ०	भ्रा. ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४ ०	स. १८ २०	मं. २ २०	
धा. १ ०	भ्रा. २ २०	भ. ५ ०	उ. ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	म. २ १०	पिं. ५ १०	
भ्रा. १ १०	भ. ३ १०	उ. ६ ०	सि. ९ १०	सं. १३ १०	म. २ ०	पि. ४ २०	धा. ८ ०	
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	सं. १० २०	मं. १ २०	पिं. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा. १० २०	
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पि ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा. ९ १०	भ. १३ १०	
सि. २ १०	सं. ५ १०	मं. १ ०	पिं. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा. ८ ०	भ. ११ २०	उ. १६ ०	
स. २ २०	मं. ० २०	पिं. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा. ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि. १८ २०	

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट–घटीपल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र के घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात के पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष; फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास; फिर शेषांक को ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध दिन; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्धांक घटी; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

वर्षकुण्डली में १२ भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृपभय	धनलाभ	हानि	कष्ट	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्ट	धर्मनाश	सुख	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष	शत्रुनाश	सुख	पीड़ा	कष्ट	दुःख	भाग्योदय	विजय	धनलाभ	व्यय
भौम	ज्वर	धननाश	जय	व्यसन	दुर्गति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुध	सुख	धनलाभ	सुख	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुख	मानलाभ	सुखलाभ	विघ्न
गुरु	सुख	धनलाभ	जय	वाहनलाभ	पुत्रलाभ	कष्ट	सुख	रोग	धर्मलाभ	राज्यलाभ	धनलाभ	शोक
शुक्र	मानप्राप्ति	धनप्राप्ति	कीर्तिलाभ	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रुभीति	स्त्रीसुख	कष्ट	धर्मोदय	मानलाभ	धनलाभ	व्यय
शनि	वायुरोग	पीड़ा	धनलाभ	दुःख	पुत्रप्राप्ति	जय	स्त्रीकष्ट	रोग	भाग्यहानि	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहु	सिरदर्द	राजभय	सुख	दुःख	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभय	दुःख	हानि	विजय	सुखलाभ	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभय	दुर्बुद्धि	सुख	क्लेश	पीड़ा	भाग्यनाश	धनलाभ	लाभ	शोक
मुन्था	सुख	यश, अर्थ	पुष्टि	दुःख	सुखप्राप्ति	कष्ट	व्यसन	दुःख	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभ	कष्ट

सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेश–सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना– वेधसिद्ध वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८.५पल कम है। अतः सूक्ष्म–वर्षप्रवेशकालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८.५ से गुणा करके पलात्मक फल को सारणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म–वर्ष मानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफलसाधन–प्रकारः– (१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष निकालना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे उसे गतवर्ष, (गताब्द) जानें। स्मरण रहे, कि– मेषार्कप्रवेश से प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनंतर का यदि वर्ष करना हो तो पिछले संवत् से करना होगा–वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्– इस प्रकार गताब्द निकालकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारणी में जो वारादि अंक हैं, उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी, पल जोड़ने से वर्षप्रवेशकालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आ जाए तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से शेष को वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट समझें।

(२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्यतुल्य वर्ष में सूर्य मिले, उसी दिन वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कमी–कमी वार नहीं मिलता। वहां पर गणितागत वार को ठीक जाने। इस इष्ट के अनुसार स्वदेशीय लग्नसारणी से लग्नसाधन करके वर्षकुण्डली लगाएं।

मुन्थानयनप्रकार– गताब्दसंख्या में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे उसे मुन्था जानें। यह मुन्था प्रति दिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा– गत वर्ष में जन्मनक्षत्र जोड़कर, उसमें से दो घटाएं, ९ का भाग देने से जो शेष बचे उसे दशा समझें। १ शेष से सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, और ९ शेष से शुक्र की दशा जानें।

दशा के दिन– सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५[illegible], बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६० – ये दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल– सूर्य वर्ष लग्न से ९, चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें और शनि १२ वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल– सू. १।५, चं. २।४, मं. १।८।१०, बुध ३।६, गुरु ९।१२।४, शु. २।७।१२ तथा श. १०।११ ७ राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुषस्त्री–ग्रह–बल– स्त्रीग्रह (चं. बु. शु. श.) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू., मं., बृ.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। **दिनरात्रि बल**–दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिनलग्नपति→	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु.	चं.
रात्रिलग्नपति→	गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

वर्ष में दृष्टि–ज्ञान और फल

⁂ वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो उस भाव से ५वें, ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ और जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है, उनसे प्रेम होता है। ⁂ तीसरे ग्यारहवें गुप्त मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य कठिनता से एवं गुप्त भाव से सफल हो।⁂ पहले, सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। फल– शत्रुता करे, मित्र से बैर, धनहानि, बनते काम को बिगड़ना आदि फल होते हैं।⁂ ४–१०वें गुप्तशत्रु दृष्टि से देखता है। फल– कार्य बड़ी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णयः– जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५ (दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी समयेश होता है।) इन पांच अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होता है। यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हों तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह और बल, दृष्टि, अधिकार– तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश हो। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे या जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश हो। फल– वर्षेश ६। ८। १२ वें व अस्तंगत, हीनबली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भयविशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के स[illegible] ैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग– वर्षकुण्डली में लग्नेश– तृतीयेश वा चतुर्थेश–नवमेश एक घर में हों या एक–दूसरे को मित्रदृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी। अगर वर्षलग्नेश वक्री हो और वह मित्रग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली का योग बनेगा।

सूक्ष्म, शुद्ध वर्षमान के अनुसार वर्षप्रवेशकाल

वेध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि– सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक (शुद्ध) वर्षमान से ३/४ मिनट अधिक है। शुद्ध वर्षफल बनाने के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल का होना आवश्यक है। हम यहां "सूक्ष्म वर्ष–प्रवेश–सारणी" दे रहे हैं। जो दैवज्ञ वर्षफल के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल जानना चाहते हैं, उन्हें इसी सारणी का प्रयोग करना चाहिए।

इस सारणी में घं. मि. का प्रयोग है, अतः इससे वर्षप्रवेशकाल जानने के लिए जातक के जन्म का स्टैं. टा. ही यहां प्रयोग में लाना होगा। जैसे– मान लीजिए, किसी व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेशकाल जानना है। उस व्यक्ति के जन्म का वार चन्द्र और जन्मकाल (भा. स्टै. टा.) ८घं. २०मि. (प्रातः) है। उसके वारादि जन्मकाल (2 वा. 8 घं. 20 मि.) में सारणी से गताब्द 9 द्वारा प्राप्त वारादि काल 4 वा. 7 घं. 22 मि. जोड़ने पर 6 वा. 15 घं. 42 मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि इस व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार को 15 घं. 42 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर होगा।

ध्यान रहे– इस सारणी के प्रयोग से प्राप्त वार रात्रि के 12 बजे बदलने वाला होगा। अतः यहां प्रयोग में लाया जाने वाला जन्मकालिक वार भी इसी प्रकार होना चाहिए।

सूक्ष्म वर्षप्रवेश सारणी

गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
१	१/६/९	१३	२/७/५९	२५	३/९/४९	३७	४/११/३९	४९	५/१३/२९
२	२/१२/१८	१४	३/१४/८	२६	४/१५/५८	३८	५/१७/४८	५०	६/१९/३८
३	३/१८/२७	१५	४/२०/१७	२७	५/२२/७	३९	६/२३/५७	५१	१/१/४७
४	५/०/३७	१६	६/२/२७	२८	०/४/१६	४०	१/६/६	५२	२/७/५६
५	६/६/४६	१७	०/८/३६	२९	१/१०/२६	४१	२/१२/१६	५३	३/१४/०६
६	०/१२/५५	१८	१/१४/४५	३०	२/१६/३५	४२	३/१८/२५	५४	४/२०/१५
७	१/१९/०४	१९	२/२०/५४	३१	३/२२/४४	४३	५/०/३४	५५	६/२/२४
८	३/१/१३	२०	४/३/३	३२	५/४/५३	४४	६/६/४३	५६	०/८/३३
९	४/७/२२	२१	५/९/१२	३३	६/११/२	४५	०/१२/५२	५७	१/१४/४२
१०	५/१३/३२	२२	६/१५/२२	३४	०/१७/११	४६	१/१९/१	५८	२/२०/५१
११	६/१९/४१	२३	०/२१/३१	३५	१/२३/२१	४७	३/१/११	५९	४/०३/१
१२	१/१/५०	२४	२/३/४०	३६	३/५/३०	४८	४/७/२०	६०	५/९/१०

गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
६१	६/१५/१९	७३	०/१७/९	८५	१/१८/५९	९७	२/२०/४९	१०९	३/२२/३९
६२	०/२१/२८	७४	१/२३/१८	८६	३/१/८	९८	४/२/५८	११०	५/४/४८
६३	२/३/३७	७५	३/५/२७	८७	४/७/१७	९९	५/९/७	१११	६/१०/५७
६४	३/९/४६	७६	४/११/३६	८८	५/१३/२६	१००	६/१५/१६	११२	०/१७/६
६५	४/१५/५६	७७	५/१७/४५	८९	६/१९/३५	१०१	०/२१/२५	११३	१/२३/१५
६६	५/२२/५	७८	६/२३/५५	९०	१/१/४५	१०२	२/३/३४	११४	३/५/२४
६७	०/४/१४	७९	१/६/४	९१	२/७/५४	१०३	३/९/४४	११५	४/११/३४
६८	१/१०/२३	८०	२/१२/१३	९२	३/१४/३	१०४	४/१५/५३	११६	५/१७/४३
६९	२/१६/३२	८१	३/१८/२२	९३	४/२०/१२	१०५	५/२२/२	११७	६/२३/५२
७०	३/२२/४१	८२	५/०/३१	९४	६/२/२१	१०६	०/४/११	११८	१/६/१
७१	५/४/५०	८३	६/६/४०	९५	०/८/३०	१०७	१/१०/२०	११९	२/१२/१०
७२	६/११/०	८४	०/१२/५०	९६	१/१४/४०	१०८	२/१६/२९	१२०	३/१८/१९

वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए।

जिस प्रकार जातक का जन्म जिस स्थान पर होता है उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लग्न का निर्णय किया जाता है, ठीक उसी प्रकार वर्षप्रवेश के समय जातक जिस स्थान पर हो उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही वर्षप्रवेश का लग्न होना चाहिए, क्योंकि वर्ष प्रवेश भी जातक का एक 'उपजन्म' ही है। इस प्रकार न्यूयार्क (अमेरिका) में जन्म लेने वाला जातक यदि अपने किसी वर्ष के प्रवेश के समय दिल्ली (भारत) में मौजूद है तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न दिल्ली के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लगाना चाहिए। इसी तरह यदि दिल्ली में जन्म लेने वाला जातक वर्षप्रवेश के समय न्यूयार्क में हो तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न न्यूयार्क के अक्षांश–रेखांशानुसार ही होना चाहिए। क्योंकि प्राचीनकाल में अधिकतर लोग अपने जन्मस्थान को छोड़कर बहुत कम दूसरे स्थान पर जाते थे, अतः ज्योतिषी लोगों में वर्षप्रवेश के लग्न को जन्मस्थान से ही जोड़ने की परम्परा बन गई, जो तर्कसंगत नहीं है।

इस विषय को स्पष्टता से जानने के लिए 'सं. 2052 वि. के' "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृ. 41/42 पर मेरा लेख "वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए?" पढ़ें।

मास प्रवेशकाल

भिन्न–भिन्न राशियों में संचार करता हुआ सूर्य जब–जब जातक के जन्म–कालिक स्पष्ट सूर्य की अंश, कला, विकलाओं के तुल्य अंश, कला, विकलाओं पर आता है, तब–तब जातक के मासों का प्रारम्भ (मासप्रवेश) होता है। उदाहरणार्थ– यदि जातक का जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य 2 रा. 10 अं. 25 क. 40 वि. है, तो जब जब (सूर्य) जातक की आयु के विभिन्न वर्षों में मेष आदि राशियों के 10 अं. 25 क. 40 वि. पर पहुँचेगा– इसका निर्णय सूर्य की मास–प्रवेश वाले दिन की गति और उस दिन के पंचांगस्थ दैनिक सूर्य तथा मास–प्रवेशकालिक सूर्य के अन्तर से त्रैराशिक द्वारा किया जा सकता है। (इसके लिए सं. 2050 वि. के "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृष्ठ 41 पर दिया गया मेरा लेख "स्पष्टमान से मास–प्रवेशकाल" पढ़ें।)

–प्रियव्रत शर्मा

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	०	३/१०	३/१०	एकपाददृष्टिः
५/९	५/९	५/९	५/९	०	५/९	५/९	५/९	५/९	द्विपाददृष्टिः
४/८	४/८	०	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४/७/८	७	५/७/९	७	३/७/१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
चं. मं. गु.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बुध	मित्र—ग्रहाः
बु.	मं.श.गु.शु.	शु. श.	मं. गु. श.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष १०	वृष ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशयः परमोच्चांशाः
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु १५	मिथुन १५	नीचराशयः नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे., वृश्चि.	मि., क.	ध., मी.	वृष, तुला	म., कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्णः
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुरुष, स्त्री, नपुंसकः
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लौह	लौह	लौह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्त्व	सत्त्व	तम	रज	सत्त्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षी,स्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थानम्

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म-नक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़ें, ३ और जोड़ें, 8 से भाग दें, तो शेष मंगलादि योगिनी दशा होती है।

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा (मास—दिन)

मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

गर्भयोग–

वर्ष–कुण्डली में लग्नेश पांचवें या सातवें पड़ा हो व पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़े हों तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। मुंथेश और चन्द्रमा बली होकर पांचवें हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्नलग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करें, फिर उसमें १५० (डेढ़ सौ) का भाग दें। लब्ध, जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्नलग्न की राशि के अंक मिलाएं। प्राप्तांक को मुन्था का स्पष्ट लग्न समझें और प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि के स्वामी को जन्मलग्नेश जानें अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्मलग्नपति के स्थान में प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि का स्वामी जो हो उसे लग्नेश समझिए। प्रश्नपत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष है। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

अरिष्ट योग

यदि जन्मलग्न ही वर्ष लग्न हो और जन्मनक्षत्र भी वर्ष में आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ न हों तो अशुभ, कष्टभय होता है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ हों तो अशुभ फल नहीं होगा।

आवश्यक मुहूर्त्त

कोई भी कार्य यदि शास्त्र–सम्मत शुभ–मुहूर्त्त में किया जाए तो वह अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है। गया–गोदावरी–यात्रा में, नवरात्रकृत्य में एवम् चातुर्मास्य व्रत में गुरु–शुक्रास्त का दोष नहीं होता।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभ तिथियां– १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३। **शुभ नक्षत्र**–तीनों उत्तरा, मृ., ह., अनु., रो., स्वा., श्र., ध., श.। **शुभ लग्न**– जब लग्न और ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों;३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; सूर्य, मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांश में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ कर १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में हो तो कन्या होती है।

चित्रा, पुन. पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभकाल

भद्रा; ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां; संक्रान्ति का दिन, सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां; ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो–दो घड़ी; मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २–२ घड़ी; ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी–आधी घड़ी; ५, ९, १ लग्नों की आधी–आधी घड़ी; ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक–एक घड़ी; ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक–एक घड़ी; निर्बल तारा, जन्मनक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र एवम् ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृति योग; माता–पिता के श्राद्ध का दिन; दिन का समय; परिघ योग का आधा भाग; उत्पात से हत नक्षत्र; जन्मराशि से अष्टमलग्न; पापयुक्त लग्न तथा पापाकान्त नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित है।

गर्भमासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री–पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए और अन्यकार्यों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए– यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन संस्कार का मुहूर्त्त

यह संस्कार गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृग., पुन., पु., ह., मू. और श्रवण नक्षत्रों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तो शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमान्त संस्कार का मुहूर्त्त

गर्भाधान के छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त्त में निर्दिष्ट तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है। **"सीमान्त जातकादीनि प्राशनान्तानि यानि वै। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः।।"**

गर्भ–रक्षा के लिए विष्णुपूजा

गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में; शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब गर्भ की रक्षा के लिए विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधाजनन संस्कार

बालक के उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्णसहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर **"ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भू र्भुवः स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्व त्वयि दधामि"**– इन पांचों मन्त्रों से बालक को थोड़ा–थोड़ा चार बार मधु चटावें– ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिकापथ्य का मुहूर्त्त

रिक्ता, अमा, भद्रा, व्यतिपात एवं वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों; वार चं. बु. गु. श. हों; नक्षत्र मृग., पुन., पु., श्र., रे., म. हों– तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि, नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त्त

रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृग., ह., स्वा., अश्वि. और अनु. नक्षत्रों में; रवि, गुरु और भोम वारों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में शुभ हैं। आर्द्रा, पुन., पु., श्र., म., भ., कृ., वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री द्वारा जलपूजन का मुहूर्त्त

मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार को ४, ९, १४, तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु., नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में; चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त्त

संक्रान्तिदिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११ १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ., रे., चि., अनु., तीनों उत्तरा, रो., ह., अश्विनी, पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ., ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहणमुहूर्त्त

जन्म दिन से १०, १२, १६, १८ ३२वें दिन शुक्रवार में; मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि., तीनों उत्तरा, रो. नक्षत्रों में ४, ९, १४, ३० तिथियों के अलावा अन्य तिथियों में; १, ४, ७, १० लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर एवं १, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११ वें शुभग्रह हों तथा ३, ६, ११ वें पापग्रह हो तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण का मुहूर्त्त

स्वा., अश्वि., पुन., ह., मू., पु., अनु., श्र., रो., ध. नक्षत्रों में; भौम एवं शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता, अमा, भद्रादि से रहित शुभ दिन में; तीसरे, चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होने पर १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करा दें।

सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरोग्य	मरण	कृषता	व्याधि	सौख्य

भूम्युपवेशन—मुहूर्त्त

पांचवें महीने में पृथ्वी, वाराह का पूजन करके भौम के पूर्ण बल में तीनों उत्तरा, रो., मृग., ज्ये., अनु., अश्वि., हस्त, पुष्य, अभि— इन नक्षत्रों में; ४, ९, १४, ३०— इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न एवं शुभ दिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र बांधकर पृथ्वी पर बैठाएं।

भूम्युपवेशन के लिए मंत्र— " रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये।" इति।।

इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें। जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी आजीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त्त

जन्ममास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें मास में कन्या का भद्रादि दोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में; सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पु., अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में; जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष, वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर शेष लग्नों में; १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रह की दृष्टि हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; दशम स्थान पापग्रहरहित हो; १, ६, ८ स्थान मे चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी—किसी के मत से जन्मनक्षत्र अनु., शततारिका (शतभिषा) और स्वाती अशुभ हैं।

कर्णवेध का मुहूर्त्त

चैत्र, पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक), जन्ममास, जन्मनक्षत्र, ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा, क्षयतिथि और सम वर्षों को छोड़कर जन्म के १२वें या १६वें दिन; ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को श्र., ध., पुन., मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो; १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पतिवार हो तो कर्णच्छेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हर्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या के नासिकाच्छेदन का मुहूर्त्त

कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक, शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डनमुहूर्त्त

गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोडकर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़कर; २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रान्तिदिन को छोडकर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रहरहित) हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; ज्ये., मृ., रे., चि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., ह., अश्वि., पुष्य और अभिजित् नक्षत्रों में मुण्डन शुभ है।

ध्यान रहे– लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डनकर्म में विशेष–स्वकुल–शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र, तिथ्यादि; शुभ समय में अपने–अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, जो **''यथा कुलधर्म वः''**– इस स्मृति के अनुसार से ठीक ही है।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त्त

मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गए हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं– वर्जित काल–शनि, रवि, भौमवार, हजामत में नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्तिदिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर और भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल– यज्ञ, विवाह, मृतककर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय(बिना मुहूर्त्त के भी) हजामत बनवाई जा सकती है। किसी--किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रूपजीवी (जैसे– नट–भांड आदि) किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं।

कर्णवेध और क्षौर का वार– ब्राह्मण रविवार को., क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त्त

जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., श्र., स्वा., रे., पुन., आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है। लग्न में मेष, कर्क तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिए।

विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

उत्तरायण में (कुम्भ के सूर्य को छोडकर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को; २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में; भ.., आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., म., तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में; जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेज़ी विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

सूर्य, भौम, शनिवार हों; ४, ९, १४ तिथि हों; ज्ये., आश्ले., म., तीनों पूर्वा, भ., कृ., वि., आर्द्रा, उ. षा., शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने–पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त्त

अश्वि., पु., चि., अनु., ध. नक्षत्र; सूर्य, बुध, चन्द्र, गुरु, शनि वार एवम् १; २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त्त

यज्ञ और उपवीत– इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है। देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हों, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है-- पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु–धागाविशेष)-- यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से **(गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः)** ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, वर्ष में करें। यदि इन वर्षों में न किया जा सके तो ब्राह्मण १६, क्षत्रिय २२ और वैश्य २५वें वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं। उसके बाद सावित्रीपतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह., अश्वि., पुष्य, अभि., ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृग., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित, इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय, वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू., चं., बु., (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श., गुरुवार को शुक्ल २, ३, १०, ११, १२ तथा कृष्ण पक्ष की २, ३, ५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि (जैसे– आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२), संक्रान्तिदिन तथा रोगबाण को छोडकर मध्याह्न से पहले शुभ है। शु., गु., च. और लग्नेश ६, ८ स्थानों में चं., शु. १२वें स्थान में और १, ५, ८वें भावों में पापग्रह अशुभ हैं। शुभ ग्रह ६, ८, १२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में; पाप ग्रह ३, ६, ११ स्थानों; वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु, शुक्र के बाल्य–वृद्धत्त्व–अस्त के समय को छोडकर उपनयन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिए समयशुद्धि न मिले अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है--ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

मेलापक सारणी देखने की रीति और अष्टकूट दोषों के परिहार

लेखक:- प्रियव्रत शर्मा

आगे चार पृष्ठों पर 'मेलापक सारणी' दी गई है । इसके बाई ओर पहिले,दूसरे कालमों में लड़की की और सबसे ऊपर वाली पहिली,दूसरी पंक्तियों में लड़के की राशियां तथा चरण-नक्षत्र दिए गए हैं । लड़की के नक्षत्र चरण के आगे लड़के के नक्षत्र-चरण के नीचे वर्ण आदि अष्टकूटों के गुण और मिलान में होने वाले वर्ण आदि दोषों का निर्देश है । वर्ण आदि दोषों के लिए नीचे लिखे सांकेतिक अक्षरों का इस सारणी में प्रयोग किया गया है:-

वर्ण दोष के लिए	= ब	राशीश दोष के लिए	= र
वश्य दोष के लिए	= व	गण दोष के लिए	= ग
तारा दोष के लिए	= त	भकूट दोष के लिए	= भ
योनि दोष के लिए	= य	नाडी दोष के लिए	- न

उदाहरणार्थ - यदि लड़की का जन्म चित्रा के ४ र्थ चरण में और लड़के का पू. भा. के [illegible] चरण में हुआ हो तो इनके मिलान में इस मेलापक सारणीसे अष्टकूटों के गुण १८ ३ मिले, और ज्ञात हुआ कि इस मिलान में त (तारा), य (योनि), ग (गण), तथा भ (भकूट) दोष हैं ।

अष्टकूट दोषों के परिहार-

वर, कन्या के राशीशों अथवा नवमांशेशों की मैत्री तथा राशीशों , नवशांशेशों की एकता द्वारा नाड़ी दोष के अलावा शेष सभी दोषों का परिहार हो जाता है । राशीश-नवमांशेशों की मैत्री-एकता के अलावा अन्य और भी अनेक परिहार हैं, जिनसे वर्ण आदि दोष दूर हो जाते हैं। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है -

(१) वर्ण दोष का परिवार:- वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है । लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्ण दोष का परिहार हो जाता है । सभी ग्रहों के वर्ण इस प्रकार हैं:-

रवि का वर्ण क्षत्रिय,चन्द्र का वैश्य,मंगल का क्षत्रिय,बुध का शूद्र, गुरु का ब्राह्मण, शुक्र का ब्राह्मण और शनि का शूद्र है ।

(२) वश्य दोष का परिहार:- वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष दूर हो जाता है ।

(३) तारा दोष का परिहार:- वर कन्या के राशीशों, नवमांशेशों की मैत्री या एकता के अलावा तारा दोष का दूसरा कोई परिहार नहीं है ।

(४) योनि दोष का परिहार:- भकूट और वश्य कूटों में से कोई एक भी यदि शुभ(ठीक) हों तो योनिदोष का परिहार हो जाता है ।

(५) राशीश दोष का परिहार:- भकूट शुभ होने पर (यानि द्विर्द्वादश, नवपंचम और षडष्टक का अभाव होने पर) राशीश दोष दूर हो जाता है ।

(६) गण दोष का परिहार:- वर -कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों [illegible] जाता है

(७) भकूट दोष का परिहार :- वर कन्या के राशीशों, नवांशेशों की मैत्री या एकता ही भकूट दोष का प्रमुख परिहार है। यदि इसके साथ ताराशुद्धि या वश्यशुद्धि भी हो तो भकूट दोष का उत्तम परिहार माना जाता है ।

(८) नाड़ी दोष का परिहार :- वर,कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों, अथवा नक्षत्र एक और राशियां, भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी दोष दूर हो जाता है । दोनों के नक्षत्रों के चरणों का वेध न होने की स्थिति में भी नाड़ी दोष का परिहार माना जाता है ।

नाड़ी दोष के परिहार के प्रसंगमें वर-कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में और दूसरे का चतुर्थ चरण में अथवा एक का द्वितीय चरण में और दूसरे का तृतीय चरण में हुआ हो तो पादवेध मान लिया जाता है । लेकिन यह नियम सर्वत्र लागू नहीं होता । इसके स्पष्टीकरण के लिए सं. २०४७ के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में पृ ३४ पर दिया गया मेरा लेख **''पाद वेध द्वारा नाड़ी दोष के परिहार में परम्परागत एक भ्रांति''** पढ़ना चाहिए । यह लेख मेरी पुस्तक **'ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन'** में भी है ।

ध्यान दें:- जैसा कि ऊपर भी बता चुके हैं,वर,कन्या के राशीशों,नवमांशों की मैत्री और एकता तो वर्ण,वश्य,तारा,योनि,राशीश,गण और भकूट दोषों का परिहार कर देती है,लेकिन नाड़ी दोष का परिहार इनसे नहीं होता । नाड़ी दोष का परिहार तो केवल उपरोक्त स्थितियों में ही होता है ।

दैवज्ञ को यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए,कि नाड़ीदोष का यदि परिहार नहीं मिले तो किसी भी स्थिति में (भले ही अन्य सातों कूट शुद्ध क्यों न हों, मिलान में गुण अठाईस भी क्यों न प्राप्त हों), सम्बन्ध करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए । इस बारे में मुहूर्तशास्त्रकारों का यही स्पष्ट निर्णय है ।

'नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्' -वाक्य को संहिताकारों ने मान्यता नहीं दी है । 'मुहूर्त चिन्तामणि' आदि अन्य प्रामाणिक मुहूर्तग्रन्थों ने भी इसकी उपेक्षा की है,अत: इसे मान्यता नहीं दी जा सकती।

'एकनक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'- वाक्य भी प्रामाणिक नहीं है । एक ही नक्षत्र में उत्पन्न वर,कन्या को नाड़ी दोष तब नहीं माना जाता, जबकि उनका जन्म भिन्न-भिन्न चरणों में हुआ हो । 'मुहूर्तचिन्तामणि' का वाक्य है -**'नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्'** (अर्थात् दोनों का नक्षत्र एक होने पर दोष (नाड़ीदोष) की निवृत्ति तभी होती है,जबकि दोनों के चरण भिन्न-भिन्न हों)। **ध्यान रहे,** दोनों का जन्म एक ही नक्षत्र के एक ही चरण में होने पर नाड़ी दोष परमाधिक माना जाता है। एक ही नक्षत्र में पादवेध भी नहीं माना जाता ।

दोषपूर्ण अष्टकूटों के .परिहारों को प्रमाणित करने वाले शास्त्रवाक्य बहुत हैं,उनको विस्तारभय से यहां उद्धृत नहीं किया गया। उन्हें मेरी पुस्तक **''ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन''** में आप देख सकते हैं)

सरलता पूर्वक एक ही दृष्टि में सभी अष्टकूटों के परिहार आ जाएं- इसके लिए नीचे दिया गया यह कोष्ठक देखें :-

अष्टकूट परिहार कोष्ठक

[illegible] परिहृत कूट के आधे गुणों को ही स्वीकार करना चाहिए । यह

अष्टकूट परिहार कोष्ठक

कूट	परिहार
वर्ण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।
वश्य	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ योनिमैत्री हो ।
तारा	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।
योनि	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वश्यशुद्धि हो। ३ सद्भकूट हो।
राशीश	१ दोनों के नवमांशेशों में मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो।
गण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो। ३ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों ।
भकूट	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।*
नाड़ी	१ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न - भिन्न हों । २ दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों । ३ दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न - भिन्न हों । ४ पाद वेध न हो।

* यदि इस परिहार के साथ ताराशुद्धि , वश्यशुद्धि में से कोई एक भी हो तो यह परिहार उत्तम माना जाता है।

परिहृत कूट के गुण

वर्ण आदि जो कूट दोषपूर्ण होता है, उसके लिए निर्धारित पूरे गुणों को छोड़ दिया जाता है। जब उस दोषपूर्ण कूट का कोई उपरोक्त परिहार मिल जाए तब उसके पूरे गुणों को पुनः स्वीकार कर उन्हें मेलापक सारणी से प्राप्त गुण संख्या में जोड़कर उस गुणसंख्या को वास्तविक गुणसंख्या माना जाए- ऐसा कुछ आचार्यों का मत है । कुछ आचार्यों का मत है कि परिहार द्वारा दोष का पूरा नहीं, अपितु आंशिक निवारण होता है,अतः परिहृत कूट के आधे गुणों को ही स्वीकार करना चाहिए । यह (दूसरा)मत तर्कसंगत है। इसके अनुसार परिहृत कूट के आधे गुण(उस कूट के लिए निर्धारित पूरे गुणों का आधा भाग)मेलापक सारणी से मिली गुणसंख्या में जोड़कर उसे ही यथार्थ गुणसंख्या मानना युक्तियुक्त है ।

कितने गुण मिलने पर सम्बन्ध कर देना चाहिए ?

परिहृत कूटों की आधी गुणसंख्या को मेलापक सारणाी में उपलब्ध गुणसंख्या में जोड़ने. पर मिली गुणसंख्या यदि १६ १/२ से कम है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । यदि षडष्टक भकूट का परिहार न मिल रहा हो तब २० से कम गुण संख्या होने पर सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । ध्यान रहे- यहां प्रत्येक स्थिति में नाड़ी दोष का परिहार मिलना नितान्त आवश्यक है। यदि नाड़ी दोष के उपरोक्त परिहारों में से कोई एक भी परिहार न मिल रहा हो तब तो २८ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध करने की अनुमति शास्त्रकारों ने नहीं दी है ।

यदि किसी विशेष कारण (विवशता) वश सम्बन्ध करना आवश्यक (अपरिहार्य)हो जाए, तब १६ से कम गुणों और षडष्टक तथा नाड़ीदोष के अपरिहार की स्थिति में भी गाय,अन्न,वस्त्र,सुवर्ण का यथाशक्ति दान, तथा जप -शान्ति करके सम्बन्ध किया जा सकता है । इस स्थिति में कन्या का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने की भी परम्परा है । लेकिन दान,जप,शान्ति करना भी इस स्थिति में अत्यन्त आवश्यक है । साधाराण स्थिति में (नितान्त विवशता की स्थिति के अभाव में) लड़की का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाना सर्वथा अशास्त्रीय है । नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने का 'सिद्धान्त' अपनाने पर तो किसी भी लड़की का किसी भी लड़के के साथ और किसी भी लड़के का किसी भी लड़की के साथ सम्बन्ध बेरोक-टोक किया जा सकता है और वहां अष्टकूटों के गुण इच्छानुसार अधिकाधिक प्राप्त किए जा सकते हैं, जिससे दोषपूर्ण कूटों का परिहार बतलाने वाले सभी शास्त्रवाक्य अर्थहीन हो जायेंगे।

मिलान में कुछ और विचार्य विषय

यद्यपि संहिताओं में इन आठ कूटों के अतिरिक्त अनेक और भी विचार्य विषय मिलते हैं, लेकिन वर्गमैत्री और नूटर का भी विचार करने की भी कुछ दैवज्ञों में परम्परा हैं,इन दोनों का विवेचन इस प्रकार है-

वर्गमैत्री-।

वर्गमैत्री का विचार वर,कन्या के नाम के आदिम वर्णो से सम्बद्ध है। हिन्दी वर्णमाला के अकार आदि स्वर 'अवर्ग', 'क' आदि पांच वर्ण 'कवर्ग', 'च' आदि पांच वर्ण 'चवर्ग', 'ट' आदि पाँच वर्ग 'टवर्ग' त आदि पांच वर्ण 'तवर्ग','प'आदि पांच वर्ण 'पवर्ग', 'य' आदि पांच वर्ण 'यवर्ग' तथा 'श' आदि पांच वर्ण 'शवर्ग' कहलाते हैं। इन अवर्ग आदि आठ वर्गों को उपरोक्त क्रमानुसार क्रमशः प्रथम वर्ग, द्वितीय वर्ग, आदि संज्ञाएं दी गई हैं। इन आठ वर्गों केस्वामी क्रमशः गरुड़, मार्जार,सिंह, श्वान,

सर्प, भूषक, मृग और मेष माने गये हैं । प्रत्येक वर्गेश अपने से पंचम वर्ग के स्वामी का शत्रु माना गया है । जैसे :- गरुड़ और सर्प तथा मूषक और मार्जार परस्पर शत्रु हैं ।

नामाक्षरों से वर्ग ज्ञान कोष्ठक :

वर्ग	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्ग के वर्ण	अ, इ, उ,ए	क, ख, ग, घ,ङ	च,छ,ज, झ,ञ	ट,ठ,ड, ढ,ण	त,थ,द, ध,न	प, फ,ब, भ,म	य,र, ल,व	श,ष, स,ह
वर्गेश	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष

वर, कन्या के नामों के आदिम वर्णों के वर्गों के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अच्छा नहीं माना जाता, उनका जीवन दुःखमय रहता है ।

यदि वर्गेशों में शत्रुता है तो अष्टकूटों से प्राप्त गुण १७ से अधिक होने पर ही सम्बन्ध करना चाहिए। यदि मिलान में अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १४,१५ ही हों और नाडी दोष न हो तब वर्गेश की एकता (अभिन्नता) होने पर सम्बन्ध किया जा सकता है-ऐसा कुछ लोगों का मत है

नृदूर

वर का नक्षत्र या नक्षत्र चरण यदि कन्या के नक्षत्र या नक्षत्र चरण से तुरन्त परवर्ती हो तो 'नृदूर' दोष कहलाता है। जैसे - कन्या का जन्म नक्षत्र अश्विनी और वर का भरणी, अथवा कन्या का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण में और वर का अश्विनी के द्वितीय चरण में हो तो भी नृदूर दोष होगा। 'नृदूर' दोष का फल मुहूर्त्त शास्त्रों में बहुत अशुभ लिखा है।

दोनों (वर ,कन्या) की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न या दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों तों नृदूर का परिहार हो जाता है।

अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १६ $\frac{१}{२}$,१७,१८ हों और 'नृदूर' दोष का परिहार न मिले, तब नाड़ी दोष के अभाव में भी मिलान को कुछ मुहूर्त्तकार अच्छा नहीं मानते । १८ से अधिक गुण होने पर 'नृदूर' की उपेक्षा की जा सकती है।

नामराशि से अष्टकूटों का निर्णय

वर और कन्या-दोनों का यदि जन्मकाल ज्ञात न हो, तब दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों (नामों के आदिम अक्षरों से अबकहड़ा चक्र द्वारा निर्णीत राशि और नक्षत्रों) के आधार पर ही मेलापक सारणी से अष्ट कूटों के गुणों का निर्णय करना चाहिए। अपिच यदि वर, कन्या-दोनों में से किसी एक का जन्मकाल ज्ञात न हो तो भी दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों के आधार पर ही अष्टकूटों का निर्णय करना चाहिए। एक की जन्मराशि, जन्मनक्षत्र और दूसरे की नामराशि, नाम नक्षत्र के आधार पर अष्टकूटों का निर्णय करने की अनुमति शास्त्र नहीं देते।

कुज (मंगली) दोष-

निम्नलिखित स्थितियों में कुजदोष (मंगली दोष) माना गया है -

(१) जन्म कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भावमें मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो।
(२) चन्द्र कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या कोई क्रूर ग्रह हो ।
(३) शुक्र से १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो ।

कुजदोष बनाने वाला ग्रह अस्त, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ हो तो कुजदोष का फल अधिक माना गया है । कुजदोष दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छा नहीं माना जाता ।

कुजदोष के सामान्य कुछ परिहार -

इन स्थितियों में वर, कन्या का कुज दोष दूर हो जाता है -

(१) कुजदोष बनाने वाला ग्रह (क्रूरग्रह) उच्चस्थ स्वराशिस्थ, मित्रनवांशस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चनवांश या मित्रनवांश में हो।
(२) कुजदोष बनाने वाले ग्रह पर वृहस्पति की पूर्णदृष्टि हो ।
(३) वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोष विद्यमान हो तो दोनों के कुजदोष समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान रहे, कुजदोष वाले वर और कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोषों का परिहार मिलने पर कुजदोष का कुफल समाप्त हो जाता है । दोनों की कुण्डलियों में से किसी एक की कुण्डली में ही कुजदोष परिहार हो तो कुजदोष का कुप्रभाव रहता है ।

कुण्डली मिलान की प्रामाणिकता

हमारे ज्योतिष के मानक ग्रन्थों (संहिता, जातक, मुहूर्त्त ग्रन्थों) में वर, कन्या का सम्बन्ध करने से पूर्व उनकी कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान द्वारा कुजदोष के परिहार की चर्चा कहीं भी नहीं की गई है। पुनरपि कुण्डली मिलान की परम्परा सभी भारतीय प्रदेशों में प्रचलित है । इसका शास्त्रीय मूल अभी तक अज्ञात है। आश्चर्य है-सभी वशिष्ठ, नारद, गर्ग आदि की संहिताओं, मुहूर्त्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त्तग्रन्थों तथा वर-कन्या के सम्बन्ध की अनुकूलता के परीक्षण के लिए रचित 'विवाहवृन्दावन' आदि सभी ग्रन्थों में वर-कन्या के सम्बन्ध के लिए केवल अष्टकूटों के परीक्षण का ही निर्देश है, कुण्डली मिलान का कहीं भी नहीं ।

षट्कूट चक्र

षट्कूट चक्र

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी ज्ञापक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	अश्वि.	भर	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण	१, २ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२
वर्ण	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	च.	च.	च.	च.	च.	च.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	व.	व.	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	श्वा.	मा.	मा.	मे.	मा.	मू.	मू.	गौ.	गौ.	म	व्या.
राशीश	म.	म.	म.	शु.	शु.	शु.	बु.	बु.	बु.	चं.	चं.	चं.	सू.	सू.	सू.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म.	दे.	दे.	म.	दे.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.
नाड़ी	आ.	म.	अ.	अ.	अ.	म.	म	आ	आ	आ.	म.	अ.	अ.	म.	आ.	आ.	आ.	म.

राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा	रेव.
चरण	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४
वर्ण	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.	न.	वा.	सि.	सि.	अ.	सि.	सि	गौ.	ग.
राशीश	शु.	शु.	शु.	म.	म.	म.	गु.	गु.	गु.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाड़ी	म.	अं.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.

वर्ण- ब्रा.= ब्राह्मण, क्ष= क्षत्रिय, वै= वैश्य, शू.=शूद्र

योनि- अ.=अश्व, ग=गज, मे=मेष, स=सर्प, श्वा.=श्वान, मा.=मार्जार, मू.= मूषक,म=महिष, व्या=व्याघ्र, मृ=मृग, वा=वानर, न=नकुल, सिं=सिंह

गण- दे=देव, म=मनुष्य, रा=राक्षस

वश्य- च=चतुष्पद, की=कीट, व= वनचर, द्वि=द्विपद, ज=जलचर

राशीश- सू. सूर्य, चं=चन्द, मं.=मंगल, बु=बुध, गु=गुरु, शु=शुक्र, श=शनि

नाड़ी- आ=आद्य, म=मध्य, अं=अन्त्य

मेलापक सारणी (भाग 1)

वर / कन्या		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	28 न	33	28½ त	18½ ब भ त	21½ ब भ त	22½ ब भ त	26 ब त र	17 ब न त र	19 ब न त र	23½ न त	31½ त	28 ग	21 व भ ग	25 व भ	15½ व भ न त	11 ब भ नतर	9 तबभ यनर	13 व भ त र
	भर. 1,2,3,4	34	28 न	29 ग	19 ब ग भ	21½ ब भ त	14½ ब भ त न	18 न ब त र	26 ब त र	27 ब त र	31½ त	23½ न त	25½ ग त	20 ग व भ	18 व भ न	26 व भ	21½ ब भ र	20 ब भ र त	4 बभग नतर
	कृत्ति. 1	27½ ग त	29 ग	28 न	18 ब भ न	10 ग ब न भ	16½ ग ब भ त	20 ग ब त	20 ग ब त	21 ग ब त र	25½ ग त	26½ ग त	23½ न त	16½ व भ न त	20 ग व भ	20 ग व भ	15½ ग व भ	15½ ग व भ र	18 ब भ त
वृष	कृत्ति. 2,3,4	18½ ग भ त	20 ग भ	19 भ न	28 न	20 ग न	26½ ग त	17½ ग ब भ त	17½ ब ग भ त	18½ ग ब भ त	22 ग त र	23 ग त र	20 न त र	18½ न व त र	22 र व ग	22 र व ग	21 ग भ	21 ग भ	23½ भ त
	रोहि. 1,2,3,4	23½ भ त	23½ भ त	11 ग भ न	20 ग न	28 न	36	27½ ब भ	23½ ब भ त	22½ भ ब त य	26 त र य	27 त र	12 ग न तरय	10½ रवग नतय	24½ र व त य	27 र व	26 भ	26 भ	20 ग भ
	मृग. 1,2	23½ भ त	14½ भ न त	18½ भ त ग	27½ त ग	35	28 न	19 ब भ न	24 ब भ	22½ ब भ त य	26 त य र	19 त र न	21 त र य ग	19½ गरव त य	15½ र व नतय	24½ र व त	23½ भ त	26 भ	13 भ न ग
मिथुन	मृग. 3,4	27 तर	18 न त र	22 त र ग	19½ भ ग त	27 भ	20 भ न	28 न	33	31½ त य	19 भ व तयर	12 भ न वतर	14 भवत यगर	23½ व त य ग	19½ व न त य	28½ व त	31½ त	34	21 न ग
	आर्द्रा 1,2,3,4	19 त र न	27 त र	21 त र ग	18½ ग भ त	24½ भ त	26 भ	34	28 न	25 न य	12½ भ न तयर	20 भ व त र	13 गभर वतय	23½ ग त व	29½ व त	21½ न व त	24½ न त	24½ न त	27 ग य
	पुन. 1,2,3	20 न त र	27 त र	23 त र	20½ भ त ग	22½ भ त	23½ भ त य	31½ त य	24 न य	28 न	15½ न भ व र	22½ भ व र	17 भ व तरग	22½ य व त ग	26½ य व त	21½ न व त	24½ न त	25½ न त	27½ त ग
कर्क	पुन. 4	22½ ब न त	29½ ब त	25½ ब त ग	22 ब ग त र	24 ब त य र	25 ब त य र	18 बभव रतय	10½ बभव नयर	14½ ब भ रनत	28 न	35	29½ त ग	16½ बभय ग त	20½ ब भ त य	15½ ब भ न त	18 न भ त र	19 न ब वतर	21 ब ग वतर
	पुष्य 1,2,3,4	30½ ब त	21½ ब न त	26½ ब त ग	23 ब त र ग	25 ब त र	18 ब न त र	11 बभन वतर	18 ब भ वतर	21½ ब भ व र	35	28 न	30 ग	19½ ब भ ग त	15½ ब भ न त	23½ ब भ त	26 ब व त र	27 ब व त र	12 नबवय तरग
	आश्ले. 1,2,3,4	26 ब ग	24½ ब ग त	22½ न ब त	19 न ब त र	11 गबत नयर	19 ग ब तयर	12 गबत भवयर	12 गबभ वतयर	15 गबत भवर	28½ ग त	29 ग	28 न	15 य ब भ न	15½ गबय भ त	18½ ग त भ त	21 ग ब वतर	21 ग ब वतर	26 ब य त र
सिंह	मघा 1,2,3,4	20 ग व भ	20 ग व भ	16½ व भ न त	17½ वब रनत	9½ वबत गरनय	17½ वबत गरय	21½ व ब गतय	22½ व ब ग त	20½ व ब गयत	16½ ग भ य त	19½ ग भ त	16 न भ य	28 न	30 ग	27½ ग त	16½ व ब गभत	16½ व ब गभत	21½ व ब भ त
	पू.फा. 1,2,3,4	26 व भ	18 व भ न	20 ग व भ	21 ब व र ग	23½ व ब रतय	15½ वबन रतय	19½ व ब नतय	28½ व ब त	26½ व ब त य	22½ य भ त	17½ भ न त	16½ ग भ य त	30 ग	28 न	35	24 व ब भ	22½ व ब भ त	7½ वबत गनय
	उ.फा. 1	16½ व भ त न	26 व भ	20 व ग भ	21 व ब ग र	26 व ब र	24½ व ब र त	28½ व ब त	20½ व ब न त	21½ व ब न त	17½ भ न त	25½ भ त	19½ ग भ त	27½ ग त	35	28 न	17 व ब भ न	16 व ब भ न	13½ वयव तगभ
कन्या	उ.फा. 2,3,4	13 भ न त र	22½ भ र	16½ ग भ र	21 ग भ	26 भ	24½ भ त	31½ ब त	23½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	22 ग व त र	17½ ग व भ त	25 भ व	18 व भ न	28 न	27 न	24½ य ग त
	हस्त 1,2,3,4	10 य भ नतर	20 भ त र	17½ भ र ग	22 भ ग	25 भ	26 भ	33 ब	22½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	23 व त र ग	18½ व भ त ग	22½ व भ त	16 व भ न	26 न	28 न	28 य ग
	चित्रा 1,2	13 गभत यर	5 गभन तयर	19 भ त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	19 ग ब न	26 ग ब य	25½ ग ब त	21 ग व त र	12 गनव तयर	27 व त र	22½ व भ त	8½ ग व भनत	14½ व य गभत	24½ ग य त	27 ग य	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 2)

वर → / कन्या ↓		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2,3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2,3,4	ज्ये. 1,2,3,4	मूल 1,2,3,4	पूषा. 1,2,3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2,3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2,3,4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1,2,3,4	रेव. 1,2,3,4
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	22½ बयतग	26½ बयत	22½ तबयग	18½ गभतय	25½ भत	14 भनग	13½ भनग	25 भ	23½ भत	25 बतर	26 बतर	20 बतयरग	20 बतयरग	15 बनतरग	16 बनतयर	14½ नभतय	24½ भत	26 भ
	भर. 1,2,3,4	13½ बगनतय	29½ बत	21½ गबतय	17½ गभतय	17½ नभत	19½ गभत	20 गभ	18 नभ	26 भ	27½ बर	26 बतर	10 बयगनतर	10 बयगनतर	20 गबतर	24 बयतर	22½ तभय	17½ नभत	26½ भत
	कृत्ति. 1	27½ बतय	15½ बगनत	19½ बनतय	15½ भनतय	19½ गभत	25½ भत	24½ भत	18 गभय	12 गभन	13½ बगनर	11½ बयरगन	25 बतयर	25 बतयर	27 बतर	19 बगतयर	17½ गभतय	19½ गभत	11½ गभतन
वृष	कृत्ति. 2,3,4	22½ बभतय	10½ गबभनत	14½ बभतनय	20½ नतय	24½ गत	30½ त	20 भतर	13½ यगभर	7½ गभनर	12 गभन	10 यगभन	23½ भतय	29½ बतय	31½ बत	23½ गबतय	20 गतयर	22 गतर	14 गनतर
	रोहि. 1,2,3,4	19 गबभ	15½ बभनत	9½ तबगनभ	15½ गनत	29½ त	23½ गत	14 गभतर	19 रभतय	11½ यभनर	16 भयन	17 नभय	20 गभ	26½ गब	24½ गबत	30½ बत	27 तर	27 तर	19 रनत
	मृग. 1,2	12 बभनग	25 बभ	18½ बभतग	24½ तग	21½ नत	24½ तग	15 भतरग	10 नभतयर	17 यभतर	21½ भयत	25 भय	13 नभग	19 बगन	27 बग	29½ बत	26 तर	18 नतर	27 तर
मिथुन	मृग. 3,4	14 नभग	27 भ	20½ भतग	14 भवतरग	11 भवनतर	14 भवतरग	23 तरग	18 नतयर	25 यतर	20 भयवत	23½ भवय	11½ नभवग	13 नभग	21 भग	23½ भत	25½ तवर	17½ नवतर	26½ वतर
	आर्द्रा 1,2,3,4	20 गभय	27 भ	20 गभय	13½ रगवभय	17 तभवयर	3 यतगवभनर	16 गनतर	28 तर	28 तर	23 भवत	23 भवत	17½ गभवय	19 गभय	12 गभन	17 नभय	19 नरवय	26½ वतर	26½ वतर
	पुन. 1,2,3	20½ भतग	28 भ	22 भग	15½ वभरग	21½ वभर	7 रगवभनत	14 यरतनग	27 तर	27 तर	22 वतभ	23 वतभ	17 वतभयग	18½ भगतय	14 नभग	16 नभय	18 रनयव	28 रव	27½ वतर
कर्क	पुन. 4	20½ बतरग	28 वरब	22 वरबग	20 गभ	26 भ	11½ तगभन	8 वतबभगनय	21 बभवत	21 बभवत	26 बतर	27 बतर	21 बगतयर	12½ बभवतयगर	8 बभवनगर	10 बभरनवय	16 नभय	26 भ	25½ भत
	पुष्य 1,2,3,4	11½ गनबवतयर	26½ बवतर	21 रबगवय	19 भयग	18 भन	21 भग	17 गबभवत	11 यबभतनव	21 बभवत	26 बतर	25 बयतर	13 गबनतयर	4½ भबगयवनतर	14½ बवतरगभ	18 बभवयर	24 भय	18 नभ	27 भ
	आश्ले. 1,2,3,4	25½ बवतर	12½ गबवतरन	17½ नबवतर	15½ नभत	20 गभ	26 भ	22½ बभवय	16 गबवभत	8 गबवभनत	13 गबरनत	13 बगतनर	26 बतयर	17½ बभवतरय	19½ बभवतर	11½ गबभवतयर	17½ गभतय	21 गभ	13 गभन
सिंह	मघा 1,2,3,4	24½ बवतर	11½ बवतरगन	16½ बवतरन	22½ नवत	25½ गवत	33 व	25 भव	19 गवभ	8½ वगभनतय	3½ बरतयगभन	4½ बरतगभन	18½ बरतभ	24½ बवतर	25½ बवतर	18½ बवरगत	18½ गभत	19½ गभत	13 गभन
	पू.फा. 1,2,3,4	10½ बवतरगन	25½ बवतर	18½ बवरगत	24½ गवत	23½ नवत	25½ गवत	19 गवभ	17 भवन	24 भवन	17 बरभय	18½ बतभत	4½ बरतगभन	10½ बवतरगन	19½ बवरगत	24½ बवरत	24½ भत	17½ नभत	25½ भत
	उ.फा. 1	16½ बवतयगर	25½ बवतर	16½ बवयगतर	22½ यवगत	31½ वत	17½ गवतन	9½ गवनभत	25 भव	25 भव	20 बरभ	20 बरभ	11½ बरतगभय	17½ बवतगरय	11½ बवतगनर	15½ बवतनरय	15½ नभतय	26½ भत	25½ भत
कन्या	उ.फा. 2,3,4	16½ गबयभत	25½ बभत	16½ गबयभत	18 यवतगर	27 वतर	13 गवतनर	14 गनतर	29½ र	29½ र	24½ भव	24½ भव	16 गभवतय	16½ गबभतय	10½ गबनभत	14½ बभनतय	17½ तनदयर	28½ वतर	27½ वतर
	हस्त 1,2,3,4	20 बभयग	26½ बभत	18½ बभतयग	20 वगतयर	26 वतर	13 नवतरग	15 नतरग	27 तर	28½ र	23½ भव	24½ भव	18½ भगवर	19 बभयग	8½ बयभनतग	13½ बभनतय	16½ वनतयर	26½ वतर	27½ वतर
	चित्रा 1,2	20 बभन	19 गबभय	26½ बभत	28 वतर	11 गवनतयर	25 वतयर	27 तयर	14 गनतर	22 गतर	17 गभत	18½ गभव	15½ भयनय	16 बयभन	24 बभय	16½ गबतभय	19½ गवतयर	10½ गयवनतर	19½ वगतयर

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीशदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 3)

वर / कन्या		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	22½ गत य	14½ गन तय	28½ तय	23½ भत य	20 गभ	12 गभ न	13 गभ न	21 गभ	19½ गभ त	20½ गर वत	11½ गनय वरत	26½ वत र	25½ वर त	11½ वरग नत	17½ वय गरत	17½ यग भत	20 गभ य	21 भन
	स्वाती 1,2,3,4	27½ यत	29½ त	17½ नत	12½ भन त	15½ भन त	26 भ	27 भ	26 भ	28 भ	29 वर	27½ वत र	14½ नव तर	13½ वन तग	25½ वर त	25½ वर त	25½ भत	27½ भत	21 भय ग
	विशा. 1, 2,3	22½ तय ग	22½ तय ग	20½ तय न	15½ तभ नय	10½ गभ तन	18½ गभ त	19½ गभ त	20 गभ य	21 गभ	22 गव र	21 गत र	18½ नव तर	17½ वर तन	19½ वर तग	17½ वयर गत	17½ यग भत	18½ गभ तय	27½ भत
वृश्चिक	विशा. 4	16½ बगभ यत	16½ बगभ यत	14½ बभ नयत	19½ बन यत	14½ बग नत	22½ बग त	12 बवर गभत	12½ वबय गभर	13½ बव गभर	19 गभ	18 गभ य	15½ भन त	21½ बव नत	23½ बव गत	21½ बव गयत	17 तबव गयर	18 बवग तयर	27 बव तर
	अनु. 1,2,3,4	24½ बभ त	15½ बभ नत	19½ बभ गत	24½ बत ग	27½ बत	20½ बन त	10 बवत नभर	15½ तबव रभय	20½ बव भर	26 भ	18 भन	21 भग	24½ बव तग	20½ बव तन	29½ बव त	25 बव तर	26 बव त	11 बरव नतय
	ज्येष्ठा 1,2, 3,4	12 बग भन	18½ बग तभ	24½ बभ त	29½ बत	22½ बग त	22½ बग त	12 तबव गभर	2 तवबय गभनर	5 तबवर गभन	10½ तग भन	20 गभ	26 भ	31 बव	23½ बव गत	16½ तबव गन	12 तबव गनर	12 तबव गनर	24 बवत यर
धनु	मूल 1,2,3,4	12 गभ न	20 गभ	24½ भत	19 बभ तर	13 बग तभर	13 रबग तभ	21 बग तर	15 बगन तर	12 रबग तनय	8 यगभ वनत	17 गभ वत	23½ भव य	25 वभ	19 वग भ	9½ तवग भन	13 तरब गन	13 तरब गन	26 रब तय
	पू.षा. 1,2,3,4	26 भ	18 भन	18 गभ य	12½ बय गभर	18 बभ तयर	10 रबभ तनय	18 बन तयर	27 बत र	27 बत र	23 भव त	13 यभ नवत	17 गभ वत	19 वग भ	17 वभ न	25 वभ	28½ बर	27 बत र	13 तबग नर
	उ.षा 1	24½ भत	26 भ	12 गभ न	6½ रबय भन	10½ बयर भन	17 बय तभर	25 बय तर	27 बत र	27 बत र	23 भव त	23 भव त	9 गभ वनत	8½ तगव यभन	24 वभ य	25 वभ	28½ बर	28½ बर	21 गब तर
मकर	उ.षा. 2,3,4	27 तर	28½ र	14½ गन र	12 गभ न	16 भन य	22½ यभ त	20 बय तभ	22 बभ त	22 बभ वत	28 तर	28 तर	14 गन तर	4½ तयर गभन	20 रभ य	21 रभ	24½ भत	24½ वभ	17 गभ वत
	श्रव. 1,2,3,4	27 तर	26 तर	13½ यन र	11 यभ गन	16 भन य	25 भय	22½ बभ वय	21 बभ वत	22 बभ वत	28 त	26 यत र	15 नत र	6½ तगर भन	18½ रभ त	20 भर	23½ भव	24½ भव	19½ भव
	धनि. 1,2	20 गत यर	11 यगन तर	26 तय र	23½ भत य	20 गभ	12 गभ न	9½ वबग भन	16½ वयब गभ	16 बगव तभ	22 गत र	13 रगन तय	28 तर	19½ रभ त	5½ तगर भन	12½ तयर गभ	16 गभव तय	17½ गभ व	15½ भन वय
कुम्भ	धनि. 3,4	20 गत यर	11 यगत नर	26 तय र	30½ तय	27 ग	19 गन	12 गभ न	19 गभ य	18½ गभ त	13½ गभ वतर	4½ तयर गभनव	19½ भव तर	25½ वत र	11½ वतर गन	18½ वरग तय	17½ गभ तय	19 गभ य	17 यभ न
	शत. 1,2,3,4	15 गन तर	21 गत र	28 तर	32½ त	25½ गत	27 ग	20 गभ	12 गभ न	13 गभ न	8 गभव नर	14½ गभव तर	20½ वभ तर	26½ वर त	20½ वर गत	12½ वरत गन	11½ तग नभ	8½ तयग नभ	25 भय
	पू.भा. 1,2,3	18 नत यर	25 यत र	20 गर तय	24½ गत य	31½ त	31½ त	24½ भत	17 भन य	18 भन	13 भन व	20 भर वय	13½ गभव तर	19½ वर तग	25½ वर त	16½ वरय नत	15½ भन त	15½ भन तय	17½ गभ तय
मीन	पू.भा. 4	14½ बभत नय	21½ बय तभ	16½ गबत भय	19 गबत यर	26 बत र	26 बत र	25½ बव तर	18 बनव यर	19 नब वर	18 नभ	25 भय	18½ गभ त	17½ बग तभ	23½ बभ त	14½ बभत नय	16½ रबन वतय	16½ रबन वतय	18½ रबग वतय
	उ.भा. 1,2,3,4	24½ बभ त	16½ बभ तन	18½ गब तभ	21 गब तर	26 बत र	18 नब तर	17½ नब वतर	25½ बर वत	28 बव र	27 भ	19 भन	21 गभ	18½ गब तभ	16½ बभ न	25½ बभ त	27½ बव तर	26½ बव तर	9½ बतर वयगन
	रेव. 1,2,3,4	25 बभ	24½ बभ त	11½ तगब भन	14 गबन तर	17 वन तर	26 बत र	25½ बर वत	24½ रब वत	26½ रब वत	25½ भत	27 भ	14 भन ग	13 बभ गन	23½ बभ त	23½ बभ त	25½ बर वत	26½ बर वत	19½ बयर वतग

(ब =वर्ण दोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 4)

कन्या \ वर		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2, 3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2, 3,4	ज्ये. 1,2, 3,4	मूल 1,2, 3,4	पूषा. 1,2, 3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2, 3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2, 3,4	पूभा. 1,2,3	पूभा. 4	उ.भा. 1,2, 3,4	रेव. 1,2, 3,4
तुला	चित्रा 3,4	28 न	27 ग य	34½ त	23½ भ द त	6½ यगव तनभ	20½ भ व त य	27 त य र	14 ग भ त र	22 ग त र	25 ग त व	26½ ग व	23½ न व य	18 न भ य	26 भ य	18½ ग भ त य	12½ गभव तयर	3½ वतयग भनर	12½ यरग भवत
	स्वाती 1,2,3,4	28 य ग	28 न	20 न य ग	9 भवय न ग	21½ भ व त	16½ भ व त ग	23 त र ग	27 त र ग	19 त न र	22 न व त	23 न व त	26½ व य ग	21 य ग भ	20 ग य भ	25 य भ	19 व भ य र	19½ व त भ र	12½ वतभ न र
	विशा. 1,2,3	34½ त	19 ग न य	28 न	17 भ व न	16 ग व भ य	20½ भ व त य	27 त य र	22 ग त र	14 ग न त र	17 ग न व त	17 ग न व त	30 व त य	24½ भ त य	26 भ य	20 ग भ य	14 गभव य र	13 गयभ त र	4½ गभव नतयर
वृश्चिक	विशा. 4	22½ ब व भ त	7 बवग नभय	16 ब व न भ	28 न	27 ग य	31½ त य	21½ बवत य भ	16½ बवग भ त	8½ दवग नभत	12 गबन त र	12 बनग त र	25 ब त य र	24 बवत य र	25½ ब व य र	19½ बवग य र	19 ग भ य	18 ग य भ	9½ गभन त य
	अनु. 1,2,3,4	6½ बवतभ यगन	21½ ब व भ त	16 बवभ य ग	28 य ग	28 न	31 ग	15½ बवत गयभ	13½ तबव न भ	21½ ब व त भ	25 ब त र	26 ब त र	12 तयब नरग	11 तयबव नरग	21 बवत र ग	24½ ब व य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
	ज्येष्ठा 1,2,3,4	19½ बवत भ य	15½ तबव ग भ	19½ बवभ त य	31½ त य	30 ग	28 न	14 बवन भ य	16½ बवत ग भ	16½ बवत ग भ	20 ग व त र	20 ग ब त र	25 ब त य र	24 बवत य र	18 बवन र त	10 तबवय गनर	9½ गभत न य	21 ग भ	21 ग भ
धनु	मूल 1,2,3,4	26 त ब य र	21 ग ब त र	26 त ब य र	22½ भ व त य	15½ गवभ य त	15 य व न भ	28 न	28 ग	26½ ग त	15 गबभ व त	15 गबभ व त	20 बभव त य	28½ ब व य	21½ ब न त	14½ गनब त य	16 गनव त य	25 ग व त	26 ग व
	पूषा. 1,2,3,4	13 गबत न र	27 ब त र	21 ग ब त र	17½ ग व भ त	15½ भ व न त	17½ ग व भ त	28 ग	28 न	34	22½ ब भ व	23 ब भ व त	6 गबवभ नतय	14½ गबत न य	23½ ग ब त	28½ ब त य	30 व त य	23 न व त	31 व त
	उ.षा 1	21 ग ब त र	19 न ब त र	13 गबन त र	9½ गवभ न त	23½ भ व त	17½ ग व भ त	26½ ग त	34	28 न	16½ ब भ व न	14½ ब भ व न	15 गबव भ त	23½ ग ब त	23½ ग ब त	29½ ब त	31 व त	31 व त	23 न व त
मकर	उ.षा. 2,3,4	24 ग ब त	22 न ब व त	16 ग ब न त	13 ग न त र	27 त र	21 ग त र	16 ग भ व त	23½ भ व	17½ न भ व	28 न	26 न	26½ ग त	17 गबभ व त	17 गबव भ त	23 ब भ व त	30½ त	30½ त	22½ न त
	श्रव. 1,2,3,4	26½ ब व ग	22 न ब व त	17 नबग व त	14 न त र	27 त र	22 त र	17 भ व त ग	23 भ व त	14½ न भ व	25 न	28 न	28 य ग	18½ बभव य ग	18 बभव त ग	21 बभव त य	28½ त य	29½ त	22½ न त
	धनि. 1,2	22½ न ब व य	24½ ग ब व य	29 ब व त य	26 त य र	12 गनत य र	26 त य र	21 भ व त य	7 गभय वनत	16 ग भ व त	26½ ग त	27 ग य	28 न	18½ ब भ न व	23½ ब भ व य	19 गबव त भ	26½ ग त	15½ ग न त य	22½ ग य त
कुम्भ	धनि. 3,4	18 न भ य	20 ग भ य	24½ भ त य	25 त व य र	11 गवय तनर	25 त व य र	29½ त य	15½ ग त न य	24½ त ग	18 ग भ व त	18½ ग भ व य	19½ भ व न	28 न	33 य	28½ ग त	18 ग भ व त	7 तगभ वनय	14 गयव भ त
	शत. 1,2,3,4	26 भ य	19 भ य ग	26 भ य	26½ य व र	21 ग व त र	19 न व त र	22½ न त	24½ ग त	24½ ग त	18 ग भ व त	18 ग भ व त	24½ भ व य	33 य	28 न	19 ग न य	8½ गभव न य	17 ग भ व त	16 ग भ व त
	पूभा. 1,2,3	18½ ग भ त य	26 भ य	20 ग भ य	20½ ग व य र	26½ व य र	11 गवत यनर	15½ न ग त य	29½ त य	30½ त	24 भ व त	23 भ व त य	20 भ ग व त	28½ ग त	19 न ग य	28 न	17½ न भ व	22½ भ व य	20 भ य व त
मीन	पूभा. 4	11½ गबवभ तयर	19 बभव य र	13 गबव भयर	19 ग भ य	25 भ य	9½ गभन त य	15 गबत न य	29 ब व त य	30 ब व त	29½ ब त	28½ ब त य	25½ ग ब त	17 ग ब भ त	7½ गबय भतन	16½ ब भ त न	28 न	33 य	30½ य त
	उ.भा. 1,2,3,4	2½ यवबर गभनत	19½ भवब त र	12 गवर भयब	18 ग य भ	19 न भ	21 ग भ	24 ग ब व त	22 न ब व त	30 ब व त	29½ ब त	29½ ब त	14½ गबत न य	6 गबवन भतय	16 गबव भ त	21½ ब भ त य	33 य	28 न	35
	रेव. 1,2,3,4	12½ बभव तयर	11½ बभत दनर	4½ बभवन तगयर	10½ नभत य ग	27 भ	22 भ ग	26½ ब ग व	29 ब व त	21 न ब व त	20½ न ब त	21½ न ब त	22½ ब य त ग	14 बवय भतग	16 बभव त ग	18 बयभ वत	29½ य त	34	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

लग्न–गण्डान्त

कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन और मेष के अन्त एवम् आदि की आधी–आधी घड़ी लग्नगण्डान्त होता है। वह जन्म में ही भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासाः–आचार्य चूड़ामणौ–"माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्या–संवरणेषु च। दशमासाः प्रशस्यन्ते चैत्र–पौष–विवर्जिताः॥" वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद्वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥

अथ जन्म–मासादिषु निषेधः– सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास (अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन) जन्मनक्षत्र अथवा जन्मतिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं है। **अत्यावश्यके परिहारः–** जातं दिनं दूषयते वशिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो– एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग–अलग मण्डप गाड़कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका हो, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाड़कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः– ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका के सूर्य को छोड़कर दानादि पूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय– दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करें तो निस्संदेह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करें और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करें, अर्थात् पहले कर लें और मंगलकार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध, तिलतर्पण भी न करें। मुण्डन भी विवाह, जनेऊ के पीछे न करें। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभकार्य कर लें। वहां छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच– साहे चिट्ठी (कुंकम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चित हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से एक साल, स्त्री के मरण से तीन मास, भाई व पुत्र के मरण से १½ मास, कुल वालों के मरण से २२½ दिन तक कोई शुभ कार्य न करें। अति संकट में ३० दिन बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करें।

त्रिबल शुद्धि विचार

विवाह के शुद्ध मुहूर्त्त पंचांग के अन्त में दिए गए हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य, चन्द्र देखिए तथा कन्या राशि से चन्द्र, गुरु देखिए। बस, इसी को त्रिबलशुद्धि कहते हैं। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह–दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हों तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा–ऐसा समझें। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु.सू.चं.) शुद्धि प्रथम देखें– "झष–चाप–कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु॥ (बृहस्पतिः)॥ अत्यावश्यकता में "द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिलाभादिगोऽपि चेत्॥"

तुलाराशौ अपूज्यःरविः–धर्म–धी–धनगतो दिवाकरस्तौलिराशि–जनितस्य शोभनः।।

आवश्यके पूज्यरवि–परिहारः– गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्याः मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः॥ (मु.प्र.सा.)।

विवाहादौ त्रिबल–शोधनम्

पूज्यगुरुः– १०/६/३/१
श्रेष्ठगुरुः–९/५/११/२/७
नेष्टगुरुः– ४/८/१२
श्रेष्ठरविः– ३/६/१०/११
पूज्यरविः– २/५/९
विशेष पूज्य रविः– १/७
नेष्टरविः– ४/८/१२
नेष्टचन्द्रः– ४/८
श्रेष्ठचन्द्रः–१/२/३/५/६/७/९/१०/११/१२

कन्या–वरयोःतैलादि–लापन (बन्न)–दिन–संख्या

राशि →	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल सं.	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि–वार–नक्षत्राणि–रो., मृ., उत्तरा. ३, म., ह., स्वा., अनु., मू., रे. एतद्वेध–रहितेषु शुभेऽह्नि। अमाक्षय–रहित–तिथिषु कात्यायनमते अश्वि., चि., श्र., धनिष्ठास्वपि शुभम्॥

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्त्तः

वर, कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहिले ३/६/९– इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगनसफाई, भूषण घढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध, मंगलस्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह–मुहूर्त्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चवाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि– इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सबका विचार करके इस वर्ष के विवाहमुहूर्त्त लग्न दिए हुए हैं। इन दसों दोषों में जो दोष जिस मुहूर्त्त में हैं, वे क्रमानुसार टेढी रेखा से सूचित किए गए हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष–ज्ञान चक्र

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	← लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	← दिशा
धननाश	भयम	मृत्यु	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानि	कुलक्षय	मरणम्	← फलम्

यथा–सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो। सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२वां हुआ, यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

(२) पातदोष ज्ञानचक्र

रो.	मृ.	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.	विवाह नक्षत्र
आर्द्रा पुन. श. पू.फा. चि. मू.	मृ. आ. ज्ये. ध. म. ह.	अ. मृ. ज्ये. पुष्य ह. रे.	कृ. आ. वि. पू.फा. उ.भा. पू.भा.	भ. मृ. श. पू.भा. स्वा. म.	कृ. श्र. ध. पुष्य ह. रे.	अ. आ. उ.षा. पू.भा. पू.षा. पू.फा.	रो. ज्ये. ध. आश्ले. मू. उ.भा.	भ. पुन. श. वि. अनु. उ.षा.	भ. श. वि. उ.फा. पू.फा. मू.	अ. ज्ये. ध. म. पू.फा. स्वा.	पातदूषित नक्षत्र

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

(३) युतिदोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो वहां उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, किन्तु श्रेष्ठ है। सू., मं., शु., श., रा., के. की युति दारिद्र्य, मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेध दोषचक्र

अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
पू.फा.	अभि.	उ.षा.	श्रव.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	भर.	पुन.	मृग.	मघा	आश्ले.	हस्त	उ.फा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेधदोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग देना चाहिए।

(५) जामित्र दोषचक्र

विवाह नक्षत्र→	रो.	मृग.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.
ग्रह नक्षत्र→	अनु.	उ.ष.	ध.	पू.भा.	उ.भा.	अ.	कृ.	मृग.	पुन.	उ.फा.	ह.

विवाहलग्न से सातवें ग्रह होने से जामित्रदोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं। यानी 14वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्रदोष वर्जनीय है।

(६) बाणज्ञान–चक्र

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	वारे वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोगः	८/१७/२६	व्रतबंध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्निः	२/११/२०/२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृपः	४/१३/२२	नृपसेवायम्	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चौरः	६/१५/२४	यात्रायाम्	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्युः	१/१०/१९/२८	विवाहे	बुधे	सध्य.योः वर्ज्यम्

(७) एकार्गल दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड–ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रहदोष

सूर्य के नक्षत्र से ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल–क्रान्तिसाम्य–दोषचक्र					
मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनु	वृश्चि.	मीन	कुम्भ

नीचे और ऊपर की राशि पर कहीं भी सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे–मेष के सूर्य और सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य और मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है। जिसका निर्णय महापातगणित से करना चाहिए।

(१०) दग्धातिथि–दोषचक्र						
९	२	४	६	५	१०	← सूर्य राशयः
१२	११	१	३	८	७	
२	४	६	८	१०	१२	← तिथयः

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतः ये मध्यप्रदेश में ही वर्ज्य हैं।

'भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीन–विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्।। –*कश्यपः*

लत्तादि–दोषाणां परिहारवाक्यानि

लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्ते) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रबांगरे) जांगले (फिरोज़पुर–भटिण्डाप्रान्ते)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्।। उपग्रहर्क्षं कुरुवाह्लिकेषु (कुरुक्षेत्र, आगराप्रान्ते) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी–बंगाल–अयोध्यायां) च पातितं भम्। सौराष्ट्रे (काठियावाड़े) शाल्वे (उज्जैनप्रान्ते) च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे।। युतिदोषो भवेद्गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुराप्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः।।

विशेष परिहारः– चित्रांगते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजाताः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः।।

युतिपरिहारः–स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥

अत्यावश्यके वेध–परिहारः– "पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः।"
–(नारदः)

ग्रह प्रथम चरण में हो तो चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरणमात्र का त्याग किया जाता है– भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥

अपवादः– ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते।।

एकार्गलोपग्रह-पात-लत्ता-जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क-बलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥ - (मु.चिं.)

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान् गरुडो यथा।।

विवाहे लग्न–शुद्धिचक्रम्												
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	←भावाः
चं. पाप.	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	← त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं क्रान्तिसाम्यञ्च				चं.	मं.	चं. मं.	विद्धभञ्च				← गोधूलौ त्याज्याः

लग्नभंगयोगा :– व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे न सर्वे (अस्तेऽब्जगुरु समौ)॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नन्त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नंगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पंग्वन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः। बादरायणः मासशून्याह्वयास्तारा राशयो वधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः।।

कर्तरी दोषः– लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वीः सा कर्तरी ... वैशाख में गौओं की धूली से आकाश आच्छादित होने पर ... आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रावण भाद्रपद, आश्विन,

कर्तरी दोषः— लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः॥ इय कर्तरी चन्द्रस्यपि द्रष्टव्या। **केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहाराः** —पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहनीचास्तंगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषेऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेदः भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे— दोषाश्च बहव सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह॥

अपवादान्तरम्— उक्तानुक्ताश्च ये दोषस्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्र-संस्थः सितो वापि पन्नगान्गारुडो यथा॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगःशशी॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यृक्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोष-शतत्रयम्। द्यूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिरा॥ स्मरण रहे कि— पूवोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तमरहित केन्द्र (१/४/१०) ही ग्रहण करना चाहिए।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद—स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्त गणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३	३		लग्नं शुभं विवाहे स्याद
६	३	६	२	२	२	६	६	६		दशविंशोपकाधिकंम्।
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपकबलम्

अथ गोधूलि लग्नविचारः— लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते॥ मार्ग., माघ, फाल्गुन में संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चैत्र, वैशाख में गोओं की धूली से आकाश आच्छादित होने पर, ज्येष्ठ, आषाढ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रावण भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्या दोषाः— कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तथा गोधूलिके त्याज्यं पञ्चदोषैस्तु दूषितम्। अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के। अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे।क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारबेला होगी और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना चाहिए।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त्त

कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र आयु प्रीती लाभ देता है। ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्

नक्षत्र→	३	३	३	३	३	३	३	३
फल→	मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति

अन्यच्च— सूर्यभात् ४/११/१८/२५ संख्यकसाभिजिदभेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथि—गासवेध भृगु—गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः।

वधु प्रवेश का मुहूर्त्त

जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधू प्रवेश कहा जाता है। विवाह के १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन; इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनो में; एकवर्ष के भीतर विषम मास में; एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। ५वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि, चन्द्रबल, गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना— व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा अमासंक्रान्ति—तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्॥ रेव., अश्वि., रोहि., मृग., श्रव., धनि., हस्त, चित्रा, स्वा., मघा, मूल, उत्तरा ३, पुष्य, अनु., इन नक्षत्रों में और चं., बु., बृ. शु. श. इन वारों में १/२/३/५/६/७/८/१०/११/१२/१३/१५ तिथियों में, ५/८/११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हों तो वधु प्रवेश शुभ है।

वधु–प्रवेश–समय

वधुप्रवेशो न दिवा–प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि–प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

विवाहतः प्रथम वर्षे वधू–निवासफलम्– विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को और अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं होता।

द्विरागमन का मुहूर्त्त

प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २, ३, ६, ७ या १२ वीं राशि के लग्न में हस्त, अश्वि., पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रोहि. स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत., मूल, मृग., रेव., चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः– द्विरागमं षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम्।।

शुक्र सम्मुख व दक्षिण में निषेध– सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह–राजपीड़न आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवम् विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः– सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे।।

अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः– राजते वाथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते।। निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता फलान्वितम्। महाश्वेत गवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्त्त

रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त, ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो., मृ., पुष्य, ह., चि. अनु., ध., उत्तरा. ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर। शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर, प्रथम दिन स्त्री संगम करें।

मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य–स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करें, आदर सत्कार करें। विशेष गुप्त बात न कहें और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक–दो हो सकती है। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उसका दिल और दिमाग़ तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े, हाथी, सांड, भैंसा आदि अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववधुद्वारा पाककर्म मुहूर्त्त

द्विरागमनोत्तरं मृग., उत्तरा. ३, पुष्य, कृ., ज्ये., श्रव., धनि., श., रो., वि., रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २/५/८/११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाक्कर्म शुभम्।

सधवा स्त्री का वस्त्र, सुवर्णरत्नभूषणादिधारण करने का मुहूर्त्त

हस्त., चित्रा., स्वा., अनु., धनि., रेवती., अश्वि. एषु भेषु, बु., गु., शु., वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतन वस्त्रसौवर्णरत्नरजत–दन्तादि भूषणानां धारणं प्रशस्तम्।।

चूड़ीचक्र में विशेषः– सूर्य नक्षत्र से गणना करने पर ८ अशुभ। ३ शुभ। २ अशुभ। ७ शुभ। २ अशुभ। ४ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः– विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्ष्मापालने समर्पितम्। निन्द्येपि धिष्ण्ये वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।।

आभूषण बनवाने का मुहूर्त

हस्त., अ., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत., उत्तरा.३, रोहि. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्।।

दुकान खेलने का मुहूर्त

हस्त, चित्रा, रोहि., रेव., उत्तरा. ३, पुष्य, अश्वि., अभि. इन नक्षत्रों में ४। ९। १४। ३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्यवारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २। १०। ११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३। ६ में पापग्रह हों, ८। १२ वां स्थान पाप रहित हो, शुभ दशा भी हो तो दुकान करना शुभ है. चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृगृह से पितृ गृहागमन मुहूर्त्त

पूर्वा.३, भ., मू., म. ज्ये., आर्द्रा, आश्ले. एतदभिन्नेषु, चं., बु., शु., वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः।।

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त्त

भ., आर्द्रा, आश्ले., म., पूर्वा. ३, ज्ये., मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर, शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्रः— सूर्य नक्षत्र से दुकान खेलने के दिन तक, नक्षत्र गिन कर चक्र से शुभाशुभ फल जानें।

हट्टचक्र

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सम्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त्त

अ., मृ., चि., ह., पुष्य, अनु., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र., बु., बृ., शु. वारेषु शुभः। लग्नस्थे, १०, ११ सूर्ये-भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीश-योनि-मैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त्त

अश्वि., रो., मू., पुन., पु., उत्तरा. ३, ह., चि., अनु., श्रव., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू., चं., बु., बृ., श. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्यायाप्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात्।।

द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्त

पुन., स्वा., मृग., रे., चि., अनु., वि., पुष्य., श्रव., ध., श., अश्वि. एषु नक्षत्रेषु १। ४। ७। १०, लग्नेषु ९। ८। ५ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९। ५ शुभः, ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।।

ऋण लेने के लिए वर्जितकाल

मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिए। कृ., रो., आर्द्रा, आश्ले., उत्तरा ३, वि., ज्ये., मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्रीकाशीनाथ के मत से क्रयविक्रय मुहूर्त्त

पुष्य, पू.भा., अनु., श्रव., ह., म., स्वा., उत्तरा.३, आश्ले., रे., एषु भेषु सत्तिथौ, शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्रः— रे., शत., अश्वि., स्वा., श्रव., चि., वारों में, बुध, रवि श्रेष्ठ माने गए हैं।

वस्तु बेचने के नक्षत्रः— पू. फा., पू. षा., पू. भा., वि., कृ., आश्ले., भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गए हैं।

नोटः— बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने-बेचने के नक्षत्र दिखाए गए हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना। ऐसे व्यापारी क्या करेंगे, इन नक्षत्रों को।

लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये, बात कहां तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

प्रार्थनापत्र (अर्जी) देने का मुहूर्त्त

४। ९। १४ तिथि हों, मं., श. वार हों, कृ., आर्द्रा, भ., अश्वि., आश्ले., म., ज्ये., मू., वि., पूर्वा. ३ नक्षत्र हों, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई को परस्परगुणाकर, आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धुम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और २ आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शुद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है।

ग्रामभात् वासकर्तुः नक्षत्रं यावद् साभिजित् गणना कार्या		
स्थान	नक्षत्र	फलम्
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर केक्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे, तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवें। शेषांक तुल्य व्यय जानें। आय से व्यय कम हो तो शुभ, अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भुमिपूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा और एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर, उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढे तीन हाथ गहरी खोदें अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय यदि ज़मीन में पत्थर निकले तो धन–आयु की वृद्धि हो; अगर गुठली निकले तो धननाश हो और अगर अस्थि, राख, बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि–पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त्त

वैशा., श्रा., मार्ग., माघ, फाल्गुन सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं; भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २। ३। ५। ६। ७। १०। ११। १२। १३। १५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, इन तिथियों में चं., बु., गु., शु., श. वारों में; रो., मृ., चि., ह., स्वा., अनु., उत्तरा. ३, ध., श., रे. वेधरहित नक्षत्रों में; २। ३। ५। ६। ८। ११। १२ लग्नों में; पञ्चवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में; लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३। ६। ११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्		
सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।		
स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेषः– पुष्य, उत्तरा. ३, रो., म., आश्ले., पू.षा., इनमें से जिस पर बृहस्पति हो, उस नक्षत्र में बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो., ह., अ., उ. फा., चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि., अ., चि., ध., श., आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्ः– "संक्रान्ति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय।

१०। २१। २४ में षंढदिन पृथ्वी सोय।। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५। ११। ७। ६। २। १० एताः घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः।" अन्यच्च— सूर्य के नक्षत्र से ५। ७। ९। १२। १९। २६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्य में कूपविचार

मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
र्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्लिचक्र—विचार

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्रपीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर–सुख–भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावें तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावें।

नूतनगृह प्रवेश मुहूर्त

माघ–फाल्गुन–वैशाख–ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग.)कार्त्तिक मासयोः।। (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा. ३, अनु., रो., मृ., चि., रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में। चं., बृ., श. इन वारों में। २। ५। ८। ११ लग्नों में; **अत्यावश्यके** ३। ६। ९। १२ लग्नों में भी; लग्न से १। २। ३। ५। ७। ९। १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३। ६। ११ में क्रूर हों १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा न हो, चौथा, ८वां स्थान शुद्ध हो; जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो; चन्द्र–तारा शुभ हो और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो, तो आगे गौ, कन्या, जलपूर्ण–पुष्पमाला युक्तकलश, शंखध्वनि व मंगलगान के साथ दम्पति का गृह प्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त

पुराने अर्थात् जीर्ण या तृणकुटीर अथवा अग्नि–वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वैशाख., श्रावण, कार्तिक., मार्गशीर्ष और फाल्गुन मास में शत., पुष्य, स्वा. और धनि. नक्षत्रों तथा गुरु, शुक्र के अस्त में भी गृह प्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्

खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागःशुभदो भवेत्।

राहुमुखम्	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्यः	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क, सिंह	कन्या, तुला, वृश्चिक	धनु, मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिंह, कन्या, तुला	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष,	वृष, मिथुन, कर्क
जलाशयारम्भे सूर्यः	मकर, कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला, वृश्चि., धनु
खातदिशाज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्

सूर्यनक्षत्रात्

स्थान.	न	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्

सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त

अनु., हस्त., उत्तरा. ३, रोहि., धनि., शत., भरणी, पू.षा., रेवती, पुष्य, मृग. नक्षत्र हों व चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १०वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २। १०। ४। ११। १२ लग्न हों तो अत्यउत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप—नलचक्रम्			सूर्यभात्तड़ागचक्रम्		
ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल	ईशान २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आग्ने. २ जलाधिक्य
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल	उत्तर २ अमृतजल	मध्य ५ बहुजल	दक्षिण २ जलनाश
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्यां ३ अमृतजल	वायव्य ३ जलनाश	पश्चिम २ बहुजल	नैर्ऋत्य २ अमृतजल

गणनाक्रमः—मध्य—पूर्व—आग्नेय—दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्— अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानि। गणनाक्रमः— पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, मध्य में वारिवाह।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान अश्विनी, भरणी, कृत्तिका मध्यजलम्	पूर्व पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा जलाभावः	आग्ने. मघा, पू.फा., उ.षा. मध्यजलम्
उत्तर पू.भा., उ.भा., रेवती मिष्ठजलम्	मध्य रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण हस्त, चित्रा., स्वाती जलाभाव
वायव्य श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा. क्षारजलम्	पश्चिम मूल, ,पू.,षा., उ.षा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्यां विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त्त

"देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने।। मातृ—भैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः। महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।।"

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु., श्रवण, धनि., शत., उत्तरा. ३, रेवती एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३। ५। ७। ८। १०। ११। १२। १३ तिथिषु शुक्ले १। २। ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्ब—लास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२। ५। ८। ११) लग्नेषु लग्नात् १। ४। ७। १०। ९। ५। २। ११ स्थानेषु शुभैः, ६। ११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्ने देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवता—विशेषेण लग्नम्:— सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यंगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः।। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्त्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः।।

वास्तुशान्ति मुहूर्त्त

श्रव., धनि., मृग., मूल, अनु., रेवती, हस्त, चित्रा, स्वा., उत्तरा. ३, पुन., पुष्य, रोहि., अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है

जिस दिन हवन करना हो, उस दिन तिथि और वार क संख्या जोड़कर एक ओर जोडना, पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए, (०—शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे, तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से तथा वार की गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र जरूर देखिए।

विशेषः— यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्याखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्।। दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्।। लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणेमहाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः।। दुर्गभंगे गृहे वापि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्।।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

ग्रहाः	सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फलम्	नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट

पापग्रहमुखे—हवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्तिं विधाय गां दद्याद ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेतामधोमुखीम्। गोमूत्र—मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते।।

अथ ऋणी–धनी विचार– स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टमिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्।।(अर्थात अपने वर्ग को दूना कर, दूसरे के वर्ग में जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके, अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। जिसका शेषांक अधिक बचे, वह दूसरे का ऋणी होगा।), लेकिन वशिष्ठ आदि का मत है कि जिसका शेषांक कम बचे, वह दूसरे का ऋणी होता है– यही प्रामाणिक है।

हलप्रवहण मुहूर्त्त

मृग., रेव., चित्रा, अनु., रोहि., उत्तरा.३, हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., श., मूल, मघा, विशा. एषु भेषु रिक्तामाषष्ट्यष्ठमीरहित सत्तिथौ शुभ–ग्रहस्य वासरे, १। ५। ७। १०। ११ लग्नेषु भूमिशयन–भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम्					बीजवपने राहुचक्रम्								
सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें					राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
नक्षत्र	३	७	९	८	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त्त

हस्त, अश्वि., पुष्य, उत्तरा. 3, चित्रा, अनु., मृग., रेवती, स्वा., धनि., मघा, मूल एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः– रवौ रौद्रा(आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः।
तस्मादिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्।।

नवान्न–भक्षण–मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत, एवम् विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है, नन्दा–रिक्ता तिथियों और पौष–चैत्र को छोड़कर अन्य मासों में सू., बु., गु., शुक्रवार शुभ है।

गौ, बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त्त

अश्वि., पुन., पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत., रेव. नक्षत्र में गौ लेना–बेचना। अन्य पशु पुन., पूर्वा. 3, हस्त, अनु., ज्ये., मूल, धनि., रेवती में लेना–बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ.फा. से दिन नक्षत्र तक गिने। ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक; फिर दो–दो के क्रम से गाय के समानफल जानें। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल हेतु सूर्य नक्षत्र तक गिनें– नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हान करे घर आया।।

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्							
नक्षत्र संख्या	६	२	४	४	४	४	४
फल	उत्तमपाक शुभ	शवदहन नेष्ट	सर्पभय नेष्ट	मित्रलाभ शुभ	रोगभय नेष्ट	क्वाथकर्म नेष्ट	सुख शुभ

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., उत्तरा. 3, रोहि., हस्त., पुष्य, अश्वि., शत., मूल, विशा. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं., बु., बृ., शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४। १०। ११। १२ लग्न में शुभ हैं।

तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः – तृण–काष्ठ का सञ्चय और पलंग बनवाना आदि कर्म कुम्भ–मीन के चन्द्रमा (पञ्चककाल) में नहीं करना चाहिए।

औषधसेवन का मुहूर्त्त

हस्त, अ., पुष्य, अभि., मृग., रेवती, चित्रा, अनु., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत, व मूल में जन्मनक्षत्र को छोड़कर, इन नक्षत्रों में ४। ९। १४ को छोड़कर, शुभ तिथियों में, भौम–शनि को छोड़कर, अन्यवारों में शुभ है।

अथ यात्रा–मुहूर्त–विचारः

हस्त, मघा, श्रव., अश्वि., पुष्य, पुन., धनि., अनु., रेवती, एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रोहि., उत्तरा. ३, पूर्वा.* ३, एषु भेषु मध्या; भरणी, कृत्ति., आर्द्रा, आश्ले., मघा, चित्रा, स्वा., विशा., ज्ये., एतद्भेषु निन्द्याः। तत्रात्यावश्यकेऽपि यात्रायां भरण्यादि भानां क्रमात् ७। २१। १४। १४। ११। ४०। १४। १४। १४ एता घटिकाः गमन कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। २। ३। ५। ७। १०। ११। १२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

द्विग्द्वारलग्नानि				
दिशा→	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
शुभम्→	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११	४। ८। १२
मध्यमम्→	२। ६ १०	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९
भयम्→	४। ८ १२	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११
महद्भयम्→	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९	२। ६। १०

यात्रा में शुभाशुभ लग्नः– जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभलग्न वह है, जब १। ४। ५। ७। ९। १० स्थानों में शुभ ग्रह और ३। ६। १०। ११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है– जब १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा, १०वें शनि, ६वें शुक्र, १२। ६। ८वें लग्नेश हो। **अन्यच्च–** यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने।।

जन्मलग्नेश, दशेश अस्त हों व मारकदशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करें, प्रथम तीर्थयात्रा व देवदर्शन गुरु–शुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
दिशा	पूर्व	आ.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	पू.	द.	प.	उ.
वार	च.,श.	चं.,बृ.	गुरु	सू.,शु.	सू.,शु.	भौम	मं.	बु.,श.	ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूलपरिहारः– न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्य चन्द्रवारे पयस्तथा। गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि। माषान्भुक्त्वा शनेर्वारे शूले गच्छञ्छूले न दोषभाक् ॥२॥

यात्रायां कालज्ञान चक्रम्							
सम्मुखे	शनौ	शुक्रे	गुरौ	बुधे	भौमे	चन्द्रे	रवौ
नेष्टः	पूर्वे	आग्नेय्यां	दक्षिणे	नैर्ऋत्यां	पश्चिमे	वायव्ये	उत्तरे

योगिनीवास–चक्रम्								
दिशा	पूर्व	आग्ने.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.
तिथि	१। ६	३। ११	५। १३	४। १२	६। १४	७। १५	२। १०	८। ३०

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बाएं की शुभ किंवा युद्ध यात्रा में बाएं ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है।

समयशूलः– उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए।

गर्ग–गुरु–अङ्गिरामत– गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे तो गमन करें। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करें। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। **पंच–पंच (५५) उषाकालः सप्तपञ्चाशद (५७) रुणोदयः। अष्ट पंच (५८) भवेत्प्रातः शेषः सूर्योदयो भवेत्।।**

चन्द्रवासचक्रम्				एकस्मिन् राशौ आवश्यके तात्कालिक–यात्रायां घट्यात्मकं चन्द्रवासचक्रम्									घट्यात्मक चन्द्रवास
पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे										जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जाएं।
मेष	वृष	मिथुन	कर्क										
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	दिशा	पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	उ.	
धनु	मकर	कुम्भ	मीन	घटी	१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	

चन्द्रफलम्ः– सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख–सम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषाःलयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे॥

सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा—भगणदोषं वार-सक्रान्ति-दोषं कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादि दोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः॥

सर्वाङ्कसिद्धियोग—यात्राकालिक शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोड़कर तीन जगह रखें। क्रमशः ७। ८। ३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य, जयलाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्त के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य को मत जाएं, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो भी कदापि न जाएं, क्योंकि मुहूर्त एवम् शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्ण के क्रम से प्रस्थान का विधान— यदि यात्रा मुहूर्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय, तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेऊ, माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु-घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध, किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान के समय रखे। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तुः— यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन और समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य ही करें।

दिने चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्		रात्रौ चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्
सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि	घटि.	सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३॥	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ
चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ	७॥	अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग
लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग	११।	चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ
अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग	१५	रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत
काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर	१८॥	काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर,
शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ	२२॥	लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग
रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत	२६।	उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३०	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ

सूचनाः— यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी-पल ज्ञात होंगे।

यात्रा में शुभ शकुन— मृग बाएं ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहू मिले चलते प्रातःकाल॥ विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्प, कमल, निर्मलवस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुत-स्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्तघट यात्रा के समय देखने में शुभ है।

यात्रा में अशुभ शकुन :— वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलह, विधवास्त्री, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

आवश्यके रामदैवज्ञोक्त यात्रामुहूर्त्तचक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चि.	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना। अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े। कार्य सिद्ध हो, यात्रा सफल होगी।

नौकायात्रा–मुहूर्त्तः

चित्रा, हस्त, पु., मृग., पूर्वा. ३, अनु., श्रव., धनि.–एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र–तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्त्तः

मृग., रेवती, अनु., रोहि., उत्तरा. ३, हस्त, अश्वि., पुष्य, स्वा., श्रवण, धनि. –एषु भेषु, चं. बु., बृ., शु., श. वारेषु; १। २। ३। ५। ७। १०। ११। १३ तिथिषु; ३। ५। ८। ९। ११। १२ एषु लग्नेषु, १। ४। ७। १०। ५। ९ स्थानेषु शुभैः; ३। ६। ११ स्थानेषु पापैः; ४। ८ शुद्धौ शुभः। विशा., कृत्ति., पूर्वा. ३, भरणी, मघा, मूल, ज्ये., आर्द्रा, आश्ले., नक्षत्राणि; ४। ९। १४। ६। १२। ८। ३० तिथयः; सू., मं. वारौ; १। ४। ७। १० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि।

मंगलवार को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है।

विशेषः– प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथावि‍ति।।

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घात चन्द्र	मे.	क.	कुं.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मी.	सिंह	ध.	कुम्भ
घात वार	र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.
घात नक्षत्र	म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	आश्ले.
स्त्री चन्द्रघात	मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष
घात मास	का.	मार्ग.	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	वैशा.	ज्ये.	आषा.	श्रावण	भाद्र.	आ.
घातयोग	वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	अ.गं.	वृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.
घातलग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घाततिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
घाततिथि	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
घाततिथि	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	४	१३	१५

युद्ध, विवाद, राजसेवा,वाहन, रोगादि कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती। **"घाततिथिर्घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्।।"**

वाम–दक्षिणनिर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ, भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का है, वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का समझें। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्ग विभाग में पल्ली–(छिपकली, कोढ़किरली) पतन का फल

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द.मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षिणांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि

यदि छिपकली १। २। ३। ५। ६। १०। ११। १२। १३– इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है तथा चं., बु., गु., शु.– इन वारों में भी शुभ फल देती है। पुष्य, अश्वि., रोहि., मूल, पुन., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., धनि., रेवती, अनु., शत.– ये नक्षत्र शुभफलदायक हैं। इसके अलावा अन्य नक्षत्रों में गिरे तो शुभ नहीं– अतोऽन्यद्भेषु निन्द्याः।

पल्ली (किरली) पतनोपरान्त कर्तव्य– पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्रसहित स्नान करें। जन्मनक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा–तिथि, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय जाप एवम् तिल, स्वर्ण, दान और पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्

छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है– "मदिरा के योग अथवा छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छींक पीठी की कुशवाल उचारे; बाईं कारज सवै सवारे॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भापै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥

कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वैश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्काः– आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक से दो छींक भी शुभ मानी जाती है– **एक नाक दो छींक; काम बने सब ठींक॥**

तीर्थ में मुण्डनविचार

मुण्डनं चौपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनीं) गिरिजां गयाम्।।

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं–विधिश्च								तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः	तदत्राह– रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांतौ वैधृतावपि । षष्ट्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु।।
तापम्	सुकीर्ति	मृतिः	श्री.	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग	फलम्	
पुष्पं	०	मृत्तिका	०	दूर्वा	गोमय	०	पालनम्	

विशेष– यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

अंग–स्फुरण का फल

पुरुषों का दायां और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फरकना) स्त्री–पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तुप्राप्ति
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग्य
स्कन्ध	भोगवृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधोभाग	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभप्राप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनप्राप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्ष	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर.	कोषलाभ	वस्तिदेश	भाग्योन्नति
नेत्रपक्षम	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलम्भ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोर्ध्व	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व–बुद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानें। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल व खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

काकस्पर्श का फल

मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति–पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट व इच्छितकार्य का नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काकप्रतिमा मृण्मय (मिट्टी के) पात्र में स्थापित कर उड़द, चावल, घी, मीठे का नैवेद्य देवें। ग्राम में दक्षिण की ओर बाहर चौराहे पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय मन्त्र का यथाशक्ति जप करें (या करावें), घृतच्छाया–पात्र दान, पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नष्ट होते हैं।

काकविष्ठा विचार :– शिरसि–मृत्यु वा कष्टम्। स्कन्धयोः रोगः। भुजयोः प्रियार्तिः। उदरे शोकः। गुह्ये सन्तानकष्टम्। जघयोः वाहनपीडा। पादयोः प्रवासः।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ किंवा पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किए किसी के ऊपर काली बीट कर दे तो अशुभ होता है। यदि किसी हरे–भरे या फूले–फले पीपल, बड़ आदि श्रेष्ठ पेड़ पर बैठा हुआ सफेद बीट कर दे तो शुभ जानिए।

....

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०६८वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), P.O. पंचकूला-134 109;

(इन विवाहादि मुहूर्त्तों के शोधन में नालाबलोग (पंचकूला) निवासी, मेरे योग्य शिष्य चि. सुरेशानन्द शर्मा, B.A. का पर्याप्त सहयोग मिला है।)

—: समय शुद्धि :—

शुक्र-अस्त :- इस वर्ष शुक्र श्राव. कृ. ७ शु. (२२ जुला., २०११ ई.) को पूर्व में अस्त होकर आश्वि. शु. ८ मं.(४ अक्तू., २०११ ई.) को पश्चिम में उदित होगा।

गुरु-अस्त :- गुरु गतवर्ष २०६७ वि. के चैत्र कृ. ८ श.(२६ मार्च, २०११ ई.) को अस्त हुआ था। वह इसवर्ष २०६८ वि. में वैशा. कृ. ६ मं. (२६ अप्रै., २०११ ई.) को उदित होगा।

गुरु-शुक्र के अस्त का यह उपरोक्त काल पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि के लिए है । क्योंकि अक्षांशभेद से इन ग्रहों के उदय-अस्त की तारीखें भिन्न-भिन्न होती हैं, इसलिए अपने अभीष्ट स्थल के अक्षांशानुसार उस स्थल के गुरु-शुक्र की उदय-अस्त की तारीख नीचे दिए गए कोष्ठक से जान कर विवाहादि मुहूर्त्तों का दैवज्ञ को निर्णय करना चाहिए ।

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न स्थलों पर गुरु-शुक्र का उदय-अस्त 'सं. २०६८ वि.'

अक्षांश →	+५°	+१५°	+२५°	+३५°
शुक्र पूर्व में अस्त	२३ जुला.'११	२४ जुला.'११	२३ जुला.'११	२२ जुला.'११
शुक्र पश्चिम में उदित	१५ सितं.,'११	१९ सितं.,'११	२७ सितं.,'११	८ अक्तू.,'११
गुरु अस्त (सं. २०६७ वि.)	२६ मार्च,'११	२६ मार्च,'११	२६ मार्च,'११	२६ मार्च,'११
गुरु उदित (सं. २०६८ वि.)	१९ अप्रै.,'११	२० अप्रै.,'११	२३ अप्रै.,'११	२८ अप्रै.,'११

ध्यान रहे :- गुरु-शुक्र के अस्तकाल में तो शुभकृत्य वर्जित रहते ही हैं, इनके अस्तदिन से ३ दिनं पहले वार्धक्यदोष और उदयदिन के ३ दिन बाद तक भी बाल्यदोष के कारण शुभकृत्य नहीं किए जाते ।

ध्यान दें, - मुहूर्त्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार यह निर्देश दिया गया है कि- इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्त्तों में स्वीकार करें ।

यहां मुहूर्त्तों में क्रान्तिसाम्य(महापात)दोष का विचार सूक्ष्मगणित से किया गया है। सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितांत स्थूल होता है । भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणितप्रक्रिया (महापात-गणित) निर्दिष्ट की है । कई पंचांगकार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्त्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है । सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल पृष्ठ **54** पर दिया गया है ।

यहां दिए गए मुहूर्त्तों में जहां युति, वेध, कर्त्तरी, दग्धातिथि, अष्टमस्थ भौम, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र-शुक्र आदि दोषों के परिहार मिल गए हैं, उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध माना गया है और वहां विवाह-लग्न लगा दिए गए हैं ।

ध्यान रहे -यहां मुहूर्त्तों में दी गई अंग्रेजी तारीखें सूर्योदयकालिक हैं । जो मुहूर्त्तकाल (लग्न) रात के १२ बजे के बाद और सूर्योदय से पहिले पड़ता है, वहां अंग्रेजी तारीख अग्रिम (परवर्ती) समझनी चाहिए ।

इन विवाहमुहूर्त्तों में प्रयुक्त सांकेतिक शब्दों का स्पष्टीकरण

अत्यावश्यके = लग्न निर्बल है। अत्यावश्यकता में ही इस लग्न में विवाह किया जा सकता है ।

दि.ल. = दिन का लग्न ।

ल. = रा. ल. = रात्रि का लग्न ।

पादवेध = विवाहलग्नकालिक नक्षत्रचरण को शुभग्रह का वेध है ।

पादवेधाभाव = विवाहलग्नकालिक नक्षत्रचरण को शुभग्रह का वेध नहीं है ।

दा. = इस ग्रह की दान-पूजा करके इस लग्न में विवाह किया जा सकता है । जैसे-"मं.दा." का अभिप्राय है, इस विवाह लग्न में मंगल की दान-पूजा आवश्यक है ।

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०६८ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०११ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
वैशा. शु. २ गु.	वैशा. २२	मई ५	रोहि.	वृष	मेष	मीन	।। ।। ।ऽअ. ऽ। ।।	दि.ल. ४(मं.दा.), (चन्द्रकर्त्तरी-परिहार),
वैशा. शु. ३ शु.	वैशा. २३	मई ६	मृग.	वृष	मेष	मीन	ऽगु.। ऽके.। ।। ।। ।।	दि.ल. ४(मं.दा.), (केतुयुति-परिहार), (चन्द्रकर्त्तरी-परिहार),
वैशा. शु. ८ बु.	वैशा. २८	मई ११	मघा	सिंह	मेष	मेष	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	दि.ल. ४(१०/०३ बाद)(मं.दा.), गोधू.,
वैशा. शु. ६ गु.	वैशा. २६	मई १२	मघा	सिंह	मेष	मेष	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	दि.ल. २(६/४३ तक) (अत्यावश्यके),
वैशा. शु. १० शु.	वैशा. ३०	मई १३	उ.फा.	सिंह/कन्या	मेष	मेष	।ऽ ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. २(६/०८ बाद)(अत्यावश्यके), (८/०४ बाद मृत्युबाण),
वैशा. शु. १४ चं.	ज्ये. २	मई १६	स्वा.	तुला	वृष	मेष	।ऽ ।। ऽमं.बु.गु.शु.। ऽ। ।।	दि.ल. ५(१३/३० बाद), गोधू.,
वैशा. शु. १५ मं.	ज्ये. ३	मई १७	अनु.	वृश्चिक	वृष	मेष	।। ।। ऽसू.ऽअ. ऽऽ ।।	ल. १०,
ज्ये. कृ. १ बु.	ज्ये. ४	मई १८	अनु.	वृश्चिक	वृष	मेष	।। ।। ऽसू.ऽअ. ऽऽ ।।	दि.ल. ४(मं.दा.), ५,
ज्ये. कृ. ५ र.	ज्ये. ८	मई २२	श्रव.	मकर	वृष	मेष	ऽचं.। ।। ।। ।। ।।	ल. गोधू.
ज्ये. कृ. ६ चं.	ज्ये. ९	मई २३	श्रव.	मकर	वृष	मेष	ऽचं.। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ४(१०/०६ तक)(चं. मं. दा.),
ज्ये. कृ. ७ मं.	ज्ये. १०	मई २४	धनि.	कुम्भ	वृष	मेष	ऽबु.। ।। ।ऽरो. ।ऽ ।।	दि.ल. ५(चं. दा.),
ज्ये. कृ. ११ श.	ज्ये. १४	मई २८	रेव.	मीन	वृष	मेष	ऽरा.। ।। ऽश.ऽनृ. ।ऽ ।।	दि.ल. ४(मं.दा.), गोधू., १०,
ज्ये. कृ. १२ र.	ज्ये. १५	मई २९	अश्वि.	मेष	वृष	मेष	।। ऽगु.। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	दि.ल. ४(मं.दा.), ५,
ज्ये. शु. २ शु.	ज्ये. २०	जून ३	मृग.	मिथुन	वृष	मेष	।। ऽके.। ।। ।। ।।	दि.ल. ४(मं.दा.), ५, (केतुयुति-परिहार),
ज्ये. शु. ६ मं.	ज्ये. २४	जून ७	मघा	सिंह	वृष	मेष	।। ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	ल. गोधू.
ज्ये. शु. ७ बु.	ज्ये. २५	जून ८	मघा.	सिंह	वृष	मेष	।। ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	दि.ल. ३(अत्यावश्यके), ४(मं.दा.),
ज्ये. शु. ८ गु.	ज्ये. २६	जून ९	उ.फा.	कन्या	वृष	मेष	।। ।। ।ऽची. ।ऽ ।।	ल. गोधू., १०,
ज्ये. शु. ६ शु.	ज्ये. २७	जून १०	उ.फा.	कन्या	वृष	मेष	।। ।। ।ऽची. ।ऽ ।।	दि.ल. ३(अत्यावश्यके), ४(८/०८ तक)(मं.दा.),
ज्ये. शु. १० श.	ज्ये. २८	जून ११	हस्त	कन्या	वृष	मेष	।ऽ ऽश.। ।। ।। ।।	दि.ल. ३(७/४६ तक)(अत्यावश्यके), (शनियुति-परिहार),
ज्ये. शु. १० श.	ज्ये. २८	जून ११	चित्रा	कन्या/तुला	वृष	मेष	।। ।। ।ऽरो. ।ऽ ।।	दि.ल. ४(६/०१ बाद)(मं.दा.), ५ (रा.दा.), गोधू., १०,
ज्ये. शु. ११ र.	ज्ये. २९	जून १२	स्वा.	तुला	वृष	मेष	।। ।। ऽगु.ऽरो. ऽ। ।।	दि.ल. ५ (१२/१४ बाद) (रा.दा.), गोधू., १०,
आषा. कृ. ५ चं.	आषा. ६	जून २०	धनि.	मकर/कुम्भ	मिथुन	मेष	।ऽ ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	दि.ल. ४(७/२७ बाद)(चं.दा.), गोधू., १,
आषा. कृ. ८ शु.	आषा. १०	जून २४	रेव.	मीन	मिथुन	मेष	।। ।। ऽश.ऽरो. ।ऽ ।।	ल. गोधू., १०, १,
आषा. कृ. ९ श.	आषा. ११	जून २५	रेव.	मीन	मिथुन	मेष	।। ।। ऽश.ऽरो. ।ऽ ।।	दि.ल. ४(६/१० तक),
आषा. कृ. ९ श.	आषा. ११	जून २५	अश्वि.	मेष	मिथुन	मेष	ऽबु.शु.। ऽगु.। ।। ।ऽ ।।	ल. गोधू., १०,

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०६८ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०११ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
आषा. शु. ४ मं.	आषा. २१	जुला. ५	मघा	सिंह	मिथुन	मेष	।। ।। ।। ऽऽ ।।	दि.ल. ४(८/०३ बाद), (१४/२६ बाद मृत्युबाण),
आषा. शु. ५ बु.	आषा. २२	जुला. ६	उ.फा.	सिंह	मिथुन	मेष	।। ।। ।ऽअ. ।। ।।	ल. गोधू.,
आषा. शु. ७ गु.	आषा. २३	जुला. ७	उ.फा.	कन्या	मिथुन	मेष	।। ।। ।ऽअ. ।। ।।	दि.ल. ४, ५(मं. रा. दा.),
आषा. शु. ८ शु.	आषा. २४	जुला. ८	चित्रा	कन्या	मिथुन	मेष	।। ।। ।ऽनृ. ।। ।ऽ	ल. गोधू.,
आषा. शु. ९ श.	आषा. २५	जुला. ९	चित्रा	तुला	मिथुन	मेष	।। ।। ।ऽनृ. ।। ।ऽ	दि.ल. ४, ५(मं. रा. दा.),
आषा. शु. ९ श.	आषा. २५	जुला. ९	स्वा.	तुला	मिथुन	मेष	।। ।। ऽगु.। ।। ।।	ल. गोधू., १ (चं. शु. दा.),
आषा. शु. १० र.	आषा. २६	जुला. १०	स्वा.	तुला	मिथुन	मेष	।। ।। ऽगु.। ।। ।।	दि.ल. ४, ५(१०/४० तक)(मं. रा. दा.),
आषा. शु. ११ चं.	आषा. २७	जुला. ११	अनु.	वृश्चिक	मिथुन	मेष	।। ।। ।ऽचौ. ।। ।।	ल. १(शु.दा.), (गोधू. में क्रान्तिसाम्य),
आषा. शु. १२ मं.	आषा. २८	जुला. १२	अनु.	वृश्चिक	मिथुन	मेष	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ४, ५(८/३६ तक) (मं. रा. दा.),
श्राव. कृ. २ र.	श्राव. २	जुला. १७	धनि.	कुम्भ	कर्क	मेष	।। ।ऽबु. ऽबु.। ।। ।।	ल. १(२४/५४ तक)(शु. दा.),(१०/२६ से १६/४६ तक बुध-पादवेध),
आश्वि. शु. १५ मं.	आश्वि.२५	अक्तू. ११	रेव.	मीन	कन्या	मेष	।। ।। ।ऽचौ. ऽऽ ।।	ल. ३,
आश्वि. शु. १५ बु.	आश्वि.२६	अक्तू. १२	रेव.	मीन	कन्या	मेष	।। ।। ।ऽचौ. ऽऽ ।।	दि.ल. ६,
आश्वि. शु. १५ बु.	आश्वि.२६	अक्तू. १२	अश्वि.	मेष	कन्या	मेष	।ऽ ।। ऽसू.बु.। ।ऽ ।।	ल. ३, ५(शु. रा. दा.),
कार्त्ति. कृ. १ गु.	आश्वि.२७	अक्तू. १३	अश्वि.	मेष	कन्या	मेष	।ऽ ऽगु.। ऽसू.बु.। ।ऽ ।।	दि.ल. ६,
कार्त्ति. कृ. १० श.	कार्त्ति. ६	अक्तू. २२	मघा	सिंह	तुला	मेष	ऽबु.। ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	ल. गोधू., ३,
कार्त्ति. कृ. १२ चं.	कार्त्ति. ८	अक्तू. २४	उ.फा.	सिंह/कन्या	तुला	मेष	ऽशु.। ।ऽचं. ।ऽचौ. ।। ।ऽ	दि.ल. ६ (११/४४ तक), (११/४४ बाद चन्द्रपादवेध),
कार्त्ति. शु. २ शु.	कार्त्ति. १२	अक्तू. २८	अनु.	वृश्चिक	तुला	मेष	।। ।। ।ऽअ. ।। ।।	ल. ५(शु. रा. दा.), (२४/५८ तक मृत्युबाण),
कार्त्ति. शु. ३ श.	कार्त्ति. १३	अक्तू. २९	अनु.	वृश्चिक	तुला	मेष	।। ।। ।ऽअ. ।। ।।	दि.ल. ६ (१२/२६ तक),
कार्त्ति. शु. ६ मं.	कार्त्ति. १६	नवं. १	उ.षा.	मकर	तुला	मेष	ऽश.। ।। ।। ऽऽ ।।	ल. गोधू., ४(चं. दा.),
कार्त्ति. शु. ८ गु.	कार्त्ति. १८	नवं. ३	धनि.	मकर	तुला	मेष	।ऽ ।। ।। ।। ।।	ल. गोधू., ४(चं. दा.),
कार्त्ति. शु. ९ शु.	कार्त्ति. १९	नवं. ४	धनि.	कुम्भ	तुला	मेष	।ऽ ।। ।ऽरो. ।। ।।	दि.ल. ६,
कार्त्ति. शु. १२ चं.	कार्त्ति. २२	नवं. ७	उ.भा.	मीन	तुला	मेष	ऽरा.ऽ ।। ।ऽअ. ।। ।ऽ	दि.ल. ६, गोधू.,
कार्त्ति. शु. १२ चं.	कार्त्ति. २२	नवं. ७	रेव.	मीन	तुला	मेष	ऽसू.। ।। ।ऽअ. ।। ।।	ल. ४,
कार्त्ति. शु. १३ मं.	कार्त्ति. २३	नवं. ८	रेव.	मीन	तुला	मेष	ऽसू.। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ६, गोधू., ४ (२३/५७ तक),
कार्त्ति. शु. १४ बु.	कार्त्ति. २४	नवं. ९	अश्वि.	मेष	तुला	मेष	।। ऽगु.। ऽश.ऽनृ. ।। ।।	दि.ल. ६, रा.ल. ४ (२२/१६ तक),

शुद्ध विवाहमुहूर्त (सं. २०६८ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०११-१२ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
मार्ग. कृ. २ श.	कार्ति. २७	नवं. १२	रोहि.	वृष	तुला	मेष	।। ऽके.। ।। ऽ। ।।	ल. गोधू., ४, (केतुयुति-परिहार),
मार्ग. कृ. ३ र.	कार्ति. २८	नवं. १३	मृग.	वृष	तुला	मेष	।। ।। ऽबु.शु.रा. ऽरो. ।। ।।	ल. गोधू.,
मार्ग. कृ. ३ चं.	कार्ति. २६	नवं. १४	मृग.	मिथुन	तुला	मेष	।। ।। ऽबु.शु.रा.। ।। ।।	दि.ल. ६ (चं.दा.),
मार्ग. कृ. ७ शु.	मार्ग. ३	नवं. १८	मघा	सिंह	वृश्चिक	मेष	।। ऽमं.। ।ऽअ. ।ऽ ।।	ल. ४(२३/१२ बाद),(भौमयुतिपरिहार), (२३/१२ तक मृत्युबाण),
मार्ग. कृ. ८ श.	मार्ग. ४	नवं. १६	मघा	सिंह	वृश्चिक	मेष	।। ऽमं.। ।ऽअ. ।ऽ ।।	दि.ल. ६, (भौमयुतिपरिहार),
मार्ग. कृ. ११ चं.	मार्ग. ६	नवं. २१	उ.फा.	कन्या	वृश्चिक	मेष	ऽमं.बु.। ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	दि.ल. ६,
मार्ग. कृ. ११ चं.	मार्ग. ६	नवं. २१	हस्त	कन्या	वृश्चिक	मेष	।। ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	दि.ल. १२ (चं.दा.),
मार्ग. कृ. १२ मं.	मार्ग. ७	नवं. २२	हस्त	कन्या	वृश्चिक	मेष	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ६ (६/५६ तक),
मार्ग. कृ. १२ मं.	मार्ग. ७	नवं. २२	चित्रा	कन्या	वृश्चिक	मेष	।। ऽश.। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. १२ (चं.दा.), गोधू., (शनियुतिपरिहार)
मार्ग. शु. ५ मं.	मार्ग. १४	नवं. २६	उ.षा.	मकर	वृश्चिक	मेष	ऽश.। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ६, १२, गोधू.,
मार्ग. शु. ६ बु.	मार्ग. १५	नवं. ३०	श्रव.	मकर	वृश्चिक	मेष	।। ।। ।ऽनृ. ।। ।।	दि.ल. ६, १२, गोधू.,
मार्ग. शु. ७ गु.	मार्ग. १६	दिसं. १	धनि.	मकर/कुम्भ	वृश्चिक	मेष	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ६, १२, गोधू.,
मार्ग. शु. १० र.	मार्ग. १६	दिसं. ४	उ.भा.	मीन	वृश्चिक	मेष	ऽरा.। ।। ।ऽरो. ।ऽ ।ऽ	दि.ल. ६, गोधू.,
माघ कृ. ७ र.	माघ २	जन. १५	हस्त	कन्या	मकर	मेष	ऽचं.। ।। ।। ऽ। ।।	ल. गोधू.,
माघ कृ. ८ चं.	माघ ३	जन. १६	स्वा.	तुला	मकर	मेष	।। ।ऽशु. ऽगु.ऽअ. ।ऽ ।।	ल. ६(शु.दा.), (शुक्रपादवेधाभाव), (२४/०७ तक मृत्युबाण),
माघ कृ. ६ मं.	माघ ४	जन. १७	स्वा.	तुला	मकर	मेष	।। ।ऽशु. ऽगु.ऽअ. ।ऽ ।।	ल. गोधू., (शुक्रपादवेधाभाव),
माघ कृ. १० बु.	माघ ५	जन. १८	अनु.	वृश्चिक	मकर	मेष	।। ।। ।ऽनृ. ऽऽ ।।	ल. ६(शु.दा.),
माघ कृ. ११ गु.	माघ ६	जन. १६	अनु.	वृश्चिक	मकर	मेष	।। ।। ।ऽनृ. ऽऽ ।।	दि.ल. १२, गोधू.,
माघ शु. ४ शु.	माघ १४	जन. २७	उ.भा.	मीन	मकर	मेष	ऽरा.। ।। ऽमं.ऽनृ. ।ऽ ।।	ल. ६(शु.दा.),
माघ शु. ५ श.	माघ १५	जन. २८	उ.भा.	मीन	मकर	मेष	ऽरा.। ।। ऽमं.ऽनृ. ।ऽ ।।	ल. गोधू.,
माघ शु. ६ र.	माघ १६	जन. २६	अश्वि.	मेष	मकर	मेष	।ऽ ऽगु.। ऽश. ऽचौ. ।ऽ ।।	ल. ६(शु.दा.),
माघ शु. ७ चं.	माघ १७	जन. ३०	अश्वि.	मेष	मकर	मेष	।ऽ ऽगु.। ऽश. ऽचौ. ।ऽ ।।	दि.ल. १२, गोधू.,
फाल्गु. कृ. १ बु.	माघ २६	फर. ८	मघा	सिंह	मकर	मेष	।। ।। ऽसू.बु.। ।ऽ ।।	ल. गोधू., ६,
फाल्गु. कृ. ३ शु.	माघ २८	फर. १०	उ.फा.	कन्या	मकर	मेष	।। ।। ।। ।। ।।	ल. ६, (भौमयुतिपरिहार)
फाल्गु. कृ. ४ श.	माघ २६	फर. ११	हस्त	कन्या	मकर	मेष	।। ।ऽशु. ऽशु.। ।ऽ ।।	दि.ल. १२,. ३(१४/२८ तक),(शुक्रपादवेधाभाव),(१४/२८ बाद मृत्युबाण),

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०६८ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१२ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
फाल्गु. कृ. ११ शु.	फाल्गु. ५	फर. १७	मूल	धनु	कुम्भ	मेष	।ऽ ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	दि.ल. १२, ३ (चं.दा.), गोधू.,
फाल्गु. शु. ३ शु.	फाल्गु. १२	फर. २४	उ.भा.	मीन	कुम्भ	मेष	।ऽ ।। ।ऽअ. ।। ।।	दि. ल. ३, ४, ६(२८/०८ तक), (११/३५ तक मृत्युबाण),
फाल्गु. शु. ३ श.	फाल्गु. १३	फर. २५	रेव.	मीन	कुम्भ	मेष	।। ऽशु.। ।ऽअ. ।। ।ऽ	दि. ल. ३, ४,
चैत्र कृ. १ शु.	फाल्गु. २६	मार्च ९	हस्त	कन्या	कुम्भ	मेष	ऽमं.ऽ ।ऽबु. ऽबु। ।। ।।	ल. ६ (२५/५५ बाद), (२२/१६ से २५/५५ तक बुध-पादवेध),
चैत्र कृ. २ श.	फाल्गु. २७	मार्च १०	हस्त	कन्या	कुम्भ	मेष	ऽमं.ऽ।ऽबु. ऽबु.ऽरो. ।। ।।	दि.ल. १२ (चं.दा.), ३(१३/१३ तक),
चैत्र कृ. ४ र.	फाल्गु. २८	मार्च ११	स्वा.	तुला	कुम्भ	मेष	।। ।। ऽशु.। ।ऽ ।ऽ	दि. ल. ३ (१२/०२ बाद), ४, गोधू., ६,

आगामी संवत् २०६९ वि. में गुरु-शुक्रास्त- आगामी सं. २०६९ वि. में गुरु वैशा. शु. ११ बु. (२ मई, २०१२ ई.) को अस्त होकर ज्ये. शु. ८ मं. (२९ मई, २०१२ ई.) को उदित होगा।

शुक्र इसवर्ष ज्ये. शु. १३ श.(२ जून, २०१२ ई.) को पश्चिम में अस्त होकर आषा. कृ. ८ चं. (११ जून, २०१२ ई.) को पूर्व में उदित होगा। **किञ्च-** इसी वर्ष शुक्र माघ कृ. ३० र. (१० फर., २०१३ ई.) को पूर्व में अस्त होगा और इसका पश्चिम में उदय सं. २०७० वि. में चैत्र शु. १० र. (२१ अप्रै., २०१३ ई.) को होगा।

विवाहमुहूर्त्तों के शोधन में वेध–युति आदि दोषों के शास्त्रीय परिहार

इस पंचांग में दिए जाने वाले विवाहमुहूर्त्तों में जहां वेध, युति, कर्त्तरी, दग्धातिथि, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र, भौम, शुक्र के दोषों के परिहार मिल जाते हैं, वहां उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध मान लिया जाता है और विवाहलग्न लगा दिए जाते हैं। इन दोषों के परिहार निम्नांकित स्थितियों में माने गए हैं:- ***वेध-परिहार-*** सप्तशलाका एवं पंचशलाका वेध में क्रूरग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के तो चारों चरण दूषित माने जाते हैं, वेध का वहां परिहार नहीं है। सौम्य ग्रह द्वारा वेध होने पर पादवेधपद्धति से केवल विद्ध चरण को ही दूषित माना जाता है। वहां शेष तीनों चरण वेधदोष से मुक्त रहते हैं। पादवेधपद्धति में वेधक सौम्यग्रह नक्षत्र के पहिले चरण में हो तो वह वेध्य नक्षत्र के चौथे चरण को, चतुर्थ चरण में स्थित वेधक सौम्य ग्रह वेध्य नक्षत्र के पहिले चरण को, द्वितीय चरणस्थ वेधक ग्रह वेध्य नक्षत्र के तृतीय चरण को एवं तृतीय चरणस्थ वेधक ग्रह वेध्य नक्षत्र के द्वितीय चरण को विद्ध करता है। ***युतिदोष का परिहार-*** नक्षत्र के साथ सौम्यग्रह की युति का दोष सामान्य माना जाता है, लेकिन क्रूरग्रह की युति बहुत ही अशुभ फलप्रद मानी जाती है। यदि चन्द्रमा अपनी उच्च राशि (वृष) या मित्रराशि (सिंह, मिथुन, कन्या) में हो तो क्रूरग्रह की युति का दोष भी समाप्त हो जाता है। ***कर्त्तरीदोष का परिहार-*** मुहूर्त्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध स्थित हो तो कर्त्तरीदोष का परिहार हो जाता है। कर्त्तरी बनाने वाले ग्रह यदि शत्रुराशि या अपनी नीचराशि में हों या दोनों अस्त हों, तो भी लग्न का कर्त्तरीदोष नहीं रहता। यदि मुहूर्त्तलग्न से द्वितीय भाव में कोई शुभ ग्रह बैठा हो अथवा बारहवें भाव में गुरु बैठा हो तो भी कर्त्तरीदोष निष्प्रभाव हो जाता है और ऐसा कर्त्तरीदोष विवाहमुहूर्त्त को अग्राह्य नहीं बना सकता। चन्द्र-कर्त्तरीदोष का परिहार भी चन्द्रमा के स्थान को लग्न समझकर, इन्हीं योगों से देखना चाहिए। ***दग्धातिथि का परिहार-*** मुहूर्त्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध बैठा हो, तो दग्धातिथि का परिहार हो जाता है, इस परिहार की स्थिति में दग्धातिथि में विवाहलग्न शुद्ध माना जाता है। ***षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र का परिहार-*** नीचराशि (वृश्चिक) में चन्द्रमा हो तो वह लग्न से छठे या आठवें भाव में होने पर भी दोषकारक नहीं होत। यदि चन्द्रमा लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तब तो उसका कोई परिहार शास्त्रों में नहीं मिलता। ***अष्टमस्थ मंगल का परिहार-*** मंगल अस्त (अदृश्य) हो या वह नीचराशि (कर्क) अथवा शत्रु राशि (मिथुन या कन्या) में हो, तो लग्न से अष्टमस्थ होने पर भी वह दोषकारक नहीं होता। यदि मंगल लग्नेश होकर अष्टम में हो, तो किसी भी स्थिति में उसके दोष का परिहार नहीं माना जाता। ***षष्ठाष्टमस्थ शुक्र का परिहार-*** शुक्र यदि नीचराशि (कन्या) अथवा शत्रुराशि (कर्क या सिंह) में हो, तो वह षष्ठाष्टमस्थ होने पर भी अशुभ फल नहीं करता। यदि शुक्र लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तो उसका भी कोई परिहार नहीं है। 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में दिए जाने वाले मुहूर्त्तों में उपरोक्त सभी दोषों के परिहारों का प्रयोग किया जाता है।

सं. २०६८ वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०६८ वि. में कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को शुद्ध (ग्राह्य) बनते हैं ?)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह-मुहूर्त्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाहमुहूर्त्तों में जगह-जगह त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषियों को छुटकारा दिलाने के लिए हम यहां नीचे 'त्रिबलशुद्धि कोष्ठक' दे रहे हैं। संवत् २०६८ वि. के शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त इस पंचांग में पृ. 236 पर दिए गए हैं । किस-किस महीने में किस-किस तारीख वाले विवाहमुहूर्त्त में, किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबलशुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' में लिख दिया गया है । अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं- इस कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में यह तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है, कि अमुक राशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इस वर्ष किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्तों में हो सकता है। वर के लिए 'सूर्य की पूजा' और कन्या के लिए 'गुरु की पूजा' वाला समय भी इस कोष्ठक में दिया गया है ।

लड़का-लड़की की राशियों वाले कॉलमों/कोष्ठकों में जो-जो तारीखें समानरूप से मिलती हों, उन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में उस लड़के-लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे- मेषराशि वाले लड़के और मिथुनराशि वाली लड़की का विवाह सं. २०६८ वि. में जुलाई (२०११ ई.) के महीने में किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है?- यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें,-लड़के वाले कॉलम में जन्मराशि मेष के आगे जुलाई २०११ ई. की ५, ६, ७, ८, ९, १० तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कॉलम में जन्मराशि मिथुन के आगे जुलाई की ५, ६, ९, १०, ११, १२, १७ तारीखें हैं । इसलिए यह समझना चाहिए कि जुलाई, २०११ ई. में मेष राशि वाले लड़के और मिथुन राशि वाली लड़की का विवाह त्रिबलशुद्धि के अनुसार जुलाई की केवल ५, ६, ९, १० तारीखों वाले विवाहमुहूर्तों में ही हो सकता है, क्योंकि जुलाई की केवल यही तारीखें, दोनों (लड़का-लड़की) की राशियों (मेष-मिथुन) वाले कॉलमों (कोष्ठकों) में एक-सी मिलती हैं । इस प्रकार विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाह-मुहूर्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए । क्योंकि, आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ-अष्टम-द्वादश गुरु को शास्त्रनिर्देशानुसार नेष्ट न मानकर पूज्य ही माना गया है ।

ध्यान दें- लड़के की राशि से १, २, ५, ७, ९ वें स्थित सूर्य एवं कन्या की राशि से १, ३, ६, १०वें स्थित गुरु यदि स्वराशि, मित्रराशि या स्वोच्चराशि में हो तो उन्हें शास्त्र-निर्देशानुसार यहां पूज्य न मानकर शुभ ही माना जाता है । इस वर्ष गुरु की स्वराशि मीन तथा मित्रराशि मेष में स्थिति होने से यह सभी राशि वाली कन्याओं के लिए पूज्य न होकर शुभ ही रहेगा।

नाम/ जन्म-राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०६८ वि.) (४ अप्रैल, सन् २०११ ई. से २२ मार्च, सन् २०१२ ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)			इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है ।	लड़की	
मेष	मई ५, ६, ११, १२, १३, १६, २२, २३, २४, २८, २९; जून ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, २०, २४, २५; जुला. ५, ६, ७, ८, ९, १०; अक्तू. ११, १२, १३, २२, २४; नवं. १, ३, ४, ७, ८, ९, १२, १३, १४; जन. १५, १६, १७, २७, २८, २९, ३०; फर. ८, १०, ११, १७, २४, २५; मार्च ९, १०, ११;	ज्येष्ठ , कार्त्तिक ,	मई ५, ६, ११, १२, १३, १६, २२, २३, २४, २८, २९; जून ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, २०, २४, २५; जुला. ५, ६, ७, ८, ९, १०, १७; अक्तू. ११, १२, १३, २२, २४; नवं. १, ३, ४, ७, ८, ९, १२, १३, १४, १८, १९, २१, २२, २९, ३०; दिसं. १, ४; जन. १५, १६, १७, २७, २८, २९, ३०; फर. ८, १०, ११, १७, २४, २५; मार्च ९, १०, ११;	- - -
वृष	मई १६, १७, १८, २२, २३, २४, २८, २९; जून ३, ९, १०, ११, १२, २०, २४, २५; जुला. ७, ८, ९, १०, ११, १२, १७; अक्तू. ११, १२, १३, २४(११/४४ बाद), २८, २९; नवं. १, ३, ४, ७, ८, ९, १२, १३, १४, २१, २२, २९, ३०; दिसं. १, ४; जन. १५, १६, १७, १८, १९, २७, २८, २९, ३०; फर. १०, ११, २४, २५; मार्च ९, १०, ११;	ज्येष्ठ , आषाढ़ , आश्विन , माघ ,	मई ५, ६, १३(११/३८ बाद), १६, १७, १८, २२, २३, २४, २८, २९; जून ३, ९, १०, ११, १२, २०, २४, २५; जुला. ७, ८, ९, १०, ११, १२, १७; अक्तू. ११, १२, १३, २४(११/४४ बाद), २८, २९; नवं. १, ३, ४, ७, ८, ९, १२, १३, १४, २१, २२, २९, ३०; दिसं. १, ४; जन. १५, १६, १७, १८, १९, २७, २८, २९, ३०; फर. १०, ११, २४, २५; मार्च ९, १०, ११;	- - -

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०६८ वि.) (४ अप्रैल, सन् २०११ ई. से २२ मार्च, सन् २०१२ ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)

नाम/जन्म-राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
मिथुन	मई ५, ६, ११, १२, १३(११/३८ तक); जून २०(१४/३६ बाद), २४, २५; जुला. ५, ६, ६, १०, ११, १२, १७; अक्तू. २२, २४(११/४४ तक), २८, २६; नवं. ४, ७, ८, ६, १२, १३, १४, १८, १६; दिसं. १ (८/५१ बाद), ४; फर. १७, २४, २५; मार्च ११;	आषाढ़ , कार्तिक, फाल्गुन,	मई ५, ६, ११, १२, १३(११/३८ तक), १६, १७, १८, २४, २८, २६; जून ३, ७, ८, ११(२०/०७ बाद), १२, २०(१४/३६ बाद), २४, २५; जुला. ५, ६, ६, १०, ११, १२, १७; अक्तू. ११, १२, १३, २२, २४(११/४४ तक), २८, २६; नवं. ४, ७, ८, ६, १२, १३, १४, १८, १६; दिसं.१(८/५१ बाद), ४; जन. १६, १७, १८, १६, २७, २८, २६, ३०; फर. ८, १७, २४, २५; मार्च ११;	---
कर्क	मई ५, ६, ११, १२, १३, १७, १८, २२, २३, २८, २६; जून ३, ७, ८, ६, १०, ११(२०/०७ तक); अक्तू. ११, १२, १३; नवं. १८, १६, २१, २२, २६, ३०; दिसं. १ (८/५१ तक), ४; जन. १५, १८, १६, २७, २८, २६, ३०; फर. ८, १०, ११;	माघ	मई ५, ६, ११, १२, १३, १७, १८, २२, २३, २८, २६; जून ३, ७, ८, ६, १०, ११(२०/०७ तक), २०(१४/३६ तक), २४, २५; जुला. ५, ६, ७, ८, ११, १२; अक्तू. ११, १२, १३, २२, २४, २८, २६; नवं. १, ३, ७, ८, ६, १२, १३, १४, १८, १६, २१, २२, २६, ३०; दिसं.१(८/५१ तक), ४; जन. १५, १८, १६, २७, २८, २६, ३०; फर. ८, १०, ११, १७, २४, २५; मार्च ६, १०;	---
सिंह	मई ५, ६, ११, १२, १३, १६, २२, २३, २४, २६; जून ३, ७, ८, ६, १०, ११, १२, २०, २५; जुला. ५, ६, ७, ८, ६, १०; अक्तू. १२, १३, २२, २४; नवं. १, ३, ४, ६, १२, १३, १४; जन. १५, १६, १७, २६, ३०; फर. ८, १०, ११, १७; मार्च ६, १०, ११;	आश्विन, फाल्गुन,	मई ५, ६, ११, १२, १३, १६, २२, २३, २४, २६; जून ३, ७, ८, ६, १०, ११, १२, २०, २५; जुला. ५, ६, ७, ८, ६, १०, १७; अक्तू. १२, १३, २२, २४; नवं. १, ३, ४, ६, १२, १३, १४, १८, १६, २१, २२, २६, ३०; दिसं. १; जन. १५, १६, १७, २६, ३०; फर. ८, १०, ११, १७; मार्च ६, १०, ११;	---
कन्या	मई १६, १७, १८, २२, २३, २४, २८; जून ३, ७, ८, ६, १०, ११, १२, २०, २४, २५; जुला. ५, ६, ७, ८, ६, १०, ११, १२, १७; अक्तू. ११, १२, २२, २४, २८, २६; नवं. १, ३, ४, ७, ८, १२, १३, १४, १८, १६, २१, २२, २६, ३०; दिसं. १, ४; जन. १५, १६, १७, १८, १६, २७, २८; फर. ८, १०, ११, २४, २५; मार्च ६, १०, ११;	ज्येष्ठ , आश्विन, कार्तिक, माघ ,	मई ५, ६, ११, १२, १३, १६, १७, १८, २२, २३, २४, २८; जून ३, ७, ८, ६, १०, ११, १२, २०, २४, २५; जुला. ५, ६, ७, ८, ६, १०, ११, १२, १७; अक्तू. ११, १२, २२, २४, २८, २६; नवं. १, ३, ४, ७, ८, १२, १३, १४, १८, १६, २१, २२, २६, ३०; दिसं. १, ४; जन. १५, १६, १७, १८, १६, २७, २८; फर. ८, १०, ११, २४, २५; मार्च ६, १०, ११;	---
तुला	मई ११, १२, १३; जून २०(१४/३६ बाद), २४, २५; जुला. ५, ६, ७, ८, ६, १०, ११, १२, १७; अक्तू. २२, २४, २८, २६; नवं. ४, ७, ८, ६, १४, १८, १६, २१, २२; दिसं. १ (८/५१ बाद), ४; फर. १७, २४, २५; मार्च ६, १०, ११;	आषाढ़ , कार्तिक, फाल्गुन,	मई ११, १२, १३, १६, १७, १८, २४, २८, २६; जून ३, ७, ८, ६, १०, ११, १२, २०(१४/३६ बाद), २४, २५; जुला. ५, ६, ७, ८, ६, १०, ११, १२, १७; अक्तू. ११, १२, १३, २२, २४, २८, २६; नवं. ४, ७, ८, ६, १४, १८, १६, २१, २२; दिसं. १(८/५१ बाद), ४; जन. १५, १६, १७, १८, १६, २७, २८, २६, ३०; फर. ८, १०, ११, १७, २४, २५; मार्च ६, १०, ११;	---

नाम/जन्म-राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०६८ वि.) (४ अप्रैल, सन् २०११ ई. से २२ मार्च, सन् २०१२ ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल मा. स्टैं. टा. है।)			इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	
वृश्चिक	मई ५, ६, ११, १२, १३, १६, १७, १८, २२, २३, २८, २९; जून ७, ८, ९, १०, ११, १२; अक्तू. ११, १२, १३; नवं. १८, १९, २१, २२, २९, ३०; दिसं. १ (८/५१ तक), ४; जन. १५, १६, १७, १८, १९, २७, २८, २९, ३०; फर. ८, १०, ११;	ज्येष्ठ,	मई ५, ६, ११, १२, १३, १६, १७, १८, २२, २३, २८, २९; जून ७, ८, ९, १०, ११, १२, २०(१४/३९ तक), २४, २५; जुला. ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२; अक्तू. ११, १२, १३, २२, २४, २८, २९; नवं. १, ३, ७, ८, ९, १२, १३, १८, १९, २१, २२, २९, ३०; दिसं. १(८/५१ तक), ४; जन. १५, १६, १७, १८, १९, २७, २८, २९, ३०; फर. ८, १०, ११, १७, २४, २५; मार्च ९, १०, ११;	- - -
धनु	मई ५, ६, ११, १२, १३, १६, १७, १८, २२, २३, २४, २९; जून ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, २०, २५; जुला. ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२; अक्तू. १२, १३, २२, २४, २८, २९; नवं. १, ३, ४, ९, १२, १३, १४; जन. १५, १६, १७, १८, १९, २९, ३०; फर. ८, १०, ११, १७; मार्च ९, १०, ११	आषाढ़ , माघ,	मई ५, ६, ११, १२, १३, १६, १७, १८, २२, २३, २४, २९; जून ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, २०, २५; जुला. ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १७; अक्तू. १२, १३, २२, २४, २८, २९; नवं. १, ३, ४, ९, १२, १३, १४, १८, १९, २१, २२, २९, ३०; दिसं.१; जन. १५, १६, १७, १८, १९, २९, ३०; फर. ८, १०, ११, १७; मार्च ९, १०, ११;	- - -
मकर	मई १६, १७, १८, २२, २३, २४, २८; जून ३, ९, १०, ११, १२, २०, २४, २५ ; जुला. ७, ८, ९, १०, ११, १२, १७; अक्तू. ११, १२, २४(११/४४ बाद), २८, २९; नवं. १, ३, ४, ७, ८, १२, १३, १४, २१, २२, २९, ३०; दिसं. १ , ४; जन. १५, १६, १७, १८, १९, २७, २८; फर. १०, ११, १७, २४, २५; मार्च ९, १०, ११;	ज्येष्ठ , आश्विन, माघ ,फाल्गुन,	मई ५, ६, १३(११/३८ बाद), १६, १७, १८, २२, २३, २४, २८; जून ३, ९, १०, ११, १२, २०, २४, २५; जुला. ७, ८, ९, १०, ११, १२, १७; अक्तू. ११, १२, २४(११/४४ बाद), २८, २९; नवं. १, ३, ४, ७, ८, १२, १३, १४, २१, २२, २९, ३०; दिसं.१, ४; जन. १५, १६, १७, १८, १९, २७, २८; फर. १०, ११, १७, २४, २५; मार्च ९, १०, ११;	- - -
कुम्भ	मई ११, १२, १३(११/३८ तक); जून २०, २४, २५ ;जुला. ५, ६, ९, १०, ११, १२, १७; अक्तू. २२, २४(११/४४ तक), २८, २९; नवं. १, ३, ४, ७, ८, ९, १४, १८, १९, २९, ३०; दिसं. १ , ४; फर. १७, २४, २५; मार्च ११;	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन,	मई ११, १२, १३(११/३८ तक), १६, १७, १८, २२, २३, २४, २८, २९; जून ३, ७, ८, ११(२०/०७ बाद), १२, २०, २४, २५; जुला. ५, ६, ९, १०, ११, १२, १७; अक्तू. ११, १२, १३, २२, २४(११/४४ तक), २८, २९; नवं. १, ३, ४, ७, ८, ९, १४, १८, १९, २९, ३०; दिसं.१, ४; जन. १६, १७, १८, १९, २७, २८, २९, ३०; फर. ८, १७, २४, २५; मार्च ११;	- - -
मीन	मई ५, ६, ११, १२, १३, १७, १८, २२, २३, २४, २८, २९; जून ७, ८, ९, १०, ११(२०/०७ तक); जुला. १७; अक्तू. ११, १२, १३; नवं. १८, १९, २१, २२, २९, ३०; दिसं. १ , ४; जन. १५, १८, १९, २७, २८, २९, ३०; फर. ८, १०, ११;	आश्विन,	मई ५, ६, ११, १२, १३, १७, १८, २२, २३, २४, २८, २९; जून ७, ८, ९, १०, ११(२०/०७ तक), २०, २४, २५; जुला. ५, ६, ७, ८, ११, १२, १७; अक्तू. ११, १२, १३, २२, २४, २८, २९; नवं. १, ३, ४, ७, ८, ९, १२, १३, १८, १९, २१, २२, २९, ३०; दिसं.१, ४; जन. १५, १८, १९, २७, २८, २९, ३०; फर. ८, १०, ११, १७, २४, २५; मार्च ९, १०;	- - -

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६८ वि.)

प्रतिवर्ष हमें ज्योतिषियों एवं अन्य लोगों के ऐसे अनेकों पत्र उपलब्ध होते हैं, जिनमें वे ऐसे अनेक विवाहमुहूर्त्तों के बारे में हमसे स्पष्टीकरण चाहते हैं, जिन्हें हमने अपने पंचांग. में तो अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों की कोटि में रखा होता है, लेकिन किसी अन्य पंचांग में उन्हें शुद्ध विवाहमुहूर्त्त मानकर, उनमें विवाहलग्न लगाए होते हैं। इस समस्या को दृष्टि में रखकर अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों का स्पष्टीकरण हम इस स्तम्भ में दिया करते हैं। यह स्तम्भ ज्योतिषियों को शुद्ध और अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त–सम्बन्धी दुविधा से मुक्त कराने में काफी हद तक समर्थ सिद्ध हुआ है और इससे ज्योतिषी लोग स्वयं यह भलीभांति जान सकते हैं कि– अमुक नक्षत्र, अमुक दिन या अमुक समय या अमुक लग्न में विवाह करना शास्त्रविरुद्ध क्यों है ? यहां साथ–साथ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण विवाहनक्षत्र होते हुए भी, वहां विवाह नहीं किया जा सकता। जहां भद्रा, व्यतीपात, क्रूरग्रहवेध आदि दोषों से रहित होने से विवाहनक्षत्र का काल शुद्ध होने पर भी षष्ठाष्टमस्थ शुक्र, चन्द्र, भौम और लग्नेश आदि के कारण शुद्ध लग्न नहीं बन सका, वहां 'लग्नाभाव' दोष लिखा गया है। *ध्यान रहे–* यहां जिन युति, वेध आदि दोषों का निर्देश किया गया है, वे सभी ऐसे हैं, जिनका कोई परिहार नहीं है। नीचे सं. २०६८ वि. के अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त दिए जा रहे हैं– प्रियव्रत शर्मा ।

संवत्सरारम्भ से चैत्र शु. १० बु. (१३ अप्रै., २०११ ई.) तक सूर्य मीनस्थ है तथा वैशा. कृ. ८ चं. (२५ अप्रै., २०११ ई.) तक गुरु अस्त रहेगा।

तिथि–वार	तारीख २०११ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
वैशा. कृ. १२ शु.	अप्रै. २९	उ.भा.	वैधृति, शनिवेध,
वैशा. कृ. १२ श.	अप्रै. ३०	उ.भा.	क्षीणचन्द्र, शनिवेध,
वैशा. शु. ३ शु.	मई ६	रोहि.	लग्नाभाव,
वैशा. शु. ४ श.	मई ७	मृग.	भद्रा,
वैशा. शु. १२ श.	मई १४	हस्त	मासान्त,
वैशा. शु. १२ श.	मई १४	चित्रा	मासान्त,
वैशा. शु. १३ र.	मई १५	चित्रा	संक्रान्ति,
ज्ये. कृ. २ गु.	मई १९	मूल	अपरिहार्य राहुयुति,
ज्ये. कृ. ३ शु.	मई २०	मूल	अपरिहार्य राहुयुति,
ज्ये. कृ. ४ श.	मई २१	उ.षा.	केतुवेध,
ज्ये. कृ. ५ र.	मई २२	उ.षा.	केतुवेध,
ज्ये. कृ. ६ चं.	मई २३	धनि.	लग्नाभाव,
ज्ये. कृ. ९ गु.	मई २६	उ.भा.	शनिवेध,
ज्ये. कृ. १० शु.	मई २७	उ.भा.	शनिवेध,
ज्ये. कृ. १० शु.	मई २७	रेव.	लग्नाभाव,
ज्ये. कृ. १२ र	मई २९	रेव.	नक्षत्रान्त,
ज्ये. शु. १ गु.	जून २	मृग.	लग्नाभाव,

तिथि–वार	तारीख २०११ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
ज्ये. शु. ९ शु.	जून १०	हस्त	लग्नाभाव,
ज्ये. शु. ११ र.	जून १२	चित्रा	भद्रा, परिघार्ध,
ज्ये. शु. १२ चं.	जून १३	अनु.	मृत्युबाण,
ज्ये. शु. १३ मं.	जून १४	अनु.	ग्रहणशूल, मासान्त,
ज्ये. शु. १५ बु.	जून १५	मूल	ग्रहणदिन, संक्रान्ति,
आषा. कृ. १ गु.	जून १६	मूल	ग्रहणशूल,
आषा. कृ. २ शु.	जून १७	उ.षा.	ग्रहणशूल, सूर्य–केतुवेध,
आषा. कृ. ३ श.	जून १८	उ.षा.	ग्रहणशूल,भद्रा, सूर्य–केतुवेध,
आषा. कृ. ३ श.	जून १८	श्रव.	ग्रहणशूल,
आषा. कृ. ४ र.	जून १९	श्रव.	लग्नाभान,
आषा. कृ. ४ र.	जून १९	धनि.	वैधृति,
आषा. कृ. ८ गु.	जून २३	उ.भा.	शनिवेध,
आषा. कृ. ८ शु.	जून २४	उ.भा.	शनिवेध,
आषा. कृ. १० र.	जून २६	अश्वि.	मृत्युबाण,
आषा. कृ. १२ मं.	जून २८	रोहि.	क्षीणचन्द्र,
आषा. शु. ३ चं.	जुला. ४	मघा	गण्डमूल–आद्यघटीद्वयदोष,भद्रा,
आषा. शु. ७ गु.	जुला. ७	हस्त	परिघार्ध, भद्रा,
आषा. शु. ८ शु.	जुला. ८	हस्त	लग्नाभाव,
आषा. शु. १३ बु.	जुला. १३	मूल	ग्रहणनक्षत्र, सूर्यवेध,
आषा. शु. १४ गु.	जुला. १४	मूल	ग्रहणनक्षत्र, सूर्यवेध,

तिथि–वार	तारीख २०११ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
आषा. शु. १५ शु.	जुला. १५	उ.षा.	वैधृति, मासान्त, भौम - केतुवेध,
श्राव. कृ. १ श.	जुला. १६	उ.षा.	संक्रान्ति, भौम - केतुवेध,
श्राव. कृ. १ श.	जुला. १६	श्रव.	संक्रान्ति,
श्राव. कृ. २ र.	जुला. १७	श्रव.	लग्नाभाव,
श्राव. कृ. ३ चं.	जुला. १८	धनि.	भद्रा, मृत्युबाण,

शुक्रास्त–श्राव. कृ. ७ शु. से आश्वि. शु. ८ मं. (२२ जुला., २०११ से ४ अक्तू., २०११ ई.)तक शुक्र अस्त रहेगा।

तिथि–वार	तारीख २०११ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
आश्वि. शु. ११ शु.	अक्तू. ७	धनि.	भौमवेध, (२१/०७ तक मृत्युबाण),
आश्वि. शु. १२ श.	अक्तू. ८	धनि.	भौमवेध,
आश्वि. शु. १४ चं.	अक्तू. १०	उ.भा.	सूर्यवेध,
आश्वि. शु. १५ मं.	अक्तू. ११	उ.भा.	भद्रा,
कार्त्ति. कृ. ३ श.	अक्तू. १५	रोहि.	व्यतीपात, मृत्युबाण,
कार्त्ति. कृ. ४ र.	अक्तू. १६	रोहि.	व्यतीपात,मासान्त,मृत्युबाण,
कार्त्ति. कृ. ५ चं.	अक्तू. १७	मृग.	संक्रान्ति,
कार्त्ति. कृ. ६ मं.	अक्तू. १८	मृग.	परिघार्ध,
कार्त्ति. कृ. ११ र.	अक्तू. २३	मघा	लग्नाभाव,
कार्त्ति. कृ. ११ र.	अक्तू. २३	उ.फा.	लग्नाभाव,
कार्त्ति. कृ. १२ चं.	अक्तू. २४	हस्त	क्षीणचन्द्र,

अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०६८ वि.)

तिथि-वार	तारीख २०११ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
कार्ति. शु. ४ र.	अक्तू. ३०	मूल	ग्रहणनक्षत्र,
कार्ति. शु. ५ चं.	अक्तू. ३१	मूल	ग्रहणनक्षत्र,
कार्ति. शु. ७ बु.	नवं. २	उ.षा.	लग्नाभाव,
कार्ति. शु. ७ बु.	नवं. २	श्रव.	भौमवेध,
कार्ति. शु. ८ गु.	नवं. ३	श्रव.	भौमवेध,
कार्ति. शु. ११ र.	नवं. ६	उ.भा.	लग्नाभाव, (२४/४८ तक मृत्युबाण),
कार्ति. शु. १३ मं.	नवं. ८	अश्वि.	लग्नाभाव,
मार्ग. कृ. ३ र.	नवं. १३	रोहि.	लग्नाभाव,
मार्ग. कृ. १० र.	नवं. २०	उ.फा.	लग्नाभाव,
मार्ग. शु. १ श.	नवं. २६	मूल	ग्रहणनक्षत्र,
मार्ग. शु. ३ र.	नवं. २७	मूल	ग्रहणनक्षत्र, मृत्युबाण,
मार्ग. शु. ४ चं.	नवं. २८	उ.षा.	लग्नाभाव,
मार्ग. शु. ५ मं.	नवं. २९	श्रव.	लग्नाभाव,
मार्ग. शु. ६ बु.	नवं. ३०	धनि.	लग्नाभाव,
मार्ग. शु. ९ श.	दिसं. ३	उ.भा.	लग्नाभाव,
मार्ग. शु. १० र.	दिसं. ४	रेव.	व्यतीपात,
मार्ग. शु. १० चं.	दिसं. ५	रेव.	व्यतीपात, भद्रा,
मार्ग. शु. ११ मं.	दिसं. ६	रेव.	भद्रा, नक्षत्रान्त,
मार्ग. शु. ११ मं.	दिसं. ६	अश्वि.	भौमवेध, (१८/०० तक मृत्युबाण),
मार्ग. शु. १२ बु.	दिसं. ७	अश्वि.	परिघार्ध, भौमवेध,
मार्ग. शु. १४ शु.	दिसं. ९	रोहि.	ग्रहणशूल,

तिथि-वार	तारीख २०११-१२ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
मार्ग. शु. १५ श.	दिसं. १०	रोहि.	ग्रहणदिन,
मार्ग. शु. १५ श.	दिसं. १०	मृग.	ग्रहणदिन,
पौष कृ. १ र.	दिसं. ११	मृग.	ग्रहणशूल,
पौष कृ. ५ गु.	दिसं. १५	मघा	मासान्त,

धनु:स्थ रवि- पौष कृ. ६ शु. से माघ कृ. ४ शु. (१६ दिसं., २०११ से १३ जन. २०१२ ई.) तक सूर्य धनु:स्थ रहेगा।

तिथि-वार	तारीख	विवाह नक्षत्र	दोष
माघ कृ. ५ श.	जन. १४	उ.फा.	संक्रान्ति,
माघ कृ. ५ श.	जन. १४	हस्त	संक्रान्ति,
माघ कृ. ७ र.	जन. १५	चित्रा	मृत्युबाण,
माघ कृ. ८ चं.	जन. १६	चित्रा	मृत्युबाण, (११/५५ बाद अपरिहार्यशनियुति),
माघ कृ. १२ शु.	जन. २०	मूल	क्षीणचन्द्र,
माघ शु. १ मं.	जन. २४	श्रव.	लग्नाभाव,
माघ शु. १ मं.	जन. २४	धनि.	व्यतीपात,
माघ शु. २ बु.	जन. २५	धनि.	व्यतीपात,
माघ शु. ५ श.	जन. २८	रेव.	भौमवेध,
माघ शु. ६ र.	जन. २९	रेव.	भौमवेध,
माघ शु. १० गु.	फर. २	रोहि.	ग्रहणनक्षत्र,
माघ शु. ११ शु.	फर. ३	रोहि.	ग्रहणनक्षत्र,
माघ शु. ११ शु.	फर. ३	मृग.	ग्रहणनक्षत्र,
माघ शु. १२ श.	फर. ४	मृग.	वैधृति, ग्रहणनक्षत्र,
फाल्गु. कृ. २ गु.	फर. ९	मघा	लग्नाभाव,
फाल्गु. कृ. ४ श.	फर. ११	उ.फा.	नक्षत्रान्त,

तिथि-वार	तारीख २०१२ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
फाल्गु. कृ. ४ श.	फर. ११	चित्रा	मृत्युबाण,
फाल्गु. कृ. ५ र.	फर. १२	चित्रा	मासान्त, मृत्युबाण,
फाल्गु. कृ. ५ र.	फर. १२	स्वा.	मासान्त,
फाल्गु. कृ. ६ चं.	फर. १३	स्वा.	भद्रा, संक्रान्ति,
फाल्गु. कृ. ७ मं.	फर. १४	अनु.	मृत्युबाण, अपरिहार्य राहुयुति,
फाल्गु. कृ. ८ बु.	फर. १५	अनु.	मृत्युबाण, अपरिहार्य राहुयुति,
फाल्गु. कृ. ९ गु.	फर. १६	मूल	लग्नाभाव,
फाल्गु. कृ. १२ श.	फर. १८	उ.षा.	लग्नाभाव,
फाल्गु. शु. २ गु.	फर. २३	उ.भा.	मृत्युबाण,
फाल्गु. शु. ३ शु.	फर. २४	रेव.	लग्नाभाव,
फाल्गु. शु. ४ र.	फर. २६	रेव.	भद्रा,
फाल्गु. शु. ४ र.	फर. २६	अश्वि.	भौमवेध,
फाल्गु. शु. ५ चं.	फर. २७	अश्वि.	भौमवेध,
फाल्गु. शु. ७ बु.	फर. २९	रोहि.	ग्रहणनक्षत्र,

होलाष्टक – १ से ८ मार्च तक, सन् २०१२ ई.

तिथि-वार	तारीख	विवाह नक्षत्र	दोष
चैत्र कृ. १ शु.	मार्च ९	उ.फा.	भुजङ्गपात,
चैत्र कृ. २ श.	मार्च १०	चित्रा	सूर्यवेध,
चैत्र कृ. ४ र.	मार्च ११	चित्रा	सूर्यवेध, अपरिहार्य शनियुति,
चैत्र कृ. ५ चं.	मार्च १२	स्वा.	लग्नाभाव,
चैत्र कृ. ६ मं.	मार्च १३	अनु.	मासान्त, मृत्युबाण,

मीनस्थ रवि- चैत्र कृ. ७ बु. (१४ मार्च, सन्२०१२ ई.) से वर्षान्त तक।

मुण्डनादि अन्य मुहूर्त्त (सं.२०६८ वि.) (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

(मुण्डन, उपनयन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश आदि के शुद्ध मुहूर्त्त प्रतिवर्ष इतने कम क्यों होते हैं ?)

मुण्डनादि इन मुहूर्तों के शोधन में भी हम भद्रा, क्रूरग्रहयुति, क्रूरग्रहवेध, क्रान्तिसाम्य, कलशचक्रदोष, वृषवास्तुचक्रदोष, व्यतीपात, अतिगण्ड आदि योग तथा अन्य मुहूर्तशास्त्रोक्त निरवशेष निषिद्ध पदार्थों का पूरी तरह विचार कर शुद्धकाल का निर्णय करते हैं, जिससे कई बार तो इनके शुद्धमुहूर्त वर्ष में असह्यरूप से कम (एक–एक या दो–दो भी) हो जाते हैं। सर्वथा दोषमुक्त शास्त्रीय मुहूर्तसाधन के आग्रह के कारण इन मुहूर्तों की संख्या हमारे पंचांग में अन्य पंचांगों से, जिनके सम्पादक इन विचार्य विषयों की उपेक्षा करके मुहूर्तों की संख्या बढ़ाने की शास्त्रविरुद्ध प्रवृत्ति लिए हैं; काफी कम होती है। विश्वास रखिए, हमारे 'मार्त्तण्ड पंचांग' में दिए गए शुद्ध मुहूर्तों के अतिरिक्त जो मुहूर्त अन्य पंचांगों में आपको मिलते हैं; उनकी मुहूर्तशास्त्रीय शुद्धता वस्तुतः विचारणीय है।

मुण्डन मुहूर्त्त (सन् २०११-१२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ३ शु.	वैशा. २३	मई ६	मृग.	८/०५ से १६/०७ तक,
ज्ये. कृ. २ गु.	ज्ये. ५	मई १९	ज्ये.	१४/११ तक,
ज्ये. शु. २ शु.	ज्ये. २०	जून ३	मृग.	१४/१० तक,
आषा. कृ. ५ चं.	आषा. ६	जून २०	धनि.	७/२७ बाद,
माघ शु. २ बु.	माघ १२	जन. २५	धनि.	१४/३४ से १४/४७ तक,
माघ शु. ३ गु.	माघ १३	जन. २६	शत.	१२/४२ तक,
माघ शु. ७ चं.	माघ १७	जन. ३०	अश्वि.	
फाल्गु. कृ. ९ गु.	फाल्गु. ४	फर. १६	ज्ये.	८/०१ बाद,
चैत्र कृ. ५ चं.	फाल्गु.२६	मार्च १२	स्वा.	८/३६ तक,

मुण्डन में विशेषः- किसी देवस्थल/तीर्थ पर बिना मुहूर्त के भी मुण्डन करवाना शुभ माना गया है। नवरात्रों के दिनों में भी शक्तिपीठों (देवी-मन्दिरों) के समीप मुण्डन करवाने की पंजाब, हिमाचल आदि प्रदेशों में पुरानी परम्परा है।

उपनयन मुहूर्त्त (सन् २०११-१२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. २ गु.	वैशा. २२	मई ५	रोहि.	६/२७ बाद,
वैशा. शु. ३ शु.	वैशा. २३	मई ६	मृग.	८/०५ बाद,
वैशा. शु. १० शु	वैशा. ३०	मई १३	उ.फा.	६/०८ बाद,
ज्ये. कृ. १ बु.	ज्ये. ४	मई १८	अनु.	
ज्ये. शु. ५ चं.	ज्ये. २३	जून ६	पुष्य	
आषा. कृ. ५ चं.	आषा. ६	जून २०	धनि.	७/२७ बाद,
माघ शु. ३ गु.	माघ १३	जन. २६	शत.	

उपनयन मुहूर्त्त (सन् २०१२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
माघ शु. १० गु.	माघ २०	फर. २	रोहि.	८/४८ बाद,
माघ शु. ११ शु.	माघ २१	फर. ३	रोहि.	६/५८ तक,
माघ शु. ११ शु.	माघ २१	फर. ३	मृग.	११/१० बाद,
फाल्गु. शु. ३ शु.	फाल्गु. १२	फर. २४	उ.भा.	
चैत्र कृ. ५ चं.	फाल्गु. २६	मार्च १२	स्वा.	८/३६ तक,

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त (सन् २०११-१२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. शु. ५ चं.	ज्ये. २३	जून ६	पुष्य	१४/१५ तक,
माघ कृ. ११ गु.	माघ ६	जन. १६	अनु.	

विद्यारम्भ मुहूर्त्त (सन् २०११-१२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. २ गु.	वैशा. २२	मई ५	रोहि.	६/२७ बाद,
वैशा. शु. ३ शु.	वैशा. २३	मई ६	मृग.	८/०५ बाद,
वैशा. शु. ५ र.	वैशा. २५	मई ८	आर्द्रा	८/५२ तक,
वैशा. शु. १० शु.	वैशा. ३०	मई १३	उ.फा.	६/०८ बाद,
ज्ये. कृ. १२ र.	ज्ये. १५	मई २९	अश्वि.	६/३४ बाद,
ज्ये. शु. २ शु.	ज्ये. २०	जून ३	मृग.	१४/१८ तक, तदनन्तर क्रान्तिसाम्य,
माघ कृ. ११ गु.	माघ ६	जन. १९	अनु.	
माघ शु. ११ शु.	माघ २१	फर. ३	मृग.	११/१० बाद,
फाल्गु. कृ. ३ शु.	माघ २८	फर. १०	पू.फा.	८/४० तक (गुरुपादवेधाभाव),

द्विरागमन मुहूर्त्त (सन् २०११-१२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. २ गु.	वैशा. २२	मई ५	रोहि.	६/२७ से १८/०२ तक, २०/२६ बाद,
वैशा. शु. ३ शु.	वैशा. २३	मई ६	मृग.	८/०५ से १६/०७ तक,
वैशा. शु. ६ चं.	वैशा. २६	मई ९	पुष्य	१६/४६ बाद,
मार्ग. कृ. ११ चं.	मार्ग. ६	नवं. २१	हस्त	२५/०२ बाद,
मार्ग. शु. ४ चं.	मार्ग. १३	नवं. २८	उ.षा.	२६/१६ बाद,
मार्ग. शु. ६ बु.	मार्ग. १५	नवं. ३०	धनि.	२८/३१ बाद,
मार्ग. शु. ७ गु.	मार्ग. १६	दिसं. १	धनि.	२०/२३ तक,
मार्ग. शु. ७ गु.	मार्ग. १६	दिसं. १	शत.	२१/३५ से २६/३९ तक,
फाल्गु. शु. ३ शु.	फाल्गु.१२	फर. २४	उ.भा.	२८/०८ तक,
चैत्र कृ. १ शु.	फाल्गु.२६	मार्च ९	उ.फा.	८/१० तक, १२/३० से १५/४० तक
चैत्र कृ. ५ चं.	फाल्गु.२६	मार्च १२	स्वा.	८/३६ तक,

अक्षरारम्भ और विद्यारम्भ के मुहूर्तों का प्रयोगः- बच्चे को वर्णमाला का ज्ञान करवाने के लिए अक्षरारम्भ के और संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, रसायन आदि विषयों का अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए विद्यारम्भ के मुहूर्तों का प्रयोग करना चाहिए।

द्विरागमन में विशेष- विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के उपरोक्त मुहूर्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहिता वधू का द्विरागमन दिवाली के दिन प्रदोष के समय दीपकों के प्रकाश में हो, तो अच्छा माना जाता है।

गृहारम्भ मुहूर्त्त (सन् २०११-१२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
*वैशा. शु. ३ शु.	वैशा. २३	मई ६	मृग.	८/०५ से १६/०७ तक,
वैशा. शु. १० शु.	वैशा. ३०	मई १३	उ.फा.	६/०८ बाद,
*कार्त्ति.कृ. १२ चं.	कार्त्ति. ८	अक्तू.२४	उ.फा.	१६/४२ बाद, (१६/४२ तक भूशयन),
मार्ग. कृ. २ श.	कार्त्ति.२७	नवं. १२	रोहि.	१२/०० बाद,
*मार्ग. कृ. ११ चं.	मार्ग. ६	नवं. २१	उ.फा.	१२/१२ तक,
*माघ कृ. ११ गु.	माघ ६	जन. १६	अनु.	
माघ शु. ११ शु.	माघ २१	फर. ३	रोहि.	६/५८ तक,
माघ शु. ११ शु.	माघ २१	फर. ३	मृग.	११/१० से १६/१४ तक,
*फाल्गु.शु. ३ शु.	फाल्गु.१२	फर. २४	उ.भा.	१३/०७ तक, (१३/०७ बाद अग्निबाण),

* तारांकित मुहूर्त्त भी सभी मुहूर्त्तदोषों से मुक्त हैं। इनमें केवल वृष-वास्तुचक्रशुद्धि नहीं है।

नूतन-गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् २०११-१२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
*वैशा. शु. २ गु.	वैशा. २२	मई ५	रोहि.	६/२७ से १८/०२ तक,
*वैशा. शु. ३ शु.	वैशा. २३	मई ६	मृग.	८/०५ से १६/०७ तक,
वैशा. शु. १० शु.	वैशा. ३०	मई १३	उ.फा.	६/०८ से १८/५२ तक,
*ज्ये. कृ. १ बु.	ज्ये. ४	मई १८	अनु.	१५/२६ तक,
ज्ये. कृ. १० शु.	ज्ये. १३	मई २७	रेव.	२७/४३ बाद,
ज्ये. कृ. ११ श.	ज्ये. १४	मई २८	रेव.	
*ज्ये. शु. १ गु.	ज्ये. १६	जून २	रोहि.	१३/१८ तक,
*ज्ये. शु. १ गु.	ज्ये. १६	जून २	मृग.	१४/३० से २४/४२ तक,
*ज्ये. शु. २ शु.	ज्ये. २०	जून ३	मृग.	१४/१० तक,
ज्ये. शु. ८ गु.	ज्ये. २६	जून ६	उ.फा.	१२/१६ से १८/३२ तक,
ज्ये. शु. १० श.	ज्ये. २८	जून ११	चित्रा	६/०१ से २४/१५ तक,
*माघ कृ. ८ चं.	माघ ३	जन. १६	चित्रा	११/५५ तक,(११/५५ बाद अपरिहार्य शनियुति),

नूतन-गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् २०१२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
माघ कृ. १० बु.	माघ ५	जन. १८	अनु.	२२/०१ बाद,
माघ कृ. ११ गु.	माघ ६	जन. १९	अनु.	१७/५८ तक,
*माघ शु. ४ शु.	माघ १४	जन. २७	उ.भा.	१८/४८ बाद,
*माघ शु. ५ श.	माघ १५	जन. २८	उ.भा.	१६/५५ तक,
माघ शु. १० गु.	माघ २०	फर. २	रोहि.	८/४८ बाद,
माघ शु. ११ शु.	माघ २१	फर. ३	रोहि.	६/५८ तक,
माघ शु. ११ शु.	माघ २१	फर. ३	मृग.	११/१० से १६/१४ तक,
फाल्गु. कृ.१२ श.	फाल्गु. ६	फर. १८	उ.षा.	२३/१५ से २५/१८ तक,
*फाल्गु. शु. ३ शु.	फाल्गु.१२	फर. २४	उ.भा.	२८/०८ तक,

* तारांकित मुहूर्त्तों में केवल कलशचक्रशुद्धि नहीं है। अन्यथा ये निर्दोष हैं।

पुरातन-गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् २०११ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. कृ. १० बु.	वैशा. १४	अप्रै. २७	धनि.	१०/३८ तक,
वैशा. कृ. ११ गु.	वैशा. १५	अप्रै. २८	शत.	१३/३० तक,
वैशा. शु. २ गु.	वैशा. २२	मई ५	रोहि.	६/२७ से १८/०२ तक,
वैशा. शु. ३ शु.	वैशा. २३	मई ६	रोहि.	६/५३ तक,
वैशा. शु. ३ शु.	वैशा. २३	मई ६	मृग.	८/०५ से १६/०७ तक,
वैशा. शु. ६ चं.	वैशा. २६	मई ६	पुष्य	१०/२० से १४/२५ तक,
वैशा. शु. १० शु.	वैशा. ३०	मई १३	उ.फा.	६/०८ से १८/५२ तक,
ज्ये. कृ. १ बु.	ज्ये. ४	मई १८	अनु.	१५/२६ तक,
ज्ये. कृ. ४ श.	ज्ये. ७	मई २१	उ.षा.	१४/४६ बाद,
ज्ये. कृ. ६ चं.	ज्ये. ६	मई २३	धनि.	२२/४८ बाद,
ज्ये. कृ. ११ श.	ज्ये. १४	मई २८	रेव.	
ज्ये. शु. १ गु.	ज्ये. १६	जून २	रोहि.	१३/१८ तक,
ज्ये. शु. १ गु.	ज्ये. १६	जून २	मृग.	१४/३० से २४/४२ तक,
ज्ये. शु. २ शु.	ज्ये. २०	जून ३	मृग.	१४/१० तक,
ज्ये. शु. ५ चं.	ज्ये. २३	जून ६	पुष्य	१४/१५ तक,

पुरातन-गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् २०११-१२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. शु. ८ गु.	ज्ये. २६	जून ६	उ.फा.	१२/१६ से १८/३२ तक,
ज्ये. शु. १० श.	ज्ये. २८	जून ११	चित्रा	६/०१ से २४/१५ तक,
श्राव. कृ. ७ शु.	श्राव. ७	जुला. २२	रेव.	८/१० से २१/१२ तक,
श्राव. कृ. १२ बु.	श्राव. १२	जुला. २७	मृग.	७/१६ से १६/२२ तक,
श्राव. शु. ४ बु.	श्राव. १६	अग. ३	उ.फा.	१३/२२ से २१/०० तक,
श्राव. शु. ५ गु.	श्राव. २०	अग. ४	चित्रा	२०/१७ बाद,
श्राव. शु. ६ शु.	श्राव. २१	अग. ५	चित्रा	१७/२५ तक,
श्राव. शु. ६ शु.	श्राव. २१	अग. ५	स्वा.	१८/३७ से २६/४० तक,
श्राव. शु. १५ श.	श्राव. २६	अग. १३	धनि.	१८/०५ बाद,
कार्त्ति. कृ. १२ चं.	कार्त्ति. ८	अक्तू. २४	उ.फा.	२६/३२ तक,
कार्त्ति. शु. ७ बु.	कार्त्ति. १७	नवं. २	उ.षा.	६/५६ तक,
कार्त्ति. शु. १२ चं.	कार्त्ति. २२	नवं. ७	उ.भा.	२०/५६ तक,
कार्त्ति. शु. १२ चं.	कार्त्ति. २२	नवं. ७	रेव.	२२/०८ बाद,
मार्ग. कृ. २ श.	कार्त्ति. २७	नवं. १२	रोहि.	१२/०० बाद,
मार्ग. कृ. ११ चं.	मार्ग. ६	नवं. २१	उ.फा.	१२/१२ तक,
मार्ग. शु. ४ चं.	मार्ग. १३	नवं. २८	उ.षा.	२६/१६ बाद,
मार्ग. शु. ७ गु.	मार्ग. १६	दिसं. १	धनि.	२०/२३ तक,
मार्ग. शु. ७ गु.	मार्ग. १६	दिसं. १	शत.	२१/३५ से २६/३६ तक,
मार्ग. शु. ८ शु.	मार्ग. १७	दिसं. २	शत.	१५/२७ तक,
माघ कृ. ८ चं.	माघ ३	जन. १६	चित्रा	११/५५ तक,
माघ कृ. ८ चं.	माघ ३	जन. १६	स्वा.	२३/१४ से २५/३७ तक, (शुक्रपादवेधाभाव),
माघ कृ. १० बु.	माघ ५	जन. १८	अनु.	२१/३० बाद,
माघ कृ. ११ गु.	माघ ६	जन. १९	अनु.	१७/५८ तक,
माघ शु. २ बु.	माघ १२	जन. २५	शत.	१५/५६ बाद,
माघ शु. ३ गु.	माघ १३	जन. २६	शत.	१२/४२ तक,
माघ शु. ४ शु.	माघ १४	जन. २७	उ.भा.	१८/४८ बाद,
माघ शु. ५ श.	माघ १५	जन. २८	उ.भा.	१६/५५ तक,
माघ शु. १० गु.	माघ २०	फर. २	रोहि.	८/४८ बाद,

पुरातन-गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् २०१२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
माघ शु. ११ शु.	माघ २१	फर. ३	रोहि.	६/५८ तक,
माघ शु. ११ शु.	माघ २१	फर. ३	मृग.	११/१० से १६/१४ तक,
फाल्गु. कृ. १२ श.	फाल्गु. ६	फर. १८	उ.षा.	२३/१५ से २५/१८ तक,
फाल्गु. शु. २ गु.	फाल्गु.११	फर. २३	उ.भा.	२७/१० बाद,
फाल्गु. शु. ३ शु.	फाल्गु.१२	फर. २४	उ.भा.	२८/०८ तक,
फाल्गु. शु. ३ श.	फाल्गु.१३	फर. २५	रेव.	७/३६ तक,

नोट :- सरकारी या अन्य नौकरी वाले तथा दूसरे लोग भी ट्रांसफर आदि के कारण अक्सर किराये वाले पुराने मकानों में यदा-कदा प्रवेश करते रहते हैं। ऐसे लोगों के लिए ही ये पुरातन-गृहप्रवेश मुहूर्त्त हैं। इन मुहूर्त्तों में गुरु-शुक्र अस्त और अधिकमास का दोष नहीं माना जाता। सिंहस्थ गुरु का सिंहांशक भी यहां विचारा नहीं जाता, इसलिए इनका इन मुहूर्त्तों में विचार नहीं किया गया है। कलश-चक्र का विचार भी यहां नहीं किया जाता।

सर्व-देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०११-१२ ई.)

वैशा. शु. २ गु.	वैशा. २२	मई ५	रोहि.	६/२७ बाद,
वैशा. शु. ३ शु.	वैशा. २३	मई ६	मृग.	८/०५ बाद,
वैशा. शु. ६ चं.	वैशा. २६	मई ९	पुष्य	१०/२० से १०/४८ तक, तदनन्तर क्रान्तिसाम्य,
वैशा. शु. १० शु.	वैशा. ३०	मई १३	उ.फा.	६/०८ बाद,
ज्ये. कृ १ बु.	ज्ये. ४	मई १८	अनु.	
ज्ये. शु. १ गु.	ज्ये. १६	जून २	रोहि.	
ज्ये. शु. २ शु.	ज्ये. २०	जून ३	मृग.	
ज्ये. शु. ५ चं.	ज्ये. २३	जून ६	पुष्य	
आषा. कृ. ५ चं.	आषा. ६	जून २०	धनि.	७/२७ बाद,
माघ कृ. ८ चं.	माघ ३	जन. १६	चित्रा	११/५५ तक, (११/५५ बाद अपरिहार्य शनियुति),

सर्व-देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
माघ कृ. ११ गु.	माघ ६	जन. १९	अनु.	
माघ शु. ३ गु.	माघ १३	जन. २६	शत.	
माघ शु. ७ चं.	माघ १७	जन. ३०	अश्वि.	
माघ शु. १० गु.	माघ २०	फर. २	रोहि.	८/४८ बाद,
माघ शु. ११ शु.	माघ २१	फर. ३	रोहि.	६/५८ तक,
फाल्गु. शु. ३ शु.	फाल्गु.१२	फर. २४	उ.भा.	
चैत्र कृ. १ शु.	फाल्गु.२६	मार्च ९	उ.फा.	८/१० तक, तदनन्तर क्रान्तिसाम्य,
चैत्र कृ. ५ चं.	फाल्गु.२९	मार्च १२	स्वा.	८/३६ तक

तामसदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०११ ई.)

आषा. कृ. १० र.	आषा.१२	जून २६	अश्वि.	१०/५६ बाद,
आषा. शु. ७ गु.	आषा.२३	जुला. ७	उ.फा.	
आषा. शु. १० र.	आषा.२६	जुला.१०	स्वा.	१०/४० तक,
कार्त्ति. शु. १२ चं.	कार्त्ति.२२	नवं. ७	उ.भा.	
मार्ग. कृ. ३ र.	कार्त्ति.२८	नवं. १३	रोहि.	१०/५४ तक,
मार्ग. कृ. ३ चं.	कार्त्ति.२९	नवं. १४	मृग.	७/३६ से १२/५७ तक,
मार्ग. कृ. ११ चं.	मार्ग. ६	नवं. २१	उ.फा.	१२/१२ तक,
मार्ग. शु. ६ बु.	मार्ग. १५	नवं. ३०	श्रव.	
मार्ग. शु. ७ गु.	मार्ग. १६	दिसं. १	धनि.	

श्रीगणेश प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०११-१२ ई.)

ज्ये. कृ. ३ शु.	ज्ये. ६	मई २०		
आषा. कृ. ४ र.	आषा. ५	जुन १९		
मार्ग. कृ. ३ चं.	कार्त्ति.२९	नवं. १४		
फाल्गु. कृ. ४ श.	माघ २९	फर. ११		
चैत्र कृ. ४ र.	फाल्गु.२८	मार्च ११		

श्रीगौरी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०११-१२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ३ शु.	वैशा. २३	मई ६		
ज्ये. शु. ३ श.	ज्ये. २१	जून ४		
आषा. शु. ३ चं.	आषा.२०	जुला. ४		
मार्ग. शु. ३ र.	मार्ग. १२	नवं. २७		
माघ शु. ३ गु.	माघ १३	जन. २६		
फाल्गु. शु. ३ शु.	फाल्गु.१२	फर. २४		

श्रीदुर्गा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०११-१२ ई.)

ज्ये. शु. ९ शु.	ज्ये. २७	जून १०		
आषा. शु. ९ श.	आषा.२५	जुला. ९		
आषा. शु. १४ गु.	आषा.३०	जुला.१४	मूल	
मार्ग. शु. ९ श.	मार्ग. १८	दिसं. ३		
माघ शु. ९ बु.	माघ १९	फर. १		
फाल्गु. कृ. ११ शु.	फाल्गु. ५	फर. १७	मूल	

श्रीशिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०११-१२ ई.)

ज्ये. कृ. १४ मं.	ज्ये. १७	मई ३१		
ज्ये. शु. ३ श.	ज्ये. २१	जून ४	आर्द्रा	
आषा. कृ. १४ गु.	आषा.१६	जून ३०		
मार्ग. कृ. १४ गु.	मार्ग. ९	नवं. २४		
माघ कृ. १४ र.	माघ ९	जन. २२		
माघ शु. .१३ र.	माघ २३	फर. ५	आर्द्रा	
फाल्गु. कृ.१४ चं.	फाल्गु. ८	फर. २०		

दशावतार प्रतिष्ठा

श्रीराम, कृष्ण आदि देवताओं की मूर्त्ति-प्रतिष्ठा इन देवताओं की अपनी -अपनी अवतार-तिथियों (श्रीरामनवमी आदि) के दिन पूर्वाह्णकाल में बिना पंचांग-शुद्धि के भी की जा सकती है। अवतार की तिथि यदि गुरु-शुक्रास्तकाल में पड़े ,तब तो उस दिन मूर्त्ति-प्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिए।

... उस दिन मूर्ति-प्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिए।

विपणि मुहूर्त्त (सन् २०११-१२ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. २ गु.	वैशा. २२	मई ५	रोहि.	६/२७ से १८/०२ तक,
वैशा. शु. ३ शु.	वैशा. २३	मई ६	रोहि.	६/५३ तक,
वैशा. शु. ३ शु.	वैशा. २३	मई ६	मृग.	८/०५ से १६/०७ तक,
ज्ये. कृ. १ बु.	ज्ये. ४	मई १८	अनु.	१३/५६ से १५/२६ तक,
ज्ये. कृ. १२ र.	ज्ये. १५	मई २९	अश्वि.	६/३४ बाद,
ज्ये. शु. २ शु.	ज्ये. २०	जून ३	मृग.	१४/१० तक,
ज्ये. शु. ५ चं.	ज्ये. २३	जून ६	पुष्य	१४/१५ तक,
ज्ये. शु. १० श.	ज्ये. २८	जून ११	हस्त	७/४६ तक,
आषा. कृ. ९ श.	आषा. ११	जून २५	रेव.	६/१० से१३/०६ तक,
आषा. शु. ७ गु.	आषा. २३	जुला. ७	उ.फा.	१४/३७ तक,
कार्ति. कृ. १ गु.	आश्वि. २७	अक्तू.१३	अश्वि.	१०/०७ से २०/४८ तक,
कार्ति. कृ. १२ चं.	कार्ति. ८	अक्तू.२४	उ.फा.	
कार्ति. शु. २ शु.	कार्ति. १२	अक्तू.२८	अनु.	१५/५६ बाद,
कार्ति. शु. ३ श.	कार्ति. १३	अक्तू.२९	अनु.	१२/२६ तक,
कार्ति. शु. ७ बु.	कार्ति. १७	नवं. २	उ.षा.	६/५६ तक,
कार्ति. शु. १२ चं.	कार्ति.२२	नवं. ७	उ.भा.	२०/५६ तक,
मार्ग. कृ. २ श.	कार्ति.२७	नवं. १२	रोहि.	१२/०० बाद,
मार्ग. कृ. ३ र.	कार्ति.२८	नवं. १३	रोहि.	१०/५४ तक,
मार्ग. कृ. ३ र.	कार्ति.२८	नवं. १३	मृग.	१२/०६ से १८/५० तक,
मार्ग. शु. १० र.	मार्ग. १९	दिसं. ४	उ.भा.	
माघ शु. ५ श.	माघ १५	जन. २८	उ.भा.	१५/३० तक,
माघ शु. १० गु.	माघ २०	फर. २	रोहि.	८/४८ बाद,
फाल्गु. शु. ३ शु.	फाल्गु.१२	फर. २४	उ.भा.	
चैत्र कृ. १ शु.	फाल्गु.२६	मार्च ९	उ.फा.	१२/३० से १५/४० तक,
चैत्र कृ. २ श.	फाल्गु.२७	मार्च १०	हस्त	१३/१३ तक, (बुधपादवेधाभावे),

देवप्रतिष्ठा के विशेष मुहूर्त्तों के बारे में स्पष्टीकरण

श्री विष्णु, राम, कृष्ण, शिव, गणेश, गौरी आदि सात्त्विक देवता हैं, इसलिए इनकी प्रतिष्ठा यद्यपि उपरोक्त " सात्त्विक देव प्रतिष्ठा " वाले मुहूर्तों में हो सकती है, फिर भी मुहूर्तशास्त्रों में इनकी प्रतिष्ठा के लिए विशेष मुहूर्त्त-काल बताए गए हैं, जिनका निर्देश हमने यहां नीचे अलग से किया है। यहां यह समझ लेना चाहिए कि सात्त्विक देव-प्रतिष्ठा वाले मुहूर्त श्री विष्णु, राम, कृष्ण, गणेश, शिव, सरस्वती आदि सभी सत्त्वप्रधान प्रकृति वाले देवी--देवताओं के लिए समान-रूप से प्रयोग में लाये जा सकते हैं, जबकि श्री गणेश, दुर्गा, गौरी, शिव आदि देवी--देवताओं के लिए यहां पृथक् रूप से लिखे गए प्रतिष्ठामुहूर्त केवल इन्हीं के लिए हैं। सभी देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्णकाल में (मध्याह्न से पूर्व) ही की जाती है। ध्यान दें-- गौरी, गणेश, दुर्गा और शिव की प्रतिष्ठा के मुहूर्त के लिए शास्त्रों में क्रमशः शुक्ल तृतीया, कृष्ण चतुर्थी, शुक्ल नवमी और कृष्ण चतुर्दशी तिथियां शुभ मानी गई हैं, तदनुसार ही यहां इनके विशेष मुहूर्तों में केवल इन तिथियों का निर्देश किया गया है, नक्षत्रों का नहीं। हां, जहां कहीं इन तिथियों के समय कोई देवप्रतिष्ठा-मुहूर्त का नक्षत्र भी मिल गया है, वहां उस तिथि के साथ उसका भी निर्देश कर दिया गया है। शिव-प्रतिष्ठा के लिए आर्द्रा नक्षत्र भी शुभ माना जाता है, अतः यहां आर्द्रा नक्षत्र में भी शिवप्रतिष्ठा-मुहूर्त लगाए गए हैं । इन मुहूर्तों में भी गुरु-शुक्रास्तकाल तथा सिंहांशकस्थ सिंहगतगुरु को वर्जित किया जाता है।

अभिजित् मुहूर्त

स्थानीय दिनमानार्ध के घं. मि. को स्थानीय सूर्योदय-- काल में जोड़ने पर 'स्पष्ट दिनार्ध' होता है, दिनमान का 30वां भाग मुहूर्तार्ध कहलाता है। मुहूर्तार्ध को स्पष्ट दिनार्ध में घटाने और जोड़ने पर अभिजित् मुहूर्त का क्रमशः प्रारम्भ और समाप्तिकाल ज्ञात हो जाता है। इस काल में लगभग सभी दोषों को समाप्त कर डालने की अद्भुत शक्ति मानी गयी है। जब मुण्डन, अक्षरारम्भ आदि मुहूर्तों में शुद्ध लग्न न मिल रहा हो, तब अभिजित् मुहूर्त्त को प्रयोग में लाना चाहिए।

सर्वार्थसिद्धि योग (सं. २०६८ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
२०११ ई.	घं. मि.	२०११ ई.	घं. मि.	२०११ ई.	घं. मि.	२०११ई.	घं. मि.	२०११ ई.	घं. मि.	२०११ ई.	घं. मि.	२०११ ई.	घं. मि.	२०११ ई.	घं. मि.
(अप्रै. ५	सू. उ.	अप्रै. ५	१६ ५६)मं.	जून २६	सू. उ.	जून २६	१७ ०४	सितं. १३	७ ०२	सितं. १४	सू. उ.	(दिसं. ६	७ ५७	दिसं. ७	सू. उ.)मं.
अप्रै. ६	२२ ३०	अप्रै. ७	सू. उ.	जून २८	सू. उ.	जून २८	२१ ०६	सितं. १५	सू. उ.	सितं. १६	१५ ५१	(दिसं. १०	सू. उ.	दिसं. १०	१८ ३१)श.
अप्रै. १२	४ २६	अप्रै. १२	सू. उ.	जून २९	सू. उ.	जून ३०	सू. उ.	सितं. १६	सू. उ.	सितं. १६	२३ ५६	दिसं. १६	२२ २७	दिसं. १७	सू. उ.
अप्रै. १३	३ ४२	अप्रै. १३	सू. उ.	जुला. १	२३ ०१	जुला. २	सू. उ.	(सितं. १६	२३ ५६	सितं. २०	सू. उ.)चं.	दिसं. १८	सू. उ.	दिसं. १८	२० २८
अप्रै. १५	सू. उ.	अप्रै. १५	२१ ४१	जुला. ३	सू. उ.	जुला. ३	२१ ४४	सितं. २२	सू. उ.	सितं. २३	२ ४५	(दिसं. १८	२० २८	दिसं. १६	सू. उ.)र.
(अप्रै. १७	सू. उ.	अप्रै. १७	१५ ५०)र.	जुला. ६	१३ ११	जुला. १०	सू. उ.	(सितं. २३	२ ४५	सितं. २३	सू. उ.)गु.	दिसं. २२	१३ १२	दिसं. २३	सू. उ.
(अप्रै. २०	७ ५७	अप्रै. २१	सू. उ.)बु.	जुला. ११	१० ४३	जुला. १२	सू. उ.	सितं. २८	सू. उ.	सितं. २८	१३ ३८	दिसं. २५	सू. उ.	दिसं. २५	७ ४१
अप्रै. २१	सू. उ.	अप्रै. २१	६ १६	जुला. १६	६ २७	जुला. १७	सू. उ.	अक्तू. ३	३ १३	अक्तू. ३	सू. उ.	दिसं. २६	६ ३०	दिसं. २६	सू. उ.
अप्रै. २४	सू. उ.	अप्रै. २५	सू. उ.	जुला. २१	१६ २७	जुला. २२	सू. उ.	अक्तू. ११	सू. उ.	अक्तू. ११	१६ ००	दिसं. २७	५ ५१	दिसं. २७	सू. उ.
अप्रै. २५	७ १३	अप्रै. २६	सू. उ.	(जुला. २२	सू. उ.	जुला. २२	२२ २४)शु.	अक्तू. १३	सू. उ.	अक्तू. १३	२२ ००	सन् २०१२ ई.			
मई १	२३ ३०	मई २	सू. उ.	जुला. २६	सू. उ.	जुला. २६	५ ५२	(अक्तू. १६	३ ४६	अक्तू. १६	सू. उ.)श.	जन. १	सू. उ.	जन. १	१२ ४१
मई ४	४ २७	मई ५	सू. उ.	जुला. २७	सू. उ.	जुला. २८	सू. उ.	(अक्तू. १७	सू. उ.	अक्तू. १७	१९ ०६)चं.	(जन. ३	सू. उ.	जन. ३	१८ ४२)मं.
मई ९	१० २०	मई १०	सू. उ.	जुला. २९	७ ५५	जुला. ३०	सू. उ.	अक्तू. १७	१९ ०६	अक्तू. १८	सू. उ.	जन. ४	२१ ३८	जन. ५	सू. उ.
मई १०	१० ०४	मई ११	सू. उ.	जुला. ३१	सू. उ.	जुला. ३१	५ ५७	अक्तू. २०	सू. उ.	अक्तू. २०	१० ४६	जन. १०	५ १९	जन. १०	सू. उ.
मई १३	सू. उ.	मई १३	६ ०८	अग. ३	२२ १२	अग. ४	सू. उ.	(अक्तू. २०	१० ४६	अक्तू. २०	२० ४९)गु.	जन. ११	५ १५	जन. ११	सू. उ.
(मई १८	सू. उ.	मई १८	१६ ४१)बु.	अग. ६	सू. उ.	अग. ६	१७ १५	अक्तू. २०	२० ४९	अक्तू. २१	सू. उ.	जन. १३	सू. उ.	जन. १४	३ ०१
मई २२	सू. उ.	मई २२	१५ ३५	अग. ८	सू. उ.	अग. ८	१५ ३७	अक्तू. २४	६ २१	अक्तू. २४	सू. उ.	(जन. १५	सू. उ.	जन. १६	० ३५)र.
मई २३	सू. उ.	मई २३	१७ ०६	अग. १२	१६ ५०	अग. १३	१८ ०५	अक्तू. ३०	११ ५७	अक्तू. ३१	सू. उ.	(जन. १८	२० ३०	जन. १९	सू. उ.)बु.
(मई २८	३ ४३	मई २८	सू. उ.)शु.	अग. १७	० १४	अग. १७	सू. उ.	नवं. ६	१९ १३	नवं. ७	सू. उ.	जन. १९	सू. उ.	जन. १९	१९ १०
मई २९	६ ३४	मई ३०	सू. उ.	अग. १८	सू. उ.	अग. १९	सू. उ.	(नवं. ९	१ ०९	नवं. ९	सू. उ.)मं.	जन. २२	१६ ०१	जन. २३	सू. उ.
मई ३१	११ २२	जून १	सू. उ.	(अग. १९	सू. उ.	अग. १९	५ ५९)शु.	(नवं. १२	९ ४२	नवं. १३	सू. उ.)श.	जन. २३	१५ ३२	जन. २४	सू. उ.
जून १	सू. उ.	जून २	सू. उ.	अग. १९	५ ५९	अग. २०	सू. उ.	(नवं. १४	सू. उ.	नवं. १४	१४ ०९)चं.	जन. २९	२३ ५३	जन. ३०	सू. उ.
जून ५	१५ ५०	जून ६	१५ २७	अग. २२	१४ १९	अग. २३	सू. उ.	(नवं. १७	सू. उ.	नवं. १७	१७ २४)गु.	फर. १	सू. उ.	फर. २	सू. उ.
जून ७	सू. उ.	जून ७	१४ ४३	अग. २४	सू. उ.	अग. २४	१७ १८	नवं. २०	१५ १५	नवं. २१	सू. उ.	फर. ६	१४ १०	फर. ७	सू. उ.
जून १४	३ ४१	जून १४	सू. उ.	अग. २५	१७ ३६	अग. २६	१७ ०५	नवं. २५	३ १३	नवं. २५	सू. उ.	फर. ७	१३ ४७	फर. ८	सू. उ.
जून १९	० ४४	जून १९	सू. उ.	अग. ३१	६ २१	सितं. १	३ ४६	नवं. २७	सू. उ.	नवं. २७	२१ ००	फर. १०	सू. उ.	फर. १०	९ ५२
(जून २४	११ २८	जून २५	सू. उ.)शु.	सितं. ९	सू. उ.	सितं. १०	० २३	दिसं. ४	सू. उ.	दिसं. ५	४ ५५	फर. १५	सू. उ.	फर. १५	९ ३९

सर्वार्थसिद्धि योग
(भा. स्टै. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१२ ई.	घं. मि.	२०१२ ई.	घं. मि.
(फर. १५	६ ३६	फर. १६	० ५३)बु.
फर. १६	सू. उ.	फर. १६	२३ १६
फर. २०	सू. उ.	फर. २०	२३ ३६
(फर. २५	५ २०	फर. २५	सू. उ.)शु.
फर. २६	७ ५७	फर. २७	सू. उ.
फर. २८	१४ ०३	मार्च १	सू. उ.
मार्च ५	० ०१	मार्च ५	२३ ४६
मार्च ६	सू. उ.	मार्च ६	२२ ५०
मार्च १८	५ ०५	मार्च १८	सू. उ.

रवियोग (भा. स्टै. टा.)
(सन् २०११ ई.)

रवियोग (सन् २०११ ई.) (भा. स्टै. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०११ ई.	घं. मि.	२०११ ई.	घं. मि.
अप्रै. ६	२२ ३०	अप्रै. ८	० ४३
अप्रै. ९	२ ३२	अप्रै. १०	३ ४९
अप्रै. १२	४ २६	अप्रै. १४	२ १५
अप्रै. १४	१३ ००	अप्रै. १५	० १२
अप्रै. १६	१८ ५०	अप्रै. १७	१५ ५०
अप्रै. २३	५ ०९	अप्रै. २४	५ ४८
मई ६	८ ०५	मई ७	९ १९
मई ८	१० ०४	मई ९	१० २०
मई ११	९ १५	मई ११	२२ ५६
मई १२	७ ५५	मई १४	४ ००
मई १५	२३ ०८	मई १६	२० ४२
मई २२	१५ ३५	मई २३	१७ ०६
जून ४	१५ ४९	जून ५	१५ ५०
जून ९	१५ २७	जून ७	१४ ४३
जून १०	१० ४५	जून १२	७ १२
जून १४	३ ४१	जून १५	२ १३
जून २१	३ ३६	जून २२	५ ५३
जून २२	१६ ०६	जून २३	८ ३४
जुला. ३	२१ ४४	जुला. ४	२० ३५
जुला. ५	१९ १३	जुला. ६	१५ ३६
जुला. ६	१७ ४३	जुला. ७	१६ १०
जुला. ९	१३ ११	जुला. ११	१० ४३
जुला. १३	९ ०९	जुला. १४	८ ५०
जुला. २१	१९ २७	जुला. २२	२२ २४
अग. २	२ २०	अग. ३	० १५
अग. ३	१४ ०३	अग. ३	२२ १२
अग. ४	२० १७	अग. ५	१८ ३७
अग. ७	१६ १४	अग. ९	१५ २१
अग. ११	१५ ५८	अग. १२	१६ ५०
अग. २०	९ ००	अग. २१	११ ५१
अग. ३१	६ २१	अग. ३१	७ ४५
सितं. १	३ ४६	सितं. २	१ २५
सितं. २	२३ २९	सितं. ३	२२ ०१
सितं. ५	२० ४६	सितं. ७	२१ ४१
सितं. १०	० २३	सितं. ११	२ १७
सितं. १८	२१ ३९	सितं. १९	२३ ५९
सितं. ३०	८ ०१	अक्तू. १	५ ४८
अक्तू. २	४ १०	अक्तू. ३	३ १३
अक्तू. ५	३ २२	अक्तू. ७	६ ०२
अक्तू. ९	१० २९	अक्तू. १०	१३ ०९
अक्तू. ११	६ ०९	अक्तू. ११	१६ ००
अक्तू. १९	८ २८	अक्तू. १९	६ ५९
अक्तू. २९	१३ ४१	अक्तू. ३०	११ ५७
अक्तू. ३१	१० ५४	नवं. १	१० ३७
नवं. ३	१२ १८	नवं. ५	१६ ३०
नवं. ९	१ ०९	नवं. १०	४ ०८
नवं. १६	१६ ५३	नवं. १७	१७ २४
नवं. २७	२१ ००	नवं. २८	२० ०२
नवं. २९	१९ ४७	नवं. ३०	२० १८
दिसं. २	२३ ३३	दिसं. ६	७ ५७
दिसं. ८	१३ ४९	दिसं. ९	१६ २१
दिसं. १५	२२ ५१	दिसं. १६	१४ १३
दिसं. १६	२२ २७	दिसं. १७	२१ ३८
दिसं. २७	५ ५१	दिसं. २८	५ ५१
दिसं. २९	६ ३३	दिसं. २९	१६ २३
दिसं. ३०	७ ५९	दिसं. ३१	१० ०४
सन् २०१२ ई.			
२०१२ ई.	घं. मि.	२०१२ ई.	घं. मि.
जन. २	१५ ३९	जन. ४	२१ ३८
जन. ७	२ २१	जन. ८	३ ५४
जन. १५	१ ५१	जन. १६	० ३५
जन. २६	१७ ०५	जन. २७	१८ ४८
जन. २८	२१ ०७	जन. २९	२३ ५३
फ़र. १	५ ५९	फर. ३	११ १०
फर. ५	१३ ५३	फर. ६	१४ १०
फर. ६	२३ ५१	फर. ७	१३ ४७
फर. १३	४ ४१	फर. १४	३ १२
फर. २५	५ २०	फर. २६	७ ५७
फर. २७	१० ५५	फर. २८	१४ ०३
मार्च १	१९ ५०	मार्च ३	२३ २५
मार्च ४	१० ३९	मार्च ५	० ०१
मार्च ६	२२ ५०	मार्च ७	२१ १५
मार्च १३	७ ५८	मार्च १४	६ ३०

सिद्धियोग (भा. स्टै. टा.)
(सन् २०११ ई.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०११ ई.	घं. मि.	२०११ ई.	घं. मि.
अप्रै. १५	सू. उ.	अप्रै. १५	२१ ४१
अप्रै. २५	७ १३	अप्रै. २६	सू. उ.
मई ४	सू. उ.	मई ५	सू. उ.
मई १३	सू. उ.	मई १३	६ ०८
मई २३	सू. उ.	मई २३	१७ ०६
जून १	सू. उ.	जून १	१३ १०
अग. ६	सू. उ.	अग. ६	१७ १५
अग. १७	० १४	अग. १७	सू. उ.
अग. २५	१७ ३६	अग. २६	सू. उ.
सितं. १३	७ ०२	सितं. १४	सू. उ.
सितं. २२	सू. उ.	सितं. २३	२ ४५
अक्तू. ३	३ १३	अक्तू. ३	सू. उ.
अक्तू. ११	सू. उ.	अक्तू. ११	१६ ००
अक्तू. २०	सू. उ.	अक्तू.२०	१० ४६
अक्तू. ३०	११ ५७	अक्तू. ३१	सू. उ.
नवं. २७	सू. उ.	नवं. २७	२१ ००
दिसं. १६	२२ २७	दिसं. १७	सू. उ.
दिसं. २५	सू. उ.	दिसं. २५	७ ४१
दिसं. २७	५ ५१	दिसं. २७	सू. उ.

सिद्धियोग

(सनु २०१२ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१२ ई.	घं. मि.	२०१२ ई.	घं. मि.
जन. ४	२१ ३८	जन. ५	सू. उ.
जन. १३	सू. उ.	जन. १४	३ ०१
जन. २३	१५ ३२	जन. २४	सू. उ.
फर. १	सू. उ.	फर. २	सू. उ.
फर. १०	सू. उ.	फर. १०	६ ५२
फर. २०	सू. उ.	फर. २०	२३ ३६
फर. २६	सू. उ.	फर. २६	१७ ०६

द्विपुष्करयोग

(सनु २०११ ई.)(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
मई १५	१ ३७	मई १५	२ १२
मई २४	सू. उ.	मई २४	११ २८
ला. १७	१० २६	जुला. १७	१२ २६
तं. २०	सू. उ.	सितं. २०	६ ३५
तू. ८	सू. उ.	अक्तू. ८	८ ०५
वं. २२	११ ०८	नवं. २२	२१ ५१
सनु २०१२ ई.			
न. १६	० ३५	जन. १६	३ ३८
न. २४	१५ २६	जन. २५	सू. उ.
र. ४	सू. उ.	फर. ४	१२ ५३
ार्च १६	५ ४८	मार्च १६	सू. उ.

त्रिपुष्करयोग

(सनु २०११ ई.)(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०११ ई.	घं. मि.	२०११ ई.	घं. मि.
अप्रै. ११	४ २८	अप्रै. ११	५ ५२
अप्रै. १६	१० १२	अप्रै. २०	१ २८
अप्रै. २४	५ ४८	अप्रै. २४	१६ ४६
जून १३	५ २३	जून १३	सू. उ.
जून २८	सू. उ.	जून २८	१४ ०४
जुला. २	१३ २३	जुला. २	२२ ३५
अग. २१	११ ५१	अग. २१	१४ २५
अग. ३०	६ ०२	अग. ३१	१ ४२
सितं. ३	१३ ४५	सितं. ३	२२ ०१
अक्तू. २४	६ २१	अक्तू. २४	सू. उ.
नवं. १	१० ३७	नवं. २	सू. उ.
नवं. ६	१५ ४६	नवं. ६	१६ १३
नवं. १२	सू. उ.	नवं. १२	६ ४२
दिसं. २६	६ ३०	दिसं. २६	सू. उ.
दिसं. ३१	सू. उ.	दिसं. ३१	१० ०४
सनु २०१२ ई.			
फर. १४	सू. उ.	फर. १४	११ ३२
फर. १८	२३ १५	फर. १६	४ ३८
फर. २८	१५ ०४	फर. २६	सू. उ.
मार्च ४	२२ ३०	मार्च ५	० ०१

अमृतसिद्धियोग

(सनु २०११ ई.)(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०११ ई.	घं. मि.	२०११ ई.	घं. मि.
(अप्रै. ५	सू. उ.	अप्रै. ५	१६ ५६)मं.
(अप्रै. १७	सू. उ.	अप्रै. १७	१५ ५०)र.
(अप्रै. २०	७ ५७	अप्रै. २१	सू. उ.)बु.
(मई १८	सू. उ.	मई १८	१६ ४१)बु.
(मई २८	३ ४३	मई २८	सू. उ.)शु.
(जून २४	११ २८	जून २५	सू. उ.)शु.
(जुला. २२	सू. उ.	जुला. २२	२२ २४)शु.
(अग. १६	सू. उ.	अग. १६	५ ५६)शु.
(सितं. १६	२३ ५६	सितं. २०	सू. उ.)चं.
(सितं. २३	२ ४५	सितं. २३	सू. उ.)गु.
(अक्तू. १६	३ ४६	अक्तू. १६	सू. उ.)श.
(अक्तू. १७	सू. उ.	अक्तू. १७	१६ ०६)चं.
(अक्तू. २०	१० ४६	अक्तू. २०	२० ४६)गु.
(नवं. ६	१ ०६	नवं. ६	सू. उ.)मं.
(नवं. १२	६ ४२	नवं. १३	सू. उ.)श.
(नवं. १४	सू. उ.	नवं. १४	१४ ०६)चं.
(नवं. १७	सू. उ.	नवं. १७	१७ २४)गु.
(दिसं. ६	७ ५७	दिसं. ७	सू. उ.)मं.
(दिसं. १०	सू. उ.	दिसं. १०	१८ ३१)श.
(दिसं. १८	२० २८	दिसं. १६	सू. उ.)र.
सनु २०१२ ई.			
(जन. ३	सू. उ.	जन. ३	१८ ४२)मं.
(जन. १५	सू. उ.	जन. १६	० ३५)र.
(जन. १८	२० ३०	जन. १६	सू. उ.)बु.
(फर. १५	६ ३६	फर. १६	० ५३)बु.
(फर. २५	५ २०	फर. २५	सू. उ.)शु.

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।।

"अभिजित् प्रकाशन" की पुस्तकें कहां से खरीदें ?

"अभिजित् प्रकाशन", 59/6 (अभिजित्) P. O. पंचकूला (हरि.) द्वारा प्रकाशित प्रो. प्रियव्रत शर्मा की पुस्तकें भारतीय ज्योतिष जगत् की अपूर्व प्रकाशन मानी गई हैं। इनकी लोकप्रियता देखकर कुछ धूर्त बुक्सेलर्स इनकी नकली प्रतियां बेचते हुए पकड़े गए हैं। ऐसे किसी भी बुक्सेलर से खरीदी गई अवैध पुस्तक की अपूर्णता, मुद्रण आदि सम्बन्धी किसी भी प्रकार की अशुद्धि अथवा अन्य किसी भी त्रुटि के लिए हम कदापि उत्तरदायी नहीं हैं। इन पुस्तकों को बेचने का अधिकार दिल्ली या अन्य किसी भी नगर के किसी भी बुक्सेलर को हमने बिल्कुल नहीं दिया है। इन पुस्तकों को प्राप्त करने के लिए ग्राहक केवल सीधा हमसे ['अभिजित् प्रकाशन', 59/6 (अभिजित्) P. O. पंचकूला (हरियाणा) से] ही सम्पर्क करें। अवैधरूप से इन प्रकाशनों का विक्रय करने वाले बुक्सेलर्स के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई करने के लिए हम बाधित हैं। हमारी पुस्तकें बेचने वाले ऐसे किसी भी बुक्सेलर की सूचना देने वाले महानुभाव के हम आभारी होंगे।

–प्रियव्रत शर्मा

श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग (सं. 2068 वि.) का

कालसर्पयोग विशेषांक

लेखक एवम् सम्पादक – प्रियव्रत शर्मा

इस विशेषांक में पढ़िए–

सं. 2069 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग का चिरप्रतीक्षित विशेषांक

आयुसाधन विशेषांक

हमारे पाठक वर्षों से इस विशेषांक की व्याकुलता से प्रतीक्षा कर रहे थे। स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण इसका प्रकाशन न चाहते हुए भी आगे–आगे सरकता गया। अब उचित स्वास्थ्यलाभ होने पर यह विशेषांक अपने उत्सुक पाठकों को समर्पित करने का मुझ में साहस आया है। विश्वास दिलाता हूँ– आयुसाधन के सभी प्रकारों का विस्तृत, विशद एवम् सरल विवेचन इस विशेषांक में होगा।

स्थानावकाश होने पर आयुसाधन के अलावा पूर्वप्रतिज्ञात अन्य नाड़ी–दोष, मृत्युबाणादि से सम्बद्ध शोधलेख भी यहां देने का प्रयास होगा।

– प्रियव्रत शर्मा

******

प्रो. प्रियव्रत शर्मा की एक और अद्‌भुत कृति

ग्रहोदयास्तनिर्णय

सूर्य, चन्द्र आदि सभी ग्रहों के सूक्ष्म दैनिक उदयास्तकाल, चन्द्रदर्शन की तारीखें तथा मंगल आदि के लोप–दर्शन की तारीखें ज्ञात करने की सरलातिसरल प्रक्रिया इस पुस्तक में आप पाएंगे। प्राचीन एवम् नवीन ज्योतिर्गणित-ग्रन्थों में उपलब्ध ग्रहों के दैनिक उदयास्त का काल तथा लोप–दर्शन का दिन जानने की जटिल गणितप्रक्रियाओं को लेखक ने स्वनिर्मित मौलिक सारणियों तथा शैली द्वारा आश्चर्यजनकरूप में सुबोध, सरल बना दिया है। अनेकों उदाहरणों द्वारा सभी गणितप्रक्रियाओं को पूरी तरह स्पष्ट किया गया है।

0° से 62° तक के प्रत्येक अक्षांश का दैनिक सूक्ष्म सूर्योदयास्तकाल 45 पृष्ठों की एक विशाल सारणी में दिया गया है।

गुरु और शुक्र के उदयास्त (लोप–दर्शन) की सन् 2001 से 3000 ई. तक के (एक हज़ार वर्षों के) लिए वेधसिद्ध सूक्ष्म, शुद्ध तारीखें इस पुस्तक की अनुपम विशेषता है। किस वर्ष में किस भारतीय अक्षांश पर गुरु का लोप–दर्शन, शुक्र का पश्चिमलोप– पूर्वदर्शन या पूर्वलोप–पश्चिमदर्शन किस तारीख को होगा; यह पुस्तक में दी गई विलक्षण सारणी पर दृष्टि डालते ही आप विद्युद्‌गति से जान लेंगे। इसे अतिशयोक्ति न समझें, यह बिल्कुल सच है। लेखक की प्रतिज्ञा है– ग्रहों के उदयास्त, लोप–दर्शन पर उनका यह प्रकाशन अपनी ही तरह का है।

पुस्तक जनवरी, 2011 ई. तक प्रकाशित हो जाएगी, प्रतीक्षा कीजिए।

मूल्य Rs. 250/– + डाकव्यय Rs. 50/–

सम्पर्कसूत्र– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, 'अभिजित् प्रकाशन' कोठी नं. 59, सैक्टर 6, P.O. पंचकूला (हरियाणा)– 134 109. Phone: 0172-2565303

समस्याएं और समाधान

लेखकः– प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्) , पंचकूला–134 109

फलित एवं गणित (सिद्धांत) ज्योतिष से सम्बद्ध अपनी समस्याएं मुझे भेजिए। आवश्यक समझने पर डाक से उत्तर देने का भी मेरा पूरा प्रयास रहता है। लेकिन इसके लिए कृपया जवाबी पत्र न डालिए। यदि मुझे आपकी समस्या का उत्तर पत्रद्वारा देना होगा, मैं अपने व्यय पर ही दे दूंगा। मुझे प्रतिदिन अनेक पाठकों की समस्याएं पत्रों द्वारा प्राप्त होती हैं। सीमित समय आदि के कारण मैं प्रत्येक पाठक को पत्रद्वारा समस्याओं का समाधान भेजने के लिए किसी भी तरह बाधित नहीं होना चाहता ।

ध्यान दें– मैं ज्योतिष का व्यवसाय नहीं करता हूँ। अतः अपनी ज्योतिषसम्बन्धी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए मुझे कृपया पत्र न लिखें, और न ही इसके लिए मुझे कोई फीस वगैरह भेजिए। इस सम्बन्ध में मैं किसी से मिलता भी नहीं हूँ। कृपया कर्मकाण्डसम्बन्धी समस्याएं मुझे मत भेजिए। यह मेरा विषय नहीं है।

–प्रियव्रत शर्मा

यहां इन समस्याओं के समाधान पढ़िए !

- जन्मकुण्डली और वर्षकुण्डली के द्वादशभावों में ग्रहों की स्थिति का फल फलितग्रन्थों में भिन्न–भिन्न क्यों ?
- स्त्रीजातकप्रकरण में दिया गया ग्रहों का द्वादशभावस्थितिफल पुरुषजातक से भिन्न क्यों ?
- 'बुधादित्य योग' राजयोगकारक कैसे, जबकि एकत्र स्थित दोनों ग्रह तात्कालिक शत्रु होते हैं, बुध यहां अस्त भी होता है ?
- "अब्दायनर्तु–मासोत्त्था......." पद्य में मासदोष से क्या अभिप्राय है ?
- "केन्द्रे कोणे जीव आये रवौ वा............." श्लोक के 'सर्वे दोषाः नाशमायान्ति' में निर्दिष्ट दोष कौन–कौन से हैं ?
- आपके 'व्रत–पर्व–विवेक' में आगामी 50 वर्ष की चन्द्रदर्शन की तारीखें वार्षिक 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में दी गई चन्द्रदर्शन की तारीखों से कभी–कभी भिन्न क्यों होती हैं ?
- सं. 2066 वि. के 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में गुरु का परमनीचांश 4 से 5 अंश क्यों माना है, जबकि यह नीचांश मकर के प्रारंभिक 5 अंश तक होता है ?
- आश्विन कृष्ण त्रयोदशी वाले 'गजच्छाया योग' की 'व्रत–पर्व–विवेक' में चर्चा क्यों नहीं ?

- चैत्र कृष्ण त्रयोदशी के दिन घटित होने वाले वारुणी, महावारुणी, महा–महावारुणी योगों के निर्णायक तत्त्वों की व्यवस्था को क्या एक–दूसरे योग के तत्त्वों से बदला जा सकता है, इन योगों का माहात्म्य केवल दिन में ही क्यों माना गया ?
- फाल्गुन शुक्ल द्वादशी को धनुःस्थ गुरु आदि योगों के समय घटित होने वाले 'गोविन्दद्वादशी योग' की पंचांगकार उपेक्षा क्यों करते हैं ?
- 'गौतमी तन्त्रोक्त' 'श्रीकृष्णजयन्ती' योग का आप विचार क्यों नहीं करते ?
- 'गुर्वादित्य योग' (गुरु और आदित्य के योगकाल) में पंचांगकार विवाहादि शुभकृत्य क्यों वर्जित नहीं करते, जबकि मुहूर्त्तशास्त्रों में इस काल को शुभकृत्यों के लिए निषिद्ध लिखा है ?
- मघा और मूल के प्रथम तथा रेवती के अन्तिम चरण को मंगलकृत्यों में पंचांगकार वर्जित क्यों नहीं करते, जबकि ये 'गण्डान्तकाल ' हैं ?
- एक शास्त्रवाक्य में सूर्यादि ग्रहों को विभिन्न ऋतुओं में बली बतलाया गया है। इस बल की मात्रा (प्रतिशतमान) कैसे ज्ञात करें, षड्बलों में यह बल किस वर्ग में रखा जाए ?
- 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' के 'मुहूर्त्तविशेषांक' में प्रकाशित 'कलशचक्र–शुद्धि कोष्ठक' में गृहप्रवेश के लिए वर्जित नक्षत्रों का समावेश क्यों ?
- सं. 2066 वि. के 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में सूर्योदयव्यापी आश्विनकृष्ण द्वादशी बुधवार को द्वादशी का श्राद्ध न लिखकर, उसे पहले दिन मंगलवार को क्यों लिखा ?
- क्या मूल और आश्लेषा के चारों चरण क्रमशः श्वशुर और सास के लिए अनिष्टकारक होते हैं ?
- क्या बलवान् शनि शुभ और निर्बल अशुभ माना गया है ?
- क्या समानमानात्मक भावसाधनार्थ साम्पातिक काल से साधित लग्न का प्रयोग किया जा सकता है ?
- गुरु का वक्रताकाल क्या शुभकृत्यों में वर्जित है ?
- 'नामकरण' में 'चन्द्रबल' किसका देखना चाहिए ?
- क्या 'होलाष्टक' में नक्षत्रशान्ति कर सकते हैं ?
- क्या जन्मलग्न से द्वादशलग्न में विवाह किया जा सकता है ?
- तिथिक्षय के निषिद्धकाल में आप विवाहमुहूर्त्त क्यों लगाते हैं ?
- क्या मिलान न होने पर कन्या का नाम बदलकर विवाह किया जा सकता है ?
- 'वास्तुपुरुष' धरा पर अधोमुख पड़ा है या ऊर्ध्वमुख ?'

- ❖ गृहारम्भ में शिलान्यास किस उपदिशा में किया जाए ?
- ❖ फलित ज्योतिषोक्त उच्च–नीच खगोलीय उच्च–नीचों से मेल क्यों नहीं खाते ?
- ❖ 'चन्द्रषष्ठी व्रत' भाद्रपद कृष्ण षष्ठी को होना चाहिए या आश्विन कृष्ण षष्ठी को ?
- ❖ क्या ज्येष्ठा और विशाखा के चारों चरण क्रमशः पतिज्येष्ठ, ज्येष्ठसाले तथा देवर और छोटे साले के लिए अशुभ होते हैं ?
- ❖ शुभकृत्यों में वर्ज्य शोककालावधि का निर्धारण कैसे करें ?
- ❖ वर/कन्या में से एक जन्मकुण्डली से और दूसरा चन्द्रकुण्डली से मंगली हो तो क्या मंगलीदोष का परिहार माना जाए ?
- ❖ सं. 2067 वि. के 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में द्वि. वैशाख शुक्ल तृतीया, रविवार को 'उपनयनमुहूर्त्त' लगाया गया है, क्या यह ठीक है ?
- ❖ तारीख 9–9–09 को शनि के कन्याराशि में प्रवेश को कुछ ज्योतिषियों ने विशेष महत्त्वशाली बतलाया– ऐसा क्यों ?
- ❖ वाराणसी के एक प्रसिद्ध पंचांग के ग्रहभोगांशों एवं तिथ्यादि के समाप्तिकालों से 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' के ग्रहभोगांशों एवं तिथ्यादि के समाप्तिकालों में भारी अन्तर मैंने पाया है– किसे ठीक मानें ?
- ❖ मीन–मेषस्थ आदि सायन सूर्य के काल को वसन्त आदि ऋतुएं माना जाए या मेष–वृषस्थ आदि सायन सूर्य के काल को ?

*****

समस्या (i) किसी भी कुण्डली के 12 भावों में से किसी भावविशेष पर किसी ग्रहविशेष का प्रभाव, उस भाव की राशि और अन्य ग्रहों की उस ग्रहविशेष से युति तथा उस भाव पर दृष्टि आदि पर निर्भर करता है, ऐसा लगभग सभी ज्योतिषाचार्यों का मत है। कहीं भी कुण्डली (जन्मकुण्डली, वर्षकुण्डली, ग्रह–गोचरकुण्डली, पुरुषजातककुण्डली या स्त्रीजातककुण्डली) के अनुसार ग्रहविशेष का प्रभाव भावविशेष पर बदलते नहीं पाया।

आपके 'श्रीमार्तण्ड पंचांग' संवत् 2065 (सन् 2008–09 ई.) पृष्ठ 81, 82 और 223 पर कुण्डली का प्रकार बदलने से किसी ग्रहविशेष का भावविशेष पर प्रभाव बदला हुआ पाया गया। जैसे कि– यदि जन्मकुण्डली में एक ग्रहविशेष का प्रभाव एक भावविशेष पर अच्छा लिखा हुआ है तो वर्षकुण्डली में उसी ग्रह का उसी भाव पर प्रभाव बुरा। पुरुष और स्त्रीजातक कुण्डलियों में भी यही विरोधाभास देखने को मिला– ऐसा क्यों ?

(ii) किसी भी भाव या राशि में बुध और सूर्य की युति 'बुध–आदित्य' राजयोग बनाती है, परन्तु ऐसा भी कहा जाता है कि– सूर्य के साथ जो भी ग्रह पड़ जाता है, वह अस्त और निर्बल हो जाता है, फिर ऐसा क्यों ? अस्त और निर्बल ग्रह राजयोगकारक कैसे ? तात्कालिक मैत्री सिद्धान्तानुसार भी साथ–साथ पड़े ग्रह परस्पर तात्कालिक शत्रु हो जाते हैं– यह भी यहां विरोध है।

इसका समाधान चाहता हूं।

श्री के.सी. गुप्ता,
मॉडल टाऊन, कुराली (पं.)।

समाधान– (i) जन्मकुण्डली के आधार पर बतलाया जाने वाला फलादेश **जातक** और वर्षफल के आधार पर बतलाया जाने वाला फलादेश **ताजिक** कहलाता है। दोनों फलादेश–शाखाएं विभिन्न मूल (Origin) की हैं। जातक भारतीय और ताजिक मुस्लिम है। दोनों में अनेकत्र भारी असमन्वय है। यवनों ने फलकथन की अनेक ऐसी विधाएं स्वतन्त्ररूप से आविष्कृत/कल्पित की हैं, जिनका हमारी जातकीय विधाओं से भारी असामंजस्य स्पष्टतः लक्षित होता है। वर्षप्रवेशफल यावन दैवज्ञों का आविष्कार है। इस पद्धति से निर्णीत वर्षगत शुभाशुभफल हमारी दशान्तर्दशादि–द्वारा निर्णीत फल से मेल नहीं खाता। **'ताजिक नीलकंठी'** (ताजिक ज्योतिष पर संस्कृत में उपलब्ध प्रचलित पुस्तक) में अनेक ऐसे ग्रहस्थिति आदि से सम्बद्ध योगायोग पाए जाते हैं, जिनको आधार मानकर आदिष्ट फल का हमारे **बृहज्जातक** आदि जातक ग्रन्थों के फलादेश से लगभग सर्वत्र दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। **इत्थशाल आदि योगों** एवम् **पचास प्रकार के सहमों** तथा **वज्र–मूसल आदि नाभस योगों** द्वारा निर्धारित फल इसके स्पष्ट प्रमाण हैं।

ध्यान रहे– फलादेश में यह विरोध केवल इन उपरोक्त भारतीय–अभारतीय सम्प्रदायों में ही नहीं, अपितु फलादेशकथन की हमारी अपनी भारतीय जातक की विभिन्न शाखाओं में भी ऐसा विरोध उपलब्ध है। **लघुपाराशरी, जैमिनिसूत्र और अष्टकवर्ग, गोचर** आदि अनेक फलकथन की भारतीय पद्धतियों में अक्षम्य वैमत्य दिखाई पड़ता है। ये सभी पद्धतियां विभिन्न दैवज्ञचिन्तकों द्वारा अपने–अपने स्वतन्त्र चिन्तनों (जिनका आधार स्पष्ट नहीं है) पर आधारित हैं। दक्षिण भारत में **नाड़ी ज्योतिष** भी एक पर्याप्त प्रचलित फलकथन का प्रकार है, जिसका आधार जातकीय आधार से दूर का भी सम्बन्ध नहीं रखता। यही नहीं पाश्चात्त्य ज्योतिष, जो सायन गणना पर आधारित है और हमारी परम्परागत निरयण गणनापद्धति– दोनों द्वारा प्रतिपादित फलादेशों में तो ज़मीन–आसमान का अन्तर रहता है।

कहने का अभिप्राय यह है कि– फलितज्योतिष के विभिन्न सम्प्रदायों में ऐकमत्य का स्पष्ट अभाव है, जिसके कारण फलितज्योतिष को आस्थापूर्वक पढ़ने में प्रवृत्त व्यक्ति को भारी निराशा हाथ लगती है।

हमारे सभी जातक-ग्रन्थों में स्त्री एवम् पुरुष– दोनों जातकों का सामान्य (Common) फलादेश विस्तार से वर्णित है। वहां जातककारों नें स्पष्ट लिखा है– ये योगायोगफल स्त्री–पुरुष दोनों जातकों के लिए समान हैं। **पुनरपि**, इन सभी जातककारों ने अपने जातकफल–ग्रन्थों में स्त्री की जन्मकालिक ग्रहस्थिति आदि के आधार पर **स्त्रीजातकों का फलादेश पृथक् से 'स्त्री–जातकाध्याय'** में भी दिया है। इस फलादेश के बारे में उनका कहना है कि– **इस अध्याय में निर्दिष्ट वह फल जो स्त्रियों पर ही घटित** हो सकता है, केवल स्त्रियों के लिए है और जो पुरुष जातक पर घटित होने योग्य है, उसे पुरुष के लिए समझना चाहिए–

"यद्यत् पुंप्रसवे क्षमं तदखिलं स्त्रीणां प्रिये वा वदेत्।" –*(फलदीपिका)*

वैसे, इस अध्याय में दिए गए फलों में शायद ही कोई फल ऐसा हो जो पुरुषजातक पर लागू न हो सके– यह इसे पढ़ने से स्पष्ट है। **भट्टोत्पल** ने तो **'बृहज्जातक'** के स्त्रीजातकाध्याय की व्याख्या में स्पष्ट लिखा है कि– इस अध्याय के सभी फल स्त्री और पुरुष– दोनों पर समानरूप से लागू होते हैं।

भारत के सभी पंचांगकार स्त्रीजातक के ग्रहभावफलों का निर्देशक कोष्ठक परम्परया अपने पंचांगों में देते चले आ रहे हैं। इसी परम्परा के अनुसार ही **'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग'** में भी इसे दिया गया है।

(ii) 'राजा लोगों का जन्म विशेष ग्रहस्थितियों में हुआ करता है'– इस धारणा के आधार पर दैवज्ञों ने फलितसिद्धान्तों के अनुसार ऐसी ग्रहस्थितियों की कल्पना की, जो जातक को राजा जैसी उच्चस्थिति में ला सकती हैं। उनमें से एक ग्रहस्थिति 'तीन या इससे अधिक ग्रहों की उच्च में स्थिति' को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है–

" वक्रार्कजार्कगुरुभिः सकलैस्त्रिभिः वा स्वोच्चेषु षोडश नृपाः ....।"– (*बृहज्जातक*)

क्योंकि, फलितशास्त्रानुसार उच्चस्थ ग्रह परम उत्कृष्ट फल देता है, अतः तद्विपरीत नीचस्थ ग्रह को राजयोग का विनाशक माना गया है। लेकिन देखा गया है कि– जिस सामान्य ग्रहस्थिति में साधारण जन जन्म लेता है, वैसी ग्रहस्थिति में राजकुमार भी पैदा होते पाए जाते हैं। ऐसी साधारण ग्रहस्थितियों में भी राजयोग सिद्ध करने के लिए दैवज्ञों ने भगीरथप्रयत्न किया है और सामान्यतया सुलभ अनेक ग्रहस्थितियों को भी राजयोगकारक प्रमाणित करने के लिए बहुत बुद्धिव्यायाम इन लोगों को करना पड़ा। जिसका विवरण **'मानसागरी', 'जातकपारिजात'** आदि के राजयोगाध्याय में मिलता है। वहां हम देखते हैं कि– अत्यन्त सामान्य ग्रहस्थितियों को भी राजयोग सिद्ध करने के लिए इन दैवज्ञों ने बड़ी अद्‌भुत निर्मूल कल्पनाएं की हैं। नीचभंगयोग जैसी आधारहीन बलात्कृत कल्पनाओं द्वारा नीचस्थ ग्रह वाली कुण्डली में भी राजयोग सिद्ध करने का इनका प्रयास इसका एक उदाहरण है। ऐसी ही अनेक निर्मूल कल्पनाओं में से एक कल्पना **'बुधादित्य– योग'** है। क्योंकि, बुध बुद्धि का प्रतीक ग्रह है और आदित्य तेजस्विता का और राजा में ये दोनों गुण अपेक्षित हैं। अतः इस योग को, जो अत्यन्त आसानी से वर्ष में चार–पांच मास की अवधि में सुलभ है, राजकारकयोग कह डाला। इससे तथाकथित राजयोगरहितकाल में भी उत्पन्न अनेक राजकुमारों को राजयोगकाल–उत्पन्न सिद्ध करने में उन्हें पर्याप्त सुविधा हो गई।

सारांश यह है– इस शास्त्र के स्वाध्यायार्थ प्रवृत्त जिज्ञासु को इस शास्त्र की प्रामाणिकता के सम्बन्ध में किसी प्रकार से पूर्वाग्रह में लिप्त नहीं होना चाहिए, तभी वह इस **'रहस्यमय'** शास्त्र की वास्तविकता समझ सकेगा।

समस्या (i) ***'मुहूर्तचिन्तामणि'*** **के विवाहप्रकरणगत श्लोक ''अब्दायनर्तुतिथिमासभपक्ष दग्ध............'' में मासदोष से क्या आशय है ?**

(ii) ***'मुहूर्तचिन्तामणि'*** **के ही विवाहप्रकरण के श्लोक– ''केन्द्रे कोणे जीव आये रवौ वा लग्ने चन्द्रे वाऽपि वर्गोत्तमे वा सर्वे दोषाः नाशमायान्ति चन्द्रे लाभे तद्वद्‌दुर्मुहूर्तांश–दोषः।।'' में समस्त दोषों के नाश से क्या आशय है ? क्या केन्द्र–त्रिकोणगत शुभग्रह विवाहलग्न के अन्य सभी दोषों को समाप्त कर देते हैं ?**

(iii) **आपकी पुस्तक 'व्रत–पर्व–विवेक' में चन्द्रदर्शन की तारीखें दी गई हैं, लेकिन 'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' में दिए गए चन्द्रदर्शन से इनका अन्तर क्यों रहता है ? चन्द्रदर्शन प्रतिपदा में होगा या नहीं; यह सूक्ष्मरूप से किस प्रकार ज्ञात किया जा सकता है ?**

(iv) **वि. सं. 2066 के 'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' में गुरु का परमनीचांश मकर राशि के 4 से 5 अंश माना है, जबकि '' नीचे नीचांशकः त्याज्यः......'' के अनुसार गुरु मकर के 0 से 3 अंश 20 कला तक नीचनवांश में होता है, जबकि गुरु का नीचांश 5 अंश तक है, फिर भी यहां 4 से 5 अंश तक ही त्याज्य क्यों लिखा गया है ?**

(v) **वि. सं. 2066 में 2 और 3 मई, 2009 ई. को राहु अभिजित् नक्षत्र में था, फिर भी उक्त दिनों में विवाहनक्षत्र मघा को राहुवेध से दूषित क्यों माना है ?**

श्री मुकेश कुमार जैन,
जैन साहित्य सदन, हिण्डौन सिटी (राज.)।

समाधान–(i) यहां प्रयुक्त 'मास' शब्द किस प्रकार के मास के लिए है– यह स्पष्ट नहीं है। 'पीयूषधाराकार' ने भी इस श्लोक की व्याख्या में इसे स्पष्ट नहीं किया है। उन्होंनें यहां अब्द, अयन, ऋतु, आदि प्रत्येक शब्द की स्पष्ट व्याख्या की है, लेकिन इस 'मास' शब्द की व्याख्या करने से वे कतरा गए। स्पष्ट है, वे भी इसका वास्तव अर्थ निर्णीत नहीं कर पाए। इस 'मास' शब्द से अधिकमास, क्षयमास या सौर पौष व सौर चैत्र तो कदापि नहीं लिए जा सकते, क्योंकि इन्हें अपरिहार्य दोषकारक माना गया है। हां,

आचार्य का यहां मास से अभिप्राय जन्ममास हो सकता है, जिसका अर्थ होगा कि मंगलाभिलाषी के मंगलकृत्य में वर्ज्य बतलाया गया जन्ममास लग्न के समय त्रिकोण–केन्द्र में स्थित गुरु–शुक्र–बुध से ग्राह्य माना जाए।

(ii) विवाहकालिक अष्टमस्थ भौम, लग्नषष्ठाष्टमस्थ चन्द्र, षष्ठाष्टमस्थ शुक्र एवम् लग्नेश, कर्त्तरी, क्रान्तिसाम्य, भद्रा, मृत्युबाण, व्यतीपात, वैधृति आदि अशुभयोग, वेध, क्रूरयुति, अधिकमास, सौर पौष–चैत्र मास, क्षीणचन्द्र, ग्रहवेध, गुरु–शुक्रास्त–वार्धक्य–बाल्यकाल आदि प्रमुख दोषों का विचार तथा उनके सम्भव परिहारों का निर्देश तो मुहूर्त्तशास्त्रियों ने विशेषरूपेण पृथक् से किया है, अतः इन महादोषों के परिहार के लिए गुरु–शुक्र–बुध की केन्द्र–त्रिकोण–स्थिति आदि, जिनका निर्देश इस पद्य में किया गया है, को प्रयोग में नहीं लाया जा सकता। इस पद्योक्त परिहारक ग्रहस्थिति आदि द्वारा या तो उन दोषों का ही परिहार शास्त्रकारों को अभिप्रेत है, जिनका इस पद्य में स्पष्ट निर्देश है (**जैसे**– क्षयसंवत्सर, तिथिक्षय–वृद्धि–रिक्ता, दक्षिणायन आदि) या उन दोषों का जो इन उपरोक्त लग्नदूषक महादोषों से भिन्न हैं, यानी जिन्हें शुद्धलग्न–निर्धारण की प्रधानप्रक्रिया में चर्चित नहीं किया गया है और जिन्हें मुहूर्त्तशास्त्रियों ने शुभकृत्यनाशक बतलाया है। ऐसे ये दोष संख्या में पर्याप्त हैं। **इनमें से कुछ ये हैं–**

तिथि–नक्षत्र–वारों की विषघटियां, पक्षरन्ध्रतिथियां, क्रूरवार, शून्यतिथि–नक्षत्र–राशि, पंगु–अन्ध–काण–बधिर लग्न, तिथिक्षय–वृद्धि, तिथि–वार–नक्षत्रजन्य अशुभयोग (यमघंट, क्रकच, संवर्त आदि), दिव्य–भौम–आंतरिक्ष उत्पात (धूम्रकेतुदर्शन, उल्कापात, गन्धर्वनगर–दर्शन, भूकम्प, वज्रपात आदि) आदि–आदि।

ध्यान रहे– जिस विवाहादि लग्नकाल में गुरु–शुक्र–बुध में से किसी एक की भी स्थिति नहीं होती अथवा एकादश में लग्नेश, सूर्य या चन्द्र नहीं होता, वह लग्न इसीलिए निर्बल माना जाता है, क्योंकि उपरोक्त में से तिथि–नक्षत्र–वार, विषघटी आदि बीसों शुभनाशक कुयोग (दोष) वहां अपरिहृत रहते हैं।

(iii) **'व्रतपर्व–विवेक'** में दी गई चन्द्रदर्शन की तारीखें मध्यममानेन निर्णीत की गई हैं। इसका निर्देश इसी पुस्तक में पृष्ठ 151 पर किया गया है। **ध्यान रहे**– यहां दी गईं इन तारीखों को विश्व के अनेक राष्ट्रों में चन्द्रदर्शन अवश्य होगा। किस अक्षांश पर चन्द्रदर्शन यथार्थतः किस दिन होगा– इसके निर्धारण के लिए एक विशेष गणितप्रक्रिया है, जिसके लिए मेरी **"ग्रहोदयास्त-निर्णय"** पुस्तक देखिए, जिसका विज्ञापन इसी पञ्चांग में अन्यत्र दिया गया है।

(iv) **ध्यान दें**– गुरु का परमनीचांश मकर का केवल पञ्चमांश है, मकर के प्रथम पांच अंश नहीं। **' बृहज्जातक'** के **"अज–वृषभ–मृगांगना–कुलीरा........."** पद्य में निर्दिष्ट उच्चांश तत्तद् उच्च राशियों के दशम–तृतीय आदि अंश हैं। ये इन उच्च राशियों के प्रथम (प्रारम्भिक)दस, तीन आदि अंश नहीं हैं। लेकिन गुरु की अपनी नीच (मकर) राशि का नीचनवांश (मकरनवांश) तो मकर की प्रारम्भिक 3 अंश 20 कला ही है– यह तो स्पष्ट है।

अधिकतर आचार्यों का मत है कि– मकरस्थ गुरु का वही काल शुभकृत्यों में वर्जित किया जाए, जब वह अपने परमनीचांश (पांचवें अंश) में हो–

" नीचराशिगतो जीवः प्रशस्तः सर्वकर्मसु।
नीचांशकगतः त्याज्यः यस्मादंशेषु नीचता।।"– *(व्यवहार–चण्डेश्वर)*

देवीपुराण का भी वाक्य है–

" मकरस्थो यदा जीवो वर्जयेत् पञ्चमांशकम्।
शेषेषु च भागेषु विवाहः शोभनो मतः।।"

यहां **'वर्जयेत् पञ्चमांशकम्'** की ओर ध्यान दें। यहां **"वर्जयेत् पञ्चांशान्"** नहीं लिखा है।

(v) यहां अभिजित् को भ्रान्तिवश **श्रवण** समझ लिया गया है। क्योंकि, यहां राहु अभिजित् के

श्रवण नक्षत्र वाले भाग में था। हमारे इस स्खलन से ये दो दिन शुभकृत्य से वंचित हो गए। इसके अतिरिक्त अन्य कोई हानि यहां नहीं हुई है। इस त्रुटि के लिए हम पाठकों से क्षमाप्रार्थी हैं।

समस्या (i) **'निर्णयसिन्धु' में लिखा है कि– जब आश्विन कृष्ण त्रयोदशी को सूर्य हस्त और चन्द्रमा मघा नक्षत्र में हो तब 'गजच्छायायोग' होता है। आपके 'श्रीमार्त्तण्डपञ्चांग' में इस योग का निर्देश नहीं होता, क्या कारण है ?**

(ii) आपने चैत्र कृष्ण त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र से योग होने पर वारुणी, शतभिषा नक्षत्र+ शनिवार हो तो महावारूणी और यदि शुभयोग भी पड़ जाए तो महा–महावारूणी योग माना है। पर यदि इनमें से किन्हीं दो का भी योग हो जाए; जैसे– त्रयोदशी + शुभयोग या त्रयोदशी + शनिवार पड़ जाए तो क्या उसे वारुणी योग मान लेना चाहिए या जो क्रम आपने दिया है, इसी क्रम में होने से योग बनेगा ?

उपरोक्त दोनों योग रात में मान्य क्यों नहीं हैं, जबकि मन्त्र–तन्त्रसाधना तो रात में की जा सकती है, ध्यान भी किया जा सकता है, स्नान–दान ही तो नहीं किए जा सकते। कृपया स्पष्ट करें।

(iii) ''रविवार + शोभनयोग + कर्कस्थ चन्द्र + कुम्भस्थ सूर्य + धनुःस्थ गुरु'' – इन पांचों के संगम से ''गोविन्दद्वादशी योग'' बनता है– ऐसा एक पंचांग में मैने पढ़ा है। लेकिन आपने अपने 'व्रत–पर्व–विवेक' में इसका निर्देश नहीं किया, क्या कारण है ?

(iv) भाद्र. कृष्ण अष्टमी, रोहिणी नक्षत्र, बुधवार और हर्षण योग–इन चारों के संगम से 'श्रीकृष्णजयन्ती योग' बनता है– ऐसा 'गौतमी तन्त्र' में लिखा है। आपने इसका भी निर्देश 'व्रतपर्व विवेक' में नहीं किया ?

श्री प्रेम शास्त्री, मेरठ (उ.प्र.)।

समाधान–(i) **'गजच्छायायोग'** के घटकों के बारे में दो मत हैं– एक मतानुसार आश्विन कृष्ण त्रयोदशी, मघा नक्षत्र, हस्तस्थ सूर्य के संयोग से और दूसरे (बौधायन) मतानुसार आश्विन अमा, हस्तस्थ रवि और चन्द्र के संयोग से यह योग बनता है। 'गजच्छायायोग' में पितृ–श्राद्ध का भारी माहात्म्य माना गया है। त्रयोदशी वाले 'गजच्छायायोग' को **'पुरुषार्थचिन्तामणि'** आदि ग्रन्थकारों ने चर्चित नहीं किया है। उन्होंने इसके प्रतिनिधि के रूप में आश्विन कृष्ण की मघात्रयोदशी को स्वीकार किया है। क्योंकि, मघा त्रयोदशी में भी पितृश्राद्ध का उतना ही माहात्म्य शास्त्रकारों ने लिखा है। **स्पष्ट है–** जहां त्रयोदशी वाला गजच्छाया योग होता है, वहां मघात्रयोदशी भी होती है। हमने भी इसीलिए त्रयोदशी वाले 'गजच्छायायोग' के स्थान पर मघात्रयोदशी को ही मान्यता दी है। बौधायन–मतानुसारी अमा वाले गजच्छायायोग को सभी निबन्धकारों ने मान्यता दी है। हमने उनका ही अनुसरण किया है।

(ii) वारुणी, महावारुणी और **महा–महावारुणी** के घटक पदार्थों के क्रम को **स्कन्दपुराणोक्त** निर्देशानुसार ही चैत्रकृष्ण चतुर्दशी से समन्वित करना होगा। इन्हें यथेच्छ इधर–उधर नहीं किया जा सकता। **स्कन्दपुराण** के एतद्‌विषयक श्लोकों से यह स्पष्ट है।

धर्मशास्त्रों द्वारा प्रतिपादित **अर्धोदय, गजच्छाया, वारुणी** आदि योग स्नान–दान–जप–श्राद्ध के लिए ही हैं, मन्त्र–तन्त्र–साधनार्थ नहीं। चन्द्रग्रहणादि कुछ पर्वों को छोड़कर स्नान–दान आदि रात्रि में विहित नहीं हैं। **देखिए**–संक्रान्तिपर्व में स्नान–दान आदि का महत्त्व है। रात्रि में संक्रमण होने पर भी इसका पुण्यकाल (स्नान–दानादि के लिए विहितकाल) पूर्वदिन मध्याह्नोत्तर या परदिन पूर्वाह्ण में ही माना गया है। हां, मान्त्रिक–तान्त्रिक लोग इन धर्मकृत्यार्थ निर्णीत योगों को मन्त्र–तन्त्र–साधनार्थ प्रयोग में अवश्य लाते **हैं।**

लेकिन धर्मशास्त्रकारों द्वारा इन योगों का विनियोग स्नान–दानादि तक ही सीमित रखा गया है। अतः इन्हें रात्रि में स्वीकार नहीं किया जाता। रात्रि में इन योगों की अग्राह्यता आगमों द्वारा भी आदिष्ट है।

(iii) 'गोविन्दद्वादशीयोग' की संघटना **'ब्रह्मपुराण'** में इस प्रकार बतलाई गई है–

"फाल्गुनस्यापरे पक्षे कुम्भस्थे दिवसाधिपे।
जीवे धनुषि योगे च शोभने रविवासरे।।
पुष्यर्क्षे यदि सम्पूर्णा गोविन्दद्वादशी मता।"

'पद्मोत्तरपुराण' में भी इसका निर्देश है। वहां लिखा है– इस योग का माहात्म्य **'श्रीपुरुषोत्तमक्षेत्र'** में माना जाता है।

इस योग की आवृत्ति (Frequency) अत्यन्त विरल है। बारह वर्षों में केवल एकबार धनुःस्थ गुरु, कुम्भस्थ सूर्य में फाल्गुन शुक्ल द्वादशी, शोभन योग, पुष्यनक्षत्र और रविवार– ये सभी एक–साथ उपलब्ध होने पर ही यह योग बनता है। शताब्दी में एक से अधिक बार इस योग के घटित होने की सम्भावना नहीं है। यह भी पर्याप्त सम्भावित है कि–शताब्दी में यह योग एक बार भी घटित न हो पाए। गणना बतलाती है कि– विगत कम से कम 70 वर्षों में यह योग एक बार भी घटित नहीं हुआ और इस (21वीं) शताब्दी के मध्यतक भी यह घटित नहीं होगा। स्पष्ट है, इस प्रकार की अत्यन्त विरल प्रवृत्ति (Very rare occurence) के कारण ही इस पर्व का सामान्य जनगण में प्रचार नहीं हो पाया। **कालमाधव, तिथिनिर्णय, वीरमित्रोदय, निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु** आदि सभी प्रमुख निबन्धकारों ने इस योग का निर्देश कहीं भी नहीं किया है। मेरा यह **'व्रत–पर्व–विवेक'** भी इन्हीं प्रामाणिक निबन्धग्रन्थों पर आधारित है। अतः इस योग का इसमें भी असमावेश स्वाभाविक हैं।

(iv) **श्रीमद्भागवत, भविष्योत्तर, स्कन्द, विष्णु** आदि पुराणों, **वसिष्ठ** आदि संहिताओं तथा निबन्धकारों ने रोहिणी नक्षत्र को ही **'जयन्तीयोग'** (श्रीकृष्णजयन्ती योग) का निर्णायक माना है। जयन्ती योग के लिए इस नक्षत्र का अष्टमी से योग अर्धरात्रि में होना चाहिए या अन्यत्र भी इसका योग जयन्ती का निर्णायक है, इसमें मतभेद है। कई मीमांसकों ने तो एकमात्र रोहिणी के अष्टमीनिरपेक्ष स्थितिविशेष से ही जयन्तीव्रत का निर्धारण किया है। इस प्रकार के अनेक मत–मतान्तर जयन्तीयोग के निर्णय में मिलते हैं। लेकिन जयन्तीयोग के निर्णय में रोहिणी नक्षत्र को ही सभी ने एकमत से अनिवार्य घटक के रूप में स्वीकारा है। हेमाद्रि आदि अनेक आचार्यों ने तो अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी से ही जन्माष्टमी व्रत का निर्णय किया है। रोहिणी को तो उन्होंने प्रशस्त्याधायकमात्र माना है। वे आचार्य जयन्तीव्रत को जन्माष्टमीव्रत से भिन्न नहीं मानते। मैंने भी इस मत का अनुसरण किया है। अर्धरात्रि में अष्टमी–रोहिणी का योग होने पर जन्माष्टमीव्रत को जयन्तीव्रत की संज्ञा पुराणकारों ने दी है। मैंने भी **'व्रत–पर्व–विवेक'** में इसी मत को प्रश्रय दिया है। **श्रीमद्भागवत** आदि में भी अर्धरात्रि में रोहिणी–अष्टमी योग के समय श्रीकृष्ण का जन्म लिखा है।

'गौतमी तन्त्र' में निर्दिष्ट जयन्तीयोग की यह हर्षण योग वाली परिभाषा तो किसी भी निबन्धकार ने चर्चित नहीं की है। पुराणों एवम् संहिताओं में भी यह उपलब्ध नहीं है।

समस्या (i) 'श्रीमार्तण्ड पञ्चांग' में 'गुर्वादित्य विषयक' सामग्री समय–समय पर प्रकाशित होती रहती है, जिसमें अन्य ऋषिमतों की पूर्णतया उपेक्षा करके मात्र आचार्य गुरु के निर्देश – ("गुरुक्षेत्रगतो भानुः भानुक्षेत्रगतो गुरुः। गुर्वादित्यः स विज्ञेयः स तु गुर्वस्तसंज्ञकः।।") को ही आपने मान्यता प्रदान की है। जहां गुरु की राशि में सूर्य तथा सूर्य की राशि में गुरु की स्थिति को ही इसका प्रमुख नियामक दर्शाया गया है। द्रष्टव्य है कि– प्रस्तुत श्लोक का समर्थक कोई अन्य ऋषिवाक्य शायद उपलब्ध नहीं है। जबकि एक राशि अथवा एकनक्षत्र में सूर्य–गुरुयुति के काल को मंगलकृत्यों में वर्ज्य

दर्शाने वाले वाक्य प्रचुरता से उपलब्ध हैं। जैसे कि–

"गुर्वर्कयोगे युवतेः वियोगो यद्येक ऋक्षे यवना वदन्ति।
अस्तंगते देवगुरौ भृगौ च हारीतपूर्वाः चरणैकसंस्थे।।"– (*श्री जगन्मोहन*)

एवम्– "गुरु–शुक्रौ यदा काले एकराशौ च संस्थितौ।
विवाहे म्रियते कन्या पतिश्चाऽपि न जीवति।।" – (*आचार्य लल्ल*)

अपि च–"एकराशिगतौ स्यातां देवाचार्य–दिनेश्वरौ।
गुर्वादित्यः स विज्ञेयः स तु गुर्वस्त–संज्ञकः।।" – (*वराह*)

यहां आचार्य गुरु के निर्देश को स्वीकारने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है। उनके वाक्यानुसार गुरु की राशि में सूर्य तथा सूर्य की राशि में गुरु के स्थितिकाल को मंगलकृत्यों में निर्विवादरूप से सम्पूर्ण भारत में त्याज्य ही माना जाता है– इसमें दो मत्त नहीं हैं। किन्तु मेरी दृष्टि में गुर्वादित्य का यह प्रथम पक्ष है, जो सर्वमान्य है। इसका द्वितीय पक्ष अन्य ऋषिवाक्यों में निहित है, जहां एकनक्षत्र–राशि में सूर्य–गुरु की युति के काल को मंगलकृत्यों में त्याज्य बतलाने वाले प्रमाण प्रचुरता से उपलब्ध हैं। शास्त्रप्रतिपादित होने पर भी प्रस्तुत द्वितीय पक्षीय प्रमाण को पूर्णतः उपेक्षित करने का आधार क्या है ? यह मैं समझ नहीं पाया हूं। कहीं ऐसा तो नहीं कि 'गुर्वादित्य नाम से उक्त दोनों पक्षों का ऋषियों ने अलग–अलग निर्देश किया हो अर्थात् गुरु की राशि में सूर्य और सूर्य की राशि में गुरु के साथ–साथ, एक–नक्षत्र–राशि में सूर्य–गुरुयुति को अलग से वर्जित करने का प्रयोजन रहा हो।' इन दोनों पक्षों को समानरूपेण स्वीकारने में क्या कोई बाधा है ? क्यों न हम अधिकाधिक ऋषिवचनों का आदर करते हुए प्रस्तुत द्वितीय पक्ष को भी स्वीकारने का साहस करें ?

अन्य विचारणीय प्रश्न यह है कि जब एक ही राशि में स्थित सूर्य–बुधयुति 'बुधादित्य' नामक योग कहलाती है, तब एक ही राशि में स्थित सूर्य–गुरुयुति को भी 'गुर्वादित्य योग' कहा जा सकता है?

(ii) "आद्ये मघाचतुर्भागे नैर्ऋतस्याद्य एव च।
रेवत्यन्त–चतुर्भागे विवाहः प्राणनाशनः।।"

'शुद्धिदीपिका' के इस वाक्यानुसार मघा और मूल के प्रथम पाद और रेवती के अन्तिम पाद में विवाह प्राणनाशक होता है। यदि ऐसा है तो आपके एवम् अन्य पञ्चांगों के विवाहमुहूर्तों में इसकी पालना क्यों नहीं होती ?

(iii) एक पुस्तक में ग्रहों के 'ऋतुबल' का उल्लेख है। जिसके अनुसार शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त तथा ग्रीष्मऋतु में क्रमशः शनि, शुक्र, भौम, चन्द्र, बुध, गुरु तथा सूर्य बलवान् होते हैं। एतदर्थक वाक्य यह है–

"शनिशुक्रकुजेन्दु–ज्ञगुरवः शिशिरादिषु।
भवन्ति कालबलिनो ग्रीष्मे सूर्यस्तथैव च।।"

यदि वस्तुतः ऐसा है तो ग्रहों के प्रतिशत ऋतुबल ज्ञात करने का प्रकार क्या होगा तथा इसे ग्रहों के षड्बल में कैसे समाहित किया जाएगा ?

समाधान–(i) इसमें कोई दो मत नहीं हैं कि– गुर्वादित्य स्थिति (गुरु की सूर्य के साथ एक राशि/नक्षत्र में स्थिति) के काल को अनेक आचार्यों ने मंगलकृत्यों में वर्जित लिखा है। लेकिन देशाचार/लोकपरम्परा ने इसे पूरी तरह अस्वीकृत किया है। यह सर्वविदित है– भारत का कोई भी पंचांग या दैवज्ञ इस मत को मान्यता नहीं देता। मुहूर्तशास्त्रकारों ने शास्त्रविमुख लोकपरम्परा के उल्लंघन की भी अनुमति

नहीं दी है। 'बृहत्संहिता' का यह वाक्य देखिए–

"लोकाचारस्तावदादौ विचिन्त्यः देशे–देशे या स्थितिः सैव कार्या।
लोकद्विष्टं पण्डिताः वर्जयन्ति दैवज्ञोऽतो लोकमार्गेण यायात्।।"

इस बारे *'ज्योतिर्विदाभरण'* का वाक्य तो शास्त्र एवं लोकपरम्परा में वैमत्य की स्थिति में लोकपरम्परा को ही बलवत्तर बतलाता है। देखिए–

"पुराण–वेद–स्मृति–धर्मतो बहिः धर्मोऽयमत्र प्रतिपादनीयः।
शास्त्रप्रमाणादपि लोकधर्मः प्रमाणमेतद् बलवत्तदादरात्।।"

प्रत्यक्ष है– दैवज्ञसमाज ने निरपवादरूपेण 'गुर्वादित्य योग' को तनिक भी प्रामाणिकता नहीं दी; अतः भारतीय पंचांगकारों को इस योग को अमान्य ठहराने का दोषी नहीं ठहराया जा सकता।

अपि च– नारद आदि संहिता तथा अन्य **मुहूर्त्तमार्त्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि, मुहूर्त्तगणपति** आदि लगभग पूरे मुहूर्त–साहित्य में गुरु के मात्र अस्त, वार्धक्य, बाल्यकाल को ही विवाह, व्रतबन्ध, नामकरण, देवप्रतिष्ठा आदि सभी शुभकृत्यों में वर्ज्य लिखा है। उन्होंने **'गुर्वादित्यकाल'** की वर्जना का वहां संकेत भी नहीं किया है। इस विषय के असंख्य वाक्य उद्धृत किए जा सकते हैं, जिनमें से कुछेक ये हैं–

"अस्तंगते गुरौ शुक्रे बाले वृद्धे मलिम्लुचे।
उद्यापनमुपारम्भं व्रतानां नैव कारयेत् ।।"– *(शातातप)*

"गुरोरस्ते पतिं हन्याच्छुक्रास्ते चैव कन्यकाम्।
चन्द्रे नष्टे उभौ हन्यात् तस्मादस्तं विवर्जयेत्।।"– *(वादरायण)*

"विवाहो व्रतबन्धो वा यात्रा वा गृहकर्म च।
गुरावस्तमिते शुक्रे ध्रुवं मृत्युं विनिर्दिशेत्।।"– *(शार्ंग विवाहपटल)*

"सूतकान्ते नामकर्म विधेयं स्वकुलोचितम्
नाम पूर्वं प्रशस्तं स्यान्मंगलैश्च शुभाक्षरैः।
देशकालोपयाताद्यैः कालातिक्रमणं यदि
अनस्तगे भृगावीज्ये तत्कार्यं चोत्तरायणे।।"– *(नारदसंहिता)*

"विवाहं देवतानां च प्रतिष्ठां चोपनायनम्।
नास्तंगते सिते जीवे न तयोर्बाल–वृद्धयोः ।।"– *(नारदसंहिता)*

"अतीतकालान्यखिलानि तानि कार्याणि सौम्यायनगे दिनेशे।
सिते गुरावाप्यथ दृश्यमाने...।।"
–*(जातकर्म–नामकरणादि प्रसंग में वसिष्ठ)*

"शुक्रेज्यास्तमयेऽधिक–क्षय–जनुर्मासेषु जन्मर्क्षके।
नाऽपूर्वामरतीर्थ–दर्शनमियाद् गोदागयातोऽन्यतः।।"– *(मुहूर्त्तमार्त्तण्ड)*

अपि च– "गुरुक्षेत्रगतो भानुः भानुक्षेत्रं..........." वाक्य का उल्लंघन भी हम नहीं कर सकते। क्योंकि, इसे पूरे दैवज्ञसमाज ने सर्वथा आत्मसात् किया हुआ है। यहां पर भी लोकपरम्परा का दृढ़ निग्रह है, इससे हम छूट नहीं सकते। 'ज्योतिर्विदाभरण'कार कालिदास का यह वाक्य भी मुहूर्त्तशास्त्रीय नियम एवम् लोकपरम्परा में वैमत्य की स्थिति में लोकपरम्परा के तिरस्कार की अनुमति नहीं देता–

"शास्त्रभाषितनयेरित-धर्मादुद्धतोऽस्ति जनसंचयमान्यः।"

"राजमार्त्तण्ड'कार तो मुहूर्त्तनिर्धारण में कुलपरम्परा को भी समानरूप से आदरणीय कहते हैं–

"कुलस्य देशस्य च चित्तवृत्तिर्न खण्डनीया विदुषा कदाचित्।"

अतः हम पञ्चांगकार भी अन्य दैवज्ञसमाज की ही तरह शास्त्र को उपेक्षित कर लोकपरम्परा को ही प्रश्रय देने के लिए शास्त्रद्वारा पूरी तरह बाधित हैं।

अब रही बात आचार्य गुरु द्वारा **'गुर्वादित्य'** शब्द के अयथार्थ प्रयोग की। इस प्रकार के शब्दप्रयोग को भाषविद् शिथिलार्थकप्रयोग (A loose use of the term) की संज्ञा देते हैं। शब्दों के ऐसे शिथिल प्रयोग प्राचीन संस्कृतग्रन्थों में तथा अन्यत्र भी प्रचुरता से उपलब्ध हैं। इस पद्य में आचार्य का अभिप्राय स्पष्टतः यही है कि गुरु सूर्यराशि में व सूर्य गुरुराशि में हो तो उसे अस्त गुरु के समान ही मंगलकृत्यों में वर्जित किया जाए। **ध्यान रहे– 'गुर्वादित्य'** के परम्पराप्राप्त अर्थ के अनुरूप प्रयोग की आड़ में हम आचार्य गुरु के प्रतिपाद्य अभिप्राय **"गुरुक्षेत्रगतो भानुः सूर्यक्षेत्रगतो गुरुः ...."** को रद्दी की टोकरी में नहीं फेंक सकते। बिल्कुल स्पष्ट है– इस पद्य का अभिप्राय (आचार्य गुरु का प्रतिपाद्य आशय) ठीक वही है, जिसे पद्य का पूर्वार्ध बतला रहा है। इसकी पुष्टि भारत का यह निरवशेष मौहूर्तिक समाज भी करता है, जो इस आशय को निरपवादरूप से मान्यता दिए हुए है।

(ii) अश्विनी, मूल, मघा की शास्त्रनिषिद्ध आदिम दो–दो घटी के गण्डान्तकाल को विवाहादि मुहूर्तों के शोधन में हम तो सर्वथा वर्जित करते हैं। अन्य पंचांगकारों के बारे में हम नहीं जानते।

(iii) **'सर्वार्थचिन्तामणि'** में वसन्तादि ऋतुओं के स्वामी ग्रहों का इस प्रकार निर्देश है–

"भृगोर्वसन्तः क्षितिसूनु–मान्वोः ग्रीष्मः शंशाकस्य ऋतुः प्रवर्षः।
विदःशरद् देवगुरोः तु हेमः ऋतुः शनेः स्यात् शिशिरस्तु कालः।।"

स्पष्ट है– ग्रहों के ऋतुबल अपनी–अपनी ऋतुओं से, जिनके वे स्वामी हैं, सम्बद्ध हैं। ग्रहों के ऋतुबल की ओर हमारे श्रीपति आदि किसी भी पद्धतिकार का ध्यान नहीं गया। कारण स्पष्ट है– ये जातक–पद्धतियां एक–दूसरे की लगभग प्रतिलिपियां मात्र हैं।

षड्वलों में ग्रहों के ऋतुबल का समावेश **'कालबल'** के अन्तर्गत **'वर्षेशादि–बल'** में होगा, क्योंकि ऋतु काल का ही एक भाग है।

वर्षेशादि बल को पद्धतिकारों ने चार भागों में क्रमशः इस प्रकार बांटा है–

(i) वर्षेशबल, (ii) मासेशबल, (iii) वारेशबल, (iv) होरेशबल।

उन्होंने वर्षेश का बल 25 प्रतिशत, मासेश का 50 प्रतिशत, वारेश का 75 और होरेश का 100 प्रतिशत माना है। स्पष्ट है– सबसे स्थूल (बड़े) मान वाले काल (वर्ष) के स्वामी का बल सर्वाल्प, तदनन्तरवर्ती लघु, लघुतर लघुतम कालों (मास–वार–होरा) के स्वामियों के बल वर्षेशबल से क्रमशः उत्तरोत्तर **'दुगुने–तिगुने और चौगुने'** माने गए हैं। **'स्थूलात् सूक्ष्मं ज्यायः–"** न्यायानुसार वर्षेशादि का यह क्रम एवम् तदनुसार इनके बलों का निर्धारण तर्कसंगत भी है। यदि हम इन वर्षेशादि कालबलों में ऋतुस्वामी–बल को समाविष्ट करते हैं, तब कालमान की महत्ता–लघुता के क्रमानुसार यह ऋतुस्वामीबल वर्षेशबल और मासेशबल के मध्य पड़ेगा। **तब वर्षेशादि बल के क्रमशः पांच प्रकार इस प्रकार होंगे– (i) वर्षेशबल, (ii) ऋत्वीशबल, (iii) मासेशबल, (iv) वारेशबल और (v) होरेशबल। इस स्थिति में इन पांच वर्षेशादि–बलों के मान पद्धतिकारों द्वारा अपनाई बलांक निर्धारणपद्धति के अनुसार क्रमशः इस प्रकार माने जाएंगे–**

वर्षेशबल	=	**20 प्रतिशत**
ऋत्वीशबल	=	**40 प्रतिशत**
मासेशबल	=	**60 प्रतिशत**
वारेशबल	=	**80 प्रतिशत**
होरेशबल	=	**100 प्रतिशत**

समस्या– क्या बात है– 'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' 2061 के 'मुहूर्त्तविशेषांक' में प्रकाशित 'कलशचक्र–शुद्धि कोष्ठक' में उन नक्षत्रों का भी विचार किया गया है, जो गृहप्रवेश में वर्जित हैं ?

श्री एस.एन. शुक्ल, M.A.,
वृन्दावन कॉलोनी, विजयवाड़ा (आं.प्र.)।

समाधान– गृहप्रवेश मुख्यतः दो प्रकार का है–

(i) अपूर्वप्रवेश (नए घर में प्रथम प्रवेश)।

(ii) द्वन्द्वाभयप्रवेश (अग्नि, बाढ़, भूकम्प, राष्ट्रविप्लव आदि विपदाओं से बचाव के लिए किसी घर में प्रवेश)।

अपूर्वप्रवेश के लिए ग्राह्य नक्षत्र रोहिणी, मृगशिरा, उ.फा., चित्रा, अनु., उ.षा., उ.भा., रेवती और **द्वन्द्वाभयप्रवेश** के लिए इन नक्षत्रों के अलावा पुष्य, स्वाती, धनि., शत. भी ग्राह्य हैं। ध्यान देने योग्य बात है, द्वन्द्वाभयप्रवेश आपातस्थिति (Emergency) में किया जाता है। इस आपात–स्थितिकालिक प्रवेश के लिए भी मुहूर्त्तशास्त्रियों ने केवल ये 12 नक्षत्र ही ग्राह्य लिखे हैं। यहां यह प्रश्न उठता है कि– यदि आपातस्थिति में गृहप्रवेश शीघ्र ही करना अनिवार्य हो जाए तो क्या कोई ऐसी स्थिति में इन नक्षत्रों की प्रतीक्षा करेगा ? स्पष्ट है– इस स्थिति में शक्य (Possible) हो तो कलश–वास्तुचक्रशुद्ध किसी निकटस्थ निषिद्ध नक्षत्र में भी प्रवेश करना बुद्धिमत्ता होगी। इससे गृहप्रवेश कुछ दोषमुक्त अवश्य होगा। इस प्रकार स्पष्ट है– यह पूरा **'कलश–शुद्धि–चक्र'** प्रयोग में आ जाता है।

ध्यातव्य है– 'पंचशलाकावेध' के निर्णय में विवाह में वर्जित नक्षत्रों का भी वेध उपलब्ध होता है। स्पष्ट है– इन वर्जित नक्षत्रों के वेध का विचार चाहें तो प्रणयादि–विवाहकाल में किया जा सकता है। इससे विवाहकाल कुछ दोषमुक्त अवश्य होगा।

समस्या– **सं. 2066 वि. में आश्वि. कृष्ण द्वादशी बुधवार को सूर्योदयव्यापिनी थी, फिर द्वादशी का महालय श्राद्ध मंगलवार को सूर्योदयव्यापिनी एकादशी के दिन क्यों लगाया गया ?**

पं. सुदामा जोशी, नेहरु नगर,
फगवाड़ा।

समाधान– महालयश्राद्धपार्वण श्राद्ध होते हैं। पार्वणश्राद्ध अपराह्णव्यापिनी मृत्युतिथि में किया जाता है –"पार्वणं त्वपराह्णके........।" सं. 2066 वि. में द्वादशी मंगलवार को अपराह्णव्यापिनी थी, अतः द्वादशी का महालयश्राद्ध इसी दिन लिखा गया है।

समस्या– **''मूलजा श्वशुरं हन्ति सार्पजा च तदंगनाम्'' के अनुसार क्या मूल एवं आश्लेषा नक्षत्रों के किसी भी चरण में उत्पन्न जातक श्वशुर एवं सास के लिए अशुभ होता है अथवा इनके कोई चरण इस दोष से मुक्त भी हैं ?**

डॉ. गोपाल चन्द्र शर्मा,
नालागढ़ (हि.प्र.)।

समाधान– मूल के प्रथम तीन और आश्लेषा के अन्तिम तीन चरणों में उत्पन्न जातक ही श्वशुर एवं सास के लिए घातक माना गया है। इनके शेष चरणों में जन्म इस दोष से मुक्त है–

" मूलान्त्यपाद–सार्पाद्यपादजौ तौ तयोः (श्वश्रू–श्वशुरयोः) शुभौ।" – (*मु.चिं.म.*)

समस्या–(i) **बलवान् ग्रह शुभफल का विकास और निर्बल ग्रह अशुभफल का विकास या शुभफल का विनाश किया करता है– ऐसा जातकपद्धतिकारों का मत है। क्या शनि के बारे में भी यह मत मान्य है, अर्थात् क्या बलवान् शनि भी शुभफल का विकास और अशुभफल का विनाश करता है ?**

(ii) मैं साम्पातिक काल द्वारा त्रिकोणमितीय सूत्र से लग्न एवं दशम स्पष्ट कर विषमविभागात्मक भाव साधित करता हूं- जैसा कि परम्परया अन्य अनेक ज्योतिषी करते हैं। क्या कमलाकरभट्ट द्वारा समर्थित समान-मानात्मक द्वादशभाव-साधन के लिए मुझे लग्नसाधन जन्मेष्टकाल तथा तात्कालिक स्पष्टसूर्य के आधार पर ही करना होगा ? क्या इस स्थिति में दशमसाधन की आवश्यकता रहेगी ?

आचार्य नरेन्द्रप्रताप सिंह,
शारदानगर, लखनऊ।

समाधान–(i) क्रूरग्रह चाहे वह शनि है या अन्य, उच्चस्थ होने पर शुभफल ही देता है– ऐसा सभी जातकपद्धतिकारों एवम् जातकग्रन्थकारों का स्पष्ट मत है। देखिए– वराहमिहिर कहते हैं कि– तीन या तीन से अधिक ग्रहों की उच्च में स्थिति राजयोगकारक है–

" वक्रार्कजार्क–गुरुभिः सकलैस्त्रिभिर्वा स्वोच्चेषु षोडश नृपा........।"– (*बृहज्जातक*)

यहां यह विशेष निर्देश नहीं है कि– उच्चस्थ ग्रह शुभ ही हों। इससे स्पष्ट है– मंगल, शनि आदि क्रूरग्रह भी उच्चस्थिति से शुभकारक बन जाते हैं।

किञ्च– आचार्य वराह के इस वाक्य की ओर भी ध्यान दें, जिसमें किसी भी (शुभ या अशुभ) ग्रह की उच्च, त्रिकोण, स्वगृह, मित्रगृह, शत्रुगृह, नीचगृह में स्थिति तथा लोपस्थिति से शुभफल की मात्रा क्रमशः पूर्ण, पादोन, अर्ध, पाद, स्वल्प एवम् शून्य लिखी है–

"उच्च–त्रिकोण– स्वसुहृच्छत्रु – नीचगृहार्कगैः।
शुभं सम्पूर्ण–पादोन–दल–पादाल्प–निष्फलम्।।"

इससे यह भी अनुवृत्त है कि– वे सभी ग्रह उच्चादिस्थ होकर अशुभफल की मात्रा को विपरीतक्रमेण शून्य, अल्प, पाद, अर्ध, पादोन, पूर्ण बना देते हैं।

(ii) लग्नसाधन साम्पातिक काल से करें या सूर्य एवम् सूर्योदयादिष्ट से– दोनों से परिणाम एकरूप ही आता है। **आचार्य कमलाकर** एवम् अन्य सभी शास्त्रकारों का मत है कि– लग्न (प्रथमभाव) से द्वादशभावपर्यन्त बारह भावों का पारस्परिक अन्तर 30–30 अंश ही होना चाहिए। इसके लिए आजकल परम्परागत दशमभाव, जो स्थानीय याम्योत्तरवृत्त एवम् क्रान्तिवृत्त का संपातबिन्दु है, प्रयोग में नहीं लाना चाहिए, क्योंकि वह वस्तुतः दशमभाव नहीं है। साम्पातिककाल या दिनमान द्वारा दशमसारणी से ज्ञात(स्पष्ट) किए गए दशमभाव के स्पष्ट राश्यादि के प्रयोग से **"सषड्भे लग्नखे जायातुर्यौ......."** इस ताजिकोक्त प्रणाली–द्वारा द्वादशभावों के साधित राश्यादि–मान हमारे आचार्यों द्वारा समर्थित नहीं हैं। क्योंकि, यह दशमभाव सिद्धान्ततः दशमभाव नहीं है। इस प्रकार साधित भावों के मान 30–30 अंशान्तर पर हमेशा नहीं होते। ये विषम–विभागात्मक होते हैं। ये कभी 30 अंश से काफी अधिक और कभी काफी कम हो जाते हैं। इसलिए **आचार्य कमलाकर** ने स्पष्ट किया है कि– स्पष्टलग्न के राश्यादि में 30–30 अंश जोडकर अन्य 11 भाव ज्ञात करने चाहिएं। **उदाहरणार्थ** – यदि स्पष्टलग्न $3^{\text{रा.}}–10^{\text{अं.}}$ है तो शेष द्वितीय आदि स्पष्टभाव क्रमशः $4^{\text{रा.}}–10^{\text{अं.}}$, $5^{\text{रा.}}–10^{\text{अं.}}$ और $6^{\text{रा.}}–10^{\text{अं.}}$ —— आदि होंगे। स्पष्ट है, यहां दशमभावसाधन निरर्थक है, (विशेष स्पष्टीकरण के लिए मेरी पुस्तक **'विश्वलग्न–सारणी'** के पृष्ठ 562 पर दिया **'विषम विभागात्मक भाव–एक समीक्षा'** लेख पढ़िए)।

समस्या– क्या गुरु के वक्रताकाल में शुभकृत्य वर्जित हैं ?

पं. हरिशरण शर्मा,
ग्राम घमारी, पो. शालाघाट (सोलन) हि.प्र.।

समाधान– गुरु के वक्रता एवम् अतिचारकाल शुभकृत्यों के लिए दोषपूर्ण माने गए हैं। **'पराशर'** का मत है– यदि गुरु गोचर में बलवान् हो तो गुरु की वक्रता और अतिचार का दोष नहीं रहता। इस बारे **'लल्ल'** का कथन है–

"प्रतिषिद्धो नोद्वाहः वक्रिणि जीवे तथाऽतिचारगते।
गोचरबलं प्रधानं लग्ने च पराशरः प्राह।।"

[यहां **'उद्वाह'** (विवाह) उपलक्षणमात्र है, अतः इससे अन्य सभी शुभकृत्यों का ग्रहण करना चाहिए।]

'मुहूर्त्तचिन्तामणि'कार तो **वक्री**–अतिचारी गुरु के दोष को कुछ ही आचार्यों का मत मानते हैं–

"वर्ज्यं केचिद्वक्रगे चाऽतिचारे।"

'मुहूर्त्तगणपति'कार का मत है– गुरु यदि जन्मराशि से त्रिकोण (पञ्चम–नवम), द्वितीय या एकादश में स्थित हो तो वह वक्रता एवम् अतिचारकाल में दोषकारक नहीं रहता–

"त्रिकोण– द्वयायसंस्थे तु जीवे वक्राऽतिचारगे।
न दोषः तत्र विज्ञेयः कुर्यादुद्वहनादिकम्।।"

समस्या–(i) नामकरण के समय चन्द्रबल किसका देखना चाहिए; माता का, शिशु का या पिता–पितामह आदि का ?

(ii) क्या नक्षत्रशान्ति 'होलाष्टक' में कर सकते हैं ?

(iii) क्या जन्मलग्न से द्वादशलग्न में विवाह करना शुभ है ?

समाधान–(i) नामकरण जन्मोपरान्त परिवार के कुलवृद्ध पिता, पितामह आदि द्वारा **जातकर्म** के तुरन्त साथ ही किया जाता है, अतः यहां चन्द्रबल नहीं देखा जा सकता। यदि नामकरण किसी कारणवश जातकर्म के साथ सम्पन्न न हो सके तब यह जन्म के 11वें या 12वें दिन किया जाता है। इस स्थिति में भी चन्द्रबल नहीं देखा जाता। यदि यह तब भी संभव न हो तो गुरु–शुक्रास्त, भद्रा, व्यतिपात आदि दोषों से रहित किसी शुभ दिन में इसे किया जाता है। तब चन्द्रबल देखना होगा। यहां चन्द्रबल मंगलाभिलाषी शिशु का ही देखा जाएगा।

(ii) **'होलाष्टक'** का काल विवाहादि शुभकृत्यों के लिए ही वर्जित है–

"ऐरावत्यां विपाशायां शतद्रौ पुष्करत्रये।
होलिका–प्राक्दिनान्यष्टौ विवाहादौ शुभे त्यजेत्।।"–(*मुहूर्त्तगणपति*)

गण्डान्तशान्ति मंगलकृत्य नहीं, यह तो दोषशान्तिकृत्य है, अतः इसे 'होलाष्टक' में किया जा **सकता है।**

(iii) वर–कन्या के जन्मलग्न एवम् जन्मराशि से द्वादशराशि, द्वादशराशीश या द्वादशराशि का नवांश विवाहलग्न में शुभ नहीं माने जाते–

"तथैव द्वादशे लग्ने तदंशे वा तदीश्वरे।
विवाहलग्नगे नैःस्व्यं नित्यं स्यात् कलहो द्वयोः।।"–(*कश्यप*)

वर–कन्या की जन्म–लग्नराशि एवम् जन्मराशि के अधिपति का द्वादशराशीश से मैत्रीभाव या ऐकाधिपत्य होने पर यह दोष निवृत्त हो जाता है।

समस्या–(i) अवम (तिथिक्षय) में विवाह निषिद्ध है, लेकिन आपके पंचांग में अवम में भी विवाहमुहूर्त्त लगे रहते हैं– ऐसा क्यों ?

(ii) मिलान सदोष हो, षडष्टक आदि असह्य दोषों के परिहार न मिलें तो कुछ ज्योतिषी कन्या

का नाम बदलकर सम्बन्ध कर लेने का परामर्श देते हैं। क्या इसे आप शास्त्रीय मानते हैं ?

पं. चमनलाल शर्मा,
मु. मज्यारी, पो.ऑ. भियुंखरी, नालागढ़ (हि.प्र.)।

समाधान–(i) तिथिक्षय एवं तिथिवृद्धि का दिन शुभकृत्यों में अशुभ माना गया है, लेकिन लग्न के समय गुरु–शुक्र–बुध की सप्तमरहित केन्द्र एवं त्रिकोण में स्थिति तथा एकादशस्थ सूर्य, चन्द्र आदि द्वारा इसका दोष निवृत्त हो जाता है–

"केन्द्रे कोणे जीव आये रवौ वा लग्ने चन्द्रे वापि वर्गोत्तमे वा।
सर्वे दोषा नाशमायान्ति चन्द्रे लाभे तद्वद्दुर्मुहूर्तांश–दोषः।।"– (मु. चिं. म.)

(ii) यह शास्त्रानुमोदित नहीं है। इसे मान्यता देने पर तो प्रत्येक वर–कन्या का विवाह हो सकेगा, जो मिलानसिद्धान्त का साक्षात् उल्लंघन होगा।

समस्या–(i) वास्तुपुरुष धरती पर किस स्थिति में होता है, अधोमुख या उर्ध्वमुख ? कई पुस्तकों में इसको उर्ध्वमुख अंकित किया हुआ है। कृपया शास्त्रप्रमाण से स्पष्ट करें।

(ii) गृहारम्भ में प्रथम शिलान्यास कौन सी उपदिशा में किया जाता है ? कई ग्रन्थों में ईशानकोण में और कइयों में सूर्य-संक्रान्ति (प्रचलित परम्परा) के हिसाब से करने को कहा है। वे कहते हैं कि– खाली स्थान में [जहां राहु (सर्प) का अंग न हो] शिलान्यास करें। इस बारे शास्त्रीय मन्तव्य क्या है ?

पं. सत्यनारायण शम्भुदयाल शर्मा,
अबोहर।

समाधान– (i) वास्तुपुरुष पृथ्वी पर अधोमुख स्थित माना जाता है। बृहत्संहिता की टीका में भट्टोत्पल ने इस विषय में आचार्य बृहस्पति का यह वाक्य उद्धृत किया है, जिसमें वास्तुपुरुष को मूलरूपेण असुर लिखा है। इस भीमकाय पुरुष को जो अपने विशाल शरीर से समस्त भुवन को ढक रहा था, भयभीत, क्रुद्ध देवों ने अधोमुख करके पृथ्वी पर पटक दिया। ब्रह्मा ने इसे 'वास्तुपुरुष' बना दिया–

"पुरा कृतयुगे ह्यासीद् महद्भूतं समुत्थितम्। व्याप्यमानं शरीरेण सकलं भुवनं ततः ।।
तद्दृष्टवा विस्मयं देवा गताः सेन्द्रा भयाकुलाः। ततस्तैः क्रोधसन्तप्तैः गृहीत्वा तमथासुरम्।।
विनिक्षिप्तमधोवक्त्रं स्थिताः तत्रैव ते सुराः। तमेव वास्तुपुरुषं ब्रह्मा समभिकल्पयत्।।"

(ii) **बृहत्संहिता** में शिलान्यास का क्रम यह दिया है– आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ऐशान और पूर्व।

भट्टोत्पल ने **बृहत्संहिता** की ही टीका में **'बृहत्संहिता'** के पाठान्तर के आधार पर शिलान्यास का क्रम उपरोक्त से भिन्न इसप्रकार बतलाया है– ऐशान, पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य और उत्तर।

यहां **भट्टोत्पल** ने लिखा है कि– शिलान्यास का यह दूसरा क्रम वास्तुकारों में प्रचलित है–

"इत्येतत् लोके स्थपतिषु दृश्यते।"

राहु (सर्प) के अंगों की भूखण्ड में स्थिति का विचार शिलान्यास के लिए नहीं, बल्कि भूखनन (नींव–खोदने) के लिए किया जाता है।

समस्या– फलितज्योतिष में ग्रहों के उच्च–नीचादि की स्थिति वर्णित है, वह खगोलीय तथ्यों से मेल नहीं खाती। "यः स्यात्प्रदेशः प्रतिमण्डलस्य दूरे भुवः तस्य कृतोच्चसंज्ञा" से सूर्यादि ग्रह

क्रमशः मेष के 10°, वृष के 3°, मकर के 28°, कन्या के 15°, कर्क के 5°, मीन के 27°, तुला के 20° और मिथुन के 15° पर पृथ्वी से सुदूरस्थ नहीं होते। उदाहरणार्थ– सूर्य आजकल 4 जुलाई के लगभग पृथ्वी से सुदूरस्थ होता है, उसे फलितज्योतिष में मेष के 10° पर या 25 अप्रैल को पृथ्वी से सुदूरस्थ माना है। यह विरोध क्यों ?

पं. ब्रह्मदेव ठक्कुर शास्त्री,
नौरंगाबाद, अलीगढ़।

समाधान– फलितज्योतिष में प्रयुक्त होने वाले ग्रहों के उच्च, नीच–राश्यंश ग्रहगणितीय मन्दोच्च, मन्दनीच नहीं हैं। स्पष्टीकरण के लिए इसी पंचांग में पृष्ठ.. **293** पर दिया लेख — 'फलित के उच्च–नीच खगोलीय मन्दोच्च–नीच नहीं हैं" पढ़िए।

समस्या– 'चन्द्रषष्ठी व्रत' आपके पंचांग में आश्विन कृष्ण षष्ठी को लगाया जा रहा है, जबकि 'भविष्यपुराण' अनुसार यह भाद्र. कृष्ण षष्ठी को होना चाहिए। यह विरोध क्यों ?

श्री ओमप्रकाश मोहिल,
मु. मलहेड़ी, P.O. डंगार (बिलासपुर)हि.प्र.।

समाधान– हां, यह ठीक है, भविष्यपुराण में 'चन्द्रषष्ठीव्रत' भाद्र. कृष्ण षष्ठी को लिखा है–

"..........भाद्रपदे मासि षष्ठ्यां पक्षेऽसिते दले। चन्द्रषष्ठीव्रतं कुर्यात्......... ।।"

लेकिन यहां **"भाद्रपद कृष्ण पक्ष"** दर्शान्त मास का है। **'वर्षकृत्य प्रदीप'** एवं **'निर्णयसिन्धु'** में यह स्पष्ट लिखा है कि– **भविष्यपुराण** के इस वाक्य में जो **"भाद्रपद कृष्ण पक्ष"** लिखा गया है– वह दर्शान्त (शुक्लादि) मास पद्धत्यनुसारी है, जो पूर्णिमान्त मासपद्धति– अनुसार महालय (आश्विन कृष्ण) पक्ष है–

"अत्र दर्शान्तत्वेन भाद्रकृष्णपक्षो महालयो ज्ञेयः, इत्युक्तं हेमाद्र्यादौ ।"– *(वर्षकृत्यप्रदीप)*

भट्टोजिदीक्षितकृत 'तिथिनिर्णय' में भी यह इसी प्रकार स्पष्ट किया गया है। **ध्यान रहे–** हमारे प्रदेशों (उत्तरी भारत) में दर्शान्त नहीं, अपितु पूर्णिमान्त मास प्रचलित हैं। दर्शान्त मास–अनुसार जो पक्ष भाद्र. कृष्ण है, वह पूर्णिमान्त मास–अनुसार आश्विनकृष्ण होता है।

समस्या– क्या ज्येष्ठा के प्रत्येक चरण में उत्पन्न कन्या पतिज्येष्ठ के लिए और बालक बड़े साले के लिए किंवा विशाखा के प्रत्येक चरण में उत्पन्न कन्या देवर के लिए और बालक छोटे साले के लिए अशुभ होता है ?

पं. श्री योगेश कौशिक,
कुचामन सिटी (नागौर) राज.।

समाधान– ज्येष्ठा के अन्तिम पाद में उत्पन्न कन्या पतिज्येष्ठ और बालक बड़े साले के लिए मारक होते हैं। इसी प्रकार विशाखा के भी अन्तिम पाद में उत्पन्न कन्या देवर और बालक छोटे साले के लिए मारक माने गए हैं–

"ज्येष्ठान्त्ये पतिपूर्वजं द्विपचतुर्थे देवरं हन्ति च।" –*(मुहूर्त्तमार्त्तण्ड)*

इन नक्षत्रों के शेष चरणों में कन्या–बालक का जन्म अशुभ नहीं माना जाता।

समस्या– परिवार में किसी की मृत्यु हो जाए तो शोककाल की अवधि कितनी होनी चाहिए ? बाल, युवा, वृद्ध (पुरुष–स्त्री) में से किसी की मृत्यु हो जाने पर परिवार में भाई, पुत्रादि सम्बन्धी जनों को कितनी अवधि के पश्चात् शुभ कार्य करने चाहिएं ? यह भिन्नता हिमाचल प्रदेश

श्री उमाशंकर दीक्षित, M.A.,
मु. रिवाड़ी, डा. दलाश (कुल्लू)हि.प्र.।

समाधान— जो व्यक्ति किए जाने वाले किसी मंगलकृत्य से साक्षात् सम्बद्ध है, उसे धर्मशास्त्र और मुहूर्त्तशास्त्र में "**मंगलाभिलाषी**" कहा जाता है। **जैसे**— जिस व्यक्ति का विवाह होने जा रहा है, जो गृह की आधारशिला रखने वाला है या जिस बच्चे का मुण्डन अथवा उपनयन–संस्कार करना है– ये सब व्यक्ति "**मंगलाभिलाषी**" कहलाएंगे।

मंगलाभिलाषी के निम्नलिखित इन संबंधियों को " **सगोत्र–त्रिपुरुषी**" (मंगलाभिलाषी के अपने गोत्र वाली तीन पीढ़ियों के संबंधियों का वर्ग) कहा जाता है, जिनकी मृत्यु पर मंगलाभिलाषी के मंगलकृत्य कुछ समय के लिए रोक देने होते हैं–

दादा, दादी, माता, पिता, पत्नी, भाई, भाई की पत्नी, भतीजा, अविवाहित भतीजी, अविवाहित बहिन, अविवाहित पुत्री, पुत्र, पुत्रवधू, पौत्र, पौत्रवधू, अविवाहित पौत्री, अविवाहित भुआ, चाचा, चाची, ताया, तायी, चाचा और ताया का पुत्र एवं अविवाहित पुत्री, चाचा–ताया की पुत्रवधू।

(ध्यान रहे– " सगोत्र–त्रिपुरुषी" की इस सूची में सभी संबंधी सगे लिए गए हैं।)

मंगलाभिलाषी का कोई सगोत्र–त्रिपुरुषी वाला संबंधी गुजर जाए तो **प्रतिकूल दोष** होता है, जिसे **'अशौच'** या **'मृताशौच'** भी कहा जाता है। प्रतिकूलदोष की अवधि, जिसे व्यावहारिक भाषा में **"शोककाल"** कहना चाहिए, निवृत्त हो जाने पर ही मंगलाभिलाषी से संबद्ध मंगलकार्य किया जा सकता है, उससे पूर्व नहीं। धर्मशास्त्रकारों ने प्रतिकूलदोष की अवधि भिन्न–भिन्न संबंधियों के बारे में भिन्न–भिन्न बतलाई है। **'स्मृतिरत्नावली'** में ये अवधियां इस प्रकार लिखी हैं–

" पितुरब्दमशौचं स्यात्तदर्धं मातुरेव च।
मासत्रयं तु भार्यायाः तदर्धं भातृ–पुत्रयोः।।
अन्येषां तु सपिण्डानामशौचं मासमीरितम्।
तदन्ते शान्तिकं कृत्वा ततो लग्नं विधीयते।।"

इसका अर्थ है– पिता की मृत्यु पर एक वर्ष तक, माता की मृत्यु पर छः मास, पत्नी की मृत्यु पर तीन मास, भाई और पुत्र की मृत्यु पर डेढ़ मास एवं शेष **'सगोत्र–त्रिपुरुषी'** वाले संबंधियों की मृत्यु पर केवल एक मास तक ही अशौच रहता है। अशौच समाप्त होने पर **'विनायकशान्ति'** आदि करके विवाह आदि शुभकृत्य किए जा सकते हैं।

प्रतिकूलदोष की अवधि बतलाने वाला यह सामान्य नियम है, लेकिन आपात(संकट)स्थिति में तो माता, पिता आदि प्रत्येक संबन्धी की मृत्यु के एकमास बाद ही विनायकशान्ति, दान आदि करके मंगलकृत्य कर लेने की अनुमति शास्त्र देते हैं। इस बारे **दैवज्ञ मनोहर** का वाक्य है–

" प्रतिकूले सपिण्डस्य मासमेकं विवर्जयेत्।"

केवल एक मास बाद ही प्रतिकूलदोष की निवृत्ति बतलाने वाला यह नियम संकट (आवश्यकता) की स्थिति के लिए ही है। इससे पहले विनायकशान्ति करवाना नितांत आवश्यक है। इसी विषय में **मेधातिथि** का यह वचन है–

"संकटे समनुप्राप्ते याज्ञवल्क्येन योगिना।
शान्तिरुक्ता गणेशस्य कृत्वा तां शुभमाचरेत्।।
अकृत्वा शान्तिकं यस्तु निषेधे सति दारुणे।
यः करोति शुभं तावद्विघ्नस्तस्य पदे–पदे।।"

यदि अत्यंत संकट की स्थिति हो (जैसे-विवाहयोग्य कन्या की माता या पिता मरणासन्न हो) तो दशाह या द्वादशाह के बाद भी विनायकशान्ति, गोदान आदि करके विवाह आदि कृत्य कर लेने की अनुमति धर्मशास्त्रकारों ने दी है। यहां " ज्योतिःप्रकाश " का वाक्य है–

"प्रतिकूलेऽपि कर्तव्यो विवाहो मासमन्तरा।
शान्तिं विधाय गां दत्त्वा वाग्दानादि चरेत्पुनः।।"

[अर्थात् अत्यन्त संकट की स्थिति में एक मास के अन्दर भी, विवाह किया जा सकता है। परन्तु इसके लिए शान्ति, गोदान करके दुबारा वाग्दानादि करना चाहिए।]*

ज्योतिःप्रकाश का यह वाक्य यद्यपि विवाह के बारे में मास से पहले ही प्रतिकूलदोष की निवृत्ति की बात करता है, लेकिन **'समानन्याय'** से दूसरे सभी मंगलकार्यों के बारे में भी यही निर्णय समझना चाहिए। ऐसी विशेष संकट की स्थिति में भी मंगलकार्य प्रेतकर्म कर लेने के अनन्तर (एकादशाह या द्वादशाह के अनन्तर) ही किए जा सकते हैं। इससे पूर्व किसी भी स्थिति में इनके विधान की अनुमति शास्त्र नहीं देते। इस बारे **'मेधातिथि'** का यह वाक्य है–

'प्रेतकार्याण्यनिर्वर्त्य चरेन्नाभ्युदयक्रियाम्।"

[अर्थात्– प्रेतकार्य (मृत्यु से द्वादशाह तक किए जाने वाले अनुष्ठानों) को किए बिना मंगलकार्य नहीं करने चाहिएं।]

इस उपरोक्त विवेचन का सारांश यह है–

(i) " पिता का अशौचकाल एक वर्ष, माता का छः मास, पत्नी का तीन मास, भाई और बेटे का डेढ मास और शेष 'सगोत्रत्रिपुरुषी' के संबंधियों का एक मास रहता है। इस अशौच की निवृत्ति के बाद विनायकशान्ति करके मंगलकार्य किया जा सकता है"– प्रतिकूलदोष की अवधि के बारे में यह मूल निर्णय है। सामान्य स्थिति में इसका पालन करना चाहिए।

(ii) यदि कोई संकटस्थिति आ पड़े तब प्रत्येक " **सगोत्रत्रिपुरुषी**" वाले संबंधी के अशौच की निवृत्ति एक मास बाद ही मानकर विनायकशान्ति, दानादि करके मंगलकार्य किया जा सकता है।

(iii) यदि कोई अत्यंत संकट की स्थिति आ पड़े (एक मास तक मंगलकृत्य रोकना संभव न हो) तो मृत व्यक्ति का प्रेतकर्म पूरा हो जाने पर (एकादशाह या द्वादशाह के अनन्तर) विनायकशान्ति और गोदान आदि करके मंगलकृत्य किया जा सकता है।

निम्न स्थितियों में प्रतिकूलदोष नहीं माना जाता–

(i) भ्राता, बहिन, पुत्र, पुत्री, पौत्र, पौत्री आदि की मृत्यु तीन वर्ष से कम आयु में होने पर।
(ii) लम्बे रोग से पीड़ित संबंधी की मृत्यु होने पर।
(iii) सुदूर देशवासी संबंधी की मृत्यु होने पर।
(iv) संन्यासी संबंधी की मृत्यु होने पर।
(v) दुर्भिक्ष, राष्ट्रभंग और माता–पिता के प्राणसंकट की स्थिति में तथा प्रौढ़ कन्या के विवाह में।

समस्या–(i) लड़का एवं लड़की दोनों– एक लग्न से मंगलीक और दूसरा चन्द्र से मंगलीक हो तो क्या मिलान ठीक माना जाए ?

---

* *"वाग्दानादि हो चुकने पर विवाह से पूर्व ही प्रतिकूलदोष आ पड़े और संकटस्थिति हो तो गणेशशान्ति, गोदान करके पुनः वाग्दानादि करना चाहिए। तदनन्तर विवाह करें"– यह अभिप्राय है।*

(ii) वर–कन्या में से एक लग्न एवं चन्द्र-कुण्डली– दोनों से और दूसरा केवल लग्न या चन्द्र-कुण्डली एक से मंगलीक हो तो मिलान कैसा माना जाए ?

अशोक कुमार शर्मा,
4/44, ओल्ड राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली–60,

समाधान–(i) यदि लग्न एवम् चन्द्रकुण्डलियां भिन्न–भिन्न हैं तो लग्न एवम् चन्द्रकुण्डली के द्वादशभावों में ग्रहस्थिति एक सी नहीं हो सकती, जिससे दोनों से मंगलदोष की मात्राएं समान प्राप्त नहीं होंगी। इसके लिए दोनों कुण्डलियों से कुजदोष की प्रतिशतमात्रा की गणना अलग–अलग की जाए। दोनों के मंगलदोष की ये मात्राएं यदि समान या लगभगसमान हों तो मिलान ग्राह्य माना जाए, अन्यथा नहीं।

(कुजदोष की प्रतिशतमात्रा के साधन के लिए मेरी पुस्तक 'ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन'– देखिए।)

(ii) इस समस्या का समाधान भी उपरोक्त ही है।

समस्या– आपने सं 2067 वि. के 'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' में द्वि. वैशा. शु. 3 रविवार को उपनयन मुहूर्त्त लगाया है। यह युगादि तिथि है। इसमें शुभकृत्य क्या वर्जित नहीं होना चाहिए ?

श्री कुमारसम्भव मिश्रा, गोशाला मार्ग, दिल्ली–6,

समाधान– वैशाख शुक्ल तृतीया कृतयुगादि तिथि है। युगादि तिथियों में शुभकृत्य वर्जित रहते हैं। पितृश्राद्ध–स्नान–दान–जप के लिए इनका माहात्म्य है। ध्यान रहे– धर्मशास्त्र का आदेश है कि–युगादि तिथियों को अधिकमास होने पर अधिकमास में ही मनाया जाए, शुद्ध में नहीं–

"दशहराषु नोत्कर्षः चतुर्ष्वपि युगादिषु।" –(*ऋष्यशृंग*)

इसके अनुसार 2067 वि. में वैशाख अधिकमास होने के कारण कृतयुगादितिथि प्रथम(अधिक) वैशाखशुक्ल 3 शनिवार को घटित हो रही है, द्वितीय (शुद्ध) वैशाख शुक्ल 3 रविवार को नहीं, अतः द्वितीय वैशाख शुक्ल 3 रविवार को युगादि तिथि न होने के कारण इस दिन उपनयन का मुहूर्त्त शुद्ध है।

किञ्च– व्यास के इस वाक्यानुसार तो प्रत्येक स्थिति में वैशाख शुक्ल तृतीया उपनयनार्थ विहित है–

"या चैत्र–वैशाख–सिता–तृतीया माघस्य सप्तम्यथ फाल्गुनस्य।
कृष्णे तृतीयोपनये प्रशस्ता प्रोक्तं भरद्वाज–मुनीन्द्र–मुख्यैः।।"

– (*ज्योतिर्निबन्धे व्यासः*)

समस्या– तारीख 9–9–09 को शनि ने 24घं. 00 मि. (I.S.T.) पर कन्या राशि में प्रवेश किया था। यहां तारीख–मास–सन् की संख्याओं की एकरूपता को T.V. और समाचारपत्रों के भविष्यवक्ताओं ने विशेष महत्त्व(फल) का बतलाया है और यह घोषित किया कि– इसका विश्व एवम् सम्बद्ध जातक पर आश्चर्यजनक प्रभाव होगा। क्या उन भविष्यवक्ताओं की घोषणाओं का कोई ज्योतिषशास्त्रीय आधार था ?

पं. जयप्रकाश शर्मा,
श्रीकृष्ण एवेन्यू, पिञ्जौर (पंचकूला)हरि.।

समाधान– इस तरह के आधारहीन ज्योतिषसमाचार दैनिक हिन्दीपत्रों एवम् T.V. Chenels पर अक्सर आते रहते हैं। अनेक पल्लवग्राही, तथाकथित ज्योतिषियों का यह व्यवसाय बन गया है। वे ऐसे सस्ते वक्तव्य देकर अपनी ओर जनगण का मन (ध्यान) आकृष्ट करने का प्रयास करते हैं। समझ में नहीं आता शनि के राशिपरिवर्तन की एकरूपसंख्या वाले अंग्रेज़ी (Gregorian) वर्ष–मास–तारीख से किसी अद्भुत जातकीय एवम् मेदिनी घटना की कल्पना का आधार क्या है ? यदि यहां शनिप्रवेशकालिक हमारे अपने हिन्दू

पञ्चांग की मास–प्रविष्टे–संवत् की संख्या ली जाए तब क्या यह इस प्रकार एकरूप होगी ? आश्चर्य तो यह है कि– इस ग्रेगोरियन तारीख में मास और तारीख तो सब नौ (9) संख्या वाले हैं, लेकिन वर्ष (ई. सन्) तो 2009 संख्या वाला है। परन्तु तीनों (मास–तारीख–वर्ष) की संख्याओं को एकरूपता देने के लिए इन चतुर ज्योतिषियों नें यहां 2009 सन् का संक्षिप्तरूप 9 उद्धृत कर दिया। **किञ्च**– इन ज्योतिषियों को यह ज्ञात नहीं है कि– ग्रेगोरियन Dates(तारीखें)तो स्थानीय होती हैं। यह शनिराशिपरिवर्तन भारतीय 9 सितम्बर को अवश्य हुआ था, लेकिन भारत से पूर्ववर्त्ती पूर्वीबंगाल, बर्मा, जापान, सिंगापुर, हांगकांग, मलाया, इन्डोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड आदि सभी देशों में यह शनिराशिपरिवर्तन 10 सितम्बर को हुआ था, जिससे उन देशों में शनिराशिप्रवेश की तारीख उन देशों के **'सौभाग्य'** या **'दौर्भाग्य'** वश तीन **'नौ'** (9–9–9) नहीं जुटा सकी।

समस्या– वाराणसी से प्रकाशित 'हृषीकेश–पंचांग' एवम् आपके 'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' के ग्रहभोगांश तथा तिथ्यादि–समाप्तिकालादि में अक्षम्य अन्तर पाया जाता है। कृपया कारण स्पष्ट करें (वैसे, प्रामाणिक Software से प्राप्त परिणाम तो आपके पंचांग के पक्ष में हैं) ?

श्री डी.डी. जोशी,
H.No. 2367, Sector 38-C,
चण्डीगढ़ (U.T.)।

समाधान– पंचांगनिर्माण के दो पक्ष (Systems) भारत में प्रचलित हैं –(i) सौरपक्ष, (ii) दृक्पक्ष।

सौरपक्ष 'सूर्यसिद्धान्त' आदि प्राचीन भारतीय सिद्धान्तग्रन्थों और **दृक्पक्ष लीवेरियर न्यूकाम्ब, हॉनसेन** आदि पाश्चात्त्य नक्षत्रविदों की वेधसिद्ध (Based on observation) गणना (Calculation) पर आधारित है। सौरपक्ष से प्राप्त ग्रहभोगांश, तिथि, नक्षत्र, योग के समाप्तिकाल आदि इतने सूक्ष्म (accurate) नहीं हैं, जितने कि दृक्पक्ष से प्राप्त। हमारे प्राचीन नक्षत्रविदों के पास आजकल जैसे सूक्ष्म (Precise) वेधयन्त्र (Observation instruments) नहीं थे। **पुनरपि**, बांस आदि से बनाए गए स्थूल (Rough) स्वनिर्मित वेधयन्त्रों, गणीतीय कौशल तथा खगोलीय चिन्तन से उन्होंने ग्रहों की गति–स्थिति, ग्रहण आदि साधन में यथाशक्य पर्याप्त दक्षता प्राप्त की। लेकिन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत सूक्ष्मतम वेधयन्त्रों (Sextant) तथा Powerful Telescope आदि से प्राप्त परिणाम उनसे अधिक शुद्ध हैं, जिनके कारण इन दोनों पक्षों के माध्यम से साधित ग्रहगणितीय परिणामों में अन्तर होना स्वाभाविक है। सौरपक्षीय परिणाम दृक्पक्षीय परिणामों से काफी स्थूल हैं।

भारत में लगभग 70–80 वर्ष पूर्व लगभग सभी पञ्चांग सौरपक्ष से ही तैयार होते थे। तदनन्तर संस्कृत में दृक्पक्षीय गणना के निर्देशक कई ग्रन्थ (**'केतकी ग्रहगणित'**, **'ज्योतिर्गणित'**, **'सर्वानन्दकरण'**, **'करणकल्पलता'** आदि) प्रकाशित हो जाने पर अनेक भारतीय पञ्चांगकारों की दृक्पक्ष में रुचि हुई और वे इस पक्ष से पञ्चांगनिर्माण करने लगे। लेकिन भारत के पञ्चांगकारों के एक वर्ग ने सौरपक्षीय ग्रहस्थित्यादि वेधदृश्य खगोलीय ग्रहस्थिति आदि से बिल्कुल मेल नहीं खाती–यह भलीभान्ति जानते हुए भी दृक्पक्षीय गणना को स्वीकार नहीं किया। वे इस पक्ष को पाश्चात्त्य(यावन)उद्गम का होने के कारण अग्राह्य समझते थे। उनका मत था कि– **सूर्यसिद्धान्त** आदि हमारे पंचांगाधारग्रन्थ **सूर्य भगवान्** या हमारे ऋषियों द्वारा बनाए गए हैं, वे पवित्र हैं, उन्हें ही हमें मान्यता देनी चाहिए। इससे भारतीय पञ्चांग दो वर्गों में बंट गए– एक तो सौरपक्षीय, दूसरे दृक्पक्षीय। दोनों तरह के पंचांगों के ग्रहभोगांश, तिथ्यादि के काल में अक्षम्य अन्तर के कारण जातकों की जन्मकालिक ग्रहस्थिति, लग्न, दशान्तर्दशा, वर्षप्रवेशकाल आदि फलादेशाधारभूत सभी पदार्थों में एकरूपता नहीं रही, जिसके फलस्वरूप फलादेशोपजीवी दैवज्ञ बुरी तरह उलझ गए। **अपि च**– दोनों वर्गों के पंचांगों से निर्णीत व्रत–पर्व आदि के दिनों में भी अनेकत्र अन्तर आने लगा, जिससे धार्मिक हिन्दू–समाज संकट में पड़ गया। **रामनवमी, कृष्णजन्माष्टमी, दशहरा, दिवाली, एकादशी** आदि व्रतपर्वों के यथार्थ दिन के निर्णय में अनेक बार इन दोनों पक्षों के पंचांगकारों में वैमत्य से विक्षुब्ध धार्मिक जनता

पंचांगकारों को बुरा–भला कहने लगी। ऐसी धार्मिक अराजकता के समाधान के लिए तात्कालिक प्रधानमन्त्री **श्री जवाहरलाल नेहरु** के निर्देशन में भारतसरकार ने सन् 1951 में नक्षत्रविदों (Astronomers) की एक उच्चस्तरीय **''पंचांग– संशोधन–समिति''** (Calendar Reform Committee) का गठन किया, जिसमें **होमी भाभा** जैसे भौतिक शास्त्री भी थे। इस समिति ने पंचांगविशेषज्ञों से विस्तृत विचार–विमर्श के अनन्तर दृक्पक्षीय पंचांगगणना को प्रामाणिक ठहराया और भारतसरकार को इसी पक्षानुसार निर्णीत व्रत–पर्वों के दिनों को ही अवकाश आदि के लिए मान्यता देने का परामर्श दिया और भारत के अशेष भारतीय पंचांगकारों को भी इसी पक्षानुसार पंचांगनिर्माण के लिए प्रेरित किया। इसी कमेटी के परामर्श से भारतसरकार द्वारा English, संस्कृत, उर्दू एवम् भारत की गुजराती, मराठी आदि बारह प्रान्तीय भाषाओं में दृक्पक्षीय **'राष्ट्रीय पञ्चांग'** को प्रतिवर्ष प्रकाशित किया जा रहा है।

अब भारत के 99 प्रतिशत से भी अधिक पञ्चांग इसी दृक्पक्ष के आधार पर बनते हैं। लेकिन अब भी गिने–चुने परम्परावादी कुछ पञ्चांगकार ऐसे भी हैं, जो सौरपक्ष की इस स्थूल गणना को ही अपने पञ्चांगों में प्रश्रय दिए बैठे हैं। उनमें से मुख्य दो पञ्चांग **'हृषीकेश पञ्चांग'** तथा **'विश्वपञ्चांग'** हैं। ये दोनों वाराणसी से प्रकाशित होते हैं। इन दो पंचांगों की गणित दृक्पक्षीय पञ्चांगों की गणित से कहीं भी मेल नहीं खाती। **'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग'** दृक्पक्षीय गणनाधारित है। इन सौरपक्ष के पञ्चांगों के ग्रहभोगांश, तिथि–नक्षत्र–योग, ग्रह–राशि–नक्षत्रप्रवेशकालादि सभी पदार्थ दृक्पक्षीय ग्रहभोगांश आदि से अन्तरित रहते हैं, जिससे अनेकदा इन सौरपक्षीय पञ्चांगो द्वारा साधित व्रत–पर्वादि की तिथियों का दृक्पक्षीय तिथियों से समन्वय नहीं होता। लेकिन भारतसरकार के राजपत्र में दृक्पक्षीय व्रत–पर्व–तिथियां ही प्रकाशित होती हैं। दृक्पक्षीय तिथियों को ही भारतसरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है।

ध्यान रहे– दृक्पक्ष और सौरपक्ष की गणना में जो अन्तर इन दिनों चला आ रहा है, वह उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है, क्योंकि यह अन्तर अधिकतर संचयात्मक (Accumulative) है।

यहां एक यह अत्यन्त आश्चर्यकर एवम् हास्यास्पद बात है– सौरपक्षीय बचे–खुचे दो–चार ये पंचांगकार, जो दृक्पक्षीय पद्धति को अग्राह्य/अस्पृश्य–सा समझते हैं, वे भी सूर्य–चन्द्रग्रहणों के स्पर्श–मोक्ष आदि काल, जो सर्वसाधारण की दृष्टि में आते हैं, का निर्णय दृक्पक्षीय सूर्य–चन्द्र–राहु के भोगांशों के आधार पर ही करते हैं, क्योंकि सौरपक्ष से ग्रहणों के स्पर्श–मोक्षादिकाल यथार्थ नहीं आते। कभी–कभी तो 'ग्रहण होगा या नहीं'– इसका निर्णय सौरपक्ष से सम्भव नहीं होता।

समस्या– **'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' तथा अन्य पंचांगों में भी मीन–मेषस्थ सायन सूर्य के काल को वसन्त ऋतु मानते हुए शेष ऋतुओं को भी तदनुसार निर्दिष्ट किया जाता है, लेकिन ''कालमाधव'' की एक कारिका में ''मीन–मेषयोः मेष–वृषयोः वा वसन्तः'' लिखा है, जिसका अभिप्राय है– निरयण मीन–मेषस्थ अथवा सायन मेष–वृषस्थ सूर्यकाल वसन्त ऋतु है। क्योंकि, ऋतु का सम्बन्ध सायन सूर्य से है, अतः सायन मेष–वृषस्थ सूर्यकाल को ही 'वसन्त ऋतु' मानना चाहिए। आपका इस बारे क्या मत है ?**

डॉ. दामोदर झा, ज्योतिषाचार्य,
7/24, गौतमनगर, होशियारपुर (पं.)।

समाधान– ऋतुओं का सम्बन्ध केवल सायन सूर्यस्थिति से है, निरयण से कदापि नहीं। प्रत्येक ऋतु के प्रारम्भ एवम् समाप्ति के समय सूर्य का दक्षिणोत्तर–अयन–बिन्दुओं तथा वसन्त–शरत्–सम्पातों से पूर्वापर अन्तर एवं विषुवदवृत्त से इसका उत्तर–दक्षिण अन्तर प्रतिवर्ष समान रहता है। यहां सूर्य से हमारा अभिप्राय सायन सूर्य से है, निरयण से नहीं। क्योंकि, अयनचलन के कारण उसका (निरयण सूर्य का) यह अन्तर प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर परिवर्तनशील है। उसका ऋतुओं से स्थायीसम्बन्ध नहीं है।

'कालमाधव'कार ने जो **''मीन–मेषयोः मेष–वृषयोः वा वसन्तः''**– यह विकल्प दिया है, वह सायन और

निरयण ऋतुओं की दृष्टि से नहीं, अपितु प्राकृतिक विक्षोभों, विषमताओं के कारण कभी-कभी विचलित (कुछ दिन आगे-पीछे) हो जाने वाली ऋतुओं की प्रकृति को दृष्टि में रखकर किया है। हम देखते हैं, इन वसन्त आदि ऋतुओं का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल अनेकदा कुछ आगे-पीछे होता रहता है। **कालमाधव** आदि द्वारा ऋतुओं की इन वैकल्पिक परिभाषाओं का यही मूल है। इस विषय में **कालमाधव** का यह वाक्य देखिए-

"सौरेषु ऋतुषु बौधायनेन मीन-मेषयोः, मेष-वृषयोः वा वसन्त इत्यभिधानात् मीनादित्वं मेषादित्वं च वैकल्पिकं वसन्तस्य अंगीकृतम्,तथा त्वेतदनुसारेण उत्तर-ग्रीष्मादयोऽपि यथार्थं विकल्प्यन्ते।"

देखिए- यहां वसन्त आदि ऋतुओं की **'मीन-मेषयोः, मेष-वृषयोः वा वसन्तः'** आदि ये दो-दो परिभाषाएं वैकल्पिक रूप में निर्दिष्ट की गई हैं। इनमें से एक सायनपद्धति के अनुसार और दूसरी निरयण पद्धति के अनुसार- ऐसा तो यहां **बौधायन** या **कालमाधव** कार ने कुछ नहीं लिखा।

जैसा कि, हम पहले स्पष्ट कर चुके हैं- सायन सूर्यस्थिति ही ऋतुओं की निर्णायक है। निरयण सूर्यस्थिति तो अयनचलन के कारण परिवर्तनशील होने से ऋतु-सापेक्ष नहीं है। कोई भी सिद्धान्तज्ञ व्यक्ति **निरयण सूर्यस्थिति** को ऋतुओं का निर्णायक नहीं कह सकता। अतः स्पष्ट है, **बौधायन** या **माधव** द्वारा निर्दिष्ट प्रत्येक ऋतु की निर्णायक वैकल्पिक सूर्यस्थितियां सायन ही हैं। अनेक नैसर्गिक कारणों से प्रतिवर्ष अस्थिर प्रवृत्ति-निवृत्तिकाल के कारण प्रत्येक ऋतु को दो-दो सायन सूर्यराशियों से इन्होंने सम्बद्ध बतलाया है। हम भी अनेकदा यह अनुभव करते हैं, किसी-किसी वर्ष सायन मीन-मेषस्थ सूर्यकाल में और किसी वर्ष सायन मेष-वृषस्थ सूर्यकाल में वसन्त जैसी रम्य ऋतु का वातावरण होता है। कुछ-कुछ आगे-पीछे दोलित होने वाली प्रकृति के बावजूद भी प्रत्येक ऋतु की अपनी प्रारम्भ/समाप्ति की प्रामाणिक सीमाएं हैं। जहां सायन सूर्य की विशेष स्थिति होने पर ये ऋतुएं अपने-अपने वास्तविक शीतोष्णादि (रम्य-सह्य-असह्य आदि) वायुमण्डल का हमें अनुभव कराती हैं। ऋतुओं की इन प्रामाणिक सीमाओं के निर्धारण के **लिए हमारे प्राचीन** नक्षत्रविदों ने शताब्दियों/सहस्राब्दियों तक गम्भीरता से सायन सूर्य की खगोलीय स्थिति-सापेक्ष ऋतुओं की प्रवृत्ति-निवृत्ति आदि का सूक्ष्मता से पर्यवेक्षण (Observation) किया है, **जिसके परिणामस्वरूप, ये छः ऋतुएं अन्तिमरूप से इस प्रकार परिभाषित हुई हैं-**

सायन सूर्य का मीन-मेष में स्थितिकाल = वसन्त ऋतु।
सायन सूर्य का वृष-मिथुन में स्थितिकाल = ग्रीष्म ऋतु।
सायन सूर्य का कर्क-सिंह में स्थितिकाल = वर्षा ऋतु।
सायन सूर्य का कन्या-तुला में स्थितिकाल = शरद ऋतु।
सायन सूर्य का वृश्चिक-धनु में स्थितिकाल = हेमन्त ऋतु।
सायन सूर्य का मकर-कुम्भ में स्थितिकाल = शिशिर ऋतु।

ठीक, यही बात **'सूर्यसिद्धान्त'**कार ने भी इस पद्य में कही है-

" भानोः मकरसंक्रान्तेः षण्मासा उत्तरायणम्।
कर्क्यादेस्तु तथैव स्यात् षण्मासाःदक्षिणायनम्।।
द्विराशिमाना ऋतवस्ततोऽपि शिशिरादयः।
मेषादयो द्वादशैते मासास्तैरेव वत्सरः।।"

वसिष्ठसंहिता भी यही कहती है-

"मकरादिराशिषट्कमुत्तरायणं कर्कटादिकं याम्यम्।
राशिद्वयार्क-भोगात् षड् ऋतवः शिशिरादयः क्रमशः।।"

'ज्योतिर्विदाभरण' कार ने भी इसी मत की पुष्टि की है–

> "सौम्यायनात्स्यात् शिशिरो मधुस्ततःनिदाघकोऽपागयनाननात् क्रमात्।
> वर्षा शरत् स्युः हिमसंघवानिति द्युरात्रके षड् ऋतवः दिवौकसाम्।।"

'रत्नमाला' कार भी 'मीन–मेषयोः भानौ ....' आदि को क्रमशः वसन्तादि ऋतुएं मानता है–

> "मृगादि राशिद्वय– भानुभोगात् रसर्तवः स्युः शिशिरो वसन्तः।
> ग्रीष्मश्च वर्षा च शरच्च तद्वत् हेमन्त नामा कथितोऽथ षष्ठः।।"

देखिए– इन उपरोक्त किसी भी आचार्य ने वसन्त आदि ऋतुओं में सूर्य की द्विविध स्थिति की चर्चा नहीं की है। सूर्य की केवल एक ही राशियुगल में स्थिति को एक ऋतु का प्रवर्तक माना है। कहने की आवश्यकता नहीं है–सूर्य के ये राशियुगल सायन हैं।

किञ्च–यदि **"वादिपरितोषन्यायेन"** सायन मेष–वृषस्थ सूर्य के काल (21 मार्च से 21 मई तक के काल) को वसन्त मान भी लें तो स्पष्टतः अनुभव का अपलाप होगा, क्योंकि मई मास में तो उत्तर भारत में बहुत्र 40°–42° C से भी अधिक तापमान हो जाता है। इसे कोई भी वसन्त जैसी मनोहारी ऋतु मानने को तैयार नहीं होगा, जबकि मीन–मेषस्थ सूर्य (21 फरवरी से 21 अप्रैल तक) का काल आदर्शरूप में वसन्त **(वसन्ति लोका अस्मिन् सुखेन–इति)** होता है। यह भी ध्यातव्य है– वसन्तसम्पात (Spring Equinox) भी मीन–मेषात्मक वसन्त के ठीक मध्य में पड़ता है। शरद् ऋतु के बारे में भी ठीक यही बात है। यहां भी शरत्सम्पात सायन कन्या–तुलास्थ सूर्यकाल के ठीक मध्य में ही पड़ता है। इससे भी **"सायन मीन–मेषयोः वसन्तः"** आदि का ही समर्थन होता है।

सारांश यह है कि– इस विषय में आपका मन्तव्य असैद्धान्तिक है।

तिथि से अंग्रेज़ी तारीख का ज्ञान

[यह लेख पहले भी श्रीमार्त्तण्ड पंचांग(सं. 2037 वि.) में प्रकाशित हो चुका है। बहुत से लोगों को प्राचीन जन्मपत्र आदि में दी गई जन्मतिथि के दिन अंग्रेज़ी तारीख जानने की समस्या उपस्थित होती है। उनके अनुरोध पर यह लेख यहां पुनः प्रकाशित किया जा रहा है।]

आज से लगभग 50–60 वर्ष पूर्व तक भारत में अंग्रेज़ी (Gregorian) तारीखों के स्थान पर देसी प्रविष्टे एवं तिथियों का ही अधिकतर प्रयोग होता था। किसी देसी प्रविष्टे के दिन अंग्रेज़ी तारीख निकालने की विधि सं. 2036 वि. के पंचांग में दे चुके हैं। अब हम यहां किसी तिथि की अंग्रेज़ी तारीख ज्ञात करने की अत्यन्त सरल विधि दे रहे हैं। आगामी पृष्ठों पर तीन सारणियां दी जा रही हैं। इनकी सहायता से शकाब्द[1] (शक संवत्) 1801 से शकाब्द 1927 तक की किसी भी तिथि की अंग्रेज़ी तारीख बहुत ही सरलता से जानी जा सकती है। विधि इस प्रकार है–

पृष्ठ 280 पर दी गई **सारणी नं. (1)** में शकाब्द के आगे चैत्रशुक्ल प्रतिपदा का ईस्वी सन् लिखा गया है। इसके आगे 'दिनगण' दिया गया है, जो चैत्रशुक्ल प्रतिपदा के दिन ईस्वी सन् की बीती तारीखों को बतलाता है। इसके आगे 'अधिकमास' कॉलम में अधिकमास लिखा गया है। यदि इस कॉलम में कुछ नहीं लिखा हो तो समझना चाहिए, वह शकाब्द **'सामान्यवर्ष'** (अर्थात् जिसमें कोई अधिकमास नहीं, ऐसा वर्ष) है।

जैसे– 1801 शकाब्द के आगे ई. सन् 1879, दिनगण 81 और अधिकमास आश्विन लिखा है। इसका अर्थ है कि–शकाब्द 1801 की चैत्रशुक्ल प्रतिपदा को ई. सन् 1879 था और इस दिन सन् 1879 की 81 तारीखें बीत चुकी थीं। किंच– शकाब्द 1801 में आश्विन अधिकमास था।

सारणी नं. (1) से अपने अभीष्ट शकाब्द के आगे लिखा ईस्वी सन्, दिनगण और अधिकमास ज्ञात करें।

पृष्ठ 281 पर दी गई **सारणी नं. (2)** से अपनी अभीष्ट तिथि के आगे और अभीष्ट मास के नीचे लिखी संख्या लेकर उसे सारणी नं. (1) से लिए गए दिनगण में जोड़ दें। जोड़ने पर जो संख्या मिले, उसे पृष्ठ 282 पर दी गई सारणी नं. (3) में देखें। जिस तारीख को यह संख्या **सारणी नं. (3)** में लिखी है, वह उस तिथि की लगभग अंग्रेज़ी तारीख है। इस अंग्रेज़ी तारीख में एक या दो दिन का अन्तर हो सकता है। इस अन्तर को जानने के लिए पृष्ठ 283 पर दिए गए **'200 वर्ष का कैलेण्डर'** की सहायता से इस अंग्रेज़ी तारीख का वार ज्ञात कीजिए। अगर यह वार आपकी तिथि के वार से मेल खाता है तो इस अंग्रेज़ी तारीख को ठीक समझना चाहिए, नहीं तो अपनी तिथि के वार के अनुसार इस अंग्रेज़ी तारीख में 1 या 2 दिन (जितने वारों का अन्तर हो, उतने दिन) जोड़ या घटाकर ठीक अंग्रेज़ी तारीख मालूम कर लेनी चाहिए।

ध्यान दें– शकाब्द 1885 और 1904 क्षयमास वाले वर्ष हैं। क्षयमास होने पर क्षयमास से लगभग 2–3 मास पहले और बाद में दो असंक्रान्ति मास हुआ करते हैं। शास्त्रकारों ने क्षयमास से पूर्ववर्ती असंक्रान्त (संक्रान्ति-रहित) मास को 30 दिन का मास ही माना है। उसे अधिकमास नहीं माना। क्षय से उत्तरवर्ती मास को ही उन्होंने 60 दिन का मास (अर्थात् अधिकमास) माना है। हमने इसी के अनुसार **सारणी नं. (1)** में इन शकाब्दों में क्षयमास से पूर्ववर्ती असंक्रान्तमास को अधिकमास न लिखकर उत्तरवर्ती असंक्रान्तमास को ही अधिकमास लिखा है।

सारणी नं. (2) का प्रयोग करते समय यह ध्यान रखें–

आपका शकाब्द यदि **'सामान्य वर्ष'** (बिना अधिकमास वाला) है तो अपना महीना सबसे पहली **('सामान्यवर्ष' वाली)** पंक्ति में देखें, अन्यथा आपके शकाब्द में जो अधिकमास हो, उसी अधिकमास(अधिमास) वाली पंक्ति में उसे देखना होगा।

किंच– यह सारणी [**सारणी नं. (2)**] दो भागों में विभक्त की गई है। शुक्लपक्ष की तिथियों के लिए भाग–1 और कृष्णपक्ष की तिथियों के लिए भाग–2 प्रयोग में लाइए। यह भी ध्यान में रखिए– यहां हमने

---

[1] *शकाब्द में 135 जोड़ने पर विक्रम संवत् बन जाता है।*

कृष्णादि मास ही लिए हैं, जो उत्तर भारत में प्रचलित हैं, शुक्लादि मास नहीं।

आगे दिए गए उदाहरण देखिए–

उदाहरण (1)– शकाब्द 1802 (विक्रम सं. 1937) की भाद्रपद शुक्ल पंचमी (5) गुरुवार को अग्रेज़ी तारीख मालूम कीजिए ?

सारणी नं. (1) में शकाब्द 1802 के आगे ई. सन् 1880, दिनगण 100 लिखा है। अधिकमास वाला कॉलम खाली है, अतः यह शकाब्द **'सामान्य वर्ष'** है। **सारणी नं. (2)** (भाग–1, शुक्लपक्ष) में सामान्यवर्ष वाली पंक्ति के आगे **लिखे भाद्रपद के नीचे तिथि 5 के आगे 153 लिखा है। इसे** (153 को) दिनगण (100) **में जोड़ने पर 253 हुए। सारणी नं. (3) में 253 संख्या सितम्बर की 10 तारीख में लिखी है।** अतः **शकाब्द 1802 की भाद्र. शुक्ल पंचमी गुरुवार को ई. सन् 1880 के सितम्बर की लगभग 10 तारीख थी। '200 वर्ष का कैलेण्डर' से पता चला, कि– सन् 1880 ई. की 10 सितम्बर को शुक्रवार था।** अतः स्पष्ट हो गया कि– **शकाब्द 1802 की भाद्रपद शुक्ल पंचमी गुरुवार को सन् 1880 ई. के सितम्बर की 9 तारीख थी।**

उदाहरण (2)– **शकाब्द 1850 (वि. सं. 1985) की आश्वि.** कृष्ण 8 (अष्टमी) **शनिवार की अंग्रेज़ी तारीख ज्ञात कीजिए ?**

सारणी नं. (1) में शकाब्द 1850 के आगे ई. सन् 1928, दिनगण 81 और अधिकमास **श्रावण लिखा है।** सारणी नं. (2) (**भाग–2, कृष्णपक्ष**) में "श्रावणाधिमास वर्ष"वाली पंक्ति में लिखे गए आश्विन के नीचे तिथि 8 के आगे 200 मिले। इन्हें दिनगण 81 में जोड़ने पर 281 हुए। **सारणी नं. (3)** में 281 संख्या 8 अक्तूबर को लिखी है। इस प्रकार शकाब्द 1850 की आश्विन कृष्ण 8 शनिवार को ई. सन् 1928 की 8 अक्तूबर मिली। यह **'लगभग तारीख'** है। **'200 वर्ष का कैलेण्डर'** से पता चलता है, कि– ई. सन् 1928 की 8 अक्तूबर को चन्द्रवार था। क्योंकि, शकाब्द 1850 की आश्विन कृष्ण 8 को शनिवार था, अतः स्पष्ट है, कि– इस तिथि के दिन 6 अक्तूबर था।

इधर भी ध्यान दें– शकाब्द के प्रारम्भ में (चैत्रशुक्ल प्रतिपदा को) जो ई. सन् होता है, वह शकाब्द के अन्त तक नहीं रहता। लगभग पौष मास में यह बदल जाता है। अतः जब **सारणी नं. (1)** से लिए गए 'दिनगण' में सारणी नं. (2) से मिली संख्या जोड़ने पर योगफल 365 से अधिक हो जाए तो उस (योगफल) में से 365 घटाकर शेष-संख्या को **सारणी नं. (3)** में देखकर अंग्रेज़ी तारीख का निर्णय करना चाहिए। इस स्थिति में **सारणी नं. (1)** में आपके शकाब्द के आगे लिखे ई. सन् में एक जोड़कर, उसे अपना ई. सन् समझना चाहिए।

यहां एक बात और ध्यान में रखिए– यदि 365 घटाने पर शेष बची संख्या **सारणी नं. (3)** में फरवरी के बाद के महीनों (1 मार्च से 31 दिसम्बर तक) की किसी तारीख में मिल रही हो तो लीप इयर होने पर* इस (शेष बची) संख्या में से एक घटाकर सारणी नं. (3) से अंग्रेजी तारीख ज्ञात करनी चाहिए। इस स्थिति वाले ये दो उदाहरण (उदाहरण 3 और 4) देखिए–

उदाहरण (3)– शकाब्द 1877 की माघकृष्ण 10 (दशमी) चन्द्रवार को अंग्रेज़ी तारीख ज्ञात करें ?

सारणी नं. (1) में शकाब्द 1877 के आगे ई. सन् 1955, दिनगण 83 और अधिकमास भाद्रपद है। **सारणी नं. (2)** (भाग–2, कृष्णपक्ष) में **'भाद्रपदाधिमास–वर्ष'** वाली पंक्ति में लिखे माघ के नीचे लिखी तिथि 10 के आगे 320 है। इसे दिनगण 83 में जोड़ने पर 403 हुए। क्योंकि, यह संख्या 365 से अधिक है, इसलिए इसमें से 365 घटाने पर शेष बची संख्या 38 को **सारणी नं. (3)** में देखा तो वह 7 फरवरी मिली। यह तारीख **'लगभग'** है। कैलेण्डर से 1956 की 7 फरवरी को मंगलवार मिला, अतः स्पष्ट है, शकाब्द 1877 की माघ कृ. 10 चन्द्रवार को सन् 1956 की 6 फरवरी थी।

ध्यान दें– इस उदाहरण में हमने **सारणी नं. 1** से मिले ई. सन् में एक जोड़कर उसे स्वीकार किया है, क्योंकि यहां **सारणी नं. (1)** से मिले दिनगण और **सारणी नं. (2)** से मिली संख्या का योग 365 से अधिक था।

(इससे सम्बद्ध एक और उदाहरण आगे पृष्ठ 282 पर देखें।)

* *अर्थात् – सारणी नं. (1) में आपके शकाब्द के आगे लिखे ईस्वी सन् में एक जोड़ने पर जो आपका ईस्वी सन् बना है, यदि वह लीप इयर हो तो।*

सारणी नं. (1)

(तिथि से तारीखज्ञान)

शकाब्द	ईस्वी सन्	दिनगण	अधिक मास	शकाब्द	ईस्वी सन्	दिनगण	अधिक मास	शकाब्द	ईस्वी सन्	दिनगण	अधिक मास
1801	1879	81	आश्विन	1844	1922	87		1887	1965	91	
1802	1880	100		1845	1923	76	ज्येष्ठ	1888	1966	81	श्रावण
1803	1881	88		1846	1924	95		1889	1967	99	
1804	1882	78	श्रावण	1847	1925	83		1890	1968	88	
1805	1883	97		1848	1926	73	चैत्र	1891	1969	77	आषाढ़
1806	1884	87		1849	1927	92		1892	1970	96	
1807	1885	75	ज्येष्ठ	1850	1928	81	श्रावण	1893	1971	85	
1808	1886	94		1851	1929	99		1894	1972	75	वैशाख
1809	1887	83		1852	1930	89		1895	1973	93	
1810	1888	72	चैत्र	1853	1931	78	आषाढ़	1896	1974	82	भाद्रपद
1811	1889	90		1854	1932	96		1897	1975	101	
1812	1890	79	भाद्रपद	1855	1933	85		1898	1976	90	
1813	1891	98		1856	1934	74	वैशाख	1899	1977	78	श्रावण
1814	1892	88		1857	1935	93		1900	1978	97	
1815	1893	77	आषाढ़	1858	1936	82	भाद्रपद	1901	1979	86	
1816	1894	96		1859	1937	101		1902	1980	76	ज्येष्ठ
1817	1895	85		1860	1938	90		1903	1981	94	
1818	1896	74	ज्येष्ठ	1861	1939	80	श्रावण	1904	1982	84	फाल्गुन
1819	1897	92		1862	1940	98		1905	1983	103	
1820	1898	81	आश्विन	1863	1941	86		1906	1984	92	
1821	1899	100		1864	1942	75	ज्येष्ठ	1907	1985	80	श्रावण
1822	*1900	89		1865	1943	94		1908	1986	99	
1823	1901	79	श्रावण	1866	1944	84		1909	1987	88	
1824	1902	98		1867	1945	73	चैत्र	1910	1988	77	ज्येष्ठ
1825	1903	88		1868	1946	92		1911	1989	95	
1826	1904	77	ज्येष्ठ	1869	1947	81	श्रावण	1912	1990	85	
1827	1905	94		1870	1948	100		1913	1991	75	वैशाख
1828	1906	83		1871	1949	88		1914	1992	94	
1829	1907	73	चैत्र	1872	1950	77	आषाढ़	1915	1993	82	भाद्रपद
1830	1908	92		1873	1951	96		1916	1994	100	
1831	1909	80	श्रावण	1874	1952	85		1917	1995	90	
1832	1910	99		1875	1953	74	वैशाख	1918	1996	79	आषाढ़
1833	1911	89		1876	1954	93		1919	1997	97	
1834	1912	78	आषाढ़	1877	1955	83	भाद्रपद	1920	1998	86	
1835	1913	96		1878	1956	102		1921	1999	76	ज्येष्ठ
1836	1914	85		1879	1957	90		1922	2000	95	
1837	1915	74	वैशाख	1880	1958	79	श्रावण	1923	2001	84	आश्विन
1838	1916	93		1881	1959	98		1924	2002	102	
1839	1917	82	भाद्रपद	1882	1960	87		1925	2003	91	
1840	1918	101		1883	1961	75	ज्येष्ठ	1926	2004	80	श्रावण
1841	1919	90		1884	1962	94		1927	2005	98	
1842	1920	80	श्रावण	1885	1963	84					
1843	1921	98		1886	1964	73	चैत्र				

*ध्यान रहे— यद्यपि 4 से पूरी तरह विभाजित होने वाले ईस्वी सन् 'लीप इयर' होते हैं, लेकिन विशेष नियम के अनुसार सन् 1900 ई. लीप इयर नहीं है।

सारणी नं. (2) (तिथि से तारीखज्ञान) भाग–1 (शुक्लपक्ष के लिए)

सामान्य वर्ष		चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	....
चैत्राधिमास वर्ष		प्र. चैत्र	द्वि.चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
वैशाखाधिमास वर्ष		चैत्र	प्र.वैशा.	द्वि.वैशा.	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
ज्येष्ठाधिमास वर्ष		चैत्र	वैशाख	प्र.ज्येष्ठ	द्वि.ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
आषाढाधिमास वर्ष		चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	प्र.आषा.	द्वि.आषा.	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
श्रावणाधिमास वर्ष		चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	प्र.श्राव.	द्वि.श्राव.	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
भाद्रपदाधिमास वर्ष		चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	प्र.भाद्र.	द्वि.भाद्र.	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
आश्विनाधिमास वर्ष		चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	प्र.आश्वि.	द्वि.आश्वि.	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
फाल्गुनाधिमास वर्ष		चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	प्र.फाल्गु.	द्वि.फाल्गु.
तिथि	1	1	31	60	90	119	149	178	208	237	267	296	326	355
"	2	2	32	61	91	120	150	179	209	238	268	297	327	356
"	3	3	33	62	92	121	151	180	210	239	269	298	328	357
"	4	4	34	63	93	122	152	181	211	240	270	299	329	358
"	5	5	35	64	94	123	153	182	212	241	271	300	330	389
"	6	6	36	65	95	124	154	183	213	242	272	301	331	360
"	7	7	37	66	96	125	155	184	214	243	273	302	332	361
"	8	8	38	67	97	126	156	185	215	244	274	303	333	362
"	9	9	39	68	98	127	157	186	216	245	275	304	334	363
"	10	10	40	69	99	128	158	187	217	246	276	305	335	364
"	11	11	41	70	100	129	159	188	218	247	277	306	336	365
"	12	12	42	71	101	130	160	189	219	248	278	307	337	366
"	13	13	43	72	102	131	161	190	220	249	279	308	338	367
"	14	14	44	73	103	132	162	191	221	250	280	309	339	368
"	15	15	45	74	104	133	163	192	222	251	281	310	340	369

सारणी नं. (2) (तिथि से तारीखज्ञान) भाग–2 (कृष्णपक्ष के लिए)

सामान्य वर्ष		वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र	– –
चैत्राधिमास वर्ष		द्वि.चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
वैशाखाधिमास वर्ष		प्र.वैशा.	द्वि.वैशा.	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
ज्येष्ठाधिमास वर्ष		वैशाख	प्र.ज्येष्ठ	द्वि.ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
आषाढाधिमास वर्ष		वैशाख	ज्येष्ठ	प्र.आषा.	द्वि.आषा.	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
श्रावणाधिमास वर्ष		वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	प्र.श्राव.	द्वि.श्राव.	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
भाद्रपदाधिमास वर्ष		वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	प्र.भाद्र.	द्वि.भाद्र.	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
आश्विनाधिमास वर्ष		वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	प्र.आश्वि.	द्वि.आश्वि.	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	प्र.फाल्गु	चैत्र
फाल्गुनाधिमास वर्ष		वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	प्र.फाल्गु	द्वि.फाल्गु	चैत्र
तिथि	1	16	46	75	105	134	164	193	223	252	282	311	341	370
"	2	17	47	76	106	135	165	194	224	253	283	312	342	371
"	3	18	48	77	107	136	166	195	225	254	284	313	343	372
"	4	19	49	78	108	137	167	196	226	255	285	314	344	373
"	5	20	50	79	109	138	168	197	227	256	286	315	345	374
"	6	21	51	80	110	139	169	198	228	257	287	316	346	375
"	7	22	52	81	111	140	170	199	229	258	288	317	347	376
"	8	23	53	82	112	141	171	200	230	259	289	318	348	377
"	9	24	54	83	113	142	172	201	231	260	290	319	349	378
"	10	25	55	84	114	143	173	202	232	261	291	320	350	379
"	11	26	56	85	115	144	174	203	233	262	292	321	351	380
"	12	27	57	86	116	145	175	204	234	263	293	322	352	381
"	13	28	58	87	117	146	176	205	235	264	294	323	353	382
"	14	29	59	88	118	147	177	206	236	265	295	324	354	383
"	30	30	60	89	119	148	178	207	237	266	296	325	355	384

सारणी नं. (3)
(तिथि से तारीखज्ञान)

तारीख	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
1	1	32	60	91	121	152	182	213	244	274	305	335
2	2	33	61	92	122	153	183	214	245	275	306	336
3	3	34	62	93	123	154	184	215	246	276	307	337
4	4	35	63	94	124	155	185	216	247	277	308	338
5	5	36	64	95	125	156	186	217	248	278	309	339
6	6	37	65	96	126	157	187	218	249	279	310	340
7	7	38	66	97	127	158	188	219	250	280	311	341
8	8	39	67	98	128	159	189	220	251	281	312	342
9	9	40	68	99	129	160	190	221	252	282	313	343
10	10	41	69	100	130	161	191	222	253	283	314	344
11	11	42	70	101	131	162	192	223	254	284	315	345
12	12	43	71	102	132	163	193	224	255	285	316	346
13	13	44	72	103	133	164	194	225	256	286	317	347
14	14	45	73	104	134	165	195	226	257	287	318	348
15	15	46	74	105	135	166	196	227	258	288	319	349
16	16	47	75	106	136	167	197	228	259	289	320	350
17	17	48	76	107	137	168	198	229	260	290	321	351
18	18	49	77	108	138	169	199	230	261	291	322	352
19	19	50	78	109	139	170	200	231	262	292	323	353
20	20	51	79	110	140	171	201	232	263	293	324	354
21	21	52	80	111	141	172	202	233	264	294	325	355
22	22	53	81	112	142	173	203	234	265	295	326	356
23	23	54	82	113	143	174	204	235	266	296	327	357
24	24	55	83	114	144	175	205	236	267	297	328	358
25	25	56	84	115	145	176	206	237	268	298	329	359
26	26	57	85	116	146	177	207	238	269	299	330	360
27	27	58	86	117	147	178	208	239	270	300	331	361
28	28	59	87	118	148	179	209	240	271	301	332	362
29	29	60	88	119	149	180	210	241	272	302	333	363
30	30	— —	89	120	150	181	211	242	273	303	334	364
31	31	— —	90	— —	151	— —	212	243	— —	304	— —	365

उदाहरण (4)– शकाब्द 1897 की फाल्गुन शुक्ल 1 (प्रतिपदा) चन्द्रवार को कौन–सी अंग्रेज़ी तारीख थी ?

सारणी नं. (1) में शकाब्द 1897 के आगे ई. सन् 1975, दिनगण 101 है। इस शकाब्द में अधिकमास नहीं है, यह **'सामान्यवर्ष '** है। **सारणी नं. (2) (भाग–1, शुक्लपक्ष)** में **'सामान्यवर्ष'** वाली पंक्ति में लिखे फाल्गुन के नीचे तिथि 1 के आगे 326 है। इन्हें 101 में जोड़ने पर प्राप्त 427 हुए। इनमें से 365 घटाने पर शेष 62 मिले। क्योंकि, हमने 365 घटाए हैं, अतः हमारा ई. सन् 1976 हुआ। **सारणी नं. (3)** में 62 संख्या 3 मार्च को (अर्थात् फरवरी के बाद के महीने में) मिल रही है और हमारा ई. सन् 1976 लीप इयर भी है, अतः इस शेष बची 62 संख्या में से एक घटाकर मिली 61 संख्या को **सारणी नं. (3)** में देखा तो यह (61) संख्या 2 मार्च को मिली। इसका अभिप्राय हुआ कि– शकाब्द 1897 की फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा को ई. सन् 1976 की लगभग 2 मार्च थी। लेकिन कैलेण्डर बतलाता है कि– ई. सन् 1976 की 2 मार्च को मंगलवार था, अतः हमारी इस तिथि को 1 मार्च सिद्ध हुआ।

---

200 वर्ष का कैलेण्डर

ईस्वी सन्	ईस्वी सन्	ईस्वी सन्	ईस्वी सन्	ईस्वी सन्	ईस्वी सन्	ईस्वी सन्	ईस्वी सन्	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
1850	1878		1918	1946	1974	2002	2030	2	5	5	1	3	6	1	4	0	2	5	0
1851	1879		1919	1947	1975	2003	2031	3	6	6	2	4	0	2	5	1	3	6	1
1852	1880		1920	1948	1976	2004	2032	4	0	1	4	6	2	4	0	3	5	1	3
1853	1881		1921	1949	1977	2005	2033	6	2	2	5	0	3	5	1	4	6	2	4
1854	1882		1922	1950	1978	2006	2034	0	3	3	6	1	4	6	2	5	0	3	5
1855	1883		1923	1951	1979	2007	2035	1	4	4	0	2	5	0	3	6	1	4	6
1856	1884		1924	1952	1980	2008	2036	2	5	6	2	4	0	2	5	1	3	6	1
1857	1885		1925	1953	1981	2009	2037	4	0	0	3	5	1	3	6	2	4	0	2
1858	1886		1926	1954	1982	2010	2038	5	1	1	4	6	2	4	0	3	5	1	3
1859	1887		1927	1955	1983	2011	2039	6	2	2	5	0	3	5	1	4	6	2	4
1860	1888		1928	1956	1984	2012	2040	0	3	4	0	2	5	0	3	6	1	4	6
1861	1889	1901	1929	1957	1985	2013	2041	2	5	5	1	3	6	1	4	0	2	5	0
1862	1890	1902	1930	1958	1986	2014	2042	3	6	6	2	4	0	2	5	1	3	6	1
1863	1891	1903	1931	1959	1987	2015	2043	4	0	0	3	5	1	3	6	2	4	0	2
1864	1892	1904	1932	1960	1988	2016	2044	5	1	2	5	0	3	5	1	4	6	2	4
1865	1893	1905	1933	1961	1989	2017	2045	0	3	3	6	1	4	6	2	5	0	3	5
1866	1894	1906	1934	1962	1990	2018	2046	1	4	4	0	2	5	0	3	6	1	4	6
1867	1895	1907	1935	1963	1991	2019	2047	2	5	5	1	3	6	1	4	0	2	5	0
1868	1896	1908	1936	1964	1992	2020	2048	3	6	0	3	5	1	3	6	2	4	0	2
1869	1897	1909	1937	1965	1993	2021	2049	5	1	1	4	6	2	4	0	3	5	1	3
1870	1898	1910	1938	1966	1994	2022	2050	6	2	2	5	0	3	5	1	4	6	2	4
1871	1899	1911	1939	1967	1995	2023		0	3	3	6	1	4	6	2	5	0	3	5
1872		1912	1940	1968	1996	2024		1	4	5	1	3	6	1	4	0	2	5	0
1873		1913	1941	1969	1997	2025		3	6	6	2	4	0	2	5	1	3	6	1
1874		1914	1942	1970	1998	2026		4	0	0	3	5	1	3	6	2	4	0	2
1875		1915	1943	1971	1999	2027		5	1	1	4	6	2	4	0	3	5	1	3
1876		1916	1944	1972	2000	2028		6	2	3	6	1	4	6	2	5	0	3	5
1877	1900	1917	1945	1973	2001	2029		1	4	4	0	2	5	0	3	6	1	4	6

अपने ईस्वी सन् के आगे और अभीष्ट महीने के नीचे लिखी संख्या को अपनी अभीष्ट तारीख की संख्या में जोड़कर सात से भाग देने पर जो शेष बचेगा, वह उस तारीख का वार होगा। 1 बचे तो रविवार, 2 बचे तो सोमवार.... ....इत्यादि समझें। 0 बचे तो शनिवार समझना चाहिए।

जैसे– ई. सन् 1908 की 26 अक्तूबर को वार मालूम करना है। ई. सन् 1908 के आगे अक्तूबर के नीचे 4 संख्या मिली। इसे तारीख की संख्या 26 में जोड़ने पर 30 संख्या हुई। इसे सात से भाग देने पर शेष 2 बचे। इसका अभिप्राय हुआ, – सन् 1908 ई. की 26 अक्तूबर को सोमवार था।

दैनिक व्यवहार के लिए वार के ज्ञान का सरल ढंग

सभी लोगों को हररोज वार की जरूरत पड़ती है। इसके लिए अपने वर्तमान (मौजूदा) ईस्वी सन् के आगे और वर्तमान महीने के नीचे इस कोष्ठक में दी गई संख्या को एक महीने तक (जब तक वह महीना समाप्त नहीं होता तब तक) याद रखिए। इस संख्या को हम उस मास का 'ध्रुवांक' कहते हैं। जिसदिन वार के बारे में सन्देह हो उसदिन की तारीख की संख्या को इस 'ध्रुवांक' में जोड़कर सात का भाग देकर शेष बची संख्या से उसदिन की संख्या का वार तुरन्त जाना जा सकता है।

सन्देहास्पद तारीख– जब किसी दिन का वार निश्चित रूप से ज्ञात हो, लेकिन यह निश्चय न हो सके कि आज अमुक (फलां) तारीख है या अमुक। ऐसी स्थिति में दोनों तारीखों में से किसी एक को शुद्ध मान लें और उसमें वर्तमान मास के 'ध्रुवांक' जोड़कर 7 का भाग देकर वार मालूम करें। अगर वह वार उस दिन के वार से मिलता है तो यह स्पष्ट है– उसदिन वही तारीख है, जिसे आपने शुद्ध माना है, नहीं तो वार के अनुसार उस तारीख में एक जोड़ने या घटाने से उसदिन की ठीक तारीख मालूम होगी।

****

भारतेतर देशों में व्रत–पर्व–तिथियों का निर्णय

मैने अपनी पुस्तक ''व्रतपर्वविवेक'' में **''स्थान(भूपृष्ठ) भेद से विश्व के विभिन्न देशों में हिन्दू व्रतपर्वो की तारीखों में अन्तर''** शीर्षक लेख के अन्तर्गत विस्तृत विमर्श में यह सुझाव दिया है कि– हिन्दू व्रत–पर्वो को विश्व के सभी देश–प्रदेशों में उन्हीं तारीखों को मनाया जाना चाहिए, जिन तारीखों को वे भारत में मनाए जाते हैं। स्थानीय सूर्योदयास्त–तिथ्यादिकालानुसारी तारीख को इन्हें मनाने में अनेक ऐसी असमाधेय या दुःसमाधेय समस्याएं पैदा होती हैं, जिनका निर्देश विस्तारपूर्वक मैने उपरोक्त लेख में किया है। पुनरपि, ऐसे धर्मनिष्ठ कुछ भारतीय भी विदेशों में बसे हैं, जो स्थानीय सूर्योदयास्त आदि के आधार पर ही इन व्रतपर्वो की तारीखों के निर्धारण का आग्रह रखते हैं। ऐसे महानुभावों के लिए व्रत–पर्वो की स्थानीय तारीख के निर्धारण की प्रक्रिया नीचे सोदाहरण स्पष्ट की जा रही है–

भारतीय पंचाग में दिए गए अभीष्ट तिथि (व्रततिथि) के प्रारम्भ एवं समाप्तिकालों (भा. स्टैं. टा.) को स्वक्षेत्रीय स्टैं. टा. (Z.S.T.) में बदल लें। यदि कोई नक्षत्र उस व्रत–पर्व के निर्धारण में प्रयुक्त हो रहा है * तो उस नक्षत्र के प्रारम्भ और समाप्तिकालों (भा. स्टैं. टा.) को भी स्वक्षेत्रीय स्टैं. टा. (Z.S.T.) में बदल लीजिए।

क्योंकि, व्रततिथि की मध्याह्न, अपराह्न, प्रदोष आदि कर्मकालों में व्याप्ति भी व्रततिथि (व्रत की तारीख) की निर्णायक होती है, अतः उस दिन का सूर्योदयास्तकाल* भी स्वक्षेत्रीय स्टैं. टा. में ज्ञात करें और इसी के अनुसार स्वक्षेत्रीय मध्याह्न आदि कर्मकालों का निर्णय करना होगा।

कई व्रत–पर्व (श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीकृष्णजन्माष्टमी आदि) ऐसे भी हैं, जिनका निर्णय स्थानीय चन्द्रोदय पर भी निर्भर करता है। ऐसे व्रतपर्वो की स्थानीय तारीख के निर्धारण के लिए व्रततिथि के प्रारम्भ एवं समाप्ति की (दोनों) तारीखों का स्थानीय चन्द्रोदयकाल * भी स्वक्षेत्रीय स्टैं. टा. (Z.S.T.) में जानना होगा।

उपरोक्त प्रक्रिया करने के बाद व्रततिथि की स्थानीय मध्याह्न, अपराह्न, प्रदोष आदि कर्मकाल या चन्द्रोदयकाल में व्याप्ति, अव्याप्ति आदि तथा अपेक्षा होने पर पूर्वविद्धा, परविद्धा आदि का भी विचार करते हुए, ठीक उसी तरह व्रत–पर्व की तारीख का निर्णय करें, जिस प्रकार **'व्रतपर्व–विवेक'** में **'व्रत–पर्व–तिथिनिर्णय'** प्रकरण (2) में निर्दिष्ट किया गया है।

स्पष्टता के लिए हम यहां **इसके तीन उदाहरण दे रहे हैं–**

उदाहरण (i)– वि. संवत् 2062 में **श्रीरामनवमी** भारत में 18 अप्रैल, '05 ई. को मनाई गई। यह पर्व लण्डन (U.K.) में स्थानीय सूर्योदयास्त आदि के अनुसार किस दिन (तारीख को) होना चाहिए था, यह निर्धारित करना है।

क्योंकि, रामनवमी व्रत मध्याह्नव्यापिनी चैत्र शुक्ल नवमी के दिन होता है, अतः हमें यह देखना है

---

* जैसे– विजयादशमी में श्रवण और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी में रोहिणी नक्षत्र भी अनेक बार निर्धारक होता है।

* बहुधा स्थानीय सूर्योदयास्त एवं चन्द्रोदयकाल–साधन की ज़रूरत ही नहीं पड़ती, क्योंकि स्वक्षेत्रीय स्टैं. टा. वाले तिथि एवं नक्षत्रों के प्रारम्भ–समाप्तिकाल से ही अनेकदा स्वयं स्पष्ट हो जाता है कि– अमुक तिथि–नक्षत्र की स्थानीय मध्याह्न, सायाह्न, प्रदोष या चन्द्रोदयकाल आदि में व्याप्ति/अव्याप्ति आदि है या नहीं। जैसा कि देखिए, यहां दिए गए उदाहरण (i) एवं (ii) में स्थानीय सूर्योदयास्त, चन्द्रोदयास्त की ज़रूरत ही नहीं पड़ी।

कि– लण्डन के सूर्योदयास्तानुसार वहां नवमी की मध्याह्न में व्याप्ति, अव्याप्ति आदि की क्या स्थिति है। तदनुसार ही लण्डन में इस पर्व की तारीख का निर्णय होगा। इसके लिए यह निम्नांकित प्रक्रिया होगी–

⊗ लण्डन का अक्षांश 51° 32′ (उ.)
⊗ लण्डन का रेखांश 0° 05′ (प.)

I.S.T. अनुसार नवमी का प्रारम्भ = 9 घं. 20 मि. (17 अप्रैल, 2005 ई.)
I.S.T. अनुसार नवमी की समाप्ति = 11 घं. 40 मि. (18 अप्रैल, 2005 ई.)

क्योंकि– लण्डन (U.K.) के S.T. (स्टैण्डर्ड टाईम)(G.M.T.) से I.S.T. का अन्तर = +5 घं. 30 मि. है–

अतः G.M.T. अनुसार नवमी का प्रारम्भ = 3 घं. 50 मि. (17 अप्रैल, 2005 ई.)
G.M.T. अनुसार नवमी की समाप्ति = 6 घं. 10 मि. (18 अप्रैल, 2005 ई.)

देखिए– यहां लण्डन के स्थानीय सूर्योदयास्तसाधन के बिना ही स्पष्ट है कि– यहां (लण्डन में) नवमी 17 अप्रैल, 2005 ई. को ही मध्याह्नव्यापिनी थी, अतः वहां स्थानीय मध्याह्नानुसार यह पर्व 2005 ई. में 17 अप्रैल को ही था।

उदाहरण (ii)– सं. 2062 वि. में **संकष्ट चतुर्थी** (माघ कृष्ण चतुर्थी) का व्रत भारत में 18 जनवरी, 2006 ई. को मनाया गया। Austin (Texas) U.S.A. में स्थानीय गणनानुसार यह पर्व कब होना चाहिए था, यह ज्ञात करना है।

क्योंकि, संकष्टचतुर्थी–व्रत का निर्धारण चन्द्रोदय के समय चतुर्थी की व्याप्ति, अव्याप्ति आदि पर निर्भर करता है। अतः हमें जानना होगा कि– यहां Austin में चतुर्थी की चन्द्रोदय के समय व्याप्ति, अव्याप्ति आदि अनुसार यह पर्व किस दिन सिद्ध होता है। इसका निर्णय इस तरह किया जाएगा–

Austin (Texas) का अक्षांश = 30° 16′ (उ.)
Austin (Texas) का रेखांश = 97° 44′ (प.)

I.S.T. अनुसार चतुर्थीप्रारम्भ = 22 घं. 18 मि. (17 जन., 2006 ई.)
I.S.T. अनुसार चतुर्थीसमाप्त = 1 घं. 02 मि. (19जन., 2006 ई.)

क्योंकि, Austin के Z.S.T. (C.S.T.) से I.S.T. का अन्तर = +11 घं. 30 मि. है–

अतः C.S.T. अनुसार चतुर्थी प्रारम्भ = 10 घं. 48 मि. (17 जन., 2006 ई.)
C.S.T. अनुसार चतुर्थी समाप्त = 13 घं. 32 मि. (18 जन., 2006 ई.)

यहां Austin में चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थी केवल 17 जनवरी, 2006 ई. को ही है– यह बिल्कुल स्पष्ट है– क्योंकि, कृष्णचतुर्थी के दिन चन्द्रोदय सूर्यास्त के 3–4 घण्टा बाद ही होता है, यहां Austin में चतुर्थी 17 जनवरी को सूर्यास्त के बाद पूरी रात्रि में भी विद्यमान है। इसप्रकार स्थानीय (Austin का) चन्द्रोदयकाल–साधन किए बिना ही स्पष्ट हो गया कि– यहां यह पर्व 17 जनवरी, 2006 ई. को था।

⊗ *यद्यपि यहां London और Austin वाले उदाहरणों में अक्षांश, रेखांश का प्रयोग नहीं हो पाया है। पुनरपि, गणितप्रक्रिया में इनका निर्देश करना ज़रूरी है, क्योंकि आवश्यकता पड़ने पर इन नगरों में स्थानीय सूर्य–चन्द्रोदयास्त–साधन के लिए इनकी ज़रूरत पड़ सकती है।*

उदाहरण (iii)– सं. 2062 वि. में **विजयादशमी** पर्व भारत में 12 अक्तूबर, 05 ई. को था। Sydney (Australia) में स्थानीय सूर्योदयास्तादि अनुसार इस पर्व की तारीख ज्ञात करनी है।

विजयादशमी (दशहरा) अपराह्णव्यापिनी आश्विन शुक्ल दशमी में मनाया जाता है। दशमी की दो दिन अपराह्णव्याप्ति–अव्याप्ति आदि की स्थितियों में श्रवण नक्षत्र की अपराह्ण आदि में व्याप्ति द्वारा भी इस पर्व की तारीख का निर्णय किया जाता है (देखें – ''व्रत–पर्व विवेक'' के ''व्रत–पर्व तिथिनिर्णय'' प्रकरण में 'विजयादशमी निर्णय')। अतः यहां दशमी के प्रारम्भ–समाप्तिकालों के साथ श्रवण नक्षत्र के प्रारम्भ–समाप्तिकाल भी हमें स्थानीय स्टैं. टा. में ज्ञात करने होंगे। इस प्रकार Sydney में इस पर्व की तारीख का निर्णय इस तरह किया जाएगा–

I.S.T. अनुसार दशमीप्रारम्भ = 9 घं. 13 मि. (12 अक्तू., 2005 ई.)
I.S.T. अनुसार दशमीसमाप्त = 6 घं. 43 मि. (13 अक्तू., 2005 ई.)

I.S.T. अनुसार श्रवणप्रारम्भ = 4 घं. 13 मि. (12 अक्तू., 2005 ई.)
I.S.T. अनुसार श्रवणसमाप्त = 2 घं. 30 मि. (13 अक्तू., 2005 ई.)

क्योंकि– Sydney के Z.S.T. से I.S.T. का अन्तर = –4 घं. 30 मि. है–

अतः Sydney के Z.S.T. अनुसार दशमीप्रारम्भ = 13 घं. 43 मि. (12 अक्तू., 2005 ई.)
Sydney के Z.S.T. अनुसार दशमीसमाप्त = 11 घं. 13 मि. (13 अक्तू., 2005 ई.)

Sydney के Z.S.T. अनुसार श्रवणप्रारम्भ = 8 घं. 43 मि. (12 अक्तू., 2005 ई.)
Sydney के Z.S.T. अनुसार श्रवणसमाप्त = 7 घं. 00 मि. (13 अक्तू., 2005 ई.)

Sydney में Z.S.T. अनुसार 12/13 अक्तूबर, 2005 ई. को अपराह्णकाल 12 घं. 58 मि. से 15 घं. 33 मि. तक है[⊙]। अतः स्पष्ट है– 12 अक्तूबर को Sydney में दशमी और श्रवण– दोनों अपराह्णव्यापी हैं, इसलिए यहां भी इस वर्ष विजयादशमी निर्विवादरूपेण 12 अक्तूबर, 2005 ई. को ही सिद्ध होती है। **ध्यान रहे**– Sydney में यद्यपि 13 अक्तूबर को दशमी त्रिमुहूर्त्त से अधिक है, लेकिन यहां श्रवण अपराह्णव्यापी नहीं है। अतः " **उदये दशमी किञ्चित्.......... सा तिथिः विजयाभिधा।।**"– इस वाक्य की प्रवृत्ति न होने से 13 अक्तूबर को विजयादशमी का योग यहां नहीं बनता।

इस प्रकार भारतेतर किसी भी देश के अभीष्ट नगर में स्थानीय सूर्योदयास्त, चन्द्रोदय आदि के आधार पर किसी भी व्रत–पर्व की स्थानीय तारीख का निर्धारण किया जा सकता है। इस पुस्तक के **"व्रत–पर्वतिथिनिर्णय"** प्रकरण में दिए गए व्रत–पर्व– तिथि के निर्णायक नियमों को जिसने आत्मसात् किया है, स्पष्ट है, उसके लिए यह सरल है।

ध्यान रहे– भूगोल के अधिक अक्षांश वाले तथा अन्य अनेक स्थानों पर, जैसा कि पहले स्पष्ट किया जा चुका है, हिन्दू व्रत–पर्वों की तारीखों का निर्धारण कई **भौगोलिक/खगौलिक** विलक्षणताओं के कारण सम्भव नहीं है।

("व्रतपर्वविवेक" से उद्धृत)

⊙ Sydney के सूर्योदयास्तानुसार यह ज्ञात करके लिखा गया है (12/13 अक्तू. को Sydney में Z.S.T. अनुसार सूर्योदयकाल 5 घं. 20 मि. और सूर्यास्तकाल 18 घं. 06 मि. है)।

कालसर्पयोग – एक प्रवंचना

प्रियव्रत शर्मा,

'कालसर्प' आजकल के लोलुप, तथोक्त कुछ दैवज्ञों का कपोलकल्पित कुयोग है, जिसके तथाकथित परमकुफलों की सुदीर्घ सूची दिखाकर वे फलितज्योतिष पर आस्थावान् जनता को बुरी तरह आतंकित कर लूट रहे हैं।

फलितज्योतिष पर श्रद्धावान् सामान्य जन को आतंकित करने वाले इस तथोक्त 'कालसर्प योग' की वास्तविकता उद्घाटित करते हुए यहां मुझे यत्र-तत्र इस कल्पित कुयोग के समर्थक दम्भवृत्ति दैवज्ञों* के लिए भाषासंयम खो देने को बाधित होना पड़ा है– इसका मुझे खेद है। शास्त्रविरुद्ध, एकमात्र अर्थसंचय के निन्दनीय उद्देश्य से कपोलकल्पित ऐसे योग को यथार्थता का जामा पहनाकर भोली-भाली जनता के अज्ञान एवं विश्वास का अनुचित लाभ उठाते हुए अवैध सम्पदा अर्जित करने में जुटे ये तथाकथित दैवज्ञ लोग सामाजिक, धार्मिक, नैतिक व शास्त्रीय महापराध के भागीदार हैं। हमारी ज्योतिषशास्त्रीय आचारसंहिता में तो ऐसे पाखण्डी ज्योतिषव्यवसायियों से भद्रव्यवहार न करने का आदेश है– " ....स साधुवाचाऽपि न पूजनीयः।"

राहु और केतु दोनों के मध्य इधर या उधर शेष सभी (7) ग्रहों की स्थिति को 'कालसर्प योग' की भयावह संज्ञा दी गई है⊕ (इन दो स्थितियों वाले कालसर्पयोगों की दो कुण्डलियां पृष्ठ **290** पर देखें)। इस योग के 'आविष्कारकों ' का कहना है कि– इस योग में उत्पन्न जातक अस्वास्थ्य, बन्धुवियोग, शिक्षा में विघ्न, असाध्यरोग, जीवनसाथी से वियोग/अनबन, सन्तति से कष्ट, सन्तति का अभाव, दारिद्र्य, शत्रु से हानि, व्यवसाय में हानि, अपयश, अकाल मृत्यु आदि सभी प्रकार के दौर्भाग्य का शिकार होता है। उनकी यह भी चेतावनी है कि– इस योग में उत्पन्न व्यक्ति यदि सुख-समृद्धिसम्पन्न भी है तो भी भविष्य में कभी न कभी वह इसके कुप्रभाव का शिकार अवश्य बनता है। इसकी भीषण कुफलशृंखला से बचने के लिए जातकों के इन 'शुभचिन्तक' ज्योतिषियों ने व्ययसाध्य विविध अनुष्ठान सुझाए हैं, जिनके विधान से इस कुयोग का प्रभाव तिरोहित हो न हो, उनकी Pockets अवश्य भारी हो जाती हैं।

यह तथोक्त कालसर्पयोग और इसके हृदयकम्पी कुफलों की दीर्घसूची ज्योतिष के किस ग्रन्थ से उद्धृत है– यह बतलाने में इस योग के प्रवर्तक, प्रचारक और प्रयोजक दैवज्ञ महानुभाव अपनी स्पष्ट अज्ञता प्रकट करते हैं। हां, वे इसकी प्रामाणिकता में केवल यह श्लोक अवश्य उद्धृत करते हैं–

"अग्रे वा चेत्पृष्ठतोऽप्येक-पार्श्वे भानां षट्के राहुकेत्वोर्न खेटः।
योगःप्रोक्तः कालसर्पश्च तस्मिन् जातो जाता वाऽर्थपुत्रार्तिमीयात्।।"

---

* कालसर्प ' जैसे अशास्त्रीय, कृत्रिम योग का हौआ खड़ा कर श्रद्धालु जनता से रुपए एंठने वाले इन धूर्त ज्योतिषव्यवसायियों के लिए 'दैवज्ञ' जैसे पवित्र , सम्मानवाची शब्द का प्रयोग करना तो मैं नहीं चाहता, लेकिन एतदर्थक अन्य ऐसे संक्षिप्त शब्द के अभाव में विवशता से मुझे इसे ही प्रयोग में लाना पड़ रहा है– क्षमा चाहता हूँ।

⊕ राहु-केतु को ज्योतिष शास्त्रियों ने लगभग 6ठी शताब्दी तक ग्रहों की कोटि में नहीं रखा। हमारी प्राचीन वसिष्ठ, नारद, बृहत्संहिताओं तथा बृहज्जातक आदि मूल जातकग्रन्थों में इन दोनों का सूर्य आदि ग्रहों के साथ निर्देश नहीं है और इसीलिए इनसे सम्बद्ध किसी भी प्रकार का फलादेश भी वहां नहीं है। सूर्यसिद्धान्त आदि सिद्धान्तग्रन्थ भी इनके ग्रहत्व के बारे मूक हैं; वहां इन्हें सूर्य-चन्द्र के भ्रमणवृत्तों के दो सम्पातमात्र बतलाया गया है, जो वक्रगति से चल रहे हैं और सूर्य-चन्द्र के ग्रहणों का इन्हें कारण बतलाया गया है। अतिप्राचीन काल में चीनी ज्योतिषियों की यह धारणा रही है कि– ग्रहण के समय एक काला सर्पाकार दैत्य (Dragon) अपने कुण्डलित शरीर से सूर्य-चन्द्र को ढका करता है। इसी धारणा के अनुसार हमारे सिद्धान्त व फलितग्रन्थों में भी इन्हें (राहु-केतु को) सर्प की संज्ञा दी गई है, जो इस एक ही सर्प के सिर और पूंछ हैं। इसी धारणा के प्रभाव में कालसर्प योग में इन्हें साक्षात् सर्प (नाग) बतलाकर इस योग को भयंकर बनाना इन चतुर दैवज्ञों का उद्देश्य है।

[अर्थात– यदि राहु–केतु के आगे या पीछे एक ही ओर छः राशियों के भीतर कोई ग्रह न हो (दूसरे शब्दों में– एक ही ओर सभी ग्रह हों) तो कालसर्पयोग बनता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति को धन और पुत्र का सुख नहीं होता।]

यह श्लोक किस संहिता, जातक या अन्य प्रामाणिक फलितशाखा के ग्रन्थ से है, यह भी वे नही बतला पाते। संस्कृत में लिखा प्रत्येक श्लोक प्रामाणिक नहीं माना जा सकता, जब तक कि– उसका मूल प्रामाणिक सिद्ध नहीं होता। ऐसे अनेक अज्ञात मूल के श्लोकों को हमारे आचार्यों ने प्रमाणकोटि में नहीं रखा और उन्हें यह कहकर अस्वीकार कर दिया–" अत्र मूलमन्वेष्टव्यम्" (अर्थात् इस श्लोक का मूल ढूंढना चाहिए)। आश्चर्य है– इस योग के परिपालक दैवज्ञों ने इसे प्रामाणिक सिद्ध करने के लिए इस योग पर पुस्तकें भी लिख डालीं, जहां व्यर्थ की सूक्ष्मता दिखाते हुए, इस योग को अनेक काल्पनिक भेद–प्रभेदों में बांटा है और उन सब के स्वकल्पित तन्त्र–मन्त्र–अनुष्ठान भी वहां दिए हैं। पुस्तकगत इस सामग्री के मूल स्रोत के बारे में वे सर्वथा मूक हैं।

कालसर्प नामक इस तथोक्त कुयोग से सन्त्रस्त होने का कोई कारण नहीं है। ध्यान रहे– हमारे फलित ज्योतिष के प्रवर्त्तक एवम् व्याख्याता वसिष्ठ, नारद, गर्ग, भृगु, जैमिनि, पराशर आदि किसी भी ऋषि–मुनि ने इस कुयोग का अपने फलितग्रन्थों में नाम तक नहीं लिया है।

जिसने फलितसाहित्य का भलीभान्ति अध्ययन किया है, वह जानता है कि– इस नाम का कोई योग वहां नहीं है। यह किन्हीं अनैतिक दैवज्ञों की षडयन्त्र–कल्पना है, जिससे वे ज्योतिषशास्त्र से अनभिज्ञ, ज्योतिष को दिव्य ज्ञान समझने वाली श्रद्धालु, भोली–भाली जनता से अच्छी धनराशि समेट रहे हैं। वसिष्ठ, नारद, पराशर, जैमिनि, भृगु, वराह, सत्य, लल्ल, मन्त्रेश्वर आदि के निरवशेष फलितसाहित्य को छान मारिए, आपको इस योग का परमाणु भी नहीं मिलेगा। यही नहीं, पाश्चात्य फलितशास्त्र भी इस योग की चर्चा से सर्वथा अस्पृष्ट है। हां, हमारे जातकग्रन्थों में वर्णित एक 'सर्प' नामक योग अवश्य हमें मिलता है, जो केन्द्र में तीन (किसी के मत से चार) शुभग्रहों एवं अन्यत्र सभी अशुभ ग्रहों की स्थिति से बनता है– (त्रिकेन्द्रगैः यमारार्कैः सर्पो दुःखितजन्मदः" *–गार्गि*)। स्पष्ट है, इस 'सर्पयोग' का "कालसर्प योग" से कोई सम्बन्ध नहीं है।

विगत 40–50 वर्षों से ही इस दुर्योग का भूत उत्तरभारतीय दैवज्ञों में प्रविष्ट हुआ है। इससे पूर्व यह दक्षिण भारत में प्रचरित रहा। इसकी अशास्त्रीयता, अप्रामाणिकता के कारण उत्तरी एवं दक्षिणी भारत के भी प्रबुद्ध ज्योतिर्विदों ने इसके अस्तित्व को बुरी तरह नकारा है। इसके विरोध में सैकड़ों लेख भी प्रकाशित हुए हैं। लेकिन धूर्त्तों द्वारा चित्रित इसके भीषण रूप से साधारण लोग, जिन्हें फलित पर अभेद्य आस्था है, इतना आतंकित हो उठते हैं कि– वे इसके तथानिर्दिष्ट दुष्प्रभाव के प्रतीकार के लिए कुछ भी करने को बाधित हो जाते हैं। नासिक (महाराष्ट्र) के त्र्यम्बकेश्वर मन्दिर में तो इस योग के तथोक्त कुप्रभाव से मुक्ति चाहने वाले सन्त्रस्त धनाढ्य लोगों को लाखों लुटाते देखा जा सकता है। फलितज्योतिष की सत्यता पर निष्ठावान् अबोध जनता को इस कुयोग के परम भयप्रद अगण्य 'कुफलों' से भ्रान्त किंकर्त्तव्यमूढ़ बनाकर उससे विविध संगत–असंगत अनुष्ठानों द्वारा विपुल धन ये प्रपञ्ची दैवज्ञ तो हड़पने में लगे ही हैं, साथ ही इन विशील दैवज्ञों के आश्रय, समर्थन में अनेक अवसरग्राही कर्मकाण्डी भी इस बहती गंगा में खूब नहा रहे हैं।

आश्चर्य की बात है– भारत के अनेक पंचांगकार भी अब कुछ वर्षों से इस कालसर्पयोग को विश्व में अशान्ति, बाढ़, सूखा, भूकम्प आदि राजनैतिक व प्राकृतिक आपदाओं का भी कारण बतलाने लगे हैं, जबकि इनके पुराने पंचांग उठाकर देखिए, मध्यममानेन एक वर्षान्तर पर घटित होने वाले इस योग के फल का वहां किसी भी वर्ष के पंचांग में संकेतमात्र भी इन पंचांगकारों ने नहीं किया।

यह भी आश्चर्य है, आजकल यदि वर–कन्या में से किसी एक का भी जन्म 'कालसर्पयोग' में हुआ हो तो ये कुछ दम्भी दैवज्ञ लोग इस योग की शान्ति करवाए बिना उनके विवाहसम्बन्ध को भी सुखद घोषित करने को कतई तैयार नहीं होते, जबकि यही दैवज्ञ आज से कुछ वर्ष पूर्व वर–कन्या की कुण्डली में इस योग की ओर झांके बिना ही परम्परागत संहितोक्त मिलानपद्धति (वश्य आदि अष्टकूटों की गुणसंख्या) तथा कुजदोष आदि के आधार पर अनेकों ऐसे कालसर्पयोगाक्रान्त वर–कन्याओं को विवाहबन्धन में बांधने के उत्तरदायी हैं। ध्यान रहे– विवाहसम्बन्ध की सम्पन्नता के लिए वर–कन्या के कालसर्पयोग की शान्ति करवाने की धारणा अभी कुछ ही वर्षों से कुछ ही लोगों में दिखाई दी है। ऐसे युगल (दम्पती) विश्व में मध्यममानेन 15 प्रतिशत (यानि 7 युगलों में एक

युगल) हैं, जिनमें कम से कम एक जीवनसाथी (पति–पत्नी में से कोई एक) 'कालसर्पयोग'–जात है– यह सम्भावनासिद्धान्त (Theory of Probability)तथा इस योग की घटना की प्रतिशतता (Percentage) से सिद्ध है। ऐसे असंख्य युगलों के विवाहसम्बन्ध शास्त्रोक्त मिलानपद्धति से ही ये द्विमुखी दैवज्ञ विगत कुछ वर्षों तक निर्बाध करवाते रहे हैं। वहां कालसर्प योग कहीं भी बाधक नहीं माना गया। वर–कन्या के अनेक माता–पिता भी यह जानते हैं। यदि कोई दैवज्ञ यहां विवाहित जीवन की सुख–समृद्धि के लिए 'कालसर्प योग–शान्ति' को अपरिहार्य मानता है, तो मानना होगा कि– वह संहिता आदि के प्रणेता वसिष्ठ आदि ऋषियों के निर्देश के उल्लंघन का दोषी है, क्योंकि इन ऋषियों ने गुणमिलान आदि को ही दाम्पत्यजीवन की सुख–समृद्धि के लिए एकमात्र निर्णायक माना है।

हमारे फलितज्योतिष के प्राचीन सभी मूलग्रन्थों ने तो इस तथोक्त योगदानव को निरपवादरूप से कतई कहीं प्रश्रय नहीं दिया है, आधुनिक सभी प्रतिष्ठित फलितशास्त्रियों ने भी अपने साहित्य में इसकी चर्चा तक नहीं की है। इन सभी फलितविशेषज्ञों ने जातक के दौर्भाग्य का कारण हमारे प्राचीन संहिता–जातकग्रन्थों में निर्दिष्ट अशुभदशा, अन्तर्दशा, ग्रहों की नीचस्थिति, अस्तभाव, बलहीनता आदि को ही बतलाया है। 'कालसर्प योग' को तो इन्होंने कहीं भी इसका कारण नहीं बतलाया है। आजकल के वयोवृद्ध फलितविशेषज्ञ शत–प्रतिशत दैवज्ञ भी विस्मित हैं कि उनके और अनेक पूर्वज दैवज्ञों द्वारा परम्परया प्रयुक्त किए जाने वाले संहिता–ज़ातकोक्त दौर्भाग्यसूचक योगों में यह कौन सा नया कालसर्प योग आ घुसा है।

आज से चार–पांच दशाब्दियों पूर्व उत्पन्न किसी भी जातक की जन्मपत्री उठाइए। उसमें यदि कालसर्पयोग है तो भी आप देखेंगे, उस जन्मपत्री के निर्माता दैवज्ञ ने उसे वहां चर्चित तक नहीं किया है, क्योंकि ज्योतिशशास्त्रीय परम्परानुसार यह कुयोग अर्थहीन माना गया है। यदि कहीं उसी जन्मपत्री में भाग्यशालिता योग भी है, तो वहां दैवज्ञ ने उसके आधार पर जातक को भाग्यशाली प्रमाणित किया है, वहां तथोक्त 'कालसर्प योग' की ओर उसने ध्यान भी नहीं दिया, क्योंकि 'कालसर्प योग' जैसे किसी भी तथोक्त कुयोग एवं उसके तथोक्त कुप्रभाव की चर्चा उसे फलितशास्त्र में कहीं भी नहीं मिली। ध्यान दें– **हमारे निःशेष (A to Z) ज्योतिषग्रन्थों में इस कुयोग का सर्वथा अनिर्देश स्पष्ट करता है कि– वे इस कुयोग को कोई मान्यता नहीं देते, अन्यथा यह सम्भव नहीं था कि ऐसे तथोक्त संत्रासक कुफलों वाले इस कुयोग को वे इस प्रकार सर्वथा उपेक्षित करते।**

अपि च– आज से चार–पांच दशाब्दियों पूर्व जन्मे किसी जातक की जन्मपत्री में यदि 'कालसर्प योग' के साथ संहिता–जातकोक्त दौर्भाग्ययोग भी है तो आप देखेंगे, वहां दैवज्ञ द्वारा केवल संहिता–जातकोक्त दौर्भाग्य योग का ही निर्देश है। वहां बना **कालसर्प योग** उसके लिए विचार का विषय ही नहीं रहा है।

इस उपरोक्त विवेचन का सारांश यह है कि जातकफलादेश में दौर्भाग्ययोग के निर्णय का आधार 'कालसर्प' नाम का कोई योग नहीं, अपितु संहिता–जातकोक्त भाग्य–भाव, भाग्येश, भाग्यकारक आदि की निर्बलता तथा मारक–क्रूर ग्रहदशा, अन्तर्दशा आदि ही माने गए हैं। इस प्रकार हमारे दैवज्ञों द्वारा किए गए दौर्भाग्यनिर्णय का इतिहास तथा हमारे निःशेष ज्योतिःसाहित्य– दोनों कालसर्प नामक योग के अस्तित्व को पूरी तरह नकारते हैं।

पृष्ठ **292** पर **'100 वर्ष के कालसर्प योग'** कोष्ठक में सन् 1945 से 2044 ई. तक के कालसर्प योग के दिन (किस तारीख से किस तारीख तक उस वर्ष कालसर्प योग रहा है या रहेगा) दिए गए हैं। पाठकों को परामर्श है कि वे अपने उन परिचित मित्र, बन्धु, बान्धव तथा अन्य ऐसे लोगों के स्वास्थ्य, शिक्षा, सुख–समृद्धि सन्तति, आयु, मृत्यु, दाम्पत्यजीवन, मान, अपमान, स्वभाव आदि को ध्यान से देखें, जो इस कोष्ठक–अनुसार कालसर्प–योगकाल में पैदा हुए हैं।⊗ *पाठक* देखेंगे – इस योग में उत्पन्न इन व्यक्तियों में सुखी–दुःखी, स्वस्थ–रुग्ण, विद्वान्–मूर्ख, प्रतिष्ठित–अपमानित, अल्पायु–दीर्घायु आदि–आदि सभी प्रकार के व्यक्ति हैं। इनमें से कुछ लोग सर्वथा दौर्भाग्यशाली, कुछ सामान्य भाग्यशाली और कुछ विशेष भाग्यशाली भी होंगे। इसी प्रकार पाठक ऐसे मित्र, बन्धु–बांधव एवं अन्य परिचितों के जीवन पर भी दृष्टि डालें, जिनका जन्म इस योग में नहीं हुआ। पाठक देखेंगे – इनके जीवन भी सुख–दुःख, सम्पत्ति–विपत्ति, रोग–स्वास्थ्य आदि इष्ट–अनिष्ट घटनाओं का मिश्रण है। गणना बतलाती है – विश्व में कालसर्प योगोत्पन्न केवल 8 प्रतिशत और अन्य 92 प्रतिशत हैं। इसका अर्थ यह हुआ– कालसर्पयोग को दौर्भाग्ययोग मानने वाले महानुभाव प्रकारान्तर से यह मानते हैं कि–विश्व के 92 प्रतिशत लोग

⊗ *पृ.* ***292*** *पर दिया '100 वर्ष के कालसर्प योग' कोष्ठक और उसके नीचे दिए कालसर्पयोगसम्बन्धी आंकड़े देखिए। ऐसे (कालसर्प योगोत्पन्न) लोग आसानी से मिल जाते हैं, क्योंकि यह योग मध्यममानेन लगभग एकवर्ष में 28 दिन रहता है और मध्यममानेन लगभग 8 प्रतिशत (यानि 13 में से एक) व्यक्ति की जन्मकुण्डली में 'कालसर्प योग' रहता है।*

अपेक्षाकृत भाग्यशाली या कम दौर्भाग्यशाली हैं। क्या उनका यह मानना Statistically (प्राप्त आंकड़ों की दृष्टि से) तर्कसंगत हैं ? कदापि नहीं। कालसर्प योग से अस्पृष्ट 92 प्रतिशत लोगों में भी सुख–दुःख, समृद्धि–दरिद्रता, स्वास्थ्य–रोग आदि द्वन्द्व लगभग समानरूप से विभाजित हैं– यह पाठक स्वयं देख सकते हैं। इन 92 प्रतिशत लोगों में भी दौर्भाग्यशाली और उन 8 प्रतिशत में भी अनेक नितान्त भाग्यशाली भी प्राचुर्येण उपलब्ध हैं (आगे पृष्ठ 291 पर दी गई कालसर्पयोगजन्मा भाग्यशाली महान् व्यक्तियों की सूची देखिए)। यदि कोई कालसर्पयोग–समर्थक यह कहे कि कालसर्प योग में जन्मे जातक का दौर्भाग्य जातकोक्त दुर्योग में जन्मे जातक के दौर्भाग्य से तीव्रता में कहीं अधिक होता है, तो उसके इस प्रतिपादन को Statistically निरस्त किया जा सकता है। भारत या विश्व की जनता में केवल 8 प्रतिशत लोगों में ही असह्य दौर्भाग्य पाया जाता है, 92 प्रतिशत में तो यह सह्य रहता है– यह कौन सी Statistics है ? **किञ्च–** दौर्भाग्य की असह्यता, तीव्रता और सह्यता–मृदुता मापने का कोई यन्त्र भी तो नहीं है।

ध्यान रहे– यदि ये दैवज्ञ लोग इस प्रकार शास्त्रोक्त सुदीर्घ परम्परागत फलितसिद्धान्तों, जिन्हें इनके पूर्ववर्त्ती दैवज्ञ आजतक विश्वसनीय यथार्थ प्रामाणिक बतलाते हुए जातक के भूत–वर्त्तमान–भविष्य की घटनाओं के निर्धारण में प्रयुक्त करते रहे हैं, को कालान्तर में दूसरे किसी नव–कल्पित फलितसिद्धान्त से तिरस्कृत करते हैं, तो फलितज्योतिष, जिसे समाज का एक वर्ग प्रामाणिक मानने को तैयार नहीं है, को भारी हानि पहुंचेगी। फलितनियमों के आधारों में किसी भी प्रकार का परिवर्धन, परिवर्त्तन अथवा किसी आधार का अपसारण– ये इस शास्त्र के लिए घातक हैं। फलित की आधारभूत पंचांगगणित में संशोधनात्मक परिवर्तन, मूलतः ग्रहों की कोटि में न आने वाले राहु–केतु को ग्रहत्व देकर फलितक्षेत्र में उनकी स्थापना, इसी प्रकार नवज्ञात यूरेनस, नेप्च्यून ग्रहों को भी फलादेश में योगदान का अधिकार देना एवं प्लूटो जैसे अल्पजीवी मिथ्या ग्रह को भी फलितक्षेत्र में प्रवेश तथा कुछ ही वर्षों बाद उसे बहिष्कृत करना और अब 'कालसर्प' जैसे नए कल्पनाप्रसूत, तथाकथित कुयोग की इस फलितक्षेत्र में बलात् स्थापना–इत्यादि फलितनियमों को विचलित करने वाले अनेक परिवर्त्तन, परिवर्धन, अपसारण फलित के पूर्वपोषित नियमों को बुरी तरह नष्ट–भ्रष्ट कर, वहां नए नियमों का आधिपत्य बनाते हैं, जिससे फलित के पूर्ववर्त्ती नियमों के आधार पर शताब्दियों तक तात्कालिक दैवज्ञों द्वारा बतलाए जाने वाले फलादेश की प्रतिज्ञापूर्वक घोषित सत्यता बुरी तरह सन्देह की कोटि में आ जाती है। इस कालसर्प योग के कुफल की सत्यता का दावा करने वाले इन वञ्चक दैवज्ञों द्वारा प्राचीन बद्धमूल शास्त्रीय योगों को रद्दी की टोकरी में फेंकने का यह भी एक स्पष्ट प्रयत्न है, जो इस विद्या के हित में नहीं है। प्रज्ञावान् दैवज्ञों को इसका प्रतीकार सोचना चाहिए।

सभी निष्पक्ष मर्मज्ञ ज्योतिषशास्त्रियों, पाखण्डविरोधी सामाजिक संस्थाओं तथा सम्भव हो तो शासन को भी चाहिए– इस निन्दनीय व्यापार पर अंकुश लगाएं। मेरा इस विषय में परामर्श है– भारत के प्रबुद्ध ज्योतिर्विदों का एक अखिल भारतीय सम्मेलन आयोजित किया जाए, जहां इस कालसर्पयोग को अशास्त्रीय, अप्रामाणिक घोषित करते हुए इसके प्रचारक अवैध अर्थसञ्चयी, तथोक्त दैवज्ञों की भर्त्सना की जाए और एतद्विषयक प्रस्ताव पारित कर उसे मीडिया में प्रसारित तथा पंचांग, पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जाए, ताकि यह श्रद्धेय ज्योतिशशास्त्र निन्दा का पात्र न बने एवं इस शास्त्र का श्रद्धालु जनगण व्यर्थ की असह्य मनोवैज्ञानिक यन्त्रणा से मुक्त हो।

कालसर्प योग में जन्मे भाग्यशाली कुछ महानुभाव

(देखिए–तथोक्त 'कालसर्प योग' में जन्मे ये सुप्रसिद्ध, सुप्रतिष्ठ, सम्पन्न एवं भाग्यशाली महानुभाव, जो इस तथाकथित कुयोग को अर्थहीन सिद्ध करते हैं।)

सम्राट् हर्षवर्धन
सम्राट् अकबर
अब्राहम लिंकन
बेनितो मुसोलिनी
एडवर्ड सप्तम
जवाहरलाल नेहरू
सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन्
शंकराचार्य कुर्त्तकोटी (कर्णाटक)(1879)
देवकीनन्दन खत्री (प्रसिद्ध उपन्यासकार)
महाराज सुमेरसिंह (जोधपुर) (1898)
महाराज सरदाससिंह (जोधपुर) (1880)
अशोक कुमार (अभिनेता)
दिलीप कुमार (अभिनेता)
अयूब खां (पाक–राष्ट्रपति)
आचार्य महाप्रज्ञ (दशम आचार्य–तेरापन्थ, जैन)

रोनाल्ड डब्ल्यू रीगन (President U.S.)
मार्ग्रेट थैचर (P.M. Great Britain)
वी. शान्ताराम (सिने–निर्देशक)
म.म. दीनानाथ व्यास (संस्कृत–विद्वान्)
पद्मभूषण सूर्यनारायण व्यास
विजयलक्ष्मी पंडित
एन. डी. तिवारी
धीरुभाई अम्बानी
रविशास्त्री (क्रिकेटर)
मोहनलाल सुखाडिया
उमाशंकर जोशी
अरुण नेहरू
रवीन्द्र जैन (सिने–कलाकार)
शिवानी (प्रसिद्ध लेखिका)

ध्यान दें– इन विशिष्ट व्यक्तियों की जन्मकुण्डलियां श्री रामयत्न ओझा ज्योतिषाचार्य, पद्मभूषण सूर्यनारायण व्यास, Dr. B.V. Raman, श्री देवकीनन्दन सिंह आदि प्रसिद्ध ज्योतिर्विदों द्वारा संकलित कुण्डलीसंग्रहों से ली गई हैं। यहां यह देखने योग्य है कि– इन विद्वानों ने इन कुण्डलियों में स्पष्टरूप से दिखाई दे रहे तथाकथित परम दौर्भाग्ययोग –**'कालसर्प'** की ओर ताका तक नहीं है। केवल उन्हीं ग्रहयोगों पर इनकी दृष्टि पड़ी है, जिन्होंने इन्हें विशिष्ट व्यक्तित्व दिया है। अपि च– कालसर्पयोग में जन्मे ख्यातिप्राप्त भाग्यशाली लोगों की यह सूची दिग्दर्शनमात्र है। वास्तव में कालसर्प–योगाक्रान्त प्रसिद्ध, विशिष्ट भाग्यवानों एवम् अन्य भाग्यशाली सामान्य जनों की संख्या भारत में करोड़ों में है। शेष विश्व में यह संख्या इससे लगभग 5 गुना है। ध्यान रहे– करोड़ों ऐसे लोगों की सूची भी आसानी से तैयार की जा सकती है, जिन्हें कालसर्प योग छू तक नहीं गया, लेकिन दौर्भाग्य उन्हें जीने नहीं दे रहा।

---

100 वर्ष के कालसर्पयोग

(सन् 1945 से 2044 ई. तक)

सन्	प्रारम्भ तारीख	समाप्त तारीख	कुल दिन*	सन्	प्रारम्भ तारीख	समाप्त तारीख	कुल दिन*	सन्	प्रारम्भ तारीख	समाप्त तारीख	कुल दिन*
1945	सितम्बर 17	दिसम्बर 23	98	1983	जून 29	नवम्बर 21	146	2019	जुलाई 17	सितम्बर 16	62
1946	जून 12	नवम्बर 25	166	1985	जनवरी 1	अप्रैल 12	102	2020	फरवरी 24	मई 29	96
1947	जुलाई 2	अक्तूबर 1	91	1985	दिसम्बर 25	दिसम्बर 31	7	2020	दिसम्बर 31	– –	1
1950	अक्तूबर 22	दिसम्बर 31	71	1986	जनवरी 1	अप्रैल 3	93	2021	जनवरी 1	मार्च 29	88
1951	जनवरी 1	फरवरी 18	49	1986	अक्तूबर 15	दिसम्बर 31	78	2021	दिसम्बर 14	दिसम्बर 31	18
1954	जुलाई 25	सितम्बर 19	57	1987	जनवरी 1	जनवरी 30	30	2022	जनवरी 1	अप्रैल 24	114
1955	जुलाई 9	नवम्बर 20	135	1995	नवम्बर 2	दिसम्बर 31	60	2025	अप्रैल 20	जुलाई 23	95
1959	नवंबर 11	दिसम्बर 31	51	1996	जनवरी 1	फरवरी 26	57	2026	मार्च 13	जुलाई 11	121
1960	जनवरी 1	मार्च 15	75	1998	अप्रैल 14	अगस्त 25	134	2034	अप्रैल 27	अगस्त 3	99
1961	सितम्बर 20	दिसम्बर 31	103	2000	फरवरी 20	जुलाई 9	141	2035	जून 16	अगस्त 10	56
1962	जनवरी 1	जनवरी 21	21	2002	जून 29	नवम्बर 25	150	2036	मार्च 1	जुलाई 18	140
1964	जनवरी 26	मई 16	112	2004	मई 24	अक्तूबर 17	147	2038	जुलाई 25	दिसम्बर 11	140
1968	अप्रैल 29	सितम्बर 9	134	2005	जुलाई 9	अगस्त 19	42	2039	अगस्त 29	दिसम्बर 5	99
1973	मार्च 4	जून 9	98	2008	अगस्त 11	दिसम्बर 18	130	2040	मई 26	अक्तूबर 14	142
1976	मई 16	सितम्बर 30	138	2012	जून 28	अक्तूबर 5	100	2041	जून 18	अक्तूबर 11	116
1977	मई 28	अक्तूबर 8	134	2013	मई 13	सितम्बर 20	131	2042	अक्तूबर 20	दिसम्बर 31	73
1978	मार्च 27	अगस्त 3	130	2016	सितम्बर 5	दिसम्बर 28	115	2043	जनवरी 1	मार्च 21	81
1979	अप्रैल 11	जुलाई 17	98	2017	सितम्बर 14	दिसम्बर 31	109	2043	दिसम्बर 28	दिसम्बर 31	4
1980	सितम्बर 24	दिसम्बर 31	99	2018	जनवरी 1	जनवरी 30	30	2044	जनवरी 1	जनवरी 31	31
1981	जनवरी 1	जनवरी 15	15	2018	जुलाई 29	सितम्बर 22	56	2044	अक्तूबर 10	दिसम्बर 31	83
1981	सितम्बर 1	दिसम्बर 2	93								
1982	जुलाई 31	नवम्बर 10	103								

शताब्दी में कालसर्पयोगदिन (चन्द्र की स्थिति का विचार किए बिना) = 5588
शताब्दी में वास्तव कालसर्पयोगदिन (चन्द्रस्थिति विचारकर) = 2794

*कालसर्पयोग के इन दिनों में चन्द्र के अलावा सभी ग्रह राहु–केतु के मध्यस्थित होंगे। चन्द्रमा प्रत्येक 27.4 दिनावधि में 13.7 दिन ही राहु–केतु के मध्य रहता है, अतः कालसर्पयोग के इन कुलदिनों को आधा करने पर कालसर्पयोग की वास्तव दिनसंख्या ज्ञात होगी। चन्द्रमा इन दिनों में कब–कब राहु–केतु के मध्य रहेगा, यह पंचांग से ज्ञात करें।

इस कोष्ठक में दी गई 'कालसर्प योग' के प्रारम्भ और समाप्ति की तारीखों में कहीं–कहीं एक दिन का अन्तर सम्भव है।

कालसर्पयोग के बारे में कुछ आंकड़े

(i) मध्यममान से एक शताब्दी में कालसर्पयोग–दिनों की कुल संख्या लगभग पौने तीन हज़ार है।

(ii) यह 'कालसर्पयोग' मध्यममान से लगभग एक वर्षान्तर पर घटित होता रहता है।

(iii) मध्यममान से एक वर्ष में कालसर्पयोग का स्थितिकाल लगभग 28 दिन होता है। किसी–किसी वर्ष में तो इसका स्थितिकाल 80 दिनों से भी अधिक हो जाता है। ऊपर दिया कोष्ठक देखिए, सन् 1946 में कालसर्पयोग की वास्तव दिनसंख्या 83 थी।

(iv) मध्यममान से 7.7 प्रतिशत जातकों (यानि 13 में से एक जातक) की कुण्डली में कालसर्पयोग होता है।

(v) आजकल भारत में मध्यममान से एक वर्ष में लगभग 17,00,000 (सतरह लाख) जातक कालसर्पयोग में पैदा होते हैं।

(vi) भारत में आजकल लगभग 9½ करोड़ व्यक्तियों की जन्मकुण्डलियों में कालसर्पयोग है।

(vii) इन दिनों सारे विश्व में कालसर्प योग वाले व्यक्ति लगभग 45 करोड़ हैं।

फलित के उच्च-नीच खगोलीय मन्दोच्च-मन्दनीच नहीं हैं।

(एक विशेष शोधपूर्ण निबन्ध)

[अधिकतर सिद्धान्तज्ञ ज्योतिषियों को भी यह भ्रान्ति है कि– फलित ज्योतिष में प्रयुक्त होने वाले ग्रहों के स्थिर उच्च (उच्चबिन्दु या उच्च–राश्यंश) तथा स्थिर नीच (नीचबिन्दु या नीचराश्यंश) मूलतः अत्यन्त पूर्ववर्ती किसी एक ही समय के खगोलीय मन्दोच्च (मन्दोच्चबिन्दु या मन्दोच्च–राश्यंश) तथा मन्दनीच (मन्दनीचबिन्दु या मन्दनीचराश्यंश) ही हैं, जो अत्यन्त मन्द मार्गगति से चलते हुए अब उनसे (फलितीय स्थिर उच्च एवं स्थिर नीच) से काफी अन्तरित हो गए हैं। उनका यह भी कहना है कि– अब इन अन्तरित 'अशुद्ध' फलितीय उच्च–नीचों की जगह आधुनिक मन्दोच्च–मन्दनीचों का ही फलितनिर्णयार्थ प्रयोग करना युक्त है– उनकी इस महाभ्रान्ति का गणितीय विश्लेषणपूर्वक सम्मार्जन यहां हम करेंगे।– प्रियव्रत शर्मा]

भारतीय ज्योतिष में प्रयुक्त होने वाले ग्रहों के उच्च और नीच दो प्रकार के हैं–

(i) **फलितज्योतिष में प्रयुक्त होने वाले उच्च–नीच,** जिनका निर्देश वराह आदि फलिताचार्यों ने "अज–वृषभ- मृगांगना–कुलीराः ...." आदि वाक्यों द्वारा किया है। ग्रहों के ये उच्च–नीच स्थिर हैं। English में इन्हें क्रमशः Exaltation (Exaltation Point) और Debilitation (Debilitation Point) कहते हैं। Exaltation का अर्थ है– उन्नति, शक्तिशालिता और Debilitation का निर्बलता। उच्चस्थ ग्रह को Exalted Planet और नीचस्थ को Debilitated Planet कहा जाता है। प्रत्येक ग्रह के फलितीय उच्च से उसका नीच हमेशा 180 अंशों (छः राशि) के अन्तर पर ही रहता है।

सूर्यादि ग्रहों के ये स्थिर उच्च (उच्चराश्यंश) पृष्ठ **297** पर "उच्चनिर्णय कोष्ठक" के कॉलम **(ख)** में दिए गए हैं।

(ii) **खगोलीय (सिद्धान्त) ज्योतिष में प्रयुक्त होने वाले उच्च–नीच,** जो क्रमशः मन्दोच्च और मन्दनीच शब्दों के संक्षिप्त रूप हैं। ये मन्दोच्च व मन्दनीच क्रमशः वे दो बिन्दु हैं, जहां ग्रह पृथ्वीकेन्द्र से क्रमशः दूरतम और समीपतम होते हैं। इन्हें English में क्रमशः Apogee व Perigee कहा जाता है।[1] इन उच्च–नीचों (मन्दोच्च–मन्दनीचों) का प्रयोग ग्रहों की खगोलीय गति, स्थिति, भोगांश आदि के निर्णयार्थ होता है। ये नितान्त मन्द मार्गगति से चल रहे हैं, जबकि फलितीय उच्च–नीच गतिशील नहीं हैं। वे सर्वथा स्थिर हैं।

"उच्चनिर्णय कोष्ठक" के **कॉलम (ग)** में ग्रहों के आधुनिक (सन् 2010 ई. वर्षीय) मन्दोच्चों के राशि, अंश दिए गए हैं। फलितीय नीच की भान्ति मन्दनीच भी अपने मन्दोच्चों से सर्वदा 180° (छः राशि) के अन्तर पर ही रहते हैं।

"उच्चनिर्णय कोष्ठक" के **कॉलम (च)** में ग्रहों के मन्दोच्चों का 30 अंश भोगकाल दिया गया है, जिससे आप जान सकते हैं कि– ये कितनी मन्दगति से चलते हैं। इनकी वार्षिक गतियां भी देखिए–

सूर्यमन्दोच्च की वार्षिक गति 0″.12, मंगलमन्दोच्च की 0″.06, बुधमन्दोच्च की 0″.11, गुरुमन्दोच्च

---

[1] *यहां पाठक ध्यान दें–पाश्चात्य ज्योतिष में फलितीय एवं खगोलीय उच्च–नीचों को भिन्न–भिन्न (फलितीय उच्च–नीचों को क्रमशः* Exaltation, Debilitation *तथा खगोलीय उच्च–नीचों को क्रमशः* Apogee, Perigee) *नामों से पुकारा गया है, जिससे स्पष्ट हो जाता है कि– पाश्चात्य ज्योतिषी इन दोनों उच्च–नीचों को भिन्न–भिन्न ही मानते हैं।*

की 0″.27, शुक्रमन्दोच्च की 0″.16 और शनिमन्दोच्च की वार्षिक गति 0″.01 है।

मन्दोच्चों की गति की परममन्दता से स्पष्ट है कि– इन मन्दोच्चों (मन्दोच्च–बिन्दुओं) के विचलन का आभास सहस्राब्दियों तक भी स्पष्टता से नहीं हो पाता।[2]

"ग्रहों के परम्परागत स्थिर उच्च उनके किसी एक ही अतिप्राचीन काल के अस्थिर उच्च ही हैं[3], जिन्हें अतिमन्दगति के कारण अतिप्राचीनकालिक तात्कालिक फलिताचार्यों ने फलित में स्थायीरूप से प्रयोगार्थ निर्धारित कर दिया। अब जबकि ये अपने मूलभूत अस्थिर उच्चों से पर्याप्त अन्तरित हो चुके हैं, इन अन्तरित स्थिर उच्चों के स्थान पर आधुनिक अस्थिर उच्चों को ही फलादेश का आधार बनाना चाहिए"– इस प्रकार अनेक ज्योतिषियों का विचार है। इन ज्योतिषियों में **'हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी' के ज्योतिष विभागाध्यक्ष स्व. पं. रामयत्न ओझा, ज्योतिषाचार्य** जैसे सिद्धान्तज्ञ विद्वान् भी हैं। इन्होंने अपनी पुस्तक **'फलितविकास'** में लिखा है– " ये स्थिर उच्च किसी अज्ञात अतिप्राचीनकालिक (भारतीय फलित ज्योतिषशास्त्र के शिलान्यासकालिक) अस्थिर उच्च (मन्दोच्च) ही हैं। अब जबकि अस्थिर उच्च अपनी गति से पर्याप्त आगे चले गए हैं, दैवज्ञों को परामर्श है– वे फलादेशार्थ इन्हीं आधुनिक **'अस्थिर उच्चों'** को ही प्रयोग में लाएं।" उन्होंने **"अज–वृषभ–मृगाङ्गना–कुलीराः...."** वाक्य को अनार्ष, अप्रामाणिक भी कह डाला है।

ओझा जी के उपरोक्त कल्पनाप्रसूत, आधारहीन मत का प्रतिवाद पृष्ठ **297** पर दिया **"उच्चनिर्णय कोष्ठक"** पूरी तरह करता है। इस कोष्ठक में दिए आंकिक परिणाम अत्यन्त सामान्य गणितप्रक्रिया त्रैराशिक पर आधारित हैं। त्रैराशिक जैसी साधारण गणितप्रक्रिया जानने वाले व्यक्ति को भी इसे समझने में यत्किंचित् भी कठिनाई नहीं होगी। **लीजिए–** इसे हम विशकलित भी किए देते हैं–

जो विद्वान् प्रचलित स्थिर उच्चों को प्राचीनकालिक अस्थिर उच्च ही मानते हैं, उनका यह स्पष्ट अभिप्राय है कि– सुदूरपूर्व किसी काल में , जब फलित ज्योतिष के सिद्धान्तनियम बनाए जा रहे थे, तब सूर्यादि ग्रहों के जो अस्थिर उच्च थे, ठीक उन्हें ही, उनकी अत्यल्प गति की उपेक्षा करते हुए, तत्तद् ग्रहों के फलादेशोपयोगी स्थिर उच्च निश्चित कर दिया गया। इसका अभिप्राय यह हुआ–सूर्यादि ग्रहों के जो स्थिर उच्च कोष्ठक[4] के कॉलम (ख) में दिए गए हैं, वे उनके मतानुसार इन ग्रहों के किसी एक ही **'अतिप्रचीनकाल'** के अस्थिर उच्च हैं।[5] उनका अभिप्रेत यह **'अतिप्राचीनकाल'** आज से (सन् 2010 ई. से) कितने वर्ष पूर्व हो सकता है, इसका निर्णय हम इस कोष्ठक में दिए गए पदार्थों से करेंगे।

कोष्ठक के **कॉलम (ख)** में ग्रहों के स्थिर उच्च (ओझा जी[6] के मतानुसार किसी अतिप्राचीन समय के, फलितशास्त्र के तथाकथित स्थापनाकाल के अस्थिर उच्च) और कॉलम (ग) में ग्रहों के आधुनिक

---

[2] *यहां चन्द्र के मन्दोच्च के बारे में यह विशेष ज्ञापनीय है कि– अन्य सूर्यादि (छः) ग्रहों के मन्दोच्चों की भान्ति यह मन्दगति वाला नहीं है। इसकी दैनिक गति 6′.7 है और 9 मास में यह लगभग एकराशि आगे खिसक जाता है, अतः इस लेख में जहां हम अन्यन्त मन्दगति वाले मन्दोच्च की बात करेंगे, वहां सर्वत्र हमारा अभिप्राय सूर्यादि छः ग्रहों के मन्दोच्चों से ही होगा, चन्द्र के मन्दोच्च से नहीं– यह जान लेना चाहिए [इसके लिए "उच्चनिर्णय कोष्ठक" के नीचे दिया गया स्पष्टीकरण (ii) भी देखिए]।*

[3] *व्यवहारसुविधा के लिए आगे इस लेख में हम फलितीय एवं खगोलीय उच्चों को इनकी स्थिर एवं अस्थिर प्रकृति के कारण क्रमशः ' स्थिर उच्च' तथा 'अस्थिर उच्च' नामों से ही पुकारेंगे।*

[4] *यहां 'कोष्ठक' शब्द से सर्वत्र पृ.* **297** *पर दिया गया "उच्चनिर्णय कोष्ठक" ही समझना चाहिए।*

[5] *इस मत का खण्डन चन्द्र के स्थिर उच्च से स्पष्टतया हो जाता है, क्योंकि इसका अस्थिर उच्च (मन्दोच्च) तो 6′.7 दैनिक गति से पर्याप्त चल है। 9 मास में यह एकराशि आगे चल देता है, अतः इसे इस मतानुसार स्थिर रूप (1 रा. 03 अं.) देना बिल्कुल तर्कसंगत नहीं बनता।*

[6] *यहां सर्वत्र "ओझा जी" से हमारा अभिप्राय उन सभी ज्योतिषियों से भी है, जो स्थिर उच्चों को प्राचीनकालीन अस्थिर उच्च समझते हैं।*

(सन् 2010 ई. के) अस्थिर उच्च हैं। **कॉलम (घ)** में *"ग–ख"(=" सन् 2010 ई. कालिक अस्थिर उच्च–स्थिर उच्च")* से प्राप्त अंश दिए गए हैं। यहां **कॉलम (च)** में सूर्यादि ग्रहों के अस्थिर उच्चों का 30 अंश भोगकाल (ग्रह का अस्थिर उच्च 30 अंश चलने में जितने वर्ष लेता है, वह काल) दिया है। इन पदार्थों से हम त्रैराशिक द्वारा यह ज्ञात कर सकते हैं कि– कितने वर्ष B.C. में (ईसापूर्व) किस ग्रह का अस्थिर उच्च उसके स्थिर उच्च के समान था अथवा यूँ कहिए, हम इन पदार्थों से किसी भी ग्रह का **" उच्चतुल्यता वर्ष"**[7] जान सकते हैं। यह त्रैराशिक से इस प्रकार ज्ञात होगा–

ग्रह के अस्थिर उच्च को 30 अंश भोगने (चलने) में **कॉलम (च)** तुल्य वर्ष लगते हैं, तो **"ग–ख"** से प्राप्त अंशों को भोगने में उसे कितने वर्ष लगेंगे ?

इस त्रैराशिक से प्राप्त वर्ष **कॉलम (छ)** में दिए गए हैं, जो बतलाते हैं–अमुक ग्रह का अस्थिर उच्च सन् 2010 ई. से इतने वर्ष पूर्व उसके स्थिर उच्च के तुल्य था। **कॉलम (छ)** के वर्षों को B.C. वर्षों में (ईसा पूर्व वर्षों में) परिवर्तित कर **कॉलम(ज)** में लिखा गया है[8]। स्पष्ट है, ये सूर्यादि ग्रहों के "उच्चतुल्यता वर्ष " हैं।

कॉलम (ज) देखिए– यहां किन्हीं दो ग्रहों के भी उच्चतुल्यता वर्ष समान नहीं हैं। इन विभिन्न ग्रहों के उच्चतुल्यतावर्षों में परस्पर लाखों वर्षों का अन्तर है। कुछ ग्रहों के उच्चतुल्यता वर्षों में तो एक करोड़ वर्ष से भी अधिक का अन्तर है। ग्रहों के **'उच्चतुल्यतावर्षों '** में इस भयावह अन्तर से ओझा जी आदि विद्वानों का यह मत कि– इन सभी ग्रहों का उच्चतुल्यतावर्ष एक ही है, बुरी तरह ध्वस्त हो जाता है। इसी के साथ सभी ग्रहों के 'उच्चतुल्यंतावर्ष ' की अभिन्नता के काल में "भारतीय फलितशास्त्र के शिलान्यास" का सिद्धान्त्व भी धराशायी हो जाता है।

किसी एक ही ग्रह के उच्चतुल्यतावर्ष में इस शास्त्र के शिलान्यास की कल्पना भी Anthropologically बुरी तरह तर्कभ्रष्ट है। देखिए– यहां गुरु का 'उच्चतुल्यतावर्ष सर्वाल्प (10 लाख वर्ष) है। क्या विश्व का कोई भी पढ़ा–लिखा व्यक्ति यह मानने को तैयार होगा कि– 10 लाख वर्ष B.C. में ऐसा भी कोई मानव नाम की जाति का प्राणी भूगोल पर था, जिसे मन्दोच्च, मन्दनीच जैसे खगोलीय मूलतत्त्व ज्ञात थे ? ओझा जी ने तो केवल सूर्य के उच्चतुल्यतावर्षों के ही आधार पर भारतीय ज्योतिषशास्त्र की आधारशिलान्यास का काल 21 लाख वर्ष ईसापूर्व निर्धारित कर डाला (देखें 'फलितविकास' पृष्ठ 31)। शायद, उनकी दृष्टि में शनि का 'उच्चतुल्यतावर्ष ' नहीं आया। नहीं तो वे भारतीय फलितशास्त्र का शिलान्यास--काल 1 करोड़ 14 लाख ईस्वीपूर्व प्रमाणित करने से नहीं चूकते। आश्चर्य कम, दुःख अधिक होता है, जब कुछ विद्वान् लोग भी स्वत्व में निःसीम अन्धश्रद्धा के कारण यह भी नहीं जान पाते हैं कि– उनकी अतिकल्पना हास्यास्पद श्रेणी में आ रही है। ऐसे लोगों का चरम आत्मीयतानुराग (Chauvinism) तर्क की सभी सीमाओं को लांघ जाता है– बड़े दुःख की बात है।

यहां ओझा जी तथा अन्य उनके मतानुयायियों को यह बतलाना चाहता हूँ **कि– सभी ग्रहों के उच्चतुल्यता वर्षों की अभिन्नता की . स्थिति, जिसे वे भ्रान्तिवश अतिप्राचीन किसी अज्ञात काल में घटित समझ रहे हैं, इस वर्त्तमान सृष्टि के विगतकाल 1,95,58,85,111 वर्षों की अवधि में भी आज तक कभी नहीं घटी,– यह ग्रहों के वर्त्तमानकालिक 'उच्चतुल्यतावर्षों' में अन्तर तथा उनके मन्दोच्चों की गतियों में असमानता से स्पष्ट है।**

---

[7] *ग्रह का अस्थिर उच्च जितने वर्ष B. C. में (ईसापूर्व) अपने स्थिर उच्च के तुल्य था, उस B. C. वर्ष को हमने यहां उस ग्रह के "उच्चतुल्यता वर्ष" की संज्ञा दी है [देखिए पृ.* 297 *पर* ***"उच्चनिर्णय कोष्ठक"*** *के* ***कॉलम (ज)*** *का शीर्षक] ।*

[8] ***कॉलम (छ)*** *के वर्ष 2010 ई. से पूर्ववर्ती है, अतः इनमें से 2010 वर्ष घटाकर, इन्हें B.C. वर्ष बनाकर,* ***कॉलम (ज)*** *में लिखा गया है।*

इस प्रकार ग्रहों के फलितीय (स्थिर) उच्च–नीचों को उनके फलित ज्योतिष–स्थापनाकालिक मन्दोच्च–नीच बतलाने वाला शताब्दियों से चला आ रहा यह भ्रामक मत पूरी तरह निरस्त हो जाता है।

अब हम ओझा जी व अन्य उन असंख्य दैवज्ञों को जो स्थिर उच्चों को अतिप्राचीनकालिक अस्थिर उच्च मानकर भारतीय फलित ज्योतिष के उद्गमकाल को Dinosaurian युग से भी पुरातन सिद्ध करने के लिए कटिबद्ध हैं, यह बतलाना चाहते हैं कि– ग्रहों के ये फलितीय (स्थिर) उच्चनीच भारतीयों की उपज्ञा नहीं हैं; ये तो भारतीयों को Babylon से प्राप्त हुए हैं– यह फलित ज्योतिष–इतिहास बतलाता है। प्राचीनकाल में Babylon के किसी दैवज्ञ को ग्रहों से सम्बद्ध फलादेश, निर्णय के प्रसंग में कुछ यह अनुभव हुआ कि– अमुक ग्रह जब अमुक राशि–अंश पर होता है, तब वह अति–शक्तिशाली, शुभफलप्रद तथा जब वह उसके ठीक 180° की दूरी पर होता है तब अतिदुर्बल, अशुभफलप्रद होता है (ग्रहों के ये राशि–अंश भारतीय फलित में प्रयुक्त "अज-वृषभ-मृगाङ्गना-कुलीराः....." वाले ही हैं)। इस नियमानुसार पाश्चात्य दैवज्ञों द्वारा अति शक्तिशाली, शुभफलप्रद ग्रहों को Exalted और अतिदुर्बल को Debilitated संज्ञा दी गई। Exaltation-Debilitation वाला यह Babylonian सिद्धान्त जब (शायद ईसा के अनन्तर) भारतीय फलितजगत् में प्रविष्ट हुआ, तब भारतीय दैवज्ञों ने इन्हें क्रमशः उच्च और नीच शब्दों से अनूदित किया, जिनके अर्थ क्रमशः वही हैं, जो Exaltation और Debilitation के हैं।

यह ध्यान देने योग्य है कि– पाश्चात्य ज्योतिष में मन्दोच्च, मन्दनीच को क्रमशः Apogee (पृथ्वीकेन्द्र से परमदूरी का बिन्दु) और Perigee (पृथ्वी-केन्द्र से परमसमीपता का बिन्दु) कहा जाता है। यहां स्थिर उच्च और स्थिरनीच के लिए जो पारिभाषिक शब्द (**Exaltation और Debilitation**) प्रयुक्त किए गए हैं, उन्हें अस्थिर उच्च (मन्दोच्च) व अस्थिर नीच (मन्दनीच) के लिए प्रयुक्त नहीं किया जाता। उनके लिए तो वहां इनसे भिन्न शब्द Apogee, Perigee का ही प्रयोग होता है। इससे स्पष्ट है, पाश्चात्य दैवज्ञ स्थिर उच्च–नीच एवं अस्थिर उच्च–नीचों में कोई सम्बन्ध नहीं मानते। अपि च– भारतीय दैवज्ञ भी स्थिर उच्च, स्थिरनीच को केवल उच्च–नीच की संज्ञाओं से ही पुकारते हैं। उन्हें वे भूलकर भी कभी मन्दोच्च–मन्दनीच नहीं कहते। मन्दोच्च–मन्दनीच को तो वे खगोलीय गणना में ग्रह की गति–स्थिति आदि साधन के लिए ग्रह की पृथ्वीकेन्द्र से क्रमशः परमदूरी व परमसमीपता वाले ग्रहस्थिति–बिन्दु के लिए ही प्रयुक्त करते हैं। स्पष्ट है– वे भी इन दोनों को भिन्न–भिन्न ही मानते हैं।

लेख का सारांश

गणितीय विश्लेषण बतलाता है कि–

(i) आज से विगत 10 लाख वर्ष तक की कालावधि में कहीं भी किसी भी ग्रह का खगोलीय उच्च–नीच (मन्दोच्च–मन्दनीच) उसके अपने फलितीय (स्थिर) उच्च–नीच के बराबर नहीं था।

(ii) वर्तमान सृष्टि के व्यतीत 1,95,58,85,111 वर्षों की अवधि में भी ऐसा काल नहीं आता, जबकि एकसाथ (एककालावच्छेदेन) सभी ग्रहों के मन्दोच्च–मन्दनीच उनके अपने–अपने फलितीय (स्थिर) उच्च–नीचों के बराबर हुए हों।

(iii) ग्रहों के फलितीय (स्थिर) उच्च–नीचों का उनके मन्दोच्च–मन्दनीचों से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है, दोनों स्वतन्त्र पदार्थ हैं। प्रयोग में लाए जा रहे इनके नामों में सादृश्य ही इन दोनों में अभिन्नता की भ्रान्ति पैदा करता है।

उच्चनिर्णय कोष्ठक

(क)	(ख)	(ग)	(घ)	(च)	(छ)	(ज)
ग्रह	ग्रह का 'स्थिर उच्च' (=फलितीय उच्च)	सन् 2010 ई. में ग्रह का 'अस्थिर उच्च' (= मन्दोच्च)	(ग)–(ख) सन् 2010 ई. में ग्रह का 'अस्थिर उच्च' उसके 'स्थिर उच्च' से इतने अंश आगे बढ़ गया	ग्रह के मन्दोच्च (अस्थिर उच्च) का 30° भोगकाल (सौरवर्ष)	सन् 2010 ई. से इतने वर्ष पहले ग्रह का 'अस्थिर उच्च' उसके 'स्थिर उच्च' के बराबर था	इतने वर्ष B.C. में ग्रह का 'अस्थिर उच्च' उसके 'स्थिर उच्च' के बराबर था। (इस काल को हमने यहां ग्रह का 'उच्चतुल्यता–वर्ष' माना है।)
	रा. अं.	रा. अं.	अंश	वर्ष	वर्ष	वर्ष (B.C.)
सूर्य	0 10	2 17	67	9,30,233	20,77,520	20,75,510
चन्द्र	1 03	– –	– –	0.7374	– –	– –
मंगल	9 28	4 10	192	17, 64,706	1,12,94,118	1,12,92,108
बुध	5 15	7 10	55	9,78,261	17,93,478	17,91,468
गुरु	3 05	5 21	76	4,00,000	10,13,333	10,11,323
शुक्र	11 27	2 20	83	6,72,897	18,61,682	18,59,672
शनि	6 20	7 27	37	92,30,769	1,13,84,615	1,13,82,605

इस कोष्ठक से सम्बद्ध विशेष स्पष्टीकरण –

(i) कोष्ठक **'सूर्यसिद्धान्तीय गणना'** पर आधारित है।

(ii) चन्द्र का 'अस्थिर उच्च' (मन्दोच्च) 6′.7 दैनिकगति से चलता है, यह लगभग 9 महीनों में एकराशि पार कर जाता है। इसके 'स्थिर उच्च' (1 रा. 03 अं.) से इसका (चन्द्रमन्दोच्च का) अन्तर बहुत द्रुतगति से घटता–बढ़ता रहता है। इसीलिए इस **कोष्ठक के कॉलम (ग), (घ), (छ) और (ज)** में दिए गए अन्य ग्रहों के स्थिर–अस्थिर उच्चों से सम्बद्ध विश्लेषण का यह (चन्द्र) विषय नहीं है। इसी कारण इसके कॉलम कोष्ठक में अप्रयुक्त हैं।

(iii) **कॉलम (ग), (घ), (छ)** और (ज) में ग्रहों के अस्थिर उच्चों को 2010 ई. वर्षीय मानकर गणना की गई है। वस्तुतस्तु ग्रहों के ये अस्थिर उच्च अत्यन्त अल्प(नितान्त नगण्य सी) गति के कारण 2010 ई. से हज़ारों वर्ष पूर्व एवं परवर्ती काल में भी लगभग इतने ही हैं। यथार्थतस्तु इन्हें **'आधुनिक युग के अस्थिर उच्च'** कहना ज़्यादा उपयुक्त है, लेकिन गणना के लिए यहां मुझे इन्हें 2010 ई. वर्षीय मानकर चलना पड़ा है।

*****

पृष्ठ सं. 604
चिरस्थायी बहुमूल्य कागज

विश्वलग्न सारणी

साईज़-24X18½ सें.मी.
सुदृढ़, आकर्षक टाईटल

विश्व के किसी भी स्थल का सूक्ष्म लग्न केवल साधारण जोड़–घटाव द्वारा बतलाने वाला लग्नसम्बन्धी प्रचुर सामग्री से समृद्ध अपूर्व प्रकाशन

(i) 0° से 50° अक्षांश तक 30–30 और 50° से 66° अक्षांश तक 15–15 अक्षांश–कलाओं के अन्तर पर बनाई गईं 332 पृष्ठों पर फैली 166 लग्नसारणियां साम्पातिक काल के 1–1 मिनट के अन्तर पर विकलान्त सूक्ष्म लग्न बतलाती हैं। इनसे विश्व के किसी भी उत्तरी तथा दक्षिणी अक्षांश वाले नगर का इष्टकालिक राश्यादि लग्न स्पष्ट करने के लिए 2 मिनट से अधिक समय नहीं लगता है।

(ii) मेषादि बारह लग्नों का दैनिक प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल बतलाने वाली 25 पृष्ठों की विलक्षण सारणियां 5–5 अक्षांश–कलाओं के अन्तर पर 0° से 60° अक्षांशों के लिए बनाई गई हैं, जिनसे विश्व के किसी भी नगर में किसी भी दिन (तारीख को) किसी भी सायन एवं निरयण लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल (अभीष्ट देश के स्टैं. टा. में) मात्र मौखिक जोड़–घटाव द्वारा तुरन्त (लगभग एक मिनट में ही) जाना जा सकता है। क्योंकि, ये सारणियां लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल सेकण्ड तक सूक्ष्म बतलाती हैं, अतः सन्दिग्ध (सन्धिगत) लग्न का निर्णय इन सारणियों से वस्तुतः चुटकियों में अनायास ही हो जाता है। सन्देहास्पद लग्नराशि के निर्णय का यह नवीनतम अत्यन्त सरल प्रकार है।

(iii) सन् 1900 से 2100 ई. तक का सेकण्ड तक सूक्ष्म साम्पातिक काल और स्पष्ट अयनांश दिया गया है।

(iv) भारत के 4,000 नगर/उपनगरों तथा विश्व के अन्य 210 देशों के प्रसिद्ध लगभग 5,000 नगरों के अक्षांश–रेखांश तथा स्था. म. का. और स्टैं. टा. का अन्तर 80 पृष्ठों पर दिया गया है।

(v) विश्व के लगभग छः सौ (600) देश / द्वीप/ उपद्वीपों की स्टैं. टाईम मेरिडियन्स तथा उनके स्टैं.टा. का G. M. T. एवं भा. स्टैं. टा. से अन्तर 21 पृष्ठों के विशाल कोष्ठक में विवरणसहित दिया है।

(vi) क्रान्ति और अक्षांश की 20–20 कलाओं के अन्तर पर 0° से 66° अक्षांशों के लिए सेकण्ड तक सूक्ष्म 24 पृष्ठों की मौलिक चरसारणी है, जिससे विश्व के किसी भी स्थल का सेकण्ड तक शुद्ध सूर्योदयास्तकाल आसानी से तुरन्त जाना जा सकता है।

(vii) अमेरिका, कनाडा आदि सभी विशाल देशों के अलग–अलग Time-Zones (कालक्षेत्रों) में पड़ने वाले सम्पूर्ण प्रान्तों (राज्यों) की लम्बी सूची दी गई है, जिससे स्पष्ट हो जाता है कि– इन देशों के किस प्रदेश में कौन सा टाईम प्रचलित है और उसका भा. स्टैं. टा. से कितना अन्तर है।

(viii) विश्व के विभिन्न देशों में 1940 ई. के बाद आज तक हुए सभी समय–परिवर्तनों के वर्षादि का विस्तृत रिकॉर्ड 7 पृष्ठों के कोष्ठक में अंकित हैं।

(ix) अमेरिका, कनाडा आदि देशों में प्रचलित समरटाईम (D.S.T.) के प्रारम्भ और समाप्ति की तारीखों तथा प्रथम/द्वितीय विश्वयुद्धों के दौरान विभिन्न देशों द्वारा किए गए सभी समय-परिवर्तनों के वर्ष–मास–तारीखों का विवरण 9 पृष्ठों पर दिया गया है।

(x) सारणियों से लग्नसाधन आदि की प्रत्येक गणित–प्रक्रिया को छः छः, सात–सात विभिन्नदेशीय नगरों के उदाहरणों द्वारा पूरी तरह स्पष्ट किया गया है।

अनेक उपयोगी क्रान्ति, वेलान्तर आदि के कोष्ठक तथा लग्न एवं द्वादशभावसाधन आदि से सम्बद्ध "सन्धिगत लग्न का निर्णय", "विषम विभागात्मकभाव–एक समीक्षा" आदि अनेक मौलिक लेख आप इस पुस्तक में पढ़ेंगे।

इस पुस्तक की सभी सारणियां Electronic Computer द्वारा बनाई और मुद्रित की गई हैं, जिससे इनमें गणित एवं मुद्रणसम्बन्धी अशुद्धि की कोई सम्भावना ही नहीं है।

लग्न पर ऐसी व्यापक जानकारी देने वाली परिपूर्ण, प्रौढ़ एवं प्रामाणिक पुस्तक आपको और कोई नहीं मिलेगी– यह हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं।

मूल्य Rs. 750/– + डाकव्यय Rs. 60/–

पुस्तक मिलने का पताः– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, **M.A., M.Phil.,**
'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6, **P.O.** पंचकूला (हरियाणा) – 134 109.
Phone: 0172-2565 303

ध्यान दें :–इस पुस्तक का संक्षिप्त संस्करण *'लघु लग्नसारणी'* तथा विशेषरूप से भारतीय नगरों में लग्नारम्भ–समाप्तिकाल सरलता से जानने के लिए एक *'भारतीय लग्ननिर्णय'* पुस्तक भी प्रकाशित होने जा रही है। इनके विज्ञापन पृष्ठ 277 और पृष्ठ 150 पर देखिए।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा लिखित
'अभिजित् प्रकाशन, 59/6, पंचकूला' के संग्रहणीय

आगामी प्रकाशन

(i) भारतीय वास्तुशास्त्र के सिद्धान्त

(भारतीय वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों की विश्लेषणात्मक, पूर्वाग्रहमुक्त समीक्षा।)

(ii) नव्य जातकपद्धति

(फलादेशोपयोगी ग्रह, भावबल आदि के निर्धारण की संशोधित नई विधाएं।)

(iii) समस्या एवम् समाधान

(गणित, फलित, मुहूर्त्त आदि ज्योतिष की विविध शाखाओं से सम्बद्ध लगभग दो सौ से अधिक ऐसी समस्याओं के सप्रपञ्च, सुबोध, सरल समाधान, जो दैवज्ञों को यत्र–तत्र अक्सर उलझाती रहती हैं।)

(iv) ज्योतिर्निबन्धमाला

(गणित, फलित आदि सम्बन्धी विचारोत्तेजक अनेक मौलिक, प्रौढ़, शोधपूर्ण ज्योतिर्निबन्धों का नवदिग्दर्शक महासंकलन।)

(v) मेघमाला

(पशु–पक्षियों की चेष्टाओं, विविध प्राकृतिक घटनाओं, आकाशलक्षणों तथा ग्रहचार आदि द्वारा भावी सुभिक्ष–दुर्भिक्ष, वृष्टि–अनावृष्टि आदि शुभाशुभ घटनाओं का स्पष्ट संकेत देने वाली *आचार्य मेघमुनि* की व्रजभाषा में लिखी प्राचीन विलक्षणकृति, हिन्दी अनुवादसहित)

हमारी पुस्तकों का नया विस्तृत **Catalogue** आप बिना मूल्य मंगा सकते हैं।

अधिक जानकारी के लिए इस पते पर सम्पर्क करें :–

श्रीमती वीना चतुर्वेदी, **M.A., M.Phil.,**
'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर 6,
P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109
Phone: 0172-2565 303

श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय के नियम

हमारे यहां जन्मपत्र एवं वर्षफल शुद्ध गणित से बनाए जाते हैं, जिनमें आयु, रोग, सन्तान, स्त्री, धन एवं भाग्योदय, तरक्की आदि का निर्णय किया जाता है।

जन्मपत्र की फीस:– साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 600 रु. और बड़े जन्मपत्र की फीस 800 रु. है। डाकव्यय अलग होगा। विदेशी जन्मपत्र कम्प्यूटर से तैयार की गई सारणियों से बड़ी सावधानी के साथ बनाए जाते हैं, गणित विशेष परिश्रम से करनी पड़ती है, अतः जिनका जन्म विदेश में हुआ हो, उनके साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 800 रु. है। यदि आप वर्षफल बनवाना चाहते हैं, तो अपनी जन्मकुण्डली की नकल व पेशा लिखकर भेजें। जन्मपत्र बनवाने के लिए जन्म तारीख, मास, सन्, जन्मसंवत्, जन्मटाईम, जन्मस्थान, जाति, पेशा एवं विशेष विचारणीय विषय भी लिखना न भूलें। टेवा की फीस 100 रु. है।

भारतीय वर्षफल की फीस साधारणतया 300 रु. है। विस्तृत फलादेश वाले वर्षफल की फीस 500 रु. है। विदेशी साधारण वर्षफल की फीस 500 रु. एवं विस्तृत की फीस 700 रु. है। जिनकी कुण्डली न हो, वे व्यक्ति पत्र लिखने का समय, तारीख एवं अपनी अन्दाजन उम्र, पेशा, जाति अवश्य लिखें। वर्षफल का आर्डर देते समय यह लिखना जरुरी है, कि इस वर्ष आपके वर्षफल में किन बातों पर विशेष रूप से विचार किया जाए। शुद्ध विवाहमुहूर्त जानने की फीस 251 रु. है और वर-कन्या की कुण्डली मिलान की फीस 251 रु. है। जन्मपत्र एवं वर्षफल हिन्दी में सुन्दर और विस्तृत फलादेश सहित बनाए जाते हैं। आर्डर के साथ पूरी फीस पेशगी भेजें। सर्वसाधारण प्रश्न की फीस 201 रु. है।

नोटः– प्रत्येक काम की पूरी फीस आर्डर के साथ ही भेजें। वी.पी.पी. नहीं की जाएगी। बिना पेशगी के कोई भी कार्य नहीं किया जाएगा।

व्यापारियों के लिए चाँस

हम समय-समय पर रुई, बिनौला, सरसों, गुड़, खाण्ड एवं शेयर मार्कीट आदि के चांस देते हैं। वर्षों से अनेकों व्यापारी हमारे परामर्श से लाभ उठाते आ रहे हैं। एक जिन्स (चना, ग्वार आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों, बिनौला आदि तिलहन; रुई, गुड़, खाण्ड एवं शेयर मार्कीट आदि तथा सोना, चान्दी, तांबा आदि धातुओं) की लिखित रिपोर्ट की अडवांस फीस 5000 + 50 रुपये डाक व्यय प्रतिमास एवम् वर्षभर की फीस 50000 + 500 रु. डाकव्यय के हिसाब से चार्ज किए जाते हैं। जिन्होंने Advance Fee लिखित Report के लिए भेजी होगी, वे Telephone के माध्यम से भी ताजा मशवरा प्राप्त कर सकेंगे। विस्तृत विज्ञापन 'व्यापार विमर्श' के अन्त में देखें।

जो व्यापारी साल में प्रमुख-प्रमुख केवल एक-दो हजार व्यापार के चांस ही चाहते हैं, वे 10000 रु. भेजकर रजि. में नाम दर्ज करा सकते हैं। जिन व्यापारियों के नाम रजिस्टर में दर्ज होंगे, हम केवल उन्हें ही अपने विचार भेज सकेंगे।

पत्रव्यवहार करते समय साफ-साफ डाक पते के साथ PHONE No. लिखना न भूलें।

सर्दियों में – प्रातः 9 से 2 बजे तक।
गर्मियों में.– प्रातः 8 से 2 बजे तक।

दूर से आने वाले सज्जन पत्र या टेलीफोन से पूज्य पण्डित जी से मिलने का दिन एवं समय पहले ही निश्चित कर लें।

पुंसवनी (अभीष्ट सन्तान प्राप्ति के लिए दिव्य औषधि)

इस ईश्वरप्रदत्त प्रभावयुक्त दिव्यौषधि को गर्भ के दूसरे मास के अन्त में सेवन करने से अभीष्ट (मनचाही) संतान ही उत्पन्न होती है। इस अद्भुत औषधि की प्रशंसा में असंख्य पत्र और ईनाम प्राप्त हुए हैं। मूल्य 800 रु. + 50 रु. पैकिंग एवं डाक व्यय, कुल राशि 850 रु. भेजें। वी.पी.पी. नहीं की जाएगी।

सिद्ध शनि यन्त्र–विधिपूर्वक शुभमुहूर्त में बने इस यन्त्र को धारण करने से शनिजन्य अशुभफल, पीड़ा, चिन्ता आदि से मुक्ति मिलती है, अनुभव करें। भेंट– 1100 रु., डाक व्यय अलग।

श्री लक्ष्मी यन्त्र– अष्टगन्धादि से विधिपूर्वक बनाए गए इस यंत्र को विधिवत् पूजा-स्थान या गल्ले में रखने से लक्ष्मी की कृपा रहती है, कोष में भारी बरकत रहती है। तुजर्बा लें। भेंट– 2100 रु., डाकव्यय अलग।

अठराहा नाशक यन्त्र– जिन औरतों के प्यारे बच्चे देवदोष, गर्भदोष व अठराहा, मसानदोष के कारण मर जाते हैं, उनके लिए यह यन्त्र वरदानरूप सिद्ध हो चुका है। विधिपूर्वक निर्मित इस यन्त्र के प्रभाव से बच्चे दीर्घायु होकर, सैंकड़ों माता-पिता को सुखी कर रहे हैं तुजर्बा करके चमत्कार देखें। विधानपत्र साथ भेजा जाता है। भेंट– 1100 रु., डाकव्यय अलग

सिद्ध गोपाल यन्त्र– इस सिद्ध यन्त्र को विधिपूर्वक श्रद्धासहित स्त्री धारण करे तो चिरंजीव पुत्र की प्राप्ति होती है। आर्डर देते समय स्त्री का नाम अवश्य लिखें। विधानपत्र साथ भेजा जाएगा। भेंट– 1100 रु., डाकखर्च पृथक।

गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।
हर वर्ष 21 से 31 दिसंबर तक भी कार्यालय में अवकाश रहता है।

पत्र व्यवहार के लिए पता–

पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
सुपुत्र– पं. इन्दुशेखर शास्त्री, ज्योतिषाचार्य, M.A.,
श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, (नजदीक रेलवे स्टेशन),
मु. पो. कुराली (अजीत नगर-मोहाली), पंजाब, PIN– 140 103.
[PHONE– 0160-264 1277, FAX- 264 1577]
Website:www.shrimartand.com

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh Gadh, at Kanwal Video & Photostat, Kurali, Ph. 0160-2641274, Fax: 0160-2645575